

नं० ५४७४ — घ

गोस्वामी श्री तुलसीदासकृत —

रामायणम् (महाकाव्यम्)

पत्राणि ३७३ (संपूर्णम्)









5474



# रामायण नं० ६५६

#. 54741-3

Introduction

Part - I - F - 125

9288 Part 2nd

9954 F - 90

Part 3rd F - 23

Part 4th - F - 10

Part 5th - F - 18

Part 6th - F - 61

नं० ५४७४-घ  
गोस्वामीश्रीतुलसीदासकृत रामायणम्  
(महाकाव्यम्)  
७मकांडात् ७मकांडपर्यन्तपत्राणि ३०३ (सम्पूर्णम्)







नाम	बालकांड	पत्र	दृष्ट
१ भैवरी		१	१
२ मधुमाधवी	रागिणी	८	२
३ भैवरी		१२	२
४ गमकली		१६	१
५ ठोडी		२१	१
५ ग्रासावरी		२५	१
१ बेंगाल	पुत्र	३०	२
२ मधुर		३५	२
३ हर्ष		४१	१
४ देकशाख		४४	२
५ पंचम		४५	१
६ ललित		४६	२
७ बिलावल		५०	२
८ माधव		६१	२



नाम	बालकोउ	पत्र	पृष्ठ
१ मालकोश		६६	२
१ खिभावती	रगिणी	७४	२
२ दोड़ी		७५	२
३ ककुम		८४	२
४ मोरी		८५	१
५ गुणकरी		८४	१
१ मानू	७३	८८	२
२ बर्वल		१०१	१
३ मिडीर		१०७	२
४ मिष्टांग		११४	२
५ चंद्रकासः		११५	२
६ भ्रमररागः		१२४	१
७ आनंदरागः	श्रयोध्याका०	२	२
८ खोखररागः		७	१



राम नाम	प्रयोगांक	यत्र	एव
१ हिंडोल		१२	१
१ तैलंगी	रागीरानी	१५	२
२ देवगिरी		२४	१
३ वासंती		२८	१
४ सिंहरी		३२	१
५ आभीरी		३७	१
१ चंद्रबिंब		४१	२
२ सुभ्रोग		४५	२
३ स्यानेद		४५	२
४ विभास		५४	१
५ वसंत		५५	२
६ वर्धन		५८	१
७ देशकार		६२	२
८ विमोद		६७	१



रग नाम	अयोध्याकांड	पत्र	पृष्ठ
१ दीपक		३१	१
१ पटमंजरी	रागिणी	३८	१
२ कामोदिनी		८१	१
३ टोडी		८३	१
४ गूर्जरी	शरणकांड	१	१
५ कावेरी		६	१
१ कमलरग		१०	२
२ कुसुम		१५	३
३ रामरग		१८	२
४ कुंतल	किष्किंका	१	१
५ कलिंग		५	१
६ बहल		८	१
७ चंपक	संदरका	४	२
८ हिमाल		८	१



राग नाम	संहरकांड	पत्र	२२
१ श्रीरागः		१३	१
१ करणीटी	लंकाकांड	१	१
२ सावेरी		५	२
३ मौडी		८	१
४ रामकली		१२	१
५ सैंधवी		१६	१
१ सिंधुराग	१३ पुत्र	२०	१
२ मालव		२५	१
३ मौड		३०	१
५ गुरासमार		३५	१
६ विहागडा		४०	१
७ मेभीर		४५	१
७ कल्याण		५०	२
८ कुंभराग		५७	१



रागनाम	संख्या	पत्र	पृष्ठ
१ मेचमलार	६०	६०	१
१ मलारी	उत्तरकोट	२	२
२ मोररी		५	२
३ आसावरी		८	२
४ कोकिली		११	१
५ भूपाली		१०	१
१ नटराग		२१	१
२ कानडा		२३	१
३ सारंग		२६	१
४ केदार		२९	१
५ गुराग		३१	१
६ तुंदमलार		३४	१
७ जालंदर		३७	१
८ वेदराग		४०	१



5479











रामाय०  
बाल  
का०  
१

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ श्री श्री सीतारामाभ्यां नमः॥ श्रीतल  
सीतामगोस्वामीकृतसप्तकाण्डरामायणग्रन्थः॥ अथ बाल  
काण्डलिख्यते॥ श्लोक॥ वर्णानामर्थसंघानोरसानां कन्दसा  
मपि॥ मङ्गलानां च कर्तारौ बन्दे बाणी विनायकौ॥ भवानी  
शंकरौ बन्दे अहा विष्णु सारूपिणौ॥ याभ्यां विना न पश्यति  
सिद्धाः स्वांतस्त्वमीश्वरम्॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररू  
पिणम्॥ यमाश्रितो दिवक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र बंधते॥ सीतारा  
मगुणग्रामगुणारण्यविहारिणौ॥ वन्दे विष्णुद्विज्ञानौ  
कवीश्वरकपीश्वरौ॥ उद्भवस्थितिं संहारकारिणीं क्लेशहारि  
णीम्॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतां न तोहं रामवल्लभाम्॥ यन्माया  
वशावर्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुरा<sup>१</sup> यत्सत्त्वादमृषैव भा  
तिसकलं रज्जौ यथा हेर्ध्रमः॥ यत्पादप्लवमेकमेव हि भावा  
भ्यो येस्ति तीर्षावतां॥ वन्दे हंतमशेषकारणपरं रामाख्यमी  
शंहरिम्॥ नानापुराणनिगमागमसम्मतं॥ यद्रामायणे  
निगदितं क्वचिदन्यतोपि॥ स्वान्नः सुखाय तलसीरचुनाय  
गाथाभाषानिवन्धमतिमंजुलमातनोति॥ सोरठा॥ जेहिं  
सुमिरतसिथिहोर॥ गणनायक करिवरवदन॥ करोय

भारव



नुग्रहसोऽ बुद्धिराशिष्ठभगुणमदन॥१॥ मूकहोऽवाचा  
 ल पंगुचैगिरिवरगाहन॥ जासुकृपासुदयालु द्वौस  
 कलकलिमलदहन॥२॥ नीलसरोरुहश्याम तरुणाग्र  
 रुणावारिजनयन॥ करोमोमसउरथाम सदातीरसागर  
 शयन॥३॥ ऊन्दुसमदेह उमारमणकरुणायतन॥  
 जाहिदीनपरनेह करौकृपामर्दनमयन॥४॥ बन्दोगुरुप  
 दकंज कृपासिंधुनररूपहरि॥ महामोहतमपुञ्ज जासु  
 वचनरविकरनिकर॥५॥ चौपाई॥ बन्दोगुरुपदपदुमप  
 रागा॥ सरुचिसवाससरसअनुरागा॥ अमियमुरिम  
 यचूराचारु॥ शमनसकलभवरुजपरिवारु॥ सकृ  
 तशंभुतनविमलविभूती॥ मंजुलमंगलमोदप्रसूती॥  
 जनमनमंजुमुऊरमलहरणी॥ कियैतिलकगुणाग  
 णावशाकरणी॥ श्रीगुरुपदनखमणिगणज्योती॥ सु  
 मिरतदिव्यदृष्टिदियहोती॥ दलनमोहतमहंसप्रकाशु॥  
 बडेभाग्यउरआवहिजासु॥ उचरहिंविमलविलोचन  
 हियके॥ मिटहिंदोषदुखभवरजनीके॥ सुऊहिंराम  
 चरितमणिमणिक॥ गुप्पप्रगटजहांजोजेहिखानिक॥



रामा०

बा०

२

२

दोहा॥ यथासुप्रभुनशंजिह्वा साथकसिद्धसुजान॥ कौ  
तुकदेवहिषैलवन भूतलभूरिनिधान॥ ६॥ चौपाई॥ गु  
रुपदरजमृदुमंजुलश्रुन॥ नयनश्रमियदगदोषविभ  
ज्जन॥ तेदिकरिविमलविवेकविलोचन॥ वरणोंरामच  
रितभवमोचन॥ बन्दोप्रथममहीसरचरणा॥ मोहजनि  
तसंशयसबहरणा॥ सुजनसमाजसकलगुणाखानी  
कैरोंप्रणामसप्रेमसुवाणी॥ साधुचरितशुभसरिसकृ  
पासू॥ निरसविषादगुणमयफलजासू॥ जोसहिदुःख  
परकिट्टदुगाया॥ बन्दनीयजेहिंजगयशापाया॥ मुदमे  
गलमयसन्तसमाजू॥ ज्योंजगजंगमतीरथराजू॥ रा  
मभक्तिजहंसरसरिंधारा॥ सरस्वतीब्रह्मविचारप्रचा  
रा॥ विधिनिषेधमयकलिमलहरणी॥ कर्मकथारवि  
नन्दिनीवरणी॥ हरिहरकथाविराजतिबेनी॥ सुनत  
सकलमुदमङ्गलदेनी॥ वटविष्णुसप्रचलनिजधर्मा  
तीरथराजसमाजसुधर्मा॥ सबहिंसलभसबदिनस  
बदेशा॥ सेवतसादरशमनकलेशा॥ अकथप्रलौकि  
कतीरथराऊ॥ देरसयफलप्रगटप्रभाऊ॥ दोहा॥ सु



निसमुजहिजनमुदितमन मजहिंश्रुतिश्रुतराग॥ल  
 हहिंचारिफलश्रुततनु साधुसमाजप्रयाग॥॥चौ  
 पाई॥ मजनफलदेखियततकाला॥ काकहोहिंपि  
 कबकहिंमराला॥ सुनआश्चर्यकरहिंजनि कोई॥ सत  
 संगतिमहिमानहिगोई॥ बालमीकनारदचटयोनी॥  
 निजनिजमुखनिकही निजहोनी॥ जलचरथलचरन  
 भचरनाना॥ जेजउचेतनजीवजहाना॥ मतिकीरतिग  
 तिभुतिभलाई॥ जबजेहियतनजहांजेहिपाई॥ सोजान  
 बसतसंगप्रभाऊ॥ लोकझंवेदनआनउपाऊ॥ विनुस  
 तसंगविवेकनहोई॥ रामकृपाविनुसुलभनसोई॥ सत  
 संगतिमुदमंगलमूला॥ सोइफलसिधिसबसाधनफू  
 ला॥ शठसुथरहिंसतसंगतिपाई॥ पारसपरशिऊथा  
 तसोहाई॥ विधिवशासुजनऊसंगतिपरही॥ फणिम  
 णिसमनिजगुणश्रुतसही॥ विधिहरिहरकविकोविद  
 बाणी॥ कहतसाधुमहिंमासऊचाणी॥ सोमोहिसनक  
 हिजातनकैसें॥ शाकवणिकमणिगुणगणजैसें॥  
 दोहा॥ बंदोसन्तसमानचित हितशनहितनहिर्वउ मंज



रामा०  
यवा  
३

लिं॥५॥ सन्त सरलचित्त जगतहित जानि सुभाव सनेइ ॥

गत शुभसुमनजिमिसमसुगोथकरदोउ१

बालविनयसुनिकरि कृपारामचरणरतिदेइ ॥६॥ चौ

पाई॥ बद्धरिबन्दिखलगाणसतिभाए ॥ जेबिनुकाजदा

हिनेवापें ॥ परहितहानिलाभजिन्हकेरे ॥ उजरेहर्षवि

सुनतकेहतपरअवनअवाही ज्योएपुशेषसुसजगमाही ५

षादवसेरे ॥ हरिहरयशाराकेशराइसे ॥ परअकाजभ

टसहसबाइसे ॥ जेपरदोषलखहिंसहसोखी ॥ परदि

तवृत्तजिनकेमनमाखी ॥ तेजकृणानुरोषमहिशेषा ॥

अवअवगुणधनधनिकथनेशा ॥ उदयकेतसमहितस

बहीके ॥ ऊम्भकराणसमसोवतनीके ॥ परअकाजल

गितनुपरिहरही ॥ जिमिहिमउपलकृषीदलगरही ॥

बन्दौखलजसशेषसरोषा ॥ सहसवदनवरणोपरदो

षा ॥ पुनिप्रणवोंएपुराजसमाना ॥ परअवसुनेसहस

दसकाना ॥ बद्धरिशक्रसमविनवोंतेही ॥ सन्ततसुरानी

कहिं तजेही ॥ वचनवज्रजेहिंसदापियाग ॥ सहसनय

नपरदोषनिहाग ॥ दोहा ॥ उदासीनअरिमित्रहितसुनत

जरहिंखलरीति ॥ जानिपाणियुगजोरिकरिविनतीक

रोसप्रीति ॥१०॥ चौपाई॥ मैंअपनीदिशिकीन्हनिहोग ॥



तिननिजओरनलाउवभोरा॥ वायसपालियअतिअनु  
रागा॥ होहिंनिरामिषकबडंकिकागा॥ बन्दोसन्तअ  
सज्जनचरणा॥ दुखप्रदउभयवीचककुवंरणा॥ बिकु  
रतएकप्राणहरिलेही॥ मिलतएकदारुणादुखदेही  
उपजहिंएकसंगजलमाही॥ जलजजोंकजिमिगुण  
विलगाही॥ सथासरासमसाधुअसाधू॥ जनकएक  
जगजलधिअगाधू॥ भलअनमलनिजनिजकरतूती  
लहतसयशअपलोकविभूती॥ सथासथाकरसरस  
रिसाधू॥ गरलअनलकलिमलसरिव्याधू॥ गुणअवगु  
णजानतसबकोई॥ जोजेहिंभावनीकतेहिसोई॥ दोहा॥  
भलोभलाईपैलहहिंलहहिंनिचाईनीच॥ सथासराही  
अमरतागरलसराहीमीच॥ १॥ चौपाई॥ खलगहअगुण  
साधुगुणागाहा॥ उभयअपारउदधिअवगाहा॥ तेहितें  
ककुगुणदोषवखाने॥ संगहत्यागनविनुपहिचाने  
भलेउपोचसबविधिउपजाए॥ गणिगुणदोषवेदविल  
गाए॥ कहहिंवेदइतिहासप्राणा॥ विधिप्रपञ्चगुणअव  
गुणसाना॥ उः खसखपापप्राणदिनराती॥ साधुअसा



रामा०  
वा०  
५

धुसजातिऊजाती॥ दानवदेवऊंचअरुनीच॥ अमियस  
जीवनमाऊरमीच॥ मायाब्रह्मजीवजगदीशा॥ लक्षअ  
लक्षरङ्गअवनीशा॥ काशीमगहसुरसरिकर्मनाशा॥  
मरुमारवमहिदेवगवासा॥ स्वर्गनरकअनुरागविगागा॥  
निगमागमगुणदोषविभागा॥ दोहा॥ जउचेतनगुण  
दोषमयविश्वकीन्हकरतार॥ सन्तहेसगुणगहहिंय  
यपरिहरिवारिविकार॥ १२॥ चौपाई॥ असविवेकजोदे  
हिंविधाता॥ तबतजिदोषगुणहिंमनराता॥ कालसुभा  
वकर्मवरिआई॥ भलेउप्रकृतिवशचूकभलाई॥ सोसुथा  
रिहरिजनजिमलैहंही॥ दलिदुखदोषविमलयशादेहंही॥  
खलऊंकरहिंमलपाइससंग॥ मिटहिंनमलिनसुभावअ  
भंग॥ करिसुवेषजगवंचकजेऊ॥ वेषप्रतापपूजियततेऊ  
उपरहिअन्ननहोहिंनिबाऊ॥ कालनेमिजिमिगवणारा  
ऊ॥ कीयेऊवेषसाधुसनमानू॥ जिमिजगजामवतहनु।  
मानू॥ हानिऊसंगससङ्गगतिलाहू॥ लोकऊंवेदविदि  
तसबकाहू॥ गगनचढेरजपवनप्रसङ्गा॥ कीचरुमिलरु  
नीचजलसङ्गा॥ साधुअसाधुसदनशुकशारी॥ समिरहिं



रामदेहिं गंगा गारी ॥ धूम ऊ संगतिका रिख होई ॥ लिखि  
 यपुराण मंजु मसि सोई ॥ सोइ जल अनल अनिल संवाता  
 होइ जल दजग जीव न दाता ॥ दोहा ॥ ग्रह भेष जं जल पव  
 न पट पाइ ऊ योग सुयोग ॥ होइ ऊ वस्तु सुवस्तु जगल ख  
 हिं सुलक्षण लोग ॥ १३ ॥ सम प्रकाश तम पाखंडु ऊ नाम  
 भेद विधिकी न्ह ॥ शशि पोषक शोषक समुक्ति जग यश  
 अपयश दी न्ह ॥ १४ ॥ ज उचेतन जग जीव जे सकल राम मय  
 जानि ॥ बन्दो सब के पद कमल सदा जोरियुग पाणि ॥ १५  
 देव दनु जन रना गख गप्रेत पितर गन्धर्व ॥ बन्दो किन्नर  
 रजनि चर कृपा करइ अब सर्व ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ आकर चारि  
 लाख चौ रासी ॥ जाति जीवन भजल थल वासी ॥ सी यश  
 ममय सब जग जानी ॥ करों प्रणाम जोरियुग पाणी ॥ जा  
 नि कृपा करि किङ्कर मोइ ॥ सब मिलि करइ क्काडि कुल  
 कोइ ॥ निज बल बुद्धि भरो समो दिनांही ॥ तातें विनय  
 करउ सब पाही ॥ करण चहोर चुपति गुण गाहा ॥ लघु  
 मति मोरि चरित अब गाहा ॥ सूजन एको अङ्ग उपाऊ ॥  
 मम मति रंक मनोरथ राऊ ॥ मति अति नीच ऊंच रुचि  
 आक्की ॥ चाहिये अभिय जग जुरै न काक्की ॥ तमि देहिं स



रामा०  
बा०  
५

जनमोरिछिछाई॥ सुनिहहिं बालवचनमनलाई॥ जौ बा  
लककहंतो तरिवाता॥ सुनिहंसुदितमनपितग्रुमाता  
हंसिहंसिहं कुरकुटिलकुविचारी॥ जेपरदूषणभूषणथा  
री॥ निजकवितकेहिलागननीका॥ सरसहोउअथवाअ  
तिफीका॥ जेपरभाणितसुनतहरषाही॥ तेवरप्ररुषव  
इतजगनाही॥ जगबइनरसरितसमभाई॥ जेनिजबा  
छिवछहिंजलपाई॥ सजनसुकृतसिंधुसमकोई॥ देखि  
पूर्णविधुवाछहिंजोई॥ दोहा॥ भागकोटअभिलाषवउ  
करउएकविस्वास॥ पैहहिंसखसुनिसजनजनखल  
करिहेंउपहास॥ १०॥ चौपाई॥ खलपरिहासहोइहितमो  
रा॥ काककहहिंकलकंठकठोरा॥ हंसहिंबकदादुरचा  
तकसी॥ हंसहिंमलिनखलविमलबातकसी॥ कवितरसि  
कनरामपदनेऊ॥ तिन्हकहंसखदहासपरसपऊ॥ भा  
षाभाणितमोरिमतिभोरी॥ हंसिवेयोगहंसोनहिखो  
री॥ प्रभुपदप्रीतिनसामुझीनीकी॥ तिन्हहिंकयास  
निलागिरिफीकी॥ हरिपदरतमनमतिनऊतरकी॥  
तिन्हकहंसधुरकथारबुवरकी॥ रामभक्तिभूषितजि  
यजानी॥ सुनिहंसिहंसजनसराहिसबाणी॥ कविन



होउं नहि वचन प्रवीणा ॥ सकल कला सब विद्या हीना ॥  
 आखर अर्थ अलंकृत नाना ॥ कुन्द प्रबन्ध अनेक विधाना ॥ भा  
 व भेद रस भेद अणारा ॥ कवित दोष गुण विवथ प्रकारा ॥ कवि  
 त विवेक एक नही मोरे ॥ सत्य कहों लिखिका गद कोरे ॥ दो  
 हा ॥ भणित मोरि सब गुणारहित विष्व विदित गुण एक ॥  
 सो विचारि सुनिहं हिंसु मति जिन्ह के विमल विवेक ॥ १८ ॥ चौ  
 पाई ॥ एहि महं रघुपति नाम उदास ॥ अति पावन पुराण अक  
 तिसारा ॥ मंगल भवन अमंगल हारी ॥ उमा सहित जेहि ज  
 पुत्रि पुरारी ॥ भणित विचित्र सक विवृत जोऊ ॥ राम नाम  
 विनु सोहन सोऊ ॥ विधु वदनी सब भांति संवारी ॥ सोहन व  
 सन विनावर नारी ॥ सब गुणारहित ऊक विवृत बाणी ॥ रा  
 म नाम जस अंकित जानी ॥ सादर कह हिंसु नहिं बुधता ही  
 मथुकर सरिस सन्त गुण ग्राही ॥ यदपि कवित रस एकोना  
 ही ॥ राम प्रताप प्रगट यहि माही ॥ सो भरोस मोरे मन आवा  
 केहिन सुसङ्ग बड पप न पावा ॥ धूम हंत जै सहज कर आई  
 अगार प्रसङ्ग सग न्यवसाई ॥ भणित भदे सब स्त भलिवरणी  
 राम कथा जग मंगल करणी ॥ कुन्द ॥ मङ्गल करणी क ।



रामा०  
वा.  
६

लिमलहरणीतलसीकथारचुनायकी॥ गतिऊरकवि  
तासरितकीज्योंसरितपावनपायकी॥ १॥ प्रभुसुयशसंग  
तिमणितभलिहोइहिसुजनमनभावनी॥ भवअङ्गभूति  
मसानकीसुमिरतसहावनपावनी॥ २॥ दोहा॥ प्रियलाग  
हिसुतिसबन्दिममभणितरामयशसंग॥ दारुविचारुकि  
करइकोउबन्दिमलयप्रसंग॥ ३॥ श्यामसुरभिपयवि  
शदअतिगुणदकरहिंसनपान॥ गिरासाम्यसियरामय  
शागावहिंसनहिंसुजान॥ ४॥ चौपाई॥ मणिमाणिकसु  
क्ताकुविजैसी॥ अहिरिगिरिगजशिरसोइनतैसी॥ नृपकि  
रीटतरुणीतनुपाई॥ लहहिंसकलशोभाअधिकारि॥ तै  
सेहिंसुकविकवितबुधकरहंही॥ उपजहिंसनतअनतकु  
विलहंही॥ भक्तिहेतुविधिभवनविहारि॥ सुमिरतशारद  
आवतिथारि॥ रामचरितसरविनुअन्हवाये॥ सोअमजाइ  
नकोटिउपाये॥ कविकोविदअसहृदयविचारी॥ गावहि  
हरिगुणकलिमलहारी॥ कीन्देप्राकृतजनगुणगाना॥  
शिरधुनिगिरालागिपकिताना॥ हृदयसिंधुमतिसीपस  
माना॥ स्वातीशारदकहहिंसुजाना॥ जौवरषैवरवारिवि



चाह ॥ होहिं कवित मुक्तामणिचाह ॥ दोहा ॥ युक्तिवेधिपु  
 निपोहहिं रामचरितवरताग ॥ यहिरहिं सजनविमलउरशो  
 भाअतिअनुराग ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ जेजनमेकलिकालकराला  
 करतबवायसवेषमराला ॥ चलतऊपंथवेदमगकांडे ॥ क  
 पटकलेवरकलिमलभांडे ॥ वंचकभक्तकहाइरामके ॥ कि  
 दूरकंचनकोहिकामके ॥ तिनमहप्रथमरेखजगमोरी ॥  
 थिकयरमध्वजधंयुकथोरी ॥ जौअपनेअवगुणसबकहऊं  
 वाजैकथापारनहिलहऊं ॥ तातेंमेंअतिअलपवखाने ॥ थो  
 रेमहंजानिहहिसयाने ॥ समुजिविविधिविधिविनतीमोरी  
 कोउनकथासुनिदैइहिलोरी ॥ एतेऊंपरकरिहहिंजेशंका  
 मोहतेंअधिकतेजउमतिरेका ॥ कविनहोउनहिचतरकहा  
 ऊं ॥ मतिअनुरूपरामगुणगाऊं ॥ कहंरचुपतिकेंचरितअ  
 पारा ॥ कहंमतिमोरिनिरतसंसार ॥ जेहिमारुतगिरिमेरु  
 उडाही ॥ कहइतलकेहिलेखेमाही ॥ समुजतअमितराम  
 प्रभुताई ॥ करतकथामनअतिकदराई ॥ दोहा ॥ शारदशेष  
 महेशविधियागमनिगमपुराण ॥ नेतिनेतिकहिजासु  
 गुणकरहिंनिरन्तरगान ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ सबजानतप्रभुप्रभु  
 तासोई ॥ तदपिकहेविनुरहानकोई ॥ तहांवेदअसकारणरा



रामा०  
बा०

षा॥ भजनप्रभावभांतिबद्धभाषा॥ एकअनीहअत्रपअनामा  
अजसच्चिदानन्दपरधामा॥ व्यापकविश्वरूपभगवाना॥ तिहिं  
थरिदेहचरितकृतनाना॥ सोकेवलभक्तनहितलागी॥ पर  
मकृपालप्रणतअनुरागी॥ जेहिजनपरममताअरुकोऊं॥  
तेहिकरुणाकरकीन्हनकोऊ॥ गईबहोरिगरीबनेवाजू॥  
सरलसवलसाहिवरचुराजू॥ बुधवरणहिंहरियशअसजा  
नी॥ करणपुनीतसुफलनिजबाणी॥ तेहिवलमेंरचुपतिगु  
णागया॥ कहिहोनाश्रमपदमाया॥ मुनिहप्रथमहरि  
कीरतिगई॥ तिहिंमगुचलतसुगममोहिभाई॥ दोहा॥ अ  
तिअणारजेसरितवरज्योत्पसेतकराहिं॥ चढिपिपीलिका  
परमलचुविनुअमपारहिजाहिं॥ चौपाई॥ पहिप्रकारबल  
मनहिंछाई॥ करिहोरचुपतिकथासुहाई॥ व्यासआदिकवि  
पुंगवनाना॥ जिन्हसादरहरिचरितवाखाना॥ चरणकमल  
बन्दोसबकेरे॥ पुरबद्धसकलमनोरथमेरे॥ कलिकेकविन  
करौंपरणामा॥ जिनवरणोरचुपतिगुणाग्रामा॥ जेप्राकृतक  
विपरमयाने॥ भाषाजिन्हहरिचरितवाखाने॥ भएजेअरुहिंजे  
जेहोईहैंआगे॥ प्रणवोंसबहिकपटसवत्यागे॥ होऊप्रसन्न  
देऊवरदान॥ साधुसमाजभणितसनमान॥ जोप्रबन्धबुध



नहिआदरही ॥ सोअमवादिवालकविकरही ॥ कीरतिभणि  
 तभूतिभलिसोई ॥ सरसरिसमसबकरहितहोई ॥ रामसकी  
 रतिभणितभदेसा ॥ असमझुसअसमोहिअंदेसा ॥ तहरी  
 कृपासुलभसोउमोरे ॥ सिअनिसहापनिटाटपदोरे ॥ करहु  
 अउग्रहअसजियजानी ॥ विमलयषाहिअनुसरसुबाणी  
 दोहा ॥ सरलकवितकीरतिविमलसोअदरदिसजान ॥ स  
 हजबयरविसराश्रिपुजोसुनिकरहिवखान ॥ २४ ॥ सोनसोई  
 विउविमलमतिमोहिमतिबलअतिथोर ॥ काइकृपाहरिय  
 णकहोपुनिप्रनिकरोंनिहोर ॥ २५ ॥ कविकोविदरचुवरचरि  
 तमानसमंजुमराल ॥ बालविनयसुनिसुरुचिलखिमोपरहो  
 इकृपालु ॥ २६ ॥ सोरठा ॥ बन्दोंमुनिपदकंजरामायणजिननि  
 र्मयउ ॥ सावरसुकोमलमंजुदोषरहितदुषणसहित ॥ २७ ॥  
 बन्दोचारिइवेदभववारिथिवोहितसरिस ॥ जिनदिनसप  
 नेइवेदवरणातरनुपतिविशदयषा ॥ २८ ॥ बन्दोंविधिपदरे  
 णभवसागरजिन्हकीन्दयह ॥ सन्तसुथाषाशियेउप्रगटे  
 खलविषवारुणी ॥ २९ ॥ दोहा ॥ विबुधविप्रबुधगुरुचरण  
 बन्दिकहोंकरजोरि ॥ होइप्रसन्नप्रबद्धसकलमंजुमनोर  
 यमोरि ॥ ३० ॥ चोपाई ॥ पुनिबन्दोंणरदसरसरिता ॥ युगल

सुभाषी



रामा०  
दा०  
८

पुनीतमनोहरचरिता॥ मज्जनपानपापहरणका॥ कहतसु  
नतएकहरअविवेका॥ गुरुपितृमातृमहेशभवानी॥ प्रणामों  
दीनबंधुदिनदानी॥ सेवकस्वामीसाखासियपियके॥ हितनि  
रुपाधिसबविधितलसीके॥ कलिविलोकिजगदितहरगि  
रिजा॥ सावरमंत्रजालजिनसिरजा॥ अनमिलआखरअरथ  
नजाए॥ प्रगटप्रभावमहेशप्रताए॥ सोमहेशमोपरअनुक  
ला॥ करहिंकषामुदमंगलमूला॥ समिरिशिवाशिवपाइ  
पसाऊ॥ वरणोंरामचरितचितचाऊ॥ भणितमोरिशिवकृ  
पाविभाती॥ शशिसमाजमिलिमनइसराती॥ जोयहकथा  
सनेहसमेता॥ कहिहहिंसुनिहहिंसमुजिसचेता॥ दोइह  
दिरामचरणअनुरागी॥ कलिमलरहितसुमंगलभागी॥  
दोहा॥ सपनेइसांचइमोदिपरजोहरगोरिपसाउ॥ तौफुरहो  
उजोकहउंसबभाषाभणितप्रभाउ॥ ३॥ चौपाई॥ बन्दोंअव  
थपरीअतिपावनि॥ सरजसरिकलिकलघनसावनि॥ प्रण  
वोंपरनरनारिवहोरी॥ ममताजिनपरप्रभुदिनयोरी॥ सिय  
निन्दकअवश्रोवनशाए॥ लोकविशोकवनाइबसाए॥ व  
न्दोंकोंशाल्यादिशिप्राची॥ कीरतिजासुसकलजगमाची  
प्रगटेउजहंरचुपतिशशिचारु॥ विषसखदखलकमलत



षारू ॥ दशरथराउसहितसबराणी ॥ सुकृतसुमंगलमू  
 रतिमानी ॥ करोंप्रणामकरममनवाणी ॥ करऊकृपासुत  
 सेवकजानी ॥ जिनहिविरचिवउभयउविधाता ॥ महिमा  
 अवधिरामपितमाता ॥ सोरठा ॥ बन्दोंअवधभुआलसत्य  
 प्रेमजेहिरामपद ॥ विकुरतदीनदयालप्रियतनुवृणाउव  
 परिहरेउ ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ प्रणवोंपरिजनसहितविदेह ॥  
 जाहिरामपदगूढसनेह ॥ योगभोगमहंराखेउगोई ॥ रा  
 मबिलोवतप्रगटेउसोई ॥ प्रणवोंप्रथमभरतकेचरणा ॥  
 जासुनेमब्रतजाइनबरणा ॥ रामचरणपंकजमनजासू  
 लब्धमधुपश्वतजैनपासू ॥ बन्दोंलक्ष्मणपदजलजाता  
 शीतलसुभगभक्तसुखदाता ॥ रघुपतिकीरतिविमलप  
 ताका ॥ दाउसमानभयेउयसजाका ॥ शेषसहसशीसज  
 राकारणा ॥ जोअवतरेउभूमिभयदरणा ॥ सदासोसाउकू  
 लरऊमोपर ॥ कृपासिन्धुसौमित्रगुणाकर ॥ रिपुसूदनप  
 दकमलनमामी ॥ शूरसुशीलभरतअनुगामी ॥ महावी  
 रविनबोहनुमाना ॥ रामजासयशआप्रवखाना ॥ ३६ ॥ अ  
 ऊकी ॥ ३७ ॥ चौपाईपर्यन्तदोषककथाहै ॥ सोरठा ॥ बन्दोंप  
 वनऊमार ॥ लवनपावकज्ञानवन ॥ जासूहृदयआगार



रामा०

बी०

२

१

वसहिंरामसरचायथर॥३३॥चौपाई॥कपिपतिऋतनि  
शाचरराजा॥अंगदादिजेकीशसमाजा॥बन्दोंसबकेच  
रणसहाये॥अथमशरीररामजिनपाये॥रघुपतिचरणउ  
पासकजेते॥खगमृगसरनरअसरसमेते॥बन्दोंपदसरो  
जसबकेरे॥जेबिनुकाजरामकेचेरे॥शुकसनकादिव्यास  
मुनिनारद॥जेमुनिवरविज्ञानविशारद॥प्रणवोंसबहिंथ  
रणिथरिशीशा॥करऊकृपाजनजानिमुनीशा॥जनक  
सुताजगजननीजानकी॥अतिशयप्रियकरुणानिधान  
की॥ताकेपुगपदकमलमनाऊं॥जासकृपानिरमलमति  
पाऊं॥पुनिमनवचनकर्मरघुनायक॥चरणकमलबन्दों  
सबलायक॥राजिवनयनथरेंथउसायक॥भक्तिविपत्ति  
भजनसखदायक॥दोहा॥गिराअर्थजलवीचिसमकहि  
यतभिन्ननभिन्न॥बन्दोंसीतारामपदजिनहिंपरमपटा  
खिन्न॥३४॥चौपाई॥बन्दोंरामनामरघुवरकौ॥हेतकृपा  
नुभानुहिमकरकौ॥विधिहरिहरमयवेदप्राणसो॥अ  
गुणअनूपमगुणानिधानसो॥महामंत्रजोउजपतमहेष्ट  
काशीमुक्तिहेतउपदेष्ट॥महिमाजासुजानगणराऊ॥  
प्रथमपूजियतनामप्रभाऊ॥जानआदिकविनामप्रताप॥



भयउसिद्धकरिउलटाजायू॥ सहस्रनामसमस्तनिशिव  
 बाणी॥ जपिजेबीजसुसंगभवानी॥ हरषेहेतहरिहरही  
 कौ॥ कियभूषणातियभूषणातीकौ॥ नामप्रभाउजानशि  
 वनीकौ॥ कालकूटफलदीन्हृमीकौ॥ दोहा॥ वरषाअ  
 तरचुपतिभगतितलसीशालिसदास॥ रामनामबरबर  
 णायुगप्रावणभादोंमास॥ ३५॥ चौपाई॥ आखरमधुरमनो  
 हरदोऊ॥ वरणाविलोचनजनजियजोऊ॥ सुमिरतसुल  
 भसखदसबकाहू॥ लोकलाजपरलोकनिबाहू॥ कहत  
 सुनतसुमिरतसुदिनीके॥ रामलखनसमप्रियतलसीके  
 वरणातवरणप्रीतिविलगाती॥ ब्रह्मजीवसमसहजसंघाती  
 नरनारायणसरिससुभ्राता॥ जगपालकविशेषिजनज्ञाता  
 भक्तिसुतियकलकरणाविभूषण॥ जगहितहेतविमल  
 विभूषण॥ खादुतोषसमसगनिसुधाके॥ कमठशेषसम  
 धरवसुधाके॥ जनमनमंजुकज्जमथुकरसे॥ जीहजशोम  
 तिहरिहलधरसे॥ दोहा॥ एककूटएकमुकुटमणिसबवर  
 णानिपरजोउ॥ तलसीरचुवरनामकेवरणविराजतदोउ॥  
 चौपाई॥ समुजतसरसनामअरुनामी॥ प्रीतिपरस्परप्रभु  
 अनुगामी॥ नामरूपदृशउपायी॥ अकथअनादिसमसु



रामा०  
वा०  
१०

ऊसमायी ॥ कोवउछोटकहतअपराध ॥ सनिगुणभेदस  
मुजिहैसाध ॥ देखियरूपनामअपीना ॥ रूपज्ञाननहिना  
मविहीना ॥ रूपविशेषनामविनुयाने ॥ करतलगतनपर  
हिंपहिचाने ॥ समिरियनामरूपविनुदेखे ॥ आवतहृदय  
सनेहविशेषे ॥ नामरूपगतिअकणकहानी ॥ समुजतस  
खदनपरतिवखानी ॥ अगणसगुणविचनामससारवी ॥  
उभयप्रबोधकचतरदुभावी ॥ दोहा ॥ रामनाममणिदीप  
थरुजीहदेहरीदार ॥ तलसीभीतरवाहिरोजोचाहसिउ  
जियार ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ नामजीहजपिजागहिंयोगी ॥ विर  
तिविचारप्रपञ्चवियोगी ॥ ब्रह्मसखहिंअनुभवहिंअरूपा  
अकणअनामयनामनीरूपा ॥ जानाचहहिंगूढगतिजेऊ  
नामजीहजपिजानहिंतेऊ ॥ साथकनामजपहिंलयलाये  
होंहिंसिद्धअणिमादिकपाये ॥ जपहिंनामजनआरतभा  
री ॥ मिटहिंऊसंकटहोहिंसखारी ॥ रामभक्तजगचारि  
प्रकारा ॥ सकृतीचारिउग्रनवउदार ॥ चंद्रचतरनकहं  
नामअथारा ॥ ज्ञानिप्रभुहिविशेषिपियारा ॥ चंद्रयुगच  
ंद्रश्रुतिनामप्रभाऊ ॥ कलिविशेषनहियानउपाऊ ॥ दो  
हा ॥ सकलकामनाहीनजोरामभक्तिरसलीन ॥ नामप्रेम



पियुषहृदतिनङ्गे किये मन मीन ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ अगुणसगु  
 णद्वौ ब्रह्मसत्त्वा ॥ अकथ्य अगाथ अनादि अनूपा ॥ मोरे मत  
 वउनाम दुइतैं ॥ कीये जेहि युगनि जव सबूतैं ॥ प्रौढसजन  
 जन जानहिं जनकी ॥ कहउं प्रतीति प्रीति रुचि मनकी ॥ एक  
 दारुगति देखिय पकू ॥ पावक सम युग ब्रह्म विवेकू ॥ उभय अ  
 गम युगसगम नामतैं ॥ कहउं नाम वउ ब्रह्म रामतैं ॥ व्याप  
 क एक ब्रह्म अविनाशी ॥ सतचेतन वन आनन्द राशी ॥ असप्र  
 भुहृदय अकृत अविकारी ॥ सकल जीव जगदीन दुखारी ॥ रा  
 म निरूपम नाम यतनतैं ॥ सो प्रगटत जिमि मोल रतनतैं ॥  
 दोहा ॥ निर्गुण तें रूहिं भांति वउनाम प्रभाव अपार ॥ कहउं ना  
 म वउ रामतैं निज विचार अनुसार ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ राम भक्त  
 हित नरतनुधारी ॥ सहि संकट किय साधु सखारी ॥ नाम स  
 प्रेम यत अनयासा ॥ भक्त हों हिं मुदमंगल वासा ॥ राम एक  
 ताप सतियतारी ॥ नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥ अवि  
 हित राम सकेत सताकी ॥ सहित सेन सुत कीन्ह विवाकी  
 सहित दोष दुख दास दुराशा ॥ दल उनाम जिमि रवि निशि  
 नाशा ॥ भञ्जे उराम आपु भवचापू ॥ भव भय भञ्जन नाम प्रता  
 प ॥ दाउ कवन प्रभु कीन्ह सहावन ॥ जन मन अमित नाम कि



रामा०  
बा०  
११

यपावन॥ निशिचरनिकरदलेखुनन्दन॥ नामसकलक।  
लिकलुषनिकन्दन॥ दोहा॥ शेवरीगीदससेवकनिसुगति  
दीन्दरघुनाथ॥ नामउथारेअमितखलवेदविदितगुणागा  
थ॥ ४०॥ चौपाई॥ रामसुकंदविभीषणादोऊ॥ राखैशरण।  
जानसबकोऊ॥ नामअनेकगरीबनिवाजै॥ लोकवेदवरवि  
रदविराजै॥ रामभालुकपिकटकबटोरा॥ सेतहेतअमा  
कीन्दनयोरा॥ नामलेतभवसिंधुसखाही॥ करऊविचार  
सजनमनमाही॥ रामसऊलरणावणामारा॥ सीयसहि  
तनिजपुरपगुथारा॥ राजारामअवथरजथानी॥ गावतगु  
णसरमुनिवरबाणी॥ सेवकसमिरतनामसप्रीती॥ विउ  
अमप्रबलमोहदलजीती॥ फिरतसनेहमगनसखअप  
नै॥ नामप्रसादशोचनहिसपनै॥ दोहा॥ ब्रह्मरामतेनामव  
उवरदायकवरदानि॥ रामचरितशतकोटिमहंलियमहे  
शजियजानि॥ ४१॥ चौपाई॥ नामप्रसादशंभुअविनाशी॥  
साजअमङ्गल॥ मङ्गलराशी॥ अकसनकादिसाधुमुनि  
योगी॥ नामप्रसादब्रह्मसखभोगी॥ नारदजानेउनामप्रता  
पू॥ जगप्रियपरिहरिहरिप्रियप्रापू॥ नामजगतप्रभुकि  
नूप्रसाद॥ भक्तिशिरोमणिभेप्रहलाह॥ भ्रवसगलानिजपे



उहरिनाम॥ पायेउअचलअनुपमवाम॥ समिरिपवनसत  
 पावननाम॥ अपनेवशकरिराखेउराम॥ अपरअजामिलग  
 जगणि काऊ॥ भयमुक्तहरिनामप्रभाऊ॥ कहउंकहोलगि  
 नामवडाई॥ रामनशकहिनामगुणागाई॥ दोहा॥ नामरा  
 मकोकल्पतरुकलिकल्याणनिवास॥ जोसमिरतभयो  
 भोगतेंतलसीतलसीदास॥ ४२॥ चौपाई॥ चहुंयुगतीनिका  
 लतिहुंलोका॥ भयनामजपिजीवविशोका॥ वेदपुराणा  
 सन्तमतयह॥ सकलसकृतफलरामसनेह॥ ध्यानप्रथम  
 युगमखविधिहजे॥ हापरपरितोषतप्रभुहजे॥ कलिकेवा  
 लमलमूलमलीना॥ पापपयोनिधिजनमनमीना॥ नाम  
 कामतरुकालकराला॥ समिरतशमनसकलजझाला॥  
 रामनामकलिअभिमतदाता॥ हितपरलोकलोकपितमा  
 ता॥ नहिंकलिकर्मनयोगविवेक॥ रामनामअवलम्बनएक  
 कालनेमिकलिकपटनिधान॥ नामसमतिसमरथहनुमा  
 न॥ दोहा॥ रामनामनरकेसरीकनककशिपुकलिकाल॥  
 जापकजनप्रह्लादजिमिपालहिंदलिसुरशाल॥ ४३॥ चौ  
 पाई॥ भायऊभायअनखयालसहं॥ नामजपतमरुलदिशि  
 दशहुं॥ समिरिसोनामरामगुणागाथा॥ करौंनारवुनाथ

भेरी  
 २



रामा०  
वा०  
१२

12

हिंमाया॥ मोरिसुधारहिंसो सबभांती॥ जासुकुपानहिकुप  
अवाती॥ रामसुखामिऊसेवकमोसो॥ निजदिशिदेखिद  
यानिधिपोसो॥ लोकझंवेदसुसाहेबरीति॥ विनयसनत  
पहिचानतप्रीति॥ रानीगरीबग्रामनरनागर॥ पण्डितमू  
ढमलीनउजागर॥ सकविऊकविनिजमतिअनुहारी॥  
नृपहिंसराहतसबनरनारी॥ साथुसुजानसुशीलनृपाला  
ईशअंशभवपरमकृपाला॥ सुनिसनमानहिंसबहिसुबा  
णी॥ भनितभक्तिमतिगतिपहिचानी॥ यहप्राकृतमहि  
पालसुभाऊ॥ जानिशिरोमणिकोशलराऊ॥ रीऊतराम  
सनेहनिमोतैं॥ कोजगमन्दमलिनमतिमोतैं॥ दोहा॥ श  
ढसेवककीप्रीतिरुचिरखिहहिंरामकृपालू॥ उपलकिपूज  
लजानजेहिसचिवसुभटकपिभालू॥ ४४॥ होंऊंकहावत  
सबकहतरामसहतउपहास॥ साहेवसीतानाथसेसेवक  
तलसीदास॥ ४५॥ चौपाई॥ अतिबडिमोरिछिटाईखोरी॥ सु  
निअवनरकझंकाकसकोरी॥ समुजिसहमिमोहियपउर  
अपनै॥ सोशुधिरामकीनहनहिसपनै॥ सुनिअबलोकि  
सुचितचावचाही॥ भक्तिमोरिमतिस्वामिसराही॥ कहन  
नशाइहोइहियनीकी॥ रीऊतरामजानिजनजीकी॥ रह



तिनप्रभुचितचुककियेकी॥ करतसुरतिसेवारहियेकी  
 जेहिअवसेउवाधजिमिबाली॥ फिरिसुकंठसोइकीन्ह  
 ऊचाली॥ सोइकरतततिविभीषणकेरी॥ सपनेइसो  
 नरामहियहेरी॥ तेभरतहिमेठतसनमाने॥ राजसभा  
 रघुवीरवाखाने॥ दोहा॥ प्रभुतरुतरकपिडारपरकियेते  
 आपुसमान॥ तलसीकडंनरामसेसाहेवशीलनिधान  
 ४६॥ रामनिकाईरावरीहैंसबहीकोनीक॥ जोयहसां  
 चीहैंसदातौनीकोतलसीक॥ ४७॥ यहिविधिनिजगु  
 णादोषकहिसबहिंबडरिशिरनाइ॥ वरणोंरघुवरवि  
 षादजससुनिकलिकलषनशाइ॥ ४८॥ चौपाई॥ याज्ञ  
 वलिकजोकथासुहाई॥ भरद्वाजमुनिवरहिसुनाई॥  
 कहिहैंसोइसम्बादवाखानी॥ सुनइंसकलसजनसु  
 खमानी॥ रांभुकीन्हयहचरितसुहावा॥ बडरिगुपा  
 करिउमोहिंसुनावा॥ सोइशिवकाकभुसुणिउहिंदीन्हा  
 रामभक्तिअधिकारीचीन्हा॥ तेहिसनयाज्ञवलिकपु  
 निपावा॥ तिन्हपुनिभरद्वाजप्रतिगावा॥ तेष्रोतावक्रा  
 समशीला॥ समदरशीजानहिंदरिलीला॥ जानहिंती  
 निकालनिजज्ञाना॥ करतलगतआमलकसमाना॥ ओ



रामा०  
वा०  
१३

13

रोजे हरिभक्तसुजाना॥ कहहिं सुनहिं समुजहिं विधिना  
ना॥ दोहा॥ मैं पुनि निजगुरुसनसुनी कथारुचिरऊरुखे  
त॥ समुजन हीत सुबालपनतव अतिरहे उंचेत॥ ४२॥  
ओतावक्तात्ताननिथि कथारामकी गूढ॥ किमिसमुजों  
मैं जीवज उकलि मलयसित विमूढ॥ ५०॥ चौपाई॥ तद  
पिकही गुरुवारहिं बारा॥ समुजियरी ककुमति अनुसा  
रा॥ भाषाबन्ध करव मैं सोई॥ मोरे मन प्रबोध जेहि होई॥ ज  
षा ककुबुधि विवेक बल मोरे॥ तस कहि हों हिय हरिके प्रे  
रे॥ निजसन्देह मोह भ्रम हरणी॥ करौं कथा भवसरिता तर  
णी॥ बुधविष्णामसकल जनरञ्जनि॥ रामकथा कलिक  
लुषविभञ्जनि॥ रामकथा कलिपन्नगभरणी॥ पुनि अ  
विवेक पावक कहं अरणी॥ रामकथा कलिकामदगाई॥  
सुजनसजीवन मुरि सहारै॥ सोरवसुधातल सुधातरङ्गि  
णि॥ भवभञ्जनि भ्रमभेक भुञ्जिणी॥ असुरसेन समन  
रकनिकन्दिनि॥ साधुविबुध ऊलहित गिरिनन्दिनी॥ स  
नसमाज पयोधिरमासी॥ विष्णुभारथर अचल तमासी॥  
यमगाणमुहमसिजगजमुनासी॥ जीवनसुखहेतु जउ  
काशी॥ रामहिं प्रिय पावनितल सीसी॥ तलसीदासहित



हिय झलसीसी ॥ शिवप्रियमेकलशैलसुतासी ॥ सकल  
 सिद्धिप्रदसंभूतिराशी ॥ सदगुणसुरगणअम्बअदितिसी  
 रक्तवरभक्तिप्रेमपरमितिसी ॥ दोहा ॥ रामकथामन्दाकि  
 नीचित्रकूटचितचारु ॥ तलसीसुभगसनेहवनसियरक्त  
 वीरविहारु ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ रामचरितचिन्तामणिचारु ॥  
 सन्तसुमतितियसुभगशिङ्गारु ॥ जगमंगलगुणग्राम  
 रामके ॥ दानिसुक्तिथनयर्मथामके ॥ सदगुरुज्ञानविराग  
 योगके ॥ विबुधवैद्यभवभीमरोगके ॥ जननिजनकसिय  
 रामप्रेमके ॥ बीजसकलव्रतधरमनेमके ॥ शमनपापस  
 न्तापशोकके ॥ प्रियपालकपरलोकलोकके ॥ सचिवस  
 भटभूपतिविचारके ॥ ऊम्भजलोभउदधिअपारके ॥ काम  
 कोहकलिमलकरिगणके ॥ केहरिशाबकजनमनवन  
 के ॥ अतिथिपूज्यप्रियतमपुरारिके ॥ कामदवनदारिद  
 वारिके ॥ मंत्रमहामणिविषयव्यालके ॥ मेढतकटिनऊ  
 अंकभालके ॥ हरणामोहतमदिनकरकरसे ॥ सेवकशा  
 लिपालजलथरसे ॥ अभिमतदानिदेवतरुवरसे ॥ सेवत  
 सुलभसखदहरिहरसे ॥ सकविशरदनममनउडुगाण  
 से ॥ रामभक्तजनजीवनधनसे ॥ सकलसकृतफलभूरिभो



रामा०  
बा०  
१५

गसे॥ जगद्वितनिरूपयि साधुलोगसे॥ सेवकमनमानस  
मरालसे॥ पावनरंगतरंगमालसे॥ दोहा॥ ऊपयऊतर्क  
ऊचालिकलिकपटदम्भपाषंड॥ दहनरामगुणग्रामजि  
मिईन्धनअनलप्रचंड॥ ५२॥ रामचरितराकेशकरसरसस  
खदसबकाङ्ग॥ सज्जनऊमुदचकोरचितद्वितविशेषव  
उलाङ्ग॥ ५३॥ चौपाई॥ कीन्हप्रअजेहिभांतिभवानी॥ जे  
द्विविधिशङ्करकहाबखानी॥ सोसबहेतकहवमेंगाई॥  
कथाप्रबन्धविचित्रबनार्थ॥ जिन्हयहकथासुनीनहिहोई  
जिनिआचर्यकरौसुनि सोई॥ कथाअलौकिकसुनहिं  
जेजानी॥ नहिआचर्यकरहिंअसजानी॥ रामकथाकी  
मितजगनाही॥ असप्रतीतिजिनकेमनमाही॥ नानाभां  
तिरामअवतारा॥ रामयणशतकोटिअपारा॥ कलयभे  
दहरिचरितसहाय॥ भांतिअनेकमुनीशानगाय॥ करिय  
नसंशयअसउरआनी॥ सुनियकथासादररतिमानी॥  
दोहा॥ रामअनन्तअनन्तगुणअमितकथाविस्तार॥ सु  
निआचर्यनमानिहहिंजिनकेविमलविचार॥ ५४॥ चौ  
पाई॥ इद्विविधिसबसंशयकरिहरी॥ शिरथरिगुरुपद  
पङ्कजधूरी॥ पुनिसबहीविनबौकरजोरी॥ करतकथा॥



जेहिलागनखोरी॥ सादरशिवहिंनार्थवमाया॥ बरणो  
 विशदरामगुणगाथा॥ सम्बतसोरहसैएकतीशा॥ करो  
 कथाहरिपदथरिशीशा॥ नोमीभौमवारमथुमासा॥ अव  
 थपुरीयहचरितप्रकासा॥ जेहिदिनरामजन्मप्रतिगा  
 वहिं॥ तीरथसकलतहाँचलिआवहिं॥ असुरनागाखग  
 नरमुनिदेवा॥ आयकरहिंरघुनायकसेवा॥ जन्ममहो  
 त्सवरचहिंसजाना॥ करहिंरामकलकीरतिगाना॥  
 दोहा॥ मज्जहिंसज्जनवृन्दवद्रूपावनसरजूतीर॥ जप  
 हिंरामथरिथ्यानउरसुंदरश्यामशरीर॥ ५५॥ चौपाई॥  
 दरशापरशमज्जनअरुपाना॥ हरैपापकहवेदपुराणा  
 नदीपुनीतअमितमहिमाअति॥ कहिनशकैशारदावि  
 मलमति॥ रामथामदापुरीसुहावनि॥ लोकसमस्तवि  
 दितजगपावनि॥ चारिखानिजगजीवअपारा॥ अवथ  
 तजैतनुनहिसंसार॥ सबविधिपुरीमनोहरजानी॥  
 सकलसिद्धिप्रदमंगलखानी॥ विमलकथाकरकीन्ह  
 अरम्भा॥ सुनतनशाहिंकाममददम्भा॥ रामचरितमा  
 नसयहनामा॥ सुनतअवगापाइयविश्रामा॥ मनक  
 रिविषयअनलबनजरही॥ होइसखीजौयहिसरपरही



रामा०  
वा०  
५५

15

रामचरितमानसमुनिभावन॥ विरचेउशम्भुसहावन  
पावन॥ विविधदोषदुखदारिद्र्यावनि॥ कलिऊचालिक  
लिकलुषनणावनि॥ रचिमहेशनिजमानसराखा॥ पाउ  
सुसमयशिवासनभाखा॥ तातेंरामचरितमानसवर॥ थ  
रेउनामहियहेरिहरविहर॥ कहोंकथासोउसखदसहा  
ई॥ सादरसनऊसजनमनलाई॥ दोहा॥ जसमानसजे  
हिविधिभयेउजगप्रचारजेहिहेत॥ अबसोइकहोंप्रसं  
गसबसुमिरिउमावृषकेत॥ ५६॥ चौपाई॥ शम्भुप्रसाद  
सुमतिहियऊलसी॥ रामचरितमानसकवितलसी॥  
करइमनोहरमतिअनुहारी॥ सजनसुचितसुनिलेऊ  
सुधारी॥ सुमतिभूमिथलहृदयअगाध॥ वेदपुराणउ  
दधिघनसाधू॥ बरषहिंरामसयशवरबारी॥ मथुरम  
नोहरमऊलकारी॥ लीलासगुणजोकहंदिंबखानी॥  
सोइसाक्षातकरैमलहानी॥ प्रेमभक्तिमोवरणिनजाई  
सोइमथुरतासुशीतलताई॥ सोजलसुकृतशालिहित  
होई॥ रामभक्तजनजीवनसोई॥ मेधामदिगतसोजल  
पावन॥ सिमिटिअवणमगुचलेउसहावन॥ भरेउस  
मानसथलहिथिराना॥ सखदशीतरुचिचारुचिराना



दोहा॥ सुदिसुन्दरसम्बादवरविरचेउबुद्धिविचारि॥ तेय  
 हपावनसुभगसरचाटमनोहरचारि॥ ५०॥ चौपाई॥ स  
 प्रप्रबन्धसुभगसोपाना॥ ज्ञाननयननिरखतमनमाना  
 रघुपतिमहिमाअगुनअवाथा॥ वरणावसोश्वरवारि॥  
 अगाथा॥ रामसीययशसलिलसुथासम॥ उपमाबीचि  
 विलासमनोरम॥ पुरश्निसवनचारुचौपाई॥ युक्तिमंजु  
 मणिसेपसुहाई॥ कुन्दसोरठासुन्दरदोहा॥ सोश्वर  
 रंगकमलकुलसोहा॥ अरथअनूपसुभावसभासा॥ १  
 सोश्वरागमकरन्दसुवासा॥ सकृतपुञ्जमंजुलअलि  
 माला॥ ज्ञानविरागविचारमराला॥ युनिअवरौकवि  
 तगुणाजाती॥ मीनमनोहरतेबहुभांती॥ अर्थधर्मकामा  
 दिकचारी॥ कहबज्ञानविज्ञानविचारी॥ नवरसजपत  
 पयोगविरागा॥ तेसबजलचरचारुतडागा॥ सकृती  
 साधुनामगुणागाना॥ तेविविजलविहङ्गसमाना  
 सन्तसभाचङ्गदिशिअम्बराई॥ अहाअतवसन्तसम  
 गाई॥ भक्तिनिरूपणविविधिविधाना॥ तमादयादु  
 मलताविताना॥ संयमनियमफूलफलजाना॥ हरि  
 पदरतिरसवेदवाखाना॥ ओरौकथाअनेकप्रसंगा॥ ते



रामा०  
बा०  
१६

तेईशुकपिकबडवरणविहंगा॥**दोहा**॥ पुञ्जपवाटिका।  
बागवनसुखसुविहंगविहारु॥ मालीसुमनसनेहजल  
सीचतलोचनचारु॥**५८**॥**चौपाई**॥ जेगांवहिंयहचरितस  
म्भारे॥ तेयहितालचतरराखवारे॥ सदासुनहिंसादरन  
रनारी॥ तेइसरवरमानसअधिकारी॥ अतिखलजैविष  
पीबककागा॥ यहिसरनिकटनजाहिंअभागा॥ शाम्बु  
कभेकसिवारसमाना॥ इहांनविषयकथारसनाना॥  
तेहिकारणआवतहियहारी॥ कामीकाकबलाकविचा  
री॥ आवतएहिसरअतिकठिनाई॥ रामकृपाविनुआइन  
जाई॥ कठिनऊसऊऊपंथकराला॥ तिन्हकेबचनव्या  
घहरिव्याला॥ गृहकारजनानाजझाला॥ तेइअतिदुर्ग  
मशैलविशाला॥ बनबडविषयमोहमदमाना॥ नदीऊ  
तर्कभयदूरनाना॥**दोहा**॥ जेअदाशंबलरहितनहिस  
ननकरसाथ॥ तिनकहंमानसअगमअतिजिनदिनप्रि  
यरमुनाथ॥**५९**॥**चौपाई**॥ जोकरिकषुजाइपुनिकोई॥ जा  
तहिंनौदजुआईहोई॥ जउताजाउविषमउरलागा॥ गय  
इनमजनपावअभागा॥ करिनजायसरमजनपाना॥  
फिरिआवैसमेतअभिमाना॥ जौबहोरिकोउपुछनआवा

रामकली  
३



सरनिन्दाकरिताहिबुजावा॥ सकलविचनव्यापहिंनहिंते  
 ही॥ रामकृपाकरिचितबहिंजेही॥ सोइसादरसरमजनक  
 रही॥ महाबोरचयतापनजरही॥ तेनरयहसरतजहिंन  
 काऊ॥ जिनकेंरामचरनभलभाऊ॥ जोनहाइचहयहिस  
 रुभाई॥ सोसतसंगकरोमनलाई॥ असमानसमानसचा  
 खचाही॥ भइकविबुद्धिविमलअवगाही॥ भयउहृदय  
 आनन्दउक्ताहू॥ उमगोउप्रेमप्रमोदप्रबाहू॥ चलीसुभग  
 कवितासरितासों॥ रामविमलयशजलभरितासों॥ स  
 रजूनामसुमंगलमूला॥ लोकवेदमतमंजुलकूला॥ न  
 दीपुनीतसुमानसनन्दिनी॥ कलिमलतटतरुमूलनिक  
 न्दिनी॥ दोहा॥ श्रोतात्रिविधिसमाजपुरशामनगरदुङ्गकू  
 ल॥ सन्तसभाअनुपमअवधसकलसुमंगल॥ ६०॥ चौ  
 पाई॥ रामभक्तिसरसरितेहिंजाई॥ मिलीसुकीरतिसरज  
 सुहाई॥ सानुजरामसमरयशपावन॥ मिलेउमहानदशो  
 णसुहावन॥ युगविचभक्तिदेवधुनिधारा॥ सोहतिसहि  
 तसुविरतिविचारा॥ त्रिविधतापत्रासकविमुहानी॥ राम  
 स्वतपसिंधुसमुहानी॥ मानसमूलमिलीसरसरिही॥ सु  
 नतसुजनमनपावनकरिही॥ विचविचकथाविविचवि



रामा०  
वा०  
१९

भागा॥ जनु सरिती रती रवन वागा॥ उमा महेश विवाह व  
राती॥ तेजल चर अगणित बझ भांती॥ रघु वर जन्म आनन्द  
वधाई॥ भव रत रंग मनोहर ताई॥ दोहा॥ बाल चरित चञ्चल  
धुके वन जवि पुल बझ रंग॥ नृप रानी परिजन सकुत मधु  
कर वारि विहंग॥ ६१॥ चौपाई॥ सोय स्वयम्बर कणा सहारै  
सरित सहावनि सो क्व विछारै॥ नदी नाव पटु प्रश्न अनेका॥  
केवट कुशल उत्तर स विवेका॥ सुनि अत्र कथन परस्पर  
होई॥ एथि कसमाज सोह सरि सोई॥ दोर थार भृगु नाथ  
रिसानी॥ घाट सब न्याराम वर बानी॥ सानु ज राम विवाह  
उकाहू॥ सो सुभ उमग सखद सब काहू॥ कहत सुनत  
हरष दि पुलकाही॥ ते सकृती मन मुदित नहाही॥ राम  
तिल कहित मंगल साजा॥ पर्व योग जनु जरे उ समाजा॥  
काइ ऊमति कै कयी केरी॥ परीजा सुफल विपति चनेरी  
दोहा॥ शमन अमित उत पात सब भरत चरित जय जाग॥  
कलि अचखल अब गुण कथन तेजल मलव ककाग॥ ६२॥  
चौपाई॥ कीरति सरित कङ्क अत्र त्ररी॥ समय सहावनि  
पावनि भूरी॥ हिम हिम शैल सुता शिव व्याहू॥ शिशिर सु  
खद प्रभु जन्म उकाहू॥ वरणा वराम विवाह समाज॥ सो सु

३



दमंगलमयऋतराज ॥ ग्रीष्मदुःसहसमवनगमनु ॥  
 पेंथकथाखरआतपपवन ॥ वर्षचोरनिशाचरगारी ॥ सु  
 रज्जलशालिसमंगकारी ॥ रामराजसुखविनयवडाई  
 विशदसुखदसोऽशरदसुहाई ॥ सतीशिरोमणिसिय  
 गुणगाथा ॥ सोऽगुणअमलअनूपमपाथा ॥ भरतसु  
 भावसुशीतलताई ॥ सदाएकरसवरणिनजाई ॥ दोहा ॥  
 अबलोकनिबोलनिमिलनिप्रोतिपरस्परहास ॥ भाय  
 पभलिचञ्चुकीजलमाथुरीनिवास ॥ ६३ ॥ चौपाई ॥ आ  
 रतिविनयदीनतामोरी ॥ लघुताललितसुवारिनथोरी  
 अदभूतसलिलसनतगुणकारी ॥ आशपिआसमनोम  
 लहारी ॥ रामसुप्रेमहिंषोषतपानी ॥ सकलकलिकल  
 षगलानी ॥ भवअमशोषकतोषकतोषा ॥ शामनडुरित  
 दुखदारिददोषा ॥ कामकोहमदमोहनशावनि ॥ विम  
 लविवेकविरागबढावनि ॥ सादरमजनपानकियेतें ॥  
 मिटहिंणपपरितापहियेतें ॥ जिनएहिंवारिनमानसथो  
 प ॥ तेकायरकलिकालविगोप ॥ तृषितनिरखिरविकर  
 भववारी ॥ फिरहिंमृगाजिमिजीवदुखारी ॥ दोहा ॥ मतिअ  
 न्हारसुवारिगुणगणमणिमनअन्हवा ॥ समिरिभवा



रामा०  
वा०  
१८

18

नीशंकरहिंकहकविकषासुहा३॥६४॥अवरनुपतिपद  
पंकहृदहियथरिपाइप्रसाद॥कहोंयुगलमुनिवर्यकर  
मिलनसुभगसम्बाद॥६५॥भरदाजजिमिप्रअकिय या  
जवलिकमुनिपा३॥प्रथममुखासम्बादसोइकहिहोंहे  
तबुजा३॥यहदोहादोपक॥चौपाई॥भरदाजमुनिवस  
हिंप्रयागा॥तिनहिंरामपदअतिअनुरागा॥तापसश  
मदमदयानिधाना॥परमारण्यपथपरमसुजाना॥माव  
मकरगतरविजवहो३॥तीरथपतिहिंआवसबको३॥दे  
वदनुजकिन्नरनरश्रेणी॥सादरमजहिंसकलत्रिवेणी  
पुजहिंमाथवपदजलजाता॥परसिअक्षयवटहर्षितगा  
ता॥भरदाजआश्रमअतिपावन॥परमरम्यमुनिवरमन  
भावन॥तहांहो३मुनिअधयसमाजा॥जाहिंजेमजनती  
रथराजा॥मजहिंशातसमेतउक्ताहा॥कहहिंपरस्पर  
हरिगुणगाहा॥दोहा॥ब्रह्मनिरूपणधर्मविधिवरणा  
हितत्वविभाग॥कहहिंभक्तिभगवन्तकीसंयुतज्ञानवि  
राग॥६६॥चौपाई॥एहिप्रकारभरिमकरनहाही॥पुनि  
सबनिजनिजआश्रमजाही॥प्रतिसम्बतअतिहो३अन  
न्दा॥मकरमजिगवनहिंसनिबुन्दा॥एकवारभरिमकर



नहाए॥ सब मुनीश आश्रम नि सिधाए॥ याज्ञवल्कि मुनि  
 परम विवेकी॥ भरद्वाज राखे पद टेकी॥ सादर चरण सरोज  
 पखारे॥ अति पुनीत आसन बैठा रे॥ करि पूजा मुनि सज सब  
 खानी॥ बोले अति पुनीत मृदु बाणी॥ नाथ एक संशय बड  
 मोरे॥ करत लवे दत सब तोरे॥ कहत मोहि लागत भयला  
 जा॥ जौ न कहौ बड होइ अकाजा॥ दोहा॥ सनत कहिं अस  
 नीति प्रभु प्रतिपु राणा मुनि गाव॥ होइ न विमल विवेक उर  
 गुरु सन कियें दु राव॥ ६०॥ चौपाई॥ अस विचारि प्रगटौ निज  
 मोह॥ हर ऊनाथ करि जन पर कोह॥ राम नाम कर अमित  
 प्रभावा॥ सनत पुराण उपनिषद गावा॥ सनत जपत शंभु  
 अविनाशी॥ शिव भगवान ज्ञान गुण राशी॥ आकर चारि  
 जीव जग अहं ही॥ काशी मरत परम पद लहं ही॥ सो पिरा  
 म महिमा मुनि राया॥ शिव उपदेश करत करि दाया॥ राम  
 कवन प्रभु अहं तो ही॥ कहिय बुजाइ कृपानिधि मोही॥ ए  
 कराम अवयेश ऊमारा॥ तिन कर चरित विदित संसारा॥  
 नारि बिरह दुख लहेउ अपारा॥ भयेउ रोष रण रावण मारा  
 दोहा॥ प्रभु सोइ राम कि अवरोउ जाहि जपत त्रिपुरारि॥ स  
 ताथाम सर्वज्ञ तम कहइ विवेक विचारि॥ ६८॥ चौपाई॥ जैसं



रामा०  
बी०  
२५

मिटैमोरभुमभारी॥ कहइ सो कथानाय विस्तारी॥ जाज  
बलिक बोले सुसुकाई॥ तमहिं विदितरचुपति प्रभु ताई॥  
रामभक्त तमकर्ममनवाणी॥ चतुराशु तम्हारि में जानी॥ वा  
हइ सुनै राम गुणगूढा॥ कीन्हें प्रश्न मनइ अति मूढा॥ ता  
त सुनइ सार मन लाई॥ कहउं राम की कथा सुहाई॥ महा  
मोहमहि शेष विशाला॥ राम कथा कलिकाल कराला  
राम कथा शशिकिरण समाना॥ सन्त चकोर करि हिंजे  
हि पाना॥ पे सें संशय कीन्ह भवानी॥ महादेव तब कहाव  
खानी॥ दोहा॥ कहों सोमति अनुहारि अब उमा शंभु सं  
वाद॥ भयउ समय जेहि हेतु जिंदि सुनु मुनि मिटहिं विषा  
द॥ ६५॥ चौपाई॥ एकवार त्रेता युग मांही॥ शंभु गये ऊमभज  
अविषांही॥ संग सती जगजननि भवानी॥ पूजे अविग्रवि  
लेश्वर जानी॥ राम कथा मुनिवर्य वखानी॥ सुनी महेशय  
रम सुख मानी॥ अविष्की हरि भक्ति सुहाई॥ कही शंभु अ  
धिकारी पाई॥ कहत सुनत रचुपति गुण गाथा॥ ककुदिन  
तहार देगिरि नाथा॥ मुनि सन विदामांगि त्रिपुरारी॥ चले  
भवन संग दत्त ऊमारी॥ तेहि अब सरभजन महिभारा॥ हरि  
रचुवंश लीन्ह अवतारा॥ पिता वचन तजि राज उदासी॥ दाउ



कवनविचरतअविनाशी॥**दोहा**॥ हृदयविचारतजातहरके  
 हिविधिदरशनहो॥ गुप्तप्रपञ्चवतरेउप्रभुगयेजानसबको  
 ३॥१०॥**चौपाई**॥ रावणामरणमनुजकरजाचा॥ प्रभुविधि  
 वचनकीनचहसांचा॥ जौनहिजाउंरहैपछितावा॥ करत  
 विचारनवनतबनावा॥ एहिविधिभएषोचवशाईशा॥ ता  
 हीसमयजाइदशशीसा॥ लीननीचमारीचहिसंगा॥ भय  
 ऊतरतसोइकपटकूरंगा॥ करिक्लमूढहरीवैदेही॥ प्र  
 भुप्रतापउरविदितनतेही॥ मृगबधिवंधुसहितहरिआए  
 आश्रमदेखिनयनजलक्वाए॥ विरहविकलनरेश्वरचु  
 राई॥ खोजतविपिनफिरतदोंभाई॥ कवहुंयोगवियोगन  
 जाके॥ देखाप्रगटविरहदुखताके॥**दोहा**॥ अतिविचित्रर  
 चुपतिचरितजानहिंपरमसुजान॥ जेमतिमन्दविमोहव  
 शहृदयथरहिंककुआन॥१॥**सोरठा**॥ शंकरउरअतिलोभ  
 सतीनजाननहिंमर्मसोई॥ तलसीदरशनलोभमनउरलो  
 चनलालची॥**चौपाई**॥ शंभुसमयतेहिंरामहिंदेखा॥ उप  
 जाहियअतिहर्षविशेषा॥ भरिलोचनकुविमिंधुनिहारी॥  
 ऊसमयजानिनकीन्हचिन्हारी॥ जयसच्चिदानन्दजगपा  
 वन॥ असकहिचलेउमनोजनर्षवन॥ चलेजातशिवस।



तीसमेता॥ पुनिपुनिपुलकितकृपानिकेता॥ सतीसोदशा  
 शम्भुकीदेखी॥ उरउपजासन्देहविशेषी॥ शंकरजगतबेद्य  
 जगदीशा॥ सुरनरमुनिसबनावतशीसा॥ तिन्हृत्पसुत  
 हिंकीन्हप्रणामा॥ कहिसच्चिदानन्दपरधामा॥ भयेमग  
 नकवितासविलोकी॥ अजङ्गप्रीतिउररहतिनरोकी॥ दो  
 हा॥ ब्रह्मजोव्यापकविरजअजअकलअनीहअभेद॥ सो  
 किदेहपरिहोइनरजाहिनजानतवेद॥ ७२॥ चौपाई॥ वि  
 सुजोसुरहितनरतनुधारी॥ सोउसर्वज्ञयथाविप्रगारी॥  
 खोजतशोकअज्ञरबनारी॥ ज्ञानधामश्रीपतिअसुरारी॥  
 शंभुगिरापुनिमृषानहोई॥ शिवसर्वज्ञजानसबकोई॥ अ  
 ससंशयमनभयउअपारा॥ होइनहृदयप्रबोधप्रचारा॥ य  
 यपिप्रगटनकहेउभवानी॥ हरअन्तरजामीसबजानी॥ सु  
 नङ्गसतीतवनारिसुभाऊ॥ संशयअसनपरियउरकाऊ॥  
 जासुकथाऊमजअधिगाई॥ भक्तिजासुमैमुनिहिंसुनाई  
 सोममउष्टुदेवरघुवीरा॥ सेवतजाहिसदामुनिधीरा॥ कृन्  
 मुनिधीरयोगीसिद्धसन्ततविमलमनजेदिधावही॥ कहि  
 नेतिनिगमपुराणाआगमजासुकीरतिगावही॥ सोरराम  
 व्यापकब्रह्मभुवननिकायपतिमायाधनी॥ अबतरेउअपने



भक्तहितनिजतंत्रनित्यरघुऊलमणी ॥ सोरठा ॥ लागनउर  
 उपदेशयदपिकहेउशिववारवऊ ॥ बोलेविहसिमहेशहरि  
 मायाबलजानिजिय ॥ ७३ ॥ चौपाई ॥ जोतहरेमनअतिसंदे  
 हू ॥ तोकिनजाउपरिदालेहू ॥ तबलगिवैठिरहोंबटकाही  
 जबलगितमपेहऊमोहिपाही ॥ जैसैंजाउमोहभ्रमभारी ॥  
 करेऊसोयतनविवेकविचारी ॥ चलीसतीशिवआयसुपाई  
 करहिंविचारकरौकहामाई ॥ उहांशंभुअसमनअनुमाना  
 दत्तसुताकहंनहिंकल्याणा ॥ मोरेऊंकहेनसंशयजाही  
 विथिविपरीतभलाईनाही ॥ होइहिसोजोरामरचिराखा ॥  
 कोकरितर्कबजावहिंशाखा ॥ असकहिलगेजपनहरि  
 नामा ॥ गयीसतीजहंप्रभुसुखधामा ॥ दोहा ॥ पुनिपुनिह  
 दयविचारकरिथरिसीताकररूप ॥ आगेंहोइचलीपंथति  
 हिंजेहिआवतनरभूष ॥ ७४ ॥ चौपाई ॥ लक्ष्मणादीखउमाकृ  
 तवेष्टा ॥ चकितहृदयभ्रमभयउविशेषा ॥ कहिनसकतक  
 कुअतिगम्भीरा ॥ प्रभुप्रभावजानतमतिथीरा ॥ सतीकपट  
 जानेउसरस्वामी ॥ समंदरपीसबअनारजानी ॥ सुमिरत  
 जाहिमिटैअज्ञाना ॥ सोईसर्वज्ञरामभगवाना ॥ सतीकीन्ह  
 चहैताहिडराऊ ॥ देखऊनारिसभावप्रभाऊ ॥ निजमायाबल



हृदयवाहनी॥ बोलेविहसिराममृदुबाणी॥ जोरिपाणिप्र  
भुकीन्हप्रणाम॥ पितासमेतलीन्हनिजनाम॥ कहेउबहोरि  
कहोवृषकेत॥ विपिनअकेलिफिरऊकेहिहेत॥ **दोहा**॥ रा  
मवचनमृदुगूढसुनिउपजाअतिसंकोच॥ सतीसभीतमहेश  
पहंचलीहृदयवउशोच॥ १५॥ **चौपाई**॥ मैशंकरकरकहान  
माना॥ निजअज्ञानरामपरवाना॥ जाउत्ररअवदेहोकाहा  
उतउपजाअतिदारुणादाहा॥ जानारामसतीदुखपावा॥ नि  
जप्रभावककुप्रगटजनावा॥ सतीदेखकोतकमगजाता॥  
आगेरामसहितप्रीभ्राता॥ फिरचितवापाकेंप्रभुदेखा॥ सहि  
तवधुंसियसुन्दरवेष्टा॥ जहंचितवतितहंप्रभुआसीना॥ सेवे  
हिंसिद्धमुनिशप्रवीणा॥ देखेशिवविधिविस्तुअनेका॥ अमि  
तप्रभावएकतैएका॥ बन्दतचरणकरतप्रभुसेवा॥ विविध  
वेषदेखेसबदेवा॥ **दोहा**॥ सतीविधात्रीरन्दिरादेखीअमितअ  
नुरूप जेहिजेदिवेषअजादिसुरतेहितेहितउअनुरूप॥  
१६॥ **चौपाई**॥ देखेजहंतहंरघुपतिजेते॥ शक्तिनसहितसक  
लसुरतेते॥ जीवचराचरजेसंसार॥ देखेसकलअनेकप्रका  
रा॥ अजहिंप्रभुहिंदेवबहुवेष्टा॥ रामरूपदुसरनहिंदेष्टा॥ अ  
बलोकेरघुपतिबहुतेरे॥ सीतासहितसुवेषचनेरे॥ सोररघु



वरसोइलक्ष्मणासीता॥ देखिसतीअतिभयीसभीता॥ हृद  
 यकम्यतनुसधिककुनाही॥ नयनमृन्दिबैठीमगमाही॥ व  
 डरिविलोकेउनयनउचारी॥ ककुनदीखतहंदतकुमारी॥  
 पुनिपुनिनाइरामपदशीसा॥ चलीतहौजहंरहेगिरिणा॥  
 दोहा॥ गयीसमीपमहेशतहंहसिपुकीऊशलात॥ लीन्ह  
 परीलाकवनविधिकहइसत्यसबवात॥ ७७॥ चौपाई॥ स  
 तीसमुजिरचुवीरप्रभाऊ॥ भयवशशिवसनकीन्हडराऊ॥  
 ककुनपरीलालीन्हगोसांई॥ कीन्हप्रणामतम्हारिहिंनई  
 जोतमकहासोमृषानहोइ॥ मोरेमनप्रीतिअतिसोई॥ तब  
 शङ्करदेखेउपरिध्याना॥ सतीजोकीन्हचरितसबजाना॥  
 बडरिराममायहिंशिरनावा॥ प्रेरीसतिहिंजेहिंजूटकहावा  
 हरिइच्छाभाबीबलवाना॥ हृदयविचारतशंभुसजाना॥  
 सतीकीन्हसीताकरवेष्टा॥ शिवउरभयउविषादविशेषा॥  
 जोअबकरोंसतीसनप्रीती॥ मिटेभक्तिपथहोइअनीति॥  
 दोहा॥ परमप्रियानहिजाइतजिकियेप्रेमवउपाप॥ प्रगट  
 नकहतमहेशककुहृदयअधिकसन्ताप॥ ७८॥ चौपाई॥ त  
 वशंभुप्रभुपदशिरनावा॥ सुमिरतगामहृदयअसआवा॥  
 एहितनुसतिहिमेंटमोहिनाही॥ शिवसंकल्पकीन्हमन॥



रामा०  
बी०  
२२

२३

मांही॥ असविचारिशङ्करमतिथीरा॥ चलेभवनसुमिरत  
रघुवीरा॥ चलतगगनभेगिरासुहाई॥ जयमहेशभलिभक्ति  
दुजाई॥ असप्रणातमविनुकौरेकोआना॥ रामभक्तसमरथ  
भगवाना॥ सुनिनभगिरासतीउरशोचा॥ पुक्काशिवहिंस  
मेतसकोचा॥ कीन्हकवनप्रणाकरुद्रकृपाला॥ सत्यथा  
मप्रभुदीनदेयाला॥ यदपिसतीपुक्काबझभांती॥ तदपिन  
कहेउत्रिपुरआरैती॥ दोहा॥ सतीहृदयअनुमानकियसब  
जानेउसर्वज्ञ॥ कीन्हकपटमैशंभुसननारिसहजजउअज्ञ॥  
मोरठा॥ जलपयसरिसविकाइदेखहुं प्रीतिकीरीतिभलि॥  
विलगहोइरसजाइकपटावटारैपरतही॥ ८०॥ चौपाई॥ ह  
दयशोचसमुजतनिजकरणी॥ चिन्ताअमितजाइनहिबर  
णी॥ कृपासिंधुशिवपरमअगाथा॥ प्रगटनकहेउमोरअ  
पराथा॥ शङ्कररूपअवलोकिभवानी॥ प्रभुमोहितजेउह  
दयअऊलानी॥ निजअससमुजिनककुकाहिजाई॥ तपैत  
वाउवउरअधिकारै॥ सतीशोचजानिवृषकेत॥ कहीकथा  
सुन्दरसखहेत॥ वरणातपेंथविविधिरतिहासा॥ विष्णुना  
थपहुंचेकैलासा॥ तहंपुनिशंभुसमुजिप्रणाआपन॥ बैठे  
बटतरकरिकमलामन॥ शङ्करसहजसुरूपममारा॥ ला

२५



गिसमाथिअखण्डअपारा ॥ यहचौपाईआदिकेदुश्यदोपक ॥  
 दोहा ॥ सतीवसहिंकैलासतवअधिकशोचमनमाहिं ॥ मर्म  
 नकोऊजानककुपुगसमदिवससिराहिं ॥ ८१ ॥ चौपाई ॥ नि  
 तनवशोचसतीउरभारा ॥ कबजैहौंदुखसागरपारा ॥ मैजो  
 कीन्हरघुपतिअपमाना ॥ पुनिपतिवचनमृषाकरिजाना ॥  
 सोफलमोहिविधातादीन्हा ॥ जोककुउचितरहासोकीन्हा  
 अबविधिअसवृजियनहितोही ॥ शङ्करविमुखजिआव  
 झमोही ॥ कहिनजाइककुहृदयगलानी ॥ मनमहंरामहिं  
 सुमिरिषायानी ॥ जौप्रभुदीनदयालुकहावा ॥ आरतिहर  
 णवेदयषागावा ॥ तौमैविनयकरौंकरजोरी ॥ कूटोवेगिदे  
 हयहमोरी ॥ जौमोरेंशिवचरणसनेह ॥ मनक्रमवचनस  
 तब्रतपह ॥ दोहा ॥ तौसमदर्शीसुनियप्रभुकरौंसोवेगिंउ  
 पाइ ॥ होइमरणजेहिविनहिअमडःसहविपतिविहाइ ॥  
 चौपाई ॥ इहिविधिदुखितप्रजेशऊमारी ॥ अकथनीयदारु  
 णदुखभारी ॥ बीतेसम्बतसहससताशी ॥ तजीसमाधि  
 शंभुअविनाशी ॥ रामनामशिवसुमिरणालागे ॥ जानेउ  
 सतीजगतपतिजागे ॥ जाइशंभुपदवन्दनकीन्हा ॥ सन्नु  
 खपाकरआसनदीन्हा ॥ लगेकहनहरिकपारसाला ॥ द

८२



लप्रजेशभयेतेहिकाला॥ देखाविथिविचारिसबलायक  
 दत्तहिंकीन्हप्रजापतिनायक॥ बउअधिकारदत्तजबपावा  
 अतिअभिमानहृदयतबआवा॥ नहिकोरुअसजनमाज  
 गमोही॥ प्रभुतापार्इजाहिमदनाही॥ दोहा॥ दत्तलियेमुनि  
 बोलिसबकरणालगेबउयाग॥ नेवतेसादरसकलसुरजे  
 पावतमखभाग॥ ८३॥ चौपाई॥ किन्नरनामसिद्धगन्धर्वा॥ व  
 भूनसमेतचलेसुरसर्वा॥ विस्सुविरंचिमहेशविहार॥ चले  
 सकलसुरयानबनार॥ सतीविलोकेगगनविमाना॥ जात  
 चलेसुन्दरविधिनाना॥ सुरसुन्दरीकरहिंकलगाना॥ सुन  
 तअवणकूटहिंमुनिध्याना॥ पूछेउतबशिवकहेउवखानी  
 पितायत्तसुनिककुहरषानी॥ जोमहेशमोहिआयसुदेही  
 ककुदिनजायरहोंमिसिपंही॥ पतिपरित्यागहृदयदुखभा  
 री॥ कहेंननिजअपराधविचारी॥ बोलीसतीमनोहरबानी  
 सभयसंकोचप्रेमरससानी॥ दोहा॥ पिताभवनउतसबप  
 रमजोप्रभुआयसुहो॥ तौमैजाउंकृपायतनसादरदेखन  
 सो॥ ८४॥ चौपाई॥ कहेउनीकमोरेइंमनभावा॥ यहअनु  
 चितनहिनेवतपढावा॥ दत्तसकलनिजसुताबुलाई॥ ह  
 मरेवयरतमैविसराई॥ ब्रह्मसभाहमसनदुखमाना॥ तेहि



ते अजङ्ग करहि अपमाना ॥ जौ विनु बोलेँ झजा झभवानी ॥ २  
 है नशील सनेहन कानी ॥ यदपि मित्र प्रभु पित गुरु गोहा ॥ जा  
 र्य विनु बोलेँ झन सन्देहा ॥ तदपि विरोध मान जहं कोई ॥ त  
 हांग येँ कल्याण न होई ॥ भाति अनेक शंभु समुजावा ॥ भावी  
 वशान ज्ञान उर आवा ॥ कह प्रभु जा झजौ विन हिबुलाए ॥ नहि  
 भलिवात दमारे भाए ॥ दोहा ॥ कहि देखा हरयतन बझर हीन  
 दत्त कुमारी ॥ दिये मुख गण संगत वविदा कीन्हि विप्रगरी  
 चौपाई ॥ पिता भवन जव गयीं भवानी ॥ दत्त त्रासन काहू सन  
 मानी ॥ सादर भलेहि मिली एक माता ॥ भगिनी मिली बझत मु  
 सुकाता ॥ दत्तन ककु पूछी कुशलाता ॥ सती हिं विलोकि ज  
 रे सब गाता ॥ सती जाइ देखे उतव जागा ॥ कत झंन दीख शम्भु  
 कर भागा ॥ तब चित चढे उजोशं कर कहेऊ ॥ प्रभु अपमान स  
 मुझि उर दहेऊ ॥ पाकिल दुःख न हृदय अस व्यापा ॥ जस यह  
 भयउ महा परिताप ॥ यद्यपि जगदारुण दुखाना ॥ सब तेँ  
 कठिन जाति अपमाना ॥ समुझि सतीति हि भयउ अतिक्रोधा  
 बझ विधि जननी कीन्ह प्रबोधा ॥ दोहा ॥ शिव अपमान न जा  
 र सहि हृदय न होइ प्रबोधा ॥ सकल सभ हिं हरि कित बबोली  
 वचन सक्रोधा ॥ ८८ ॥ चौपाई ॥ सुनइ सभा सद सकल मुनिन्दा

८५ ॥



रामा०  
वा०  
२४

२५

कही सुनी जिन्ह शंकर निन्दा ॥ सो फल तरत लहव सब काह  
भली भोति पछिताव पिताह ॥ सन्त शम्भु श्री पति अपवादा ॥  
सुनिय जहां तहं अस मर्यादा ॥ काटिय ता सुजी भजो वसाई ॥  
अवण मुद्दिन हि चलीय पराई ॥ जगदात्मा महेश विपुरारी ॥  
जगत जनक सब के हितकारी ॥ पिता मन्द मति निन्दत तेही ॥  
दक्ष शुक्र शम्भु वयह देही ॥ तजि होत रुत देह तेहि देह ॥ उर  
धरि चन्द्र मौलि वृष केत ॥ अस कहियोग अग्रित नुजारा ॥  
भयउ सकल मखहाहाकारा ॥ दोहा ॥ सती मरण सुनि शंभु  
गणालगे करण मख खीस ॥ यज्ञ विध्वंस विलोकि भृगुरता  
कीन्ह मुनीश ॥ ७७ ॥ चौपाई ॥ समाचार सब शंकर पाये ॥ वीर  
रभद्र करि कोप पाये ॥ यज्ञ विध्वंस जाइति न्हीन्दा ॥ सक  
ल सुरन्द विधिवत फल दीन्दा ॥ भेजग विदित दक्ष गति सोई ॥  
जसक कुशंभु विमुख कै होई ॥ यह इतिहास सकल जग जा  
ना ॥ ताते मैं संक्षेप बखाना ॥ सती मरत हरि मनवरु मांगा ॥  
जन्म जन्म शिव पद अत्र रागा ॥ तेहि कारण हिम गिरि गृह  
जाई ॥ जनमी पारवती तनु पाई ॥ जब तैं उमा शैल गृह जाई ॥  
सकल सिद्ध सं ॥ पति तहं छाई ॥ जहं तहं मुनिन सुआ अमकी  
न्हे ॥ उचित वास हिम भूधर दीन्हे ॥ दोहा ॥ सदा समन पलस



हितसबडुमवननानाजाति॥ प्रगटीसुन्दरशैलपरम  
 गिआकरबहुभांति॥८८॥**चौपाई॥** सरितासबपुनीतज  
 लबहई॥ खगमृगमथुपसखीसवरहई॥ सहजवयरस  
 बजीवनत्यागा॥ गिरिपरसकलकरहिअनुरागा॥ सो  
 हशैलगिरिजागृहआये॥ जिमिजनरामभक्तिकेपाये  
 जिमिजनरामभक्तिकेपाये॥ नितनूतनमंगलगृहता  
 स॥ ब्रह्मादिकगावहिंयशजास॥ नारदसमाचारसब  
 पाये॥ कौतुकहोगिरिगेहसिथाये॥ शैलराजबउआद  
 रकीन्हा॥ पदपाखारिवरआसनदीन्हा॥ नारीसहितमुनि  
 पदशिरतावा॥ चरणसलिलसबभवनसिचावा॥ निज  
 सोभाग्यवद्धतगिरिवरणा॥ सुताबोलिमेलीमुनिचर  
 णा॥**दोहा॥** त्रिकालतत्सर्वतमगतिसर्वत्रतम्हारि॥  
 कहइसुताकेदोषगुणमुनिवरहृदयविचारि॥८९॥**चौ**  
**पाई॥** कहामुनिविहंसिगूढमृडवानी॥ सुतातम्हारिस  
 कलगुणखानी॥ सुन्दरिसहजसुशीलसयानी॥ नामउ  
 माअम्बिकाभवानी॥ सबलक्षणसंपन्नकुमारी॥ होइहि  
 सन्ततपियहिपियारी॥ सदाअचलपदिकरअविवाता॥  
 एहितेंयशपैहहिपितमाता॥ होइहिपूज्यसकलजगमां



रामा०  
बा०  
२५

25

ह्रीं ॥ एहिसेवतककुटुर्लभनाह्रीं ॥ एहिकरनामसुमिरिसं  
सारा ॥ त्रियचछिहहिंपतिव्रतअसिधारा ॥ शैलसुलत  
णिसुतातहारी ॥ सुनइजेअवयणहैदुश्चारी ॥ अगुण  
अमानमातपितहीना ॥ उदासीनसतसंशयतीना ॥ दोहा  
योगीजटिलअकाममननगनअमंगलवेष ॥ असस्वामी  
यहिकहंमिलिहिपरीहस्तअसरेख ॥ २० ॥ चौपाई ॥ सुनि  
मुनिगिरासंत्यजियजानी ॥ दुःखदंपतिहिउमाहरषानी  
नारदइंयहभेदनजाना ॥ पुलकशरीरभरेजलनयना ॥  
दृशाएकसमुजतविलगाना ॥ सकलसखीगिरिजागिरि  
मयना ॥ होइनमृषादेवअधिभाषा ॥ उमासोवचनरुदयथ  
रिराखा ॥ उपजेउशिखपदकमलसनेह ॥ मिलनकठिन  
मनभासनेह ॥ जानिऊअवसरप्रीतिदुराई ॥ सखीउचरू  
वैठीपुनिजाई ॥ कूटिनहोइदेवअधिवानी ॥ शोचहिंदंपति  
सखीसयानी ॥ उरथरिधीरकहेगिरिराऊ ॥ कहइनाथ  
काकरियउपाऊ ॥ दोहा ॥ कहमुनीशहिमवन्तसुनुजो  
विधिलिखालिलार ॥ देवदनुजनरनागमुनिकोउनमेद  
नहार ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ तदपिएकमेंकहौंउपाई ॥ होइकरैजौ  
देवसहाई ॥ जसवरमेंवरणोउंतमपाही ॥ मिलिहिउमहिक

आसावरी  
५



कुसंशयनाही ॥ जेजेवरकेदोषवखाणे ॥ तेसबशिवपदमें  
 अनुमाने ॥ जौविवाहशंकरसनहोई ॥ दोषौगणसमकह  
 सबकोई ॥ जौअहिसेजशयनहरिकरही ॥ बुधककुतिन्ह  
 करदोषनथरही ॥ भानुकृशानुसर्वरसखोही ॥ तिनकहमें  
 दकहतकोऊनाही ॥ शुभअरुअशुभसलिलसबवहई ॥ सु  
 रसरिकोऊअपुनीतनकहई ॥ समरथकहंनहिंदोषुगसो  
 ई ॥ रविपावकसुरसरिकीनाई ॥ दोहा ॥ एसेहिंशिषकरहिं  
 नरजउबिवेकअभिमान ॥ परहिंकल्पभरिनरकमहंजी  
 बकिईशसमान ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ सुरसरिजलकृतवासनजां  
 ना ॥ कबडनसंतकरैतिहिंपांना ॥ सुरसरिमिलैंसोपावन  
 जैसैं ॥ ईशअनीशहिंअंतरतैसैं ॥ शम्भुसहजसमरथभग  
 वाना ॥ एहिविवाहसबविधिकल्याणा ॥ डगराध्यैअह  
 हिंमहेशू ॥ आशुतोषपुनिकियेंकलेशू ॥ जौतपकरैऊमा  
 रितम्हारी ॥ भावीउमेंदिसकेंत्रिपुरारी ॥ यद्यपिवरअनेक  
 जगमाही ॥ यदिकहंतजिशिवहसरनाही ॥ वरदायक  
 मणताररिभंजन ॥ कृपासिन्धुसेवकमनरंजन ॥ इच्छित  
 फलविनुशिवयारायें ॥ लहइनकोदियोगजपसायें ॥ दो

॥



रामा०  
बी०  
२६

२६

असकदिनारदसुमिरिहरिगिरिजहिंदीन्हअशीशा॥  
होइहिंयहकल्याणमयसंशयतजऊगिरीशा॥२३॥चौ  
पाई॥कहिअसब्रह्मभवनमुनिगयेऊ॥अगिलचरितसुन  
ऊजसभयेऊ॥पतिहिंएकान्तपायकहमयना॥नाथनमे  
समुजेउंमुनिवयना॥जौंचरवरऊलहोइअनूपा॥करिय  
विवाहसुताअनुरूपा॥नतकन्यावरुहोऊमारी॥कान्त  
उमाममप्राणपियारी॥जौनमिलहिवरगिरिजहियोगू  
गिरिजउसहजकहहिंसबलोगू॥सोविचारिपतिकरइवि  
वाह॥जेहिनवहोरिहोईउरदाह॥असकहिपरीचरणा  
थरिशीशा॥बोलेसहितसनेहगिरीशा॥वरुणावकप्रग  
टशशिमांदी॥नारदवचनअन्यथानांदी॥दोहा॥प्रिया  
शोचपरिहरइसबसुमिरइश्रीभगवान॥पारवतीजिन  
निर्मयउसोइकरिहदिकल्यान॥२४॥चौपाई॥अबजौत  
महिंसुतापरनेह॥तौअसजाइसिखावनदेह॥करैसो  
तपजेहिमिलहिंमहेशू॥आनउपायनमिटिहिंकलेशू  
नारदवचनसत्यसबदेह॥सुन्दरसबगुणनिधिवृषके  
त॥असविचारितमतजसबशंका॥सबहिभौतिशंक



रश्मिकलंका ॥ सुनियतिवचनदधिमनमाही ॥ गइतरु  
 तउठिगिरिजापाही ॥ उमयहिं विलोकिनयनभरिचारी  
 सहितसनेहगोदवैठारी ॥ वारहिं वारलेति उरलाई ॥  
 गद्गदकंठनककुक्कहितजाई ॥ जगतमातसर्वज्ञभवानी  
 मातसुखदबोली मृदुवानी ॥ दोहा ॥ सुनऊ मातमै दीख  
 अससुप्रसुनाऊं तोहि ॥ सुन्दरगौरसुविप्रवरअसउपदे  
 शेउमोहि ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ करऊ जाईतपशैलऊमारी ॥ ना  
 रदकहासोसत्यविचारी ॥ मातपितहिंप्रनियहमतभावा  
 तपसुखप्रददुखदोषनशावा ॥ तपबलरचैप्रपंचविधा  
 ता ॥ तपबलविस्तुसकलजगपाता ॥ तपबलशम्भुकर  
 हिंसंचारा ॥ तपबलशेषथरहिंमहिभारा ॥ तपअधारस  
 बसृष्टिभवानी ॥ करऊ जाईतपअसजियजानी ॥ सुनतव  
 चनविस्मितमहतारी ॥ सुप्रसुनायेउगिरिहिहंकारी ॥  
 मातपितहिंबऊविधिसमुजाई ॥ चलीउमातपहितहर  
 षाई ॥ प्रियपरिवारपिताअरुमाता ॥ भयेविकलमुखआ  
 वनवाता ॥ दोहा ॥ वेदशिरामुनिआइतबसबहिंकहास  
 मुजाई ॥ पारवतीमहिमासुनतरहैप्रबोधहिपाई ॥ ५६ ॥ चौ  
 पाई ॥ उरथरिउमाप्राणपतिचरण ॥ जाइविपिनलागीत



रामा.  
बा.  
२३

27

पकरणा॥ अतिसुकुमारिनतनुतपयोगू॥ पतिपदसुमि  
रितजेउसबभोगू॥ नितनवचरणउपजअनुरागा॥ विसरी  
देहतपहिंमनलागा॥ सम्वतसहसमूलफलखाये॥ शा  
काखाउशतवर्षगंवाये॥ ककुदिनभोजनवारिवतासा॥  
कियेकदिनककुदिनउपवासा॥ वेलणातमहिपरेउसखा  
ई॥ तीनिसहससम्वतसोखाई॥ पुनिपरिहरेउपुराणेउप  
र्णा॥ उमानामतबभयउअपर्णा॥ देखिउमहिंतपक्षीणा  
शरीरा॥ ब्रह्मगिराभयीगगनगम्भीरा॥ दोहा॥ भयउम  
नोरथसफलतबसनुगिरिराजकुमारि॥ परिहरदुसह  
कलेशसबअवमिलिहहिंविपुरारि॥ १०॥ चौपाई॥ अस  
तपकाइनकीन्हभवानी॥ भयेअनेकधीरमुनिजानी॥ अ  
बउरपरऊब्रह्मवरवानी॥ सत्यसदासुनतशुचिजानी॥  
आवैपिताबुलावनजबंदी॥ दृष्टपरिहरिवरजायऊत  
बंदी॥ मिलहहिंतमहिंजवसप्रअषीशा॥ जानेऊतब  
प्रमारावागीशा॥ सुनतगिराविधिगगनबखानी॥ पु  
लकगातगिरिजाहरषानी॥ उमाचरितमेंसुन्दरगावा॥  
सुनऊशंभुकरचरितसदावा॥ जबतेंसतीजाइतनुत्यागा  
तबतेंशिवमनभयेउविरागा॥ जमहिंसदारचुनायकनामा



जहेतहेसुनहिंरामगुणशामा ॥ दोहा ॥ सचिदानन्दसु  
 खधामशिवविगतमोहमदकाम ॥ विचरहिंमहियरिह  
 दयहरिसकललोकअभिराम ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ कतइंमु  
 तिनउपदेशहिंज्ञाना ॥ कतइंरामगुणकरहिंवखाना ॥  
 यदपिअकामतदपिभगवाना ॥ भगतविरहदुखदुखि  
 तसुजाना ॥ यहिविधिगयेउकालबझबीती ॥ नितनब  
 होइरामपदप्रीती ॥ नेमप्रेमशंकरकरदेखा ॥ अविच  
 लहृदयभक्तिकीरेखा ॥ प्रगटेरामकृततत्तकृपाला ॥ रू  
 पशीलनिधितेजविशाला ॥ बझप्रकारशंकरहिंसराहा  
 तमविनुअसब्रतकोनिरबाहा ॥ बझविधिरामशिवहिं  
 समुजावा ॥ पारवतीकरजन्मसुनावा ॥ अतिपुनीतगि  
 रिजाकीकरणी ॥ विस्तरसहितकृपानिधिवरणी ॥ दो  
 हा ॥ अबबिनतीममसुनइशिवजोमोपरनिजनेइ ॥  
 जाइविवाहइशैलजहियहमोहिमांगेंदेइ ॥ १९ ॥ चौ  
 पाई ॥ कहशिवयदपिउचितअसनाही ॥ नाथवचनपु  
 निमेटिनजाही ॥ शिरथरिआयसकरियतमहारा ॥ पर  
 मथरमयरनाथहमारा ॥ मातपितागुरुप्रभुकीबानी  
 विनहिंविचारकरियप्रभजानी ॥ तमसबभांतिपरमहि



रामा०  
बो०  
२८

28

तकारी॥ आजाशिरपरनाथतुम्हारी॥ प्रभुतोषेउसुनिशं  
करवचना॥ भक्तिविवेकथर्मयुतरचना॥ कहप्रभुहरतुम्हा  
रणारहेऊ॥ अबउरगाखेऊजोहमकहेऊ॥ अन्तर्धानभये  
असभाखी॥ शंकरसोमूरतिउरगाखी॥ तबहिंसमअधि  
शिवपदंआये॥ बोलेप्रभुसनवचनसुहाये॥ दोहा॥ पारव  
तीपहजाइतमप्रेमपरीतालेऊ॥ गिरिहिप्रेरिपटयेऊभ  
वनहरिकरऊसन्देऊ॥ १००॥ चौपाई॥ अधिनिगोरिदेखी  
तहकैसी॥ मूरतिवन्ततपस्याजैसी॥ बोलेमुनिसुनुषौ  
लऊमारी॥ करऊकवनकारणातपभारी॥ केहिअंशथऊ  
कातमचदहू॥ हमसनसत्यमर्मकिनकदहू॥ सुनतअ  
धिनिकेवचनभवानी॥ बोलीगूढमनोहरवानी॥ कहत  
मरममनअतिसऊचाई॥ हंसिदऊसुनिहमारिजउताई  
मनहटपरानसुनैसिखावा॥ चहतवारिपरभीतिउठावा  
नारदकहासत्यसोईजाना॥ विनुपंषनहमचहहिंउजाना  
देखऊमुनिअविवेकहमारा॥ चारुहिशिवहिसदाभरता  
रा॥ दोहा॥ सुनतवचनविहंसेअषयगिरिसम्भवतवदे  
ह॥ नारदकरउपदेशसुनिकहऊवसेकोगेह॥ १०१॥ चौ  
पाई॥ दत्तसतनडिउपदेशोनिजाई॥ तिनफिरिभवननदे।



खेउआई॥ चित्रकेतकरवरउनवाला॥ कनककशिपुकर  
 पुनिअसहाला॥ नारदसीखजेसनहिंनरनारी॥ अवशिभ  
 वनतजिहोंहिंभित्तारी॥ मनकपटीतनसजनचिन्हा॥  
 आपसरिसमबहीचहकीन्हा॥ तेंहिंकेवचनमानिविश्वासा  
 तमचाहइपतिसहजउदासा॥ निरुणानिलजऊवेषकपा  
 ली॥ अऊलअगोहदिगम्बरव्याली॥ कहऊकवनसखअ  
 सवरपाये॥ भलभूलिऊउगकेवगराये॥ पंचकहैशिवस  
 तीविवाही॥ पुनिअबडेरिमराइवताही॥ दोहा॥ अबसु  
 खसोवतशेचनहिंभीखमांगिभवखोंहि॥ सहजएकाकि  
 नकेभवनकबडंकिनारिखटोंहि॥ १०२॥ चौपाई॥ अजडंमा  
 नऊकहाहमारा॥ हमतमकहंवरनीकविचारा॥ अतिसु  
 न्दरशुचिसुखदसुशीला॥ गावहिंवेदजासयशालीला  
 हूषणरहितसकलगुणराशी॥ श्रीपतिपुरवैऊंठनिवासी  
 असवरतमहिंमिलाउबआनी॥ सुनतविंइसिकहवचन  
 भवानी॥ सत्यकहइगिरिभवतनुएहा॥ कहनकूटकूटेव  
 रुदेहा॥ कनकोसुनिपषानतेंहोइ॥ जारेंऊसहजनपरि  
 हरसोई॥ नारदवचननमेंपरिहरऊं॥ वसोभवनउजगौन  
 दिउरऊं॥ गुरुकेवचनप्रतीतिनजेही॥ सपनेऊसगमनस



रामा०  
बा०  
२५

29

खसिथितेही ॥ दोहा ॥ महादेव अब गुण भवन विस्सुसक  
लगुणधाम ॥ जेहि कर मन रमजाहिसन ताहि ताहिसन  
काम ॥ १०२ ॥ चौपाई ॥ जो तम मिलते डू प्रथम मुनीश ॥ सु  
नते उसिखत म्हारि धरिणीसा ॥ अब में जन्म शंभु हित दारा  
को गुण दोष हिं करै विचारा ॥ जो तम हरे हठ हृदय विशेषी ॥  
हरिन जाइ विन कियें बरेषी ॥ तौ कांत कि अन्ह आलस नाही  
वर कन्या अनेक जग माही ॥ जन्म कोटि लगिर गरह मारी ॥  
वरो शंभु न तरहौं ऊ मारी ॥ तजौं न नारद कर उपदेश ॥ आपु  
कह हिं शातवार महेष ॥ मैं पाप रों कहै जगदम्बा ॥ तम गृ  
ह गवन डू भय उ बिलम्बा ॥ देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी ॥ ज  
य जय जय जगदम्ब भवानी ॥ दोहा ॥ तम माया भगवान शि  
व सकल जगत पितृ मात ॥ नाश्चरण शिर मुनि चले उ पुनि  
पुनि हर्षित गात ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥ जाइ मुनि न्हहि मवल पटा  
ये ॥ करि विनती गिरिज हिं गृह लाये ॥ बडरि सप्रभु विशि  
व पदं जाई ॥ कथा उमा की सकल सुनाई ॥ भये मगन शिव  
सुनत सुनेहा ॥ हरषि सप्रभु विगवने गोहा ॥ मन थिर करि  
त वशंभु सजाना ॥ लगे करणार मुनाय कथाना ॥ तारक अ  
सुर भये उतेहि काला ॥ भुज प्रताप बल तेज विशाला ॥ ते



हिंसबलोकलोकपतिजीते॥भयेदेवसुखसम्पतिरीते॥  
 अजरअमरसोजीतिनजाई॥हारेसरकरिविविधलराई॥  
 तबविरञ्चिसनजाउपुकारे॥देवैविधिसबदेवदुखारे॥  
 दोहा॥सबसनकहाबुजायविधिदनुजनियनतबहोउ  
 शंभुशुक्रसंभूतसुतएहिजीतैरणासोइ॥२०४॥चौपाई॥  
 मोरकहासुनिकरऊउपाई॥होइहिईश्वरकरिहहिंसहारे  
 सतीजोतजीदत्तमाखदेहा॥जनमीजाइहिमाचलगोहा  
 तेहितपकीन्हशंभुपतिलागी॥शिवसमाधिबैठेसबत्या  
 गी॥यदपिअहैअसमज्जसभारी॥तदपिवातएकसुन  
 इहमारी॥पठवऊकामजाइशिवपाही॥करैतोभशऊ  
 रमनमाही॥तवहमजाइशिवहिशिरनाई॥करवाउववि  
 वाहवरिआई॥यदिविधिभलेहिदेवहितहोई॥मतअ  
 तिनीककहेउसबकोई॥अस्तुतिसुरनिकीन्हअतिहेतू  
 प्रगटेउविषमबाणऊषकेतू॥दोहा॥सरनिकहीनिज  
 विपतिसबसुनिमनकीन्हविचार॥शंभुविरोधनऊषा  
 लमोहिबिहंसिकहेउअसमार॥२०५॥चौपाई॥तदपि  
 करबमैकाजतम्हार॥अतिकरुपरमथर्मउपकार॥  
 परहितलागितजेंजोदेही॥सन्ततसन्तप्रशंसहिंतेही



रामा०  
बा०  
३०

३०

असकहिचलेउसबहिंशिरनार्इ॥सुमनधनुषकरस  
हितसद्गार्इ॥चलतमारअसहृदयविचारा॥शिवविरो  
धध्रुवमरणहमारा॥तबआपनप्रभावविस्तारा॥नि  
जबशकीन्हसकलसंसार॥कोपेउजबहिंवारिचरकेत  
दाणमहंमिटेसकलश्रुतिसेत॥ब्रह्मचर्यव्रतसंयम  
नाना॥धीरजथर्मज्ञानविज्ञाना॥सदाचारजपयोगवि  
रागा॥समयविवेककटकसबभागा॥**कृन्द॥**भागेउ  
विवेकसद्गारसहितसोसुभटसंयुगमहिंमुरे॥सदय  
न्यपर्वतकन्दरनमहंजाइतेदिअबसरदुरे॥होनिहार  
कारकतारकोरखवारजगखरभरपारा॥दुःखाणकेहि  
रतीनापजेहिकहंकोपिधनुषारकरधारा॥**सोरठा॥**जे  
सजीवजगअचरचरनारिपुरुषअसनाम॥तेनिजनिज  
मर्यादतजिभयेसकलवशकाम॥**१०६॥चौपाई॥**सबके  
हृदयमदनअभिलाषा॥लतानिहारिनबहिंतरुशाखा  
नदीउमगिअम्बुधिकहंथार्इ॥संगमकरहिंतलावतला  
ई॥जहंअसदशाजउनकीबरणी॥कोकहिशकैसचे  
तनकरणी॥पशुपत्नीनभजलयलचारी॥भयेकाम  
वशसमयविसारी॥मदनअन्यव्याऊलसबलोका॥नि

अ  
वंगाल  
१



शिदिननहिंश्रवलोकहिंकोका ॥ देवदनुजनरकिन्नरव्या  
 ला ॥ प्रेतपिशाचभूतवैताल ॥ इनकीदशानकहैंउबखानी ॥  
 सदाकामकेचरेजानी ॥ सिद्धविरक्तमहासुनियोगी ॥ तेपि  
 कामवशभयेवियोगी ॥ **कुन्द** ॥ भयेकामवशयोगीशाताप  
 सपामरनरकीकोकहै ॥ देखहिंचराचरनारिमयजेब्रह्मम  
 यदेखतरहै ॥ अवलाविलोकहिंपुरुषमयजगपुरुषसब  
 अवलामयें ॥ दुश्दण्डभरिब्रह्माण्डभीतरकामकृतकौत  
 कअयें ॥ **सोरठा** ॥ थरीनकाहैंथीरसबकेमनमनसिजहरे ॥  
 जेहिराखउरचुवीरतेउबरेतेहिकालमह ॥ १०० ॥ **चौपाई** ॥  
 उभयचरीअसकौतकभयऊ ॥ जबलगिकामशंभुपहंगय  
 ऊ ॥ शिवहिंविलोकिसशंकेउमारू ॥ भयेउयथास्थितस  
 बसंसारू ॥ भयउतरुतजगजीवसुखारे ॥ जिमिमदउत्त  
 रिगयेंमतवारे ॥ रुद्रहिंदेखिमदनभयमाना ॥ दुराधर्षदु  
 र्गमभगवाना ॥ फिरतलाजककुकरिनदिजाई ॥ मरणाका  
 निमनरचेसिउपाई ॥ प्रगटेसितरुतरुचिअतराजा ॥ ऊस  
 मितनवतरुराजिविराजा ॥ वनउपवनवापिकातडागा ॥ प  
 रमसुभगसवदिशाविभागा ॥ जहंतहैंजनुउमगतअनु  
 रागा ॥ देखिसुपद्ममनमनसिजजागा ॥ **कुन्द** ॥ जागेउमनो



भवमुपह्वमनवनसुभगतानपरैकही॥ शीतलसुगन्धसु  
मन्दमारुतमदनअनलशाखासही॥ विकसेसरद्विबद्ध  
कञ्जगुञ्जतपुञ्जमञ्जुलमधुकरा॥ कलहंसपिकशुकसर  
सरबकरिगाननाचहिंअपसरा॥ दोहा॥ सकलकलाकरि  
कोटिविधिहारेउसैनसमेत॥ चलीनअचलसमाधिशिव  
कोपेउहृदयनिकेत॥ १०८॥ चौपाई॥ देखिरसालविटपव  
रशाखा॥ तेहिपरचढेउमदनमनमाखा॥ सुमनचापनि  
जशरसन्धाने॥ अतिरिशाताकिअवणालगिताने॥ छोडे  
विषमविशिलउरलागे॥ छूटिसमाधिशंभुतबजागे॥ भ  
यउईशमनतोभविशेषी॥ नयनउचारिसकलदिशिदे  
खी॥ सौरभफलवमदनविलोका॥ भयउकोपकंपेउत्रयलो  
का॥ तबशिवतीसरनयनउचारा॥ चितवतकामभयउज  
रिक्कारा॥ हाहाकारभयउजगभारी॥ उरपेसरभयेअस  
रसखारी॥ समुजिकामसखशोचहिभोगी॥ भयेअकंठ  
कसाधकयोगी॥ छन्द॥ योगीअकंठकभयेउपतिगतिसु  
नतरतिमूर्छितभयी॥ रोदतिबदतिबद्धभांतिकरुणाक  
रतिशंकरपहंगयी॥ अतिप्रेमकरिविनतीविविधविधा  
जोरिकरसमुखरही॥ प्रभुआशुतोषकृपालुशिवअबला



निरखि बोले सही ॥ दोहा ॥ अब तै रति तब नाथ कर होइ दिना  
 म अन्न ॥ विनु वपु व्यापि हिंस बहिं पुनि सुनु निज मिलन  
 प्रसन्न ॥ १०५ ॥ चौपाई ॥ जब यदु वंश कृष्ण अवतारा ॥ होइ हिं  
 हरणामहामहिभारा ॥ कृष्णतनय होइ हि पतितोरा ॥ वचन  
 अन्यथा होइ न मोरा ॥ रतिगवनी सुनि पाऊ रवानी ॥ कथा अ  
 वर पुनिक हों वावानी ॥ देवन समाचार सब पाये ॥ ब्रह्मादि  
 क वैकुण्ठ सिंहाये ॥ सब सरविष्णु विरञ्चि समेता ॥ गये ज  
 हों शिव कि पानिकेता ॥ एथ कएथ कति न कीन्ह प्रसंसा  
 भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा ॥ बोले कृपासिंधु वृषकेत ॥ कहऊ  
 अमर आयेऊ केहि हेत ॥ कह विथित मप्रभु अन्नरजामी ॥  
 तदपि भक्ति वशा बिन बरुं स्वामी ॥ दोहा ॥ सकल सरन के  
 हृदय अस पाऊ रपर मउ क्राऊ ॥ निजन यन देखा चह हिं ना  
 थ तम्हार विवाऊ ॥ १०६ ॥ चौपाई ॥ यहउत सब देखिय भरि  
 लोचन ॥ सौ ककु करिय मदन मद मोचन ॥ काम जारि रति  
 कहें वर दीन्हा ॥ कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा ॥ शासति  
 करि पुनिक रहि पसाउ ॥ नाथ प्रभु न कर सहज सभाऊ ॥  
 पारवती तप कीन्ह अपारा ॥ करइ तास अवप्रक्रीकारा ॥ सु  
 निविधि विनय समुक्ति प्रभु बाणी ॥ ये सैं होउ कहा सखमा



नी॥ तब देवनडु भीव जाई॥ वरषि सुमन जय जय सरसांई॥ अ  
बसर जानि सप्त ऋषि प्राये॥ तुरुतहिं विधि गिरि भवन पढाये  
प्रथम गये जंहर ही भवानी॥ बोले वचन मधुर कुलसानी॥ दो  
हा॥ कहा हमारे न सुने झूत बनार दकर उ पदेश॥ अब भाऊं  
तुम्हार पाण जारे उ काम महे श॥ १॥ चौपाई॥ सुनि बोली सु  
सुकार भवानी॥ उचित कहे झुनि वर वीजानी॥ तुम्हरे जान  
काम हर जाग॥ अब लगि शंभुर हे सविकारा॥ हमरे जान स  
दाशिव योगी॥ अज अनवय अकाम अभोगी॥ जो मैं शिव से  
पउं अस जानी॥ प्रीति समेत कर्म मनवानी॥ तौ हमारे पाण  
सुन झुनी शा॥ करि हहिं सत्य कृपानिधि ईशा॥ इहां दुई  
चौपाई दोपक॥ तम जो कहा हर जारे उ मारा॥ सो अति बउ अ  
विवेक तुम्हारा॥ तात अनल कर सहज सुभाऊ॥ हिम ते हि  
निकट जाउन दिकाऊ॥ गये समीप सो अब शिन शाई॥ जि  
मि संपाति निज यक्ष गवोई॥ दोहा॥ हिय हरषे मुनि वचन  
सुनि देखि प्रतीति विष्वास॥ चले भवनि हिं नाइ शिर गये हि  
माचल पाश॥ २॥ चौपाई॥ सब प्रसन्न गिरि पति हिं सुनावा  
मदन दहन सुनि अति दुख पावा॥ बडरि कहे उरति करवर  
दाना॥ सुनि हिमवन्त बडत सुख माना॥ हृदय विचारि शंभु



प्रभु तारै ॥ सादर मुनिवर लिये बुलारै ॥ सदिन सनखत स  
 चरी सहारै ॥ वेगि वेद विधिल गनयारै ॥ पत्रिसप्त अ  
 धिन सोर दीन्ही ॥ गदि पद विनय हि मा चल कीन्ही ॥  
 जाइ विधि हिंति न दीन्ह सो पांती ॥ वाचत प्रीति न हृदय  
 समाती ॥ लगन वांछि जस वहिं सुनाइ ॥ हरषे मुनि स  
 वसर समुदाइ ॥ समन वृष्टि न भवा जनवाजे ॥ मङ्गल क  
 षाद शङ्खे दिशि साजे ॥ दोहा ॥ लगे संवारन सकल सरवा  
 हन विविध विमान ॥ होहिं सगुण मङ्गल सभग करहिं  
 अपसरागान ॥ ११३ ॥ चौपाई ॥ शिवहिं शंभु गण करहिं शि  
 ङ्गार ॥ जटा मुकुट अहिमोर संवारा ॥ ऊण्डल कङ्कण प  
 दिरे व्याला ॥ तनु विभूति पटके हरि काला ॥ शशिलला  
 ट सन्दरशिर गङ्गा ॥ नयन तीनि उपवीत भुजङ्गा ॥ गरल  
 काण्ड उर नर शिमा ला ॥ अशिव वेष शिव धाम कृपाला ॥  
 कर विमूल अरु उमरु विराजा ॥ चले हृषभ चढि बाज  
 हिं बाजा ॥ देखि शिवहिं सरनिय मुसकाही ॥ वरलाय  
 क दुलै निज गनाही ॥ विस्म विरञ्चि आदि सरनाता ॥ च  
 ङि चङि वाहन चले बराता ॥ सरस माज सब भांति अच  
 पा ॥ नहिं बरात दुल ॥ हय नुत्रपा ॥ दोहा ॥ विस्म कदा अ



सविहंसितबबोलिसकलदिशिराज॥ विलगविलग  
होरचलऊसबनिजनिजसहितसमाज॥ ११४॥ चौपाई॥  
वरअनुहारदरातनभाई॥ हंसीकरैहउं परपुरजाई॥ विस्म  
वचनसुनिसुरसुसकाने॥ निजनिजसेनसहितविलगा  
ने॥ मनहीमनमदेशमुसकांदी॥ हरिकेव्यऊवचननहिं  
जांदी॥ अनिप्रियवचनसुनतहरिकेरे॥ भृङ्गीप्रेरिसक  
लगाणाटेरे॥ शिवअनुशासनसुनिसबआये॥ प्रभुपद  
जलजशीसतिननाये॥ नानाबाहननानावेसा॥ विहंसे  
शिवसमाजनिजदेसा॥ कोऊमुखदीनविपुलमुखकाह  
विनुपदकरकोउबऊपदबाह॥ विपुलनयनकोउनयन  
विहीना॥ तष्टपुष्टकोउअतितनलीणा॥ कुन्दः॥ तनुती  
णाकोउअतिपीनपावनकोउअपावनतनुथरै॥ भूषणा  
करालकपालकरसबसयशोगीततनुभरै॥ ११५॥ खरणा  
नसुअरशृगालमुखगणवेषअगगीतकोगनै॥ बऊजि  
नसप्रेतपिशाचयोगिनिभांतिवरनतनहिवनै॥ ११६॥ सोर  
ठा॥ नोचहिंगावहिंगीतपरमतरङ्गीभूतसब॥ देखतअ  
तिविवरीतबोलहिंवचनविचित्रविधि॥ ११७॥ चौपाई॥ ज  
सहलहतसबनीबराता॥ कोतकविविधहोहिंसगुजाता



इहां हिमाचलरचेउबिताना॥ अतिविचित्रनहिजायव  
 खाना॥ शैलसकलजहंलगिजगमांही॥ लघुविशाल  
 नहिंवरणिमिरांही॥ वनसागरसबनदीतलावा॥ हि  
 मगिरिसबकहंनेवतपठावा॥ कामरूपसुन्दरतनुया  
 री॥ सहितसमाजसहितवरनारी॥ आयेसकलहिमा  
 चलगेहा॥ गावहिंमझुलसहितसनेहा॥ प्रथमहिंमि  
 रिबझुगृहसंवराये॥ यथायोगजहंतजंसबकाये॥ १२  
 शोभाअबलोकिसुहाई॥ लागेलघुविरञ्चिनिपुणाई  
 छन्दः॥ लघुलागविधिकीनिपुणाताअबलोकिपुरशो  
 भासही॥ वनवागकूपतडागसरितासुभगताशकको  
 कही॥ १३॥ मझुलविपुलतोरणपताकाकेतगृहगृह  
 सोहंही॥ वनितापुरुषसुन्दरचतरक्कबिदेविसुनिम  
 नमोहंही॥ १४॥ दोहा॥ जगदम्बाजहंअवतरीसोपुरव  
 रणिनजा३॥ अहिसिदिसम्पतिसकलनितनूतनअ  
 धिका३॥ १५॥ चौपाई॥ नगरनिकटवरातसुनिआई॥  
 १६॥ पुरखर्भरशोभाधिकाई॥ करिवनावसजिवाहननाना  
 चलेंलेनसादरअगवाना॥ हियदरघेसुरसेननिहारी  
 हरिहिंदेविसुनिभयेसुखारी॥ शिवसमाजजबदेखन



रामा.  
वा.  
३४

34

लागे॥ बिउरिचलेवाहनसबभागे॥ थरिथीरजतहोरहे  
सयाने॥ बालकसबलैजीवपराने॥ गयेभवनपूछहिं  
तमाता॥ कहहिंवचनभयकम्पितगाता॥ कहियकहा  
कहिजाइनवाता॥ यमकरथारकिथोंबरियाता॥ बरवौ  
राहवरदअसवारा॥ बालकपालविभूषणकारा॥ **क**  
**नः॥** तनकारबालकपालभूषणनगनजटिलभयंक  
रा॥ संगभूतप्रेतपिशाचजोगिनिविकटमुखरजनीचरा  
जोजियतरहिहिं बरातदेखतपुण्यवद्धतिहिंकरसही  
देखिहिंसोउमाविवाडवरवरवातअसिलरिकनकही  
**दोहा॥** समुजिमहेशसमाजसबजननिजनकमुसका  
दि॥ बालबुजायेविविधविधिनिउरहोइउरुनादि॥ **१७**  
**चौपाई॥** लैअगवांनवरातहिंआप॥ दिएसबहिंजनवा  
ससहाप॥ मैनाप्रभआरतीसंवारी॥ संगसमंगलगा  
बहिंनारी॥ कंचनपारसोदवरपांनी॥ परिक्रणचली  
हरहिंदरपांनी॥ विकटवेषरुद्रहिंजबदेखा॥ अबल  
निउरभयभपउविशेषा॥ भागिभवनपैठीअतिवासा॥ ग  
येउमहेशजहांजनवासा॥ मैनाहृदयभपउदुखभारी  
लीन्हीबोलिगिरिपुत्रमारी॥ अधिकसनेहगोदबैठारी

१५॥

१६॥



प्रणामसरोजनयनभरिवारी॥ जिहिविधितमहिंरूपअस  
 दीन्हा॥ तिहिंजउबरवाउरकसकीन्हा॥ **छन्दः॥** कसकीन्हा  
 वरुवौराहिविधितिहिंरूपसुन्दरतादर्श॥ जोफलचहि  
 सुरतरुहिंसोवरवसवदूरहिंलागई॥ **१०॥** तमसहितगिरि  
 तेगिरौं पावकजरोंजलनिधिमहंयरों॥ घरजाउअपजशहो  
 उजगजीवतविवाहनहोंकरों॥ **११॥ दोहा॥** भईविकलअवला  
 सकलदुखितदेखिगिरिनारि॥ करिविलापुरोदनिवदति।  
 सुतासनेहसंभारि॥ **१२॥ चौपाई॥** नारदकरमेंकहाविगारा  
 भवनमोरजिनवसतउजारा॥ असउपदेशउमहिजिनदीन्हा  
 वौरेवरहिंलागितपुकीन्हा॥ साचेऊउनकेमोहनमाया॥ उदा  
 सीनयनधांमनजाया॥ परवरवालकलाजनभीरा॥ बांऊ  
 किजानप्रसवकीपीरा॥ जननिहिंविकलविलोकिभवानी  
 बोलीजुतविवेकमृदुबांनी॥ असविचारिशोचइमतिमाता  
 सोनटैजोरचौविधाता॥ करमलिखाजौवाउरव्याऊ॥ तौ  
 कतदोषलगाइयकाऊ॥ तमसनमिटहिंकिविधिकेअंका  
 मातव्यर्थजिलेऊकलंका॥ **छन्दः॥** जनिलेऊमातकलंक  
 करुणापरिहरऊअवसरनहीं॥ दुखसुखजोलिखोलला  
 रहमरैजावजहंपाउवतहीं॥ **१५॥** सुनिउंमावचनविनीतिको  
 मलसकलअवलाशोचहीं॥ बडभांतिविधिहिंलगाइहघरा



नयनवारिविमोचही ॥ २० ॥ दोहा ॥ तिदिश्रवसरनारदसहि  
तश्रुत्तुधिसप्तसमेत ॥ समाचारसुनितदिनगिरिगवने  
तरुतनिकेत ॥ ११५ ॥ चौपाई ॥ तवनारदसबहीसनुजावा ॥ पू  
रवकथाप्रसंगसुनावा ॥ मयनासत्यसुनऊंममवाणी ॥ ज  
गदंवातवसुताभवानी ॥ अजाअनादिशक्तिअविनाशानि ।  
सदाशंभुअरुहंगनिवासनि ॥ जगसंभवपालनलयकारि  
णि ॥ निजइच्छालीलावपुथारिणि ॥ जन्मीप्रथमदत्तगृह ।  
जाई ॥ नामसतीसुन्दरतनुपाई ॥ तहऊंसतीशंकरहिंविवाही  
कथाप्रसिद्धसकलजगमाही ॥ एकवारआवतशिवसंगा ॥  
देखेउरचुऊलकमलयतंगा ॥ भयउमोहशिवकहानकी ।  
न्हा ॥ भुमवशवेषसीयकरलीन्हा ॥ कुन्दः ॥ सियवेषतीजोकी  
न्हातिहिंअपराधशंकरपरिहरी ॥ हरविरहजाइबहौरिपि  
तकेयज्ञजोगानलजरी ॥ २१ ॥ अवजनमतम्हरेभवननिज  
पतिलागिदारुणातपुकिया ॥ असजानिसंशयतजइगि  
रिजासर्वदाशंकरप्रिया ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सुनिनारदकेवचन  
तवसबकरमिटाविषाद ॥ तनमऊंआपेउसकलपुरवरच  
रयहसंवाद ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ तवमैयनाहिमवंतअनंदे ॥ पुनि  
पुनिपार्वतीपदबंदे ॥ नारीपुरुषशिषुजुवासयानें ॥ नगर  
लोकसबअतिहरषाने ॥ लगेदोंनपुरसंगलगाना ॥ सजेस

मधुर  
२



बहिंदाटकबटनाना॥ भांतिअनेकभईजिवनारा॥ सूपशा  
 सजसककुव्यवहारा॥ सोजिवनारकिजाईवावानी॥ वसहिं  
 भवनजिहिंमातभवानी॥ सादरवोलेसकलवराती॥ विस्सुवि  
 रेचिदेवसबजाती॥ विविधपांतिवैठीजिवनारा॥ लगेपरोस  
 ननिपुणासुअरा॥ नारिबृन्दसुरजेंवतजांती॥ लागीदेनगा  
 रीमृदुबानी॥ **कन्दः**॥ गारीमथुरसुरदेहिंसुन्दरिव्यङ्गवचन  
 सुनावही॥ भोजनकरहिंसुरअतिविलम्बविनोदसुनिसु  
 खणावही॥ **२३**॥ जेंवतजोवख्योअनन्दसोमुखकोटिऊंनप  
 रेकह्यो॥ अञ्चवाइदीन्हेपानगवनेवासजहंजाकोरह्यो॥ **२४**  
**दोहा**॥ बड्गरिमुनिनहिमवन्तकहंलगनसुनाईआइ॥ सम  
 यविलोकिविवादकरपठयेदेवबुलाइ॥ **२५**॥ **चौपाई**॥ बो  
 लिसकलसुरपादरलीन्हे॥ सबहिंयथोचितआसनदीन्हे  
 वेदीबेदविधानसंवारी॥ सुभगसुमंगलगावहिंनारी॥ सिं  
 छासनअतिदिव्यसुहावा॥ जाईनबरणिगिरिअबनावा॥  
 वैठेशिवविप्रन्दिशिरनाई॥ हृदयसुमिरिनिजप्रभुरचुराई  
 बड्गरिमुनीशानउमाबुलाइ॥ करिष्टुकारसखीलेंआइ॥ दे  
 खतइपसकलसुरमोहै॥ बरनैकविअसजगकविकोहै॥  
 जगदम्बिकाजानिभवभासा॥ सुरनमनहिंमनकीन्दप्रणा  
 मा॥ सुंदरतामर्षादभवानी॥ जाईनकोटिऊबदनवावानी॥



रामा०  
दा०  
३६

36

**कुन्द॥** कोटिङ्गवदननहिंबनैवरणातजगजननीशोभाम  
हा॥ सऊचहिंकहतश्रुतिशेषशारदमन्दमतितलसीकहा  
२५॥ कुविखानिमातृभर्तृनिगवनीमथ्यमंडपशिवजहां॥ अ  
बलोकिशकहिनसऊचिपतिपदकमलमनमथुकरतहं  
२६॥ **दोहा॥** मुनिअनुशासनगणपतिहिंपूजेउशंभुभवानि  
कोउसुनिसंशयकरैजनिस्वरअनादिजियजानि॥ १२२॥  
**चौपाई॥** जसविवाहकीविधिश्रुतिगार्इ॥ महामुनिनसो  
सवकरवाई॥ गहिगिरीशऊशकन्यापाणी॥ शिवहिंस  
मपीजानिभवानी॥ पाणिग्रहणजबकीन्हमहेशा॥ हियह  
षेतबसकलसुरेशा॥ वेदमंत्रमुनिवरउच्चरही॥ जयजयज  
यशंकरसरकरही॥ बाजहिंबाजनविविधविधाना॥ सुमन  
वृष्टिनभभेविधिनाना॥ हरगिरिजाकरभयउविवाह॥ स  
कलभुवनभरिरहाउक्काऊ॥ दासीदासतरगरथनागा॥ ये  
नुवसनमणिवस्तुविभागा॥ अन्नकनकभाजनभरियाना  
दाउजदीन्हनजाउखाना॥ **कुन्द॥** दारजदियोबझभांतिपु  
निकरजोरिहिमभूथरकशो॥ कादेउपूराणकामशंकरच  
रणपंकजगहिरशो॥ २॥ शिवकृपासागरसुसरकरसन्तो  
षसबभांतिहिंकियो॥ पुनिगहेउपदपाणोजमयनाप्रेमपरि  
पूराणदियो॥ २॥ **दोहा॥** नाथउमाममप्राणसमगृहकिंकरी



करेऊ ॥ दामऊ सकल अणाय अरु प्रमत्त वर देऊ ॥ १२३ ॥  
 चौपाई ॥ बऊ विधि शंभु सासु ससुजाई ॥ भगनी भवन चरण शिर  
 नाई ॥ जननी उमा बोलित बली न्ही ॥ लेउ कुंग सुन्दर शिखरी न्ही  
 करऊ सदा शंकर पद पूजा ॥ नारिय मं पति देवन हूजा ॥ वचन कह  
 ति भरिलोचन बारी ॥ बऊ रिला उरली न्हऊ मारी ॥ कत विधिसि र  
 जि नारि जग माही ॥ पराधीन सपने ऊंखनाही ॥ भइ अति प्रेम वि  
 कल महतारी ॥ भीरज की न्हऊ समय विचारी ॥ पुनि पुनि मिलति  
 परति गहि चरणा ॥ परम प्रेम ककुजा उर वरणा ॥ सब नारिन  
 मिलि भेंटि भवानी ॥ जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥ कृन्दः ॥ ज  
 ननि हिं बऊ रि मिलि चली उचित आशीस सब काइ दई ॥ फिरि  
 फिरि विलोकति मात तनतव सखी लै शिव पहंगई ॥ १२४ ॥ याचक  
 सकल सन्तोषि शंकर उमा सहित भवन हिंचले ॥ सब अमर ह  
 षे सुमन वर षे निशान न भवाज हिं भले ॥ ३० ॥ दोहा ॥ चले सऊ  
 हिमवत तब पऊंचावन अति हेत ॥ विविध भांति परीतोष करि  
 विदा की न्ह वृष केत ॥ १२५ ॥ चौपाई ॥ तरत भवन आय गिरि राई  
 सकल शैल सरलि पबुलाई ॥ आदर दान विनय बऊ माना ॥ सब  
 कर विदा की न्ह हिमवानी ॥ जब हिं शंभु के लास हिं आये ॥ सरस  
 बनिज निज लोक सिंथाये ॥ जगत मात पित शंभु भवानी ॥ तेहि  
 सुंगारन कहौं बखानी ॥ कर हिं विविध विधि भोग विलासा ॥ ग



यह ३ मा शंभु विवाह जे नर नारिक हं जे गावही ॥ कल्याण काज विवाह मङ्गल सर्वदा सुख पावही ॥ ३२ त्री ६

रामा०  
वा०  
३०

37

गानसमेत बसहि कैलासा ॥ हरगिरिजा विहार नित नयेऊ ॥ ३ ॥  
दिविधि विपुल काल चलि गलेऊ ॥ तब जन्मे षट् वदन ऊमारा  
तारक अक्षर समर जिहि मारा ॥ आगमनि गम प्रसिद्ध पुराणा ॥  
षट्मुख जन्म कर्म जग जाना ॥ **कुन्दः** ॥ जग जान षट्मुख जन्म  
कर्म प्रताप पुरुषारथ महा ॥ तेहि हेतु मै वृष केतु सुत कर चरि  
त संक्षेप हिं कहा ॥ ३५ ॥ **दोहा** ॥ चरित सिंधु गिरिजार मण वेदन  
पावहिं पार ॥ वरुणो तल शीदा सकि मिश्रति मति मन्द गवार ॥  
३५ ॥ **चौपाई** ॥ शंभु चरित सुनिसर ससहावा ॥ भरहाज मुनि  
अति सुख पावा ॥ बङ्गलाल साकथा परवाजी ॥ नयन नीर रोमा  
बलि दाजी ॥ प्रेम विवश मुख आवन वानी ॥ दशादेखि हरषे मु  
नि जानी ॥ अहो धन्य तब जन्म मुनीशा ॥ तमहिं प्राण समप्रिय  
गौरीशा ॥ शिव पद कमल जिनहिं रति नाही ॥ रामहिं ते सपने  
ऊन सुहाही ॥ विन कुल विष्वनाथ पद नेह ॥ राम भक्ति करल ल  
ण पद ॥ शिव सम कोरु पति व्रत थारी ॥ विवश वत जी सती प्र  
सनारी ॥ पण करि रघु पति भक्ति टोर्छाई ॥ कोशिव सम रामहिं  
प्रिय भाई ॥ **दोहा** ॥ प्रथम कहा मै शिव चरित बूजा मरमत म्हार  
अचि सेवक तम राम के रहित समस्त विकार ॥ ३६ ॥ **चौपाई** ॥  
मै जाना तम्हार गुण प्रीला ॥ कहों सुनइ अवरु पति लीला ॥  
सुनु मुनि प्राजु समागमतो रै ॥ कहिन जायजस सुख मन मोरे ॥



रामचरितअतिअमितमुनीशा॥ कहिनपाकहिंशतकोटिअ  
 हीशा॥ तदपियथाश्रुतकहोंवखानी॥ समिरिगिरापतिप्रभु  
 यनुपानी॥ शारददारुनारिसमस्वामी॥ रामसूत्रथरअनरजा  
 मी॥ जेहिंपरकृपाकरहिंजनजानी॥ कविअरअजिरनचावहिं  
 बानी॥ प्रणवोंसोइकृपालरनुनाथा॥ वरणोंविशदतासुगुण  
 गाथा॥ परमरम्यगिरिवरकैलास॥ सदाजहांशिवउमानिवास  
 दोहा॥ सिद्धतपोधनयोगिजनसुरकिन्नरमुनिवृन्द॥ वसहिंत  
 होंसकृतीसकलसेवहिंशिवसुखकन्द॥ १२० ॥ चौपाई॥ हरि  
 हरविमुखथर्मरतिनाही॥ तेनरतहांसपनेझंनजाही॥ तेहि  
 गिरिपरवटविषटविशाला॥ नितनूतनसुन्दरसनकाला॥ वि  
 विधसमीरसुशीतलकाया॥ शिवविश्रामविषटकृतिगाया॥  
 एकवारतेहितरप्रभुगयेऊ॥ तरुविलोकिउरअतिसुखभयेऊ॥  
 निजकरडासिनागरिपुक्काला॥ बैठेसहजहिंशंभुकृपाला॥ ऊ  
 न्दरुदुवरगौरशरीरा॥ भुजप्रलम्बपरिधनमुनिचीरा॥ तरुणा  
 अरुणाअम्बुजसमचरणा॥ नखकतिभक्तहृदयतमहरणा॥  
 भुजगभूतिभूषणाविपुशरी॥ आननशारदचन्द्रकविहारी॥ दोहा  
 जटासुजुटसरसरितशिरलोचननलिनविशाल॥ नीलकण्ठ  
 लावणनिधिसोहबालविभुभाल॥ १२१ ॥ चौपाई॥ बैठेसोहकाम  
 रिपुकैसैं॥ थरेंशरीरशान्तरसजैसैं॥ पारवतीभलअवसरजानी॥



रामा.  
बा.  
३८

३९

गङ्गां भुपहं मातृभवानी ॥ जानि प्रिया आदर अतिकीन्हा ॥ वाम  
भाग आसन हर दीन्हा ॥ वैरी शिव समीप हरवाई ॥ पूरव जन्म कथा  
चित आई ॥ पति हिय हेत अधिक अनुमानी ॥ विहसि उमा बोली  
प्रियवानी ॥ कथा जो सकल लोक हितकारी ॥ सोइ पूछन चहौ  
लज्जुमारी ॥ विष्णु नाथ मम नाथ पुरारी ॥ विभुवन महिमा विदि  
त तम्हारी ॥ चर अरु चरनागनर देवा ॥ सकल करहि पद पंक  
ज सेवा ॥ दोहा ॥ प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव सकल कला गुणधाम ॥  
योग ज्ञान वैराग्य निधि प्रणत कल्पतरु नाम ॥ २१ ॥ चौपाई ॥  
जो मो पर प्रसन्न सख राशी ॥ जानिय सत्य मोहि निज दासी ॥ तौ  
प्रभु हरज मोर अज्ञाना ॥ करि रघुनाथ कथा विधिना ना ॥ जासु  
भवन सरतरु तर होई ॥ सहि कि दरिद्र जनित दुख सोई ॥ शशि  
भूषण अस हृदय विचारी ॥ हरज नाथ मम मति भ्रम भारी ॥ प्रभु  
जे मुनि वर मारण बादी ॥ कहहिं राम कहं ब्रह्म अनादी ॥ शेषशा  
रदा वेद पुराणा ॥ सकल करहिं रघुपति गुणगाना ॥ तम पुनि  
राम राम दिन राती ॥ सादर जपइ अनुराती ॥ राम सो अवध  
वृषति सुत सोई ॥ कीअ जअ गुण अलख गतिकोई ॥ दोहा ॥ जो  
वृषत नय तो ब्रह्म किमि नारि विरह मति भोरि ॥ देखि चुरित महि  
मा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ जो अनीह व्याप  
क विभु कोऊ ॥ कहइ बुजाइ नाथ मोहि सोऊ ॥ अज्ञ जानि रिस ज



निउरथरह ॥ जे हि विधि मोह मिटै सोर करह ॥ मैवन दीख  
 राम प्रभु ताई ॥ अति भय विकल न तमहिं सुनाई ॥ तदपि म  
 लिन मन बोधन आवा ॥ सो फल भली भांति मैयावा ॥ अज ऊं  
 क कू संशय मन मोरै ॥ करह ऊं कृपा विन ऊं कर जोरै ॥ प्रभु  
 तब मोहि बड्ढ भांति प्रबोधा ॥ नाथ सो स मुजि कर ऊं ज नि क्रो  
 था ॥ तब कर अ स वि मोह अब ना ही ॥ राम कथा पर रुचि मन  
 मा ही ॥ कह ऊं पुनीत राम गुण गाथा ॥ भुजगराज भूषण सु  
 र नाथ ॥ दोहा ॥ बन्दो पद धरि धरणि शिर विनय करौं कर जो  
 रि ॥ वरणा ऊं र बु वर विशद यश प्रति सिद्धान्त नि चोरि ॥ १३१ ॥  
 चौपाई ॥ यदपि योषिता अन अ धिकारी ॥ दासी मन क्रम वच  
 न त म्हारी ॥ गूँजो त तन साधु डरा बहिं ॥ आरत अ धिकारी ज  
 हे पावहिं ॥ अति आरति पूँको सुराया ॥ रघुपति कथा कह  
 ऊं करि दाया ॥ प्रथम सो कारण कह ऊं विचारी ॥ निर्गुण ब्रह्म  
 स गुण वपु धारी ॥ पुनि प्रभु कह ऊं राम अवतारा ॥ बाल चरि  
 त पुनि कह ऊं उदारा ॥ कह ऊं यथा जान की विवाहा ॥ राज ता  
 जा सो दूषण काहा ॥ बन वसि की न्हे उ चरित अ पारा ॥ कह ऊं  
 नाथ जिमि रावण मारा ॥ राज बैठि की न्ही बड्ढ लीला ॥ सक  
 ल कह ऊं शंकर सखी ला ॥ दोहा ॥ बड्ढ रि कह ऊं करुणाय



तनकीन्ह जो अचर ज राम ॥ प्रजा सहित रघुवंश मणि किमि  
गवने निज थाम ॥ १३२ ॥ चौपाई ॥ पुनि प्रभु कहइ सो तब बा  
नी ॥ जेहि विज्ञान मगन मुनि जानी ॥ भक्ति ज्ञान विज्ञान विरगा  
पुनि सब वरणाइ सहित विभागा ॥ औ रौ राम रहस्य अने का ॥  
कहइ नाथ अमि विमल विवेका ॥ जो प्रभु में पूछानहि होई ॥  
सो उदया लुराखइ जनि गोई ॥ तम त्रिभुवन गुरु वेद बाखाना ॥  
आन जीव पा मर का जाना ॥ प्रश्न उमा की सहज सुहाइ ॥ कुल  
विहीन सुनि शिव मन भाई ॥ हरदिय राम चरित सब आये ॥ प्रे  
म पुलक लोचन जल छाये ॥ श्री रघुनाथ रूप उर आवा ॥ पर  
मानन्द अमित सुखावा ॥ दोहा ॥ मगन ध्यान रस दण्ड युग  
पुनि मन बाहिर कीन्ह ॥ रघुपति चरित महेश तन दर्शित वर  
गोलीन्ह ॥ १३३ ॥ चौपाई ॥ ऊँठों सत्य जाहि विनु जानें ॥ जिमि भु  
जकू विनु रजु पदि चानें ॥ जेहि जानें जग जाइ हि राई ॥ जागें य  
था स्वप्न भ्रम जाई ॥ बन्दों बाल रूप सो राम ॥ सब सिथि सु  
लभ जपत जस नाम ॥ मङ्गल भवन अमङ्गल हारी ॥ द्रवो सो  
दशरथ अजिर बिहारी ॥ करि प्रणाम राम हि त्रिपुरारी ॥ द  
रवि स्याम मगि राउ चारी ॥ यन्य यन्य गिरि राज कुमारी ॥ त  
म समान नहिं कोउ उपकारी ॥ पूछेइ रघुपति कथा प्रसारी ॥



सकललोकजशपावनिगङ्गा॥ तमरघुवीरचरणअनुरागी  
 कीन्देहप्रभजगतहितलागी॥ दोहा॥ रामकृपातेँपारवती  
 सपनेइतबमनमाहिं॥ शोकमोहसन्देहभ्रमममविचारक  
 कुनाहिं॥ १३४॥ चौपाई॥ तदपिअशङ्काकीन्दिउसोई॥ कहत  
 सुनतसबकरहितहोई॥ जिन्हहरिकथासुनीनहिकोना॥  
 अवणारंभअहिभवनसमाना॥ नयननसेतदरशहिंदेषा॥ लो  
 चननमोरपंतकरलेषा॥ तेसिरकटुत्ववीरसमतला॥ जेन  
 नमतहरिगुरूपदमूला॥ जिन्हहरिभक्तिहृदयनहिंशानी  
 जीवतसबसमानतेईप्राणी॥ जोनहिंकैरामगुणगाना॥  
 जीहसोदादुरजीहसमाना॥ ऊलिशकठोरनिदुरसोईकाती  
 सुनिहरिचरितनजोहरघाती॥ गिरिजासुनइरामकीली  
 ला॥ सरहितदनुजविमोहनशीला॥ दोहा॥ रामकथासुर  
 येनुसमसेवतसबसखदानि सनासमाजसुरलोकसम  
 कौनसुनैअसजानि॥ १३५॥ चौपाई॥ रामकथासुन्दरकरता  
 री॥ संशयविहगउडावनिहारी॥ रामकथाकलिविटपऊव  
 री॥ सादरसुनुगिरिराजकुमारी॥ रामनामगुणचरितसु  
 हाए॥ जनमकरमअगणितश्रुतिगाए॥ जथाअनन्तराम  
 भगवाना॥ तथाकथाकीरतिगुणगाना॥ तदपिजथाश्रुति



रामा०  
वा०  
५०

जसमतिमोरी॥ कहिहोंदेविप्रीतिअतितोरी॥ उमाप्रभ  
तवसहजसुहाई॥ सुखदसन्तसंमतमुहिभाई॥ एकवात  
नहिमोहिसोहानी॥ यदपिमोहवशकहेऊभवानी॥ तम  
जोकहारामकोउआना॥ जेहिअतिगावथरहिंमुनिथाना  
**दोहा॥** कहहिंसुनहिंअसअथमनरगसैजेमोहपिशाच॥  
पाषंडीहरिपदविमुखजानहिंकूटनसांच॥ १२६॥ **चौपाई॥**  
अज्ञअकोविदअन्यअभागी॥ काईविषयमुऊरमनलागी  
लंपटकपटीऊटिलविशेषी॥ सयनेऊंसनसभानहिदेखी॥  
कहहिंतेवेदअसंमतबाणी॥ जिनहिंसूऊलाभनहिंहानी  
ऊमुरमलिनअरुनयनविहीना॥ रामरूपदेखहिंकिमिदी  
ना॥ जिनकेंअगुणानसगुणविवेका॥ जल्पहिंकल्पितवच  
नअनेका॥ हरिमायावशजगतभ्रमांदी॥ तिनहिंकहतक  
कुअवटितनाही॥ बातलभूतविवशमतवारे॥ तेनहिंबोल  
हिंवचनसंभारे॥ जिनकृतमहामोहमदपाना॥ तिनकरक  
हाकरियनहिंकाना॥ **सोरठा॥** असनिजहृदयविचारितजुसं  
शयभजुरामपद॥ सुनुगिरिराजऊमारिभ्रमतमरविकरव  
चनमम॥ १२७॥ **चौपाई॥** सगुणहिंअगुणहिंसहिंककुभेदा  
गावहिंमुनिपुराणबुधवेदा॥ अगुणअरूपअलखअजजोई



भक्तप्रेमवशासगुणसोहोई ॥ जो गुणरहितसगुणसोकैसैं ॥  
 जलहिमउपलविलगनजैसैं ॥ जासुनामभ्रमतिमिरपतझू ॥  
 तिहिंकिमिकहियविमोहप्रसङ्ग ॥ रामसच्चिदानन्ददिनेश  
 नहिंतहंमोहनिशालवलेश ॥ सहजप्रकाशरूपभगवाना ॥  
 नहितहंपुनिविज्ञानविहाना ॥ हरषविषादज्ञानअज्ञाना ॥ जी  
 वधर्मग्रहमितिअभिमाना ॥ रामब्रह्मव्यापकजगजाना ॥ य  
 रमानन्दपरेशपुराण ॥ दोहा ॥ पुरुषप्रसिद्धप्रकाशनिधिप्र  
 गटपरावरमाय ॥ रघुकुलमणिममस्वामिसोइकहिशिव  
 नायउनाथ ॥ १३८ ॥ चौपाई ॥ निजभ्रमनहिंसमुऊहिंअज्ञानी  
 प्रभुपरमोदधरहिंजउप्राणी ॥ जथागगनवनपटलनिहारी  
 ऊंयेउभानुकहहिंऊविचारी ॥ चितवतलोचनअंगुलिलायें  
 प्रगटयुगलशशितेहिकेभायें ॥ उमारामविषयकअसमोहा  
 नभतमधूमधूरिजिमिसोहा ॥ विषयकराणसुरजीवसमेता ॥  
 सकलएकतेंएकसचेता ॥ सबकरपरमप्रकाशकजोई ॥ राम  
 अनादिअवधपतिसोई ॥ जगतप्रकाशप्रकाशकराम ॥ माया  
 थीशज्ञानगुणधाम ॥ जासुसत्यतातेंजउमाया ॥ भाससत्यईव  
 मोहसहाया ॥ दोहा ॥ रजतसीपमहंभासजिमियथाभानुकर  
 वारि ॥ यदपिमृषातिऊंकालसोइभ्रमनशकैकोउटारि ॥ १३९ ॥

रुघु  
३



चौपाई॥ येहि विधि जग हरि आश्रित रहई॥ यदपि असत्य देत  
 दुख अहई॥ ज्यो स्वप्ने शिर कोटै कोई॥ विनु जागें दुख हरि न होई  
 जा सकृ पाअस भ्रम मिटि जाई॥ गिरिजा सोइ कृपालु रचुराई॥  
 आदि अन्त कोउ जा सुन पावा॥ मति अनुमान निगम अस गावा  
 विनु पद चलैं सुनै विनु काना॥ कर विनु कर्म करै विधि नाना॥  
 आन न रहित सकल रस भोगी॥ विनु बाणी वक्ता बउ योगी॥  
 तनु विनु परसन यन विनु देषा॥ ग्रहे द्वाण विनु वास अशेषा॥  
 अस सब भांति अलौकिक करणी॥ महिमा जासु जाइ नहि ब  
 रणी॥ दोहा॥ जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहि परहिं मुनि प्पा  
 न॥ सोइ दशरथ सुत भक्त हित कोशाल पति भगवान॥ १५०॥  
 चौपाई॥ काशी मरत जन्तु अब लोकी॥ जासु नाम बल करौं  
 विष्णो की॥ सोइ प्रभु मोरच राचर स्वामी॥ रघुवर सब उर अन्तर  
 जामी॥ विवश इंजासु नाम नर कहं ही॥ जन्म अने कर चित अ  
 वदहं ही॥ सादर सुमिरा जे नर करं ही॥ भववारिधि गोपद  
 उवतरं ही॥ राम सो परमात्मा भवानी॥ तहं भ्रम अति अविहित  
 तबवानी॥ अस संशय आनत उर मां ही॥ ज्ञान विराग सकलगु  
 ण जां ही॥ सुनि शिव के भ्रम भञ्जन वचना॥ मिटि गइ सब कृतर्क  
 की रचना॥ भउ रघु पति पद प्रीति प्रतीती॥ दारुण अस स्भावना॥



बीती ॥ दोहा ॥ पुनि पुनि प्रभु पद कमलगहि जो रिप कुरुहण  
 णि ॥ बोली गिरिजा बचन वर मन डं प्रेम रस सानि ॥ १४ ॥ चौपाई  
 शशिकर सम सुनि गिरा तहारी ॥ मिटा मोह शर दात प भारी ॥  
 तम कृपालु सब संशय हरेऊ ॥ राम स्व रूप जानि मोहि परेऊ ॥ ना  
 य कृपा अब गयेउ विषादा ॥ सुखी भइउ प्रभु चरण प्रसादा ॥ अब  
 मोहि आनि किं करि जानी ॥ यदपि सहज जउनारि अयानी ॥ प्र  
 थम जो मैं पूछा सो कहइ ॥ जौ मो पर प्रसन्न प्रभु अहइ ॥ राम  
 ब्रह्म चिन्मय अविनाशी ॥ सर्व रहित सब उर पुरवासी ॥ नाथ  
 रेउ नरतनु केहि हेत ॥ मोहि समुझा कहइ वृष केत ॥ उमा व  
 चन सुनि परम विनीता ॥ राम कथा पर प्रीति पुनीता ॥ दोहा ॥  
 हिय हरषै काम रित वषा कर सहज सुजान ॥ बड़ विधिउ महिं  
 प्रशंसि पुनि बोले कृपा निधान ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ सुनु शुभ कथा  
 भवानी राम चरित मानस विमल ॥ कहा भुषुणि उवाखानि सुना  
 विहगनायक गरुड ॥ १६ ॥ सो संवाद उदार जिहिं विधि भाआ  
 गें कहव ॥ सुनइ राम अवतार चरित परम सुन्दर अनव ॥ १७ ॥  
 हरियण नाम अणारक थाप्य गणित अमित ॥ मै निज मति  
 अनुसार कहों उमा सादर सुनइ ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ सुनि गिरिजा  
 हरि चरित सहाये ॥ विपुल विशद निगमागम गाये ॥ हरि अ



रामा०  
वा०  
धर

वतारहेतजेहिहो३॥ इदमित्यंकहिजाइनसो३॥ रामअतर्क्य  
बुद्धिमनवाणी॥ मतिहमारअससनइभवानी॥ तदपिसनसु  
निवेदपुराणा॥ जसककुकरहिंसमतिअनुमाना॥ तसमैसु  
सुखिसुनावउंतोही॥ समुक्तिपरैजसकारणामोही॥ जबजब  
हो३थर्मकीहानी॥ बाछहिंसुरअथमअभिमानी॥ करहिंस  
नीतिजाइनहिंवरणी॥ सीदहिविप्रयेउसुरथरणी॥ तबतब  
प्रभुथरिविविधशरीरा॥ हरहिकृपानिधिसजनपीरा॥ दोहा  
असुरमारिणापहिसुरन्हिराखहिंनिजश्रुतिसेत॥ जगवि।  
स्तारहिंविशदयशरामजन्मकरहेत॥ १५८॥ चौपाई॥ सोईय  
शगाइभक्तभवतरही॥ कृपासिंधुजनहिततनुथरही॥ राम  
जन्मकेहेतअनेका॥ परमविचित्रएकतेंयेका॥ जन्मएकदु३  
कहौंवाखानी॥ सावधानसनुसुमतिभवानी॥ द्वारपालहरि  
केप्रियदोऊ॥ जयअरुविजयजानसबकोऊ॥ विप्रशापतेंदो  
नौंभाई॥ तामसअसुरदेहतिनपाई॥ कनककशिपुअरुहाट  
कलोचन॥ जगतविदितसुरपतिमदमोचन॥ विजयीसमर  
वीरविख्याता॥ थरिवराहवपुएकनिपाता॥ हो३नरहरिप्र।  
निहसरमारा॥ जनप्रह्लादसयशविस्तारा॥ दोहा॥ भएनि  
शाचरजा३तेमहावीरबलवान॥ कुम्भकर्णारावणसुभट



सरविजयीजगजान॥१५॥ चौपाई॥ मुक्तनभयेउहतेभगवा  
 ना॥ तीनिजन्मद्विजवचनप्रमाणा॥ एकवारतिनकेहितला  
 गी॥ थरेउशरीरभक्तअनुरागी॥ कश्यपअदितितहोपितमा  
 ता॥ दशरथकोशल्याविल्याता॥ एककल्पएहिविधिअ  
 वतारा॥ चरितपवित्रकियेसंसार॥ एककल्पसरदेखिदुखा  
 रे॥ समरजलन्धरसनसबहारे॥ शंभुकीन्हसंगामअपारा॥  
 दनुजमहाबलमरैनमारा॥ परमसतीअसुराधिपनारी॥ ते  
 हिवलताहिनजीतहिंपुरारी॥ दोहा॥ कुलकरिदारेउतासु  
 ब्रतप्रभुसरकारजकीन्ह॥ जबतेहिजानेउं परमतबशापको  
 पकरिदीन्ह॥१६॥ चौपाई॥ तासुशापहरिकीन्हप्रमाणा॥  
 कोतकनिथिकृपालुभगवाना॥ तहोजलंधरावणभयऊ  
 रणहतिरामपरमपददयऊ॥ एकजन्मकरकारणएहा॥  
 जेहिलगिरामथरीनरदेहा॥ प्रतिअवतारकथाप्रभुकेरी॥  
 सुनिमुनिवरणीकविनचनेरी॥ नारदशापदीन्हएकवारा॥  
 कल्पएकतेहिलगिअवतारा॥ गिरिजाचकितभईसुनिबाणी  
 नारदविष्णुभक्तमुनिज्ञानी॥ कारणकवनशापमुनिदीन्हा॥  
 काअपराधरमापतिकीन्हा॥ यहप्रसङ्गमोहिकहइपुरारी॥  
 सुनिमनमोहसोअचरजभारी॥ दोहा॥ बोलेबिहंसिमशेत



रामा०  
वा०  
४३

43

वज्रानीमूढनको३॥ जेहिजसरबुपतिकरहिंजबसोतसतेदि  
वणाहो३॥ १४२॥ सोरठा॥ कहौरामगुणगाथभरदाजसादरसु  
नऊ॥ भवभंजनरघुनाथभजुतलसीतजिमानमद॥ १५०॥ चौ  
पाई॥ हिमगिरिगुहाएकअतिपावनि॥ वहसमीपसरसरित  
सहावनि॥ आश्रमपरमपुनीतसुहावा॥ देखिदेवअधिमन  
अतिभावा॥ निरखिषैलशिरविपिनविभागा॥ भयेउरमाप  
तिपदअनुगागा॥ सुमिरतहरिहिंशापगतिबाधी॥ सहजवि  
मलमनलागिसमाधी॥ मुनिगतिदेखिसुरेशाउराना॥ का  
महिंबोलिकीन्हसनमाना॥ सहितसहायजाऊममहेत॥ च  
लेउहरविदियजलचरकेत॥ सुनासीरमनमहंअतिआसा॥  
चहतदेवअधिममपुरवासा॥ जेकामीलोलपजगमाही॥ ऊ  
टिलकाकईवसबहिंउराही॥ दोहा॥ सुखदाउलैभागुशर  
म्माननिरखिमृगराज॥ कीनिलेउजनिजानजउतिमिसुरप  
तिहिंनलाज॥ १५२॥ चौपाई॥ तेहिआश्रमहिंमदनजबगयेऊ  
निजमायावसन्तनिर्मयेऊ॥ ऊसमितविवधविटपवडरंग  
कूजहिंकोकिलगुझहिंभृंगा॥ चलीसहावनित्रिविधवया  
री॥ कामकृणानुबढावनहारी॥ रभादिकसरनारिनबीना  
सकलअसमपारकलाप्रवीणा॥ करहिंगानबडभानितरंगा



बद्धविधिक्रीडहिं पानिपतेगा ॥ देखिसहायमदनहरषाना  
 कीन्देसिपुनिप्रपञ्चविधिनाना ॥ कामकलाककुमुनिदिन  
 व्यापी ॥ निजभयउरेउमनोभवपापी ॥ सिमकिचापिशकै  
 कोउतासू ॥ बउरखवाररमायतिजासू ॥ दोहा ॥ सहितसहा  
 यसभीतअतिमानिहारिमनमयन ॥ गहेसिजाइमुनिवर  
 चरणकहिस्रटिआरतवयन ॥ १५२ ॥ चौपाई ॥ भयेउननार  
 दमनककुरोषा ॥ कहिप्रियवचनकामपरितोषा ॥ नाईच  
 रणशिरआयसुपाई ॥ गयेउमदनतबसहितसहाई ॥ मुनि  
 सुशीलताआपनिकरणी ॥ सरपतिसभाजाईसबवरणी ॥  
 सुनिसबकेमनअचरजआवा ॥ मुनिहिंपशंसिहरिहिंशिर  
 नावा ॥ तवनारदगवनेशिवपांही ॥ जीतिकामअहमितिम  
 नमांही ॥ मारचरितशंकरहिंसुनावा ॥ अतिप्रियजानिमहे  
 शसिखावा ॥ बारवारविनबहुंमुनितोही ॥ जिमियहकथा  
 सुनायउमोही ॥ तिमिजनिहरिहिंसुनावहुंकवहं ॥ चले  
 डंपसंगदुरापहुतवहं ॥ दोहा ॥ शंभुदीन्द्रउपदेशहितनहि  
 नारदहिसहान ॥ भरद्वाजकोतकसनहुहरिश्चाबलवान  
 चौपाई ॥ रामकीन्दुवांहेंसोहोई ॥ करैअन्यथाअसनहिकोई ॥  
 शंभुवचनसुनिमननहिभाये ॥ तबविरञ्चिकेलोकसिथाये ॥



रामा०  
बी०  
धध

एकवारकरतलवरवीणा॥ हरियशगावतपरमप्रवीणा॥  
हीरसिंधुगवनेमुनिनाथा॥ जहाँबसैंश्रीनिवासश्रीसाथा॥  
हरषिमिलैउठिरमानिकेता॥ बैठेआसनअविहिममेता॥॥  
बोलेविहसिचराचराया॥ बड़तैदिनकीन्हीमुनिदाया॥॥  
कामचरितनारदसबभाषै॥ यद्यपिप्रथमवरजिशिवराषै॥  
अतिप्रचाउरचुपतिकीमाया॥ जेदिनमोहअसकोजगजाया॥  
दोहा॥ रूखवदनकरिवचनमृदुबोलेश्रीभगवान॥ तमहरेसु  
मिरातेंमिटहिंमोहमारमदमान॥ २५४॥ चौपाई॥ सुनुमु  
निमोहहोउमनताके॥ ज्ञानविशगहृदयनहिजाके॥ ब्रह्म  
चर्यब्रतरतमतिथीरा॥ तमहिंकिकरैमनोभवपीरा॥ नारद  
कहेउसहितअभिमाना॥ कृपातम्हारिसकलभगवाना॥  
करुणानिधिमनदीखविचारी॥ उरअंकरेउगर्वतरुभारी॥  
वेगिसोमैंजारिहैंउपारी॥ पणहमारसेवकहितकारी॥ मु  
निकरहितममकोतकहोई॥ अवशिउपायकरवमैसोई॥  
तवनारदहरिपदशिरनाई॥ चलेहृदयअहमितिअधिकई  
श्रीपतिनिजमायातबप्रेरी॥ सुनइकठिनकरणीतेहिकेरी  
दोहा॥ विरचेउमगुमहंनगरतेंहिंशतयोजनविस्तार॥ श्री  
निवासपुरतेंअधिकरचनाविविधप्रकार॥ २५५॥ चौपाई॥



वसहिंनगरसुन्दरनरनारी॥ जनुबद्धमनसिजरतितनुपा  
 री॥ तेहिपुरवसैशीलनिधिराजा॥ अगणितहयगजसेनस  
 माजा॥ शतसुरेशसमविभवविलासा॥ रूपतेजबलशी  
 लनिवासा॥ विश्वमोहिनीतासुकुमारी॥ श्रीविमोहजेहिं  
 रूपनिहारी॥ सोहरिमायासबगुणखानी॥ शोभातासुकि  
 जाइबखानी॥ करैखयम्बरसोतृपवाला॥ आयेतहंअगणि  
 तमहिपाला॥ मुनिकौतकीनगरतेहिगयेऊ॥ पुरवासि  
 नसनइऊतभयेऊ॥ सुनिसवचरितभूपगृहआये॥ करि  
 पूजातृपमुनिवैठाये॥ दोहा॥ आनिदिखार्नारदहिंभूप  
 तिराजकुमारि॥ कहइनाथगुणदोषएहिकरहदयविचा  
 रि॥ २५६॥ चौपाई॥ देविरूपमुनिविरतिविसारी॥ बरीबा  
 रलगिरहेनिहारी॥ ललतातासुविलोकिभुलाने॥ हृदय  
 हर्षनहिप्रगटबाखाने॥ जोएहिवरैअमरसोहोई॥ समरभू  
 मितेदिजीतनकोई॥ सेवहिंसकलचराचरताही॥ वरैशी  
 लनिधिकन्याजाही॥ ललतासबविचारिउरगषे॥ ककुक  
 वनारभूपसनभाषे॥ सुतासुललताकहिनृपपाही॥  
 नारदचलेशोचमनमाही॥ करोंजाइसोइयतनविचारी॥  
 जेहिप्रकारमोहिबरेकुमारी॥ जपतपककुनहोइयहिका  
 ला॥ देविधिमिलैकवनविधिवाला॥ दोहा॥ यहिअवस



रचाहियपरमशोभारूपविशाल॥ जो विलोकिरीजै ऊं अ  
रितबमेलै जयमाल॥ १५३॥ चौपाई॥ हरिसनमों गों सुन्दर  
तार्इ॥ होइ हिजात गहरु अति भार्इ॥ मोरे हित हरिस मनहि  
कोऊ॥ यहि अवसर सहाय सो होऊ॥ बड़ विधि विनय की  
न्हते हि काला॥ प्रगटेउ प्रभु कौ तकी कृपाला॥ प्रभु वि  
लोकि मुनि नयन जडा ने॥ होइ हिंका जहियें हरषाने॥ अ  
ति आरत कहि कथा सुनार्इ॥ करइ कृपा प्रभु होइ सहाई॥  
आपन रूप देइ प्रभु मोही॥ आन भोति नहि पावउं ओही॥ जे  
हि विधि नाथ होइ हित मोरा॥ करइ सो वेगि दास मैं तोरा॥  
निज माया बल देवि विशाला॥ हिय हंसि बोलै दीन दयाला  
होहा॥ जे हि विधि होइ हि परम हित नारद सुनइ तम्हार॥  
सोइ हम करवन आन ककु वचन न मृषा हमार॥ १५४॥ चौपाई  
ऊपय मों गुरु ज व्याकुल रोगी॥ वैद न देखै सुनइ मुनियोगी  
इहि विधि नित तम्हार मै ठयेऊ॥ कहि अस अनर हित प्रभु  
भयेऊ॥ माया विवश भये मुनि मूढा॥ समुझि नहि हरि गि  
रनि गूढा॥ गवने तरुत तहां अघि राई॥ जहां स्वयं वर भू  
मि बनार्इ॥ निज निज आसन वैठे राजा॥ बड़ वनाव करिस  
हित समाजा॥ मुनि मन दर्ष रूप अति मोरे॥ मोहित जिआ  
नहि बरि नहि भोरे॥ मुनि हित कारण कृपा निधाना॥ दीन्ह



ऊरूपनजाशबखाना ॥ सोचरित्रलखिकाइनपावा ॥ नार  
 दजानिसबदिशिरनावा ॥ दोहा ॥ रहैतहांदुईरुद्रगणतेजा  
 नहिंसबभेउ ॥ विप्रवेषदेखतफिरहिंपरमकौतकीतेउ ॥ १५२  
 चौपाई ॥ जेहिसमाजबैठेमुनिजाई ॥ हृदयरूपग्रहमितिग्र  
 थिकाई ॥ तहंबैठेमहेशगणदोऊ ॥ विप्रवेषगतिलखैनको  
 ऊ ॥ करहिंकूटनारदहिसुनाइ ॥ नीकदीन्हहरिसुन्दरताइ  
 रीजिहिराजऊंअरिक्कविदेखी ॥ इनहिंवरिहिरिजानिशे  
 षी ॥ मुनिहिंमोहमनहाथपराये ॥ हंसहिंशंभुगणअति  
 सचुपाये ॥ यदपिसुनहिंमुनिअटपटिवानी ॥ समुजिन  
 परैबुद्धिभ्रमसानी ॥ काइनलखासोचरितविशेषी ॥ सोख  
 रूपनृपकन्यादेखी ॥ मर्कटबदनभयकरदेही ॥ देखतह  
 दयक्रोधभातेही ॥ दोहा ॥ सखीसऊलैऊंअरितवचलिज  
 नुराजमराल ॥ देखतिफिरैमहीपसबकरसरोजजयमा  
 ल ॥ १५० ॥ चौपाई ॥ जेहिदिशिबैठेनारदफूली ॥ सोदिशि  
 तेहिनविलोकेउभूली ॥ पुनिपुनिसुनिउकशहिंअकुला  
 ही ॥ देखिदशाहरगणमुसकाही ॥ थरिपतनुतहंगय  
 उकृपाला ॥ ऊंअरिहर्षिमेलीजयमाला ॥ डुलहिनिलेंग  
 येउलह्मीनिवासा ॥ नृपसमाजसबभयोउनिगणा ॥ मुनि  
 अतिविकलमोहमतिनाही ॥ मणिगिरिगईकूटीजनुगारी



रामा०  
वा०  
४६

५६

तवहरगाणबोलेमुसुकाई॥ निजमुखमुऊरविलोकइ  
जाई॥ असकहिदोउभागेभयभारी॥ बदनदीखमुनिवारि  
निहारी॥ वेधविलोकिक्रोथअतिबाजा॥ तिनहिंशापदीन्हा  
अतिगाजा॥ दोहा॥ होइनिशाचरजाइतमकपदीपापीदो  
उ॥ हंसेइहमहिंसोलेइफलबइरिहंसेउमुनिकोउ॥ १६॥  
चौपाई॥ पुनिजलदीखरूपनिजपावा॥ तदपिहृदयसन्तो  
षनआवा॥ फरकतअथरकोपमनसोही॥ सपदिचलेकम  
लापतिपांही॥ देहोंशापकिमरिहोंजाई॥ जगतमोरउपहा  
सकराई॥ बीचहिंपन्थमिलैदनुजारी॥ सङ्गरमासोइराजऊ  
मारी॥ बोलेमपुरवचनसरसोइ॥ मुनिकिहिंचलेचिकल  
कीनोइ॥ सनतवचनउपजाअतिक्रोथा॥ मायावशनरहा  
मनबोथा॥ परसम्यदाशकइनहिदेवी॥ तम्हरेईषीकपट  
विशेषी॥ मयतसिंधुरुद्रहिंबौरायेइ॥ सरनप्रेरिविषया  
नकरायेइ॥ दोहा॥ असुरसुराविषशङ्करहिंआपुरमाम  
णिचारु॥ स्वारथसाधकऊटिलतमसदाकपटव्यवहारु॥  
१७॥ चौपाई॥ परमस्वतंत्रनशिरपरकोई॥ भावैमनहिंकरा  
इतमसोई॥ भलेहिमन्दमन्दहिभलकरइ॥ विस्मयदर्शन  
हियककुथरइ॥ उहंकिउहंकिपरिचेइंसबकाइ॥ अतिअ  
शंकमनसदाउकाइ॥ कर्मशुभाशुभतमहिंनबाधा॥ अब।



लगितमहिनकाइसाथा ॥ भलेभवनअबवायनदीन्हा ॥ या  
 वेगेफलआपनकीन्हा ॥ बसेइमोहिजवनथरिदेहा ॥ सोउत  
 नुथरइणापममपहा ॥ कपिआकृतितमकीन्हहमारी ॥ करि  
 हहिंकीशसहाईतम्हारी ॥ ममअपकारकीन्हतमभारी ॥ ना  
 रिविरहतमहोवडुखारी ॥ दोहा ॥ शापशीपाथरिहरविदिय  
 प्रभुबइविनतीकीन्ह ॥ निजमायाकीप्रबलताकर्षिकृपानि  
 थिलीन्ह ॥ १६३ ॥ चौपाई ॥ जबहरिमायाहरिनिवारी ॥ नहित  
 हंरमानराजकुमारी ॥ तबमुनिअतिसभीतहरिचरण ॥ गद्दे  
 पादिप्रणतारतिहरण ॥ मृषाहोउममशापकृपाला ॥ मम  
 इच्छाकहदीनदयाला ॥ मैंदुर्वचनकहेउं बइतेरे ॥ कहमुनि  
 पापमिटहिंकिमिमेरे ॥ जपइजाइशङ्करशतनामा ॥ होइ  
 हिरुदयतरुतविश्रामा ॥ कोउनहिशिवसमानप्रियमोरे ॥ अ  
 सप्रतीतित्यागेइजनिभारे ॥ जेहिपरकृपानकरहिंपुरारी  
 सोनपावमुनिभक्तिहमारी ॥ असउरथरिमहिविचरइजाइ  
 अवनतमहिंमायानियराइ ॥ दोहा ॥ बइविधिमुनिहिंप्र  
 बोधिप्रभुभएतवअन्तरथान ॥ सत्यलोकनारदचलैकरत  
 राममुणगान ॥ १६४ ॥ चौपाई ॥ हरगणमुनिहिंजातपणदेवी  
 विगतमोहमनहर्षविशेषी ॥ अतिसभीतनारदपहआये ॥ ग



रामा०  
बा०  
५७

दिपदप्रारतवचनसनाये॥हरगणहमनविप्रनिगया॥  
वउअपरायकीन्हफलाया॥शापअनुग्रहकरइकृपाला  
बोलेनारददीनदयाला॥निशिचरजाइहोइतमदोऊ॥वैभ  
वविपुलतेजबलहोऊ॥भुजबलविश्वजीतवतमजहिआ  
थरिहहिंविस्ममनुजतनुतहिआ॥समरमरणहरिहाय  
तम्हारा॥होइहइमुक्तनपुनिसंसार॥चलैपुगलमुनिपद  
शिरनाई॥भएनिशाचरकालहिपाई॥दोहा॥एककल्पएदि  
हेतप्रभुलीन्हमनुजअवतार॥सुररञ्जनसजनसखदहरि  
भदिभञ्जनभूभार॥१८५॥चौपाई॥एदिविधिजन्मकर्महरिके  
रे॥सुन्दरसखदविचित्रवनेरे॥कल्पकल्पप्रतिप्रभुअवतर  
ही॥चारुचरितनाताविथकरही॥तवतवकथामुनीशानगा  
ई॥परमपुनीतविचित्रसहाई॥विविधप्रसङ्गअनूपवावा  
ने॥करहिंनसुनिआश्चर्यमयाने॥हरिअनन्तहरिकथाअ  
नन्ता॥कहहिंसनहिंबइविधिप्रुतिसन्ता॥रामचन्द्रकेच  
रितसहाये॥कल्पकोटिलगिजाइनगाये॥यहप्रसङ्गमे  
कहाभवानी॥हरिमायामोहेमुनिज्ञानी॥प्रभुकोतकीप्र  
णतदितकारी॥सेवतसुलभसकलडुखहारी॥सोरठा॥  
सुरनरमुनिकोउतांहिजेदिनमोहमायाप्रबल॥असविचारि



मनमाहिभजियमहामायापतिहिं ॥१६६॥ चौपाई ॥ अपरहेत  
सुनुशैलकुमारी ॥ कहोंविचित्रकथाविस्तारी ॥ जेहिकारण  
अजअगुणअनूपा ॥ ब्रह्मभयेकोशलपुरभूपा ॥ जोप्रभुविपि  
नफिरततमदेवा ॥ बंधुसमेतथरैंमुनिबेवा ॥ जासुचरितअब  
लोकिभवानी ॥ सतीशरीररहिउबोराणी ॥ अजडंनकायामिट  
ततहारी ॥ तासुचरितसुनुभूमरुजहारी ॥ लीलाकीन्हजोते  
हिअवतारा ॥ सोसबकदिहोंमतिअनुसारा ॥ भरदाजसुनिश  
करवाणी ॥ सकुचिसप्रेमउमासुसकानी ॥ लगेवडरिवरगो  
वृषकेत ॥ सोअवतारभयउजेहिहेत ॥ दोहा ॥ सोमैंतमसनक  
हवसबसुनुमुनीशामनलाई ॥ रामकथाकलिमलहरणि  
मकुलकरणिसुलाई ॥ १६७ ॥ चौपाई ॥ स्वायंभूमनुअरुणतरु  
पा ॥ जिनतेंभैनरसृष्टिअनूपा ॥ दयातीथर्मआचारणीका ॥  
अजडंगावश्रुतिजिनकीलीका ॥ नृपउत्तानपादसततासु ॥ अ  
वहरिभक्तभयेसतजासु ॥ लघुसतनामप्रियव्रतताही ॥ वेद  
पुराणप्रशंसतजाही ॥ देवहृतीपुनितासुकुमारी ॥ सोमुनि  
कर्दमकीप्रियनारी ॥ आदिदेवप्रभुदीनदयाला ॥ जठरथरेउ  
जेहिकपिलकृपाला ॥ सांख्यशास्त्रजिनप्रगटवावाना ॥ तत  
विचारनिपुणभगवाना ॥ तेहिमनराजकीन्हबडकाला ॥ प्रभु



रामा०  
वा०  
धृ

५४

आयसुसबविधिप्रतिपाला ॥ सोरठा ॥ होइनविषयविराग  
भवनवसतभाचौथपनु ॥ हृदयवज्रतडुखलागजन्मगयेउ  
हरिभक्तिविनु ॥ १६८ ॥ चौपाई ॥ वरवसराजसुतहितबदीन्हा  
नारिसमेतगमनवनकीन्हा ॥ तीरथवरनैमिषविख्याता ॥  
अतिपुनीतसाथकसिधिदाता ॥ वसहिंतहांमुनिसिद्धसमा  
जा ॥ तहंहियहर्षिचलेमनुराजा ॥ पन्थजातसोहहिंमतिथी  
रा ॥ ज्ञानभक्तिजनुथरैशरीरा ॥ पङ्कचेजाइयेनुमतितीरा ॥ ह  
र्षनहानेनिर्मलनीरा ॥ आपमिलनसिद्धमुनिज्ञानी ॥ धर्मधु  
रन्धरनृपअधिजानी ॥ जहंतहंतीरथरहैसुहाए ॥ मुनिनस  
कलसादरकरवाए ॥ कृपाशरीरमुनिपटपरिधाना ॥ सन्त  
समाजनितिसुनहिंपुराणा ॥ दोहा ॥ द्वादशअक्षरमंत्रवर  
जपहिंसहितअनुराग ॥ वासुदेवपदपङ्कुरुहदम्पतिमन  
अतिलाग ॥ १६९ ॥ चौपाई ॥ करहिंआहारशाकफलकन्दा ॥  
सुमिरहिंब्रह्मसच्चिदानन्दा ॥ पुनिहरिकेतकरणातपलागे  
वारिआहारमूलफलत्यागे ॥ उरअभिलाषनिरन्तरहोई ॥ दे  
वियनयनपरमप्रभुसोई ॥ अगुणअखण्डअनन्तअनादी ॥  
जेदिचिन्तहिंपरमाश्रयवादी ॥ नेतिनेतिजेदिवेदनिरूपा ॥  
चिदानन्दनिरूपाधिग्रन्था ॥ शंभुविरचित्विस्मभगवाना ॥



उपजहिंजासुअंशतेनाना॥ ऐसेप्रभुसेवकवशाअहंही॥ भ  
 कहेतलीलातनुगहंही॥ जोयहवचनसत्यश्रुतिभाषा॥ तो  
 हमारपूजहिअभिलाषा॥ दोहा॥ एहिविधिबीतेवर्षषट्सह  
 सवारिआहार॥ सम्वतसप्तसहस्रपुनिरहैसमीरआधार॥ १००  
 चौपाई॥ वरषसहसदशात्यागेउसोज॥ जाछेरहैएकपददोज  
 विधिहरिहरतपदेविअणार॥ मनुसमीपआएबहुवारा॥  
 मांगहुबरवहुभांतिलुभाये॥ परमपीरनहिचलहिचलाये॥  
 अस्थिमात्रहोयरहीशरीरा॥ तदपिमनागपिनहिंमनपीरा  
 प्रभुसर्वज्ञदासनिजजानी॥ गतिअनन्यतापसत्पराणी॥  
 मांगुमांगुनृपभयनभवानी॥ परमगभीरकृपासृतसानी॥  
 मृतकजिआवनिगिरासुहाई॥ अवतारंअहोउरजवआई॥  
 हृष्टपुष्टतनुभयेउसुहाये॥ मानहुंअबहिंभवनतेंआये॥  
 दोहा॥ अवणसुधासमवचनसुनिपुलकप्रफुलितगात॥  
 बोलेमनुकरिदाउवतप्रेमनरुदयसमात॥ १०१॥ चौपाई॥  
 सनुसेवकसरतरुसरथेनू॥ विधिहरिहरवन्दितपदरेनू॥  
 सेवतसलभसकलसखदायक॥ प्रणतपालसचराचरनाय  
 क॥ जोअनापहितहमपरनेहू॥ तोप्रसन्नहोरयहवरदेहू॥  
 जोसरूपवसशिवमनमांही॥ जिहिंकारणमुनियत्नकराही

पंचम  
 ५



रामा०  
बी०  
४५

जोभुसुणिउमनमानसहेसा॥सगुणअगुणजेहिनिगमप्र  
शंसा॥देखहिंसोखरूपभरिलोचन॥कृपाकरइप्रणातार।  
तिमोचन॥दम्पतीवचनपरमप्रियलागे॥मृदुलविनीतप्रेम  
रसपागे॥भक्तवतसलप्रभुकृपानिधाना॥विश्रवासप्रगटे  
भगवाना॥**दोहा**॥नीलसरोरुहनीलमणिनीलनीरथरणा  
म॥लाजहितनशोभानिरखिकोटिकोटिशतकाम॥१२॥  
**चौपाई**॥शारदमयकुमदनकुविंसीवा॥चारुकपोलचिबु।  
कदरग्रीवा॥अथरअरुणारदसुन्दरनासा॥विभुकरनिकर  
विनिन्दकहासा॥नवअम्बुजअम्बककुविनीकी॥चितवनि  
ललितभावतीजीकी॥भुक्तिमनोजवापकुविहारी॥तिल  
कललाटपटलयुतिकारी॥ऊण्डलमकरमुकुटशिरभा  
जा॥ऊटिलकेशजनुमधुपसमाजा॥उरग्रीवतसरुचिरव  
नमाला॥पदिकहारभूषणमणिजाला॥केहरिकन्धरचा  
रुजनेऊ॥बाहुविभूषणसुन्दरतेऊ॥करिकरसरिससुभ  
गभुजदण्डा॥कटिनिषङ्करशरकोदण्डा॥**दोहा**॥तडि  
तविनिन्दकपीतपटउदररेखचरतीनि॥नाभिमनोहरले  
तिजनुयमुनभ्रमरकुविक्कीति॥१३॥**चौपाई**॥पदराजी  
ववरणिनहिजाही॥मुनिमनमधुपवसहिजेहिमांदी॥



वामभागशोभतिअनकूला॥आदिशक्तिक्विविनिधिजग  
 मूला॥जासुअंशउपजहिंगुणखानी॥अगणितलक्ष्मीउ  
 मात्रह्लाणी॥भृङ्गटिविलासजासुजगहोई॥रामवामदि  
 शिसीतासोई॥कुविसमुद्रहरिरूपविलोकी॥एकटकर  
 हैनयनपटरोकी॥चितवहिंसादररूपअनूपा॥तस्मिन्  
 मानहिंमनुषातरूपा॥हर्षविवशातनुदशाधुलानी॥परे  
 दंडईवगहिषदपाणी॥सिरपरसेप्रभुनिजकरकंजा॥त  
 रतउवाएकरूपापुंजा॥**दोहा**॥बोलेकृपानिधानप्रनिअ  
 तिप्रसन्नमोहिजानि॥मोंगडवरजोउभावमनमहादानि  
 अनुमानि॥**२५**॥**चौपाई**॥सुनिप्रभुवचनजोरियुगपाणी  
 धरिधीरजबोलेमृडवाणी॥नाथदेविपदकमलतमारे  
 अबधरेसबकामहमारे॥एकलालसावडिमनमाहीं॥सुग  
 मअगमकहिजातिसुनाहीं॥तमहिंदेतअतिसुगमगो  
 सोई॥अगमलागुमोहिनिजकृपाणोंई॥यथादरिद्रीविबु  
 धतरूपाई॥बडसंपतिमोंगतसऊचाई॥तासुप्रभावजान  
 नहिंसोई॥तथाहृदयममसंशयहोई॥सोतुमजानइअ  
 नरजामी॥प्रबडमोरमनोरथस्वामी॥सऊचविहारमां  
 गुचूपमोही॥मोरेनहिअदेयककुतोही॥**दोहा**॥रानिशिरो



रामा०  
सा०  
५०

मणि कृपा निधि नाथ कहौ सत भाव ॥ चाहौ तमहिं समा  
न सत प्रभु सनक वनदुराव ॥ १०५ ॥ चौपाई ॥ देवि प्रीति सुनि  
वचन अमोले ॥ एवमस्तु करुणा निधि बोले ॥ आय सरिस  
खोजौ कहं जाई ॥ नृपत वतन यहो बमै आई ॥ शतरूप दि  
विलोकिकर जोरे ॥ देवि मांगु वर जोरु चितोरे ॥ जो वर नाथ च  
तर नृप मांगा ॥ सोइ कृपालु मोहि अति प्रिय लोगा ॥ प्रभु प  
रंतु सुदि होति छिछाई ॥ यदपि भक्त हित तमहिं सुहाई ॥  
तम ब्रह्म दिजनक जग स्वामी ॥ ब्रह्म सकल उर अनारजामी  
अस समुजत मन संशय होई ॥ कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई  
जेनि जभक्त नाथ तव अदर्श ॥ सो सुख पावहिं सो गति लहई  
दोहा ॥ सोइ सुख सोइ गति भक्ति सोइ सोइ निज चरण सनेइ  
सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु ह महिं कृपा करि देइ ॥ १०६ ॥ चौ  
पाई ॥ सुनि मृदु गूढ रुचिर वर रचना ॥ कृपा सिंधु बोले मुदु  
वचना ॥ जो कछु रुचि तमहरे मन मांही ॥ मै सो दीन्ह संव सं  
शय नांही ॥ मात विवेक अलौकिक तोरे ॥ कवडंन मिटि दि  
अनुग्रह मोरे ॥ बंदि चरण मनु कहे उवहोरी ॥ अवर एक वि  
नती प्रभु मोरी ॥ सत विषय कतव पदरति होऊ ॥ मोहि वउ मू  
ढ कहै किन कोऊ ॥ मणी विनु फणी जिमि जल विनु मीना ॥



ममजीवनतिमितमहिंशायीना ॥ असवरमंगिचरण  
 गदिरहेऊ ॥ एवमस्तुकरुणानिधिकहेऊ ॥ अबतमम  
 मअनुशासनमानी ॥ वसऊजाईसरपतिरजधानी ॥ सो  
 रवा ॥ तहंकरिभोगविसालतातगयेंककुकालपुनि ॥  
 होइऊअवयभुआलतवमैहोवतम्हारसुत ॥ १७७ ॥ चौपा  
 ई ॥ इच्छामयनरवेषसंवारे ॥ होइहोंप्रगटनिकेततम्हारे  
 अंशानसहितदेहधरिताता ॥ करिहोंचरितभक्तसखदा  
 ता ॥ जेसुनिसादरनरवउभागी ॥ भवतरिहहिंममताम  
 दयागी ॥ आदिशक्तिजिहिंजगउपजाया ॥ सोअवतरि  
 हिमोरयहमाया ॥ पुरउवमैअभिलाषतम्हारा ॥ सत्यस  
 त्यपासत्यहमारा ॥ पुनिपुनिअसकहिकृपानिधाना ॥  
 अन्तर्धानभएभगवाना ॥ दंपतीउरथरिभक्तिकृपाला ॥ ते  
 हिआअमनिवसेककुकाला ॥ समयपाइतनुतजिअनया  
 सा ॥ जाइकीन्हअमरावतिवासा ॥ दोहा ॥ यदइतिहासपु  
 नीतअतिउमहिंकहेउवृषकेत ॥ भरदाजसुनुअपरपुनि  
 रामजन्मकरहेत ॥ १७८ ॥ चौपाई ॥ सुनिपुनिकथापुनीत  
 पुराणी ॥ जोगिरिजाप्रतिशंभुवानी ॥ विषविदितएक  
 केकयदेश ॥ सत्यकेततहंवसैनरेष्ट ॥ धर्मपुरन्यरनीति



रामा०  
बा०  
५१

51

निधाना॥ तेजप्रतापशीलबलवाना॥ तेहिकेभयेयुगल  
सुतवीरा॥ सबगुणधाममहारणधीरा॥ राजधनीजेठेसु  
तआही॥ नामप्रतापभानुअसताही॥ अपरसुतहिंअरिम  
दननामा॥ भुजबलअतलअचलसंग्रामा॥ भारहिंभाइ  
परस्परप्रीती॥ सकलदोषकुलवर्जितरीती॥ जेठेसुतहिं  
राजनृपदीन्हा॥ हरिहितआपुगवनवनकीन्हा॥ दोहा॥  
जबप्रतापरविभयेउनृपफिरीदोहाईदेश॥ प्रजापालअ  
तिवेदविधिकतडंनरहअवलेश॥ १२५॥ चौपाई॥ नृप  
हितकारकसचिवसुजाना॥ नामधर्मरुचिशक्रसमाना॥  
सचिवसयानबंधुबलवीरा॥ आपुप्रतापपुञ्जराणीधीरा॥  
सैनसङ्गचतरङ्गअपारा॥ अमितसुभटसबसमरजुजारा  
सैनविलोकिराऊहरषाना॥ अरुवाजैगहगहैनिसाना॥  
विजयहेतुकटकहीवनाई॥ सुदिनसाधिनृपचलेउबजाई  
जहंतहंपरीअनेकलराई॥ जीतेसकलभूपवरिआई॥ सम  
हीपभुजबलवशाकीन्हे॥ लैलैदाउकाडिनृपदीन्हे॥ स  
कलअवनिमाउलतेहिकाला॥ एकप्रतापभानुमहिपा  
ला॥ दोहा॥ सबशविश्वकरिवाडबलनिजपुरकीन्हप्रवे  
श॥ अर्थधर्मकामादिसुखसेवहिसमयनरेश॥ १२६॥ चौपाई



भूपप्रतापभाबुबलपाई॥ कामयेनुभरभूमिसुहाई॥ सब  
 डारवर्जितप्रजासुखारी॥ धर्मशीलसुन्दरनरनारी॥ सचि  
 वधर्मरुचिहरिपदप्रीती॥ नृपहितहेतुशिखावतनीती॥  
 गुरुरसुरसन्तपितरमहिदेवा॥ करैसदाचपसबकीसेवा  
 भूपधर्मजेवेदवाखानै॥ सकलकरैसादरसुखमानै॥ दिन  
 प्रतिदेशविविधविधिदाना॥ सुनैशासुवरवेदपुराणा॥  
 नानावाणीकूपतशगा॥ सुमनवाटिकासुन्दरवागा॥ विप्र  
 भवनसुरभवनसुहाये॥ सबतीरथनविविधवनाये॥ दोहा  
 जहैलगिकहैपुराणश्रुतिएकएकसबयाग॥ बारसहस्र  
 सहस्रनृपकिएसहितअनुराग॥ १५॥ चौपाई॥ हृदयनक  
 कुफलअनुसन्धाना॥ भूपविवेकीपरमसुजाना॥ करैजे  
 धर्मकर्मममवाणी॥ वासुदेवअर्पितनृपज्ञानी॥ चढिव  
 रवाजिवारएकराजा॥ मृगयाकरसबसाजिसमाजा॥ विं  
 ध्याचलगभीरवनगयेऊ॥ मृगपुनीतबहुमारतभयेऊ॥  
 फिरतविपिननृपदीखबराह॥ जनुवनहरेउशशिहिंसि  
 राह॥ बउविधुनहिंसमातमुखमाही॥ मनहुंक्रोधवशा  
 उगिलतनाही॥ कोलकरालदशनकुविगाई॥ तनुविशा



बामा०  
वा०  
५२

52

लपीवरअधिकार्इ॥ बुरुचुरातहयआरवपाये॥ चकित  
विलोकतकानउठायें॥ दोहा॥ नीलमहीथरशिखरसम  
देखिविशालवराह॥ चपरिचलेउहयसुदुकिनृपहोंकि  
नहोउनिबाह॥ १८२॥ चौपाई॥ आवतदेखिअधिकरववा  
जी॥ चलेउवराहमरुतगतिभाजी॥ तरतकीन्हनृपशर  
सन्धाना॥ महिमिलिगयेउविलोकितबाणा॥ तकिता  
कितीरमहीशचलावा॥ करिकूलसुअरशरीरवचावा॥  
प्रगटदुरवजाउमृगभागा॥ रिसवशभूपचलेउसङ्गलागा  
गयेउहरिवनगहनवराह॥ जहँनाहीगजबाजिनिबाह॥  
अतिअकेलवनविपुलकलेशू॥ तदपिनमृगमगतजेउन  
रेशू॥ कोलविलोकिभूपवउधीरा॥ भागिपैठिगिरिगुहा  
गभीरा॥ अगमदेखिनृपअतिपक्षितार्इ॥ फिरेउमहावन  
परेउभुलार्इ॥ दोहा॥ खेदखिन्नतृषितल्लथितराजाबाजि  
समेत॥ खोजतव्याकुलसरितसरजलविनुभयेउअचेत  
१८३॥ चौपाई॥ फिरतविपिनआश्रमएकदेखा॥ तहंवसनृ  
पतिकपटमुनिवेष्टा॥ जासुदेशानृपलीन्हकुडार्इ॥ सम  
रसैनतजिगयेउपरार्इ॥ समयप्रतापभाजुकरजानी॥ आ



पनअतिअसमयअनुमानी॥ गयेउनगृहमनबद्धतगलानी  
 मिलानराजहिनुपअभिमानी॥ रिषिउरमारिरङ्गजिमिराजा  
 विपिनबसैतापसकेसाजा॥ ताससमीपगमननुपकीन्हा॥  
 यहप्रतापरवितिहितबचीन्हा॥ राउतधितनहिंसोपहिचाना  
 देखिसुवेषमहामुनिजाना॥ उतरितरगतैंकीन्हप्रणामा॥  
 परमचतरनकहेउनिजनामा॥ दोहा॥ भूपतिरुधितविलो  
 कितिहिसरवरदीन्हदेखा॥ मजनपानसमेतयहकीन्हनु  
 पतिहरषा॥ १८४॥ चौपाई॥ गरुअमसकलसुखीनुपभयेऊ  
 निजआप्रमतापसलेगयेऊ॥ आसनदीन्हअस्तरविजानी॥  
 पुनितापसबोलेउमृडबाणी॥ कोतमसवनफिरइअकेले॥  
 सुन्दरयुवाजीवपरहेले॥ चक्रवर्तिकेलक्षणातोरे॥ देवत  
 दयालागिअतिमोरे॥ नामप्रतापभानुअवनीशा॥ ताससा  
 चिबमैसनइमुनीशा॥ फिरतअहेरेहिंपरेउंभुलाई॥ बडेभा  
 ग्यदेखेउंपदआई॥ हमकहंदुर्लभदरशातम्हारा॥ जानतहों  
 ककुभलहोनिहारा॥ करुमुनितातभयेउअचियारा॥ योजन  
 सत्तरिनगरतम्हारा॥ दोहा॥ निशाचोरगंभीरवनपन्थनसू  
 ऊसुजान॥ बसइआजुअसजानितमजाएइहोतविहान॥  
 १८५॥ तलसीजसभवितव्यतातैसीमिलैंसहा॥ आपुनआवै



रामा०  
का०  
५३

53

ताहिपैंकैतिहिंतहांलैजाइ॥१८६॥**चौपाई॥**भलेहिनाथआ  
 यसुथरिशीशा॥बांधितरगतहुवैठमहीशा॥नृपबहुभां  
 तिप्रशंसेउनाही॥चरणवन्दिनिजभागपसराही॥पुनिबो  
 लेउमृदुगिरासुहाई॥जानिपिताप्रभुकरौंछिछाई॥मोहि  
 मुनीशसुतसेवकजानी॥नाथनामनिजकहहुवखानी॥  
 तिहिनजाननृपनृपहिंसोजाना॥भूपसुहृदयसोकपटस  
 याना॥वैरीपुनितत्रीपुनिराजा॥कुलबलकीन्हचहैनिज  
 काजा॥समुजिराजसुखदुखितअराती॥आवाअनलश्व  
 सुलगैकाती॥सरलवचननृपकेसुनिकाना॥वरयसंभा  
 रिहृदयहरषाना॥**दोहा॥**कपटबोरिवाणीमृदुलबोलेउपु  
 क्रिसमेत॥नामहमारभित्तिअवनिर्धनरहितनिकेत॥१८७॥  
**चौपाई॥**कहनृपजेविज्ञाननिधाना॥तमसारिवेगलितअ  
 भिमाना॥सदारहहिंअपनयोदुगप॥सबविधिऊशालऊवे  
 षवनाप॥तेहितैंकहहिंसन्तकृतिटैरे॥परमअकिञ्चनप्रि  
 यहरिकेरे॥तमसमअथनभित्तिअगेहा॥होतविरश्चिशि  
 वहिंसन्देहा॥योसिसोसितवचरणनमामी॥मोपरकृपा  
 करियअवस्वामी॥सहजप्रीतिभूपतिकीदेवी॥आपविष  
 यविष्णुसविशेषी॥सबप्रकारराजहिंअपनाई॥बोलेउअथि



कसनेहजनाई॥ सुनुसतिभावकहोंमहिपाला॥ ३॥ होव  
 सतबीतेवडकाला॥ दोहा॥ अबलगिमोहिनमिलेउकोउ  
 मैनजनायेउंकाहू॥ लोकमान्यताअनलसमकरतपकान  
 नदाहू॥ १८८॥ सोरठा॥ तलसीदेखिसवेषभूलहिंसमूढ  
 नचतरनर॥ सुन्दरकेकिहिपेवचनसुधासमअशनअ  
 हि॥ १८९॥ चौपाई॥ तातेंगुप्ररहोंजगमांही॥ हरितजिकिम  
 पिप्रयोजननाही॥ प्रभुजानत्वसवविनहिंजनाये॥ कहू  
 कवनसिधिलोकरिजाये॥ तमप्रचिसमतिपरमप्रियमो  
 रे॥ प्रीतिप्रतीतिमोहिपरतोरे॥ अबजोतातदुरावोंतोही॥ दा  
 रुणादोषवढैअतिमोही॥ जिमिजिमितापसकहैउदासा॥  
 तिमितिमिन्टपहिउपजविश्वासा॥ देखासवशकर्ममन  
 बाणी॥ तबबोलेउतापसवकथानी॥ नामहमारएकतनु  
 भाई॥ सुनिनृपबोलेउपुनिशिरनाई॥ कहूनामकरअर्थव  
 खानी॥ मोहिसेवकअतिआपनजानी॥ दोहा॥ आदिसृष्टिउ  
 पजीजबहिंतबउतपनिभइमोरि॥ नामएकतनुहेततिहिं  
 देहनथरीवहोरि॥ १९०॥ चौपाई॥ जनिआअर्थकरइमनमा  
 ही॥ सततपतेंदुर्लभककुनाही॥ तपबलतेंजगसृजैविधाता  
 तपबलविष्णुभयपरिज्ञाता॥ तपबलशंभुकरहिंसंहारा॥



रामा०  
बा०  
पथ

तपतेश्रगमनककुसंसार॥ तपबलशेषथरहिंमहिभारा  
तपअथारसवसृष्टिअपारा॥ **यहदुःखदक्षेपक॥** भयउत्तप  
हिसुनिअतिअनुरागा॥ कथापुरातनकहैसोलागा॥ कर्म  
धर्मरतिहासअनेका॥ करैनिरूपणाविरतिविवेका॥ उड्ड  
वपालनप्रलयकहानी॥ कहसिअमितआश्चर्यवाखानी॥  
सुनिमहीपतापसवशभयेऊ॥ आपननामकहनतबलयेऊ  
कहतापसवृषजानोंतोही॥ कीन्हैउकपटलागुभलमोदि  
**सोरठा॥** सुनुमहीशअसनीतिजहंतहंनामनकहहिंवृष॥  
मोहितोदिपरअतिप्रीतिपरमचतरतानिरखितब॥ १५॥  
**चौपाई॥** नामतम्हारप्रतापदिनेशा॥ सत्यकेतवपितानरे  
शा॥ गुरुप्रसादसबजानियराजा॥ कहियनआपनजानि  
अकाजा॥ देखिताततबसहजसुधाई॥ प्रीतिप्रतीतिनीतिनि  
पुणाई॥ उपजिपरीममतामनमोरे॥ कहोंकथानिजवृकें  
तोरे॥ अबप्रसन्नमैसंशयनाही॥ मांगुजोभूषभावमनमा  
ही॥ सुनिप्रभवंचनभूषतिहरषाना॥ गहिपटविनयकी  
न्हविधिनाना॥ कृपासिंधुसुनिदरपानतोरे॥ चारिपदारथ  
करतलमोरे॥ प्रभुहिंतयापिप्रसन्नविलोकी॥ मांगिअगा  
मवरहोउंअशोकी॥ **दोहा॥** जगमरणडावरहिततनुसमर



नजीतैकोउ ॥ एककृत्रिपुहीनमहिराजकल्पशतहोउ ॥  
 १९२ ॥ चोपाई ॥ कहतापसनुपयेमेंहोऊ ॥ कारणाएककठि  
 नसुनुसोऊ ॥ कालैतबपदनाइहिशीशा ॥ एकविप्रऊलका  
 डिमहीशा ॥ तपबलविप्रसदावरिआरा ॥ तिनकेकोपनको  
 उरावारा ॥ जौविप्रनवशकरऊनरेशा ॥ तौतबवशविधिवि  
 स्ममहेशा ॥ चलनब्रह्मकलसेंवरिआई ॥ सत्यकहोंदौभुजा  
 उठाई ॥ विप्रशापविनुसुनुमहिपाला ॥ तोरनाशनदिकब  
 निऊंकाला ॥ हरषेउराउवचनसुनितासू ॥ नाथनहोउमोरग्र  
 बनासू ॥ तबप्रसादप्रभुकृपानिधाना ॥ मोकहंसर्वकालकल्प  
 णा ॥ दोहा ॥ एवमस्तकहिकपटमुनिबोलाऊदिलबहोरि ॥  
 मिलवहमारभुवालनिजकहऊतोमोरिनखोरि ॥ १९३ ॥ चोपा.  
 नातैंमेंतोहिवरजौंराजा ॥ कहैकथातबपरमअकाजा ॥ छटै  
 अवणगृहपरतकहानी ॥ नशातम्हारसत्यममवाणी ॥ यह  
 प्रगटैअथवादिजशापा ॥ नाशतोरसुनुभानुप्रतापा ॥ आनउ  
 पायनिधनतबनाही ॥ जोहरिहरकोपहिंमनमाही ॥ सत्यना  
 थपदगदिनृपभाषा ॥ दिजगुरुकोपकहऊकोराषा ॥ राखेंगु  
 रुजौकोपविधाता ॥ गुरुविरोधनहिकोउजगजाता ॥ जौनच  
 लवहमकहैंतम्हारे ॥ होउनाशनदिशोचहमारे ॥ एकहिउरउ  
 रपतमनमोरा ॥ मभुमहिदेवशापअतिबोरा ॥ दोहा ॥ होंदिवि



श्रीमा०  
श्री०  
५५

प्रवशकवनविधिकहृकृपाकरिसो३॥ तमतजिदीनदयाल  
निजहितनदेखोंको३॥ १५॥ चापाई॥ सुनुनृपविविधयत्न  
जगमांदी॥ कष्टसाध्यपुनिहोहिंकिनांदी॥ अहैएकअतिस  
गमउपाई॥ तहोपरन्तएककठिनार्थ॥ ममअधीनयुक्तनृपसोई  
मोरजावतवनगारनहोई॥ आजुलागिअरुजबतेंभयेऊं॥  
काहूकेगृहग्रामनगयेऊं॥ जोनजावतबहोईअकाजू॥ बना  
आइअसमझसआजू॥ सुनिमहीपबोलेमृडबाणी॥ नाथ  
निगमअसनीतिवाखानी॥ बडेसनेहलघुनपरकरंदी॥ गिरि  
निजशिरनिसदातृणथरंदी॥ जलधिअगाथमौलिवद्रफेन  
सन्ततथरणिथरतशिररेनू॥ दोहा॥ असकहिगहेनरेशपद  
स्वामीहोऊकृपालू॥ मोहिलागीदुखसहियप्रभुसजनदीनद  
यालू॥ १६॥ चौपाई॥ जानिनुपहिंआपनअधीना॥ बोलाताप  
सकपटप्रवीणा॥ सत्यकहोभूपतिसुनुतोही॥ जगमहंनहिं  
दुलभककुमोही॥ अवशिकार्यमेंकरिहोंतोरा॥ मनतनुव  
चनभक्ततैंमोरा॥ योगयुक्तिनपमंत्रप्रभाऊ॥ फलैतबहिंज  
बकरियदुराऊ॥ जोनरेशमेंकरोंसोई॥ तमपरसऊमोहि  
जाननकोई॥ अन्नसोजोइजोइभोजनकरई॥ सोइसोइतबआ  
यसुअनुसरई॥ पुनितिनकेगृहजेवेंजोई॥ तववशहोइभूपस  
नुसोई॥ जाइउपायरचऊनृपपह॥ संवतभरिसंकल्पकरेहू॥ दो



हा॥ नितनूतनदिजसहस्रशतवरेजसहितपरिवार॥ में  
 तम्हरेसंकल्पलगिदिनहिंकरवजेवनार॥ १५६॥ चौपाई॥  
 पहिविधिभूषकष्टअतिथोरे॥ होइहहिंसकलविप्रवशातो  
 रे॥ करिहहिंविप्रहोममखसेवा॥ तेहिप्रसन्नसहजहिंबा  
 शदेवा॥ औरएकतोहिकहोंलाखाऊ॥ मैयहिवेषनआउबका  
 ऊ॥ तम्हरेउपरोहितकहंराया॥ हरिआनबमेंकरिनिजमा  
 या॥ तपबलतेहिंकरिआपुसमाना॥ रखिहोंइहांवरषपर  
 माणा॥ मैथरितासुवेषसुनुराजा॥ सबविधितोरसंवारव  
 काजा॥ गरुनिशिवऊतशयनअबकीजे॥ मोहितोहिभूष  
 भेटदिनतीजे॥ मैतपबलतोहितरगसमेता॥ पडंचैहोंसो  
 वतहिंनिकेता॥ दोहा॥ मेंआउबसोइवेषथरिपहिचानेऊ  
 तबमोहि॥ जबएकानबुलाइसबकथासुनाऊंतोहि॥ १५७  
 चौपाई॥ शयनकीन्हृपआयसुमानी॥ आसनजाईवैठकु  
 लज्ञानी॥ अमितभूषनिद्राअतिआई॥ सोकिमिसोवशोच  
 अधिकारी॥ कालकेतुनिशिचरतहंआवा॥ जेहिभूकरहो  
 ईनृपहिंभुलावा॥ परममित्रतापसनृपकेरा॥ जानैसोअति  
 कपटचरेरा॥ तेहिंकेशतसुतअरुदशभाई॥ खलअतिअ  
 जयदेवदुखदाई॥ प्रथमहिंभूषसमरसबमारे॥ विप्रसन्तस  
 रदेखिदुखारे॥ तेहिंखलपाक्किलवयरसभारा॥ तापसनृप



रामा.  
वा.  
५६

56

मिलिमंत्रविचारा॥ जेहिं रिपु दाय सोइ रचेन्द्र उपाई॥ भावी  
वश न जान ककु राई॥ दोहा॥ रिपु तेजसी अकेल अपिल बु  
करि गणियन ताइ॥ अज डं देत दुख रवि शशि दिंशि र अ व  
शोधित राइ॥ १५८॥ चौपाई॥ ताप स नृपनि ज सावहिं निहारी  
हरषि मिले उ उ दि भय उ सुखारी॥ मित्र हिं क हि सब कथा सु  
नाई॥ जात थान बोला सुख पाई॥ अवसाये उ रिपु सुन ऊन रे  
आ॥ जौ त म की न्द मोर उ प देशा॥ परि हरि शोच रह दु त म  
सोई॥ विनु ओषध हिं व्याधि विधि सोई॥ ऊल समेत रिपु मू  
ल बहाई॥ चौथे दिवस मिल ब मै आई॥ ताप स नृप हिं ब ड त  
परितोषी॥ चला महा कपटी अति रोषी॥ भानु प्रताप हि वा  
जिस मेता॥ पडं चाये सि सो वत हिं निकेता॥ नृप हिं नारि प हं  
पायन कराई॥ हय गृह बांये सि वा जिव नाई॥ दोहा॥ राजा के  
उपरोहित हिं दरि लै गय उ व हो रि॥ लै राखे सि गिरि खो ह म  
ह माया करि म ति भोरि॥ १५९॥ चौपाई॥ आपु विरचि उपरो  
हित रूपा॥ परा जाइ ते दिशे ज अनूपा॥ जागे उ नृप अ नु भ  
य उ विहाना॥ देखि भवन अति अचर ज माना॥ मुनि महि  
मा मन म हं अनु मानी॥ उठे उ रा उ जे हि जान न राणी॥ का  
न न गये उ वा जि च छि ते ही॥ पुर न र नारि न जाने उ के ही॥ ग  
ये या म पु ग भ प ति आ वा॥ बर बर उ त सब वा ज व था वा॥ उप



रोहितहिंदीखजबराजा॥ चकितविलोकि सुमिरिसो  
 रकाजा॥ युगसमनृपहिंगएदिनतीनी॥ कपटीमुनिपद  
 रहमतिलीनी॥ समयजानिउपरोहितआवा॥ नृपदिमतों  
 सबकहिसमुजावा॥ दोहा॥ नृपहर्षेपहिचानिगुरुभ्र  
 मवशरहानचेत॥ बरैतरतशातसहसवरविप्रऊदुम्ब  
 समेत॥ २००॥ चौपाई॥ उपरोहितजेवनारवनाई॥ कुरस  
 चारिविधिजसश्रुतिगाई॥ मायामयतेहिकीन्दरसोई  
 व्यञ्जनवङ्गगणिसकैनकोई॥ विविधमृगनकरआमि  
 षरान्या॥ तेहिमहंविप्रमासखलसान्या॥ भोजनकहं  
 सबविप्रबुलाये॥ पदवखारिसादरवैढाये॥ परसनला  
 गुजबहिंमहिपाला॥ भइअकाशबाणीतेहिकाला॥ वि  
 प्रवृन्दउरिउरिगृहजाहू॥ देवउिहानिअन्नजनिखाहू  
 भयेउरसोइभूसुरमासू॥ सबदिजउठेमानिविश्वासू॥ भू  
 पविकलमतिमोहभुलानी॥ भावीवशानआवमुखबानी  
 दोहा॥ बोलेविप्रसकोपतबनहिककुकीन्दविचार॥ जा  
 इनिशाचरहोऊनृपमूढसहितपरिवार॥ २०१॥ चौपाई  
 लत्रबन्धुतेंविप्रबुलाइ॥ बालेलियेसहितसमुदाइ॥ ईश्व  
 रसाखाथर्महमारा॥ जैहसितेंसमेतपरिवार॥ सम्वतम



समा०

वा०

५३

57

बिलावल

धनाशतबहोऊ॥ जलदातानरहहिंऊलकोऊ॥ नृपस  
निशापविकलअतिशसा॥ भइबहोरिवरगिराअकाशा  
विप्रऊशापविचारिनदीन्हा॥ नहिअपराधभूषककुकी  
न्हा॥ चकितविप्रसबसुनिनभवानी॥ भूषगयेजहंभोज  
नखानी॥ तहंनअशाननहिविप्रसुआरा॥ फिरेउराउमन  
शोचअपारा॥ सबप्रसऊमहिसुरनसुनाई॥ असितपरे  
उअवनीअऊलाई॥ दोहा॥ भूपतिभावीमिटैनहियदपि  
नदूषणातोर॥ कियेंअन्यथाहोइनहिविप्रशापअतिचोर॥  
चौपाई॥ असकहिसबमहिदेवसिधाए॥ समाचारपुरलो  
गनपाए॥ शोचहिंदूषणादेवहिंदेही॥ विरचितहंसकाक  
कियजेही॥ उपरोहितभवनपडंचाई॥ असुरतापसहिंख  
वरिजनाई॥ तेहिंखलजहंतहंपत्रपढाये॥ सजिसजिसैन्य  
भूषसबआये॥ घेरिन्हनगरनिमानबजाई॥ विविधभांति  
नितिहोतिलराई॥ जूकेसकलसुभटकरिकरणी॥ बंधु  
समेतपरेउनृपथरणी॥ सत्यकेतऊलकोउनवांचा॥ विप्र  
शापकिमिहोइकसांचा॥ रिपुहिंजीतिनृपनगरवसाई॥  
निजनिजपुरगैजययशापाई॥ दोहा॥ भरद्वाजसुनुजाहिं  
जबहोतविधातावाम॥ भूरिमेरुसमजनकयमताहिव्या

२०२



लसमदाम ॥ २०३ ॥ **चापार्श्व** ॥ कालपात्रमुनिस्त्रुसोत्रराजा  
 भयेउनिशाचरसहितसमाजा ॥ दशाशिरताहिबीसभुजद  
 एडा ॥ रावणानामवीरवरिवण्डा ॥ भूषत्रुजअरिमर्दनना  
 मा ॥ भयेउसोऊम्भकर्णबलधामा ॥ सचिवजोरहाथर्मरु  
 चिजासू ॥ भयेउविमात्रबन्धुलघुतासू ॥ नामविभीषणाजे  
 हिंजगजाना ॥ विस्मभक्तविज्ञाननिधाना ॥ रहैजेसतसेव  
 कनृपकेरे ॥ भयेनिशाचरघोरवनेरे ॥ कामरूपखलजिनि  
 सअनेका ॥ ऊटिलभयङ्करविगतविवेका ॥ कृपारहितहिं  
 सकसवपापी ॥ वरणिनजाइविश्वपरतापी ॥ **दोहा** ॥ उपजे  
 यदपिपुलसत्यऊलपावनअनलअनूप ॥ तदपिमहीस  
 रणापवशभयेसकलअचरूप ॥ २०४ ॥ **चौपार्श्व** ॥ कीन्दवि  
 विधतपतीनिद्रभाई ॥ परमउग्रसोवरणिनजाई ॥ गयेउ  
 निकटतपदेखिविधाता ॥ मांगऊवरप्रसन्नमैंताता ॥ करि  
 विनतीपदगहिदशापीशा ॥ बोलेउवचनसनऊजगदी  
 शा ॥ हमकाहूकेमरहिंनमारे ॥ वानरमनुजजातिदुश्कारे  
 एवमस्तुतमवउतपकीन्हा ॥ मैंब्रह्मामिलिहिंवरदीन्हा  
 उनिप्रभुऊम्भकर्णपहंगयेऊ ॥ तेहिविलोकिमनविस्मय  
 भयेऊ ॥ जौयहखलनितिकरवअहारा ॥ दोइहहिंसबउजा  
 रिसंसार ॥ शारदप्रेरितासुमतिफेरी ॥ मांगेसिनीदमासषट



रामा०  
बा०  
५८

58

केरी॥**दोहा**॥ गयेउ विभीषणापास पुनिकहेउ पुत्रवरमोगु  
तेहिंमोगेउ भगवन्नापदकमलअमलअनुशगु॥२०५॥**चौ**  
**पाई**॥ तिनहिंदेश्वरब्रह्मसिधाए॥ हर्षिततेअपनेगृहआए  
मयतनूजामन्दोदरिनामा॥ परमसुन्दरीनारिल्लामा॥  
सोउमयदीन्हरावणाहिंआनी॥ भईसोयातथानपटगानी॥  
षर्हितभयेउनारिभलिपाई॥ पुनिदोउबंधुविवाहेसिजाई॥  
गिरित्रिकूटएकसिंधुमजारी॥ विधिनिर्मितदुर्गमअतिभा  
री॥ सोमयदानवबद्धरिसंवारा॥ कनकरचितमणिभवन।  
अपारा॥ भोगवतीजसअहिऊलवासा॥ अमरावतीजसश  
क्रनिवासा॥ तिन्हतैअधिकरम्यअतिबद्धा॥ जगविख्या  
तनामतेहिलक्का॥**दोहा**॥ खाईसिन्धुगभीरअतिचारिउ  
दिशिफिरिआव॥ कनककोटमणिखचितटढवरणिन  
जाइबनाव॥२०६॥ हरिप्रेरितजिहिंकल्पजोइजातथान  
पतिहोइ॥ सरप्रतापीअतलबलदलसमेतवससोइ॥२०७॥  
**चौपाई**॥ रहैतहांनिशिचरभटभारे॥ तेसबसुरनसमरसं  
हारे॥ अवतहंरहहिंशक्रकेप्रेरे॥ रत्नककोटियतपतिकेरे  
दशमुखकबडंखवरिअसपाई॥ सैनसाजिगाढवेरेसिजा  
ई॥ देविबिकटभटवडिकटकाई॥ यतजीवलैगएपराई॥  
फिरिसवनगरदशाननदेवा॥ गयेउशोचसखभयेउविशेषा



सुन्दरसहजअगमअनुमानी॥ कीन्हतहांशवणारजया  
 नी॥ ~~॥~~ जेहिंजसयोगवांटिगृहदीन्हा॥ सुखीसकल  
 रजनीचरकीन्हा॥ एकवारऊवेरपहंथावा॥ पुष्पकजानजी  
 तिलैआवा॥ दोहा॥ कौतुकहैंकैलासपुनिलीन्हेसिजाई  
 उठाई॥ मनऊंतौलिभटबाहुबलचलाअधिकसुखपाई॥ २०८  
 देवयत्तगन्धर्वनरकिन्नरनागऊमारि॥ जीतिवरीनिज  
 बाहुबलबहुसुन्दरवरनारि॥ २०९॥ यहएकदोहादोषक॥  
 चौपाई॥ सुखसम्पतिसुतसैनसहाई॥ जयप्रतापबलबु  
 दिबजाई॥ नितनूतनसबवाछतजाई॥ जिमिप्रतिलाभलो  
 भअधिकारि॥ अतिबलऊम्भकर्णअसभाता॥ जेहिकहैन  
 दिप्रतिभटजगजाता॥ करिमदपानसोषटमासा॥ जाग  
 तहोइतिऊंपुरासा॥ जौंदिनप्रतिआहारकरुसोइ॥ विम्व  
 वेगिसवचौपटहोइ॥ समरधीरनहिजाइवखाना॥ तेहि  
 समअधिकवीरबलवाना॥ वारिदनादजेठसुततासू॥ भ  
 भमहप्रथमलीकजगजासू॥ जेदिनहोइरणसमुखको  
 ई॥ सरपुरनितहिंपरावनहोई॥ दोहा॥ ऊमुखअकम्पन  
 ऊलिपारदभूअकेतअतिकाय॥ एकएकजगजीतिशाक  
 पेसेंसुभटनिकाय॥ २१०॥ चापाई॥ कामरूपजानहिंसब



रामा०  
बा०  
५५

59

माया॥ सपनेइ जिनके थर्मन दाया॥ दशमुख बैठ सभाए  
कवारा॥ देवि अमित आपन परिवारा॥ सुत समूह जनप  
रिजन नाती॥ गनै कोणार निशाचर जाती॥ सैन विलोकि  
सहज अभिमानी॥ बोला बचन क्रोध मदसानी॥ सुनइ स  
कलरजनी चरगूया॥ हमरे बैरी विबुध वरूया॥ ते समु  
ख नहिं करहिं लराई॥ देवि सबल रिगुजाहिं पराई॥ ति  
न कर मरण एक विधि होई॥ कहौं बुजाइ सुनइ अव सोई  
द्विज भोजन मख हो मशाराया॥ सब कहं जाइ करइ तम  
बाधा॥ दोहा॥ लधा दीण बल हीन सुर सहज हिं मिलिह  
हिं आइ॥ तब मारिहौं कि क्काडिहौं भली भांति अपनाइ॥ २५॥  
चौपाई॥ मेघनाद कहं पुनि हं करावा॥ दीन्ह सीख बल ब  
यर बजावा॥ जे सुर समधीर बलवाना॥ जिनके लरिवे  
कर अभिमाना॥ तिनहिं जी विरणा आनइ बांधी॥ उरि स  
तपित अनुशासन साथी॥ यहि विधि सब नही आचादी  
न्ही॥ आपुन चले उगदा करली न्ही॥ चलत दशानन जो  
लति अवनी॥ गर्जत भर्ग सबत सुर रमणी॥ रावण आ  
वत सुने उमको हा॥ देवनत देखे छेद सिखो हा॥ दिक्  
पालन के लोक सिधाये॥ सनै सकल दशानन आये॥ २६॥



निपुनि सिंहनाद करि भारी ॥ देश देवत न्दिगारि प्रचारी ॥ राग  
 म द म त्त फिरई जग थावा ॥ प्रति भट खोजत कत डेन पावा ॥ ३  
 हांत ॥ नारद मिलै कहि सि मु सु कारई ॥ देव कहौ मुनि देऊ दि  
 खारई ॥ सुनत अनघ नारद हिं न भावा ॥ श्वेत ही पति हिं तरत प  
 वावा ॥ सागर उत्तरि पार सो गयेऊ ॥ नारि वृन्दत हं देखत भये  
 ऊ ॥ तिन्ह सन कह्य पति न प हं जाऊ ॥ कहिउ कि आवनि शा  
 चरनाऊ ॥ तब मों तिन्ह हिं जीति संगामा ॥ लै जै हों तम को नि  
 जयामा ॥ सुनत वचन एक जठर रिसानी ॥ धाउ चरगा गहि ग  
 गन उठानी ॥ गई डुरि थरि थरि कजोरा ॥ ऊरि सि सिन्धु म  
 थ्य अति जोरा ॥ दोहा ॥ गयो पताल अचेत कै मरै न विप्र प्रसाद  
 सावधान उठि गर्ज पुनि दिये न हरष विषाद ॥ २५ ॥ चा पाई ॥  
 जीते सिनागन गर सब जारी ॥ गयो बड्ढ रिबलिलोकि सरा  
 री ॥ बावन रावण आवत जाना ॥ किये देव अघिसन अपमाना  
 खेल तरहन गर शिशु नाना ॥ निज बलति न हिं दीन्ह भगवाना  
 धाउ थरा तिन्ह पुरलै आप ॥ नगर नारिन रदेवन थाप ॥ बीस बा  
 ड दश कन्धर जाई ॥ विथिय दग फनिक हाकी आई ॥ राखि न्दि  
 बांधि खिजाव हिं भारी ॥ नाजन कहै सदैव रुमारी ॥ बावन दी।  
 ख बड्ढत सकुचाना ॥ तब कुडाइ दिय कृपानिधाना ॥ चला तर



रामा०  
वा०  
६०

तनिशाचरनाहा॥ लाजशाङ्कककुनहिमनमाहा॥ दोहा॥  
अतिनिलज्जदायारहितहिंसापरअतिप्रीति॥ रामविमुख  
दशकन्यशठतापरचाहतजीति॥ २३॥ भरद्वाजसुनुजाहि  
जवहोइविधातावाम॥ कनककोचकैजाइतबलहैनकोडी  
दाम॥ २४॥ चापाई॥ जहंकहंफिरतदेवदिजपावै॥ दाउले  
इबद्धासदियावै॥ इहिआचरणफिरैदिनराती॥ महाचो  
रमयावलउतपाती॥ तबतरतपम्पापुरआवा॥ बालिनाम  
कपिपतिजिहिंठावा॥ दीखजाइइकसरबरशोभा॥ जेहिंम  
नमहामुनिनकरलोभा॥ तहोकपीशाकरैनिजध्याना॥ आ  
दरसैंहसंध्यासनमाना॥ जाइगउतहंभारजनीशा॥ दोकबाहु  
गर्जितभुजबीशा॥ तबकपीशाचितवामुखकारै॥ ध्यानकी  
सौसररिसविसराई॥ तबरावणबोलाकरिक्रोथा॥ बकध्या  
नीकपिशटसुनुबोथा॥ दोहा॥ मोहिजितेंविनुसमरसुनुन  
करुध्यानपतिकीश॥ अंजुलिदेइनपाइहैपणकरोअजई  
श॥ २५॥ चापाई॥ तबवालीबोलाविहसाई॥ बलतह्महारपेसो  
हैभाई॥ रहअंजुलिमेंदेउसप्रीती॥ जाऊहोइजाइइमुहिजी  
ती॥ तबनिशिचरपतिउठारिसाई॥ देकपियुद्धकाडिकदरा  
ई॥ तबहिंकीशपतिमनहिंविचारा॥ शिवबलदीन्हमरिदिन



हिमारा॥ दशकन्यरचरजाऊविचारी॥ अजयतम्हारी  
 सुनीविधिचारी॥ बडतभांतिबालीसमुजावा॥ कौनेऊ  
 भांतिबोधनहिआवा॥ तबसकोपपडचिथराकपीशा॥  
 थरितिहिंकांखचांपिदशशीशा॥ अञ्जुलिदीनरविहिं  
 मनवाणी॥ अचईसप्रऊउदधिकरणानी॥ जपाआदि  
 शङ्करमनवाणी॥ तिहिंदाणासंभ्यावन्दिसिहानी॥ दोहा  
 आवधरहिंकपीशातबकांखरहालकेश॥ इदिविधिबी  
 तेमासषटपाएबडतकलेश॥ २२६॥ चौपाई॥ तेइकलेश  
 वशकरैउपाई॥ तहंनचलैककुआतरतार्इ॥ बडप्रखेदक  
 खरीमडंजामा॥ अतिऊवासतहांभईधामा॥ कलमलाइ  
 रिसदशाननिकाटा॥ कचकरजाममनडभ्रमचाटा॥ एक  
 दिवसरविअंजुलिसाजा॥ कांखतेनिसरिमहायुनिगाजा  
 तबपुनिथरिकपीससोबांधा॥ लग्गयौअरुदकेराथा॥ बी  
 समुजादशशीशासुधारा॥ चरणादोउपुनिथरिउरपारा॥ थ  
 रिसमैटिडूमरीसमकीन्हा॥ बांधिसेजपरणोभादीन्हा॥  
 अंगदखेलिलातसिरमारा॥ किलकिलाइकिलकैकिल  
 कारा॥ दोहा॥ ताराचिन्हिउरावणहितिहिंदाणादीन्हु  
 जाइ॥ जाइतरतलंकेशगृहबडरिथरिहिंकपिराइ॥ २२७॥ चौ



रामा०  
वा०  
६२

61

माधुर

**पाई॥** पुनि रावण आवा विहिं दोंई॥ सहसबाहु जहो रास  
बनार्इ॥ जलक्रीडा कर संग सब नारी॥ विविध भोंति शोभा  
अति भारी॥ आइ रास में उल जहं रेवा॥ सरन रनाग करहिं  
सब सेवा॥ जाइ दीख रावण सख नाना॥ हरष समेत हृदय  
सख माना॥ तहं लंकेश जाइ शिव देखा॥ मन झं विरञ्चि र  
चे उबझ रेखा॥ तल सीक मल पत्र सब आना॥ विल्व पत्र अ  
रु पुष्प प्रमाणा॥ जाइ कै जल तो भि उदश शीशा॥ या भि उ  
मेंत्र सुमिरि गवरी शा॥ **दोहा॥** जब प्रचाउ जल तो भ पउवू  
डैलाग समाज॥ सहसबाहु अति शंक मन सकल तिय न  
उर लाज॥ **२५॥ चौपाई॥** तब राजा सुन बोलहिं नारी॥ अति  
सुन्दरी सब राजकुमारी॥ सुनइ नृपति आवा कोउ गाछा  
अकस्मात् महान दवाछा॥ सुनि राजहिं भाक्रोध अपारा॥ ज  
सविनेत्र विपुर कह जा रा॥ जाइ दीख रावण तहं छाछा॥  
जासु मेंत्र जनु जल निधि बाछा॥ माया प्रबल महाबल भा  
री॥ लङ्के अरक दंथरि सि प्रचारी॥ लै पुनि बांधि गयौ तिय  
पासा॥ गछ नि देखि सब परम झलासा॥ करि असनान पूजि  
गौरी शा॥ हय शा ला बांधि सि दश शीशा॥ लजित दुष्ट म  
ष्ट करि रहई॥ रिम उर मारि कष्ट बझ सहई॥ **दोहा॥** सब गिरि



जायावनपरमअवयहकपारसाल॥लैहयषालाबांधि  
 तहिंबीसभुजादशभाल॥२१॥चौपाई॥सकलआइदेख  
 हिंनरनारी॥मारहिंलातहंसहिदेगारी॥नामनकहैरहै  
 सऊचाना॥बडविधिपूछहिंनृपतिसजाना॥नृत्यकर  
 हिंरम्भादिकनारी॥दशऊमायदशदीपकबारी॥ककु  
 कदिवसइहिंभांतिगवांवा॥सोपुलस्तमुनिजाइकुशवा  
 चलातरनमहाअभिमानी॥नलकीषापआइनियरानी  
 मारगजातदीखविबुधारी॥अतिअनूपसुन्दरिवरनारी  
 चन्दनपुष्पपत्रकरथारी॥पूजैचलीजायत्रिपुरारी॥देखि  
 उर्वशीमनसऊचानी॥तवरावणबोलासृदुबाणी॥कौत  
 मकहांगमनतियकीन्हा॥लजावशउन्हुउतरनदीन्हा  
 दोहा॥निकटजाइदशकन्यरगहैअऊभरिलीन्हा॥पुत्र  
 बधूऊवेरकीनहिविचारिककुकीन्हा॥२२०॥चौपाई॥ची  
 न्हितियहिंमनशङ्काआई॥घाटिकर्मकीनेपकितआई॥  
 मनपकितारुणोचउरभयेऊ॥लङ्केअरलङ्काकहंगयेऊ  
 चलीउर्वशीआईताहो॥अलकापुरनलकूवरजाहो॥  
 समाचारसवपतिहिंसनावा॥सुनीकषामनमहंपकि  
 तावा॥दीन्हाणपकरिक्रोथअपारा॥रावणवंशहोइत  
 यकारा॥चलीणपलंकामहंआई॥दशकन्यरवैरिउजि



रामा०

ब०

६२

62

दिठाई॥ आगै आइ दाढि भई शापा॥ तब लङ्के श्वर अति  
भय को पा॥ सउरस को पचित वति हिं ओरा॥ नल कुवर शा  
प अति चोरा॥ **दोहा**॥ शाप हिं अङ्गिकार कर मन महं कीन्ह  
विचार॥ अषीन्ह दाउ नहि दीन्ह मैं रोषे उलङ्का भुवार॥ २२१  
**चौपाई**॥ दूत चारि तिहिं पटव भवानी॥ भरदा जमुनिकथा  
वखानी॥ आये दूत अषिन्ह के रोहा॥ देखत सब हिं भये  
सन्देहा॥ पूछ हिं अषय कहां पगु थारा॥ कहइ ऊशाल  
लङ्के शमुवारा॥ तात ऊशाल अवभइ विपरीता॥ तमसन  
मागिन्ह दाउ अभीता॥ देख दाउ अस कह दिरि साइ॥ कै  
गिरिकन्दर जाइ पराइ॥ सुनि अस वचन सब हिं टावणावा  
वरित एक तिन्ह पात्र मंगावा॥ सब मिल करि विचारइ क  
हाप॥ भरि चटरु थिर अषय लै आप॥ दूत न कहं सौं पामन  
जानी॥ होइ सकोप बोले मृदुवाणी॥ **दोहा**॥ चटउ चरत  
लय होइ हिंसहित सकल परिवार॥ लेय दूत तहां आये  
हिं जहां लङ्का भुवार॥ २२२ **चौपाई**॥ जिहिं दरबार नीति  
नहि भाई॥ खल माएउ लीजरी तहां आई॥ आपदी खदत  
जबरावणा॥ परम झला सभयो मन भावन॥ आगै आनि  
चटपराउतारी॥ देखि शाङ्कल क्कापति भारी॥ बोलिन्ह  
वचन कहाय हभाई॥ सकल कथा तिन्ह नृप हिंसनाई॥



३ हिंघटतैलकापतिनाशा ॥ सबहृतनह असवचनप्रका  
 शा ॥ यदघटलैउत्तरदिशिजाहू ॥ जतनसमेतथरझलैता  
 हू ॥ सुनिनृपवचनचलैतेतैसैं ॥ जनकरायकेदेशहिं  
 सैं ॥ करहिंविचारकरियअबसो ॥ उत्तमथलघटरावि  
 यजो ॥ दोहा ॥ अतिउत्तमउत्तरदिशाजनकरायकरदेश  
 हृतनहकरीविचारिमनकीन्होसथलप्रवेश ॥ २२ ॥ चौ  
 पाई ॥ दोत्रमाजघटथराउतारी ॥ सोनपुनीतहेतविबुधा  
 री ॥ जनकयज्ञतहांकीन्हअरम्भा ॥ रचेकनकदलीके  
 खम्भा ॥ कियोमेखलामणिमयपूरी ॥ भूमिसहावन  
 पावनभूरी ॥ शतानन्दअनुशासनपाई ॥ चामीकरहल  
 रचावनाई ॥ हाटकलंगलगहीसुथारी ॥ तहांप्रगटभ  
 ईअधियऊमारी ॥ भुजानामकहिनिकटबुलाए ॥ देवअ  
 देवसर्वतहांआए ॥ कन्यादेविअनूपभवानी ॥ सतामा  
 निराजागृहआनी ॥ नामजानकीपरमपुनीता ॥ नारद  
 आइकहापुनिसीता ॥ कुन्दः ॥ कदिपुनिसीतापरमपुनी  
 ताआदिज्योतकीशक्रिसंदी ॥ नृपनीतिविधानापरमसु  
 जानाआदिमध्यअवसानमंदी ॥ २३ ॥ भवउद्भवकरणीने  
 तिनेतियहवेदकहै ॥ तवकृत्यप्रकाशीभुजाविलासीती



रामा०  
सा०  
६३

63

निलोकमहं पूरि रहे ॥ २४ ॥ दोहा ॥ सकल कथा नृप जन  
कसौ नारद कही वा नि ॥ सकल सुलतणि लक्ष्मि गुण  
जगदम्बा जिय जानि ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ जनक सविनयक  
हत कर जोरे ॥ नाथ मनोरथ पूरे मोरे ॥ चरण पावलि सु  
पल बैठारी ॥ विनय कीन्ह अस्तुति विस्तारी ॥ परम उला  
सवचन शुभ भाषा ॥ चरणोदक लै माथे राखा ॥ यन्य यन्य  
कहि सुता प्रभाऊ ॥ पुनि अमि प्रीति कीन्हि नहि काऊ ॥  
जो तम कृपा कीन्ह पगु धारे ॥ मिटै अमङ्गल दोष हमारे  
अब मोहि भाभरो समुनि नाथा ॥ भयो यन्य मैंगुण गा  
गाथा ॥ साधु विदेहराज श्रीजा की ॥ उपमा और कही नृ  
पका की ॥ तम उपमा उपमेय और सब ॥ जहाँ प्रगट भर  
ऊजा आइ अब ॥ दोहा ॥ जोग भोग मैंगो ३ मन की योन प्र  
गट प्रभाऊ ॥ भये विदेह विदेह सुनि विदा भये मुनि राउ ॥  
२५ ॥ चौपाई ॥ कहि सकथा अघिराउ सिधाए ॥ बझरि ह  
तल झापुर आए ॥ कहि जाइ आए हम राखी ॥ सो प्रो  
कर गिरिजा मन भाषी ॥ याज्ञवल्क्य सुनिक पारसाला  
साधु साधु मुनि परम कृपाला ॥ पुनि मुनि कहि उकथा  
उपदेशा ॥ जग जीतिहुं सबलं कन रेशा ॥ चारि गउं हारि



सिभरजासा ॥ सकलदेवकीन्दे निजदासा ॥ इहांतांई ॥  
 चौपाई परतथा ॥ दोहा ॥ औरकुन्द २ दोष कहै ॥ ॥ ॥ ॥  
 रविशशिपवनवरुणथनथारी ॥ अग्निकालयमसबअ  
 थिकारी ॥ किन्नरसिद्धमनुजसुरनागा ॥ हडिसबहीके  
 पन्यहिलागा ॥ ब्रह्मसृष्टिजहंलगितनुथारी ॥ दशमुख  
 वशवर्त्तीनरनारी ॥ आयसकरहिंसकलभयभीता ॥ न  
 मइंआईनितचरणविनीता ॥ दोहा ॥ भुजबलविश्ववश्य  
 करिगखेसिकोउनखतंत्र ॥ माउलीकमहिरावणाहिं  
 राजकरैनिजमंत्र ॥ २२६ ॥ देवहिंयतगन्धर्वनरकिन्नरना  
 गक्रुमारि ॥ जीतिवरीनिजवाइबलबडसुन्दरिवरनारि ॥  
 चौपाई ॥ इन्द्रजीतसनजोककु कहैऊ ॥ सोसबजनुपहि  
 लैकरिरहेऊ ॥ प्रथमहिंजिनकहंआयसदीन्हा ॥ तिन्द  
 करचरितसनइजोकीन्हा ॥ देखतभीमरूपसवपापी  
 निशिचरनिकरदेवपरितापी ॥ करहिउपद्रवअसरनि  
 काया ॥ नानारूपथरहिंकरिमाया ॥ जेहिंविधिहोइधर्म  
 निर्मूला ॥ सोसबकरहिंवेदप्रतिकूला ॥ जेहिंजेहिंदेष्टा  
 थेनुदिजपावहैं ॥ नगराप्रपुरआगिलगावहैं ॥ सुभआ  
 चरणकतइंनहिहोइ ॥ देवविप्रगुरुमाननकोइ ॥ नहिहरि



रामा०

बा०

६५

६५

भक्तियज्ञजपज्ञाना॥ सयनेऊं सुनियनवेदपुराणा॥

**छन्दः॥** जपयोगविरागातपमखभागाश्रवणसुनैद-

शाशीर्षा॥ आपुनउदिधावैरहैनपावैथरिसवद्यालैखीस

असभ्रष्टाचाराभासं साराथर्मसुनियनहिंकाना॥ तेहि

बद्धविधिनासैदेशनिकासैजोकहवेदपुराणा॥ ३६॥ **सो**

**रमा॥** वरणिनजाइअनीतिबोरनिशाचरजोकरहिं॥ हिंसा

परअनिप्रीतितिनकेपापहिंकवनमिति॥ ३७॥ **चापाई॥**

वाढेखलबद्धचोरजुआरा॥ जेलंषटपरथनपरदाश॥ **का**

मानहिंमातपितानहिदेवा॥ साधुनसोंकरवावहिंसेवा॥

जिनकेयदआचरणभबानी॥ तेजानइनिशिचरशमप्रा

नी॥ अतिशयदेखियर्मकीहानी॥ परमसभीतथराअऊ।

लानी॥ गिरिसरिसिंधुभारनहिमोही॥ जशमोहिगरुअ

एकपरद्रोही॥ सकलयर्मदेखहिंविपरीता॥ कहिनश

कैरावणभयभीता॥ येनुअपथरिहृदयविचारी॥ गईत

हांजहंसुरमुनिजारी॥ निजसन्तापसुनायेसिरोई॥ काहु

तैंककुकाजनहोई॥ **छन्दः॥** सुरमुनिगन्धर्वाभिलिकरि

सर्वागयेविरश्चिकेलोका॥ सङ्गोतनुथारीभूमिविचारी

परमविकलभयशोका॥ ३८॥ ब्रह्मासबजानामनअनुमा

३५



नामो रौक कुनव साई ॥ जाकरि तैं दासी सो अविनाशी ह  
मरे उतोर सहाई ॥ ३८ ॥ सोरठा ॥ थरणि थरद मन थीर कह  
विरचि हरि पद सुमिरि ॥ जानत जन की पीर प्रभु भञ्जहिं दा  
रुणा विपति ॥ ३९ ॥ चोपाई ॥ बैठे सर सब करहिं विचारा ॥  
कहो पाइ प्रभु करिय पुकारा ॥ पुरवै ऊण जान कह कोई  
कोउ कह पयनिधि महं बस सोई ॥ जाके हृदय भक्ति जसि  
प्रीती ॥ प्रभु तेहिं प्रगट सदा यही ती ॥ तेहि समाज गिरि  
जामै रहै ऊं ॥ अवसर पाय बचन उकक हेऊं ॥ हरि व्यापक  
सर्व समाना ॥ प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥ देश काल दि  
शि विदिशि ऊ मांही ॥ कहइ सो कहो जहां प्रभु नाहीं ॥ अग  
जग मय सब रहित विरागी ॥ पवन तै प्रगट होइ निमि आ  
गी ॥ मोर वचन सब के मन माना ॥ साधु साधु करि ब्रह्म वखा  
ना ॥ दोहा ॥ सुनि विरचि मन हर्षत नु पुलकन यन बह नीर  
अस्तुति कर अज जोरि कर सावधान मति थीर ॥ ४० ॥ छंद ॥  
जय जय सरनायक जन सुख दायक प्रणत पाल भगवन्त  
गोदि जहित कारी जय असु गरी सिन्धु सता प्रिय कन्त ॥ ४१ ॥  
पालन सरथ रणी अदभूत करणी मर्म जानै कोई ॥ जो सहज  
कृपाला दीन दयाला करो अनुग्रह सोई ॥ ४२ ॥ जय जय अवि



रामा.  
बा.  
६५

नाशी सब दृढ वासी व्यापक परमानन्द॥ अविगत गोती  
ते चरित पुनीते मायारहि मुकुन्द॥ ४१॥ जिहिला गिविरा  
गो अति अनुशगी विगत मोह मुनिवृन्द॥ निशिवास रथा  
वहिं गुण गाणा गावहिं जयति सच्चिदानन्द॥ ४२॥ जेहिं सु  
छिउ पार्श्व <sup>विविध वनाई</sup> सङ्ग सहायन दृजा॥ सो करहुं अचारी चिन्त हमा  
री जानिय भक्ति न पूजा॥ ४३॥ जो भव भय भञ्जन मुनि मन  
रञ्जन गञ्जन विपति बरुणा॥ मनवचक्रम बाणी काडि  
सयानी शरण सकल सुरगुणा॥ ४४॥ शारद प्रतिशेषा  
रुषय अशेषा जा कहें कोउ नहि जानै॥ जिहिं दीन पियारे  
वेद पुकारे द्रवो सो श्री भगवाना॥ ४५॥ भववारिधि मन्दर स  
व विधि सन्दर गुण मन्दिर सुख पुञ्जा॥ मुनि सिद्ध कल  
सर परम भयावर नमत नाथ पद कञ्जा॥ ४६॥ दोहा॥ जा  
नि सभय सुरभूमि निवचन समेत सनेह॥ गगन गि  
रागंभीर भइ हरिण शोक संदेह॥ ४७॥ चौपाई॥ जिनि उ  
र पद्म मुनि सिद्ध सुरेशा॥ तमहिं लागि थरिहों न रवेशा॥  
अंशान सहित मनुज अवतारा॥ लहों दिन करवें शउ दारा॥  
कण्ठ पद अदिति महातप कीन्हा॥ तिन कहें मैं पूरव वर दी  
न्हा॥ ते दशरथ कौशल्या रूपा॥ कौशल पुरी प्रगटन रभूपा



तिनके गृह अवतरि हों जाई ॥ रघु कुल तिलक सो चारि उ  
 भाई ॥ नारद वचन सत्य सब करि हों ॥ परम शक्ति समेत अ  
 वतरि हों ॥ हरि हों सकल भूमि गरु आई ॥ निर्भय होऊ देव  
 समुदाई ॥ गगन ब्रह्म वाणी सुनिकाना ॥ तरत फिरे सुर  
 हृदय जुगाना ॥ तब ब्रह्माथरणिहिं समुजावा ॥ अभय भई  
 भरी सजिय आवा ॥ दोहा ॥ निज लोक हिं विरञ्चिगे देव  
 इहै सिखा ॥ वानरतनु परिधरणिमहं हरि पद सेवइ जा ॥  
 चौपाई ॥ गये देव सब निज निज थामा ॥ भूमि सहित पाये उ  
 विश्रामा ॥ जो ककुआय सुब्रह्मा दीन्हा ॥ हर्ष देव विलम्ब  
 न कीन्हा ॥ वानर देह धरीति निमांही ॥ अतलित बल प्र  
 तापति न पांही ॥ गिरित रुनख आग्रुथ सब वीरा ॥ हरि मा  
 रग चितवहिं रापीरा ॥ गिरिकानन जहं तहं भूरि पूरी ॥  
 रहै निज निज अनीकर चिरूरी ॥ यह सब रुचिर चरित में  
 भाषा ॥ अब सो सुनऊं जो बीचहिं राषा ॥ अब थपूरी रघु कु  
 ल मणिराऊ ॥ वेद विदित तिहिं दशरथ नाऊ ॥ धर्म पुरा  
 न्यर गुणानिधि जानी ॥ हृदय भक्ति मति शारङ्ग पाणी ॥  
 दोहा ॥ कौशल्यादिक नारि प्रिय सब आचरण पुनीत ॥ प  
 ति अरु कुल प्रेम दह हरि पद कमल विनीत ॥ २३३ ॥ चौपाई

२३४



शाना०  
बा०  
६६

66

एकबारभूषतिमनमाही ॥ भगलानिमोरेसुतनाही  
गुरुगृहगयेतरतमहिपाला ॥ चरणालागिकरिविनय  
विशाला ॥ निजसुखदुखनृपगुरुहिंसनायेऊ ॥ कहिव  
शिष्टवद्विधिसमुजायेऊ ॥ थरद्वधीरहोइहिंसतचारी  
त्रिभुवनविदितभक्तभयहारी ॥ शृङ्गीश्वरिहिंसविशिवु  
लावा ॥ पुत्रलागिप्रभयजकयावा ॥ भक्तिसहितमुनिआ  
इतिदीन्हे ॥ प्रगटेअग्रिचरुकरलीन्हे ॥ बोलेअनलप्रे  
मपुतवाणी ॥ अतिप्रसन्ननहिपरैवावानी ॥ **यहदोपदहे**  
**एक ॥** जोबशिष्टककुहृदयविचारा ॥ सकलकाजभासि  
इतम्हारा ॥ यदहविबांदिदेइनृपजाई ॥ यथायोगजेहिं  
भागवनाई ॥ **दोहा ॥** तबअटपपपावकभयेसकलसुभहिं  
समुजाई ॥ परमानन्दभगवन्तनृपदर्शनहृदयसमाई ॥  
**चौपाई ॥** तबदिंगउप्रियनारिबुलाई ॥ कौशल्यादितहो  
चलिआई ॥ अर्द्धभागकौशल्याहिंदीन्हा ॥ उभयभागआ  
येकरकीन्हा ॥ केकयीकरंनृपसोदयेउ ॥ रहेउसोउभया  
भागपुनिभयेउ ॥ कौशल्याकैकेयीहायपरि ॥ दीन्हसु  
मित्रहिंसनप्रसन्नकरि ॥ यहिविधिगर्भसहितसबना  
री ॥ भयेउहृदयहर्षितसुखभासी ॥ जोदिनतेंदरिगर्भहिं

सग  
मालकोश



आये ॥ सकललोकसखसम्पत्तिदाये ॥ मन्दिरमहं सबरा  
 जहिराणी ॥ शोभाशीलतेजकीखानी ॥ सखपुतककुक्का  
 लचलिगयेऊ ॥ जेहिंप्रभुप्रगटसोअवसरभयेऊ ॥ दोहा ॥  
 योगलग्नग्रहवारतिथिसकलभयप्रनुकूल ॥ चरअरुअचरह  
 र्षपुतरामजन्मसखमूल ॥ २३५ ॥ चोपाई ॥ नवमीतिथिमधुमा  
 सपुनीता ॥ सुक्लपदअभिजितहरिप्रीता ॥ मध्यदिवसअति  
 शीतनचामा ॥ पावनकाललोकविश्रामा ॥ शीतलमन्दसर  
 भिवहवाऊ ॥ हर्षितसरसन्ननमनचाऊ ॥ वनऊसमितगिरि  
 गणामणिआरा ॥ स्वहिसकलसरितामृतधारा ॥ सोअवस  
 रविरञ्जिजबजाना ॥ चलेसकलसरसाजिविमाना ॥ गगनवि  
 मलसंजलसरमूया ॥ गावहिंयुगागान्यववरूया ॥ वर्षहिं  
 समनसअंजुलिसाजी ॥ गहगहिगगनदुनुभीवाजी ॥ अस्त  
 तिकरहिंनगमुनिदेवा ॥ बडविधिलावहिंनिजनिजसेवा ॥  
 दोहा ॥ सरसमूहविनतीकरीपडंनेनिजनिजधाम ॥ जगानि  
 वासप्रभुप्रगटेअखिललोकदिशाम ॥ २३६ ॥ छन्दः ॥ भयेप्र  
 गटकृपालादीनदयालाकोशाल्यादितकारी ॥ हर्षितमहता  
 रीमुनिमनहारी अद्भुतरूपविचारी ॥ ४ ॥ लोचनअभिरामा  
 तनुवनश्यामानिजआपुथभुजचारी ॥ भूषणावनमालानयन  
 विशालाशोभासिन्धुखगरी ॥ ४८ ॥ कहदुइंकरजोरीअस्तति



तोरी केहिं विधिकरों अनन्ताः॥ माया गुण ज्ञानातीत अमा  
ना वेद पुराण भगवन्ताः॥५१॥ करुणा सख सागर सब गुण  
आगर जें हिं गावहिं श्रुति सन्त॥ सोम महित लागी जन अनु  
रागी प्रगट भये श्री कन्त॥५०॥ ब्रह्मा एउ निका यानिर्मित मा  
या रोम रोम प्रति वेद कहै॥ मम उर सो बासी यह उपहासी सुन  
त थीर मति थिर न रहै॥५१॥ उपजा जव ज्ञाना प्रभु मुसु काना च  
रित बद्ध त विधिकीन्ह चहै॥ कहि कथा सुनार्ई मात बुजार्ई  
जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥५२॥ माता पुनि बोली सोम ति ओली  
तजइ तात यह रूपा॥ कीजै शिशु लीला प्रति प्रिय शीला य  
ह सख परम अरुपा॥५३॥ सुनि वचन सुजाना रों दन ठाना हो  
इ बालक सरभूपा॥ यह चरित जोगावहिं हरि पद पावहिं तेन  
पर हिं भव कृपा॥५४॥ दोहा॥ विप्र येउ सर सन्त हित लीन्ह मा  
नुज अवतार॥ निज उच्छा निर्मित तनु माया गुण गोपार॥२३॥  
चौपाई॥ सुनि शिशु रुदन परम प्रिय बाणी॥ संभ्रम चलि आ  
ई सब राणी॥ हविं तज हंत दै थार्ई दासी॥ आनन्द मगन सकल  
पुरवासी॥ दशरथ पुत्र जन्म सुन काना॥ मान डं ब्रह्म नन्द समा  
ना॥ परम प्रेम मन पुलक शरीरा॥ चाहत उठन करत मति थीरा॥  
जाकर नाम सुनत सुभ होई॥ मोरे गृह आवा प्रभु मोई॥ परमा  
नन्द हरि मन राजा॥ कहा बुलाइ बजा बद्ध बाजा॥ गुरु वसिष्ठ क



हंगयेउहंकारा॥ आपदिजन्दसहितनृपदारा॥ अनुपम  
 बालकदेखिनजाई॥ रूपराशिगुणकहिनसिराई॥ दोहा  
 नान्दीमुखशराथकरिजातकर्मसबकीन्ह॥ हाटकयेनुब  
 सनमणिनृपविप्रनकहंदीन्ह॥ २३८॥ चौपाई॥ ध्वजपता  
 कतोरणापुरकावा॥ कहिनजाइजेहिंभांतिबनावा॥ सुमन  
 वृष्टिआकाशतेंहोई॥ ब्रह्मानन्दमगनसबकोई॥ वृन्दवृन्द  
 मिलिचलीलुगाई॥ सहजसिङ्गारकियेउठिथाई॥ कनक  
 कलशमंगलभरिपारा॥ गावतपैटहिंभूषणुआरा॥ करि  
 आरतीनिष्कावरकरही॥ बारबारशिष्टचरणपरही॥ माग  
 थसूतवन्दियुगागायक॥ पावनगुणागावहरचुनायक॥ स  
 र्वस्वदानदीन्हसबकाहू॥ जेहिंपावागखानहिताहू॥ मृग  
 मदचन्दनकुंजमकीचा॥ मचीसकलवीथिनविचबीचा॥  
 दोहा॥ गृहगृहबाजबधावप्रभप्रगटेउसखमाकन्द॥ हर  
 षवन्तसबजहतहोनगरनारिनरवृन्द॥ २३९॥ चौपाई॥ केक  
 यसतासुमित्रादोऊ॥ सुन्दरसतजन्मतभयेओऊ॥ बहसख  
 सम्यतिसमयसमाजा॥ कहिनसकैशारदअहिराजा॥ अब  
 थपुरीसोहैएहिभांती॥ प्रभुहिंमिलनआईजनुराती॥ देखिभा  
 नुजनुमनसऊचानी॥ नदपिवनीसंप्पाअनुमानी॥ अगरभू



रामा०

वा०

६८

६८

पजनु बड अंधियारी ॥ उडै अवीर मन ड अरुणारी ॥ मन्दि  
रमणि समूह जनु तारा ॥ नृप गृह कलश सोरनु उदारा ॥ भ  
वन वेद पुनि अति मृदुवाणी ॥ जनु खग मुख रस मय सख  
सानी ॥ कौतुक देखि पतङ्ग भुलाना ॥ एकदा सतेहिं जात न  
जाना ॥ दोहा ॥ मास दिवस कर दिवस भा मर मन जाने कोर  
रथ समेत रवि पाके ऊ निशा कवन विधि होइ ॥ २४० ॥ चौपा  
॥ यहर हस्य काहे नहि जाना ॥ दिन मणि चले करत गुणा  
गाना ॥ देखि म होत सब सर मुनि नामा ॥ चले भवन वरणा  
त निज भागा ॥ योरो एक कहों निज चोरी ॥ सुनु गिरिजा अ  
ति दृढ मति तोरी ॥ काक भुसुणिउ संग हम दोऊ ॥ मनुज  
रूप जानै नहि कोऊ ॥ परमानन्द प्रेम सख रूले ॥ बीधि  
न फिरहिं मगन मन भूले ॥ यह सब चरित जानै सोई ॥  
कृपा राम की जा पर होई ॥ तेहिं अब सर जो जेहिं विधि आवा  
दीन्ह भूप जो जेहिं मन भावा ॥ गजरथ तरग हेम गोहीरा ॥  
दीन्हें नृप नाना विध वीरा ॥ दोहा ॥ मन सन्तोषे सब निके  
जहं तहं देहिं अशीश ॥ सकल तनय चिर जीव डतल सि  
दास केईश ॥ २४१ ॥ चौपाई ॥ ककु क दिवस बीते यहि भांती ॥  
जात न जानहिं दिन आरु राती ॥ नाम करण कर अब सर जानी



भूपबोलि पटये मुनि जानी ॥ करि पूजा भूपति असभाषा  
 धरिय नाम जो मुनि गुणिराषा ॥ इन के नाम अनेक अनूपा  
 में नृप कहव स्वमति अनुत्तरा ॥ जो आनन्द सिंधु गुणराशी  
 श्री करतें त्रैलोक्य निवासी ॥ सो सखि धाम राम असनामा ॥  
 अखिल लोक दायक विश्रामा ॥ विश्वभरण पोषण करु  
 जोई ॥ ताकर नाम भरत अस होई ॥ जा के समिरण तें रिपु  
 नाश ॥ नाम शत्रु हन वेद प्रकाश ॥ दोहा ॥ लक्षण धाम  
 राम प्रिय सकल जगत आधार ॥ गुरु वशिष्ठ तेहिं राखे उ  
 लक्ष्मण नाम उदार ॥ २५२ ॥ चौपाई ॥ थरे नाम गुरु हृदय वि  
 चारी ॥ वेद तत्व चपत बसुत चारी ॥ मुनि जनयन सर्व स्वशि  
 व प्राणा ॥ बाल के लिरस तेहिं सखि माना ॥ वारे हि तेनि ज  
 हित पति जानी ॥ लक्ष्मण राम चरण रति मानी ॥ भरत श  
 त्रु हन दोनो भाई ॥ प्रभु सेवक जस प्रीति बडाई ॥ श्याम गौर  
 सुन्दर दोउ जोरी ॥ निरघहिं क्विजन नीत एतौरी ॥ चारि  
 उशील रूप गुण धामा ॥ तदपि अधिक सख सागर रामा ॥  
 हृदय अनुग्रह उनु प्रकाश ॥ सूचत किरण मनोहर हासा  
 कबहुं उक्कड़ कबहुं वरपालन ॥ मात उलारे कहि हिं प्रिय  
 लालन ॥ दोहा ॥ व्यापक ब्रह्म निरञ्जन निर्गुण विगत वि  
 नोद ॥ सो अज प्रेम भक्ति वश को शल्या के गोद ॥ २५३ ॥ चौपाई



रामा०

वा०

६५

६९

कामकोटिक्क विष्णामणरीरा॥ नीलकञ्जवारिदगंभीरा॥  
अरुणचरणपङ्कजनखज्योती॥ कमलदलनवैठेजनुमोती  
रेखकलिशब्दजग्रुशसोहै॥ नृपुण्यनिसुनिसुनिमनमो  
है॥ कटिकिङ्किनीउदरत्रयरेखा॥ नाभिगंभीरजानजेहिंदे  
खा॥ भुजविशालभूषणयुतभूरी॥ हियहरिनखशोभाअ  
तिरूरी॥ उरमणिहारपदिककीशोभा॥ विप्रचरणदेख  
तमनलोभा॥ कम्बुकण्ठअतिचिबुकसहाए॥ आननअ  
मितमदनकविछाप॥ दुश्दुश्दशनअथरअरुणारे॥ ना  
सातिलककोवरणौपारे॥ सुन्दरअवणसुचारुकपोला॥  
अतिप्रियमधुरतोतरेबोला॥ नीलकमलदोउनयनविशा  
ला॥ विकटभृगुऊटिलटकनिबरमाला॥ चिक्कणकचकुं  
चित्तुचुआरे॥ बड्कप्रकाररचिमातसंवारे॥ पीतकुंगुलि  
यातनुपदिराप॥ जानुपाणिविचरतमोहिभाए॥ रूपस  
कहिंनहिकचिफ्रतिशेषा॥ सोजानैसपनेइजिन्हदेखा॥  
दोहा॥ साखसन्दोहमोहपरज्ञानगिरागीतीत॥ दम्पती  
परमप्रेमबसाकरशिसुचरितपुनीत॥ २५५॥ चौपाई॥  
यदिविधिगमजगतपितमाता॥ कोशलपुरवासिनस  
खदाता॥ जिनरघुनाथचरणरतिमानी॥ तिनकीयहगति  
प्रगटभवानी॥ रघुपतिविमुखयत्नकरकोरी॥ कवनशकै



भवबन्धनकोरी ॥ जीवचराचरदशक रिसाये ॥ सोमाया  
 प्रभुसोंभयभाषे ॥ भृङ्गटिविलासनचावेताही ॥ असप्रभु  
 काडिभजियकडकाही ॥ मनक्रमवचनकाडिचतराई ॥  
 भजतहिंकृपाकरैरचुराई ॥ ३३ ॥ विधिशिष्टविनोदप्रभु  
 कीन्हा ॥ सकलनगरवासिनसखदीन्हा ॥ लैउक्कु-कव  
 डंढलरावै ॥ कवडंपालनेंवालिकुलावै ॥ दोहा ॥ प्रेमम  
 गनकोशाल्यानिशिदिनजातनजान ॥ सुतसनेहवशमा  
 तअनिबालचरितकरिगान ॥ २४५ ॥ चौपाई ॥ एकबारज  
 ननीअन्हवाप ॥ करिसिझारपलनापौछाप ॥ निजकुल  
 ३ष्टदेवभगवाना ॥ एजाहेतकीन्हअसनाना ॥ करिपूजा  
 नैवेद्यचढावा ॥ आपुगईजहपाकवनावा ॥ बडरिमात  
 तहंवांचलिआई ॥ भोजनकरतदीखरचुराई ॥ गईजननी  
 शिष्टपहंभयभीता ॥ देखाबालकतहंपुनीता ॥ बडरि  
 आ३देखासुतसोई ॥ हृदयकंपमनभीरनहोई ॥ ३३ ॥ उहो  
 दु३बालकदेवा ॥ मतिभ्रममोरिकिआनविशेषा ॥ देखि  
 रामजननीअकुलानी ॥ प्रभुहंसिदीन्हमपुरमुसकानी  
 दोहा ॥ दिखरावामातहिंनिजअदभुतरूपअखगाउ ॥ रो  
 मरोमप्रतिराजहिंकोटिकोटिब्रह्माण्ड ॥ २४६ ॥ चापाई ॥



रामा०  
बा०  
७०

अगणितरविशिशिवचतुरानन॥ बडगिरिसरितसि  
न्धुमहिकानन॥ कालकर्मगुणज्ञानस्वभाऊ॥ सोदेखाजो  
सुनानकाऊ॥ देखीमायासबविधिगाढी॥ अतिसभीता  
जोरैकरदाढी॥ देखाजीवनचावैजाही॥ देखिभक्तिजोको  
रैताही॥ तनुपुलकितमुखवचननआवा॥ नयनमूँदि  
चरणनिशिरनावा॥ विस्मयवन्तदेखिमहतारी॥ भयेब  
डरिशिष्टरूपखरारी॥ अस्तितकरिनजाइभयमाना॥  
जगतपितामैंसतकरिजाना॥ हरिजननीबडविधिसमु  
जाई॥ यहजनिकतडंकहसितैमाई॥ दोहा॥ बारबारकोश  
ल्पाविनयकरैकरजोरि॥ अबजनिकबहूँव्यापैप्रभुमोहि  
मायातोरि॥ २४०॥ चौपाई॥ बालचरितहरिवडविधिकीन्दा  
अतिआनन्ददामनकहंदीन्दा॥ ककुककालवीतेसब  
भाई॥ बडेभयेपरिजनसखदाई॥ चूडाकराकीन्हगुरुआ  
ई॥ विप्रनपुनिदक्षिणावडपाई॥ परममनोहरचरितअपा  
रा॥ करतफिरतचारिउसुऊमारा॥ मनक्रमवचनअगोच  
रजोई॥ दशरथअजिरविचरप्रभुसोई॥ भोजनकरतबुला  
वतराजा॥ नहिआवहिंतजिबालसमाजा॥ कौशल्याज  
वबोलनजाई॥ दुमुकिदुमुकिप्रभुचलदिंपराई॥ निगम



नेतिशिवअन्ननपावा ॥ ताहिथरैजननीहदिथावा ॥ भू  
 सरधूरिभरैतनुआप ॥ भूपतिविहंसिगोदबैठाप ॥ दोहा ॥  
 भोजनकरतचपलचितउतउतअवसरपाइ ॥ भाजिचलैंकि  
 लकतबदनदधिओदनलपटाइ ॥ २५८ ॥ चापाई ॥ बालचरि  
 तअतिसरलसुहाप ॥ शारदशेषशंभुश्रुतिगाप ॥ जिनक  
 रमनइनसननहिराता ॥ तेजगवञ्चितकियेविधाता ॥ भए  
 ऊमारजबहिंसबभाता ॥ दीन्हजनेऊगुरुपितमाता ॥ गुरु  
 गृहगएपछनरचुराई ॥ अल्पकालविद्यासबआई ॥ जाकी  
 सहजम्यासश्रुतिचारी ॥ सोहरिपछयहकोतकीभारी ॥ वि  
 द्याविनयनिपुणगुणशीला ॥ खेलहिंखेलसकलनृपली  
 ला ॥ करतलवाणथनुषअतिसोहा ॥ देखतरूपचराचर  
 मोहा ॥ जिनवीथिनविहरहिंसबभाई ॥ एकितहोहिंसब  
 लोकलुगाई ॥ दोहा ॥ कौशलपुरवासीनरनारीबृद्धअरु  
 बाल ॥ प्राणहैंतेंप्रियलागहिंसबकहंरामकृपाल ॥ २५९ ॥  
 चौपाई ॥ बन्धुसखासंगलेहिंबुलाई ॥ बनमृगयानितखे  
 लहिंजाई ॥ पावनमृगमारहिंजियजानी ॥ दिनप्रतिनृप  
 हिंदेखाबहिंआनी ॥ जेमृगराजबाणकेमारे ॥ तेतनुतजि  
 सरलोकसिधारे ॥ अनुजसखामरुभोजनकरही ॥ मातपि



रामा०  
दा०  
७२

ता आज्ञा अनुसरही ॥ जेहि विधि सुखी होहिं पुरलोगा ॥  
करहिं कृपानिधि सोरसयोगा ॥ वेदपुराण सुनहिं मन  
लाई ॥ आपुकरहिं अनुजहिं समुजाई ॥ प्रातकाल उदिके  
रचुनाया ॥ मातपिता गुरुनाबहिं माया ॥ आयसमांगिक  
रहिं पुरकाजा ॥ देविचरितदरषहिं मनराजा ॥ दोहा ॥  
आपक अकल अनीद अजनिर्गुण नामनरूप ॥ भक्तहे  
तनाना विधहिं करत चरित्र अनूप ॥ २५० ॥ चौपाई ॥ यहस  
वचरित कहामें गाई ॥ आगिल कथा सुनइ मनलाई ॥ वि  
श्वामित्र महा मुनि ज्ञानी ॥ वसहिं विपिन शुभ आश्रम जा  
नी ॥ तहं जपयज्ञ योग मुनि करही ॥ अति मारीच सुबाहु  
हिं उरही ॥ देखत यज्ञनिशाचरथावहिं ॥ करहिं उपद्रव  
मुनि दुख पावहिं ॥ गाथित नय मन चिन्ता व्यापी ॥ हरिवि  
नुमर दिन निशाचर पापी ॥ तब मुनिवर मन कीन्ह विचा  
रा ॥ प्रभु अवतरे उदरगामहि भासा ॥ पङ्कमि सदेखो प्रभु  
पद जाई ॥ करि विनती आनौ द्वौ भाई ॥ ज्ञानदिया गसक  
कलगुण अयना ॥ सो प्रभु में देखव भरिनयना ॥ दोहा ॥  
बहु विधिकरत मनोरथ जात न लागी बार ॥ करि मज न  
सरजुमलिल गये भूपदरवार ॥ २५१ ॥ चौपाई ॥ मुनि आ



गमन सुनाज बराजा ॥ मिलन रापउलै विप्र समाजा ॥ क  
 रिदण्डवत मुनिहिंसन मानी ॥ निज आसन बैठारिन आनी  
 चरण पावारिकी न्दुति पूजा ॥ सो सम आनुयन रहि दूजा ॥  
 विविध भोगति भोजन करवावा ॥ मुनिवर हृदय हर्ष अति पावा  
 मुनिचरण नमेलै सुत चारी ॥ राम देखि मुनि विरति विसारी  
 भये मगन देखत मुख शोभा ॥ जनु चकोर पुरण शशिलोभा ॥  
 तब मन हर्षि वचन कह राऊ ॥ मुनि अस कृपा की न्हन दिकाऊ  
 केहिं कारण आगमन तम्हारा ॥ कहऊ सो करत न लाउ वारा  
 असुर समूह सतावहिं मोही ॥ मैया चन आपउं नृप तोही ॥ अ  
 नुज समेत देख चुनाया ॥ निशि चरवथ मै होव सनाया ॥ दोहा  
 देख भूप मन हर्षित तजइ मोह अज्ञान ॥ धर्म सुयश नृप त  
 म कहं न कहं अति कल्याण ॥ २५२ ॥ चौपाई ॥ सुनि राजा अति  
 अप्रिय बाणी ॥ हृदय कम्प मुख दुति ऊहिलानी ॥ चौथे पन  
 पापउं सुत चारी ॥ विप्र वचन नहि कहै ऊ विचारी ॥ मांगइ भू  
 मिये नुयन कोषा ॥ सर्व स्वदेउं आऊ सह रोषा ॥ देखै प्राण तैं प्रि  
 य कहु नाही ॥ सोउ मुनि देउं निमिष एक माही ॥ सब सुत प्रि  
 य सोहि प्राण किनाई ॥ राम देखत नहि बनेय सोई ॥ कहं निशि।  
 चर अति होर कदोरा ॥ कहं सुन्दर सुत वयस के शोरा ॥ सुनि नृ



रामा०  
बी०  
७२

पगिराप्रेमरससानी॥ हृदयहर्षमानामुनिज्ञानी॥ तववसि  
ष्ठवज्रविधिसमुजावा॥ नृपसन्देहनाशकहंषावा॥ अति॥  
आदरद्वौतनयबुलाये॥ हृदयलाश्वज्रभांतिसिखाये॥ मेरे  
प्राणनाथसुतदोऊ॥ तममुनिपिताआननहिकोऊ॥ दोहा॥  
सौंयेभूपतिअधिहिंसुतवज्रविधिदेशप्रसीस॥ जननीभ  
वनगणप्रभुचलेनाउपदशीस॥ २५३॥ सोरठा॥ पुरुषसिंह  
होवीरहर्षिचलेमुनिभयहरण॥ कृपासिन्धुमतिधीरअति  
लविश्वकारणकरणा॥ २५४॥ चौपाई॥ अरुणनयनउरबाऊ  
विशाला॥ नीलजलजतनुषणामतमाला॥ कटिपटपीत  
कसेंवरभाषा॥ रुचिरचायसायकदुहंहाया॥ श्यामगौरस  
न्दरद्वौभाई॥ विश्वामित्रमहानिधिपाई॥ प्रभुब्रह्माण्डदेवमें  
जाना॥ मोहितपितातजेउभगवाना॥ चलेजातमुनिदीन्हदि  
खाई॥ सुनिताउकाक्रोधकरिथाई॥ एकहिंवाणप्राणहरि  
लीन्हा॥ दीनज्ञानितेहिंनिजपदीन्हा॥ तवअधिनिजनाथा॥  
हिंजियचीन्हा॥ विद्यानिधिकहंविद्यादीन्हा॥ जातैंलागनव  
धापियासा॥ अतलितदलतनतेजप्रकाशा॥ दोहा॥ आयु  
यमकलममर्षिकरिप्रभुनिजआप्रमआनि॥ कन्दमूलफ  
लभोजनहिदिपभक्तहितजानि॥ २५५॥ चौपाई॥ प्रातकहा



मुनिमनरचुरा॥ निर्भययज्ञकरइतमजारा॥ होमकरणा  
 लागेमुनिजारी॥ आपुरहेमखकीरखवारी॥ सुनिमारीच  
 निशाचरकोही॥ लैसहायथावामुनिद्रोही॥ विनुकरवाणा  
 रामतेहिंमारा॥ शतयोजनगासागरपारा॥ पावकशरसबा  
 इपुनिमारा॥ अनुजनिशाचरकटकसेवारा॥ मारिअसरदि  
 जनिर्भयकारी॥ अस्तुतिकरहिंदेवमुनिजारी॥ तहंपुनिक  
 कुकदिवसरचुराया॥ रहैकीन्हविप्रनपरदाया॥ भक्तिहेत  
 बडकथापुराणा॥ कहेविप्रययपिप्रभुजाना॥ तवमुनिसा  
 दरकहाबुजार्इ॥ चरितएकदेखियप्रभुजार्इ॥ यनुषयज्ञसुनि  
 रचुऊलनाथा॥ हर्षिचलैमुनिवरकेसाथा॥ आप्रमएकदी  
 खमगमाही॥ खगमृगजीवजन्ततहंनार्ही॥ पूकामुनिहिं  
 शिलाप्रभुदेवी॥ सकलकथाअधिकहीविशेषी॥ दोहा॥ गौ  
 तमनारीआपवशउपलदेहथरिधीर॥ चरणाकमलरजचा  
 हतिकृपाकरइरचुवीर॥ २५६॥ कन्द॥ परसतपदपावन  
 शोकनशावनप्रगटभईतपपुंजसही॥ देखतरचुनायकज  
 नसखदायकसम्मुखहोइकरजोरिरही॥ ५५॥ अतिप्रेमअ  
 पीशपुलकशरीरामुखअदिआवैवचनही॥ अतिशयबड  
 भागीचरणानिलागीपुमालनयनजलधारवही॥ ५६॥ धीर



रामा०

बा०

७३

73

जमनकीन्हाप्रभुकहंचीन्हारवुपतिकृपाभक्तिपाई॥अति  
निर्मलबाणीअस्तुतिवानीज्ञानगम्यजयरचुराई॥५०॥मैं  
नारिअपावनप्रभुजगपावनरावणारिपुजनसखदाई॥रा  
जीवलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिशरणहिंआई॥५८॥  
मुनिपापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमेंमाना॥  
देखेउंभरिलोचनहरिभवमोचनयहैलाभशाङ्करजाना॥५५॥  
विनतीप्रभुमोरीमेंमतिभोरीनाथनवरमोंगोंआना॥पदप  
अपरागारसअनुरागामममनमधुपकरैपाना॥६०॥जेहिं  
पदसुरसरितापरमपुनीताप्रगटभईशिवशीसथरी॥सो  
ईपदपङ्कजजेहिंपूजतअजममशिरधरेउकृपालहरी॥६१॥  
यहिभांतिसिथारीगोतमनारीवारवारहरिचरणपरी॥  
जोअतिमनभावासेवरपावागइपतिलोकआनन्दभरी॥६२॥  
**दोहा॥**असप्रभुदीनबन्धुहरिकारणरहितकृपाल॥तल  
सीदासपाटताहिभजुकोंडिकपटजझाल॥२५०॥**चौपाई॥**  
चलेगमलदमणमुनिसंगा॥गएजहोजगपावनिगंगा॥  
यदप्रसन्न॥अनुजसहितप्रभुकीन्दप्रणामा॥बद्धप्रकार  
सखपापउरामा॥पुनिसुरसरितपतिरचुराई॥कौशिक  
पहंप्रकाशिरुनाई॥कहमुनिप्रभुतबहुलएकराजा॥ना



मसगरतिङ्गलौकविराजा ॥ नृपकेंयुगभामिनिसुऊमा  
री ॥ केशिनिज्येष्ठसुमतिलवुण्णारी ॥ सबप्रकारसंपतिगु  
णभाजा ॥ सुतविहीनमनविस्मयराजा ॥ एकसमयभामि  
नीदोऊसाथा ॥ बनतपहेतुगणउरुनाथा ॥ सबनसफल  
तरुसुन्दरनाना ॥ तहंभृगुमुनितपतेजनिधाना ॥ दोहा ॥  
सहितनारिनृपमुदितमनरहैबरषशतएक ॥ कीन्हातप  
भलदेविभृगुअस्तुतिकीन्हअनेक ॥ २५८ ॥ चौपाई ॥ कहि  
निजदुखप्रणामनृपकीन्हा ॥ दैअशीशतवमुनिबरदीन्हा  
नृपानीसनमुनिअसभाषा ॥ लेउसोवरजोजिहिंअभिला  
षा ॥ सुनिमुनिचरणशीशातिन्हावा ॥ देउनाथतमकहं  
जोभावा ॥ एकहिंएककहासुतहोना ॥ दुसरिसहससादि  
गुणलोना ॥ हर्षितभयेउसुभगवरपाई ॥ हाथजोरिचरण  
निशिरनाई ॥ सहितभामिनिहअबथहिंआयेउ ॥ हर्षसहि  
तककुदिवसगमायेउ ॥ जानिसुवरीनखतसुखदाई ॥ त  
बकेशिनिअसमंजसजाई ॥ सुमतिप्रसवतमरीएकसोई ॥  
भयसुतप्रगटकहेमुनिजोई ॥ हर्षसहितदियेदाननुरेष्ट ॥  
शुजिविप्रगुरुगौरिगतोष्ट ॥ वृत्तवसुन्दरतरतमंगाए ॥ ते  
सबसुतनृपतिन्हमङ्गणाए ॥ दोहा ॥ इतिविधिभएतिहिं



रामा०  
वा०  
७४

सकलसुतपूजेसबमनकाम॥ जाहिंदिवसनिशिदुर्षव  
शसुनइरामवनश्याम॥ २५२॥ चौपाई॥ परिजनसबघर  
घरनिनरेष्टू॥ अतिआनन्दतनुमिटाकलेशू॥ बालकेलि  
करिभएउकुमारा॥ लीलाकरैअगमसंसार॥ हौंहिसुका  
जसकलमनचीते॥ इहिंसुखवसतबहुतदिनबीते॥ सर  
जूनदीअवधिजोअहई॥ विमलसलिलउतरदिशिबहई॥  
प्रजालोगकेबालकनाना॥ नितउठितहांकरहिंसुनाना  
असमझसतहांतरणीआनी॥ तिन्हहिंचछाउबोरगहिपानी  
भएप्रजासबपरमदुखारी॥ बालकबथअवसुनइखारी  
सकलगएजहेंबैठनृपाला॥ बोलेवचननाउपदलाभा॥ त  
जबदेषावरुसुनइनरेष्टू॥ विनातजैनहिमिटवकलेशू॥  
तमनृपचहइप्रजाप्रतिपाला॥ सुततम्हारभासबकरका  
ला॥ दोहा॥ तवसुतकीन्देपापबहुमारेबालकबृन्द॥ त  
मकहंप्राणसमानसुतसकलप्रजनिकहंमन्द॥ २६०॥  
चौपाई॥ प्रजागिरासुनिधीरजदीन्हा॥ सुतहिंदेशतैंबा  
हरकीन्हा॥ तासुतनयजगविदितप्रभाऊ॥ गुणनिधि  
अंशुमानतिहिंभाऊ॥ वसतहृदयनृपकैसोकैमें॥ फणि  
मणिमीनसलिलरहजैमें॥ गएप्रजासबनिजनिजथामा

रगिणी  
विभावती



भयेविशोचमनहिंविश्रामा॥ बद्धरिचपतिमनकीन्हवि  
 चारा॥ आरभयेउपनचौपदमारा॥ द्विजमंत्रिनिगुरुसुत  
 निबुलाए॥ हिमगिरिविंध्यमथतवआए॥ रुचिरवेदि।  
 काएकबनार्ई॥ देखतबनैवरणिनहिजाई॥ मखआरम्भ  
 क्हांडेउतवतरगा॥ वेगवन्तदेखियजिमिउरगा॥ दोहा॥  
 सुरपतिसुनिमखदारुणमनमहंकरिअनुमान॥ आर  
 त्रगतिन्हलीन्देउमरमनकोऊजान॥ २६॥ चौपाई॥  
 राखेउआनिकपिलमुनिपाही॥ कोऊनजानकाऊग  
 तिनाही॥ युगवतरहैजेसुभटसयाने॥ लेतत्रगतिन  
 हूंनहिजाने॥ तिनसबआइकहानृपपाही॥ महाराज  
 हमकहतउराही॥ लीन्हतरगयहजाननकोई॥ कहाक  
 रीयसोइआयसहोई॥ सुनतवचननृपविस्मयपायउ॥  
 सकलसुतनकहंततरतबुलाएउ॥ जाइतरगतमहेरऊ  
 जाई॥ सकलचलेचरणनिशिरनार्ई॥ सुरपतिसमदेवी  
 यबलबीरा॥ सकलयनुर्थरअतिरगाधीरा॥ तिनहिंच  
 लतधरणीअऊलार्ई॥ बलिपशुजीवभयसबआई॥ सु  
 मनवाटिकाउपवनबागा॥ सरितरूपवापिकातउगा  
 नगरगाउमुनिआश्रमनाना॥ गिरिकाननकन्दरअस्था



गमा.  
बा.  
७५

ना॥**सौरठा**॥ इहि विधि खोजे झजा उआ पसब मिलि भू  
पपहि॥ चरण निमायो ना उबोले प्रभुक डं अमनहि॥**२६२**  
**चौपाई**॥ खोज महिसुत फेरि पठाए॥ चलै सकल पूरब दि  
शिआए॥ तिनके करज जुवजु समाना॥ योजन भरि खोट  
हिं बलवाना॥ देखि अतल बल बिबुध उराने॥ मरि रहिं  
कहि विरचि सनमाने॥ शोधत मही पाताल सब आए  
दिगगज देखि सब नि सिरनाए॥ तिहिं पूका सब कथा  
सुनाए॥ बडरि सकल दति आदि शिआए॥ इहि विधि पु  
निहू सरगज देखा॥ अति उत्तम गुण विमल विशेषा॥ ता  
डकहं प्रणाम पुनि कीन्हा॥ चले सकल पश्चिम चित दीन्हा  
ती सर देखि प्रदति आ कीन्हा॥ पुनि उत्तर दिशि सोधन।  
लीन्हा॥ दिगगज सेत देखि सख पाए॥ सकल कपिल  
मुनि परचलि आए॥ खोदि सिमही कोउ पारन पावा॥  
सोई भा चल डं दिशि जलधि सुहावा॥**दोहा**॥ देखि सि  
आ उत्तर रुत बवांथा मुनि वरपास॥ बोले बचन सकुहा  
ड उभाचह सब करनाश॥**२६३**॥**चौपाई**॥ खोदा मही ह  
मचारि डकोथा॥ रेरे दुष्ट बडत तो दिशोथा॥ कोऊ कह  
चोर दीख बड होई॥ इहि समकली अवरन दि कोई॥ स



नतवचनमुनिचितबाजवही ॥ भएभस्मतामहंसवत  
बही ॥ उमावचनजिहिंसमुजिनबोला ॥ सथाहोउविप  
तिहिंसक्रमडोला ॥ पावकजानियरैकरप्राणी ॥ जरहिंस  
काहेतेअभिमानी ॥ जानिगरलजेसंग्रहकरही ॥ सुनऊ  
रामतेकाहेनमरही ॥ क्रोधकीन्हविनकरैविचारा ॥ भएस  
कलतिहिंतेजरितारा ॥ इहांनृपतिअंशुमानबुलाएऊ ॥  
नहिआएसततिन्हहिंपठाएऊ ॥ दोहा ॥ दीन्हीनृपतिआ  
शीशतवअतिहितबारहिंबार ॥ वेगिफिरइलैतरगस  
तमेरेप्राणआधार ॥ २६४ ॥ चौपाई ॥ चलेऊनाईपदशीशा  
ऊमारा ॥ विस्मभक्तुडंऊलउजिआरा ॥ जहंकऊंनिर  
विमुनिनिकेधामा ॥ पूछिएवरिकरिदणउप्रणामा ॥  
चलेमुनिन्हसनपाइआशीशा ॥ खोजइपैंहइजाइमही  
शा ॥ इहिंविधिखोजतमगमहजाता ॥ मिलेउगरुउसम  
तिकरभाता ॥ चरणपरततवआशिषदएऊ ॥ जरेसकल  
जिहिंविधिसोकहेऊ ॥ सुनतहिंवचनशोचभाभारी ॥ लै  
खगेशदेखएउथलवारी ॥ अंशुमानतहंमजनकीन्हा ॥  
क्रमक्रमसबहिंतिलाजुलिदीन्हा ॥ बइरिगरुउबोलेस  
नुभाता ॥ मैंतोहिकहोंकरैएकबाता ॥ सौरदा ॥ करुसतसो  
उपाउगऊआवहिंअवनिमहं ॥ दरशानतेंअवजाइमजन।



रामा०  
बी०  
७६

कीन्हे परमहित ॥ २६५ ॥ चौपाई ॥ षट्शतसहस्रसवत।  
रिह हिं ३ दिविधि ॥ गङ्गापात्रपरमपावननिधि ॥ सुनिअ  
सवचनहृदयअतिभाष ॥ सहितगरुडमुनिवरपहिंआप  
तबखगेशमुनिचरणनिनायेऊ ॥ पूरवकथानृपकेरिस  
नायेऊ ॥ आशिषदेशतरगमुनिदीन्हा ॥ हर्षितहृदयगवन  
तबकीन्हा ॥ नगरसमीपगरुडपङ्कचाई ॥ गयेउभवनतब  
निजरचुराई ॥ इहांतरऊलेरनृपहिंसिरनाई ॥ षष्ठिसह  
स्रशतमरणसुनाई ॥ विस्मयहर्षविवसनृपभएऊ ॥ की  
न्हजज्ञदानबहुदएऊ ॥ बहुविधिनृपतिराजतबकीन्हा  
प्रजालोककहंअतिसुखदीन्हा ॥ दोहा ॥ मनुकहंराज।  
देशनृपआप्रगएऊसुरधाम ॥ सुरसरिमहीआएविना  
मनुनलहैंविश्राम ॥ २६६ ॥ चौपाई ॥ तासुतनयदिलीप  
भएऊ ॥ मनुतपहेतउतरदिशिगएऊ ॥ अतिहिअगम  
तपकीन्हनृपाला ॥ भएकालवशागएंककुकाला ॥ कि  
हिंविधिकहोंदिलीपप्रभुताइ ॥ सेवहिंसकलनृपतिति  
हिंआइ ॥ युगवतजासुसुखसरपतिरहई ॥ मदिमातासु  
कवनकविकहई ॥ भागीरणअससुतभपउतासु ॥ पित  
समनीतिअधिकउतरतासु ॥ तिन्हहिंवोलितबदीन्हेउरा  
ज ॥ आपुचलेउरितपकेकाज ॥ मनमहंकरतपम्यअनुमा



ना ॥ सरसरि आवत जोंन तप्राणा ॥ जिमि मनुतनु दीन्हैति  
 मिदेऊ ॥ फिरि निजन गरकनाउन लेऊ ॥ इहि विधिकरत  
 विचार भुवाला ॥ जाइ कीन्हत पपरम विशाला ॥ सोरठा ॥  
 करत विचार भुवाल जाइ कीन्हवन प्रबलत प ॥ बीते ककुप  
 ककाल देहत जीकोउ प्रगटनहि ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ सरसरि  
 लागित जेंतन भूषा ॥ सोत जिमूछ पिअहिं जल कृपा ॥ इहो  
 भगीरथ मनअस भएऊ ॥ पितन आववहु दिन चलि गएऊ  
 ककुत स्थना मतनय एकरहेऊ ॥ दीन्हा राजनीति बझकहे  
 ऊ ॥ कहि सब पूर्व कथा सुत पाहा ॥ दीन्ह अशीष चलेउन  
 रनाहा ॥ निकसतन गरस गुन भल पाए ॥ अतिहि निविउव  
 नत होनृ पआए ॥ देखि भगीरथ मनअति भावा ॥ सरसरि हे  
 तत पहिं मन लावा ॥ एक चरण दोउ भुजा उठाए ॥ रवि सन्नु  
 खचित वहिं मन लाए ॥ वर्ष सहस बीते इहि भांती ॥ जातन  
 जानहि दिन अरु राती ॥ देखि उग्रत पविधि चलि आए ॥ वो  
 लेनृ पसन वचन सुहाए ॥ चांरुहिं नृप सुलेहु वरदाना ॥ वो  
 लेउ नृप करिअ जहि प्रणामा ॥ जो मां गों सो जानत अरु हू ॥  
 सो मुदिसन मांगन प्रभु किमि कहह ॥ सोरठा ॥ तदपि कहों प्र  
 भुदेहु वर प्रभु भसना न बह ॥ हसरें करहु सनेहु गङ्गा आवहिअ व



रामा.  
बा.  
७७

निमह॥२३८॥चौपाई॥एवमस्तकहिपुनिविधिकहंही  
सुरसरिदेउराखिकोसकही॥कूटेंजाउपुनितरतरसात  
ल॥फिरदिनरूपतिसुनियमोभूतल॥तिहितेकहोएक  
ताहिपांहीं॥अतिदयालुशङ्करमनमांहीं॥सोउसकैराखि  
देवसरिआजू॥ताहिंजपेतबहोरहिंकाजू॥असकहिवि  
थिअन्तरहितभएऊ॥बद्धरिभगीरणशिवतपठएऊ॥वि  
विधवर्षअंगुष्ठअधारा॥वारवारशिवनामउचारा॥शिव  
कृपालुप्रगटेतवआई॥हाथजोरिनृपकहसिरनाई॥में  
राखवसुरसरिताकहिईणा॥बद्धरिउमापतिगएकैलासा  
दोहा॥उहांदेवसरिशिववचनसुनिमनकीन्हविचार॥  
जाउरसातलशिवसहितजातनलावोंवारा॥२३९॥चौपाई  
अन्तरजामीशिवरचाउपाई॥निजसिरजटासुअगमवना  
ई॥इहांभगीरणअस्तुतिकीन्ही॥सुनिमृदुगिराकांडिवि  
थिदीन्ही॥कूटतसोरभएउअतिभारी॥चकितदेवअहिदि  
गगजचारी॥सुरसरिआरुशिवजटाममानी॥एकवर्षत  
होरहीभुलानी॥कौतुकदेखिसकलसुरहर्षे॥कहिजय  
जयतिसुमनतिन्हवर्षे॥बद्धरिभगीरणसुमिरणकीन्हा  
शिवतबडारिबून्दएकदीन्हा॥तिहिंनैंभईतीनितवधारा॥



एकगईनभपकपताग॥ गईनभसोअवसोवकीसांपिनि  
 देवनिपराताममन्दाकिनि॥ सोरठा॥ दूसरीगईपतालनाम  
 प्रभावतिहरणिदुख॥ तीसरिगऊविशालसुरसन्निक  
 हंकरणिमुख॥ २००॥ चौपाई॥ आरुभगीरथतवशिरनावा  
 बोलीसुरसरिवचनसुहावा॥ वेगवन्ननृपरथतैंआनू॥  
 तरगमरुतप्रभगतिजिमिभानू॥ तिहिंरथचछिनृपचल  
 ममआगें॥ चलिहोंमैंतवपाकेलागें॥ सुनिनृपतरतदिव्य  
 रथआना॥ चढउहृदयसुमिरतभगवाना॥ चलीअग्रक  
 रिनृपहिंसुरसरी॥ देवन्दमुदितसुमनऊरकरी॥ चलत  
 तेजककुवरणिनजाई॥ दूटहितरुगिरिशिलासुहाई॥  
 करहिंऊलाहलजीववडजाती॥ कमठनक्रऊषव्यालब  
 डभोति॥ मजनकरहिंदेवताआई॥ मुनिगणसिद्धरहैतहं  
 क्हाई॥ सोरठा॥ तपनकरमनलाइहर्षहृदयनहिजातकहि॥  
 दरशानतैंअवजातरहिंसकलसुरमुनिकहंदि॥ २०१॥ चौ  
 पाई॥ करिजोमजनतपमनलाइहि॥ तिहिकीमहिमाकहि  
 नसिराइहि॥ स्पन्दनपरनृपसोहइकैसैं॥ तेजवन्नरविदेवि  
 यजैसैं॥ लावतशैलसुहावनदेशा॥ पाकेंसुरसरिअग्रनरे  
 शा॥ हरिद्वारसमीपतवआइ॥ तीर्थदेविसुरसरिमनभाइ॥



रामा०  
वा०  
७८

तीरथं मनभासुखभारी॥ आरुप्रयागपञ्चवीअवहारी॥  
तहांमजनकीन्हेंडखजाई॥ बजरिदेवसरिकाशीआई॥ सो  
शिवपुरीसहजसुखदाई॥ वरणिनजाइमनोहरताई॥ ओ  
रोतीर्थविविधविधिजानी॥ गईतहांकिमिकहोवखानी॥  
मगलोगनकहंकरतिसनाथा॥ जाइचलीइहिविधिरचुना  
था॥ दोहा॥ मिलीबहोरिउदधिमहंउदधिहृदयहरषान॥  
लगेउसराहनभगीरथदितमसमथन्यनआन॥ २०२॥ चौ  
पाई॥ कीन्हेंउअसजशकरइनकोई॥ तयमहिमाबलकाई  
नहोई॥ सगरतनयतरैततकाला॥ हर्षवन्ततबभणउभुवा  
ला॥ ओरोरहैजेऊलमहंकोऊ॥ तिन्हकेसऊतरेसबओऊ॥  
सकलसुरन्हसऊतहांविधाता॥ नृपसनआइकहीअसिवा  
ता॥ थन्यभगीरथजगपशालएऊ॥ तमसमाननृपअवरन  
भएऊ॥ आपनिसत्यप्रतिज्ञाकरेऊ॥ संमतवेदसबहिंसुखद  
एऊ॥ गङ्गासागरसबकोऊकहहीं॥ अबउल्लूकदेखतरवि  
उरहीं॥ भागीरथीअसनामकहेंही॥ सुरमुनिनागसिद्धय  
पामहेंही॥ असकहिविधिनिजलोकसिधाए॥ इहांभगीर  
थअतिसुखपाए॥ छन्दः॥ पाएअमितसुखबजरिपूजेउस  
रसरिहिमनलाइकें॥ तबदीन्हआशिषमुदितगङ्गा नृपभ



वनगणसखपाइके॥६२॥इहिभांतिसुनिगङ्गाकथातव  
 रामअधिचरणनिनए॥कहदासतलसीरामलक्ष्मणाहिंम  
 हासुनिआशिषदए॥६४॥दोहा॥कौशिकआशिषअमीयस  
 मसुनिहर्षेरचुनायप्रभुसखपाइकहाबडरिवेगिचलिय  
 मुनिनाम॥२३॥यहतकलेपकहे॥चौपाई॥गाथिसुवन  
 सबकथासुनाई॥जेहिंप्रकारसरसरिमहीआई॥तवप्रभु  
 अधिनसमेतअन्हाए॥विविधदानमहिदेवनपाए॥हरषि  
 चलैमुनिवृन्दसहाया॥वेगिविदेहनगरनियराया॥पुरर  
 म्पतारामजबदेखी॥हर्षअनुजसमेतविशेषी॥वापीरूपस  
 रितसरनाना॥सलिलसुधासममणिसोपाना॥गुञ्जतमंजु  
 मत्तरसभृङ्गा॥कुंजतकलबडवरणाविहङ्गा॥वरणवरण  
 विकसेजलजाता॥विविधसमीरसदासखदाता॥दोहा॥सु  
 मनबाटिकावागवनविपुलविहङ्गनिवास॥फूलतफल  
 तसुपलवितसोहतपुरचडंपास॥२४॥चौपाई॥बनैनवर  
 णतनगरनिकाई॥जहांजाइमनतहांलुभाई॥चारुबजा  
 रविचित्रअटारी॥मणिमयविधिजनुसकरसंवारी॥थनि  
 कबणिकवरथनटसमाना॥बैठेसकलवस्तुलैनाना॥चौद  
 टसुन्दरगलीसुहाई॥सन्ततरहहिंसगन्धसिचाई॥मङ्गल



राम०  
बा०  
७५

मयमन्दिरसबकेरे॥ चिन्तितजनु रतिनाथचितेरे॥ पुरनर  
नारिसकलप्रचिसना॥ धर्मशीलज्ञानीगुणवन्ता॥ अतिप्र  
नूपजहंजनकनिवसू॥ विथकहिविबुधविलोकिविलासू  
होतचकितचितकोटविलोकी॥ सकलभुवनशोभाजनुरो  
की॥ दोहा॥ थबलथाममणिपुरपटुसुवटितनानाभांति॥  
सियनिवाससुन्दरसदनशोभाकिमिकहिजाति॥ २०५॥ चौ  
पाय॥ सभगद्वारसबऊलिशकर्पटा॥ भूषभीरनटमागथ  
भाटा॥ बनीविशालवाजिगजशाला॥ हयगजरथसंजल  
सबकाला॥ शूरसचिवसेनपबडतैरे॥ नृपगृहसरिससद  
नसबकेरे॥ पुरवाहिरसरसरितसमीपा॥ उत्तरेजहंतहंविप्र  
लमहीपा॥ देविप्रनूपएकग्रंमराई॥ सबसुपाससबभां  
तिसहाई॥ कौशिककहेउमोरमनमाना॥ उहारहियरबुवी  
रसजाना॥ भलेहिनाथकहिकृपानिकेता॥ उत्तरेतहंमुनि  
वृन्दसमेता॥ विष्णामित्रमहामुनिआए॥ समाचारमिथिला  
पतिपाए॥ दोहा॥ संगसचिवप्रचिभूरिभटभूसरवरगुरु  
ज्ञाति॥ चलेमिलनमुनिनाथकहिंमुदितराउयहिभांवि॥  
२०६॥ चौपाई॥ कीन्हप्रणामथरणिपरिमाया॥ दीन्हअ  
शीषनृपहिंमुनिनाथा॥ विप्रवृन्दसबसादरबन्दे॥ जानिभा

दोहा  
२



भाग्यवत राउ आनन्दे ॥ कुशल प्रश्न कहि बारहिं बार ॥ विश्वा  
 मित्र नृपहिं बैठा ॥ तेहिं अबसर आप दोउ भाई ॥ गण दे दे  
 खन फलवाई ॥ प्याम गौर मृदु वयस किशोरा ॥ लोचन सुख  
 द विष्णु चित चोरा ॥ उठै सकल जबर बुपति आप ॥ विश्वा मित्र  
 निकट बैठा ॥ भए सब सुखी देखि दौ भ्राता ॥ वारि विलोचन  
 पुलकित गाता ॥ मुरति मधुर मनोहर देखी ॥ भये उविदेह वि  
 देह विशेषी ॥ दोहा ॥ प्रेम मगन मन जानि नृप करि विवेक थ  
 रिधीर ॥ बोले उमुनि पदनाशिर गङ्गद गिरा गंभीर ॥ २०० ॥  
 चौपाई ॥ कहइ नाथ सुन्दर दोउ बालक ॥ मुनि कुल तिलक कि  
 नृप कुल पालक ॥ ब्रह्म जो निगमनेति कहि गावा ॥ उभय वेष  
 धरि सोइ कि आवा ॥ सहज विरागरूप मन मोरा ॥ थकित होत  
 जिमि चन्द्र चोरा ॥ तातैं प्रभु पूकैं सदभाऊ ॥ कहइ नाथ जनि  
 करइ दराऊ ॥ इनहि विलोकत अति अनुरागा ॥ वरवस ब्रह्म सु  
 खहिं मन त्यागा ॥ कह मुनि विहंसि कहै नृपनीका ॥ वचन  
 तमहार न होइ अलीका ॥ प्रिय सबहिं जहल गि प्राणी ॥ म  
 न मुख काहिं राम सुनिवाणी ॥ रघु कुल मणि दशरथ के जाए  
 मम हित लागि न रेश पठाए ॥ दोहा ॥ राम लक्षण दौ बन्धुवर  
 रूप शील बल धाम ॥ माखराखे उ सब सावि गज जीति असुर सं



रामा०  
बा०  
८०

ग्राम॥२०८॥**चौपाई॥** मुनि तब चरण देविक हरारु ॥ कहि  
न सकौ निज पुण्य प्रभाऊ ॥ सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता ॥ आन  
न्द हूँ के आनन्द दाता ॥ इनकी प्रीति पर स्मरण वनि ॥ कहिन जा  
इ मन भाव सहा वनि ॥ सब दुनाय कह मुदित विदेह ॥ ब्रह्म जी  
वर वस सहज सनेह ॥ पुनि पुनि प्रभु हिंचित वन रनाऊ ॥ पुलक  
गात उर अथि कउ काऊ ॥ मुनि हिं प्रशंसि नाइ पद शीशा ॥ च  
लेउ लवाइन गर अबनीशा ॥ सुन्दर सदन सखद सब काला ॥  
तहां वास लै दीन्ह भुआला ॥ करि पूजा सब विधि सेव काई ॥ ग  
येउ राउ गृह विदा कराई ॥**दोहा॥** ऋषय सङ्ग रघुवंश मणि क  
रि भोजन विश्राम ॥ बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसर हा भरियाम ॥  
**२०९॥ चौपाई॥** ललन हृदय लाल सा विषोषी ॥ जाइ जनक पु  
र आइ यदेवी ॥ प्रभु भय बद्ध रि मुनि हिंसक चांदी ॥ प्रगटन क  
ह हिंसन हिंसु सकांदी ॥ राम अत्रु ज मन की गति जानी ॥ भ  
क्तवत्सलता हिय ऊलसानी ॥ परम विनीत सकुचि मुसकाई  
बोले गुरु अत्रुणा मन पाई ॥ नाथ ललन पुर देखन चरंदी ॥ प्र  
भु संकोच उर प्रगटन कदंदी ॥ जों राउ राय सुमैं पाऊं ॥ नगर  
देखाइ तरत लै आऊं ॥ सुनि मुनीश कह वचन सप्रीती ॥ कसन  
राम राखइ तमनीती ॥ धर्म सेतु पालक तम ताता ॥ प्रेम वि



वससेवकसुखदाता ॥ दोहा ॥ जाइदेखिआबजनगरसु  
 खनिधानद्वौभाइ ॥ करइसफलसबकेनयनसुन्दरवद  
 नदेखाइ ॥ २८० ॥ चौपाई ॥ मुनिपदकमलबन्दिदोउभाता  
 चलेलोकलोचनसुखदाता ॥ बालकवृन्ददेविप्रतिशोभा  
 लगेसङ्गलोचनमनलोभा ॥ पीतवसनपरिकरकटिभाषा  
 चारुचापशरसोहतहाथा ॥ तनुअनुहरतसुचन्दनखोरी  
 ष्णामलगौरमनोहरजोरी ॥ केहरिकन्यरबाइविशाला ॥  
 उरअतिरुचिरनागमणिमाला ॥ सुभगप्रवणसरसीरु  
 हलोचन ॥ वदनमयङ्कतापत्रयमोचन ॥ काननिकनक  
 मूलकुविदेही ॥ चितवतचिंतहिंचोरिजनुलेही ॥ चितव  
 निचारुभृङ्गटिवरवांकी ॥ तिलकरेखणोभाजनचांकी ॥  
 दोहा ॥ रुचिरचौतनीसुभगशिरमेचकुंचितकेश ॥ नख  
 शिखसुन्दरबन्धुद्वौशोभासकलसुदेश ॥ २८१ ॥ चौपाई ॥  
 देखननगरभूषसतआप ॥ समाचारपुरवासिनपाए ॥ थाये  
 धामकामसबत्यागी ॥ मनङ्गरङ्गनिधिलूटनलागी ॥ निर  
 विमहजसुन्दरदोउभाई ॥ होहिंसखीलोचनफलपाई ॥  
 युवतीभवनऊरोखनिलागी ॥ निरखहिंरामरूपअनुरा  
 गी ॥ कहहिपरस्परवचनसुप्रीती ॥ सखिइनकोटिकामकु



विजीती॥ सरनर असरनाग मुनि माही॥ शोभा असक इं  
 सनियत नाही॥ विस्मृचारि भुज विधि मुख चारी॥ विकट  
 वेष मुख पञ्चपुरारी॥ अपर देव असको जग आही॥ यह  
 विसखि बट तरि ये जाही॥ दोहा॥ वय किशोर सख मासदन  
 प्र्याम गौर सख धाम॥ अङ्ग अङ्ग परवारि पे कोटि कोटि श  
 त काम॥ २८२॥ चौपाई॥ कहूँ सखी असको तनु धारी॥ जो  
 न मोहय हरूप निहारी॥ कोउ सप्रेम बोली मृदुवाणी॥ जो  
 में सुना सो सुनइ सयानी॥ पदोऊ नृपद शरण के छोटा॥  
 बाल मराल निके कल जोटा॥ मुनि कौशिक मुख के रखवा  
 रे॥ जिन रण अजिर निशाचर मारे॥ प्र्याम गात कल कञ्ज  
 विलोचन॥ जो मारीच सुभुज मद मोचन॥ कौशल्या सुत  
 सो सख खानी॥ नाम राम धनुषाय कपाणी॥ गौर किशो  
 र वेष वर काँछै॥ कर शरचा पराम के पाँछै॥ लक्ष्मण नाम  
 राम लघु भ्राता॥ सुनु सखिता सुसुमित्रा माता॥ दोहा॥  
 विप्र काज करि बन्धु दोउ मग मुनि बधू उधारि॥ आप देख  
 न चाप मुख सुनि हरषी सब नारि॥ २८३॥ चौपाई॥ देविरा  
 म कृदिकोउ एक कहई॥ योग्य जान की यह वर अहई॥ जो  
 सखि नहिं देखि नर नाइ॥ पण परिहरि हठि करै विवाह॥



कोउ कह पभूपति पहिचाने ॥ सुनिसमेत सादरसनमाने  
 सखिपरन्तपणाराउनतजई ॥ विधिवशाहदिविवेकदि  
 भजई ॥ कोउ कह जौ भल अहै विधाता ॥ सब कहं सुनियउ  
 चितफलदाता ॥ तौ जान किहिं मिलिहिं बरपड ॥ नाहि  
 न आलियहिं महं सन्देह ॥ जौ विधिवशा असव नै संयोग  
 तौ कृतकृत्य होइ सब लोग ॥ सखि हमरें अति आरति तातें  
 कबहुं कप आवहिं पहिनातें ॥ दोहा ॥ नाहिं तहम कहं स  
 गड सखि रह कर दरशन हरि ॥ यह संघटत बहोइ जब  
 पुण्य पुरा कृत भूरि ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ बोली अपर कहै उम  
 सिनीका ॥ यहि विवाह अति हित सब ही का ॥ कोउ कह  
 शङ्कर चाप कठोरा ॥ एषा मल मृदु गात किशोरा ॥ सब  
 असमंजस अहै सयानी ॥ यह सुनि अपर कहै मृदु बाणी  
 सखि रहन कहं कोउ कोउ अस कह ही ॥ बउ प्रभाव देखत ल  
 चु अह ही ॥ परसि जासु पद पङ्कज भूरी ॥ तरी अहल्या कृत  
 अवभूरी ॥ सो किरहै विनु शिव यनु तोरे ॥ यह प्रतीति परिह  
 रिय न भोरे ॥ जेहिं विरञ्चिरचि सीय संवारी ॥ तेहिं षण्ण मल  
 वर रचेउ विचारी ॥ तासु वचन सुनि सब हरषानी ॥ ऐसे हो  
 उ कह हिं मृदु बाणी ॥ दोहा ॥ हिय हरषहिं वरषहिं समनस



रामा.  
बी०  
८२

मुखिसुलोचनिवृन्द॥ जाहिंजहांजहंवन्युदोउतहंतहं  
परमानन्द॥ २८५॥ चौपाई॥ पुरपूरवदिशिगेदोउभाई॥ ज  
हांथनुषमखभूमिवनाई॥ अतिविस्तारचारुगचछारी  
विमलवेदिकारुचिरसेवारी॥ चहुंदिशिकञ्चनमञ्चवि  
शाला॥ रचेजहांवैटहिंमहिपाला॥ तेहिंपाकेंसमीपच  
हुंयासा॥ अपरमञ्चमाउलीविलासा॥ ककुककुंचसब  
भांतिसुहाई॥ वैटहिनगरलोगजहंजाई॥ तिनकेनिक  
टविशालसुहाए॥ थवलधामवहुवरणावनाए॥ जहंवै  
देदेखहिंपुरनारी॥ यथायोग्यनिजकुलअनुहारी॥ पु  
रवालककहिकहिमृदुवचना॥ सादरप्रभुहिंदेखाव  
हिरचना॥ दोहा॥ सबशिषुएहिमिसप्रेमवशापरसिम  
नोहरगात॥ तनपुलकहिंअतिहर्षहियदेखिदेखिदो  
भात॥ २८६॥ चौपाई॥ शिषुसबसमप्रेमवशाजाने॥ प्रीति  
समेतनिकेतबखाने॥ निजनिजरुचिसबलेहिंबुलाई॥  
सहितसनेहजाहिंदोउभाई॥ रामदिखावहिंअनुजहिंर  
चना॥ कहिमृदुमधुरमनोहरवचना॥ लवनिमेषमहंभु  
वननिकाया॥ रचेजासुअनुशासनमाया॥ भक्तदेतसो  
उदीनदयाला॥ चितवतचकितथनुषमखशाला॥ कौ



तब कदे विचले गुरु पाही ॥ जानि बिलम्ब त्रास मन माही ॥  
 जा सुत्रास उर कहें उर होई ॥ भजन प्रभाव देखावत सोई ॥ क  
 हि बातें मृदु मधुर सुहाई ॥ किये विदा बालक वरि आई ॥ दोहा  
 सभय सप्रेम विनीत अतिसूच सहित दोउ भाई ॥ गुरु पद प  
 र जना उर शिर बैठे आय सुपाई ॥ २८७ ॥ चौपाई ॥ निशि प्रवेश प  
 नि आय सुदीन्हा ॥ सब ही संध्या बन्दन कीन्हा ॥ कहत कथा उ  
 तिदा सपुराणी ॥ रुचिर रजनि यगया मसिरानी ॥ मुनि वर प्रा  
 यन कीन्हा तब जाई ॥ लगे चरण चोपन दोउ भाई ॥ जिन के चर  
 ण सरोरुह लागी ॥ करत विविध जप योग विरागी ॥ ते दोउ बं  
 धु प्रेम जनु जीते ॥ गुरु पद कमल पलोटत प्रीते ॥ बार बार मु  
 नि आजा दीन्हा ॥ रघुवर जा उर शयन तब कीन्हा ॥ चापत चरण  
 लषण उर लाए ॥ सभय सप्रेम परम सुख पाए ॥ पुनि पुनि  
 प्रभु कह सो ब्रजाता ॥ चौंछे धरि उर पद जल जाता ॥ दोहा ॥  
 उठे लषण निशि विगत सुनि अरुण शिखा धनिकान ॥ गुरु  
 तैं पहिलें जगत पति जा गोराम सुजान ॥ २८८ ॥ चौपाई ॥ सकल  
 शोच करि जा उर हाए ॥ नित्य निवाहि मुनि हिं शिर नाए ॥ सम  
 य जानि गुरु आय सुपाई ॥ लैन प्रसून चले दोउ भाई ॥ भूप बाग  
 वर देखे उजाई ॥ जहं वसत अतर ही लभाई ॥ लागे विटप मनो



रामा०

बा०

८३

83

हरनाना॥ बरणावरणावरवेलिविताना॥ नवपलवफल  
सुमनसहाए॥ निजसम्पतिसुरतरुहिलजाए॥ चातक  
कोकिलकीरचकोरा॥ कूजतविहंगनचतकलमोरा॥ म  
थवागसरसोहसहावा॥ मणिसोपानविचित्रवनावा॥ वि  
मलसलिलसरसिजबझरू॥ जलखगकूजतगुञ्जतभृ  
रू॥ दोहा॥ बागतडागविलोकिप्रभुहरषेबंधुसमेत॥ पर  
मरम्यआरामयहजोरामहिंसखदेत॥ २८९॥ चौपाई॥ चऊं  
दिशिचितैपूकीमालीगाण॥ लगेलैनदलफूलमुदितमन  
तेहिंअवसरसीतातहंआई॥ गिरिजाएजनजननियठाई॥  
सङ्गसखीसबसुभगसयानी॥ गावहिंगीतमनोहरवाणी॥  
सरसमीपगिरिजागृहसोहा॥ बरणिनजाइदेविमनमोहा  
मजनकरिसरसखीसमेता॥ गईमुदितमनगौरिनिकेता॥  
सजाकीन्हअधिकअनुरागा॥ निजअनुरूपसुभगवरमांगा  
एकसखीसियसङ्गविहाई॥ गईरहीदेखनफूलवाई॥ तेहिं  
दोउबंधुविलोकेउजाई॥ प्रेमविवशसीतापदिआई॥ दोहा॥  
तासदशादेखीसखिनपुलकगातजलनयन॥ कडकारण  
निजहर्षकरपूकहिंसबमृदुवयन॥ २९०॥ चौपाई॥ देखनबा  
गऊंवरदोउआए॥ बयकिशोरसबभांतिसहाए॥ प्रणमगौर



किमिकहोंबखानी॥ गिराग्रनयननयनविनुवाणी॥ सु  
 निहरषीसबसाखीसयानी॥ सियहियअतिउतकाणजानी  
 एककहहिनुपसततेआली॥ सुनेजेमुनिसङ्गआपकाली  
 निजनिजरूपमोहनीजारी॥ कीन्हेंसबशानगरनरनारी॥  
 वरणातकुविजहंतहंसबलोगू॥ अवशिदेखियेदेखनजो  
 गू॥ तासबचनअतिसियहिसोहाने॥ दरशलागिलोचन  
 अऊलाने॥ चलीअग्रकरिप्रियसखिसोई॥ प्रीतिपुरातन  
 लखेनकोई॥ दोहा॥ सुमिरिसीयनारदवचनउपजीप्रीति  
 पुनीत॥ चकितविलोकतिसकलदिशिजनुशिअमृगीस  
 भीत॥ २५१॥ चौपाई॥ कङ्कणाकिङ्किणिनूपुरध्वनिसुनि॥  
 कहतलषणसनरामहृदयगुणि॥ मानऊमदनदुनुभी  
 दीन्हा॥ मनसाविष्णुविजयकहंकीन्हा॥ असकहफिरि  
 चितपतेतिंओरा॥ सियमुखशशिभयेनयनचकोरा॥ भ  
 येविलोचनचारुअचञ्चल॥ मनइंसऊचिनिमित्तजेदग  
 झल॥ देखीसीयशोभासखपावा॥ हृदयसराहतवचनन  
 यावा॥ जनुविरञ्चिसबनिजनिप्रणार्ई॥ विरचिविष्णुकहं  
 प्रगटदिखाई॥ सुन्दरताकहसुन्दरकरई॥ कुविगृहदीप  
 शिखाजनुवरई॥ सबउपमाकविरहेजवारी॥ केहिंपटत



रा. मा. ०  
बा. ०  
८५

ककुभ

४५

रियविदेहकुमारी ॥ दोहा ॥ सियशोभादियवरणिप्रभु  
आपनिदशाविचारि ॥ बोलेषुचिमनअनुजसनवचनस  
मयअनुहारि ॥ २५२ ॥ चौपाई ॥ तातजनकतनयायहसोई  
यनुषयजजेहिंकारणहोई ॥ पूजनगोरिसखीलैआई ॥ क  
रतिप्रकाशफिरतिफुलवाइ ॥ जासुविलोकिअलौकिक  
शोभा ॥ सहजपुनीतमोरमनदोभा ॥ सोसबकाराजान  
विधाता ॥ फरकहिंसभगअङ्कसुनुआता ॥ रघुवंशिनक  
रसहजसुभाऊ ॥ मनऊपन्यपगथरैनकाऊ ॥ मोहिअ  
तिशयप्रतीतिजियकेरी ॥ जेहिंसपनेऊपरनारिनहेरी  
जिनकीलहहिंनरिपुराणीदी ॥ नदिलावहिंपरतीयमन  
डीदी ॥ मंगनलहहिंनजिनकेनाही ॥ तेनखरयोरेजगमा  
ही ॥ दोहा ॥ करतबातकहीअनुजसनमनसियरूपलो  
भान ॥ सुखसरोजमकरन्दकुविकरतमधुपश्वपान ॥ २५३ ॥  
चौपाई ॥ चितवतिचकितचहंदिशिमीता ॥ कहंगपचप  
किशोरमनचीता ॥ जेहिंविलोकिमृगशांवकनयनी ॥  
जनुतहंवर्षकमलसितश्रेणी ॥ लताओटतवसखिन  
लखाए ॥ श्यामलगौरकिशोरसुहाए ॥ देविरूपलोच  
नललचाने ॥ हर्षजनुनिजनिधिपहिचाने ॥ यकेनयन



रघुपति कृविदेधें ॥ पलकनऊं परिहरी नि मेधें ॥ अधिक स  
 नेह भरी ॥ शरद शशि हिंजनु चितवच कोरी ॥ लोचन  
 मगुराम हिंउर आनी ॥ दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥ जब सि  
 य सखिन प्रेम बश जानी ॥ कहिन सकहिं ककु मन सऊचानी  
 दोहा ॥ लता भवन तें प्रगट भए ते हिं अवसर दोउ भाई ॥ निक से  
 जनु युग विमल विधु जलद पटल विलगाई ॥ २२५ ॥ चौपाई  
 शोभा सी बसु भग दोउ बीरा ॥ नील पीत जल जा भशरीरा ॥  
 काक पत शिर सोहत नीके ॥ गुच्छा विच विचऊ सुम कली  
 के ॥ भाल तिलक अम विन्दु सहाए ॥ अवण सुभग भूषण  
 कृविहाए ॥ विकट भूऊ टिक चहुं सुरवारें ॥ नव सरोज लोच  
 न रत नारे ॥ चारु चिबुक नासिका कपोला ॥ हास विलास ले  
 त मनु मोला ॥ मुख कृविक दिन जाइ मोहि पाहीं ॥ जे हिं वि  
 लोकि बड्क कामल जाहीं ॥ उर मणि माल कसु कल ग्रीवा ॥  
 काम कल भकर भुज बल सीवा ॥ सुमन समेत वाम कर दो  
 ना ॥ सांबर ऊंग्र सखी सठिलोना ॥ दोहा ॥ केहरिक टिपट  
 पीत थर सख माशील निधान ॥ देखि भाउ ऊल भूषण हिं  
 विसरा सखिन अपान ॥ २२५ ॥ चौपाई ॥ परिधीर ज एक सखी  
 सयानी ॥ सीता सन बोली गहि पाणी ॥ बड्क रिगौरि कर ध्यान



रामा०  
बा०  
८५

करेहू॥ भूपकिशोरदेखिकिनलेहू॥ सऊचिसीयतबनय  
नउचारे॥ सन्मुखदोउरबुसिंहनिहारे॥ नखशिखदेखिराम  
कीशोभा॥ सुमिरिपितापणामनअतितोभा॥ परवशसखि  
नलखीजबसीता॥ भयेउगहरुसबकहहिंसभीता॥ पुनिआ  
उबएहिबेरहिंकाली॥ असकहिमनविहंसीएकआली॥ गू  
ढगिरासुनिसियसऊचानी॥ भएउविलम्बमात्रभयमानी  
परिवडिपीरगामउरआनी॥ फिरीअपनप्रपितवशजानी  
दोहा॥ देखनमिसुमृगविहङ्गतरुफिरैबहोरिवहोरि॥ नि  
रखिनिरखिरबुवीरकुविवाछेप्रीतिनयोरि॥ २५६॥ चौपाई  
जानिकठिनशिवचापविशूरति॥ चलीराखिउरण्यामल  
मूरति॥ प्रभुजबजातजानकीजानी॥ सुखसनेहशोभागु  
णखानी॥ परमप्रेममयमृदुमसिकीन्ही॥ चारुचित्तभीतर  
लिखिलीन्ही॥ गईभवानीभवनबहोरी॥ बन्दिचरणबोली  
करजोरी॥ जयजयजयगिरिराजकिशोरी॥ जयमहेशमु  
खचन्द्रचकोरी॥ जयगजवदनमञ्जाननमाता॥ जगतजन  
निदामिनियुतिगाता॥ नदितवआदिमध्यअवसाना॥ अमि  
तप्रभावबेदनहिजाना॥ भवभवविभवपरभवकारिणि॥  
विष्णुमोहिनिसवशविहारिणि॥ दोहा॥ पतिदेवतासतीयम



हं मातृप्रथमतः बरेष ॥ महिमा अमितन कहि शकहिं स  
 ह सणारदा शेष ॥ २५७ ॥ चौपाई ॥ सेवत तोहि सुलभ फल  
 चारी ॥ वरदायि निविपु रारिपियारी ॥ देवी पूजि पद कमल  
 तहारे ॥ सरनर मुनि सब होहिं सुखारे ॥ मोर मनोरथ जान  
 ऊनी के ॥ वस ऊ सदा उर पर सब ही के ॥ कीन्हें उ प्रगटन का  
 रणा ते ही ॥ अस कहि चरण गहवै देही ॥ विनय प्रेम वश भ  
 ई भवानी ॥ खसी माल मूरति सुसुकारी ॥ सादर सिय प्रसा  
 द उर थरेऊ ॥ बोली गोरि हर्ष हिय भयेऊ ॥ सुनु सिय सत्य  
 अशीष हमारी ॥ पूजि हिं मन कामना तहारी ॥ नारद वच  
 न सदा सुचि सोचा ॥ सो वर मिलि हिं जाहि मन राचा ॥ कन्दः  
 मन जाहि राचे उ मिलि हिं सो वर सहज सुन्दर शां बरो ॥ क  
 रुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥ ६५ ॥ यहि  
 भांति गोरि असी स सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ॥ त  
 लसी भवनि हिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥ ६६  
 सोरठा ॥ जानि गोरि अतुल सिद्ध हिय हर्षन जाय कहि  
 मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे ॥ २५८ ॥ चौपाई  
 हृदय सराहत सी यलु नाई ॥ गुरु समीप गवने दोउ भाई ॥  
 राम कहा सब कौ शिषा ही ॥ सरल सभाव कुशाकुल ना



राम०  
बा०  
८६

४६

हीं॥ सुमनपा३ मुनि पूजा कीन्ही॥ पुनि प्रणीष दोउ भा३ रू  
दीन्ही॥ सफल मनोरथ होउ तम्हारे॥ राम लषण सुनिभ  
पसखारे॥ करि भोजन मुनिवर विज्ञानी॥ लगे कहन ककु  
कथा पुराणी॥ विगत दिवस मुनि आय सुपाई॥ संध्या क  
रण चले दोउ भाई॥ प्राची दिशि शशि उगै उ सहावा॥ सिय मु  
ख सरिस देवि सख पावा॥ बहुरि विचार कीन्ह मन माही॥  
सीय वदन समहि मकरनाही॥ दोहा॥ जन्म सिन्धु पुनि वं  
धु विष दिन मलीन सकल दुः॥ सिय मुख समता पाव कि  
मि चन्द्र वापु रो रङ्ग॥ २५५॥ चौपाई॥ बटै बटै विरहि निडुः  
ख दाई॥ ग्रसै राऊ निज सन्धि हिं पाई॥ कोक शोक प्रद पङ्कः  
ज दोही॥ अब गुण बहूत चन्द्र मातोही॥ वैटही मुख पटत  
र दीन्हें॥ होइ दोष वउ अउचित कीन्हें॥ सिय मुख क विवि  
ध व्याज बखानी॥ गुरु पदिंच ले निशाव डिजानी॥ करि  
मुनि चरण सरोज प्रणामा॥ आय सुपा३ कीन्ह विश्रामा॥  
विगत निशार बुनायक जागे॥ बंधु विलोकिक दन असला  
गे॥ उमेउ अरुण अवलोकइ ताता॥ पङ्कज कोक लोक स  
ख दाता॥ बोले लषण जोरि गुगणी॥ प्रभु प्रभाव सूचक  
मृदुवाणी॥ दोहा॥ अरुणोदय सकुचे ऊ मुद उगण जोति



मलीन॥तिमितम्हारआगमनसुनिभपृथपतिबलही  
न॥३००॥चौपाई॥नृपसबनखतकरहिंउजियारी॥टारि  
नशकहिंचापतमभारी॥कमलकोकमधुकरखगनाना  
हरषेसकलनिशाग्रवसाना॥येसहिंप्रभुसबभक्ततम्हा  
रे॥होइहहिंदूटैंथवसुखारे॥उदयभानुविनुग्रमतम  
नाणा॥दुरेनखतजगतेजप्रकाशा॥रविनिजउदयवा  
जरवुराया॥प्रभुप्रतापसबनृपनदेखाया॥तबभुजबा  
लमहिमाउदवाटी॥प्रगटीथनुविघटनपरिपाटी॥बं  
धुवचनसुनिप्रभुमुकाने॥होइअचिसहजपुनीतनन्हा  
ने॥नित्यक्रियाकरिगुरुपहिंआए॥चरणसरोजसभग  
शिरुनाए॥शतानन्दतबजनकबुलाए॥कौशिकमुनि  
पहिंतरतपठाए॥जनकविनयतिनआइसुनाई॥हर्षवो  
लिलीएदोउभाई॥दोहा॥शतानन्दपदबन्दिप्रभुवैटेगु  
रूपहिंजाइ॥चलइतातमुनिकहेउतचपठवाजनकबुला  
इ॥३०१॥चौपाई॥सीयस्वयम्बरदेखियजाई॥ईश्वरकाहि  
धोंदेहिबडाई॥लषणकहाजशभाजनसोई॥नाथकृपा  
तबजापरहोई॥हर्षसुनिसबमुनिवरवाणी॥दीन्दिअशी  
षसबहिंसखमानी॥पुनिमुनिवृन्दसमेतकृपाला॥देखन  
चलेथनुषमखशाला॥रङ्गभूमिआएदोउभाई॥असिपु



रामा०  
बा०  
८७

धिसवपुरवासिनपाई॥ चलेसकलगृहकाजविसारी॥  
बालकयुवाजटरननारी॥ देखाजनकभीरभभारी॥ शु  
चिसेवकसबलिपहंकारी॥ तरतसकललोगनपहिंजा  
हू॥ आसनउचितदेऊसबकाहू॥ दोहा॥ कहिमृदुवचन  
विनीततिनवैठारेनरनारि॥ उत्तममध्यमनीचलचुनि  
जनिजथलप्रनुहारि॥ ३०३॥ चौपाई॥ राजऊवरतेहिंअ  
वसरआप॥ मनऊमनोहरतातनुकाप॥ गुणसागरना  
गरवरवीरा॥ सुन्दरण्यामलगौरशरीरा॥ राजसमाज  
विराजतरूरे॥ उडुगणमहंजनुगुगविधुपरे॥ जिनके  
रहीभावनाजैसी॥ प्रभुमूरतिदेखीतिनतैसी॥ देखहिं  
भूपमहारणपीरा॥ मनऊंवीररसधरेंशरीरा॥ उरेऊटि  
लनपप्रभुहिंनिहारी॥ मनऊंभयानकमूरतिभारी॥ रहे  
असरकलदोणियवेषा॥ तिनप्रभुप्रगटकालसमदे  
षा॥ पुरवासिनदेखेदोउभाई॥ वरभूषणलोचनसखदा  
ई॥ दोहा॥ नारिविलोकहिंहर्षिहियनिजनिजरुचिअनु  
रूप॥ जनुसोहतशृंगारथरिमूरतिपरमअनूप॥ ३०३॥  
चौपाई॥ विदुषनप्रभुविराटमयदीषा॥ बडमुखकरपदलो  
चनशीषा॥ जनकजातिअबलोकहिंकैसैं॥ सजनसगेप्रि  
यलागहिंजैसैं॥ सहितविदेहविलोकहिंराणी॥ शिशुसम



प्रीतिनजातिबखानी ॥ योगिनपरमतत्वमयभासा ॥ शा  
 न्प्रदसमसहजप्रकाशा ॥ हरिभक्तनदेखेदोउभाता ॥  
 ३४ देवस्वसबसखदाता ॥ रामहिंचितवभावजेहिंसी  
 या ॥ सोसनेहसखनहिकथनीया ॥ उरप्रभुभवतिनक  
 दिशकसोऊ ॥ कवनप्रकारकहैकविकोऊ ॥ यदिविधिर  
 हाजाहिजशाभाऊ ॥ तेहिंतसदेखेउकोशलराऊ ॥ दोहा ॥  
 राजतराजसमाजमहंकोशलराजकिशोर ॥ सुन्दरपया  
 मलगौरतनुविश्वविलोचनचोर ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ सहज  
 मनोहरसूरतिदोऊ ॥ कोटिकामउपमालघुसोऊ ॥ शरद  
 चन्दनिन्दकमुखनीके ॥ नीरजनयनभावतेजीके ॥ चितव  
 निचारुमारमदहरणी ॥ भावतिहृदयजायनहिवरणी ॥  
 कलकपोलप्रतिऊएउललोला ॥ चिबुकअथरसुन्दरमृ  
 दुबोला ॥ कुमुदबन्धुकरनिन्दकहासा ॥ भृङ्गटीविकटम  
 नोहरनासा ॥ भालविशालतिलकजलकाहीं ॥ कचविलो  
 किअलिअवलिलजाहीं ॥ पीतचौतनीशिरनसहाई ॥ ऊस  
 मकलीविचवीचबनार्ई ॥ देवारुचिरकमुकलग्रीवा ॥ ज  
 उविभुवनसखमाकीसीवा ॥ दोहा ॥ कुञ्जरमणिकएटाक  
 लितउरतलसीकीमाल ॥ वृषभकन्यकेहरिठवनिबलनि  
 थिबाइविशाल ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ कटितणीरपीतपटबांये ॥



रामा  
बा०  
८८

४४

करपारथनुषवामकरकांथे॥ पीतयज्ञउपवीतसहाप  
नखशिखमञ्जुमहाकुविकाप॥ देखिलोगसबभएसखा  
रे॥ एकटकलोचनटरहिंनटारे॥ हर्षजनकदेखिदोउ  
भाई॥ मुनिपदकमलगहेतबजाई॥ करिविनतीनिजक  
पासनाई॥ रङ्गअबनिसबमुनिदेखाई॥ जहैजहैजाहिं  
ऊअरबरदोऊ॥ तहैतहैचकितचितवैसबकोऊ॥ निज  
निजरुचिरामहिंसबदेखा॥ कोउनजानककुमर्मविशे  
षा॥ भलिरचनानृपसनमुनिकहेऊ॥ राजामुदितमहा  
सखलहेऊ॥ दोहा॥ सबमञ्जनतेमञ्जएकसुन्दरविशट  
विशाल॥ मुनिसमेतदोउबन्धुतहंवैदारेमहिपाल॥ ३०६  
चौपाई॥ प्रभुहिदेखिसबनृपदियदारे॥ जनुराकेशउद  
यभएतारे॥ असिप्रतीतिसबकैमनमाही॥ रामचांपतो  
रबशंकनाही॥ विनुभंजेइंभवधनुषविशाला॥ मेलहिं  
सीयरामउरमाला॥ असविचारिगवनेइवरभाई॥ जसप्र  
तापबलतेजगवाई॥ विहंसेअपरभूपसुनिवाणी॥ जेअवि  
वेकअन्यअभिमानी॥ तोरेंइधनुषव्याहअवगाहा॥ विनु  
तोरेंकोऊंवरिविवाहा॥ एकवारकालइकिनहोई॥ सिय  
हितसमरजीतवहमसोई॥ यहसुनिअपरभूपमुसकाने॥  
धर्मशीलदरिभक्तसुयाने॥ दोहा॥ सीयविवाहवरामगर्वह



रिन्दपनकर॥ जीतिकोशक संग्रामदशरथकेरणबंऊरे  
 चौपाई॥ वृषामरुजनिगालवजाई॥ मनमोदकनहिभू  
 खविताई॥ सीखहमारसुनुपरमपुनीता॥ जगदस्वजान  
 ऊजियसीता॥ जगतपितारुपतिदिविचारी॥ भरिलोच  
 नकुविलेऊनिहारी॥ सुन्दरसखदसकलगुणाराणी॥ प  
 दोउबंधुशम्भुउरवासी॥ सुधासमुद्रसमीपविहाई॥ मृग  
 जलनिरखिमरुऊकतथाई॥ करऊजाइजाकरजोइभावा  
 हमतोआज्जन्मफलपावा॥ असकहिभलेभूपअनुरागे  
 रूपअनूपविलोकनलागे॥ देखहिंसुरनभचढेविमाना  
 वरषहिंसमनकरहिकलगाना॥ दोहा॥ जानिसुअवसर  
 सीयतबपटवाजनकबुलाइ॥ चतरसखीसुन्दरिसकल  
 सादरचलीलिवाइ॥ ३०८॥ चौपाई॥ सियशोभानहिजाइव  
 खानी॥ जगदम्बिकारूपगुणखानी॥ उपमासकलमोदि  
 लबुलागी॥ प्राकृतनारिअऊअनुरागी॥ सीयवरणितेदि  
 उपमादेही॥ कोकविकरईअयसकोलेहीं॥ जौपटतरि  
 यतीयसनसीया॥ जगअसियुवतिकहांकमनीया॥ गिरा  
 सुखरतनअर्द्धभवानी॥ रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी॥  
 विषवारुणीबंधुप्रियजेही॥ कहियरमासमकिमिवैदेही  
 जोकविसुथापयोनिधिहोई॥ परमरूपमयकच्छपसोई॥

जोरी  
४



शोभा रज्जु मन्दर शृङ्गारु ॥ मयै पाणि पङ्कज निज मारु  
 दोहा ॥ एहि विधि उपजै लक्ष्मि जब सुन्दरता सुख मुख ॥ त  
 दपि सकोच समेत कविक हहिं सीय समतल ॥ ३०५ ॥ चौ  
 पाई ॥ चली सङ्ग लै सखी सयानी ॥ गावति गीत मनोहर बा  
 णी ॥ सोहन बलतनु सुन्दर सारी ॥ जगत जननि अतलि  
 त कवि भारी ॥ भूषण सकल सुदेश सुहाय ॥ अङ्ग अङ्ग  
 रचि सखिन वनाये ॥ रङ्ग भूमि जब सिय पगु थारी ॥ देखि  
 रूप मोहे नर नारी ॥ हर्षि सुर निडुन्द भीव जाई ॥ बर्षि प्रसू  
 न अय सरागाई ॥ पाणि सरोज सोह जय माला ॥ अवचट  
 चित पसकल भुवाला ॥ सीय चकित चित राम दिवाहा  
 भय मोह वशा सब नर नाहा ॥ मुनि समीप देखे दोउ भाई ॥ ल  
 गेल ल किलोचन निधि पाई ॥ दोहा ॥ गुरु जन लाज समा  
 जब डि देखि सीय सकुचानि ॥ लागि वि लोक न सखिन त  
 नर बुबीर हिं उर आनि ॥ ३१० ॥ चौ पाई ॥ राम रूप अरु सिय  
 क वि देखें ॥ नर नारिन परिहरी निमेषें ॥ शोच हिंसकल क  
 हत सकुचाहीं ॥ विधि मन विनय कर हिं मन माहीं ॥ हरु वि  
 धि वेगि जन कज उतार्ई ॥ मति हमारी अस देइ सुहाई ॥ वि  
 नुविचार पात जिनर नाह ॥ सीय राम कर करै विवाह ॥  
 जग भल कह हिं भाव सब काइ ॥ हट कीन्हें अनङ्ग उर दाइ ॥



यहलालसामगनसबलोगू॥ बरसांवरजानकीजोगू॥ त  
 बवन्दीजनजनकबुलाए॥ विरदाबलीकहतचलिआए॥  
 कहनृपजाइकहइपणामोरा॥ चलेभाटहियहर्षनथोरा  
 दोहा॥ बोलेबन्दीबचनवरसनइसकलमहिपाल॥ पणवि  
 देहकरकहहिंमभुजाउठाइविशाल॥ ३१॥ चौपाई॥ नृप  
 भुजबलविधुशिवधनुराहू॥ गरुअकटोरविदितसबकाहू  
 रावणबाणमहाभटभारे॥ देखिशरासनगवहिंसिधारे॥  
 सोइपुनारिकोटाउकठोरा॥ राजसमाजआजुजेहितोरा॥  
 त्रिभुवनजयसमेतवैदेही॥ विनहिंविचारबैरहटितेही॥ सु  
 निपणसकलभूषअभिलाषे॥ भटमानीअतिशयमनमाषे  
 परिकरबांधिउठेअऊलाई॥ चलेइष्टदेवनशिरनाई॥ तम  
 किताकितकिशिवधनुधरही॥ उठइनकोटिभांतिबलकर  
 ही॥ जिन्हकेककुविचारमनमाही॥ चापसमीपमहीपनजां  
 ही॥ दोहा॥ तमकिधरहिंयनुमूढनृपउठइनचलहिंचलाइ॥  
 मनइंपाइभटवाइबलअधिकअधिकगरुआइ॥ ३२॥ चौपा  
 ई॥ भूषसहसदशएकहिंवारा॥ लगेउठावनटरइनदारा॥  
 उगैनशम्भुशरासनकैसें॥ कामीवचनसतीमनजैसें॥ स  
 बनृपभपयोगउपहांसी॥ जैसेविठविरागसत्यासी॥ कीर



रामा०  
बा०  
२०

तिविजयवीरताभारी॥ चलेचापकरवरवसहारी॥ श्रीह  
तभपहारिहियराजा॥ बैठेनिजनिजजाइसमाजा॥ नृप  
निविलोकिजनकअकलाने॥ बोलेवचनरोषजनसने॥  
द्वीपद्वीपकेभूपतिनाना॥ आपसुनिहमजोपणावाना॥ देव  
दनुजधरिमनुजशरीरा॥ विप्रलवीरआपरणधीरा॥ दोहा  
कुंअरिमनोहरिविजयवडिकीरतिअतिकमनीय॥ पावन  
हारविरञ्चिजनुचेउनधनुदमनीय॥ ३३॥ चौपाई॥ कह  
इकाहियदलाभमनभावा॥ काइनशङ्करचापचढावा॥  
रहौचढाउबतोरवभाई॥ तिलभरिभूमिनशकेइकुडाई॥  
अवजनिकोउमाघेभटमानी॥ वीरविहीनमहीमैजानी॥ त  
जइआशानिजनिजगृहजाइ॥ लिखानविधिबैदेहिविवा  
इ॥ सुकृतजाइजोपणपरिहरकुं॥ कुंअरिकुंआरिरहोका  
करकुं॥ जोजानतविनुभटभुवभाई॥ तौपणकरिहोंतेउन  
हंसाई॥ जनकबचनसुनिसबनरनारी॥ देखिजानकीभप  
दुखारी॥ भाषालषणकुटिलमेंभोंहैं॥ रटपुटफरकतनय  
नरिसोंहैं॥ दोहा॥ कहिनशकयरघुवीरउरलगेवचनजनु  
बाण॥ नाइरामपदकमलशिरबोलेगिराप्रमाण॥ ३४॥  
चौपाई॥ रघुवंशिनमहंजहंकोउहोई॥ तेहिंसमाजअसकह



ईनकोई॥ कहीजनकजशअनुवितवाणी॥ विद्यमान  
 रचुऊलमणिजानी॥ सुनऊभाउऊलपङ्कजभानू॥ कहों  
 स्वभावनककुअभिमानू॥ जौतम्हारिअनुशासनपाऊं॥  
 कंदुकइवब्रह्माण्डउठाऊं॥ कांचेघटजिमिडारोंफोरी॥  
 सकौमेरुमूलकइवतोरी॥ तबप्रतापमहिमाभगवाना॥ को  
 वापुरोपिनाकपुराणा॥ नाथजानिअसआयसहोऊ॥ को  
 तककरोंविलोकियसोऊ॥ कमलनालजिमिचापचढा  
 वों॥ शतयोजनप्रमाणलैपावों॥ दोहा॥ तौरोंकुत्रकटेउ  
 जिमितबप्रतापबलनाथ॥ जौनकरोंप्रभुपदशपथपु  
 निनथरोंथनुहाय॥ ३५॥ चौपाई॥ लषणसकोपवचनज  
 बबोले॥ उगमगानिमहिदिग्गजडोले॥ सकललोक  
 सबभूषेराणे॥ सियहियदर्षजनकसऊचाने॥ गुरुरचु  
 पतिसबमुनिमनमांदी॥ सुदितभएपुनिपुनिपुलकाही  
 सैनहिंरचुपतिलषणनिकारे॥ प्रेमसमेतनिकटवैठारे॥  
 विष्णामित्रसमयपुभजानी॥ बोलेअतिसनेहमयवाणी॥  
 उठऊरामभञ्जऊभवचाए॥ मेंटऊतातजनकपरिताए॥  
 सुनिगुरुवचनचरणशिरनावा॥ हर्षविषादनककुउरआ  
 वा॥ दाढभएउठिसहजसुभाए॥ ठवनिपुवासृगराजलजाए॥



रामा०  
बा०  
२१

दोहा॥ उदित उदय गिरि मञ्च पर रघुवर बाल पतङ्ग॥  
विकसे सनत सरोज बदन हर्षे लोचन भृङ्ग॥ ३१६॥ चौपाई॥  
नृपन के रिआणा निशि नाशी॥ वचन न घत अवलीन प्र  
काशी॥ मानी मदि पञ्च मुद सऊचाने॥ कपटी भूप उलूक  
लुकाने॥ भय विशोक को कमुनि देवा॥ वर्ष हिंसु मन जा  
नावहिं सेवा॥ गुरु पद वन्दि सहित अतुरागा॥ राम मुनि  
नृसन आस समांगा॥ सहज हिंचले सकल जग स्वामी॥ म  
त्र मंजु ऊज्जर वरगामी॥ चलत राम सब पुरनर नारी॥ पु  
लक पूरित न भय सखारी॥ बन्दि पितर सर सकृत सम्हारे  
जोक कुपुण प्रभाव हमारे॥ तौ शिव धनु मृणाल की नाई  
तोर हिं राम गणेश गुसांई॥ दोहा॥ राम हिं प्रेम समेत ल  
खि सखिन समीप बुलाइ॥ सीता मात सनेह बश वचन क  
हे विलखाइ॥ ३१७॥ चौपाई॥ सखि सब कौतुक देखन हारे  
जो उकहावत हित हमारे॥ कोउन बुजाइ कह नृप पाही॥  
पवाल कअ सहठ भल नाही॥ रावण बाण कुआन हिचापा  
हारे सकल भूप करि दापा॥ सोय तुराज ऊं अर कर देही॥  
बाल मराल कि मन्दर लेही॥ भूप सयान पसकल सिरानी  
सखि विधि गतिक कुजाति न जानी॥ बोली चतर सखी मृदु



बाणी॥ तेजबललघुगणियनराणी॥ कहंऊम्भजक  
 हंसिंधुअपारा॥ शोषेउस्यशसकलसंसार॥ रविमंड  
 लदेखतलघुलागा॥ उदयतासत्रिभुवनतमभागा॥ दोहा  
 मंत्रपरमलघुजासुवशविधिहरिहरसरसर्व॥ महामत्र  
 गजराजकहंवशकरअऊशखर्व॥ ३१०॥ चौपाई॥ कामऊ  
 सुमथनुसायकलीन्हें॥ सकलभुवनअपनेवशकीन्हें  
 देवितजियसंशयअसजानी॥ भजुवधनुषरामसुनुरानी  
 सखीवचनसुनिभइपरतीती॥ विटाविषादबडीअतिप्री  
 ती॥ तवरामहिंविलोकिवैदेही॥ सभयहृदयविनवतिजेहिं  
 तेही॥ मनहीमनमनायअऊलानी॥ होऊप्रसन्नमहेश  
 भवानी॥ करऊसुफलआपनिसेवकाई॥ करिहितहरऊ  
 चापगरुआई॥ गणनायकवरदायकदेवा॥ आजलगेकी  
 न्हीतबसेवा॥ बारबारविनतीसुनिमोरी॥ करऊचापगुरु  
 ताअतिथोरी॥ दोहा॥ देखिदेखिरचुबीरतनुसरमनावध  
 रिधीर॥ भरेविलोचनप्रेमजलपुलकावलीशरीर॥ ३११॥  
 चौपाई॥ नीकेनिरखिनयनभरिशोभा॥ पितपणसुमिरि  
 बऊरिमनतोभा॥ अहहतातदारुणादठठानी॥ समुऊत  
 नहिककुलाभनहानी॥ सचिवसभयसिखदेइनकोई॥



रामा०  
बी०  
५२

92

बुधसमाजबद्धअनुचितहोई॥ कहंयनुऊलिशऊचादि  
कठोरा॥ कहंण्यामलमृदुगातकिशोरा॥ विधिकेहिभां  
तिथरौंउरथीरा॥ शिरिषसुमनकिमिवेयिहिंदीरा॥ स  
कलसभाकीमतिभउभोरी॥ अबमोदिशाम्मुचापगति  
तोरी॥ निजजउतालोगनपरडारी॥ होऊहुरुअरचुपति।  
हिंनिहारी॥ अतिपरितापसीयमनमांदी॥ लवनिमेष  
युगसमचलिजाही॥ दोहा॥ प्रभुहिंचितैपुनिचितवम  
दिराजतलोचनलोल॥ खेलतमनसिजमीनयुगजनु  
विधुमणउलडोल॥ ३२०॥ चौपाई॥ गिराअलिनिमुखपङ्क  
जरोकी॥ मगटनलाजनिशाअबलोकी॥ लोचनजलरु  
हलोचनकोणा॥ जैसैंपरमकृपणकरसोना॥ सऊची।  
व्याकुलताबडिजानी॥ परिधीरजप्रतीतिउरआनी॥ तनु  
मनबचनमोरपणसांचा॥ रचुपतिपदसरोजमनराचा॥  
तौभगवानसकलउरवासी॥ करिहहिंमोहिरचुपतिकी  
दासी॥ जेहिकेजेहिंपरसत्यसनेह॥ सोतेहिंमिलदिनक  
कुसन्देह॥ प्रभुतनचितैप्रेमपणठाना॥ कृपानिधानरा  
मसबजाना॥ सियहिंविलोकितकेउपनुकैसैं॥ चितवग  
रुलबुब्यालहिंजैसैं॥ दोहा॥ लषणालखेउरबुवंशमणि



ताकेउहरकोटा॥पुलकिगातबोलेवचनचरणचो  
 पिब्रह्मण॥३२॥**चौपाई॥**दिशिऊझरऊकमठअहिको  
 ला॥थरऊथरणिथरिथीरनडोला॥रामचरुहिंशङ्कर  
 धनुतोरा॥होऊसजगसुनिआयसुमोरा॥चापसमीप  
 रामजबआए॥नरनारिन्दसरसुकृतमनाए॥सबक  
 रसंशयअरुअज्ञानू॥मन्दमहीपनकरअभिमानू॥भृ  
 गुपतिकेरिगर्वगरुआई॥सुरमुनिबरनकेरिकदराई  
 सियकरशोचजनकपछितावा॥रानिनकरदारुणाडः  
 खिदावा॥शम्भुचापवउबोदितपाई॥चढेजाईसबसङ्ग  
 बनाई॥रामबाऊबलसिन्धुअपारा॥चहतपारनहिको  
 उकठहारा॥**दोहा॥**रामविलोकेलोगसबचित्रलिखेसे  
 देखि॥चितईसीयकृपायतनजानीविकलविशोखि॥३  
**चौपाई॥**देखीविपुलविकलबैदेही॥निमिषविहातक  
 ल्यसमतेही॥तथितवारिविनुजोंतनत्यागा॥मुपेकरै  
 कासुधातडागा॥कावर्षजबकृषीसुखाने॥समयचू  
 कपुनिकापछिताने॥असजियजानिजानकीदेखी॥  
 प्रभुपुलकेलखिप्रीतिविशोखी॥गुरुहिंप्रणाममनहिं  
 मनकीन्हा॥अतिलाववउदारथलीन्हा॥दमकेउदा

२२



रामा०  
वा०  
५३

५३

मिनिजिमिबनलयऊ॥ पुनिथनुनभमणलसमभयऊ  
लेतचठावतवैचतगाढे॥ काऊनलखादेखसबढाढे।  
तेहिंदीणमथ्यरामथनुतोरा॥ भरेउभुवनध्वनिघोरक  
ढोरा॥ **छन्दः॥** भरिभुवनघोरकढोंरवरविवाजितजि  
मारगचले॥ चिक्करहिंदिगगजडोलमहिअहिकोल  
कूरमकलमले॥ ६॥ सरअसरमुनिकरकानदीन्हेंस  
कलविकलविचारही॥ कोदणउखाएउरामतलसी  
जयतिवचनउचारही॥ ६॥ **सोरठा॥** शङ्करचापजहा  
जसागररघुवरबाहुबल॥ बूडेउसकलसमाजचढेजे  
प्रथमहिंमोहवशा॥ १२३॥ **चौपाई॥** प्रभुदोउखाएचाप  
महिउारे॥ देखिलोगसबभणसुखारे॥ कौशिकरूपप  
योनिथिपावन॥ प्रेमवारिअवगाहसहावन॥ रामरू  
पराकेशनिहारी॥ बउतवीचिपुलकाबलिभारी॥ वाजे  
नभगहगहेनिसाना॥ देवबधूनाचहिंकरिगाना॥ ब्रह्मा  
दिकसरसिद्धमुनीशा॥ प्रभुहिंप्रणंसहिंदेहिंअशीषा  
वर्षहिंसमनरऊबहुमाला॥ गावहिंकिन्नरगीतरसा  
ला॥ रहीभुवनभरिजयजयबाणी॥ यनुषभङ्गध्वनिजा  
तनजानी॥ मुदितकहहिंजहंतहंनरनारी॥ भंजेउराम०



शम्भुयनुभारी ॥ दोहा ॥ बन्दीमागयसूतगणविरदब  
 दहिंमतिथीर ॥ करहिंनिक्कावरिलोगसबहयगजयन  
 मणिचीर ॥ २२५ ॥ चौपाई ॥ जंजिमृदङ्गशङ्खसहनाई ॥  
 मेरीछोलदुनुभीबजाई ॥ बाजहिंबज्जबाजनेसुहाए ॥  
 जहेतहेयुवतिनमङ्गलगाए ॥ सखिनसहितहर्षितअ  
 निराणी ॥ सुखतथानपराजनुपानी ॥ जनकलहेउस  
 खशोचविहाई ॥ पैरतथकेषाहजनुपाई ॥ श्रीहतभय  
 भूपयनुट्टैं ॥ जैमेंदिवसदीपकूविकूटैं ॥ सियदियसु  
 खवरणियकेहिभांती ॥ जनुचातकपाउजलखांती ॥  
 रामहिलषणविलोकतकैमें ॥ शशिहिंचकोरकिशोर  
 कजैमें ॥ शतानन्दतवआयसुदीन्हा ॥ सीतागमनसमीप  
 हिंकीन्हा ॥ दोहा ॥ सङ्गसखीसुन्दरिचतरिगावहिंमङ्ग  
 लचार ॥ गवनीबालमरालगति सुखमाअङ्गअपार ॥ २२६ ॥  
 चौपाई ॥ सखिनमध्यसियसोहतिकैसी ॥ कूविगणा  
 मध्यमहाकूविजैसी ॥ करसरोजजयमालसुहाई ॥  
 विष्वविजयशोभाजिहिंकाई ॥ तनुसेकोचमनपरमउका  
 ड ॥ मूछप्रेमलखिपरैनकाड ॥ जाइसमीपरामकूविदे  
 षी ॥ रहिजनुकंअरिचित्रअवरेषी ॥ चतरसखीलखिक

गुराकरी  
 ५

२५॥



रामा०

बा०

२५

१५

हावुजाई॥ पहिरावज्जयमालसुहाई॥ सुनतयुगल  
करमालउठाई॥ प्रेमविवसपहिराइनजाई॥ सोहतम  
नुयुगजलजसनाला॥ शशिहिंसभीतदेतजयमाला॥  
गावहिंक्कविश्रवलोकिसहेली॥ सियजयमालरामउर  
मेली॥ दोहा॥ रघुवरउरजयमालदेखिदेववरषहिंस  
मन॥ सकुचेसकलभुआलजनुविलोकिरविऊमुदग  
गा॥ ३२६॥ चौपाई॥ पुरअरुव्योमवाजनेवाजे॥ खलभये  
मलिनसाधुसबराजे॥ सरकिनरनरनागमुनीषा॥  
जयजयजयकहिदेहिंअशीषा॥ नाचहिंगावहिंविबुध  
वधूटी॥ बारबारऊसमानबलिकूटी॥ जहंतहंविप्रवेद  
धनिकरही॥ बन्दीविरदाबलिउचरही॥ महिपाताल  
नाकयशाव्यापा॥ रामबरीसियभंजेउचापा॥ करहिंआ  
रतीपुरनरनारी॥ देहिंनिक्कावरिवितविसारी॥ सोहत  
सीयरामकीजोरी॥ क्विशृङ्गारमनऊंएकढोरी॥ सखी  
कहहिंप्रभुपदगङ्गसीता॥ करतिनचरणपरसअतिभी  
ता॥ दोहा॥ गौतमतीयगतिस्वरनिकरिनरिपरसनिपद  
पाणि॥ मनविहंसेरघुवंशमणिप्रीतिअलौकिकजानि  
३२७॥ चौपाई॥ तबसियदेखिभूपअभिलाषे॥ कूरकपूत



मूढमनमाषे॥ उठिउठिपहरिसनाहअभागे॥ जहंतहंगा  
 लवजावनलागे॥ लेऊकुडाइसीयकरहकोऊ॥ थरिवांथऊनप  
 बालकदोऊ॥ तोरेंथनुषचाउनदिसराई॥ जीवतहमहिऊंअ  
 रिकोवरई॥ जौबिदेहककुकरैंसहाई॥ जीतऊसमरसहितदो  
 उभाई॥ साधुभूपबोलेसुनिवाणी॥ राजसमाजहिंलाजलजा  
 नी॥ बलप्रतापवीरताबडाई॥ नाकपिनाकहिंसङ्गसिथाई॥  
 सोइशूरताकिअवकडपाई॥ असबुधितोविधिमुहमसिलाई॥  
 दोहा॥ देखऊरामहिंनयनभरितजिईर्षामदमोऊ॥ लषण  
 रोषणावकप्रवलजानिशलभजनिहोऊ॥ ३२८॥ चौपाई॥ वै  
 नतेयबलिजिमिचहकायू॥ जिमिशशचहहिंनागअरिभा  
 यू॥ जिमिचहऊशलअकारणकोही॥ सर्वसम्मदाचहहिं  
 शिवद्रोही॥ लोभीलोलुप॥ कीरतिचहई॥ अकलङ्कताकि  
 कामीलहई॥ हरिपदविमुखपरमगतिचाहा॥ तसतम्हार  
 लालचनरनाहा॥ कोलाहलसुनिसीयशकानी॥ सखील  
 वाइगईजहंराणी॥ रामसुभायचलेगुरुणाही॥ सियसनेह  
 वरणतमनमाही॥ रानिनसहितशोचवशसीया॥ अवधौ  
 विधिहिंकहाकरणीया॥ हयलचनहमिअउतकरही॥  
 लखिसहितशोचवशसीया॥ अवधौविधिहिंकहाकरणीया॥



रामा०  
सा०  
५५

१५

॥ भूपवचनसुनिश्चतउतकहंदी ॥ ललणारामउरवो लि  
नशकंदी ॥ दोहा ॥ अरुणनयनभृकुटीकुटिलचितवतनृप  
नसकोप ॥ मनइमतगजगणनिरविमिंहकिशोरहिंचोप  
३२५ ॥ चौपाई ॥ खरभरदेविविकलपुरनारी ॥ सबमिलिदेहिं  
महीपनगारी ॥ तेहिअबसरसुनिशिवधनुभङ्गा ॥ आपउभृ  
गुकुलकमलपतङ्गा ॥ देविमहीपसकलसऊचाने ॥ बा  
जऊपटजनुलवालुकाने ॥ गौरशरीरभूतिभलिभ्राजा ॥ भा  
लविशालविप्राडुविराजा ॥ श्रीशजटाशशिवदनसुहावा  
रिसिवशककुअरुणहोइआवा ॥ भृकुटीकुटिलनयनरि  
सिराते ॥ सहजहिंचितवतमनइंसिराते ॥ वृषभकन्धउरवा  
इविशाला ॥ चारुजनेउमालमृगकाला ॥ कटिमुनिवसन  
तण्डुइबांधे ॥ धनुशरकरकुठारकलकांधे ॥ दोहा ॥ शान्त  
वेषकरणीकठिनवरणिनजाइसरूप ॥ धरिमुनितनुज  
नुवीररसआपउजहंसवभूष ॥ ३२५ ॥ चौपाई ॥ देवतभृग  
पतिवेषकराला ॥ उठेसकलभयविकलभुआला ॥ पितास  
मेतकदिकदिनिजनामा ॥ लगेकराणसबदण्डप्रणामा  
जेहिंसभावचितवहिंदितजानी ॥ सोजानैजनुआपुखु  
दानी ॥ जनकबहोरियाइशिरनावा ॥ सीयबुलाइप्रणाम



करावा ॥ आशिष दीन्ह साखीहरषानी ॥ निज समाज लैग  
 ३ सयानी ॥ विष्णामित्र मिले पुनि आई ॥ पद सरोज मेले दोउ  
 भाई ॥ राम लषण दशरथ के छोटा ॥ दीन्ह अशीष जानि भ  
 ल जोटा ॥ राम हिंचित यर देय किलोचन ॥ रूप अपार मा  
 रमद मोचन ॥ दोहा ॥ बऊरि विलोकि विदेह सन कह झक  
 हा अति भीर ॥ पूछत जान अजान जिमि व्यापे उको पशरी  
 र ॥ ३३२ ॥ चौपाई ॥ समाचार कहि जनक सुनाए ॥ जे हिंकार ए  
 मही पसब आए ॥ सनत वचन फिरि अनत निहारे ॥ देखे चा  
 प खणिउ महि अरे ॥ अतिरि सबो लेवचन कटोरा ॥ कऊंज उ  
 जन कथनुष के हितोरा ॥ वेगि देखे उमूछन त आजू ॥ उल  
 दों मही जहं ल गित बराजू ॥ अति उर उतर देत नृप नाहीं ॥  
 कुटिल भूपहरषे मन माहीं ॥ सर मुनि नाग नगर नर नारी  
 सोच हिंसक लज सउर भारी ॥ मन पक्किता तिसीय महतारी  
 विधि सवारि सब बात विगारी ॥ भृगु पतिकर सुभाव सुनि  
 सीता ॥ अर्ध निमेष कल्प सम बीता ॥ दोहा ॥ सभय विलोके  
 लोग सब जानि जान की भीरु ॥ हृदय न दर्ष विषाद ककुबो  
 ले श्रीरचु वीरु ॥ ३३२ ॥ चौपाई ॥ नाथ शम्भु यनु भजनि हारा ॥  
 होइ हिंको उएक दास तम्हारा ॥ आय सकहा कहिय किन



रामा०  
वा०  
२६

१६

मोही॥ सुनिरिमायबोलेमुनिकोही॥ सेवकसोजोकैसेव  
काई॥ अरि करणी करि करियलराई॥ सुनइरामजेहिंशिव  
थनुतोरा॥ सहसबाहुसमसोरिपुमोरा॥ सोविलगाउविहाउ  
समाजा॥ नतमारेजैहैंसबरजा॥ सुनिमुनिवचनलषणसु  
सुकाने॥ बोलेपरशुथरहिंअपमाने॥ बहुथनुहीतोरेंलरि  
काई॥ कबहुंनअसरिसिकीन्हगोसाई॥ इदिथनुपरममता  
केहिंदेत॥ सुनिरिमायकहंभृगुऊलकेत॥ दोहा॥ रेनुप  
बालककालवशबोलततोहिनसम्भार॥ थनुहीसमविपु  
रारिथनुविदितसकलसंसार॥ ३३३॥ चौपाई॥ लषणकहा  
हंसिहमरेजाना॥ सुनइदेवसबथनुषसमाना॥ कातति  
लाभजीर्णथनुतोरे॥ देखारामनयनकेकोरे॥ कुवतदूटरा  
घुपतिदिनदोष॥ मुनिविनुकाजकरियकतरोष॥ बोले  
चितरपरशुकीओरा॥ रेशठसुनेसिसुभाउनमोरा॥ बाल  
कबोलिवथौंनहितोही॥ केवलमुनिजउजानेसिमोही॥ बा  
लब्रह्मचारीअतिकोही॥ विप्रविदिततत्रीऊलद्रोही॥ भुज  
बलभूमिभूपविनुकीही॥ विपुलबारमहिदेवनदीही॥ स  
हसबाहुभुजकेदनहारा॥ परशुविलोकमहीपऊमारा॥ दो  
हा॥ मातपितहिंजनिशोचवशकरसिमहीपकिशोर॥ ग



भन के अर्भक दलन पर शमोर अति वोर ॥ ३३४ ॥ चौपाई ॥  
 विहंसिल लषण बोले मृदु बाणी ॥ अहो मुनीश महा भटमानी  
 पुनि पुनि मोहि देखा वज्र ठारा ॥ चहत उडावन फूंकिय हारा  
 उहां को हंडु वतिया को उनाही ॥ जेत र्जनी देखत गरिजां ही ॥  
 देखि ऊठार शरासन बाणा ॥ मै ककु कहसहित अभिमाना  
 भृगु ऊल समुजिजने उविलोकी ॥ जो ककु कहइ सही रिसरो  
 की ॥ सरमहि सरहरि जन अरु गाई ॥ हमरे ऊल उन्द परन  
 अराई ॥ बथे पाप अपकी रति हारे ॥ मारत इं पां परिय तमारे  
 कोटि ऊलिश समवचन तमारा ॥ व्यर्थ थरइ थनु बाणा ऊठा  
 रा ॥ दोहा ॥ जे विलोकि अनुचित कहै उतम इमहा मुनि थी  
 र ॥ सुनिसरोष भृगु वंश मणि बोले गिराग म्मीर ॥ ३३५ ॥ चौ  
 पाई ॥ कौशिक सुनइ मन्द्यह बालक ॥ ऊटिल काल वशनि  
 ज ऊल बालक ॥ भातु वंशरा केश कलंक ॥ निपट निरंकश  
 अबुध अशंक ॥ काल कवल होइ हिंदाण माही ॥ कहों प्रकारि  
 खोरि मोहि नाही ॥ तम हटकइ जो चहइ उवारा ॥ कहि प्रता  
 प बल रोष हमारा ॥ लषण कहै उमुनि सयशत म्मारा ॥ त  
 महि अकृत को बरणो पारा ॥ अपने मुख तम आपनिकरणी  
 वार अनेक भांति बइ बरणी ॥ नहि सलोष तो पुनिककु कहइ



रामा०  
दा०  
२७

67

जनिरिसरो किडुसहडुखसहडु॥ वीरदृष्टितमधीरश्रुतो  
भा॥ गरीदेतनपावडुशोभा॥ दोहा॥ शूरसमरकरणीकर  
हिंकहिनजनावहिंआपु॥ विद्यमानराणापरिपुकायर  
कथहिंप्रलापु॥ ३३६॥ चौपाई॥ तमतौकालहांकिजनु  
लावा॥ बारबारमोहिलागिबुलावा॥ सुनतलषणाकेवच  
नकठोरा॥ परशुसुधारिधरेउकरबोरा॥ अबजनिदेइदोष  
मोहिलोगू॥ कंडुवादीबालकवथयोगू॥ बालविलोकिब  
डतमेंवांचा॥ अबयहमराणाहारभासांचा॥ कौशिककहा  
लमियअपराधू॥ बालदोषगुणागणाहिंनसाधू॥ करऊठ  
रमेंअकारणाकोही॥ आगैअपराधीगुरुद्रोही॥ उत्तरदेत  
काडोंविनुमारे॥ केवलकौशिकशीलतम्हारें॥ नतपदि  
काटिऊठारकबोरे॥ गुरुहिउरिणाहोतेउअमथोरे॥ दोहा  
गाथिसुअनकहहृदयहंसिमुनिहिंदरेहरेसूज॥ अजगव  
खण्डेउऊखजिमिअजऊनबूजअबूज॥ ३३७॥ चौपाई॥ कहे  
उलषणामुनिशीलतम्हारा॥ कोनहिंजानविदितसंसार  
मातहिपितहिउरिणाभपनीके॥ गुरुअणारहाशोचबउ  
जीके॥ सोजनुहमरेहिंमायेकाछा॥ दिनचलिगएव्याज  
बडबाछा॥ अबआनियव्यवहरिहाबोली॥ तरतदेवमेंथे



लीखोली॥ सुनिकटुवचनऊठारसुधारा॥ हाहाकहि  
 सबलोगपुकारा॥ भृगुवरपरशुदेखाबझमोही॥ विप्रवि  
 चारिवंचौंनृपद्रोही॥ मिलेनकबझंसुभटरागाछे॥ दि  
 जदेवतावरदिकेवाछे॥ अनुचितकहिसबलोगपुकारे  
 रघुपतिसयनहिलषणनिवारे॥ दोहा॥ लषणाउतरआऊ  
 तिसरिसभृगुपतिकोपकृशानु॥ बछतदेखिजलसमव  
 चनबोलेरघुकुलभानु॥ ३३८॥ चापाई॥ नाथकरडबालक  
 परकोऊ॥ सुदृढमुखरियनकोऊ॥ जौपेंप्रभुप्रभावक  
 कुजाना॥ तौकिबरावरकरतअयाना॥ जौलरिकाककु  
 अनुचितकरहीं॥ गुरुपितमातमोदमनभरंही॥ करिय  
 कृपाशिषुसेवकजानी॥ तमसमशीलधीरमुनिजानी  
 रामवचनसुनिककुजुडाने॥ कहिककुलषणाबझरि  
 मुसकाने॥ हंसतदेखिनखशिखरिसिवापी॥ रामतोरभा  
 तावउपापी॥ गौरशरीरश्याममनमाही॥ कालकूटमुख  
 पयमुखनाही॥ सहजदेखअनुहरैनतोही॥ नीचमीचुस  
 मदखैनमोही॥ दोहा॥ लषणाकहेउहंसिसनऊमुनि  
 कोपपापकरमूल॥ जेदिवशजनअनुचितकरहिंचरहि  
 विश्वप्रतिकूल॥ ३३९॥ चौपाई॥ मेंतम्हारअनुचरमुनिरा



रामा०  
वा०  
५८

१४

पुत्र  
मान

या॥ परिहरिकोप करिय अवदाया॥ दूटचापनहिंजरा  
हिंरिमाने॥ वैदियदोइहिं पाय पिराने॥ जो अति प्रिय तो  
करिय उपाई॥ जो रिय को उबडगुणी बुलाई॥ बोले तलष  
राहिं जन कडे राही॥ मष्ट करइ अनुचित भलनाही॥ य  
रथरकां पहिं पुरनरनारी॥ कोट कुमार खोट अति भारी॥  
भृगुपति सुनि सुनि निर्भय बाणी॥ रिसतनु जरे होइ बल  
हानी॥ बोले राम हिं देइ निहोरा॥ बचो विचारि बंधु लचु  
तोरा॥ मनमलीन तनु सुन्दर कै सें॥ विषरस भरा कन  
कवट जै सें॥ दोहा॥ सुनिल त्मणा विहं से बड्जरिन यन तरे  
रे राम॥ गुरु समीप गवने सकुचि परिहरिवाणी वाम॥  
३४०॥ चौपाई॥ अति विनीत मृदुशीतलवाणी॥ बोले राम  
जोरियुग पाणी॥ सनइ नाथ तम सहज सजाना॥ बाल  
कवचन करिय नहिकाना॥ बरै बालक एक सुभाऊ॥  
इनहिं न सन विदूषहिं काऊ॥ तिन्हनाही ककुकाज विगा  
रा॥ अपराधी मैं नाथ तमदारा॥ कृपा को पबध बंध गोसाईं  
मोपर करिय दास किनाई॥ कहिय वेगि जेहिं विधिरिस  
जाई॥ सुनि नायक सोइ करिय उपाई॥ कह मुनि राम जाइ  
रिस कै सें॥ अजइ अनुजत बचित बगने सें॥ पहिके काण



ऊठारनदीन्हा ॥ तामें कहा को पकरि कीन्हा ॥ दोहा ॥  
 गर्भसवहिं अवनि परमणि सुनि ऊठार गति घोर ॥ पर  
 अश्रुत देखों जियत बैरी भूप किशोर ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥  
 वहन हाण दही रिस काती ॥ भाऊ ठार ऊठार तन पचाती  
 भयउ वाम विधि फिरे उ सभाऊ ॥ मोरे हृदय कृपा कसका  
 ऊ ॥ आजु दया दुख दुसह सहावा ॥ सुनि सों मित्रि विहं  
 सिशिर नावा ॥ नाथ कृपा मूरति अत कूला ॥ बोलत बच  
 न करत जनु फूला ॥ जौ अस कृपा जरें मुनि गाता ॥ क्रो  
 थ भयत न राख विधाता ॥ देखु जन कह ठिवाल कपड  
 कीन्ह चहत जउ यम पुर गड ॥ वेगि करड किन आंखि  
 न ओटा ॥ देखत छोट खोट नृप जोटा ॥ विहं से लषण क  
 हा मुनि पाही ॥ मुंदिय आंखि कत डको उनाही ॥ दोहा  
 परशुराम तब राम प्रति बोले वचन सक्रोथ ॥ शंभु रा  
 राम न तो रिशठ कर सिह मार प्रबोथ ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥  
 बन्धु कहै कटु समत तोरे ॥ तं कुल विनय कर सि कर  
 जोरे ॥ करु परितोष मोर संग्रामा ॥ नाहित कांडुक हा  
 उव रामा ॥ कुल तजि करड समर शिव द्रोही ॥ बन्धु स  
 हित न त मारों तोही ॥ भृगु पतिक रहिं कुठार उठाए ॥



रामा०  
बा०  
२५

११

मनमुसकाहिरामशिरनापें॥ गुणझलषणकरहम  
पररोष॥ कतजेसुधाइजतेंवउदोष॥ देछजानिशाङ्कास  
बकाइ॥ वक्रचन्द्रमहिग्रसैनराइ॥ रामकहेउरिसित।  
जियमुनीणा॥ करऊठारआगेंयहशीणा॥ जेहिरिसि।  
जाइकरियसोइस्वामी॥ मोहिजानिआपनअनुगामी॥ दो  
हा॥ प्रभुसेवकहिंसमरकसतजइविप्रवररोष॥ वेषवि  
लोकिकहेसिककुबालकइनहिदोष॥ ३५३॥ चौपाई॥  
देखिऊठारबाणायनुथारी॥ भइलरिकहिरिसिवीरविचा  
री॥ नामजानपैंतमदिनचीन्हा॥ वंशसुभावउत्तरतेहिं  
दीन्हा॥ जौतमअवतेइमुनिकीनाई॥ पटरजशिरशिअ  
धरतगोसांई॥ तमइचूकअनजानतकेरी॥ चहियविप्र  
उरकृपाघनेरी॥ हमहिंतमहिंसरवरिकसनाथा॥ क  
हइतोकहांचरणकहंमाथा॥ राममात्रलघुनामहमा  
रा॥ परप्रसहितवउनामतम्हारा॥ देवएकगुणयनुष  
हमारे॥ नवगुणपरमपुनीततम्हारे॥ सबप्रकारहमत  
मसनहारे॥ तमइविप्रअपराधहमारे॥ दोहा॥ बार  
बारमुनिविप्रवरकहारासनराम॥ बोलेभृगुपतिसरु  
षहोइतइबन्धुसमवाम॥ ३५४॥ चौपाई॥ निपटहिंदिज



करि जान सिं मोही ॥ मैं जश विप्र सुनाऊं तोही ॥ चाप सु  
 वाशर आइति जानू ॥ कोप मोर अति चोर कृषानू ॥ समि  
 थ सेन चतरग सुहाई ॥ महामही पभये पशु आई ॥ मैं प  
 रि परशु काटि बलि दीन्हा ॥ समर यत्त जग को दिन कीन्हा  
 मोर प्रभाव विदित नहि तोरे ॥ बोल सिनि दरि विप्र के भारे  
 भञ्जे उचाप दाप बड बाजा ॥ अहमिति मन झंजीति जगटा  
 जा ॥ राम कहामुनिक रहइ विचारी ॥ रिमि अति बडिल चु  
 च कह मारी ॥ कुंवत हिंदू टपि नाक पुराणा ॥ मैं केहि दे  
 त क रौं अभिमाना ॥ दोहा ॥ जोहम निंदर हिं विप्र वर सत्य  
 सुनइ भृगु नाथ ॥ तौ अस को जग सुभट जिहिं भयवश  
 नावहिं माथ ॥ ३४५ ॥ चौपाई ॥ देवदनुज भूपति भटनाना  
 समबल अधिक होउ बलवाना ॥ जोरणाहम हिं प्रचारहिं  
 कोऊ ॥ लरहिं सुकेन काल किन होऊ ॥ द्रवियतनु थरिस  
 मरसकाना ॥ ऊलकल झूते हिपां मर जाना ॥ कहौं स्व  
 भावन ऊलहिं प्रशंसी ॥ काल झउरहिं नरणारवुवंशी  
 विप्रवंश की अस प्रभुताई ॥ अभय होर जोतम हिंडे राई  
 सुनिष्ट डगू वचनरनुपतिके ॥ उवरे पटल परशु थर  
 मतिके ॥ रामरमा पतिकर थनु लेइ ॥ खैंचइ मोर मिटै म



रामा०  
दा०  
१००

नेत्र॥ देतचापआपुहिंचिगण्ऊ॥ परशुराममनवि  
स्मयभण्ऊ॥ दोहा॥ जानारामप्रभावतवपुलकप्रफुलि  
तगात॥ जोरिपाणिबोलेवचनरुदयनप्रेमअमात॥ ३४  
चौपाय॥ जयरवुवंशकमलवनभानू॥ गहनदनुजकुल  
दहनकृपानू॥ जयसुरविप्रयेनुहितकारी॥ जयमदमो  
हकोहभूमहारी॥ विनयशीलकरुणागुणासागर॥ जय  
तिवचनरचनाअतिआगर॥ सेवकसखदसभगसबअ  
झी॥ जयशरीरकुविकोटिअनझी॥ करौंकहामुखएक  
प्रशंसा॥ जयमहेशमनमानसहंसा॥ अनुचितवडत  
कहेउअज्ञाता॥ तमझलमामन्दिरदोउआता॥ कहिज  
यजयजयरवुकुलकेतू॥ भृगुपतिगएवनहिंतयहेतू॥  
अपभयऊटिलमहीपडेगने॥ जहंतहंकायरगवहिंपराने  
दोहा॥ देवनदीन्दीडुनुभीप्रभुपरवरषहिंफूल॥ हरषे  
परनरनारिसवमिठामोहमयपूल॥ ३५॥ चौपाई॥ अ  
अतिगहगहेबाजनेबाजे॥ सबहिंमनोहरमङ्गलसाजे  
एयएयमिलिसुखसुखिसुनयनी॥ करहिंगानकल  
कोकिलवयनी॥ सुखविदेहकरवरणिजजाई॥ जन्म  
दरिद्रमनङ्गनिधिपाई॥ विगतत्रासभइसीयसखारी॥



जनुविधुउदयचकोरऊमारी॥जनककीन्हकोशिकहिं  
प्रणामा॥प्रभुप्रसादयनुभजेउरामा॥मोहिकृतकृत्यकीन्ह  
दुजेभाई॥अबजोउचितसोकहियगोसांई॥कहमुनिसनु  
नरनाथप्रवीणा॥रहाविवाहचापआधीना॥दूटतहीयनु  
भएउविवाइ॥सरनरनागविदितसबकाइ॥दोहा॥तद  
पिजारतमकरऊअवयथावंशव्यवहार॥बूझिविप्रकुल  
बृहगुरुवेदविदितआचार॥३४८॥चौपाई॥दूतअवयपुरप  
ठवऊजाई॥आनहिंनृपदशरणहिंबुलाई॥मुदितराउकहि  
भलेहिंकुपाला॥पठपदूतबोलितेहिंकाला॥बऊरिमहाज  
नसकलबुलाए॥आइसबहिंसादरशिरनाए॥हाटबाटम  
न्दिरसुरवासा॥नगरसंवारऊचारिऊपासा॥हरषिचलेनि  
जनिजगृहआए॥पुनिपरिचारकबोलिपठाए॥रचऊवि  
चित्रवितानबनाई॥शिरथरिवचनचलेसंचुपाई॥पठपबो  
लिगुणीतिन्हनाना॥जेवितानविधिऊफलसजाना॥विधि  
हिंवन्दितिन्हकीन्हअरमा॥विरचेकनककदलीकेखमा  
दोहा॥हरितमणिनकोपत्रफलपग्रामकेफूल॥रचना  
देखिविचित्रअतिमनुविरञ्चिकभूल॥३४९॥चौपाई॥बेणु  
हरितमणिमयसबकीन्ह॥सरलसपरिपरहिंनहिचीन्ह



रामा०  
बा०  
१०१

कनककलितअहिबेलिवनाई॥लखिनहिपरैसपर्वसु  
हाई॥तेहिकेरचियचिवन्यवनाए॥विचविचमुक्तादामसु  
हाए॥माणिकमरकतऊलिशापिरौजा॥चीरकोरपचिरचै  
सरोजा॥किपभृङ्गबङ्गरङ्गविहङ्गा॥गुञ्जहिङ्गजहिंपवन  
प्रसङ्गा॥सरप्रतिमाएवम्भनगढिकाढी॥मङ्गलद्रव्यालि  
एसबढाढी॥चौकभांतिअनेकपुराई॥सिन्दुरमाणिमय  
सहजसुहाई॥**दोहा**॥सौरभपलवसुभगसुठिकिएनील  
माणिकोर॥हेममोरमरकतववरिलसतपाटमयजोर॥३५०  
**चौपाई**॥रचेरुचिरवरबन्दनिबारे॥मनङ्गमनोभवफन्दसं  
बारे॥मङ्गलकलशाअनेकवनाए॥ध्वजपताकपटचमर  
सुहाए॥दीपमनोहरमाणिमयनाना॥जाइनवरणिवित्रवि  
ताना॥जेहिंमणउपदुलहिनिबैदेही॥सोवरणैअसमति  
कविकेही॥दूलहरामरूपगुणसागर॥सोवितानतिङ्ग  
लोकउजागर॥जनकभवनकीशोभाजैसी॥गृहगृहप्रति  
पुरदेखियतैसी॥जेतिरङ्गतितेहिंसमयनिहारी॥तेहिंल  
चुलगेभुवनदशचारी॥जोसम्पदानीचगृहसोहा॥सोवि  
लोकिसरनायकमोहा॥**दोहा**॥बसैनगरजेहिंलतिकरि  
कपटनाखिवरवेष॥तेहिंपुरकीशोभाकहतसऊचैमारदशेष

३५१॥



**चौपाई॥** पङ्केचेत रामपुरपावन॥ हरषेतगरविलोकिसहा  
 वन॥ भूपदारतिन्हावबिजनार्ई॥ दशरथनृपसुनिलिपुला  
 ई॥ करिप्रणामतिन्हापांतीदीन्ही॥ मुदितमहीपआपुउठिली  
 न्ही॥ बारिविलोचनबांचतपांती॥ पुलकगातआईभरिकाती  
 रामलषणकरउरवरचीवी॥ रहिगएकहतनखाटीमीमी॥ पु  
 निथरिपीरपत्रिकावांची॥ हरषीसभावातसुनिसांची॥ खेल  
 तरहेतहांसुधिपाई॥ आपभरतसहितहोभाई॥ सूक्तअति  
 सनेहसऊचाई॥ तातकहांतेपांतीआई॥ **दोहा॥** ऊशालप्राण  
 प्रियवन्धुदोउअहहिंकहऊकेहिदेश॥ सुनिसनेहसानेवच  
 नवांचीबडरिनरेश॥ ३५२॥ **चौपाई॥** सुनिपांतीपुलकेदोउआ  
 ता॥ अधिकसनेहसमातनगाता॥ प्रीतिपुनीतभरतकीदेवी  
 सकलसभासखलहेउविशेवी॥ तबनृपदूतनिकटवैगरे॥  
 मधुरमनोहरवचनउचारे॥ भैयाकहऊऊशालदोउवारे॥ त  
 मनीकेनिजनयननिहारे॥ श्यामलगौरधरैथुभाया॥ व  
 यकिशोरकौशिकसुनिसाया॥ पदिचानेऊतौकहऊसुभाऊ  
 प्रेमविवशापुनिपुनिकहराऊ॥ जादिनतेमुनिगएलिवाई॥  
 तबतेंआजुसांचिसुधिपाई॥ कहऊविदेहकवनविधिजाने  
 सुनिप्रियवचनहतमुसकाने॥ **दोहा॥** सनऊमहीपतिमुकु  
 टमणितमसमयन्यनकोउ॥ रामलषणजिनकेतनयविश्व



रामा०  
बा०  
१०२

102

विभूषण दोउ ॥ ३५३ ॥ चौपाई ॥ पूछन योगनतनय तमहारे ॥ १  
रुषसिंह तिजं पुरं जियारे ॥ जिनके यश प्रताप के आगे ॥ शशि  
मलीन रविशीतल लागे ॥ तिन कहं कहिय नाथ किमि चीन्हे ॥  
देविय रविकि दीप करलीन्हे ॥ सीय स्वयम्बर भूष अनेका ॥  
सिमिटे सुभट एक तें एका ॥ शम्भु शरासन काइन दारा ॥ हा  
रे सकल भूष वरियारा ॥ तीन लोक महं जे भटमानी ॥ सब की  
शक्ति शम्भु धनुभानी ॥ शकै उदार सरा सर मेरू ॥ सो उदिय  
हारि गए उकरि फेरू ॥ जेहिं को त कशिव शैल उदावा ॥ सो उ  
तेहिं सभा पराभव पावा ॥ दोहा ॥ तहां राम रघुवंश मणि सुनि  
यम रामहि पाल ॥ भंजे उचाप प्रयास विनु जिमि गज पङ्कज ना  
ल ॥ ३५४ ॥ चौपाई ॥ सुनि सरोष भृगु नायक आप ॥ बडत भांति  
तिन आंखि देखे आप ॥ देविराम बल निज धनु दीन्हा ॥ करि ब  
ड विनय गवन वन कीन्हा ॥ राजत राम अतल बल जै सैं ॥  
तेज निधान लषण पुनि तै सैं ॥ कंपहिं भूष विलोकत जाके  
जिमि गज हरि किशोर के ताके ॥ देव देखित बबाल कदोऊ  
अवनि आंखि तर आवन कोऊ ॥ दूत वचन रचना प्रिय लागी ॥  
प्रेम प्रताप वीर रस पागी ॥ समास मेत राउ अनु रागे ॥ दूत दि  
देन निष्ठा वरिलागे ॥ कहि अनीति ते मूंदहिं काना ॥ धर्म  
विचारि बसहिं सुख माना ॥ दोहा ॥ तब उठि भूष वसिष्ठ क



हं दीन पत्रिका जाइ ॥ कथा सुनाई गुरुहिं सब सादर दूत बुला  
 ३॥३५५॥ **चापाई** ॥ सुनि बोले मुनि अति सुख पाई ॥ पुण्य पुरुष  
 कहं महि सुख काई ॥ जिमि सरिता सागर महं जाही ॥ यद्यपि ता  
 दिका मनानाही ॥ तिमि सुख सम्यति बिनहि बुलाय ॥ धर्म शील  
 पहं जाहि सुहाय ॥ तम गुरु विप्र येन सुर सेवी ॥ तम पुनीत को  
 शल्या देवी ॥ सकृती तम समान जग माही ॥ भए उन है को उहे  
 ने उनाही ॥ तम ते अधिक पुण्य बड काके ॥ राजन राम सरिस सु  
 त जाके ॥ बीर विनीत धर्म ब्रत धारी ॥ गुण सागर बालक बरचा  
 री ॥ तम कहं सर्व काल कल्याण ॥ सज्ज बरात बजाइ निसाना ॥  
**दोहा** ॥ चले उवे गि सुनि गुरु वचन भले हिं नाथ शिर नाइ ॥ भूय  
 ति गवने भवन तब दूत दिवास दिवाइ ॥३५६॥ **चौपाई** ॥ राजा स  
 वर निवास बुलाई ॥ जनक पत्रिका वांचि सुनाई ॥ सुनि सन्देश स  
 कलहर षानी ॥ अपर कथा सब भूपव खानी ॥ प्रेम प्रफुलित रा  
 जा राणी ॥ मन कुंशि खिन सुनि वारिद बाणी ॥ मुदित आशीष  
 देहिं गुरु नारी ॥ अति आनन्द मगन महतारी ॥ लेहिं परस्पर अ  
 ति प्रिय पांती ॥ हृदय लगाइ जुठाव हिं काती ॥ राम लषणा की  
 कीरति करणी ॥ बारहिं बार भूपवर वरणी ॥ मुनि प्रसाद कहि  
 द्वार सिंथाये ॥ रा निरुत बमहि देव बुलाये ॥ दिपदान आनन्द स



रामा०  
बा०  
१५३

103

मेता॥ चले विप्रवर आशिष देता ॥ सोरठा ॥ याच कलिये हंका  
रि दीन्ह निक्कावरिको टिविधि ॥ चिर जीव झुसत चारि चक्रवर्ति  
दशरथ के ॥ ३५० ॥ चौपाई ॥ कहत चले पहिरें पटनाना ॥ हरषि  
हने गहगहै निसाना ॥ समाचार सब लोग नपाय ॥ लागे घर घर  
होन बयाय ॥ भुवन चारि दश भरे उडकाह ॥ जनक सुतार चुवी  
र विवाह ॥ सुनि शुभ कथा लोक अतुरागे ॥ मग गृह गली से वा  
रन लागे ॥ यद्यपि अवयस दैव सुहावनि ॥ राम प्रीम झुलम य  
पावनि ॥ तदपि प्रीति की रीति सुहाई ॥ मझुल रचनारचीवना  
ई ॥ ध्वज पताक पट चामर चारु ॥ कावा परम विचित्र वजारु ॥  
कनक कलश तोरण मणि जाला ॥ हरद दूबदधि अक्षत माला  
दोहा ॥ मझुल मय निज निज भवन लोग नरचेवना ॥ बीपी सी  
ची चतर सम चौके चारु पुरा ॥ ३५८ ॥ चौपाई ॥ जहंत हंयूय यूय  
मिलि भामिनि ॥ सजिन वसप्रस कल युति दामिनि ॥ विभु बंदी  
मृगणाव कलोचनि ॥ निज स्वरूप रतिमान विखोचनि ॥ गावहि  
मझुल मझुल बाणी ॥ सुनिकल रव कलक एल जानी ॥ भूप  
भवन किमि जावषाना ॥ विम्व विमोहन रचे उविताना ॥ मझुल  
द्रव्य मनोहर नाना ॥ राजत बाजत विपुल निसाना ॥ कत डं वि  
रद बन्दी उचरही ॥ कत डं वेद ध्वनि भूसर करही ॥ गावहिं सुन्द



रिमंगलगीता ॥ लैलैनामरामग्ररुसीता ॥ बडतउकादभव  
 नअतिथोरा ॥ मानइंउमगिचलाचइंओरा ॥ दोहा ॥ शो  
 भादशरणभवनकीकोकविवरणोपार ॥ जहांसकलसुरा  
 शीर्षमणिगामलीन्दुअवतार ॥ ३५५ ॥ चौपाई ॥ भूपभरतपु  
 निलियेबुलाई ॥ हयगजस्यन्दनसाजइजाई ॥ चलइवेगिर  
 बुबीरवरता ॥ सुनतपुलकपूरेदोऊभाता ॥ भरतसकलसा  
 हनीबुलाए ॥ आयसुदीन्दुदितउठिपाए ॥ रचिरचिजी  
 नतरगतिनसाजे ॥ वर्णवर्णवरवाजिविराजे ॥ सभगसक  
 लसुठिचञ्चलकरणी ॥ अयइवजरतपगुथरणी ॥ नानाभां  
 तिनजाहिंवषाने ॥ निदरिपवनजनुचहतउडाने ॥ तिनसव  
 कयलभएअसवारा ॥ भरतसरिससवराजकुमारा ॥ सबसु  
 न्दरसबभूषणधारी ॥ करशरचापतूणकटिभारी ॥ दोहा  
 करेकबीलेकयलसबभूरसुजाननबीन ॥ युगपदचरअश  
 वारप्रतिजेअसिकलाप्रवीण ॥ ३६० ॥ चौपाई ॥ बायेविरदबी  
 ररणागाढे ॥ निकसिभयेपुरवाहिरठाढे ॥ फेरहिंचतरतर  
 कुतिनाना ॥ हरषहिंधनिसुनिपवननिसाना ॥ रणसारणि  
 नविचित्रबनाए ॥ ध्वजपताकमणिभूषणलाए ॥ चमर  
 चारुकिकिणिधनिकरही ॥ भावयानशोभाअपहरही



रामा०  
बा०  
१०४

प्रणामकर्ण अगणित हय होते ॥ तेति न्दश्य मसारथिन जो  
ते ॥ सुन्दर सकल अलंकृत सो है ॥ जिन हिं विलोकत मुनि मन  
मो है ॥ जे जल चल हिं थल हिं की नाई ॥ दापन वू उवेग अथिका  
ई ॥ असुश ससब साज समाई ॥ रथ सारथिन विचित्र बनाई ॥  
**दोहा ॥** चढि चढि रथ बाहिर नगर लागी जुरन बरात ॥ हो  
त सगुण सुन्दर सब हिं जो जे हिं कारज जात ॥ ३६ ॥ **चौपाई ॥**  
कलित करीवर निअंबारी ॥ कहिन जाइ जे हिं भांति संभारी  
चले मत्त गज घंट विराजे ॥ मन अं सुभग आवण चन गाजे  
वाहन अपर अनेक विधाना ॥ शिविका सुभग सुखासन या  
ना ॥ तिन चढि चले विप्रवर वृन्दा ॥ जनुत नुथरै सकल श्रुति  
छन्दा ॥ मागथ सुत बन्दि गुण गायक ॥ चले यान चढि जे जे  
हिं लायक ॥ बेसर अं टवृष भवइ जाती ॥ चले वस्तु भरि अगणि  
त भांती ॥ कोटि न्दकां वरि चले कदारा ॥ विविध वस्तु को वराणें  
पारा ॥ चले सकल सेवक समुदाई ॥ निज निज साज समाज ब  
नाई ॥ **दोहा ॥** सब के उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर ॥ क  
बहिं देखि हैं नयन भरि राम लषण दोउ बीर ॥ ३७ ॥ **चौपाई**  
गरज हिं गज घंटा ध्वनि घोरा ॥ रथ रव वाजि हिं सच अं ओरा  
निद रिघन हिं चूंम हिं निसाना ॥ निज परायक कुसुनियन कान



महाभीरभूषतिकेदारे॥ रजहोइजाइप्रखानपवारे॥ चणी  
अटारिनदेखहिंनारी॥ लिपआरतीमङ्गलपारी॥ गावहिं  
गीतमनोहरनाना॥ अतिआनन्दनहिजाइबखाना॥ तबस  
मनदुःखस्यन्दनसाजी॥ जोतेरविहयनिन्दकबाजी॥ दोउर  
थरुचिरभूषपहंआने॥ नहिणारदप्रतिजाहिंवखाने॥ रा  
जसमाजपकरथभाजा॥ दूसरेतेजपुञ्जअतिभाजा॥ दो  
हा॥ तेहिंरथरुचिरवसिष्ठकहंहरषिचछाइनरेश॥ आपु  
चछेउस्यन्दनसुमिरिहरगुरुगौरिगणेश॥ ३६३॥ चौपाई  
सहितवसिष्ठसोहनपकैसैं॥ सरगुरुसंगपुरन्दरजैसैं॥  
करिऊलरीतिवेदविधिराऊ॥ देखिसबहिंसबभातिबना  
ऊ॥ सुमिरिरामगुरुआयसुपाई॥ चलेमहीपतिशंखवा  
ई॥ हर्षेविबुधविलोकिबराता॥ वरषदिसमनसमङ्गल  
दाता॥ भयउकोलाहलहयगजगाजे॥ ब्योमवरातबाजने  
वाजे॥ सरनरनारिसमङ्गलगाई॥ सरसरागवाजहिंसह  
नाई॥ छटछणित्थनिवरणानजाई॥ सरवकरहिंपायक  
फहगाई॥ करहिंविदूषककौतुकनाना॥ हांसऊशालक  
लगानसुजाना॥ दोहा॥ तरगनचावहिंऊंअरवरअंकिन  
मृदङ्गनिसान॥ नागरनटचितवहिंचकितडिगहिंनतालवं



रामा०  
श्री०  
१०५

धान॥३६५॥**चौपाई॥**बनैनबरणातवनीबराता॥होइस  
गुणसुन्दरसुभदाता॥चारुचापवामदिशिलेई॥मनऊंस  
कलमङ्गलकहिदेई॥दाहिनकागसुखेतसहावा॥नऊ  
लदरशसबकाहनपावा॥सानुकूलवहविविधिवपारी॥  
सचटसवालआवबरनारी॥लावाफिरिफिरिदरशदिखा  
वा॥सुरभीसम्मुखशिमुहिंषिआवा॥सृगमालादाहिन  
फिरिआई॥मङ्गलगणजनुदीन्हदिखाई॥दोमङ्गरीकह  
दोमविशेषी॥श्यामावामसुतरुपरदेवी॥सम्मुखआयउ  
दधिअरुमीना॥करपुस्तकदुःखविप्रप्रवीणा॥**दोहा॥**मङ्ग  
लमयकल्याणमयअभिमतफलदातार॥जनुसबसोचे  
हौनहितभयशगुणएकवार॥३६५॥**चौपाई॥**मङ्गलशगु  
णसृगमसबताके॥सगुणब्रह्मसुन्दरसुतजाके॥रामस  
रिसवरदुलदिनिसीता॥समधीदशरथजनकपुनीता॥  
सुनिअसब्याहशगुणसबनाचे॥अबकीन्हविरचिहमसो  
चे॥यदिविधिकीन्हवरातपयाना॥हयगजगाजहिंहनहिं  
निसाना॥आवतजानिभाउऊलकेत॥सरितजनकबंधा  
पायेसेत॥बीचबीचवरवासबनाए॥सुरपुरसरिससम्प  
दाकाए॥अशनशयनवरबसनसहाए॥पावहिंसबनिजनि



जमनभाए॥ नितनूतनसखलषिअनुकूले॥ सकलवरा  
तिनमन्दिरभूले॥ दोहा॥ आवतजानिवरातवरसनिगहग  
हेनिसान॥ सजिगजरणपदचरतरगलैनचलेअगवान॥ ३॥  
चौपाई॥ कनककलशकलकोपरपारा॥ भोजनललितअ  
नेकप्रकारा॥ भरेसुधासमसुवयकवाना॥ भोतिभोतिनहि  
जाहिंवावाना॥ फलअनेकवरवस्तुसहाई॥ हरषिभेटहि  
तभूषणपढाई॥ भूषणवसनमहामणिनाना॥ खगमृगहय  
गजवद्धविधयाना॥ मङ्गलसगुणसुगन्धसहाए॥ बद्धत  
भोतिमहिपालपढाए॥ दधिचिउराउपहारअपारा॥ भरि  
भरिकांवरिचलेकहारा॥ अगवाहनजबदीखवराता॥ उर  
आनन्दपुलकभरगाता॥ देखिवनावसहितअगवाना॥ मुदि  
तवरातिनहनेनिसाना॥ दोहा॥ हरषिपरस्परमिलनहित  
ककुकचलेवगमेल॥ जनुआनन्दसमुद्रदुर्मिलतविहाउ  
सुबेल॥ ३६॥ चौपाई॥ वरषिसुमनसरसन्दरिगावहिं॥  
मुदितदेवदुनुभीबजावहिं॥ वस्तुसकलराखीनृपआगे॥  
विनयकीन्हतिन्हअतिअनुरागे॥ प्रेमसमेतराउसबलीन्हा  
भरबकसीसयाचकनदीन्हा॥ करिपूजामान्यताबडाई॥ ज  
नवांसेकहंचलेलिवाई॥ वसनविचित्रपांवडेपरही॥ देखि

६६॥



रामा०  
वा०  
१०६

१०६  
पनदथनमदपरिहरही॥ नृपदशरणतापरपगुधरही॥  
वरधिसुमनसुरजयजयकरही॥ यहदुईपददोपकहैं॥  
अतिसुन्दरदीन्हेंउजनवांसा॥ जहंसबकहःसबभांतिसुपा  
सा॥ जानीसियवरातपुरआई॥ ककुनिजमहिमाप्रगटिज  
नाई॥ हृदयसुमिरसबसिद्धिबुलाई॥ भूपपञ्जनईकराणपदा  
ई॥ दोहा॥ सियआयसुशिरसिद्धिरिगईजहौंजनवास॥  
लिपसंपदासकलसुखसुरपुरभोगविलास॥ ३८८॥ चौपा  
ई॥ निजनिजवासविलोकिबरांती॥ सुरसुखसकलसुल  
भसबभांती॥ विभवभेदककुकाऊनजाना॥ सकलजनक  
करकरहिंवलाना॥ सियमहिमारघुनायकजानी॥ हरषे  
हृदयहेतुपरिचानी॥ पितृआगमनसुनतदोउभाउ॥ हृद  
यनअतिआनन्दअमाउ॥ सकुचतकहिनशकतगुरुपाही  
पितृदरशानलालचमनमाही॥ विष्णामित्रविनयबडिदेवी  
उपजाउरसन्तोषविशेषी॥ हरषिवन्धुदोउहृदयलगाए॥ ३  
लकअङ्गुलोचनजलकाए॥ चलेजहौंदशरणजनवासे॥  
मनऊसरोवरतकेपियासे॥ दोहा॥ भूपविलोकेजबहिंमुनि  
आवतसुतनसमेत॥ उठेउहरधिसुखसिन्धुमहंचलेयाह  
सीलेत॥ ३८९॥ चौपाई॥ मुनिहिंदाउवतकीन्हमहीशा॥ वा



रवारपदरजथरिणीशा॥ कौशिकराउलिपउरला३॥ कहि  
 आशीषपूकीऊशाला३॥ पुनिदाउवतकरतदोउभा३॥ दे  
 विनृपतिउरसखनसमा३॥ सुतहियला३दुसहदुखमेटे॥  
 मृतकशरीरप्राणजनुभेटे॥ पुनिबसिषुपदशिरतिहनाप  
 प्रेममुदितमुनिवरउरलाप॥ विप्रवृन्दबन्देदुङ्गेभा३॥ मनभा  
 वतिआशीषतिहपा३॥ भरतसहानुजकीहप्रणामा॥ लि  
 पउठा३ला३उररामा॥ हरषेलषणादेविदोउभाता॥ मिलेप्रे  
 मपरिपूरितगाता॥ दोहा॥ पुरजनपरिजनजातिजनयाच  
 कमंजीमीत॥ मिलेयथाविधिसबहिंप्रभुपरमकृपालुविनोत  
 चौपाई॥ रामहिंदेविवरातजुडानी॥ प्रीतिकीरीतिनजाउवरा  
 नी॥ नृपसमीपसोहहिंसुतचारी॥ जनुयनयर्मादिकतनुया  
 री॥ सुतहसहितदशरथकहंदेवी॥ मुदितनगरनरनारिवि  
 शेषी॥ समनवरधिसुरहनहिंसाना॥ नाकनटीनाचहिंक  
 रिगाना॥ शतानन्दअरुविप्रसचिवगणा॥ मागथसूतविदुष  
 बन्दीजन॥ सहितवरातराउसनमाना॥ आयसुमांगिफिरे  
 अगवाना॥ प्रथमवरातलगनतेंआई॥ तातेंपुरप्रमोदअधि  
 वारै॥ ब्रह्मानन्दलोगसबलहहंही॥ बछउदिवसनिशविधिस  
 नकहहंही॥ दोहा॥ रामसीयशोभाअंधिसुकुतअवधिदोउरा

३१०॥



रामा०  
बा०  
१०७

107

मिर्चरी

ज॥ जहेतहे पुरजन कहहिं अस मिलिन रनारि समाज॥ ३०  
**चौपाई॥** जनक सुकृत मूरति वैदेही॥ दशरथ सुकृत राम  
परिदेही॥ उन सम काइन शिव आराये॥ काइन उन समान  
फल साथे॥ उन सम को उन भए जग माहीं॥ है नहि कत झंझो  
ने उनाहीं॥ हम सब सुफल सुकृत की राणी॥ भये जग जन्मि  
जनक पुरवासी॥ जिन जान को राम कृ बिदेसी॥ को सुकृती  
हम सरिस विशेषी॥ पुनि देख वरचु बीर विवाह॥ लेब भली  
विधिलोचन लाइ॥ कहहिं परस्पर को किल बयनी॥ यहि  
विवाह बउलाइ सनयनी॥ बडे भाग विधि वात बनाई॥ नयन  
अति पिहोइ है दोउ भाई॥ **दोहा॥** दारहिं दार सनेह वश जन  
क बोलाउ वसीय॥ लैन आइ रहि बन्धु दोउ कोटि काम कमनी  
य॥ ३१॥ **चौपाई॥** विविध भांति होइ हिं पडनाई॥ प्रियनका  
हिं अस सासर माई॥ तब तब राम लषण हिं निहारी॥ होइ रहि  
हिं सब पुरलोग सुखारी॥ सखि जस राम लषण कर जोटा॥  
तैसे भूपस दुहु जोटा॥ श्याम गौर सब अरु सहाए॥ ते सब  
कहहिं देखि जे आए॥ कहा एक मैं आज निहारे॥ जउ विर  
अनि जहाय संवारे॥ भरत राम एक हिं अनुहारी॥ सहसा  
लखिन शकहिं नरनारी॥ लषण शत्रु सुदन एक रूप॥ न



खशिखतैं सब अङ्ग अनूपा ॥ मनभावहिं मुखवरणि न जाहीं ॥  
 उपमा कहें त्रिभुवन को उनाहीं ॥ **छन्दः** ॥ उपमान को उ कह दास  
 तल सीकत ऊँक बिको विदक है ॥ बल विनय विद्या शील शोभा  
 सिन्धु उन सम पल है ॥ **६२** ॥ पुरनारि सकल पसारि अञ्जल विधि  
 हिं वचन सुनावहीं ॥ व्याहिय सचारि उभा उपहि पुरह मस मङ्ग  
 लगावहीं ॥ **१०** ॥ **सोरठा** ॥ कह हिं परस्पर नारि वारि विलोचन  
 पुलकत नु ॥ सखि सब कर बपुरारि पुण्य पयोनिधि भूप दोउ ॥  
**चौपाई** ॥ इह विधि सकल मनोरथ करहीं ॥ आनन्द उमगि उम  
 गि उर भूरहीं ॥ जे चपसी यस्वयम्बर आप ॥ देखि बन्धु सबतिन  
 सख पाए ॥ कहतराम यश विदषा विशाला ॥ निज निज भवन  
 गप महि पाला ॥ गप वीतिक कु दिन यहि भांती ॥ प्रमुदित पुर  
 जन सकल बराती ॥ मंगल मूल लगन दिन आवा ॥ हिम अत अ  
 गहन मास सहावा ॥ ग्रह तिथि नखत योग वर बारू ॥ लगन शो  
 धि विधिकी न्ह विचारू ॥ पढे दीन्ह नारद मन सो ॥ गनी जनक  
 के गाण कह जोई ॥ सुनी सकल लोग नय दबाता ॥ कह हिं जोति  
 की विप्र विधाता ॥ **दोहा** ॥ येनु भूलि वेला विमल सकल समङ्गल  
 मूल ॥ विप्र न कहै उ विदेह सन जानि समय अत कूल ॥ **३०४** ॥  
**चौपाई** ॥ उपरोहित हिं कहै उ नर नाहा ॥ अब विलम्ब कर कारणा का



रामा०  
वा०  
१०८

हा॥ शातानन्द तव सचिव बुलाए॥ मङ्गल सकल साजि सब  
ल्याए॥ शंखनिशान पनवव डुवाजे॥ मङ्गल कलश सगुन स  
वसाजे॥ सुभग सुआसि निगावहिं गीता॥ करहिं वेद धनि वि  
प्रपुनीता॥ लेन चले सादर यहि भांती॥ गण जहां जन वास व  
राती॥ कोशल पतिकर देवि समाज॥ अनिल बुला गति नहिं  
सरराज॥ भएउ समय अवधारि यपाऊ॥ यह सुनि पयानि सा  
नन चाऊ॥ गुरुहिं प्रकिकरि कुल विधिराजा॥ चले मङ्गल मुनि  
साधु समाजा॥ दोहा॥ भाग्य विभव अवधे शकर देवि देव ब्र  
ह्मादि॥ लगे सगहन सह समुख जानि जन्म निज वादि॥ १०५  
चौपाई॥ सरन समङ्गल अवसर जाना॥ बरषहिं समन बजाउ  
निसाना॥ शिव ब्रह्मादिक विबुध वरूपा॥ चढे विमान नन्दना  
नायका॥ प्रेम पुलकत नुह दयउ काहू॥ चले विलोकन राम  
बिबाहू॥ देवि जनकपुर सरन रागो॥ निज निज लोक सब  
हिल बुलागे॥ चितवहिं चकित विचित्र विमाना॥ रचना सक  
ल अलौकिक नाना॥ नगर नारिन रस रूप निधाना॥ सुवर सु  
धर्म सुशील सुजाना॥ तिनहिं देवि सब सरनारी॥ भए  
नखत जनु विधुं जियारी॥ विधिहिं भएउ आश्चर्य विप्रोषी॥  
निज करणी ककु कत झंन देखी॥ दोहा॥ शिव समुजा पदेव सब



जनिआश्चर्यभुलाऊ ॥ हृदयविचारऊपीरथरिसियरचुवो  
 रविवाऊ ॥ ३०६ ॥ चौपाई ॥ जेहिकरनामलेतजगमांदी ॥ स  
 कलअमङ्गलमूलनशांदी ॥ करतलहोहिंपदारथचारी ॥ ते  
 सियरामकहेउकामारी ॥ यदिविधिशाम्भुसरनसमुजावा ॥  
 पुनिआगेवरदशाऊचलावा ॥ देवनदेखेदशरथजाता ॥ म  
 हामोदमनपुलकितगाता ॥ साधुसमाजसङ्गमहिदेवा ॥  
 जनुतनुथरैकरहिंसखसेवा ॥ सोदतसाथसंभगसुतचारी  
 जनुअपवर्गसकलतनुथारी ॥ मरकतकनकवरणाबरजो  
 री ॥ देविसरनभङ्गीतिनथोरी ॥ पुनिरामहिंविलोकिहिय  
 हर्षे ॥ नृपहिंसराहिसमनतिन्दवर्षे ॥ दोहा ॥ रामरूपनख  
 शिखसंभगवारहिंवारनिहारि ॥ पुलकगातलोचनसजल  
 उमासमेतपुरारि ॥ ३०७ ॥ चौपाई ॥ केकीकाण्डटुतिशामलअं  
 गा ॥ तडितविनिन्दकवसनसरंगा ॥ व्याहविभूषणविविध  
 बनाए ॥ मङ्गलमयसबभांतिसहाए ॥ शरदविमलविधुव  
 दनसहावन ॥ नयननवलराजीबलजावन ॥ सकलअलौ  
 किकसुन्दरताई ॥ कहिनजाइमनहीमनभाई ॥ बंधुमनोहर  
 सोदहिंसंगा ॥ जातनचावतचपलतरंगा ॥ राजऊंअरवरवा  
 जिनचावहिं ॥ बंशप्रशंसकविरदसनावहिं ॥ जेहिंतरूप



रामा०  
बा०  
१०५

109

रामविराजे॥ गतिविलोकिखगनायकलाजे॥ कहिनजा  
इसबभांतिस्वहावा॥ बाजिवेषजनुकामवनावा॥ **कन्दः॥**  
जनुवाजिवेषवनाइमनसिजरामहितअतिसोहही॥ अप  
नेवयबलरूपगुणगतिसकलभुवनमोहही॥ १५॥ जगम  
गितजीनजडावजोतिसुमोतिमणिमालिगो॥ किङ्कि  
णीललामलगामललितविलोकिसरनरमुनिबो॥ १६॥  
**दोहा॥** प्रभुमानसहिलयलीनमनचलतवाजिकुविषाव  
भषितउतुगाणातडितवनजनुवरबर्हिनचाव॥ १७॥ **चौपाई**  
जेहिंवरबाजिरामअसवारा॥ तेहिंशारदइनवरगोपारा॥  
शङ्कररामरूपअनुरागे॥ नयनपंचदशअतिप्रियलागे॥  
हरिहितसहितरामजबजोहै॥ रमासमेतरमापतिमोहै  
निरधिरामकुविविधिहरषाने॥ आठैनयनजानिपकिताने  
सरसेनपउखडतउछाहू॥ विधितैवढेविलोचनलाहू॥  
रामहिंचितवसुरेशसजाना॥ गोतमशापपरमहितमा  
ना॥ देवमकलसरपतिहिंसिहाही॥ आजपुरन्दरसम  
कोउनाही॥ मुदितदेवगणारामहिंदेही॥ दृष्टजाजुडुं  
दृषविशेही॥ **कन्दः॥** अतिदृषराजसमाजदुष्टदिशिदुष्ट  
भीवाजहिचनी॥ बरषहिंसमनसरहरषिकहिजयजय



तिजयरचुल्लमणी ॥ ३३ ॥ ३३ हिभांतिजा निवरातआव  
 तवाजनेवद्वजहंही ॥ राणीसुआसिनीबोलीपरिछनहे  
 तमंगलसाजहंही ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ सजिआरतीअनेकविधिम  
 ड़लकलशसम्हारि ॥ चलीमुदितपरिछनकरणागज  
 गामिनिवरनारि ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ विधुबदनीमृगणावक  
 लोचनि ॥ सबनिजतनुकविरतिमदमोचनि ॥ पहिरैवरण  
 वरणवरचीरा ॥ सकलविभूषणसजैशरीरा ॥ सकलस  
 मंगलग्रंगवनाए ॥ करहिमानकलकाएलजाए ॥ कङ्क  
 णाकिङ्किणीनूपुरवाजहिं ॥ चालिविलोकिकामगज  
 लाजहिं ॥ वाजहिंवाजनविविधप्रकारा ॥ नभअरुनग  
 रसमङ्गलचागा ॥ शचीशारदारमाभवानी ॥ जेसरति  
 यप्रचिसदजसयानी ॥ कपटनारिवरवेषवनाई ॥ मिली  
 सकलरनिवासहिंआई ॥ करहिंगानकलमङ्गलवाणी  
 हरषविवशसबकाऊनजानी ॥ ३६ ॥ कोजानकेहिआ  
 नन्दवशसबब्रह्मवरपरिछनचली ॥ कलगानमधुरा  
 निसावदामहिंसमनसरशोभाभली ॥ ३७ ॥ आनन्दक  
 नदिलोकिकहुनहसकलदियहर्षितमर ॥ अमोजअ  
 म्बकअम्बुउमगिसअङ्गपुलकाबलिकु ॥ ३८ ॥ दोहा ॥



गामा०  
वा०  
११०

जो सुख भासिय मात मन दे विराम वर देष ॥ सो नशक  
हिं कहिं कल्प शत सहस शारदा शेष ॥ ३८० ॥ चौ पाई ॥ नय  
न नीरह टिमंगल जानी ॥ परिक्रन करहिं मुदित मन रानी  
वेद विहित अरु ऊलव्य वहा रु ॥ कीन्ह भली विधि सब परि  
चारु ॥ पंचशब्द धनि मंगल गाना ॥ पट पांव डे परहिं विधि  
नाना ॥ करि आरती अर्चति न होन्दा ॥ राम गवन मण्डप न  
ब कीन्दा ॥ दशरथ सहित समाज विराजे ॥ विभव विलोकि  
लोक पतिलाजे ॥ समय समय सर वर्ष हिं फूला ॥ शान्ति  
पछ हिं महि सर अनुकूला ॥ नभ अरु नगन कोलाहल हो  
ई ॥ आपन परक कुसुनैन कोई ॥ इहि विधि राम मण्डप  
हिं आप ॥ अर्च देइ आसन बैठाए ॥ कुन्दः ॥ बैठा वि आसन  
आरती करि निरखिवर सुख पावहीं ॥ मणि बसन भूष  
ण भूरिवार हिं नारि मंगल गावहीं ॥ ३९० ॥ ब्रह्मादि सरवर  
विप्रवेश वनाइ कोतक देखहीं ॥ अवलोकि रघु ऊलक  
मलर विष्णु विसु फल जीवन लेखहीं ॥ ३९८ ॥ दोहा ॥ ना  
ऊवारी भाटन ट राम निष्ठा वरि पाइ ॥ मुदित अशीष हिं  
नाइ शिर हर्षन हृदय समाइ ॥ ३९९ ॥ चौ पाई ॥ दीशो डेन  
दशरथ अति प्रीती ॥ करि वैदिक लौकिक समुल जनक  
मि



लतमहादोउराजविराजे॥ उपमाखोजिखोजिकविला  
 जे॥ लहीनकतझंहारिहियमानी॥ ३१॥ समपउपमाउरा  
 नी॥ समधीदेखिदेवअनुरागे॥ समनवर्षियशागावनला  
 गे॥ जगविरञ्चिउपजावाजवतें॥ देखेसुनेउवाहवऊत  
 वतें॥ सकलभांतिसमसाजसमाज॥ समसमधीदेखेह  
 मआज॥ देवगिरासुनिसुन्दरसांची॥ प्रीतिअलोकिक  
 डुझंदिशिमांची॥ देतपांवडेअर्घसहाय॥ सादरजनक  
 मणउपहिंल्या॥ **छन्दः**॥ मणउपविलोकिविचित्ररचना  
 रुचिरतासुनिमनहरे॥ निजपाणिजनकसुजानसब  
 कहेआनिमिंहासनथरे॥ ३२॥ **ऊलरघुसरिसबसिष्ठपू**  
**जेविनयकरिआशिषलही॥ कौशिकहिंपूजतपरम**  
**प्रीतिकीरीतीतोंनपरैकही॥ ८०॥ दोहा॥** वामदेवआदि  
 कऋषयपूजेमुदितमहीश॥ दियेदिवाआसनसबहिंस  
 वसनलहीआशीष॥ ३८२॥ **चौपाई॥** बहुरिकीन्दकोशाल  
 पतिपूजा॥ जानिईशसमभावनहजा॥ कीन्दजोरिकर  
 विनयबडाई॥ करिनिजभाग्यविभवबहुताई॥ पूजेभूष  
 तिसकलबगता॥ समधीसमसादरसबभांती॥ आसन  
 उचितदिपसबकाह॥ कहोंकहामुकपकउवाह॥ सक



रामा०  
वा०  
१११

लवरातजनकसनमानी॥ दानमानविनतीवरवाणी॥ वि  
धिहरिहरदिशिपतिदिनराऊ॥ जेजानहिंरसुवीरप्रभाऊ  
कपटविप्रवरवेसवनाए॥ कोतकदेखहिंअतिसेचुपाए॥  
पूजेजनकदेवसमजाने॥ दिएसुआसनदिनुपहिचाने॥  
**कन्दः॥** पहिचानकोकेहिजानसबहिंअणनसुथिभोरीभ  
ई॥ आनन्दकन्दविलोकिहलहउभयदिशिआनन्दमई॥  
सुरलखेशमसजानपूजेमानसिकआसनदए॥ अबलो  
किशीलसुभावप्रभुकोंविबुधमनप्रमुदितभए॥ ८२॥  
**दोहा॥** रामचन्द्रमुखचन्द्रकुविलोचनचारुचकोर॥ करत  
पानसादरसकलप्रेमप्रमोदनथोर॥ ८३॥ **चोपाई॥** सम  
यविलोकिवसिष्ठबुलाए॥ सादरशतानन्दसुनिआए  
वेगिऊंअरिअबआनऊजाई॥ चलेमुदितमुनिआयसुपा  
ई॥ रानीसुनिउपरोहितवाणी॥ प्रमुदितसखिनसमेत  
मेयानी॥ विप्रबधूऊलबृहबुलाई॥ करिऊलरीतिसमऊ  
लगाई॥ नारिवेषजेसरवरवामा॥ सकलसुभायसुन्दरी  
प्रणामा॥ तिनहिंदेखिसुखपावहिनारी॥ विनुपहिचानिप्रा  
णतेंप्यारी॥ बारवारसनमानहिंरानी॥ उमारमाशारदसमवा  
नी॥ सीयसम्हारिसमाजबनाई॥ मुदितमाणउपहिंचलीलिवाई



**कृदः॥** चलिलवासीतहि सखी सादर सजि समझलभा  
मिनी॥ नवसमसाजे सुन्दरी सब मत्त ऊज्जरगामिनी॥ ८३  
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्याग हिं काम को किल लाज ही  
मञ्जीर नूपुर कलित कङ्कणा ताल गति वर बाज ही॥ ८४ **दो**  
**हा॥** सो हति वनिता वृन्द महे सहज सोहावनि सीय॥ कविल  
लना गणामध्य जनु सख मातिय कमनीय॥ ८५ **चौपाई॥**  
सिय सुन्दरता वरणि न जाई॥ लघु मति वदत मनोहर ताई॥  
आवत देखि बराति न सीता॥ रूप राशि सब भांति पुनीता  
सब हिं मन हिं मन कीन्ह प्रणामा॥ देखि राम भय पूरण कामा  
हर्षे दशरथ सुत न समेता॥ कहिन जाउ उर आनन्द जेता॥ सु  
रप्रणाम करि वर्ष हिं फूला॥ मुनि आशीष ध्वनि मंगल मू  
ला॥ गान निसान कोलाहल भारी॥ प्रेम प्रमोदन गरन रनारी  
रहि विधि सीय मण्डप हिं आई॥ प्रमुदित शांति पद हिं मुनि  
राई॥ तेहिं अवसर करि विधिव्यवहारु॥ दुहुं कुलगुरु सब  
कीन्ह आचारु॥ **कृदः॥** आचार करि गुरु गोरि गणपति  
मुदित विप्र पूजा वही॥ सुरप्रगटि पूजा लैं हिं देखिं अशीष  
अति सख पावही॥ ८६ **मधुपर्क मङ्गल द्रव्य जो जे हिं सम**  
**य मुनि मन मङ्गल चहैं॥** भरे कनक कोपर कलश सब लये प



रामा०  
वा०  
११२

रिचारकरहैं॥८६॥ ऊलरीति प्रीति समेतर विकहि देत सब  
सादर कियौ॥ यहि भोति देव पूजा रसीतहिं सुभग सिंहास  
न दियौ॥८७॥ सिय राम अब लोक न परस्पर प्रेम काहु बल  
विपरै॥ मन बुद्धि वरवाणी अगोचर प्रगटक विकै सें करै॥८  
दोहा॥ होम समय तनु थरि अन्न लय तिहित आहुतिलेहिं॥  
विप्रवेश थरि वेद सब कहि विवाह विधि देहिं॥३५॥ चौपाई  
जनक पाटमहि धीज गजानी॥ सीय मात किमि जाइ वखानी  
सुयश सकृत् सुख सुन्दर ताई॥ सब समेटि विधिरची बन आई  
समय जानि मुनिवर निबुलाई॥ सुनत सुवासिनि सादर ल्याई  
जनक वाम दिशि सोह सुनयना॥ हिम गिरि संग बनी जनु मय  
ना॥ कनक कलश मणिको परहरे॥ सुदि सुगन्ध मङ्गल ज  
ल पूरे॥ निज कर मुदित राउ अरु रानी॥ थरे रास के आगे आनी  
पछहिं वेद मुनि मङ्गल वाणी॥ गगन समुज रिशुब सर  
जानी॥ वर विलोकि दम्पती अउ रागे॥ पाय पुनीत पाखारण  
लागे॥ कुन्ः॥ लागे एसा रसाण दपङ्गु ज प्रेम तनु पुलका  
वली॥ नभ नगर गान निस्सुन जय ध्वनि उर गीत उचरि  
शिचली॥८८॥ जे पद सरोज मनोज प्रिय उर सरस दै दहि  
जही॥ जे सकृत् समिरत विमल लता मन सकल कलि मल



भाजही ॥ २० ॥ जे परसि सुनिवनितालही गतिरही जो पातक  
 मई ॥ मकरन्द जिन कोषा मुशिर सुचिता अवधिसुरवरनई  
 करिमथुपमुनिमनयोगिजननजेसे अभिसतगतिलहैं ॥  
 तेपदपषारतभाग्यभाजनजनकजयजयसरकहैं ॥ २१ ॥ वर  
 कुंअरिकरतलजोरिशाखोचरदोउऊलगुरुकरैं ॥ भयोपाणि  
 गहणाविलोकिविधिसरमनुजमुनिआनंदभरैं ॥ २२ ॥ सुख  
 मूलदलहदेखिदम्पतीपुलकतनुहुलसोदियै ॥ करिलोक  
 वेदविधानकन्यादाननृपभूषणकियौ ॥ २३ ॥ हिमवन्तजि  
 मिगिरिजामहेशहिंहरिहिंशीसारदई ॥ तिमिजनकराम  
 हिंसियसमपीविश्वकलकीरतिनई ॥ २४ ॥ क्योंकरैविनय  
 विदेहकियौविदेहसूरतिसांवरी ॥ करिहोमविधिवतगां  
 ठिजोरीहोनलागीभांवरी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ जयधनिबन्दीबेट  
 धनिमङ्गलगाननिसान ॥ सुनिहरषहिंवरषहिंविबुधसु  
 रतरुसुमनसुजान ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ कुंअरकुंअरिकलभा  
 वरिदेही ॥ नयनलाभसबसादरलेही ॥ जाइनवरणिमनो  
 हरजोरी ॥ जोउदमाककुहौंसोपोरी ॥ रामसीयसुन्दरप  
 रिछाही ॥ जगमगातिमणिखमनमाही ॥ मनइमदनरा  
 तिथरिबद्धरुपा ॥ देखहिंरामविवाहमनूपा ॥ दरशालालसा

२१



रामा०

बा०

११३

113

सऊचनयोरी ॥ प्रगटतदुरतबहोरिवहोरी ॥ भयमगनस  
बदेखनिहारे ॥ जनकसमानअपानविसारे ॥ प्रमुदितमु-  
निनभांवरीफेरी ॥ नेगसहितसबरीतिनिवेरी ॥ रामसीयसि  
रसिन्दुरदेही ॥ शोभाकहिनजातविथिकेही ॥ अरुणपरा  
गजलजभरिनीके ॥ शशिहिंभूखअदिलोभयमीके ॥ बज्र  
रिवसिष्ठदीन्हअनुषासन ॥ वरदुलहिनिलेढेएकआसन ॥  
**कुन्द ॥** बैढेवरसनरामजानकीमुदितमतदशरणभये ॥ त  
नुपुलकिपुनिपुनिदेखिअपनेसुकुतसुरतरुफलनये ॥ १  
भरिभुवनरहाउकाहरामविवाहभासबहीकहा ॥ केहिभां  
तिवरणिमिरातरसनाएकमुखमंगलमहा ॥ १८ ॥ तबज  
नकपाइवसिष्ठआयसुव्याहसाजसम्हारिके ॥ माएउबी  
प्रतिकीर्तिउर्मिलाऊंअरिलइहंकारिके ॥ १९ ॥ कुशके  
तकन्याप्रथमजोगुणशीलमुखशोभासयी ॥ सबरीति  
प्रीतिसमेतकरिलोव्याहिनपभरतहिंदयी ॥ २० ॥ जान  
कीलबुभगिनिपरमसुन्दरिशिरोमणिजानकै ॥ सोजन  
कटीन्दीव्याहलषणहिंसकलविधिसनमानिकै ॥ जेहिं  
नामप्रतिकीरतिसुलोचनिसुमुखिसबगुणआगरी  
सोदर्शरिपसदनहिंभूपतिरूपशीलउजागरी ॥ २०२ ॥ अ



वरुपवरदुलनिपरस्परलखीसऊचिहियदरषही॥सब  
 मुदितसुन्दरतासराहहिंसुमनसरगाणवर्षही॥१०३॥सु  
 न्दरीसुन्दरवराणसबएकमणउपशजही॥जनुजीवउर  
 चारिअवस्थाविभुनसहितविराजही॥**दोहा॥**मुदितअ  
 वधपतिसकलसुतबधूनसमेतनिहारि॥जनुपाएमहिपा  
 लमणिक्रियनसहितफलचारि॥१०४॥**चौपाई॥**जशरचुवी  
 रव्याहविधिबरणी॥सकलऊंअरव्याहेतेहिंकरणी॥क  
 दिनजाइककुदाइजभूरी॥रहाकनकमणिमणउपपूरी॥  
 कमलवसनविचित्रपटोरे॥भांतिभांतिबद्धमोचनथोरे॥  
 गजरथतरगदासअरुदासी॥येनुअलंकृतकामदुवासी  
 वस्तुअनेककरियकिमिलेखा॥कहिनजाइजानहिंजिनदे  
 खा॥लोकपालअबलोकिसिंहाने॥लीन्हअवधपतिसब  
 सुखमाने॥दीन्हयाचकन्हजोजेहिंभावा॥उबरसोजनवास  
 हिंआवा॥तबकरजोरिजनकमृदुवाणी॥बोलेसबबरातस  
 नमानी॥**छन्दः॥**सनमानिसकलबरातआदरदानविनय  
 बछाइके॥प्रभुदितमहामुनिबृन्दबन्देप्रजितेमलडाइके  
 १०५॥शिरताइदेवमनाइसबसनकरहतकरसंपुटकिये॥  
 सरसाधुचाहतभावसिन्धुकितोषजलअञ्जलिदिये॥१०६॥



रामा०  
वा०  
१५

॥५

मिश्रण  
५

करजोरिजनकबहोरिवन्धुसमेतकोशालरायसों॥बोले  
मनोहरवचनसानिसनेहशीलसुभायसों॥१००॥सम्बन्ध  
जनरावरेहमबडेअवसबविधिभए॥यहराजसांजसमेत  
सेवकजानिवीविजुगयलए॥१०१॥एदरिकापरिचारि  
काकरिपालवीकरुणामयी॥अपराधतमियोबोलियठ  
एवझहोंछीढीदयी॥१०२॥पुनिभाउकुलभूषणसकलस  
नमानविधिसमधीकिए॥कहिजातनहिविनतीपरस्पर  
प्रेमपरिस्तरणहिए॥१०३॥बृन्दारकागणसमनवरसहिंरा  
उजनबांसहिंचले॥दुहुभीधनिअरुवेदधनिनभनगरक  
तहलभले॥१०४॥तवसरिवनमङ्गलगानकरतिमुनीशआ  
यसुपाउके॥दहलदहलहिनिसहितसुन्दरिचलीकोहव  
रल्याउके॥१०५॥दोहा॥पुनिपुनिरामहिंचितवसियसऊ।  
चतिमनसऊचैन॥हरतिमनोहरमीनकुविप्रेमपियासेनै  
न॥१०६॥चोपाई॥एषामशरीरसुभायसुहावन॥शोभाको  
दिमनोजलजावन॥याचकयुतपदकमलसहाए॥मुनि  
मनमधुपरहतजहंकाए॥पीतपुनीतमनोहरयोती॥द  
रतबालरविदामिनिजोती॥कलकिक्किणीकटिसूत्र।  
मनोहर॥बाहुविशालविभूषणसोहर॥पीतजनेउमहाकु



बिदेई ॥ करमुद्रिकाचोरिचितलेई ॥ सोहतव्याहसजसबसा  
 जे ॥ उरआयतउरभूषणराजे ॥ पीतउपार्णकांखासोती ॥ दुऊं  
 आचरनिलागेमणिमोती ॥ नयनकमलकलऊलकाना ॥  
 बदनसकलसौन्दर्यनिधाना ॥ सुन्दरभृङ्गटिमनोहरनासा ॥  
 भालतिलकशुचिरुचिरनिवासा ॥ सोहतमौरमनोहरमाये ॥  
 मंगलमयमुकुतामणिगांधे ॥ **कुन्दः** ॥ गांधेमहामणिमो  
 रमंजुलअङ्गसबचितचोरही ॥ पुरनारिसुन्दरवरविलोक  
 हिंनिरषिक्कवित्तातोरही ॥ ११३ ॥ मणिवसनभूषणवारि  
 आरतिकरहिंमङ्गलगावही ॥ सरसुमनवर्षहिंसूतमागथ  
 बन्दिसुयशसनावही ॥ ११४ ॥ कोहवरहिंआनेकंअरुंअरि  
 सुआसिनिन्दसुखपाउके ॥ अतिप्रीतिलौकिकरीतिलागीक  
 रणमङ्गलगाउके ॥ ११५ ॥ लहिकोरिगौरिशिखावरामहिंसी  
 यसनसादरकहें ॥ रनिवांसहासविलासरसवषाजन्मको  
 फलसबलहें ॥ ११६ ॥ निजपाणिमणिमहंदेखिप्रतिमूरति।  
 स्वरूपनिधानकी ॥ चालतिनभुजबलीविलोकनिविरहबा  
 शभञ्जानकी ॥ ११७ ॥ कोतकविनोदप्रमोदप्रेमनजाउकहिजा  
 नहिअली ॥ वरुंअरिसुन्दरसकलसखीनलिवाउजनवास  
 हिचली ॥ ११८ ॥ तेहिसमयसुनियअशीषजहंतहंनगरनभा  
 आनन्दमहा ॥ चिरंजियद्वजोरीचारुचारिउमुदितमनसबही



रामा०  
वा०  
१५

कहा ॥ १५ ॥ योगीन्द्रसिद्धमुनीशदेवविलोकिप्रभुदुन्दुभीह  
नी ॥ चलेहरधिवरधिप्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी  
**दोहा** ॥ सहितबधूनकुंअरसबतवआयेपितपास ॥ शोभामं  
गलमोदभरिउमगेउजनुजनवास ॥ ३५ ॥ **चौपाई** ॥ पुनिजेव  
नारभएउबझभांती ॥ पढयेजनकबुलाइबराती ॥ परतपांव  
डेवसनअनूपा ॥ सुतनसमेतगवनकियभूपा ॥ सादरसबके  
पादपाखारे ॥ यथायोग्यपीठनवैठारे ॥ थोएजनकअवथपा  
तिचरणा ॥ शीलसनेहजादिनहिबरणा ॥ बझरिरामपद  
पङ्कजथोए ॥ जेहरहृदयकमलमहंगोए ॥ तीनौभाइराम  
समजानी ॥ थोएचरणजनकनिजपाणी ॥ आसनउचितस  
बहिनृपदीन्ह ॥ बोलिसूपकारीसबलीन्ह ॥ सादरलगेपर  
नपनवारे ॥ कनककीलमणिपरणसम्हारे ॥ **दोहा** ॥ सूपो  
दनसरभीसरपिसुंदरखाडुपुनीत ॥ दाणमहंसबकेपरु  
सिगेचतरसुआरविनीत ॥ ३६ ॥ **चौपाई** ॥ पंचकवलकरि  
जेंबनलागे ॥ गारिगानसुनिअतिअनुरागे ॥ भांतिअनेकप  
रेपकवाना ॥ सुधासरिसनहिजाहिंवखाना ॥ परुसनलागे  
सुवरसआरा ॥ व्यञ्जनविविधकोवरणोपारा ॥ चारिभांतिभो  
जनविधिगई ॥ एकएकविधिवरणिनजाई ॥ करसरुचिरव्य  
ञ्जनबझजाती ॥ एकएकरसअगणितभांती ॥ जेंवतदेहिंसपुर

१२०



धनिगारी ॥ लेलेनामपुरुषअरुनारी ॥ समयसहावनगा  
 रिविराजा ॥ हसतगाउसुनिसहितसमाजा ॥ यहिविधिस  
 बहीभोजनकीन्हा ॥ आदरसहितआतमनलीन्हा ॥ दोहा ॥  
 देशानपूजेजनकदशरथसहितसमाज ॥ जनवासेगवनेमु  
 दितसकलभूषणिराज ॥ ३९१ ॥ चौपाई ॥ नितनूतनमङ्गल  
 पुरमांही ॥ निमिषसरिसदिनयामिनिजांही ॥ बडेभोरभूषणि  
 मणिजागे ॥ याचकगुणागणागवनलागे ॥ देविऊंअरवर  
 बभूनसमेता ॥ किमिकहिजातमोदमनजेता ॥ प्रातक्रियाक  
 रिंगेगुरुपांही ॥ महाप्रमोदप्रेममनमांही ॥ करिप्रणामपूजा  
 करजोरी ॥ बोलेगिराअमियजनुबोरी ॥ तमहरीकृपासुनि  
 यमुनिराजा ॥ भएउआजुममपूरणाकाजा ॥ अवसबविप्रबु  
 लाइगोसाई ॥ देइयेनुसबभांतिबनाई ॥ सुनिगुरुकरिमहि  
 पालवडाई ॥ पुनिपटपमुनिवृन्दबुलाई ॥ दोहा ॥ वामदेवअ  
 रुदेवअषिबालमीकजाबालि ॥ आपमुनिबरनिकरतवकौ  
 शिकादितपशालि ॥ ३९२ ॥ चौपाई ॥ दण्डप्रणामसबहिनृप  
 कीन्हा ॥ पूजिसप्रेमबरासनदीन्हा ॥ चारिलक्षवरयेनुमंगा  
 ई ॥ कामसरभिसमशीलसुदाई ॥ सबविधिसकलअकृतकी  
 न्ही ॥ मुदितमहीपअधिनकहंदीन्ही ॥ करतविनयबद्धविधि  
 नरनाह ॥ लहेउआजुजगजीवनलाह ॥ पाइअशीषमहीशा।



रामा०  
बी०  
१६

116

अनन्दा॥ लियेबोलिपुनियाचकवृन्दा॥ कनकवसनमणि  
हयगजस्यंद॥ दियेबूझिरुचिरविजलनन्दन॥ चलेपछत  
गावतगुणागा॥ जयजयजयदिनकरकुलनाथा॥ इहिविधि  
रामविवाहकाहु॥ शकैनबरणिसहसमुखजाहु॥ दोहा॥  
बारबारकौशिकचरणशीसनाइकराउ॥ यहसबसुख  
मुनिराजतबकृपाकटाक्षप्रभाउ॥ ३२३॥ चौपाई॥ जनकस  
नेहशीलकरतूती॥ नृपसबरातिसराहबिभूती॥ दिनउठि  
बिदाअवधपतिमांगा॥ राखहिंसहितजनकअनुरागा॥  
नितनृतनआदरअधिकाई॥ दिनप्रतिसहसभांतिपडनाई॥  
नितनवनगरआनन्दउछाहू॥ दशरथगवनसोहाइनका  
हू॥ बडतदिवसबीतेइहिभांती॥ जनुसनेहरजुबयेवराती  
कौशिकशतानन्दतबजाई॥ कहाविदेहनृपहिंसमुजाई॥  
अवदशरथकडंआयसदेऊ॥ ययपिछांडिनसकडसनेऊ॥  
भलेहिनाथकहिसचिवबुलाए॥ कहिजयजीवशीसतिन्द  
नाए॥ दोहा॥ अबधनाथचाहतचलनभीतरकरऊजनाऊ॥  
भपप्रेमवशसचिवसुनिविप्रसभासदराऊ॥ ३२४॥ चौपाई॥  
चरबासिनसुनिचलीवराता॥ एकतविमलपरस्परबाता॥  
सत्यगवनसुनिसबविलखाने॥ मनइसांजसरसिजसऊ  
चाने॥ जहंजहंआवतबसेवराती॥ तहंतहंसिद्धचलीबडभांती॥



विविधभांतिमेवापकवाना॥ भोजनसाजनजाश्रवणा॥  
 भरिभरिवसतअपारकदारा॥ पठपजनकअनेकसुआरा  
 तरगलावरणसहसपचीसा॥ सबलसंवारेनखअरुशीसा  
 मत्रसहदशसिंधुरसाजे॥ जिनहिंदेखिदिशिकुञ्जरलाजे।  
 कनकवसनमणिभरिभरिजाना॥ महिषीयेनुवस्तविधि  
 नाना॥ दोहा॥ दाइजअमितनशकियकहिदीन्हविदेहबहो  
 रि॥ जोअवलोकतलोकपतिलोकसमदाथोरि॥ ३५॥  
 चौपाई॥ सबसमाजइहिंभांतिबनाई॥ जनकअवयपुर्दी  
 न्हपटाई॥ चलिहिंबरातसनतसबराणी॥ विकलमीन  
 गाणजनुलवुपानी॥ पुनिपुनिसीयगोदकरिलेही॥ देखअ  
 शीषसिखावनदेही॥ होइहइसन्ततपतिहिंपियारी॥ चि  
 रअदिवातआशीषहमारी॥ सासससरगुरुसेवाकरिह  
 पतिरुषलखिआयसुअनुसरिह॥ अतिसनेहवशसखी  
 सयानी॥ नारीधर्मशिखवहिंसुडवाणी॥ सादरसकलकुं  
 अरिसमुजाई॥ रानिनवारवारउरलाई॥ बहरिबहरिभें  
 टहिंमहतारी॥ कहहिंविरञ्चिरचीकतनारी॥ दोहा॥ तेहिं  
 अबसरभाइनसहितरामभानुऊलकेत॥ चलेजनकम  
 न्दिरमुदितविदाकरावनहेत॥ ३६॥ चौपाई॥ चारिउभाइस  
 भायसुहाए॥ नगरनारिनरदेखनपाए॥ कोउकहचलनच



दतहहिंआजू॥ कीन्हविदेहविदाकरसाजू॥ लेऊनयनभ  
 रिरूपनिहारी॥ प्रियपाऊनेभूषसुतचारी॥ कोजानेकेहिसु  
 कृतसयानी॥ नयनअतिथिकीन्हैविथिआनी॥ मरणाशी॥  
 शीलजिमिपावपिगूषा॥ सुरतरुलहैजन्मकरभूषा॥ पावना  
 रकीहरिपदजैसैं॥ इनकरदरशनहमकहंतैसैं॥ निरखिरा  
 मशोभाउरथरऊ॥ निजमनफणिमूरतिमणिकरऊ॥ इहि  
 विथिसबहिंनयनफलदेता॥ गणऊंअरसबराजनिकेता॥  
 दोहा॥ रूपसिंधुसबबंधुलखिहर्षिउठेउरनिवास॥ करहिं  
 निक्कावरिआरतीमहामुदिनमनसास॥ ३९॥ चौपाई॥ देहि  
 रामकविअतिअनुरागी॥ प्रेमविवशपुनिपुनिपदलागी  
 रहीनलाजप्रीतिउरकाई॥ सहजसनेहवरणिकिमिजाई॥  
 भाउनसहितउबटिअन्हवाये॥ करसअशनअतिहेतजैवाये  
 बोलेरामसुअवसरजानी॥ शीलसनेहसऊचमयवाणी॥  
 राउअवधपुरचहतसिथाए॥ विदाहोनहितहमहिंषठाए॥  
 मातमुदितमनआयसुदेह॥ बालकजानिकरबनितनेह  
 सुनतबचनविलखेउरनिवास॥ बोलिनसकहिंप्रेमवश  
 सास॥ हृदयलगाऊंअरिसबलीन्दी॥ पतिनसोंपिविन  
 तीअतिकीन्दी॥ कन्हः॥ करिविनयसियरामहिंसमर्षीजो  
 रिकरपुनिपुनिकहे॥ बलितातजाउंसुजानतमकहंविदि



तगति सबकी अहे ॥ १२१ ॥ परिवार पुरजन मोहिराज हिंसा  
 एप्रियसिय जानिकी ॥ तलसी सुशील सनेहल विनिज  
 किङ्करी करि मानवी ॥ १२२ ॥ सोरठा ॥ तम परि प्रणाम  
 जानि शिरोमणि भावप्रिय ॥ जन गुणागाह कराम दोषदल  
 न करुणा यतन ॥ १२३ ॥ चौपाई ॥ असक हिरही चरण गहि  
 रानी ॥ प्रेम पङ्कज नुगिरा समानी ॥ सुनि सनेह सानी वरवा  
 णी ॥ बद्ध विधिराम सासु सनमानी ॥ राम विद्यामंगत कर  
 जोरी ॥ कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी ॥ पाउ अशीष बद्ध रिशि  
 रनाई ॥ भाइन सहित चले रचुराई ॥ मंजु मधुर मूरति उर आ  
 नी ॥ भई सनेह सिथिल सबरानी ॥ पुनि धीर जय रिऊं अरि  
 हंकारी ॥ वारवार भेंट हिंमहतारी ॥ पुङ्गचा बहिं फिरि मिल  
 हिं बहोरी ॥ बढी परस्पर प्रीति नथोरी ॥ पुनि पुनि मिलति  
 सखिन विलगाई ॥ बालवत सजि मिथे नुलवाई ॥ दोहा ॥  
 प्रेम विवश नर नारि सब सखिन सहित रनिवास ॥ मा  
 नहुं कीन्ह विदेह पुर करण विरह निवास ॥ १२४ ॥ चौपा  
 ई ॥ शुक्र शारिका जानकी जिआए ॥ कनक पिञ्जर नरा  
 विष जाए ॥ व्याकुल कहहिं कहावे देही ॥ सुनि धी  
 रज परिहरै न केही ॥ भए विकल खग मृग इहि भाँती  
 मनु जदशा कै सें कहि जाती ॥ बंधु समेत जनक तब



रामा०  
वा०  
११८

॥१८

आप॥ प्रेमउमगिलोचनजलक्वाप॥ सीयविलोकिथीरता  
भागी॥ रहेकहावतपरमविशगी॥ लीन्हराउउरलाइजानकी  
मिटीमहामर्यादज्ञानी॥ समुजावतसबसचिवसयाने॥  
कीन्हविचारअनवसरजाने॥ बारहिवारसुताउरलाई॥ सजि  
सुन्दरपालकीमंगई॥ दोहा॥ प्रेमविवशपरिवारसबजानि  
सलगननरेश॥ ऊँअरिचछाईपालकीसुमिरेसिद्धगणेश  
॥००॥ चौपाई॥ बडविधिभूपसुतासमुजाई॥ नारीयर्मकुल  
रीतिसिखाई॥ दासीदासदिप्रवडतेरे॥ सुचिसेवकजेप्रिय  
सियकेरे॥ सीयचलतव्याकुलपुरवासी॥ होंहिंसगुणसुभ  
मंगलराणी॥ भूसुरसचिवसमेतसमाजा॥ संगचलेपडं  
चावनराजा॥ रथगजवाजिबरातिनराजे॥ समयविलोकि  
वाजनेवाजे॥ दण्डरथविप्रबोलिसबलीन्दे॥ दानमानपरि  
पूराकीन्दे॥ चरणसरोजभूरियरिशीषा॥ मुदितमहीप  
तिपाइअशीषा॥ सुमिरिगजाननकीन्हपयाना॥ मंगल  
मूलसगुणभजनाना॥ दोहा॥ सुरप्रसूनवरषहिंहरदधि  
करहिंअप्रसरागान॥ चलेअवथपतिअवथपुरमुदितब  
जाइनिमान॥ ॥०१॥ चौपाई॥ नृपकरिविनयमहाजनफे  
रे॥ सादरसकलमंगनेटेरे॥ भूषणवसनवाजिगजदीन्दे  
प्रेमपोषिठाछेसबकीन्दे॥ बारबारविरदाबलिभाषी॥ फि



रेसकलरामहिंउरराषी॥ बझरिवझरिकोशलपतिकहंही  
 जनकप्रेमवशफिरानचहंही॥ पुनिकहभूपतिवचनसुहाए  
 फिरियमहीयहरिवडिआए॥ राउबहोरिउतरिभएबाछे॥ प्रे  
 मप्रवाहविलोचनबाछे॥ तबविदेहबोलेकरजोरी॥ वचन  
 सनेहसुधाजनबोरी॥ करौंकवनविधिविनयसुहाई॥ महा  
 राजमोहिदीन्हबडाई॥ दोहा॥ कोशलपतिसमथीसजनस  
 नमानेसबभाति॥ मिलनपरस्परविनयअतिप्रीतिनहदय  
 समाति॥ ४०२॥ चौपाई॥ मुनिमएउलिहिंजनकसिरनावा॥  
 आशीर्वादसबहिंसनपावा॥ सादरपुनिभेटेजामाता॥ रूप  
 शीलगुणनिधिसबभाता॥ जोरिपङ्कुरुहपाणि सुहाए॥  
 बोलेवचनप्रेमजनजाए॥ रामकरौंकेहिभांतिप्रसंसा॥ मु  
 निमहेशमनमानसहंसा॥ करहिंयोगयोगीजेहिलागी॥ को  
 हमोहममतामदत्यागी॥ व्यापकब्रह्मअलखअविनाशी॥ चि  
 दानन्दनिर्गुणगुणराशी॥ मनसमेतजेहिंजाननबाणी॥ त  
 रकिनशकहिंसकलअनुमानी॥ महिमानिगमनेतिकरिक  
 हंही॥ जोतिङ्गकालएकरसरहंही॥ दोहा॥ नयनविषयमोक  
 हंभएउसोसमस्तसुखमूल॥ सबहिसुलभजगजीवकहंभ  
 एईशाअनुकूल॥ ४०३॥ चौपाई॥ सबहिंभांतिमोदीन्हबडाई॥



रामा०  
बा०  
११५

निजजनजा निलीन्ह अपनार्इ ॥ होंहिं सहसदशाशरदशेषा ॥  
करहिं कल्पकोटिकभरिलेखा ॥ मोरभाग्यराउरगुणगाथा ॥  
कहिनसिराहिंसुनियरबुनाथा ॥ मैककु कहों एकबलमोरे ॥  
तमहरीऊऊसनेहसुठिथोरे ॥ वारवारमागोंकरजोरे ॥ मनप  
रिहरैचरणजनिभोरे ॥ सुनिवरबचनप्रेलजनुषोषे ॥ मुराण  
कामरामपरितोषे ॥ करिवरविनयससुरसनमाने ॥ पितकौ  
शिकवसिष्ठसमजाने ॥ विनतीबहुतभरतसनकीन्हा ॥ मिलि  
सप्रेमपुनिआशिषदीन्हा ॥ दोहा ॥ मिलेलषणारिपुसूदनहिं  
दीन्हअशीषमहीश ॥ भयपरस्परप्रेमवशाफिरिफिरिनावहिं  
सीश ॥ ४०४ ॥ चौपाई ॥ वारवारकरिविनयबडाई ॥ रघुपतिच  
लेसऊसबभाई ॥ जनकगहेकौशिकपदजाई ॥ चरणारेणशि  
रनयननिलाई ॥ सुनुमुनीशसबदरशनतोरे ॥ अगमनककु  
प्रतीतिमनमोरे ॥ जोसखसयशलोकपतिचरुही ॥ करतम  
नोरथसऊचतग्रहही ॥ सोसखसयशसुलभमोहिस्वामी  
सवसिधितबदरशनअनुगामी ॥ कीन्हविनयपुनिपुनिसि  
रनाई ॥ फिरेमहीपतिआशिषपाई ॥ चलीबरातनिसानबजा  
ई ॥ सुदितकोटबउसबसमुदाई ॥ रामहिंनिरविशामनरना  
री ॥ पाइनयनफलहोंहिंसखारी ॥ दोहा ॥ बीचबीचवरवास

चंद्रकास



करिमगलोगनसुखदेत॥ अवयसमीषपुनीतदिनपङ्कची  
 आइजिनेत॥ ४०५॥ चौपाई॥ हनेनिसानपणाववरबाजे॥ भे  
 रीशंखध्वनिहयगजगाजे॥ जांऊमृदङ्गडिमडिमीसुहाई॥  
 सरसरागबाजेसुहनाई॥ प्रजनआवतअकनिवाराता॥ सु  
 दितसकलपुलकाबलिगाता॥ निजनिजसुन्दरसदनसंवा  
 रे॥ हाटवाटचौहटपुरद्वारे॥ गलीसकलअरगजहिंसिंचा  
 ई॥ जहंतहंचौकेचारुपुराई॥ बनाबजारनजाइबाबाना॥  
 तोरणकेतपताकविताना॥ सफलपुष्पफलकदलिरसा  
 ला॥ रोपेवऊलकदम्बतमाला॥ लगेसुभगतरुपरसत  
 धरणी॥ मणिमयआलबालकलकरणी॥ दोहा॥ विवि।  
 थभांतिमङ्गलकलशगृहगृहरचेसंवारी॥ सरब्रह्मादिसि  
 हाहिंसवरबुवरपुरीनिहारि॥ ४०६॥ चौपाई॥ भूपभवनतहिं  
 अवसरसोहा॥ रचनादेखिमदनमनमोहा॥ मङ्गलसगुण  
 मनोहरताई॥ अथिसिधिसुखसम्यदासुहाई॥ जनुउक्ताह  
 सबसहजसुहाए॥ तनुथरिथरिदशारथगृहआए॥ देखन  
 हेतगमबैदेही॥ कहऊलालसाहोइनकेही॥ यूथयूथमि  
 लिचलीसुआसिनि॥ निजकविनिदरहिंसदनविलासिनि॥  
 सकलसुमंगलसजैआरती॥ गावहिंजवबडवेषभारती॥ भू



रामा०  
बा०  
१२०

भूपतिभवकोलाहलहोई॥ जाउनवरणि समयसखसोई  
कौशल्यादिगाममहतारी॥ प्रेमविवशतनुदशाविसारी  
दोहा॥ दियेदानविप्रनविपुलप्रजिगणेशपुरारि॥ प्रसु  
दितपरमदरिद्रजनुपादपदारथचारि॥ ४०० ॥ चौपाई॥  
मोदप्रमोदविवशसबमाता॥ चलहिंनचरणसिथिलभा  
पगाता॥ रामदरशहितअतिअनुरागी॥ परिछनसाजस  
जनसबलागी॥ विविधविधानबाजनेबाजे॥ मङ्गलमुदि  
तसुमित्रासाजे॥ हरदहूबदधिपलवफूला॥ पानपुङ्ग  
फलमंगलमूला॥ अततअंकुररोचनलाजा॥ मंजुलम  
ञ्जरितलसिविराजा॥ कुहेपुरटवटसहजसुहाए॥ मद  
नशऊनिजनुनीउबनाए॥ सगुणसुगन्धनजाहिंबखा  
नी॥ मंगलसकलसजहिंसबराणी॥ रचीआरतीविवि  
धविधाना॥ मुदितकरहिंकलमङ्गलगाना॥ दोहा॥ क  
नकपारभरिमंगलदिकमलकरनिलियेंमात॥ चली  
मुदितपरिछनकराणपुलकपलवितगात॥ ४०८ ॥ चौपा  
ई॥ भूपभूमनभमेचकभएऊ॥ आवणवनवमाणजनु  
कएऊ॥ सरतरुसुमनमालसरवर्षहिं॥ मनअंबलाक  
अवलिमनकर्षहिं॥ मंजुलमणिमयवन्दनिवार॥ मनअं



पाकरिपुचापसेवारा॥ प्रगटहिंदरहिंश्रुटदिपरभामि  
 नी॥ चारुचपलजनुदमकहिंदामिनी॥ दुन्दुभिध्वनिघन  
 गरजदिबोरा॥ याचकचातकदादुरमोरा॥ सरसगन्ध  
 चिवर्षहिंदारी॥ सुखीसकलशीशुप्रनरनारी॥ समय  
 जानिगुरुआयसुदीहा॥ पुरप्रवेशरबुऊलमणिकीन्हा  
 सुमिरिशम्भुगिरिजागणराजा॥ सुदितमहीपतिसहि  
 तसमाजा॥ दोहा॥ होहिंसगुणवर्षहिंसमनसरदुन्दुभी  
 बजा॥ विबुधबधूनाचहिंसुदितमंजलमङ्गलगा॥ ४०५  
 चौपाई॥ मागथसूतबन्दिनटनागर॥ गावहिंयशतिङ्गलोक  
 उजागर॥ जयध्वनिविमलवेदवरबाणी॥ दशादिशिसुनि  
 यसुमंगलसानी॥ विपुलवाजनेवाजनलागे॥ नभसरन  
 गरलोगअनुरागे॥ बनेवरातीवरणिनजाही॥ महामुदित  
 मनसखनसमाही॥ पुरवासिनतबराउजोहारे॥ देवतरा  
 महिंभएसखारे॥ करहिंनिष्कावरिमणिगणसीरा॥ बारि  
 विलोचनपुलकशरीरा॥ आरतिकरहिंसुदितपुरनारी॥  
 हर्षहिंनिरखिऊंअरवरचारी॥ शिविकासभगउहारउवा  
 री॥ देविडुलदिनिहोहिंसखारी॥ दोहा॥ रहिविधिसव  
 हीदेतसखआपराजदुआर॥ सुदितमातपरिकनकरहिंव



राम०  
वा०  
१२१

धूनसमेतकुमार॥५०॥ चौपाई॥ वरहिं आरती वारहिं बा  
रा॥ प्रेमप्रमोद कहै को पा रा॥ भूषण मणि पट नाना जाती॥  
करहिं निक्कावरि अगणित भोती॥ बधूनि समेत देवि सुत  
चारी॥ परमानन्द मगन महतारी॥ पुनि पुनि सीय राम क  
वि देखी॥ मुदित सुफल जग जीवन लेखी॥ सखी सीय मुख  
पुनि पुनि चाही॥ गान करहिं निज सकुत शराही॥ वरघ  
हिं समन ताणहिं ताण देवा॥ नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा  
देवि मनोहर चारि उजोरी॥ पारद उपमा सकल छंदोरी॥  
देत नवनहिं निपटल चुलागी॥ एकटक रही रूप अत्र रागी  
दोहा॥ निगमनीति कुलरीति करि अर्घ्य पां वडे देत॥ बधूनि  
सहित सुत परिक्रि सव चली लिवा अनिकेत॥५१॥ चौपाई॥  
चारि सिंहासन सहज सहाये॥ जनु मनोज निज हाथ बना  
ये॥ तिन पर कुं अरि कुं वर बैठारे॥ सादर पाय पुनीत पखारे॥  
भूपदी पनै वेद्य वेद विधि॥ पूजे वर दुलहिनि मंगल निधि  
वारहि बार आरती करही॥ व्यजन चारु चामर सिर छरही॥  
वस्तु अनेक निक्कावरि होही॥ भरी प्रमोद मात सब सोही॥  
पावा परमत तजनु योगी॥ अमृत लहा जनु सक्त रोगी॥  
जन्म रंकु जनु पारम पावा॥ अन्ध हिलोचन लाभ रुहवा॥



मूकबदनजनुषारइकाई॥मानअंसमरपूरजयपाई॥  
 दोहा॥ यहिसखत्रेपातकोटिगणपावहिंमातअनन्द॥  
 भाइनसहितविवाहिसुरआयेरबुझलचन्द॥४१॥ लो  
 करीतिजननीकरहिंदरदुलहिनिसऊवाहिं॥मोदवि  
 नोदविलोकिवउराममनहिमुसकाहिं॥४२॥ चौपाई॥  
 देवपितरपूजेविधिनीकी॥पूजीसकलवासनाजीकी॥  
 सबहिंवन्दिमांगहिंदरदाना॥भाइनसहितरामकल्याणा  
 अन्तरहितसुरआशिषदेही॥मुदितमातअचलभरिले  
 ही॥भूपतिबोलिवरातीलीन्हे॥यानवसनमणिभूषण  
 दीन्हे॥आईसपाइराखितररामहिं॥मुदितगणसबनिज  
 निजधामहिं॥पुरनरनारिसकलयहिराये॥वरवरवज  
 हिंआनन्दवधाये॥याचकजनयाचहिंजोइजोई॥प्रमुदि  
 तराउदेहिंसोइसोई॥सेवकसकलवजनियांनाना॥पूरणा  
 कियेदानसनमाना॥दोहा॥ देहिंअशीषजहारिसबगाव  
 हिंगुणगणगाय॥तबगुरुभूसरसहितगृहगवनकीन्द  
 नरनाथ॥४३॥ चौपाई॥ जोबसिष्ठअनुशासनदीन्हा॥लो  
 कवेदविधिसादरकीन्हा॥भूसरभीरदेविसबराती॥साद  
 रउठीभाग्यवउजानी॥पायषट्टारिसकलअन्दवाये॥पूजि



रामा०  
बा०  
१२२

भलीविधिभूषणैवाये॥ आदरदानप्रेमपरिपोषे॥ देत  
अशीषचलेमनतोषे॥ बड़विधिदीन्हगाथिसुतपूजा॥  
नाथमोहिसमथननहजा॥ कीन्हप्रशंसाभूषतिभूरी॥ रा  
गिनसहितलीन्हपदभूरी॥ भीतरभवनदीन्हवरवासू॥  
मनजगवतरहनृपरनिवासू॥ पूजेगुरुपदकमलवहो  
री॥ कीन्हविनयमनप्रीतिनयोरी॥ दोहा॥ बधूनसमेतऊ  
मारसवरागिनसहितमहीश॥ पुनिपुनिवन्दतगुरुचर  
णदेतअशीषमुनीश॥ ४१५॥ चौपाई॥ विनयकीन्हउरअ  
तिअनुरागे॥ सुतसम्पदाराविसबआगे॥ नेगमांगिसु  
निनायकलीन्हा॥ आशीर्वादबड़तविधिदीन्हा॥ उरथा  
रिरामहिंसीयसमेता॥ हरषिकीन्हगुरुगमननिकेता॥  
विप्रबधूऊलवृद्धबुलाई॥ चीरचारुभूषणपदिराई॥ बड़  
रिबुलाईसुआसिनिलीन्ही॥ रुचिविचारिपदिरावनदी  
न्ही॥ नेगीनेगयोगसबलेह्यी॥ रुचिअनुरूपभूषमणिदेह्यी  
प्रियपाइनपूज्यजेजाने॥ भूषतिभलीभांतिसनमाने॥ देव  
देविरनुवीरविवाह॥ वरषिप्रसूनप्रशंसिउक्ताह॥ दोहा  
चलेनिसानबजाउसरनिजनिजपुरसखपाउ॥ कहतप  
रखररामयशहर्षनहृदयसमाउ॥ ४१६॥ चौपाई॥ सबविधि



सबहिंसुदितनरनाऊ॥ रहाहृदयभरिपूरिउकाऊ॥ जहे  
 रनिवासतहोयगुथारे॥ सहितबधूटिनऊंअरनिहारे॥ लि  
 पगोदकरिमोदसमेता॥ कोकहिशकैभपउसखजेता॥  
 बधूसप्रेमगोदबेठारी॥ बारबारहियहर्षिदुलारी॥ देखि  
 समाजमुदितरनिवास्त॥ सबकेउरआनन्दबिलास्त॥ कहे  
 उभूषजिमिभपउविवाहू॥ सुनिसुनिहर्षहोतसबकाहू॥  
 जनकराजगुणशीलबडाई॥ प्रीतिरीतिसंपदासुहाई॥ ब  
 डविधिभूषभाटजिमिवरणी॥ राणीसबप्रमुदितसुनिक  
 रणी॥ दोहा॥ सतनसमेतनहाइनृपबोलिविप्रगुरुजाति  
 भोजनकीन्दअनेकविधिवरीपञ्चगइराति॥ ४९॥ चौपाई॥  
 मङ्गलगानकरहिंवरभामिनि॥ भइसखमूलमनोहरयामि  
 नि॥ अचैपानसबकाइंपाए॥ सगसगन्धभूषितकुविकाए  
 रामहिंदेखिरजायसुपाई॥ निजनिजभवनचलेसिरनाई॥  
 प्रेमप्रमोदविनोदबडाई॥ समयसमाजमनोहरताई॥ कहि  
 नसकहिंश्रुतिशारदशेष्ट॥ वेदविरचिमहेशगणेशू॥ सो  
 मैकहोंकवनविधिवरणी॥ भूमीनागसिरथरैकिथरणी॥  
 नृपसबभांति सबहिंसनमानी॥ कहिसुदवचनबुलाईरानी  
 बधूलरिकिनीपरचरआइ॥ राखेजनपनपलककीनाई॥ दो



रामा०  
वा०  
१२३

23

हा॥ लरिकाप्रमितउनीन्दवशशयनकरावडजा३॥ अस  
कहिगेविश्रामगृहरामचरणचितला३॥ ४९॥ चौपाई॥ भू  
पवचनसुनिसहजसहाए॥ जटितकनकमणिपलङ्कउसा  
ए॥ सभगसरभिपयफेनुसमाना॥ कोमलकलितसपेती  
नाना॥ उपवर्हणावरवरणिनजाहैं॥ स्वगसगन्धिमणिम  
न्दिरमाहैं॥ रतनदीपप्रुटिचारुचन्दोवा॥ कहतनबनैजान  
जेहिंजोवा॥ सेजरुचिररचिरामउठाये॥ प्रेमसमेतपलङ्कपौ  
छाये॥ आजापुनिपुनिभाइनदीन्ही॥ निजनिजसेजशयनति  
नकीन्ही॥ देखिप्याममृदुमञ्जुलगाता॥ कहहिंसप्रेमवचन  
सबमाता॥ मारगजातभयावनिभारी॥ केहिविधिताततार  
कामारी॥ दोहा॥ वोरनिशाचरविकटभटसमरगनैनहि।  
काङ्क॥ मारेसहितसहायकिमिखलमारीचसुदाङ्क॥ ५०॥  
चौपाई॥ मुनिप्रसादबलिताततम्हारी॥ ईशअनेककरवरैटा  
री॥ माखरषवारीकरिडुङ्गभाई॥ गुरुप्रसादसबवियापाई॥ मु  
नितियतरीलगतपदधूरी॥ कीरतिरहीभवनभरिधूरी॥ क  
मठपीठिपविकटकठोरा॥ नृपसमाजमहंशिवधनुतोरा॥  
विश्वविजययशजानकिपाई॥ आपभवनब्याहिसबभाई॥ स  
कलअमानुषकर्मतम्हारे॥ केवलकौशिककृपासुधारे॥ आ



जसफलजगजन्महमारे॥ देहितातविधुवदनतम्हारे  
 जेदिनगएतमहिंविनुदेखे॥ सोविरञ्चिजनिपारहिलेखे॥  
 दोहा॥ रामप्रतोषीमातसबकहिविनीतबरवयन॥ सुमिरि  
 शंभुगुरुविप्रपदकियेनीन्दवशनयन॥ ४२०॥ चौपाई॥ नी  
 न्दवदनसोहसठिलोना॥ मनइंसांजसरसीरुहसोना  
 वरवरकरहिंजागरणारी॥ देहिंपरस्परमङ्गलगारी॥ पु  
 रीविराजतिराजतिरजनी॥ रानीकहहिंवलोकइसजनी  
 सुन्दरबधुनसासुलैसोई॥ फणिपतिजनुशिरमणिउर  
 गाई॥ प्रातपुनीतकालप्रभुजागे॥ अरुणचूडवरबोलन।  
 लागे॥ बन्दीमागथगुणगणगाए॥ पुरजनद्वारजहारन  
 आए॥ बन्दिविप्रसुरगुरुपितृमाता॥ पाइअशीषमुदितस  
 बधाता॥ जननीसादरवदननिहारे॥ भूपतिसङ्गद्वारपगु  
 धारे॥ दोहा॥ कीन्हशौचसबसहजमुचिसरितपुनीतनहा  
 ३॥ प्रातक्रियाकरितातपहंआयेचारिउभाइ॥ ४२१॥ चौपाई  
 भूपविलोकिलयेउरलाई॥ बैढेहरधिरजायसुपाई॥ देवि  
 रामसबसभांजनी॥ लोचनलाभअवधिअनुमानी॥ पुनि  
 वसिष्ठमुनिकौशिकआए॥ सुभगआसनन्दिमुनिबैठाए॥  
 सतनममेतप्रजिपदलागे॥ निरविरामदोउगुरुअनुरागे॥

भुमरागः  
 ६



रामा०  
वा०  
२२४

कहहिंवसिष्ठयर्मरतिहासा॥ सनहिंमहीशसहितर  
निवासा॥ मुनिमनअगमगाथिसुतकरणी॥ सुदितव  
सिष्ठविपुलविधिवरणी॥ बोलेवामदेवसवसांची॥ कीर  
तिकलितलोकतिङ्गमांची॥ सुनिआनन्दभएसवकाहू॥  
रामलषणउरअधिकउक्ताहू॥ दोहा॥ मङ्गलमोदउक्ताह  
नितजाहिंदिवसइहिभांति॥ उगगीअवयआनन्दभरिअ  
धिकअधिकअधिकाति॥ ४२२॥ चौपाई॥ सुदिनशोधिक  
रकङ्कणाछोरे॥ मङ्गलमोदविनोदनथोरे॥ नितनवसु  
खसरदेविसिहाही॥ अवयजन्मयाचहिंविधिपाही॥  
विष्णामित्रचलननितचहही॥ रामसप्रेमविनयवशरह  
ही॥ दिनदिनशतगुणभूपतिभाऊ॥ देविसराहमहामु  
निराऊ॥ मांगतविदाराउअचुरागे॥ सुतनिसमेतदाढभ  
एआगे॥ नाथसकुलसंपदातहारी॥ मैंसेवकसमेतसुत  
चारी॥ करवसदालरिकनपरकोऊ॥ दरशनदेतरहवसु  
निमोऊ॥ असकहिराउसहितसुतरानी॥ परेउचरणामुख  
आवनवाणी॥ दीन्हिअशीषविप्रबड्ढभांती॥ चलेनप्रीति  
रीतिकहिजाती॥ रामसप्रेमसङ्गसबभाई॥ आयसुपाइफि  
रेपडंवाई॥ दोहा॥ रामरूपभूपतिभगतिव्याहउक्ताहआन



नृ॥ जात सराहत मनहिं मन मुदित गाथि कुलचनू ॥ ४  
 चौपाई ॥ वामदेवरचु कुलगुरु जानी ॥ बद्धरिगाथि सुतक  
 थावखानी ॥ सुनि सुनि सुयशमनहिं मन राऊ ॥ बरणात  
 आपन पुण्य प्रभाऊ ॥ बद्धरेलोगरजाय सुभएऊ ॥ सुतन  
 समेत नृपति गृहगएऊ ॥ जहंत हं राम व्याह सब गावा ॥  
 सुयशपुनीत लोकतिऊं कावा ॥ आप्याहिराम चरजव  
 तें ॥ वसे आनन्द अबध सबतवतें ॥ प्रभु विवां हजशभएउ  
 उकाऊ ॥ सकहिं न बरणि गिरा अहिनाऊ ॥ कवि कुलजी  
 वन पावन जानी ॥ राम सीय यशमंगल खानी ॥ तेंहिं तेंमें  
 कहु कहावखानी ॥ करण पुनीत हेतु निजवाणी ॥ छन्द  
 निज गिरा पावन करण कारण राम यश तलसी कह्यो ॥  
 रचु वीरचरित अपारवारिधि पारक विकवनेलह्यो ॥ १२३  
 उपवीत व्याह उकाह मऊल सुनहिं सादर गावही ॥ बैदेहि  
 राम प्रसाद ते जन सर्वदा सख पावही ॥ १२४ ॥ सुनिगाई क  
 हों गिरीश कन्याथय अधिकारी सही ॥ दोषक ॥ नित प्रीति  
 चतन सुनत हरि गुण भगति अनुपम तें लही ॥ १२५ ॥ रचु  
 वीरपद अनुशगज ललों भागि बेगि बुजावही ॥ एहि जानि  
 तलसी दास मनक्रमवचन हरि गुण गावही ॥ १२६ ॥ दोहा



रामा०  
बा०  
१२५

125

कठिनकालमलयसितमनुसायनककुनहो३॥ यहवि  
चारिविश्वासकरिहरिसुमिरेनुभसो३॥ ४२४॥ **द्वेयक॥**  
**सोरठा॥** मनहरिपदचनुरागुकरज्जत्यागिनानाकएट॥  
महामोहनिशिजागुसोवतबीतेकालबड॥ ४२५॥ **सिय**  
**रबुबीरविबाहजेसप्रेमसादरसनहिं॥** तिनकहंसदाउ  
काहमङ्गलायतनरामयश॥ ४२६॥ **द्वेयक॥** इति श्रीराम  
चरितमानसं सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञान  
वैराग्यसन्तोषसंपादनोनाम त्रुलसीकृतबालकाष्टः प्रथ  
मः सोपानः समाप्तः॥ शुभमस्तु॥ सिद्धिरस्तु॥ ॥ ॥ रामयनमः



जे श्रीगणेशायनमः ॥ अथ अयोध्या काण्ड लिख्यते ॥ श्लोक ॥  
 वामाङ्के च विभानिभूयः सुजादेवापगमस्तके ॥ भालेवाल  
 विधुर्गले च गरलं यस्यो रसि ब्यालराट् ॥ सोयम्भूति विभूष  
 णः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ॥ शर्वः सर्वगतः शिवः प्राशि  
 नभः श्रीशङ्करः पातमाम् ॥ १ ॥ प्रसन्नतो योनगतोभिषेकत  
 स्तथाननप्रोवनवासदुःखतः ॥ सुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य  
 मे सदा स्तसामञ्जलमङ्गलप्रदम् ॥ २ ॥ नीलाम्बुजश्यामल  
 कोमलाङ्गः सीतासमारोपितवामभागम् ॥ पाणौ महासायक  
 चारुचापनमामिरामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥ दोहा ॥ श्रीगुरु।  
 चरणसरोजरजनिजमनमुक्तरसधारि ॥ वरणौरघुवरवि  
 मलयशजोदायफलचारि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ जबतें रामब्याहिस  
 रयाप ॥ नितनवमंगलमोदवधाप ॥ भुवनचारिदशभूधरभा  
 री ॥ सकृतमेववरषहिंसखवारी ॥ अयिसिधिसंपतिनदी  
 सुहाई ॥ ३ ॥ उमगिअवयअम्बुधिकहंआई ॥ मणिगणपुरनर  
 नारिसजाती ॥ अचिअमोलसुखसबभांती ॥ कहिनजार  
 ककुनगरविभूती ॥ जनुइतनीयविरश्चिकरतूती ॥ सबवि  
 धिसबपुरलोगसखारी ॥ रामचन्द्रमुखचन्द्रनिहारी ॥ मुदि  
 तमातसबसखीसहेली ॥ फलितविलोकिमनोरथवेली ॥



राम  
श्र०  
१

रामरूपगुणशीलसभाऊ॥ प्रमुदितहोहिंदेबिसुनिराऊ  
दोहा॥ सबकेउरअभिलाषअसकरहिंसनाइमहेश॥ आपु  
अकतपुवराजपदरामहिंदेहिंनरेश॥ २॥ चौपाई॥ एकसम  
यसबसहितसमाजा॥ राजसभारतुयाजविराजा॥ सकल  
सकृतमूरतिनरनाह॥ रामसजशसुनिअतिहिंउकाह॥  
नृपसवरहहिंकृपाअभिलाषे॥ लोकपरहहिंप्रीतिरुधरा  
षे॥ त्रिभुवनतीनिकालजगमही॥ भूरिभारादशरथसम  
नाही॥ मंगलमूलरामसुतजासू॥ जोककु कहियघोरस  
वतासू॥ रामसभायमुऊरकरलीन्हा॥ बदनविलोकिमु  
ऊटसमकीन्हा॥ अदणसमीपभएसितकेशा॥ मनइंचौ  
अपनअसउपदेशा॥ नृपपुवराजरामकहंदेऊ॥ जीवनज  
न्मसफलकरिलेऊ॥ दोहा॥ इहविचारउरआनिनृपसदिन  
सअवसरपाइ॥ तनुपुलकितमनमुदितअतिगुरुहिंसना  
यउजाइ॥ ३॥ चौपाई॥ कहेउभुआलसुनियमुनिनायक॥  
भएरामसबविधिसदयक॥ सेवकसचिवसकलपरा  
वासी॥ जेहमारअरिमिउदासी॥ सबहिंरामप्रियजेहिंवि  
धिमोही॥ प्रभुआप्रीषजनतनुधरिसोही॥ दिवसहितप  
रिवारगोसाई॥ करहिंकोहसबगैसीहिंनई॥ जेप्रचरण



रेणुशिरथरंही ॥ तेजनुसकलविभववशकरंही ॥ मोहि  
 समानअरुभणउनहजे ॥ सबपायउं प्रभुपदरजपूजे ॥ अब  
 अभिलाषएकमनमोरे ॥ पूजिहिं नाथअनुग्रहतोरे ॥ सु  
 निप्रसन्नलखिसहजसनेह ॥ कहेउतरेशरजायसदेह ॥  
 दोहा ॥ राजनराउरामयशसबअभिमतदातार ॥ फलअ  
 नुगामीमहिप्रमणिमनअभिलाषतम्हार ॥ ४ ॥ चौपाई ॥  
 सबविधिगुरुप्रसन्नजियजानी ॥ बोलेउराउविहंसिमृ  
 दुबाणी ॥ नाथरामकहेकरियुवराज ॥ कहियकृपाकरि  
 करियसमाज ॥ मोहियकृतइहहोउउकाह ॥ लहहिंलोग  
 सबलोचनलाह ॥ प्रभुप्रसादशिवसवैनिवाही ॥ यहैलो  
 लसाहैमनमाही ॥ पुनिनशोचनतनुरहौकिजाऊ ॥ जेहि  
 नहोइपाछेपछिताऊ ॥ सुनिमुनिदशरथवचनसहाए ॥  
 मङ्गलमोदमूलमनभाए ॥ सुनिनृपजासुविमुखपकृता  
 ही ॥ जासुभजनविनुजरनिनजाही ॥ भएतम्हारतनयसो  
 इस्सामी ॥ रामपुनीतप्रेमअनुग्रही ॥ दोहा ॥ वेगिविलम्ब  
 नकरियनृपसाजियसवैसमाज ॥ सुदिनसमंगलतवहि  
 जबरनहोहिंयुवराज ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ सुदितमहीपतिमन्दि  
 रआए ॥ सेवकसचिवसमंत्रबुलाए ॥ कहिजयजीवसीपा



रामा०  
अ०  
२

2

आनंद

तिन्दनाए॥ भूपसुमङ्गलवचनसुनाए॥ प्रमुदितमोहि  
कहेउगुरुआज॥ रामहिंराजदेऊजुवराज॥ जोंपांचहिं  
मतलागौनीका॥ करऊहरषिद्वियरामहिंहीका॥ मंत्रीमु  
दितसुनतप्रियबाणी॥ अभिमतविरवपरेउजनुपानी॥  
विनतीसचिवकरहिंकरजोरी॥ जियहुजगतपतिवरष  
करोरी॥ जगमङ्गलभलकाजविचार॥ वेगहिंनाथनला  
इयवारा॥ नृपहिंमोदसुनिसचिवसुभाषा॥ वहुतविटप  
जनुलहीसशाखा॥ दोहा॥ कहतभूपसुनिराजकरजो।  
जोआयसुहोइ॥ रामराजअभिषेकहितवेगिकरहुसोइसो  
इ॥ चौपाई॥ हरषिमुनीशकहेउमृदुबाणी॥ आनहुसक  
लसतीरथयानी॥ ओषधिमूलफूलफलपाना॥ कहेना  
मगणिमङ्गलनाना॥ चामरचरमवसनबहुभांती॥ रोम  
पाटपटअगणितजाती॥ मणिगणमङ्गलवस्तुअनेका  
जोजगयोगभूषअभिषेका॥ वेदविहितकहिसकलवि  
धाना॥ कहेउरचहुंपुरभिविधाना॥ सकलरसालपुङ्ग  
फलकेरा॥ रोपहुवीथिनपुरचहुंफेरा॥ रचहुमनुमणि  
चौंकेचारु॥ कहहुवनावनवेगिवजारु॥ पूजहुअणप  
तिगुरुकुलदेवा॥ सबविधिकरहुभूमिसुरसेवा॥ दोहा॥



ध्वजपताकतोरणकलशसज्जतरंगरथनाग॥ शि  
 रथरिमुनिवरवचनसबनिजनिजकाजहिंलाग॥७॥  
 चौपाई॥ सुनिसुमंत्रमनप्रतिहरषाना॥ जीवनजन्म  
 सफलकरिमाना॥ जहंतहंथावनकोटिपदाए॥ मङ्ग-  
 लद्रव्यसकललैआए॥ कनककलशसजिथरैदारे॥  
 गजरथतरंगमनेकसवारे॥ बडविधिबांधेवन्यनवारा  
 ध्वजपताकमणिवसनअपारा॥ बनानगरनदिवरणा  
 जाई॥ सकललोकशोभापुरछाई॥ तें **इहातकक्षेपक**  
**है॥** जेहिंमुनीशजोआयसुदीन्हा॥ सोजनुकाजप्रथम  
 तेइकीन्हा॥ विप्रसाधुसरसूजतराजा॥ करतरामहित  
 मंगलकाजा॥ सुनतरामअभिषेकसहावा॥ बाजेग  
 हगहेअवधवधावा॥ रामसीयतनुसगुणजानाए॥ फ  
 रकहिंमंगलअङ्गसहाए॥ पुलकिसप्रेमपरस्परक  
 हंही॥ भरतआगमनसूचकप्रहंही॥ भएवडतदिनअ  
 तिअवसेरी॥ सगुणप्रतीतिभेंटप्रियकेरी॥ भरतसरि  
 सप्रियकोजगमाही॥ यहैसगुणफलदसरनाही॥ रा  
 महिंशोचबंधुदिनगती॥ आउनिकमठहृदयजेहिंभां  
 ती॥ दोहा॥ इहिंअवसरमंगलपरमसुनिहरषेउरनिवा



रामा.  
अ.  
३

स॥ शोभितलखिविधुवदतजत्रारिथिवीचिविलास  
**चौपाई॥** प्रथमजाउजिन्हवचनसनाए॥ भूषणवसनभू  
रितिहूपाए॥ प्रेमपुलकतनुमनचहसमी॥ मंगलसा  
जसजनसबलागी॥ चौकेचारुसुमित्रापुरे॥ मणिमय  
विविधभांतिअतिरूरे॥ आनन्दमगनसममहतारी॥  
दिपदानवज्जविप्रहंकारी॥ पूजेउग्रामदेवसरनाया॥ क  
हेउबहोरिदेनबलिभाग॥ जेहिंविधिहोरराजकल्याणा  
गावहिंमङ्गलकोकिलवयनी॥ विधुवदनीमृगशावक  
नयनी॥ **दोहा॥** रामराजअभिषेकसुनिदियहरषेनरा  
नारि॥ लगीसुमंगलसजनसबविधिअनुकूलविचारि  
**चौपाई॥** तवनरनाहवसिष्ठबुलाये॥ रामधामशिखदेन  
पढाये॥ गुरुआगमनसननरचुनाया॥ द्वारआइनाये  
उपदमाया॥ सादरअर्चदेउचरयाने॥ षोडशभांतिपू  
जिसनमाने॥ गहेचरणसियसहितबहोरी॥ बोलेराम  
कमलकरजोरी॥ भेदकसदनखामिआगमन॥ मङ्ग  
लमूलअमङ्गलदमन॥ तदपिउचितअसबोलिसप्रीती  
पटपनायकाजअसनीती॥ प्रभुतातजिप्रभुकीन्हस  
नेह॥ भएउपनितआजममगेह॥ आयसहोउसोक रि

८॥

९॥



यगोसाई॥ सेवकल है खामि सेवकाई॥ दोहा॥ सुनि स  
 नेह साने वचन मुनि रघुवर हिं प्रसेषा॥ राम कसन तम  
 कह ऊअ सहं सबे शायवतं स॥ १०॥ चौपाई॥ वरणि राम  
 गुणशील सुभाऊ॥ बोले प्रेम सुल कि मुनि राऊ॥ भूपस  
 जे उअ भिषेक समाज॥ चाहत देन तम हिं युवराज॥ रा  
 मकर ऊअ सब संयम आज॥ जों विधि कुशल निवा है का  
 ज॥ गुरु शिख देइ राउ पहेंग पऊ॥ राम हृदय जनु विस्म  
 य भएऊ॥ जन मे एक सऊ सब भाई॥ भोजन शायन के  
 लिल रिकाई॥ कर्ण वेध उषवीत विवाहा॥ सऊ सऊ स  
 व भए उउ कहा॥ विमल वंश उहे अचुचित एऊ॥ बंधु वि  
 हाइ बडे हि अ भिषेऊ॥ प्रभु समे मप किता नि सहारै॥ ह  
 र हिं भक्त मन की ऊटिलाई॥ दोहा॥ ते हिं अवसर आएल  
 षणम गन प्रेम आनन्द॥ सनमाने प्रिय वचन कहिर वि  
 कुल कै रवचन्द॥ ११॥ चौपाई॥ बाज हिं बाजन विविध वि  
 धाना॥ पुर प्रमोदन हिं जाइ वखाना॥ भरत आगमन स  
 कल मनावहिं॥ आवहिं वेगिन यन फल पावहिं॥ हाट  
 वाट बरगली अयाई॥ कह हिं परस्पर लोक लगारै॥ का  
 लिल गन भलिके निकारा॥ प्रजि हिं विधि अ भिलाष



रामा०  
श्र०  
५

हमारा॥ कनकसिंहासनसीयसमेता॥ वैदेहिंरामहो  
इचितचेता॥ सकलकहहिंकबहोइहिंकाली॥ विघ्ननम  
नावहिंदेवऊचाली॥ तिनहिंसोहावनअवधवधावा॥ चोर  
हिंचांदनिरातिनभावा॥ पारदबोलिविनयसरकरही॥ बा  
रहिंवारणंइलैपरही॥ दोहा॥ विपतिहमारिविलोकिबडि  
मातकरियसोइआज॥ रामजाहिंदनराजतजिहोइसक  
लसरकाजु॥ १२॥ चौपाई॥ सुनिसरविनयदाढिपक्षिताही  
भईउसरोजविपिनहिमराही॥ देखिदेवपुनिकहहिंवहो  
री॥ माततोहिनहिथोरीउखोरी॥ विस्मयहर्षरदितरचुरा  
ऊ॥ तमजानऊरचुवीरसभाऊ॥ जीवकर्मवशदुखदुख  
भागी॥ जाइयअवधदेवदितलागी॥ बारवारगहिचरणस  
कोची॥ चलीविचारिविबुधमतिपोची॥ उंचनिवासनीचक  
रतही॥ देखिनशकहिंपराविभूती॥ आगिलकाजवि  
चारिवहोरी॥ करिहैंचाहऊशलकविमोरी॥ हरषिहृदयद  
शरयपुरआई॥ जनुयददशादुसहदुखदाई॥ दोहा॥ नाम  
मन्यरामन्दगतिचेरीकेकथिकेरि॥ अयशपिठारीताहि  
करिगईगिरामतिफेरि॥ १३॥ चौपाई॥ देखिमन्यरानगर  
वनावा॥ मरुलमजुलवाजवधावा॥ पूकेसिलोगन्हका



हउछाह ॥ रामतिलकसुनिभाउरदाह ॥ करैविचारऊबुद्धि  
 ऊजाती ॥ होइअकाजकवनविधिसती ॥ देखिलागिमथुऊरि  
 लकिराती ॥ जिमिगवतकेलेउंकेदिभांती ॥ भरतमातपहंग  
 श्विलखानी ॥ काअनमनीहंसिकहदिसिरानी ॥ उतरदेहन  
 लेउसंस्त ॥ नारिचरितकरिछारतिआंस्त ॥ हंसिकहरानिगा  
 लबउतोरे ॥ दीन्हलषणशिषअसमनमोरे ॥ तबऊनबोली  
 चेरिवडिपापिनी ॥ छाउंसासकारिजनुसांपिनी ॥ दोहा ॥ सभ  
 यगनिकहकहसिकिनऊशलराममहिपाल ॥ भरतलषण  
 रिपुदवनसुनिभाऊवरीउरशाल ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ कतशिखदे  
 इहमहिंकोउमाई ॥ गालकरबंकिहिकरबलपाई ॥ रामहिं  
 छाडिऊशलकेहिशज ॥ जाहिनरेशदेतयुवराज ॥ भाकोश  
 ल्यहिंविधियतिदाहिन ॥ देखतगर्वरहतउरनाहिन ॥ देखऊ  
 कसनजाइसबशोभा ॥ जोअवलोकिमोरमनदोभा ॥ पूतवि  
 देशनशोचतमारे ॥ जानतिहोवशानाहहमारे ॥ नींदबहुत  
 प्रियसेजतगई ॥ लषऊनभूषकपटचतगई ॥ सुनिप्रियवच  
 नऊटिलमनजानी ॥ तुकिऊवरीसनकहअसरानी ॥ पुनिअ  
 सकबऊंकहसिचरफोरी ॥ तौथरिजीभकटावोंतोरी ॥ दोहा ॥  
 कानेखोरेरुवरेऊटिलऊचालीजानि ॥ नित्यविशेषपुनिचेरि



रामा०  
प्र०  
५

कहिभरतमातमुसकानि॥१५॥चौपाई॥प्रियवादिनिशि।  
एवदीन्हेउतोही॥सपनेइतोपरकोपनमोही॥सुदिनसुमङ्ग-  
लदायकसोई॥तोरकहाफुरजिहिंदिनहोई॥जेदस्वामिसे  
वकलबुभाई॥यहदिनकरजलरीतिसुहाई॥रामतिलक  
जोंसाचेइंकाली॥मंगुदेउंमनभावतप्राप्ती॥कौशल्याशाम  
शबमहतारी॥रामहिंसहजसुभावपियारी॥मोपरकरहिं  
सनेहविशेषी॥मैंकरिप्रीतिपरीक्षादेखी॥जोंविधिजन्मदेइ  
करिकोइ॥होहिंरामसियपूतयतोइ॥प्राणतेंअधिकराम  
प्रियमोरे॥तिनकेतिलकलोभकसतोरे॥दोहा॥भरतशप  
यतोहिसत्यकइंपरिहरिकपटदुराव॥हर्षसमयविस्मयक  
रसिकारणामोहिसुनाव॥१६॥चौपाई॥एकहिंबारयाशसब  
पूजी॥अवककुकरनजीभकरिइजी॥फोरेयोगकपारअभा  
गा॥भलौकहतदुखयोरेंडलागा॥कहइजूठफुरवातवताई  
तेप्रियतमहिंकरुईमोंमाई॥हमइकहवअवठऊरसोहानी  
नाहितमोनरहवदिनराती॥करिकुरुषविधिपरवशकीन्हा  
बोवामोलनियचहिजोदीन्हा॥कोउचपहोउहमैकाहानी॥  
चेरीकांडिनहोउबगानी॥जारजोगसभावहमारा॥अनभ  
लदेखिनजारतमारा॥तातेंककुकरवातअनुसारी॥हमव



देविवडिचूकरहमारी॥ दोहा॥ मूढकपटप्रियवचनसुनिती।  
 यग्रथरबुधिरानि॥ सुरमायावशवेरिनिहिंसुदृढजानिपति  
 ग्रानि॥ १७॥ चौपाई॥ सादरपुनिपुनिपूकतिओदी॥ शबरीगा  
 नमृगीजनमोदी॥ तसमतिफिरीअहैजसभावी॥ रहसिचेरि  
 वातभलिफावी॥ तमपूकडमेंकहतउराऊं॥ थरेझमोरचर  
 फोरीनाऊं॥ सजिप्रतीतिबडविधिगठिछोली॥ आयुथसा  
 छसतीतबबोली॥ प्रियसियरामकहातमरानी॥ रामहिं  
 मप्रियसोऊरवानी॥ रहाअथमदिनसोअबबीते॥ समयपा  
 ररिपुहोहिंपिरीते॥ भानुकमलऊलपोषनिहारा॥ बिजुज  
 लजारिकरैसोइहारा॥ जरितह्यारिचहसवतिउखारी॥ हूं  
 थडकरिउपाइवरवारी॥ दोहा॥ तमदिनशोचसोहागबल  
 निजवशजानइराव॥ मनमलीनमुहमीढनृपराउरसलर  
 सभाव॥ १८॥ चौपाई॥ चतरगंभीरराममहतारी॥ बीचपाइनि  
 जकाजसहारी॥ पठएभरतभूपननिओरे॥ राममातमति  
 जानबरोरे॥ सेबहिंसंकलसवतिमोहिनीके॥ गर्वितभरत  
 मातबलपीके॥ पालतह्यारकोशिलहिमाई॥ चतरकपट।  
 नहिपरतलावाई॥ राजहितमपरप्रीतिविशेषी॥ सबतिसुभा  
 वशकैनहिदैषी॥ रचिप्रचाउभूपहिअपनाई॥ रामतिलकहि



रामा०

अ०  
६

तलगनभराई॥ इहिंजलउचितरामकहटीका॥ सबहिंसो  
हाइमोहिसठिनीका॥ आगिलवातसमुजिउरमोही॥ देउंदै  
वफिरिमोफलओही॥ दोहा॥ रविपचिकोटिककुटिलप  
नकीन्हेसिकपटप्रबोध॥ कहेसिकथाशतसौतिकरजातेब  
छैविरोध॥ १५॥ चौपाई॥ भावीवशाप्रतीतिउरआई॥ एकिरानि  
निजशायथदिवाई॥ कासूकडतमअबडनजाना॥ निजहि  
तअनहितपशुपदिचाना॥ भएउपाखदिनसजतसमाज॥ त  
मसुथिपायइमोसनआज॥ खाइयपहिरियराजतम्हारे॥ स  
त्यकहौंनहिदोषहमारे॥ जोंअसत्यककुकरववनाई॥ तौवि  
धिदेइहिंसोहिसजाई॥ रामहिंतिलककालिजोंभएऊ॥ तम  
कहंविपतिबीजविधिवएऊ॥ रेखावेचिकहोंवलभाखी॥  
भामिनिभयिइदुधकीमाखी॥ जोंसतसहितकरइसेवका  
ई॥ तौचररहइनग्रानउपाई॥ दोहा॥ कडुवनीतहिंदीन्हदुख  
तमहिंकौशिलादेव॥ भरतवन्दिष्टहसेइहेंगमलषणकरने  
व॥ २०॥ चौपाई॥ केकयसतासनतकडुवाणी॥ कहिनसकै  
ककुसदमिसुखानी॥ तनुपसेवकदलीजिमिकापी॥ ऊवरी  
दशानजीभतबचापी॥ कहिकहिकोटिककपटकहानी॥  
भीरजपरइप्रबोयेसिरानी॥ कीन्हेसिकठिनपछाउकपाडु॥



जिमिननवैफिरिउकठिऊकादू॥ फिराकर्मप्रियलारुऊचाली  
 वकिहिंसराहतिमनइमराली॥ सुचमम्यरावातफुरतोरी॥ दा  
 दिनआंविफरकनितमोरी॥ दिनप्रतिदेखोंरातिऊसपना॥  
 कहोंनतोहिमोदवशअपना॥ काहकरोंसखिअदसभाऊ॥ द  
 दिनवामजानोंनहिकाऊ॥ दोहा॥ अयनेचलतनआजलगिअ  
 नभलकाऊककीन्ह॥ केहिअवएकहिंवारमोहिदैवदुसहडु  
 खदीन्ह॥ २१॥ चौपाई॥ नैहरजन्मभरववरुजाई॥ जिअतनकर  
 वसबतिसेवकाई॥ अरिवशादेवजिआवैजाही॥ मरएनीक  
 तेहिजीवनचाही॥ दीनवचनकदबडविथरानी॥ सुनिऊवरी  
 तियमायाठानी॥ असकसकहइमानिमनऊना॥ सुखसोहा  
 गतमकददिनहूना॥ जोराउरअसअनभलताका॥ सोपाइदि  
 यदफलपरिपाका॥ जबतेंऊमतिसुनामेंस्वामिनि॥ भूखन  
 वासरनीदनयामिनि॥ पूकागुणिन्हरेखतिनखोंची॥ भरत  
 भुआलहोवयहसोंची॥ भामिनिकरइतोकहोंउपाऊ॥ देंत।  
 म्हरेसेवावशराऊ॥ दोहा॥ परोंकूपतववचनलगिसकोंपूत  
 पतित्यागि॥ कहेसिमोरडुखदेखिवउकसनकरवहितलागि  
 चौपाई॥ ऊवरीकरीकचुलिकैंकेई॥ कपटकुरीउरपाहनटेई॥  
 लषेनरानिनिकदडुखकैसे॥ चरेहरितरणवलिपशुजैसे॥

लोहराणा

२३



रामा.  
श्र.  
७

सनतवातमृदुअन्तकठोरी॥ देतिमनजंमथुमाझरवोरी॥  
कहेचेरिसुथिअहैकिनाही॥ स्वामिनिकऊकणामोहिपांही  
दुइवरदानभूपसनयाती॥ मांगऊआजुजडावऊकाती॥ सु  
तहिंराजरामहिंवनवासू॥ देऊलेऊसबसवतिऊलासू॥ भू  
पतिरामशयजबकरई॥ तबमांगऊजेहिंवचनटरई॥ हो  
इअकाजुआजुनिशिबीते॥ वचनमोरफुरमानऊजीते॥ दोहा  
वउकुछातकरिपातकिनिकहेसिकोपगृहजाऊ॥ काजसे।  
वारऊसजगहोइसहसाजनिपतिआऊ॥ २३॥ चौपाई॥ ऊवरि  
हिंरानिप्राणप्रियजानी॥ वारवारवडिबुदिवखानी॥ तोहि  
समहितनमोहिसंसार॥ बहेजातकैभयिसिअधार॥ जों  
विधिपुरवमनोरथकाली॥ करोंतोहिचखप्रतरिआली॥ व  
ऊविधिचेरिहिंआदरदेई॥ कोपभवनगवनीकैकेई॥ विपति  
कीजवर्षाअतचेरी॥ भूइभइऊमतिकैकयीकेरी॥ पाइकप  
टजलयंऊरजामा॥ वरदोउदलफलडावपरिणामा॥ कोपस  
माजसाजिसबमोई॥ राजकरततेहिऊमतिविगोई॥ राउर।  
नगरकोलारुलहोई॥ यदऊचालिकऊजाननसोई॥ दोहा॥  
प्रश्रुदितपरनरनारिसबसाजिसमडूलचार॥ एकप्रविश।  
हिंपकनिर्गमहोभोरभूपदरवार॥ २४॥ चौपाई॥ बालसखास



निहियहरषाही॥ मिलिदशपांचरामपहिंजाही॥ प्रभुआद  
 रहिंप्रेमपहिचानी॥ पुछुहिंजुशलतेममृदुबाणी॥ फिरहिंभ  
 वनप्रभुआयसुपाई॥ करतपरस्पररामबडाई॥ कोरबुवीरसरि  
 ससंसार॥ शीलसनेहनिवाहनहार॥ जेहिंजेहिंयोनि कर्म  
 वशभ्रमही॥ तहेतहेईशदेवयहहमंदी॥ सेवकरुमस्वामीसि  
 यनाऊ॥ होउनाथयहगोरनिवाऊ॥ असप्रभिलाषहृदयसबा  
 काहू॥ केकयसुताहृदयअतिदाहू॥ कोनऊसङ्गतिपाइनशाई  
 रहैननीचमतेचतगई॥ दोहा॥ सांऊसमयसानन्दनृपगणके  
 कयीगोह॥ गवननिहुरतानिकटकियजनुपरिदेहसनेह॥  
 चौपाई॥ कोपभवनसुनिसऊचेराऊ॥ भएवशअगमनपरैनण  
 ऊ॥ सुरपतिवसहिंवाऊबलजाके॥ नरपतिरहहिंसकलरुष  
 ताके॥ सोसुनितियरिसगएसुखाई॥ देवऊकामप्रतापवडा  
 ई॥ मूलऊलिशअसिअगवगनिहारे॥ तेरतिनाथसुमनश  
 रमारे॥ सभयनरेशप्रियायहंगणऊ॥ देहिदशाडखदारुणभ  
 एऊ॥ भूमिप्रायनपटमोटपुराणा॥ दियेअरितनुभूषणाना  
 ऊमतिहिंकसऊरूपताफावी॥ अनअदिवातसूचजनुभावी  
 जाइनिकटनृपकरुमृदुबाणी॥ प्राणप्रियाकेहिहेतरिसानी  
 कन्द॥ केहिहेतरानिरिसानिपरमतपाणिपतिहिंनिवारई॥

५



रामा०  
श्र०  
८

मानं ससेषभुजङ्गभामिनिविषमभातिनिहारई॥१॥ द्यौवा  
सनारसनादशनवरमर्मराहरदेखई॥ तलसीचूपतिभवित  
व्यतावशकामकोतकलेखई॥२॥ सोरठा॥ बारवारकहराउ  
समुखिसलोचननिपिकवयनि॥ कारणमोहिसनाउगज  
गामिनिनिजकोपकर॥२६॥ चोपाई॥ अनहिततोरप्रियाके  
हिंकीन्हा॥ केहिदुःशिरतेहियमचहलीन्हा॥ कइकेहिरंक  
हिंकरौंनरेष्टू॥ कइकेहिनृपहिनिकारौंदेष्टू॥ शकौंतोरअ  
रियमरझंमारी॥ कहाकीटवपुरेनरनारी॥ जानसिमोरसभा  
ववरोरू॥ मनतवधाननचन्द्रचकोरू॥ प्रियाप्राणसतसर्व  
समोरे॥ परिजनप्रजामकलवशतोरे॥ जोककुहोंकपटा  
करितोही॥ भामिनिरामशपयशतमोही॥ विहंसिमोगुम  
नभावतिबाता॥ भूषणसाजमनोहरगाता॥ घरीऊघरीसमु  
जिजियदेष्टू॥ बेगिप्रियापरिहरइऊवेष्टू॥ दोहा॥ यहसनि  
मनगुणिशपयवडिविहंसिउगीमतिमन्द॥ भूषणसजनि  
विलोकिमृगननइंकिरातिनिफन्द॥२७॥ चोपाई॥ पुनिकह  
राउसइदजियजानी॥ प्रेमपुलकिमृदुमञ्जुलबाणी॥ भामि  
निभणउतोरमनभावा॥ घरवरनगरआनन्दवधावा॥ रामहिं  
देउंकालियुवराज॥ सजइसलोचनिमङ्गलसाज॥ दलकि



उठी सुनिवचन कठोरा ॥ जनु कुद्रग पउपाक वर तोरा ॥ ऐसी  
 पीर विहंसि उर गोई ॥ चोर नारि जिमि प्रगटन रोई ॥ लखी भू  
 पक पट चवराई ॥ काटि कुटिल मणि गुरूप जाई ॥ यद्यपि  
 नीति निपुणान रनाइ ॥ नारि चरित जल निधि अवगाइ ॥  
 कपट सनेह वजाइ वहोरी ॥ बोली विहंसि नयन मुख मोरी ॥  
 दोहा ॥ मांगु मांगु तम कहइ पिय कवन देइ नहि लेइ ॥ दे  
 न कहै उवरदान डुर सोउ पावन सनेइ ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ जानेउ  
 मर्म राउ हंसि कहई ॥ तमहि कोहाव परम प्रिय अहई ॥ या  
 तीरा खिन मागेउ काऊ ॥ विसरि गए मम भोर सुभाऊ ॥ ऊ  
 ठ ऊँ दोष हमहि जनि देह ॥ डुर के चारि मांगि किन लेह ॥ २  
 चुकल रीति सदा चलियाई ॥ प्राण जाइ वरु वचन न जाई ॥  
 नहि अ सत्य सम पातक पुञ्जा ॥ गिरि सम होहि कि कोटिक  
 पुञ्जा ॥ सत्य मूल सब सकृत सहाए ॥ वेद पुराण विदित  
 मुनि गाए ॥ तेहि परगम शपथ करि आई ॥ सकृत सनेन अ  
 वधिर बुलाई ॥ वात टजाइ ऊमति हंसि बोली ॥ ऊमति विह  
 ऊकुल हजनु खोली ॥ दोहा ॥ भूपम नोरय सुभगवन सु।  
 ख ॥ सुविह ऊ समाज ॥ भिलिनि जनु क्काउन चहति वच  
 न भय ऊ रवाज ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ सुनइ प्राण पति भावत जीका



रामा.  
अ.  
५

देऊ एकवर भरतहि टीकाः॥ दूसरवर मांगों कर जोरी॥ ना  
थ मनोरथ पुरब डमोरी॥ तापसवेष विशेष उदासी॥ चौ  
दहवर्ष रामवनवासी॥ सुनितियवचन भूपउर शोक॥ श  
शिकरउदित विकलजिमिको कू॥ संभ्रम मुरखि परे नृ  
पकैसे॥ काटेउ पंख परा पगजैसे॥ अति व्याकुल तनु विव  
रन केशा॥ धरिपीर जत बऊटे नरेशा॥ गणसहमिक कुक  
हिनहि आवा॥ जनु सिचानवन ऊपटे उलावा॥ विवरणा  
भपउनि पटमहि पालू॥ दामि निरुतेउ मन डतरुतालू॥  
माये हाथ मूँदि दोउ लोचन॥ तनु धरि शोचला गुजनु शो  
चन॥ मोर मनोरथ सरतरु फूला॥ फलत करिणी जमु  
हतेउ समूला॥ अबधउ जारि कीन्ह कैकेई॥ दीन्हे सिअच  
ल विपति कैनेई॥ दोहा॥ कवने अवसर का भपउ गणउ  
नारि विस्वास॥ योग सिद्धि फल समय जिमियति हिअ।  
विद्यानाश॥ ३०॥ चौपाई॥ इदिविधि राउ मनहिं मन जाषा  
देवि कुभांति कुमति मन माषा॥ भरत किराउर पूतन हो  
ही॥ आने डमोल बेसाहि कि मोही॥ जो सुनिशरयसला  
गुत म्भारे॥ काहेन बोले डवचन सम्भारे॥ देऊ उतरयस  
कह डकिनाही॥ सत्यसिन्धु तमर बुजल माही॥ देन कहे



ऊवरअवजनिदेऊ॥ तजऊसत्यजगअपयशलेऊ॥ सत्य  
 सराहिकहेउवरदेना॥ जानेऊलेइहिंमांगिचवेना॥ शिवि  
 दधीचिवलिजोककुभाषा॥ तबुथनतजेउवचनपणाराषा  
 अतिकटुवचनकहतिकैकेई॥ मानऊलौनजरेपरदेई॥ दो  
 हा॥ धर्मधुरन्धरधीधरिनयनउचारेराउ॥ शिरधुनिलीन्द  
 उमांसअतिमारेसिमोहिऊवाउ॥ ३१॥ चौपाई॥ आगेदेखिअ  
 रतिरिसभारी॥ मनइंरोषतरवारिउचारी॥ मूढऊबुद्धिधा  
 रनिदराइ॥ धरिऊवरीखरशानबनाइ॥ लघेउमहीपकरा  
 लकदोरा॥ सत्यहिंजीवनलेइहिंमोरा॥ बोलेराउकठिनक  
 रिक्काती॥ बाणीविनयनताहिसोहाती॥ मोरेभरतरामदो  
 उआंखी॥ सत्यकहौंकरिशाङ्करसाखी॥ प्रियावचनकसक  
 हसिऊभांती॥ रीतिप्रतीतिप्रीतिकरिहाती॥ अबशिदूतमें  
 पढउवप्राता॥ येहैंवेगिसुनतदोउभाता॥ सदिनसाथि  
 सबसाजसजाइ॥ देहोंभरतहिंराजबजाइ॥ दोहा॥ लोभा  
 नरामहिंराजकरवऊतभरतपरप्रीति॥ मेंवउकोटविचा  
 रकरिकरतरहेउंचपनीति॥ ३२॥ चौपाई॥ रामशपथशत  
 कहेंउसभाउ॥ राममातमोहिकहानकाउ॥ मेंसबकीन्द  
 तोहिविनुसूके॥ तातेपरेउमनोरथकूके॥ रिसपरिहरुअ



रामा.  
अ.  
१०

बमंगलसाज॥ ककु दिनगणभरतयुवराज॥ एकहिं  
वातमोहिदुखलागा॥ वरहसरअसमज्जसमंगा॥ अज  
इंदुदयदहततोहिआंचा॥ रिसपरिहासकिसांचइंसांचा  
वडतजिरोषरामअपराधू॥ सबकोउकहतरामसरिसाधू  
तैंइंसराहसिकरसिसनेहू॥ अबसुनिमोहिभणउसन्देहू  
जासुसभावअरिअनुकूला॥ सोकिमिकरहिंमातप्र  
तिकूला॥ दोहा॥ प्रियाहासरिसपरिहरइमंगुविचा।  
रिविवेक॥ जेहिदेखौंअवनयनभरिभरतराजअभिषे  
क॥ ३३॥ चौपाई॥ जियैमिनवरुवारिविहीना॥ मणिवि  
नुफणिकजियैदुखदीना॥ कहौंसुभावनकुलमनमा  
ही॥ जीवनमोररामविनुनाही॥ समुझिदेखतैंप्रियाप्रवी  
णा॥ जीवनरामदरशाआधीना॥ सुनिमृदुवचनऊमति  
अतिजरई॥ मनइंअनलआइतिचृतपरई॥ कहइकह  
इकिनकोरिउपाया॥ इहांनलागिहिराउरमाया॥ देइ  
किलेइअयशकरिनाही॥ मोहिनबडतप्रपंचसोहाही  
रामसायुतमसायुसजाना॥ राममातभलितमपहि।  
चाना॥ जशकोपाल्यामोरभलताका॥ तसफलदेउंउदै  
करिणाका॥ दोहा॥ होतप्रातमुनिवेषथरिजौंनरामवन



जाहिं॥ मोरमरणा राउर अय शान्द पसमुजिय मनमाहिं॥ २५  
 चौपाई॥ असकहि कुटिल भई उठि गळी॥ मान झंरोष तरङ्गि  
 निवाळी॥ पाप पहार प्रगट भई सोई॥ भरी कोथ जल जाई न जो  
 ३॥ दुइवर कूल कठिन हठ धारा॥ भवर कूवरी वचन प्रचारा॥  
 जहति भूपरूप तरु मूला॥ चली विपति वारिधि अउ कूला॥  
 लखी न रेश वात सब सांची॥ तिय मिष मीचुणी सपर नाची॥  
 गहि पद विनय कीन्ह वैठारी॥ जनि दिन कर कूल हो सिऊढारी॥  
 मांगु माय अवही देउं तोही॥ राम विरह जनि मार सिमोही  
 राखु राम कहं जेहि तेहि भांती॥ नाहित जरि दिंज नम भरिका  
 ती॥ दोहा॥ देवी व्याधि असाध्य नृप परे उथरणि मुनि माय॥ क  
 हत परम आरत वचन राम राम रघुनाथ॥ २५॥ चौपाई॥ व्याक  
 ल राउ शिथिल सब गाता॥ करिणी कल्प तरु मन झनि पाता  
 काट सूष मुख आवन बाणी॥ जिमि पाटी न दीन विनु पानी॥  
 पुनिकह कटु कठोर कैकेई॥ मन झवाव महं माझ रदेश॥ जौं अ  
 नऊ अस करत वर एऊ॥ मांगु मांगु तम किं दिंबल कहेंऊ॥ दुइ  
 कि होइ एक समय भुआला॥ हंसवट गड फलार बगाला॥ दानि  
 कहाउ वअरु कृपाणाई॥ चाहिये मऊ शल गौताई॥ काउ हव  
 चन कि थीर जपरऊ॥ जनि अवलाइ वकरणा करइ॥ तनु तिय



तनयधामधनधरणी ॥ सत्यसिंधुकहंकिपीरजधरऊ ॥  
जनिअबलाश्वकरुणाकरऊ ॥ तनुतियतनयधामधनध  
रणी ॥ सत्यसिंधुकहंहासमवरणी ॥ दोहा ॥ मर्मवचन।  
सुनिराउकरककुकदोषनहितोर ॥ लागेउतोहिपिशाच  
जिमिकालकहावतमोर ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ चहतनभरतभूष।  
तिहिंभोरे ॥ विधिवशाऊमतिवसीउरतोरे ॥ सोसबमोरपाप  
परिणाम ॥ भएऊदाहंरजिहीविधिवाभू ॥ सबसबसिदि  
फिरिअवथसुहाई ॥ सबगुणधामरामप्रभुताई ॥ करिहंदि  
भाइसकलसेवकाई ॥ होइहैंतिअपुररामवडाई ॥ तोरकल  
झूमोरपछिताऊ ॥ मुयेइनमिटदिनजाइहिकाऊ ॥ अबतोहि  
नीकलागुकरुसोई ॥ लोचनवोटवैठमुखगोई ॥ जोलौजि  
घोंकहोंकरजोरी ॥ तोलौजनिककुकरसिवहोरी ॥ फिरि  
पछितैहसिअन्नअभागी ॥ मारेसिगायनिहारुसुलागी।  
दोहा ॥ परेउराउकरिकोटिविधिकाहेकरसिनिदान ॥ कप  
टसयानिनकरतिककुजागतिमनऊमणान ॥ ३७ ॥ चौपाई  
रामरामरटिविकलभुआल ॥ जनुविनुपंखविहंगविहाल  
हृदयमनावभोरजनिहोई ॥ रामहिंजानकरहुंजनिकोई ॥  
उदयकरऊजनिरविरघुऊलगुर ॥ अबयकिलोकिपूलहो



हिंदोल

इहिंउर॥भूपप्रीतिकैकपिनिदुराई॥उभयअवधविधिरची  
बनार्इ॥विलपतनृपहिभयउभिनुसारा॥वीणाबेणशंखधु  
निद्वारा॥पछहिंभाटगुणागावहिंगायक॥सनतनृपतिहिं  
जनुलागहिणायक॥मंगलसकलसुहाइनकैसैं॥सहगा  
मिनीविभूषणाजैसैं॥तेहिनिशिनीन्दरीनहिकाह॥रामद  
रशालालसाउकाह॥दोहा॥द्वारभीरसेवकसचिवकहहिउ  
दितरविदेधि॥जागेअजडनअवधपतिकारणाकवनविशे  
धि॥३८॥चौपाई॥यकिलेपहरभूपनितजागा॥आजुहम  
हिवउअचरजलागा॥जाइसमंत्रजगावइजाई॥कीजिय  
काजरजायसुपाई॥गैसमननृपमन्दिरमाही॥देविभया  
नकजातउराही॥थाइखाइजमुजाइनहेरा॥मानइविपतिवि  
षादबसेरा॥मूकतकोउनऊतरदेई॥गेजहिभवनभूपकैके  
ई॥कहिजयजीववैदुशिरनाई॥देविभूपगतिगएसखाई॥  
शोचविकलविवरणमहिपरेऊ॥मानइकमलमूलपरिह  
रेऊ॥सचिवसभीतशकैनहिपूकी॥शोचविकलविवरणम  
हिपरेऊ॥मानइकमलमूलपरिहरेऊ॥सचिवसभीतशकैन  
हिपूकी॥बोलीअशुभभरीशुभकूकी॥दोहा॥परीनराजहि  
नीदनिशिमर्मजानजगदीश॥रामरामरदिभोरकियहेत



रामा.

अ.

१२

नकहेउमहीश॥३९॥चौपाई॥आनइरामहिंदेगिबुलाई  
समाचारसबपूछइआई॥चलेउसमनराउरुषजानी॥ल  
खीऊचालिकीन्हककुरानी॥शोचबिकलमगपरेनपाऊ  
रामहिबोलिकहहिंकाराऊ॥उरथरिपीरजगपउदुआरे  
पूछहिंसकलदेखिमनमारे॥समाधानसोकरिसबहींका  
गपजहांदिनकरऊलटीका॥रामसमनहिआवतदेखा  
आदरकीन्हपितासमलेखा॥निरखिवदनकहिभूपरजा  
ई॥रबुऊलदीपहिचलेलिवाई॥रामऊभांतिसचिवसऊ  
जाही॥देखिलोगजहंतहंविलखाही॥दोहा॥जाइदीख  
रबुवंशमणिनरपतिनिपटऊसाज॥सहमिपरेउलखि  
मिंहिनिहिमनइबृहगजराज॥४०॥चौपाई॥सूषहिंअथ  
रजरेंसबअऊ॥मनइदीनमणिहीनभुवऊ॥सरुषसमी  
पदेखिकैकेई॥मानइमीचुचरीगणिलेई॥करुणामयमृ  
दुरामसभाऊ॥अथमदीखदुखसुनानकाऊ॥तदपिपी  
रथरिसमयविचारी॥पूछीमपुरवचनमहतारी॥मोहि  
कइमाततातदुखकाराण॥करिययतनजेहिहोइनिवा  
राण॥सनइरामसबकाराणपह॥राजहिंतमपरबऊ  
तसनेइ॥देनकहेमोहिदुइबरदाना॥मंगेउजोऊऊ



मोहिसोहाना॥ सोसुनिभयेउभूपउरशोचू॥ क्वाडिनशकहिं  
 तम्हारसकोचू॥ दोहा॥ सुतसनेहरतवचनउतसंकटपरेउन  
 रेन॥ शकइतोआयसुथरइशिरमेटइकदिनकलेश॥ ५१  
 चौपाई॥ निथरकपैदिकहतिकटुबाणी॥ सुनतकदिनताअ  
 तियऊलाती॥ जीभकमानवचनशरनाना॥ मनइंमहीप  
 मृदुलनसमाना॥ जनुकठोरपणाथरेंशरीरू॥ शीखइंथनु  
 षवियावरवीरू॥ सबप्रसंगरनुपतिहिंसुनार्इ॥ वैदीमनुत  
 उथरिनिदुगई॥ मनमुसकाहिभानुऊलभानू॥ रामसहज  
 आनन्दनिधानू॥ बोलेवचनविगतसबभूषण॥ मृदुमंजुल  
 जनुबागविभूषण॥ सुनुजननीसोइसुतबउभागी॥ जोपि  
 तमातवचनअनुरागी॥ तनयमातपितपोषनहारा॥ दु  
 र्लभजननीयहसंसार॥ दोहा॥ सुनिगणामिलनविशेषवन  
 सबहिभांतिहितमोर॥ तेहिमहंपितआयसबइरिसम्मत  
 जननीतोर॥ ५२॥ चौपाई॥ भरतआणप्रियणावहिंराजू॥ विधि  
 सबविधिमोहिसन्मुखआजू॥ जौनजाववनपेसेइंकाजा  
 प्रथमगणायमोहिमूढसमाजा॥ सेवपरणउकल्पतरुत्या  
 गी॥ परिहरिअमियलेहिंबिषमांगी॥ तेउनपाइअससमय  
 चुकाही॥ देविविचारिमातमनमाही॥ अंबएकदुखमोहि



रामा.  
प्र.  
१३

3

विशेषी॥ निपटविकलनरनायकदेवी॥ थोरीबातपित।  
दिदुखभारी॥ होतिप्रतीतिनमुहिमहतारी॥ राउधीरगुण  
उदधिअगाथ॥ भामोतेककुबउअपराथ॥ जातैंमोहिनकह  
तककुराऊ॥ मोरशपयतोहिकऊसतिभाऊ॥ दोहा॥ सह  
जसरलरघुवरवचनऊमतिऊटिलकरिजान॥ चलैजोंक  
जिमिवक्रगतिययपिसलिलसमान॥ थर॥ चौपाई॥ रहसी  
रानिरामरुखपाई॥ बोलीकपटसनेहजनाई॥ शपयतहा  
रभरतकैइआना॥ हेतनहसरमैककुजाना॥ तमअपराथ  
योगनहिताता॥ जननीजनकबंधुसखदाता॥ रामसत्य।  
सबजोककुकरहऊ॥ तमपितमातवचनरतअहऊ॥ पित  
दिबुजाउकहेऊबलिसोई॥ चौथेपनजहिअयशानहोई॥ त  
मसमसवनसकृतजेहिदीन्है॥ उचितनतासुनिराटरकी  
न्है॥ लागदिऊसुखिवचनअभकैसे॥ मगहगयादिकती  
रथजैसे॥ रामहिमातवचनसबभाए॥ जिमिसुरसरिगत  
सलिलसहाए॥ दोहा॥ राउमूर्छारामहिसुमिरिचपफि।  
रिकारवटलीन्है॥ सचिवरामआगमनकहिविनयसमयस  
मकीन्है॥ थथ॥ चौपाई॥ अबनियअकनिरामपगुधारे॥ थरि  
धीरजतवनयनउचारे॥ सचिवसंभारिराउबैहारे॥ चरणप



रतन परामनिहारे ॥ लियेउसनेहविकलउरलाई ॥ ग३म  
 णिमनऊफणिकफिरिपाई ॥ रामहिचितैरहेनरनाह ॥  
 चलाविलोचनवारिप्रवाह ॥ शोकविवशककुकहेनपा  
 रा ॥ हृदयलगावतवारहिबारा ॥ विधिमनावराउमनमा  
 ही ॥ जेहिरचुनायनकाननजाही ॥ समिरिमहेशहिका  
 हहिनिहोरी ॥ विनतीसनऊसदाशिवमोरी ॥ आशुतोष  
 तमओछरदानी ॥ आरतिहरइदीनजनजानी ॥ दोहा ॥ त  
 मप्रेरकसबकेहृदयसोमतिरामहिदेऊ ॥ वचनमोरत  
 जिरहहिंवरपरिहरिशीलसनेऊ ॥ ४५ ॥ चौपाई ॥ अयशाहो  
 उवरुसुयशानशाऊ ॥ नरकपरौवरुसरपुरजाऊ ॥ सबड  
 खडसहसहाबऊमोही ॥ लोचनओटरामजनिहोही ॥ अ  
 समनगुणहिराउनहिबोला ॥ पीपरपातसरिसमनडोला  
 रचुपतिपितहिप्रेमवशाजानी ॥ पुनिककुकहेउमातअनु  
 मानी ॥ देशकालअवसरअनुसारी ॥ बोलेवचनविनीतवि  
 तविचारी ॥ तातकहौककुकरौछिढाई ॥ अनुचिततमव  
 जानिलरिकाई ॥ अतिलबुबातलायिडखपावा ॥ काहेनमो  
 हिकहिप्रथमसनावा ॥ देखिगोसांरहिंरुकेउमाता ॥ सुनि  
 प्रसंगभएशितलगाता ॥ दोहा ॥ मंगलसमयसनेहवशाशो



चपरिहरियैतात॥ आयसुदेश्यहरविदियकहिपुलके  
प्रभुगात॥ ४६॥ चौपाई॥ धन्यजन्मजगतीतलतासू॥ पित  
तहिप्रबोधचरितसुनिजासू॥ चारिपदारथकरतलता  
के॥ प्रियपितमातप्राणसमजाके॥ आयसुपालिजन्म  
भलपाई॥ पेहोंवेगिदिहोइरजाई॥ विदामातसनआवों  
मांगी॥ चलिहोंवनहिबडरिपदलागी॥ असकहिराम  
गवनतबकीन्हा॥ भूपशोचवशाउतरनदीन्हा॥ नगरआ  
पिगईवातसुतीकी॥ कुअतचणीजनुसबतनुबीकी॥  
सुनिभएविकलसकलनरनारी॥ वेलिविटपजनुला  
गिटवारी॥ जोजहंसुनैथुनैशिरसोई॥ वउविषादनहि  
धीरजहोई॥ दोहा॥ सुखसुखहिलोचनसुवहिंशोकन  
हृदयसमाइ॥ मानइकरुणारसकटकउतराअवधिब  
जाइ॥ ४७॥ चौपाई॥ भलिबनाइविधिवातविगारी॥ जहंतहं  
देहिकेकपिदिगारी॥ इहिंपापिनिहिंबुफिकापरेऊ॥ क्हा  
इभवनपरपावकथरेऊ॥ निजकरनयनकाछिचहदी  
षा॥ डारिसुधाविषचाहतचीषा॥ ऊटिलकठोरऊबुद्धि  
अभागी॥ भइरचुबंशवेएवनआगी॥ पलबवैठिपेउचह  
काटा॥ सुखमइशोकठाटथरिवाटा॥ सदासमइहिंप्राण



समाना ॥ कारणाकवनऊटिलपणाठाना ॥ सत्यकह  
हिंकविनारिसुभाऊ ॥ सबविधिअगमअगाथदुगऊ ॥  
निजप्रतिबिम्बवरूपगहिजाई ॥ जानिनजाइनारिगति  
भाई ॥ दोहा ॥ कानहिं पावकजारिशाककानसमुद्रसमाई ॥  
कानकरैअबलाप्रबलकेहिजगकालनखाई ॥ ४८ ॥ चौपा  
ई ॥ कासुनाईविधिकाहसुनावा ॥ कादेखाईचहकाहदेखा  
वा ॥ एककहैभलभूपनकीन्हा ॥ बरविचारिनहिऊमति  
हिंदीन्हा ॥ जोहठभयउसकलडखभाजन ॥ अबलाविव  
शज्ञानगुणागाजन ॥ एकधर्मपरमितिपहिचाने ॥ नृपहि  
दोषनहिदेहिसयाने ॥ शिविदयीचिहरिचन्द्रकाहानी  
एकएकसनकहहिंखानी ॥ एकभरतकरसम्मतकह  
ही ॥ एकउदासभावसुनिरहही ॥ कानमूंदिकररदगहि  
जीहा ॥ एककहहिंइहवातअलीहा ॥ सकुतजाइअसक  
हततम्हारे ॥ भरतरामकहंप्राणपिआरे ॥ दोहा ॥ चन्द्रचु  
बैवरुअनलकणसुधाहोइविषतल ॥ सपनेऊकबडन  
करहिंककुभरतरामप्रतिकूल ॥ ४९ ॥ चौपाई ॥ एकविधा  
तहिडखणदेही ॥ सुधादेखाईदीन्हविषजेही ॥ एरभर  
नगरणोचसबकाह ॥ दुसहदाहउरमिटाउकाह ॥ विप्रव



रामा.  
श्र.  
१५

धुऊलमान्यजिदेरी॥ जेप्रियपरमकैकेयीकेरी॥ लगीदे  
नशिखशीलसराही॥ बचनबाणसमलगहिंताही॥ भर  
तनप्रियमोहिरामसमाना॥ सदाकहऊइहसबजगजाना  
करइरामपरसहजसनेह॥ केहिअपराधआजबनदेह॥  
कबऊनकीन्हसवतिअवरेषु॥ प्रीतिप्रतीतिजानसबदेष्टु॥  
कोशल्याअबकाहविगार॥ तमजेहिलागिवअपुरपारा॥  
दोहा॥ सीयकिपियसऊपरिहरिहिलषणकिरहिहहिथा  
म॥ राजकिभुजवभरतपुरनृपकिजियहिविनुराम॥ ५०॥  
चौपाई॥ असविचारिजियकाउऊकोह॥ शोककलऊकोटि  
जनिहोह॥ भरतहिंअवशिदेऊयुवराज॥ काननकवनरा  
मकरकाज॥ नाहिनरामराजकरभूखे॥ यर्मपुरीणाविषय  
रसरूखे॥ गुरुगृहवसहिंरामतजिगेह॥ नृपसनअबसर  
उसरलेह॥ रामसरिससतकाननयोगू॥ कहाकहहिंस  
नितमकहंलोगू॥ जौनमानिहौकहेहमारे॥ नहिलागिहिं  
ककुहायतमारे॥ जौपरिहामकीन्हककुहोई॥ तौकहिप्र  
गटजनावऊसोई॥ उटऊवेगिसोइकरऊउपाई॥ जेहिंविधि  
शोककलऊनशाई॥ कृन्दः॥ जेहिंभांतिशोककलऊजाउ  
उपाइकरिऊलपालह॥ हटिफेरिरामहिंजातवनजनिवा



तदुसरचालहू॥३॥ जिमिभातु विनुदिनप्राणविनुतनुच  
न्रविनुजिमियामिनी॥ तिमिश्रवथितलसीदासप्रभुवि  
नुसमुजियौंजियभामिनी॥४॥ सोरठा॥ सुखिन्हशिखाव  
नदीन्हसनतमधुरपरिणामहित॥ तेइककु काननकी  
न्हऊटिलप्रबोधीऊवरी॥५॥ चौपाई॥ उतरुनदेइदुसह  
रिषरूषी॥ मृगहिंचितवजनुवाविनिभूखी॥ व्याधिअसा  
ध्यजानितिनत्यागी॥ चलीकहतिमतिमन्दअभागी॥  
राजकरतरहिंऊमतिविगोई॥ कीन्हेसिअसजसकरैन  
कोई॥ इहिंविथिविलपहिंपुरनरनारी॥ देहिंऊचालिहिं  
कोटिकगारी॥ जरहिंविषमज्वरलेहिंउसाशा॥ कवनरा  
मविनुजीवनआशा॥ विपुलवियोगप्रजाअऊलानी॥ जि  
मिजलचरगाणसुखतपानी॥ अतिविषादवशालोगगुला  
ई॥ गपमातपहंरामगोसाई॥ सुखप्रसन्नचितचौगुणचा  
ऊ॥ मिठाणोचजनिगाखहिंराऊ॥ दोहा॥ नवगयन्दरचु  
वंशमणिराजअलानसमान॥ कुटेजनुवनगवनसनि  
उरआनन्दअधिकान॥५॥ चौपाई॥ रघुऊलतिलकजो  
रिदोउहाणा॥ सुदितमातपदनापउमाया॥ दीन्हअशीष  
लाउरलीन्ह॥ भूषणावसननिक्कावरिकीन्ह॥ बारबारसु



रामा.  
अ.  
१६

खचुस्वतिमाता॥नयननेहजलपुलकितगाता॥गोदरा  
विपुनिहृदयलगाई॥सवतप्रेमरसपयदसुहाई॥प्रेमप्र  
मोदनककुकिहिजाई॥रङ्गयनदपदबीजनुपाई॥सादर  
सुन्दरवदननिहारी॥बोलीमथुरवचनमहतारी॥कहहु  
तातजननीबलिहारी॥कवहिलगनमुदमंगलकारी॥  
सुकृतशीलसुखसीमसोहाई॥जन्मलाभकीअवधिअवा  
ई॥दोहा॥जेहिंचाहतनरनारिसबअतिआरतइहिभांति॥  
जिमिचातकिचातकतवितवृष्टिशरदअतस्वांति॥५३  
चौपाई॥तातजाउंवलिवेगिअन्हाहू॥जोमनभावमथुरा  
ककुखाहू॥पितसमीपतबजायेहुभेआ॥भरवडिवारजा  
इबलिमेंआ॥मातवचनसुनिअतिअनुकूला॥जनुसने  
हसरतरुकेफूला॥सखमकरन्दभरेश्रीयमुला॥निरखि  
राममनभवरभुला॥धर्मपुरीणधर्मगतिजानी॥कहेउ  
मातसनअतिमृदुबाणी॥पितादीन्दमोहिकाननराज॥  
जहंसबभांतिमोरबउकाज॥आयसुदेहुमुदितमनमा  
ता॥जहिंसुदमंगलकाननजाता॥जनिसनेहवशउरप  
सिभोरे॥आनन्दमातअनुग्रहतोरे॥दोहा॥वर्षचारिदश  
विपिनबसिकरिपितवचनप्रमाण॥आइपायपुनिदेखि



हों मन जनिकर सिमलीन ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ बचन विनीत मधु  
 ररु वर के ॥ पारस मल गोमात उर कर के ॥ सहमि सुखि सु  
 निशीत लबाणी ॥ जिमि जवास पर पाव सपानी ॥ कहिन जा  
 रुक कुह दय विषाद ॥ जनु सहनै करि के हरि नाद ॥ नयन स  
 लिलत नथर हर कापी ॥ माजे हिंवा रमी न जनु मापी ॥ धरि  
 थीर जसुत वदन निहारी ॥ गऊ दबचन कहति महतारी ॥ ता  
 त पितहिं तम प्राण पिआरे ॥ देखि मुदित चित चरित तमारे  
 राज देन कहं सुभ दिन साधा ॥ कहे उ जान बन के हिअ पराधा  
 तात सुनाव डमोहि निदान ॥ को दिन कर कल भए उ कृपा न  
 दोहा ॥ निरखि राम रुषस चिबसत कारण कहे उ बुजा ॥ सु  
 निप्रसंगरहि मूक गति दशावरणि नहि जा ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥  
 राखिन शकहिं न कहि शक जाह ॥ डहं भांति उरदारुणा दा  
 ह ॥ लिखत सधा कर गालि खिराड ॥ विधि गति वाम सदा स  
 बकाड ॥ धर्म सनेह उ भय मति बेरी ॥ भइ गति सो पछ कुन्द  
 रिकेरी ॥ राखें सुतहिं करै अत्रोय ॥ धर्म जाइ अरु बंधु विरोय  
 कहैं जान बन तौ बडिहानी ॥ अकूट शोच विकल भई रानी ॥ ब  
 डरि सुमुक्ति य धर्म सयानी ॥ राम भरत दोउ सुत सम जानी  
 सरल सुभाव राम महतारी ॥ बोली बचन थीर धरि भारी ॥ तात



रामा.  
प.  
९

जाउ बलिकी न्हे उनी का ॥ पितृ आयस सब थर्म कटी का ॥ दो०  
राज देन कह दीन्ह बन मोहि सो दुख वलेश ॥ तम विनु भरत हि  
भूपति हिं प्रज हिं प्रचाउ कलेश ॥ ५६ ॥ चौ० ॥ जौ केवल पित  
आयस ताता ॥ तौ जनि जाइ जांनि बडि माता ॥ जौ पित मात  
कहे उवन जाना ॥ ताका नन शत अवथ समाना ॥ पितृ बन दे  
व मात वन देवी ॥ खग मृग चरण सरोरुह सेवी ॥ अन्त ऊँचि  
त नृप हिं वन कासू ॥ वय विलोकि हिय होत झलासू ॥ बड भा  
गी वन अवथ प्रभागी ॥ जोर धुवंश तिलक तम त्यागी ॥ जौ  
सत कहौं सकु मोहिलेइ ॥ तम हरे हृदय होइ शन्देइ ॥ ५७  
परम प्रिय तम सब ही के ॥ प्राण प्राण के जीवन जी के ॥ तेत  
म कहइ मात वन जाऊं ॥ मैं सुनि वचन वैठि पकितारू ॥ दो०  
इहि विचारि नहि करउं हठ जूट सनेह वजाइ ॥ मानि मात  
को नात बलि सरति वि सरि जा निजाइ ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ देव पित  
र सब तम हि गोसाई ॥ राखें इयल कनयन की नाई ॥ अवथ  
अम्बु प्रिय परिजन मीना ॥ तम करुणा कर थर्म धुरीना ॥  
अस विचारि सोइ करइ उपाई ॥ सब हिं जिअत जे हिं में टडग्रा  
ई ॥ जाइ सखेन वन हिं बलि जाऊं ॥ करि अनाय जन परिजन  
गाऊं ॥ सब कर आज सकु त फल बीता ॥ भयउ कराल काल



विपरीता ॥ बद्धविधिविलपिचरणालपदानी ॥ परम  
 अभागिनिआपुहिंजानी ॥ दारुणाडुसहदाहउरव्यापा ॥  
 वरणिनजाइविलापकलापा ॥ रामउठाइमातउरलाई ॥  
 कहिमृदुवचनबद्धतसमुजाई ॥ दो० ॥ समाचारतेहिंसम  
 यस्निसीयउठीअऊलाइ ॥ बन्दिमासपदकमलपुगजा  
 इवैरिशिरनाइ ॥ ५८ ॥ चौ० ॥ दीन्हअशीषसासमृदुबाणी ॥  
 अतिसऊमारिदेखिअऊलानी ॥ वैठीनमितमुखशोचइ  
 सीता ॥ रूपराशिपतिप्रेमपुनीता ॥ चलनचहतवनजी  
 वननाथ ॥ केहिसकृतीसनहोइहिंसाथ ॥ कीतनुप्राणा  
 किकेवलप्राणा ॥ विधिकरतबककुजाइनजाना ॥ चारु  
 चरणनखलेखतिथरणी ॥ नूपरमुखरमधुरकविवरणी  
 मनइंप्रेमवशविनतीकरंही ॥ हमहिंसीयप्रदजनिपरिह  
 रंही ॥ मञ्जुविलोचनमोचतिवारी ॥ बोलोदेखिराममहतारी  
 तातसनइमियअतिसऊमारी ॥ सासससरपरिजनहिं  
 पिआरी ॥ दो० ॥ पिताजनकभूषालमणिससरभावकुलभा  
 उ ॥ पतिरविऊलकैरवविधिनविधुगणरूपनिधानु ॥ ५९  
 चौ० ॥ मैपुनिपुत्रवधुप्रियपाई ॥ रूपराशिगुणशीलसहाई ॥  
 नयनपुतरिकरिप्रीतिबछाई ॥ राखेउंप्राणजानकिहिंलाई ॥



कल्पवेलिजिमिवइविधिलाली॥ सींचिसनेहसलिलप्र  
तिपाली॥ फलतफलतभणउविधिवामा॥ जानिनजाइका  
हपरिणामा॥ पलङ्गपीठतजिगोदहिंजोरा॥ सियनदीनप  
गुअवनिकठोरा॥ जीवनमुरिजिमिजगवतरहेऊं॥ दीपवा  
तिनहिंदारनकहेऊं॥ सोइसियचलनचहतिवनसाया॥ प्राय  
सुकाहहोइरघुनाया॥ चन्द्रकिरणारसरसिकचकोरी॥ रवि  
रुषनयनशकैकिमिजोरी॥ दो०॥ करिकेहरिनिशिचरच  
रहिंदुष्टजन्तवनभुरि॥ विषवाटिकाकिसोहसुतसुमगस  
जीवनमुरि॥ ६०॥ चो०॥ वनहितकोलकिरातकिषोरी॥ रची  
विरञ्चिविषयसखभोरी॥ पाहनकुमिजिमिकरिनसभा  
ऊ॥ तिनहिंकलेशनकाननकाऊ॥ कैतापसतियकाननयो  
गू॥ जिनतपहेततजेसबभोगू॥ सियबनबसिहिंतातकेहिं  
भोती॥ चित्रलिखितकपिदेखिउराती॥ सरसरसुभनवन  
जवनचारी॥ डावरयोगकिहंसऊमारी॥ असविचारिजण  
आयसहोई॥ मैंशिखदेउजानकिहिंसोई॥ जौसियभवन  
रहेकहअग्वा॥ मोकहंहोइप्राणअबलगवा॥ सुनिरघुकीर  
मातप्रियबाणी॥ फोलसनेहसुधाजनुसानी॥ दो०॥ कहि  
प्रियवचनविवेकमयकीन्हमातपरितोष॥ लगेप्रबोधन



जानकिहिं प्रगटि विपिन गुण दोष ॥ ६१ ॥ चौ० ॥ मात समीप  
 कहत सकुचाही ॥ बोले समय समुझि मन माही ॥ राजकुमारि  
 शिखावन सुनह ॥ आन भानि जिय जनिक कुगुण ह ॥ आपन  
 मोरनी कजौ चहह ॥ वचन हमार मानि गृहरहह ॥ आय समो  
 रसा सु सेवकाई ॥ सब विधि भामिनि भवन भलाई ॥ इहि तैं अथि  
 कथर्मनहि दूजा ॥ सादर सासु सरपट पूजा ॥ जब जब मात  
 करिहिं सुधि मोरी ॥ होइ हिं प्रेम विकल मति भोरी ॥ तब तब त  
 म कहि कथा पुराणी ॥ सुन्दरी समुजाये झमृदु बाणी ॥ कहौं सु  
 भाय शपथ शत मोही ॥ समखि मात हित राखौं तोही ॥ दोहा ॥  
 गुरु श्रुति समेत धर्म फल पाइ अविनहिं कलेश ॥ हठ बश सब  
 सकुट सहेगाल बन झषन रेश ॥ ६२ ॥ चौ० ॥ मै पुनिकरि प्रमान पि  
 त बाणी ॥ वेगि फिरव सुनु सुमुखि सयानी ॥ दिवस जात नहि  
 लागिहिं वारा ॥ सुन्दरिणी खवनु सुन झंहरा ॥ जो हठ करइ  
 प्रेम बश वामा ॥ तौ तम दुख पाउव परिणामा ॥ कानन कठिन भ  
 य कर भारी ॥ घोर वामहि मवारि बयारी ॥ ऊषकंठ कमल क  
 कर नाना ॥ चलव पयादेहि विनु पट आणा ॥ चरण कमल मृ  
 दु मज्जुत मारे ॥ मारग अगम भूमि धर भारे ॥ कन्हार खोहन दी  
 नदनारे ॥ अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥ भालु वाच नृ करि केह



रामा.

अ.  
२५

१९

रामा  
तेलिनी

नागा॥ करहिं नादसुनिधीरजभागा॥ दोहा॥ भूमि शयन बलक  
लबसन असन कन्दफलमूल॥ ते कि सदा सब दिन मिलहिं सब  
इस समय अनुकूल॥ ६३॥ नर अहारि रजनी चरचरहीं॥ कपट वेष्ट  
विधि कोटिक करहीं॥ लागै अति पदार करपानी॥ विपिन विपि  
ति नहि जाइ बावानी॥ ब्याल कगल विहंग बन चोरा॥ निशि चर  
निकर नारिन रचोरा॥ उर पहिं धीर गहन शुधि आए॥ मृग लोचनि  
तम भीरु सुधाए॥ हंस गवनित मनहि बन योगू॥ सुनि अय यश  
दैह हि मोहिलो गू॥ मानस सलिल सुधा प्रतिपाली॥ जिअर किल  
वगाय योधि मगली॥ नवर सालवन विहराणी ला॥ सोह कि।  
को किल विपिन करी ला॥ रहइ भवन अस हृदय विचारी॥ चन्द्रव  
दनि दुख कानन भारी॥ दोहा॥ सहज सहृदय गुरु स्वामि शिख  
जौ न करै दित मानि॥ सो पछिताइ अवाउ उर अबशि होइ दित हानि  
चौ पाई॥ सुनि मृदु वचन मनोहर पीयके॥ लोचन ललित भरे जल  
सीयके॥ शीतल शीख दाहक भई कै सें॥ चकरहिं शरद चादनी जे  
में॥ उतरन आव विकल बैदेही॥ तजन चहत मोहि परम सनेही  
वर वशरो कि विलोचन वारी॥ धरि धीरज उर अब निजु मारी॥ ला  
गि सास पद कह कर जोरी॥ दमवदे विबडि अविनय मारी॥ दीन्ह  
प्राण पति मोहि शिख मोई॥ जे दिं विधि मोर परम दित होई॥ में ७

६४॥



निसमुक्तिदीखमनमांही॥ पियवियोगसमडखजगनांही॥ दो०  
 प्राणनाथकरुणायतनसुन्दरसखदसजान॥ तमविनुखुज  
 लऊमुदविधुसुरपुरनरकसमान॥ ६५॥ चौ०॥ मातपिताभगि  
 नीप्रियभाई॥ प्रियपरिवारसुदृढसमुदाई॥ सासुससुरगुरुसुज  
 नसहाई॥ सु० तसुन्दरसशीलसखदाई॥ जहंलगिनाथनेह  
 अरुनाते॥ पियविनुतियहिं तरणिताते॥ तनुधनुधामधरणि  
 पुरराज्॥ पतिविहीनसबशोकसमाज्॥ भोगरोगसमभूषणभा  
 रू॥ यमजातनासरिसंसारू॥ प्राणनाथतमविनुजगमांही॥ सो  
 कहेसखदकतऊकोउनांही॥ जियविनुदेहनदीविनुवारी॥ तैसेहिं  
 नाथपुरुषविनुनारी॥ नाथसकलसखसाथतहारे॥ शरदविम  
 लविधुबदननिहारे॥ दो०॥ खगमृगपरिजननगरवनबलकल  
 विमलडकूल॥ नाथसाथसुरसदनसमपार्शालसखमूल॥ ६६  
 चौ०॥ वनदेवीवनदेवउदाग॥ करिहैंसासुससुरसमप्यारा॥ ऊषा  
 किशलयसाथरीसहाई॥ प्रभुसऊमज्जुमतोजतराई॥ कन्दमू  
 लफलअमियअहारू॥ अबधसौधशतसरसपहारू॥ किनुकिनु  
 प्रभुपदकमलविलोकी॥ रदिहैंमुटितदिवसजिमिकोकी॥ वन  
 दुखनाथकहेवडतेरे॥ भयविषादपरितापवनेरे॥ प्रभुवियोगलव  
 लेशसमाता॥ सबमिलिहोहिंनकृपानिधाना॥ अमजियजानिसुजा



नशिरोमणि॥ लेशसङ्गमोहिच्छांडियजनि॥ विनतीवद्धतकरौं  
कास्वामी॥ करुणामयउरग्रन्तरज्जामी॥ दो०॥ राखियअवथतौ  
अवधिलगिरहतजौंजानियप्राण॥ दीनबन्धुसुन्दरसखदशील  
सनेहनिधान॥ ६०॥ चौ०॥ मोहिमगचलतनहोइहिंदारी॥ दाएत  
एचरणसरोजनिहारी॥ सबहीभांतिपियसेवाकरिहैं॥ मारग  
जनितसकलअमहरिहैं॥ पाउपधारिवैदितरुछाही॥ करिहैं  
वातमुदितमनमाही॥ अमकणसहितप्यामतउदेखैं॥ कहं  
दुखसमउप्राणपतिपेखैं॥ सममदितनतरुपलवडासी॥ पाउ  
पलोदिहिंसबनिशिदासी॥ बारवारमृदुमूरतिजोही॥ लागहित  
तेवयारिनमोही॥ कोप्रभुसङ्गमोहिवितवनिहार॥ सिंचवधुजि  
मिशाशकसियारा॥ मैसुकुमारिनाथवनजोगू॥ तमूदिउचित  
तपुमोकइंभोगू॥ दो०॥ येसेइवचनकटोरसुनिजौंनहृदयविल  
गान॥ तौप्रभुविषमवियोगदुखसहिहैपांमरप्राण॥ ६१॥ चौ०॥  
असकहिसीयविकलभउभारी॥ वचनवियोगनशाकीसंभारी॥  
देखिदणारुपतिजियजाना॥ हरिगणेशखिदिनदिप्राण॥ क  
हेउकपालुभानुऊलनाथा॥ परिहरिशोचचलइवनसाथा॥ न  
दिविषादकरअवसरयाज॥ बेगिकरइवनगवनसमाज॥ कहि  
प्रियवचनप्रियहिंसमुजाई॥ लगेमातपदआशिषपाई॥ बेगिप्रजा



दुखमेटङ्गं आई ॥ जननी निदुरविसरिज निजाई ॥ फिरि हिंद  
 शाविधि बद्धरि किमोरी ॥ देखि हों नयन मनोहर जोरी ॥ सुदि  
 न सुवरी तात कब होई ॥ जननी जियत बदन विधु जोई ॥ दो०  
 बद्धरि वत सक हिलाल कहिर चुपतिर चुवर तात ॥ कब हिं  
 बुलाइ लगाइ उर हरषि निरषि हों गात ॥ ६५ ॥ चौ० ॥ लखि सने  
 ह कातर महतारी ॥ वचन न आव विकल भउ भारी ॥ राम प्र  
 बोध कीन्ह विधिनाना ॥ समय सनेहन जाइ बघाना ॥ तब जान  
 की सास पद लागी ॥ सुनिय मात में परम अभागी ॥ सेवा स  
 मय दैव बन दीन्हा ॥ मोर मनोरथ सफल न कीन्हा ॥ तज बस्तो  
 भज निष्ठा उव कोइ ॥ कर्म कठिन ककु दोष न मोइ ॥ सुनि सि  
 य वचन सा सुअकुलानी ॥ दशा कवन विधिक हों वखानी ॥ वा  
 र हिं वार लाइ उर लीन्हा ॥ धरि धीर जशि खयाशिष दीन्हा ॥ अ  
 चल होउ अहि वात त म्हारा ॥ जब लगि मऊ जमुन जल थारा  
 दो० ॥ सीत हिं सासु अशीष शिख दीन्ह अनेक प्रकार ॥ चली नाइ  
 पद पमशिर अति हित वार हिं वार ॥ ७० ॥ चौ० ॥ समाचार जब  
 लक्ष्मण पाए ॥ व्याकुल विलखि बदन उठि पाए ॥ कंप पुलक  
 त नुनयन मनीरा ॥ गहे चरण अति प्रेम अपीरा ॥ कहिन सक  
 त ककु चित वत गाछे ॥ मीन दीन जव जल तै काछे ॥ शोच हृद



रामा.

शु.

२१

21

यविधिकहानिहारा॥ सबसुखसुकृतसिरानहमारा॥ मो  
कहंकहाकहवरचुनाया॥ राखिहिंभवनकिलैहहिंसाया॥  
रामविलोकिवन्धुकरजोरे॥ देहगेहसबमततरातोरे॥ बो  
लेवचनरामनयनागर॥ शीलसनेहसरलसुखसागर॥  
तातप्रेमवशजनिकदुराह॥ समुक्तिहृदयपरिणामउक्ताह  
दो॥ मातृपितागुरुस्वामिशिखशिरपरिकरियसुभाय॥  
लहेउलाभतिनजन्मकरनतरुजन्मजगजाय॥ १॥ चौ॥  
असजियजानिसुनइशिखभाइ॥ करइमातृपितृपदसेव  
काई॥ भवनभरतरिपुसूदननाही॥ राउवृद्धममदुखमनमा  
ही॥ मैवनजाउंतमहिंलैसाया॥ होइहिंसबविधिअवधअना  
या॥ गुरुपितृमातृप्रजापरिवारु॥ सबकहंपरैडमहदुखभा  
रु॥ रहइकरइसबकरपरितोषु॥ नतरुतातहोइहिंवउदोषु  
जासराजप्रियप्रजादुखारी॥ सोनृपअवशिनरकअधिकारी  
रहइतातअमनीतिविचारी॥ सुनतलषणभयेव्याकुलभारी  
सियरेवचनशूषिगोकैसैं॥ परमततुहिनतामररुजैसैं॥ दो॥  
उत्तरनआवतप्रेमवशगहेउचरणअकुलाइ॥ नाथदासमै  
स्वामितमतजइतोकहावशाइ॥ २॥ चौ॥ दीन्हमोहिशि  
खनीकगोसोई॥ लागीअगमआपनिकदराई॥ नरवरभीरधर्म



थुरथीरी॥ निगमनीतिकेऊअधिकारी॥ मैशिप्रभुसने  
 हप्रतिपाला॥ मन्दरमेरुकिलेशमराला॥ गुरुपितमातन  
 जानोंकाहू॥ कहोंसुभावनाथपतिआहू॥ जहंलगिजगत  
 सनेहसगाई॥ प्रीतिप्रतीतिनीतिनिपुनाई॥ मोरेसवैएकत  
 मस्वामी॥ दीनबन्धुउरअनारजामी॥ धर्मनीतिउपदेशियताही  
 कीरतिभूतिसगतिप्रियजाही॥ मनक्रमवचनचरणरहत  
 होई॥ कृपासिन्धुपरिहरियकिसोई॥ दो०॥ करुणासिन्धुसु  
 बंधुकेसुनिमृदुवचनविनीत॥ समुजाएउरलाइप्रभुजानि।  
 सनेहसभीत॥ ०३॥ चौ०॥ मांगऊविदामातसनजाई॥ आवऊ  
 वेगिचलऊवनभाई॥ सुदितभएसुनिरचुवरवाणी॥ भएउ  
 लाभवउमिदीगलानी॥ हर्षितहृदयमातपहंआप॥ मनऊं  
 अन्यफिरिलोचनपाए॥ जाइजननिपदनाएउमाथा॥ वनर  
 चुनन्दनजानकिसाथा॥ पुछेउमातमलिनमनदेवी॥ लषण  
 कहेउसबकथाविशेषी॥ गईसहमिसुनिवचनकदोरा॥ मृगी  
 देखिजनुदवचऊंओरा॥ लषणलखेउभाअनरथआज॥ ३६  
 सनेहवशाकरवअकाज॥ मांगतविदाममयसऊचांदी॥ जा  
 नसऊविधिकहिहिकिनाही॥ दो०॥ समुजिसुमिशरामसि  
 यरूपसुशीलसभाव॥ नृपसनेहलखिपुनेउशिरपापिनिनी



रामा.  
अ.  
२२

22

रुजदाव॥५॥ चौ॥ धीरजथरेउऊअवसरजानी॥ सहजसुह  
दबोलीमृडवाणी॥ ताततम्हारमातवेदेही॥ पितारामसबभां  
तिसनेही॥ अबथतहांजहांरामनिवासू॥ तहांदिवसजहांभा।  
उपकायू॥ जोपैंसीयरामवनजाही॥ अबथतम्हारकाजककु  
नाही॥ गुरुपितमातबन्धुसरसांई॥ सेइयसकलप्राणकीनाई  
रामप्राणप्रियजीवनजीके॥ स्वारथरहितसखासबहीके॥ पू  
जनीयप्रियपरमजहांते॥ मानियसबहिंरामकेनाते॥ असजि  
यजानिसंगवनजाहू॥ लेइतातजगजीवनलाहू॥ दो॥ पूरि  
भागभाजनभएउमोहिसमेतबलिजांउं॥ जौंतम्हरेमनकां।  
डिछलकीन्दरामपदटांउं॥ ५॥ चौ॥ पुत्रवतीपुवतीजगसो  
ई॥ रचुवरभक्तजासुसतहोई॥ नतरुवांजभलिवादिविथानी  
रामविमुखसततेदितहानी॥ तम्हरेहिंभागरामवनजाही॥  
हमरेहेततातककुनाही॥ सकलसकृतकरफलसुतएहू॥ रा  
मसीयपदसहजसनेहू॥ रागरोषहर्षामदमोहू॥ जनिसयने  
इइनकेवषाहोहू॥ सकलप्रकारविकारविहाई॥ मनक्रमबच  
नकरेइसेवकाई॥ तमकहंबनसबभांतिसपायू॥ सङ्गपित  
मातरामसियजासू॥ जेदिनरामवनलरहिंकलेशू॥ सुता।  
सोइकरैइइहैउपदेश॥ कन्द॥ उपदेशएहिजेदिताततम्हतैरा



मसियसखपावही॥ पितृमातृप्रियपरिवारपुरसखसुरतिवन  
 विसरावही॥ ५॥ तलसीप्रभुहिंशितदेइआयसुदेइपुनिआशिष  
 दर्इ॥ रतिहोउअविरलअमलसियरघुवीरपदनितनई॥ ६॥ सोरठा  
 मातचरणशिरनाइलषणचलेशक्तिनहिये॥ वागुरिविषमत  
 राइमनइंभागुमृगभागवश॥ ७६॥ चौ॥ गणलषणजहंजानकि  
 नाथा॥ भएमनमुदितपाइप्रियसाथा॥ बन्दिरामसियचरणस  
 हाए॥ चलेसंगनृपमन्दिरआए॥ कहहिंपरस्परपुरनरनारी॥ भ  
 लिवनाइविधिबातविगारी॥ तनुकृशमनदुखबदनमलीना॥  
 विकलमनइंमाषीमयुलीणा॥ करमीजहिंशिरयुनियकिताही  
 जनुविनुपंखविहङ्गअऊलाही॥ भइबडिभीरभूपदरवार॥ बर  
 णिनजाइविषादअपारा॥ सचिवउठाइराउबैठारे॥ कहिप्रियवच  
 नरामपगुधारे॥ सियसमेतदोउतनयनिहारी॥ व्याऊलभएभूमि  
 पतिभारी॥ दो॥ सीयसहितसुतसुभगादोउदेखिदेखिअऊलार  
 बारहिंबारसनेहवशाउलेतउरलाइ॥ ७७॥ चौ॥ शकैनबोलिवि  
 कलनरनाइ॥ शोकजनितउरदारुणादाइ॥ नाइशीमपदअतिअ  
 उरागा॥ उठिरघुनाथविदातवमांगा॥ पितृअशीषआयसुमोहि।  
 दीजे॥ हर्षसमयविस्मयकसकीजे॥ तातकियेप्रियप्रेमप्रसाह॥  
 जसजगजाइहोइअपबाह॥ सुनिसनेहवशाउठिवरनाइ॥ बैठारेखु



रामा.  
अ.  
२२

22

दऊदाव॥३५॥ चौ॥ थीरजथरेउऊअवसरजानी॥ सहजसुह  
दवोलीमृडवाणी॥ ताततम्हारमातवेदेही॥ पितारामसबभां  
तिसनेही॥ अवथतहांजहांरामनिवासू॥ तहांदिवसजहांभा  
उप्रकाशू॥ जोपैंसीयरामवनजाही॥ अवथतम्हारकाजककु  
नाही॥ गुरुपितमातवन्युसरसांई॥ सेइयसकलप्राणकीनाई  
रामप्राणप्रियजीवनजीके॥ स्वारथरहितसावासवहीके॥ पू  
जनीयप्रियपरमजहांते॥ मानियसबहिंरामकेनाते॥ असजि  
यजानिसंगवनजाहू॥ लेइतातजगजीवनलाहू॥ दो॥ भूरि  
भागभाजनभएउमोहिसमेतबलिजांउं॥ जौंतम्हरेमनकां  
डिक्कलकीन्दरामपदटांउं॥ ३५॥ चौ॥ पुत्रवतीपुवतीजगसो  
ई॥ रचुवरभक्तजासुसतहोई॥ नतरुवांऊभलिवादिविधानी  
रामविमुखसततेहितहानी॥ तम्हरेहिंभागरामवनजाही॥  
हूसरेहेततातककुनाही॥ सकलसकृतकरफलसुतएहू॥ रा  
मसीयपदसहजसनेहू॥ रागरोषहर्षामदमोहू॥ जनिसयने  
इइनकेवशाहोहू॥ सकलप्रकारविकारविहाई॥ मनक्रमवच  
नकरेइसेवकाई॥ तमकहंबनसबभांतिसुपाशू॥ सङ्गपित  
मातरामसियजासू॥ जेदिनरामवनलहहिंकलेशू॥ सता  
सोइकरैइइहैउपदेशू॥ कन्द॥ उपदेशएहिजेहिताततम्हतैरा



मसिय सख पावहीं ॥ पित मात प्रिय परिवार पुर सख सखतिवन  
 विसरावहीं ॥ ५ ॥ तल सी प्रभु हिंशिख देर आय सख देर निशा शिष  
 दर्श ॥ रति होउ अ विरल अमल सिय रघु वीर पदनित नई ॥ ६ ॥ सोरठा  
 मात चरण शिर नाइ लषण चले शक्ति रहिये ॥ वागुरि विष मत  
 राइ मन डं भागु मृग भागवश ॥ ७ ॥ चौ ॥ गण लषण जहं जान कि  
 नाथा ॥ भय मन मुदित पाइ प्रिय साथा ॥ बन्दि राम सिय चरण स  
 हाए ॥ चले संग नृप मन्दिर आय ॥ कह हिं परस्पर पुर नर नारी ॥ भ  
 लिव नाइ विधि बात विगारी ॥ तनु कृश मन दुख बदन मलीना ॥  
 विकल मन डं माषी मयुस्तीणा ॥ कर मीज हिंशिर थुनि पकिता ही  
 जनु विनु पंख विहङ्ग अऊला ही ॥ भइ बडि भीर भूप दरबारा ॥ बर  
 णिन जाइ विषाद अपारा ॥ सचिव उगार उवै ठारे ॥ कहि प्रिय वच  
 न राम पगु थारे ॥ सिय समेत दोउ तनय निहारी ॥ व्याऊल भय भूमि  
 पति भारी ॥ दो ॥ सीय सहित सुत सुभग दोउ देखि देखि अऊला  
 बार हिं बार सनेह वशा उलेत उर लाइ ॥ १० ॥ चौ ॥ शकै न बोलि वि  
 कल नर नाइ ॥ शोक जनित उर दारुणा दाइ ॥ नाइ शीस पद अति अ  
 नुरागा ॥ उठि रघु नाथ विदात वमां गा ॥ पित अशीष आय सुमोहि  
 दीजे ॥ हर्ष समय विस्मय कस कीजे ॥ तात किये प्रिय प्रेम प्रसाह ॥  
 जस जग जाइ होइ अपबाह ॥ सुनि सनेह वशा उठि बर नाइ ॥ दैठारे रघु



पतिगदिबाहू ॥ सुनइरामतमकहंसुनिकहंही ॥ रामचराच  
रनायकअहंही ॥ शुभअरुअशुभकर्मअनुहारी ॥ ईशदेइफल  
हृदयविचारी ॥ करैजोकर्मपावफलसोई ॥ निगमनीतिअसक  
हंसबकोई ॥ दो० ॥ औरकरैअपराधकोइऔरपावफलभोग ॥ अ  
तिविचित्रभगवन्तगतिकोजगजानेयोग ॥ १८ ॥ चौ० ॥ राउरामरा  
खनहितलागी ॥ बडतउपायकीन्हकुलत्यागी ॥ लखेउरामरु  
खरहतनजाने ॥ धर्मधुरन्धरथीरसयाने ॥ तबचपसीयलाउउर।  
लीनी ॥ अतिहितवडतभांतिशिखदीनी ॥ कहिवनकेदुखदुस  
हसनाये ॥ सासससरपितसखसमुझाये ॥ सियमनरामचर  
णअनुगगा ॥ घरनसगमवनविषमनलागा ॥ ओरोंसबहिंसी  
यसमुजाइ ॥ कहिकहिविपिनविपतिअधिकाइ ॥ सचिवनारि  
गुरुनारिसयानी ॥ सहितसनेहकहहिंमृदुवाणी ॥ तमकहतो  
नदीन्हवनवासू ॥ करइजोकहहिंससरगुरुसासू ॥ दो० ॥ शि  
खशीतलहितमधुरमृदुसुनिमीतहिंसोहानि ॥ शरदचन्द्रचां  
दनिनिरखिजनुचकईअऊलानि ॥ १९ ॥ चौ० ॥ सीयसऊचवशाउ  
तरनदेई ॥ सोसुनितमकिउटीकैकेई ॥ मुनिपटभूषणभाजनआ  
नी ॥ आगेपरिवोलीमृदुवाणी ॥ नृपहिंआणप्रियतमरसुवीरा ॥  
प्रीलसनेहनकाउहिंभीरा ॥ सकुनसुयशपरलोकनशाऊ ॥ त



महिंजानवनकहहिंनराऊ ॥ असविचारिसोइकरइजोभावा  
 रामजननिशिवसुनिसुखपावा ॥ भूपदिवचनबाणसमला  
 गे ॥ शोकविकलमूर्छितनरनाह ॥ काहकरियककुसूजनका  
 ह ॥ रामतरितमुनिबेषवनाई ॥ जलेजनकजननीहिशिरनाई  
 दो ॥ सजिवनसाजसमाजसबवनिताबंधुसमेत ॥ बन्दिविप्र  
 गुरुचरणप्रभुचलेकरिसबहिअचेत ॥ ८० ॥ चौ ॥ निकसिवसि  
 ष्टहारभयवाढे ॥ देखेलोगविरहदवडाढे ॥ कहिप्रियवचनस  
 बहिंसमुजाप ॥ विप्रवृन्दरबुवीरबुलाप ॥ गुरुसबकहिवरषा  
 सनदीन्हे ॥ आदरदानविनयवशकीन्हे ॥ याचकदानमानसन्तो  
 षे ॥ मीतपुनीतप्रेमपरिपोषे ॥ दासीदासबुलाइबहोरी ॥ गुरुहिं  
 सोंपिबोलेकरजोरी ॥ सबकरसारसंभारगोसोंई ॥ करबजनक  
 जननीकीनाई ॥ वारहिंवारजोरियुगपाणी ॥ कहतरामसबस  
 नमृदुवाणी ॥ सोइसबभांतिमोरहितकारी ॥ जेहितेंरहनरनाह  
 सुखारी ॥ दो ॥ मातसकलमोरेविरहजेहिनहोहिंदुखदीन ॥ सो  
 उपायतमकरबसवपुरजनपरमप्रवीन ॥ ८१ ॥ चौ ॥ इहिविधि  
 रामसबहिंसमुजावा ॥ गुरुपदपद्महरषिसिरनावा ॥ गणपति  
 गौरिगिरीशमनाई ॥ चलेअशीषणाइरगुराई ॥ रामचलतअति  
 भयउविषाह ॥ सुनिनजाइपुरआरतनाह ॥ ऊसगुनलंकअवयम

देवगिरी  
२



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



लतनाथलषिअवयअनाथा ॥ विकललोगलागेसबसाथा ॥  
 कृणसिंधुबहुविधिसमुजावहिं ॥ फिरहिप्रेमवशपुनिफिरिआ  
 वहिं ॥ लागतअवयभयानकभारी ॥ मानजेकालगतीअंथिआरी  
 घोरजन्तसबपुरनरनारी ॥ उरपहिंएकहिंएकनिहारी ॥ वरस्म  
 शानपरिजनजनुभूता ॥ सतहितमीतमनहुयमदूता ॥ वागनवि  
 टपवेलिऊन्हिलाही ॥ सरितसरोवरदेखिनजाही ॥ दो० ॥ दयग  
 जकोटिनकेलिमृगपुरपुचातमोर ॥ पिकरधाऊ.शुकशारिका  
 सारसहंसचकोर ॥ ८५ ॥ चौ० ॥ रामवियोगविकलसबटाढे ॥ ज  
 हंतहंसनजेचित्रलिविकाढे ॥ नगरसकलवनगहवरभारी ॥ ख  
 गमृगविपुलसकलनरनारी ॥ विधिकेकयीकिरातिनिकीन्ही ॥  
 जेहिंदेवदुसहदशअदिशिदीन्ही ॥ सहिनशकेरचुवरविरहागी  
 चलेलोगसबव्याऊलभागी ॥ सबदिविचारकीन्हमनमाही ॥ रा  
 मलषणसियविनुसखनाही ॥ जहोगमतहांसकलसमाज ॥  
 विनरनुबीरअवयकहकाज ॥ चलेसाणअममंत्रटजाई ॥ सुरड  
 र्लभसखसदनविहाई ॥ रामचरणपङ्कजप्रियजिनही ॥ विष  
 यभोगवशकरैकितिनही ॥ दो० ॥ जालकबहुविहारहलगेलो  
 गसबसाथ ॥ तमसातीरनिवासकियप्रथमदिवसरनुनाथ ॥ ८५ ॥  
 चौ० ॥ रनुपतिप्रजाप्रेमवशादेवी ॥ सदयहृदयदुखभयउविशोषी ॥



करुणामय रघुनाथ गो सोई ॥ वेमि पाउइ हि पीर पारई ॥ कहि।  
सप्रेम मृदु वचन सुहाए ॥ बड़ विथि राम लोग समुजाए ॥ किए प  
रम उपदेश चनेरे ॥ लोग प्रेम वश फिरहि न फेरे ॥ शील सनेह कृ  
ति नहिं जाइ ॥ असम झु सवश भ परबुराई ॥ लोग शोक प्रम वश  
गे सोई ॥ ककु कदेव मायाम ति भोई ॥ जब हिंया मयुग यामि निबी  
ती ॥ राम सचिव सन कहै उ म प्रीती ॥ खोज मारि रथ हांक जंताता  
आनउ पायवन हिं नहि बाता ॥ दो० ॥ राम लषण सिय यान चढि  
शम्भु चरण शिर नाइ ॥ सचिव चलाए उतरित रथ इतउ त खोजं दु  
राइ ॥ ८६ ॥ चौ० ॥ जागे सकल लोग भए भोरू ॥ गपर बुवीर भए उ अ  
ति शोरू ॥ रथ कर खोज कत डंन हि पावहिं ॥ राम राम करि चडि  
शि पावहिं ॥ मन डंवारि निथि बुज हाज ॥ भए उ विकल सब व  
णि कम माज ॥ एक हिं एक देहिं उपदेशू ॥ तजे उ राम हम जानिक  
लेशू ॥ निन्द हिं आपु सराहिं सीना ॥ थिक जीवन रघुवीर विहीना  
जौ पैं प्रिय विद्योग विथि कीन्हा ॥ तौक समरण मांगे नहि दीन्हा ॥  
इहिं विथि करत प्रलाप कलापा ॥ आप अवय भरे परितापा ॥ विष  
म विद्योग न जाइ बाखाना ॥ अब थि आश वश राखहिं प्राणा ॥ दो०  
राम दरशहिं तने म ब्रत लगे करण नर नारि ॥ मन डंको कबो की  
कमल दीन विहीन तमारि ॥ ८७ ॥ चौ० ॥ सीता सचिव सहित द्वौ भाई



शृङ्गवेरपुरपञ्चचेजाई॥ उतरेरामदेवसरिदेखी॥ कीन्हदण्ड  
 वतहर्षविशेषी॥ लषणसचिवसियकीन्हप्रणामा॥ सबहिंस  
 हितसखपापउरामा॥ गङ्गसलिलमुदमङ्गलमूला॥ सबसु  
 खकरणिहरणिमबमूला॥ कहिकहिकोटिककथाप्रसङ्गा॥  
 रामविलोकतगङ्गतरङ्गा॥ सचिवहिंश्रुजहिंप्रियहिंसनार्  
 विबुधनदीमहिमाअधिकार्॥ मजनकीन्हपंथप्रमगपङ्क॥ सु  
 चिजलपियतमुदितमनभपङ्क॥ समिरतजाहिमिटहिंभवभा  
 रु॥ तेहिंअमयहलोकिकव्यवहारु॥ दो॥ सुदसच्चिदानन्द  
 मयरामभाउऊलकेत॥ चरितकरतनरअनुहरतसंसृतिसा  
 गरसेत॥ ८८॥ चौ॥ इहअथिगुहनिषादजबपाई॥ मुदितलि  
 पप्रियबंधुबुलाई॥ लैफलमूलभेटभरिभारा॥ मिलनचलादि  
 यहर्षअपारा॥ करिदण्डवतभेटथरिआगे॥ प्रभुहिंविलोक  
 तअतिअनुरागे॥ सहजसनेहविवशरमुगई॥ पूछेऊऊशाल  
 निकटबैठाई॥ नाथऊशालपदपङ्कजदेखे॥ भपउभाग्यभाज  
 नजनलेखे॥ देवधरणिथनधामतम्हारा॥ मैजननीचसहित  
 परिकारा॥ कृपाकरियपुरधारियपांऊ॥ आपियजनसबलो  
 गसिहांऊ॥ कहेउसव्यसबसावासजाना॥ मोहिदीन्हपितआ  
 यमुआना॥ दो॥ वर्षचारिदशावामवनमुनिब्रतवेषआहार॥



ग्रामवासनहिउचितसुनिगृहहिंभएउदुखभार॥ ८५॥ चौपाई  
 रामलषणसियरूपनिहारी॥ कहहिंसप्रेमनगरनरनारी॥  
 तेपितमातकहइसखिकैसे॥ जिनपदएवनबालकपेसे॥ ए  
 ककहैभूपतिभलकीन्हा॥ लोचनलाभहमहिंविधिदीन्हा॥  
 तवनिषादपतिउरअनुमाना॥ तरुसिंशिपामनोहरजाना॥  
 लैरघुनाथहिंठाउंवताबा॥ कहेउरामसबभांतिस्वहावा॥ ८६॥  
 जनकरिजुहारगृहआए॥ रघुपरसंस्थाकरणसिधाए॥ गु  
 हसंवारिसायरीवनार्इ॥ ऊषकिशलयमृडपरमसुहाई॥ सु  
 चिफलमूलमधुरमृडबाणी॥ दोनाभरिभरिराखेसिआनी॥  
 दो॥ सियसुमंत्रभातासहितकन्दमूलफलखाइ॥ शयनकी  
 न्दरघुवंशमणिपायपलोदतभाइ॥ ८७॥ चौ॥ उठेलषणप्रभु  
 सोवतजानी॥ कहिसचिवहिंसोबइमृडबाणी॥ ककुकदूरि  
 सजिवाणशरामन॥ चागनलगेवैरिबीरामन॥ गृहबुलाउण  
 हरुप्रतीति॥ दांढांढराखेअतिप्रीति॥ आपुलषणपदिबैठे  
 उजाई॥ कटिभाषाशरचापचढाई॥ सोवतप्रभुहिंनिहारिनि  
 षादा॥ भएउप्रेमवशाहृदयविषादा॥ तनुपुलकितलोचनज  
 लबहई॥ वचनसप्रेमलषणसनकहई॥ भूपतिभवनसुसहज  
 सुहावा॥ सरपतिसदननपटनरपावा॥ मणिमयरचितचारु



चौबारे॥ जगुरतिपतिनिजहाथसंवारे॥ दो॥ शुचिसुविचि  
 त्सुभोगमयसुमनसुगन्धसुवास॥ पलकमञ्जुमणिदीप  
 जहंसवविधिसकलसुपास॥ ११॥ चौ॥ विविधवसनउपधा  
 नतराई॥ तीरफेनमृदुविषदसुहाई॥ तहंशियरामशयननि  
 शिकरही॥ निजकृविरतिमनोजमदहरही॥ तेसियरामसाथ  
 रीसोप॥ अमितवसनविनुजाहिंनजोप॥ मातपितापरिजन  
 पुरवासी॥ सखासुशीलदासअरुदासी॥ जगवहिंजिनहिं  
 प्राणकीनाई॥ महिसोवतसोरामगोसांई॥ पिताजनकजग  
 विदितप्रभाऊ॥ ससुरसुरेशसखारघुराऊ॥ रामचन्द्रपतिसो  
 बैदेही॥ महिसोवतिविधिबामनकेही॥ सियरघुवीरकिकान  
 नयोगू॥ कर्मप्रधानसत्यकदलोगू॥ दो॥ केकयनन्दनिमन्द  
 मतिकठिनऊटिलपणाकीन्ह॥ जेहिंरघुनन्दनजानकिहिंस  
 खअवसरदुखहीन्ह॥ १२॥ चौ॥ भइदिनकरऊलविटपऊठारी  
 ऊमतिकीन्हसवविषदुखारी॥ रामसीयमहिशयनविहारी  
 भएउविषादनिषादहिंभारी॥ बोलेलघणमधुरमृदुबाणी॥  
 ज्ञानविशगभक्तिरससानी॥ कौउनकाऊडखसखकरदाता॥  
 निजकृतकर्मभोगसबधाता॥ योगवियोगभोगभलमन्दा॥  
 हितअनहितमध्यमधुमफन्दा॥ जनममरणजहंलगिजगजा



ल॥ संपतिविपतिकर्मग्रहकाल॥ थरणिथामथनपुरपरिवा  
रु॥ स्वर्गनरकजहंलगिव्यवहारु॥ देवियसुनियगुणियेमन  
मांही॥ मोहमूलपरमारथनाही॥ दो॥ सपनेहो३ भिखारित  
परकुनाकपतिहो३॥ जागेलाभनहानिककुतिमिप्रपञ्चजिय  
जो३॥ ५३ चौ॥ असविचारिनहि कीजियरोषू॥ बादिकाइन  
हिदीजियदोषू॥ मोहनिशासबसोवनिहारा॥ देखहिंसप्रअ  
नेकप्रकारा॥ ३॥ हिजगयामिनिजागहिंयोगी॥ परमारथीप्रप  
ञ्चवियोगी॥ जानियतबहिंजीवजगजागा॥ जबसबविषयवि  
लासविरागा॥ हो३ विवेकमोहभ्रमभागा॥ तबरबुवीरचरण  
अनुरागा॥ साखापरमपरमारथपद॥ मनक्रमवचनरामपद  
नेह॥ रामब्रह्मपरमारथरूपा॥ अविगतअखिलअनादियनू  
पा॥ सकलविकाररहितगतभेदा॥ कदिनितनेतिनिरूपहिंवेदा  
दो॥ भक्तभूमिभूसरसरभिसरहितलागिकृपाल॥ करत  
चरितथरिमनुजतनुसनतमिटहिंजगजाल॥ ५४ चौपाई॥  
साखामसुजियसपरिहरिमोह॥ सियरबुवीरचरणरतहोह  
कहतगमगुणभाभिनुसारा॥ जागेजगमकुलदातारा॥ सक  
लशौचकरिगमग्रहावा॥ अचिसजानबटदीरमंगावा॥ अनु  
जसहितशिरजटाबनाप॥ देखिसमंत्रनयनजलकाप॥ ५५



यदाह्यतिवदनमलीना॥ कहकरजोरिवचनअतिदीना॥  
 नाथकहेउअसकोशलनाथा॥ लैरथजाइरामकेसाथा॥ वन  
 देखाइसरसरिअन्हवाई॥ आनेइवेगिफेरिद्वौभाई॥ लषणरा  
 मसियआनेइफेरी॥ संशयसकलसङ्कोचनिवेरी॥ दो॥ नृ  
 पअसकहेउगोसाईजसकहइकरौबलिसोइ॥ करिविनतीपा  
 यनपरेउदीनबालिजिमिरोइ॥ ५५॥ चौ॥ तातकृपाकरिकीजि  
 यसोई॥ जातैंअवथअनाथनहोई॥ मंत्रिहिंरामउगाइप्रबोधा॥ ता  
 तधर्ममगुतमसबशोधा॥ शिविदधीचिहरिचन्दनरेणा॥ सहै  
 धर्महितकोटिकलेशा॥ रत्निदेवबलिभूपसुजाना॥ धर्मधरे  
 उसहिसङ्कटनाना॥ धर्मनडुसरसत्यसमाना॥ आगमनिगम  
 पुराणवाकाना॥ मैसोइधर्मसलभकरिपावा॥ तजौतोतिह  
 पुरअपयशकावा॥ सम्भावितकहेअपयशलाह॥ मरणकोटि  
 समदारुणादाह॥ तमसनतातवज्रतकाकहऊं॥ दिणउत्तरफि  
 रिपातकलहऊं॥ दो॥ पितपदगहिकहिकोटिविधिविन  
 यकरवकरजोरि॥ चिन्ताकबनिइबातकीतातकरियजनिमो  
 रि॥ ५६॥ चौ॥ तमपुनिपितसमानहितमोरे॥ विनतीकरौंता  
 तकरजोरे॥ सबविधिसोइकरतब्यतम्हारे॥ दुखनपावच्य  
 शोचहमारे॥ सनिरघुनाथसविवसंवाह॥ भणउसपरिजन



रामा.

अ.

२८

28

विकलविषाद॥ पुनिककुलषणाकहेउकदुवाणी॥ प्रभुवर  
जेउवउअनुचितजानी॥ सकुचिरामनिजशपथदिवाई॥ ल  
षणसन्देशकहबजनिजाई॥ कहसुमेउपुनिभूपसन्देश॥ स  
दिनसकिहिसियविपिनकलेष्ट॥ जेहिंविथिअवधआवफि  
रिसीया॥ सोइरचुवीरतमहिंकरणीया॥ नतरुनिपटअवल  
सविहीना॥ मैंनजियवजिमिजलविनुमीना॥ दो॥ मयके  
ससुरेसकलसखजबहिंजहांमनमान॥ तबतहंरहवसखेन  
सियजबलगिविपतिविहान॥ १०॥ चौ॥ विनतीकीन्हभूपजे  
हिंभांती॥ आरतिप्रीतिनसोकदिजाती॥ पितसन्देशसुनिकृ  
पानिधाना॥ सियहिंदीन्हशिखकोटिविधाना॥ सासससर  
गुरुप्रियपरिवारु॥ फिरउतोसबकरमिटइखमारु॥ सुनि  
पतिवचनकहतिबैदेही॥ सुनऊप्राणपतिपरमसनेही॥ प्रभु  
करुणामयपरमविवेकी॥ तनुतजिछांदरहतिकिमिकेकी  
प्रभाजाइकहंभानुविहाई॥ कहांचन्द्रिकाचन्द्रतजिजाई॥ य  
तिहिंप्रेममयविनयसुनाई॥ कहसिसचिवसनगिरासुहाई  
तमपितससरसरिसहितकारी॥ उत्तरदेउंफिरिअनुचितभारी  
दो॥ आरतबशसन्मुखभइउंविलगनमानबतात॥ आरुजस  
तपदकमलविनुवादिजहांलगिनात॥ १८॥ चौ॥ पितबैभव



विलासमैंदीठा ॥ नृपमणिमुकुटमिलितपदपीठा ॥ सुखनि  
 थानअसमाइकमोरे ॥ पतिविहीनमनभावनभोरे ॥ ससुरचक्र  
 वइकोशलराऊ ॥ भुवनचारिदशप्रगटप्रभाऊ ॥ आगेहोइजेहिं  
 सुरपतिलेई ॥ अर्द्धसिंहासनआसनदेई ॥ ससुरपताटशअवध  
 निबासू ॥ प्रियपरिवारमातसमसासू ॥ विचुरचुपतिपदपमप  
 रागा ॥ मोहिकोउसपनेऊसुखदनलागा ॥ अगमपंथवनभूमि  
 पहारा करिकेहरिसरसरितअपारा ॥ कोलकिरातऊरऊ ॥ वि  
 रुऊ ॥ मोहिसबसुखदप्राणपतिसऊ ॥ दो० ॥ सासुससुरस  
 नमोरिहितविनयकरवपरिणय ॥ मोरशोचजनिकरियककुमैं  
 बनसुखीसुभाय ॥ ५२ ॥ चौ० ॥ आणनाथप्रियदेवरसाथा ॥ थीर  
 थुरीणाथरेंथनुभाथा ॥ नहिमगुअमभ्रमडुखमनमोरे ॥ मोहिल  
 गिशोचकरियजनिभोरे ॥ सुनिसुमंत्रसियशीतलबाणी ॥ भएवि  
 कलजनुफणिमणिहानी ॥ नयननसूऊसुनैनहिकाना ॥ कहि  
 नसकैककुअतिअऊलाना ॥ रामप्रबोधकीन्हबऊभांती ॥ तदपि  
 होइनहिशीतलछाती ॥ यतनअनेकसाथहितकीना ॥ उचितउत  
 ररचुनन्दनदीना ॥ मेटिजाइनहिंरामरजाई ॥ कठिनकर्मगतिक  
 कुनवसाई ॥ रामलषणासियपदशिरनाई ॥ फिरेवणिकजिमिसु  
 रगावाई ॥ दो० ॥ रथहांकेहयगामतनहेरिहेरिदिहिनाहिं ॥ देखिनि



रामा.

अ.

२५

29

षादविषाददशाशिरधुनिधुनिपहिताहिं॥१००॥चौ॥जासु  
वियोगविकल्पअपेसे॥प्रजामातपितृजीवहिंकैसें॥बरबस  
रामसमंत्रपढाप॥सरसरितीरआपुचलिआप॥मांगीनावन  
केबटआना॥कहेउतम्हारमरममेंजाना॥चरणकमलरजक  
हंसवकहई॥मानुषकरणिमुरिककुअहई॥कुअतिशिलाभइ  
नारिसहाई॥पाहनतेनकाठकठिनाई॥तरणिउमुनिथरनी  
होइजाई॥वाटपरैमोरिनावउडाई॥पहिप्रतिपालौसबपरिवा  
रु॥नहिजानोंककुओरकवारु॥जोंप्रभुअवशिपारगाचहह  
तौपदपमपखारणकहह॥छन्द॥पदपमथोउचछाइनावन  
नाथउतराईचहैं॥मोहिरामराउरिआनिदशरथपथसबसं  
चीकहैं॥१०१॥वरुतीरमारहिलषणपैजवलगिनपांवपखारिहैं  
तौलगिनतलशीदामनाथकृपालुपारउतारिहैं॥१०२॥सौरवा॥  
सुनिकेवटकेबयनप्रेमलपेटेअटपटे॥विहसेकरुणाअयनचि  
तेजानकीलषणतन॥१०३॥चौ॥कृपासिन्धुबोलेमुसकाई॥सो  
ईकरइजेहिनावनजाई॥वेगिआनिजलपायपखारु॥होतवि  
लम्बउतारइपारु॥जासनामसमिरतएकवारा॥उतरहिंनर  
भवसिंधुअपारा॥सोइकृपालुकेवटहिंनिहोरा॥जेहिंकियज  
गतिइंपदतैंपोरा॥पदनखनिरखिदेवसरिहरषी॥सुनिप्रभु



वचन मोह मति करषी ॥ केवठ राम रजाय सपावा ॥ पानिकड  
 वता भरिलै आवा ॥ अति आनन्द उमगि अनुरागा ॥ चरण सरो  
 ज पखारण लागा ॥ वर्षि सुमन सरस कल सिहाही ॥ ३३ हि सम पु  
 ण्य पुञ्ज को उनाही ॥ दो० ॥ यद पखारि जल पान करि आउ सहित  
 परिवार ॥ पितर पार करि प्रभु पुनि मुदित गण्ड लै पार ॥ १०२ ॥ चौ०  
 उतरि दाऊ भण सरसरि रेता ॥ सीय राम गुहल घण समेता ॥ के  
 वट उतरि दाउ वत कीन्हा ॥ प्रभु सकुचे एहि कुन दीन्हा ॥ पिय  
 हिय कीसिय जान निहारी ॥ मणि सुंदरी मन मुदित उतारी ॥ क  
 हे उकृपाल लेऊ उतराई ॥ केवठ चरण गहे उग्र कुलार् ॥ नाथ आज  
 हम काहन पावा ॥ मिटे दोष दुख दारि ददावा ॥ अमित काल में की  
 न मंजूरी ॥ आज दीन विधि सब भरि पूरी ॥ अब ककुनाथ न आदि  
 य मोरे ॥ दीन दयालु अनुग्रह तोरे ॥ फिरती वार जो ककु मोहि दे  
 वा ॥ सो प्रसाद में थरि शिर लेवा ॥ दो० ॥ बद्धत कीन्ह हठ लघण प्रभु  
 नहि ककु केवट ले ॥ विदा कीन्ह करुणायतन भक्ति विमल वर  
 दे ॥ १०३ ॥ चौ० ॥ तब मजन करि रघु कुल नाथा ॥ पूजि पार्थिव नाथ  
 उमाथा ॥ सिय सरसरि हिं कहा कर जोरी ॥ मात मनोरथ पुर उव मो  
 री ॥ पति देवर संग ऊशल बहोरी ॥ आइ करौ जो हिं पूजा तोरी ॥ सुनि  
 सिय विनय प्रेम रस सानी ॥ भइत बविमल वारि बरवाणी ॥ सुनरघु



वीरप्रियावैदेही ॥ तवप्रभावजगविदितनकेही ॥ लोकपहों।  
हिं विलोकत तोरे ॥ तोहिसेवहिं सबसिद्धिकरजोरे ॥ तमजोहम  
हिं बडिविनयसुनाई ॥ कृपाकीन्हमोहिदीन्हबडाई ॥ तदपिदेवि  
मैदेवप्रसीशा ॥ सफलहोनहितनिजबागीशा ॥ दो० ॥ प्राणना  
थदेवरसहितऊशालकोशलाआइ ॥ पूजहिंसबमनकामना  
सयशरहहिंजगकाइ ॥ १०४ ॥ चौ० ॥ गङ्गवचनसुनिमङ्गलमूला  
मुदितसीयसरसरिअनुकूला ॥ तवप्रभुगुहहिंकहावरजाहू ॥ सु  
नतशुषमुखभाउरदाहू ॥ दीनबचनगुहकहकरजोरी ॥ विनयसु  
नियरबुजलमणिमोरी ॥ नाथसाधरहिपंथदेखाई ॥ कविदिन  
चारिचरणसेवकाई ॥ जेहिंवनजाइरहवरचुराई ॥ पार्णजटीमैक  
रवसहाई ॥ तवमोकहंजशदेवरजाई ॥ सोकरिहोंरबुवीरडहाई  
सरजमनेहरामलवितासू ॥ सङ्गलीन्हगुहहृदयझलासू ॥ १  
निगुहजातिबोलिसबलीन्हा ॥ करिपरितोषनिदासबकीन्हा ॥  
दो० ॥ तवगणपतिशिवसमिरिप्रभुनाइसरसरिहिंमाथ ॥ १०५ ॥ चौ० ॥ तेहिंदि  
नुजसियसहितवनगवनकीन्हरबुनाथ ॥ १०५ ॥ चौ० ॥ तेहिंदि  
नमणउविटपतरवासू ॥ लषणसाखासबकीन्हसफासू ॥ प्रातप्रात  
कृतकरिचुराई ॥ तीरथराजदीखप्रभुजाई ॥ सचिवसत्यप्रदाप्रि  
यनारी ॥ माथवसरिसमीतहितकारी ॥ चारिपदारथभराभाडारू



पुण्यप्रदेशदेशप्रतिचारु ॥ देवत्रयगमगाढगाढसहावा ॥ स  
 पनेद्वजिन्दप्रतिपदिनपावा ॥ सैनसकलतीरथवरवीरा ॥ क  
 लषअनीकदलनरणाधीरा ॥ सङ्गमसिंहासनसुठिसोहा ॥ छ  
 त्रअक्षयवटमुनिमनमोहा ॥ चंमरजमुनजलगङ्गतरङ्गा ॥ दे  
 विहोहिंदुखदारिदभङ्गा ॥ दो० ॥ सेवहिंसकृतीसाधुशुचिपाव  
 हिंसवमनकाम ॥ बन्दीवेदपुराणागणकहहिंविमलगुणाग्राम  
 चौ० ॥ कोकहिसकैप्रयागप्रभाऊ ॥ कलषपुञ्जऊञ्जरमृगराऊ ॥  
 असतीरथपतिदेखिसहावा ॥ सखसागररघुवरसखपावा ॥  
 कहिसियअनुजहिंसखहिंसनाई ॥ श्रीमुखतीरथराजबजाई ॥  
 करिप्रणामदेखतवनवागा ॥ कहतमहातमअतिअनुरागा ॥  
 इहिविधियाइविलोकेउबेणी ॥ समिरतसकलसमङ्गलदेनी  
 मुदितअन्हाइकीन्हशिवसेवा ॥ पूजियथाविधितीरथदेवा ॥ त  
 वप्रभुभरद्वाजपहिंआप ॥ करतदण्डवतमुनिउरलाप ॥ मुनिम  
 नमोदनककुहजाई ॥ ब्रह्मानन्दराशिजनुपाई ॥ दो० ॥ दीन्ह  
 अशीषमुनीशउरअतिआनन्दअसजानि ॥ लोचनगोचरसकृत  
 फलमनइंकिपविधियानि ॥ १०० ॥ चौ० ॥ ऊषालप्रश्नकरिआम  
 नदीन्हा ॥ पूजिप्रेमपरिपूरणाकीन्हा ॥ कन्दमूलफलअंजुरनीके  
 दियेआतिमुनिमनइअमीके ॥ सीयलषणाजनसहितसहाप ॥

२०६



अतिरुचिराममूलफलखाए॥ भएविगतअमरामसुखारे॥ भ  
रहाजमृदुबचनउचारे॥ आजसफलतपतीरयत्पागू॥ आजस  
फलजपयोगविरागू॥ सकलसफलशुभसाधनसाज्ज॥ राम  
तमहिंअवलोकतआज्ज॥ लाभअवधिसुखअवधिनहजी॥ त  
हरेदरशाआससबपूजी॥ अबकरिकृपादेइवरएह॥ निजपद  
सरसिजसरजसनेह॥ दो॥ कर्मवचनमनकाडिकुलजबल  
गिजननतम्हार॥ तबलगिसुखसपनेइनहीकियेकोटिउपचार  
चो॥ सुनिमुनिबचनरामसऊचाने॥ भावभक्तिआनन्दअद्याने  
तवरबुवरमुनिसुयशसहावा॥ कोटिभांतिकहिसबहिस  
हावा॥ सोवडसोसवगुणगणगेह॥ जेहिंमुनिशतमआदर  
देह॥ मुनिरबुवीरपरस्परनमंही॥ बचनअगोचरसुखअनु  
भवही॥ यहपुथिपाइप्रयागनिवासी॥ बडतापसमुनिसि  
हउदासी॥ भरहाजआश्रमसबआए॥ देखनदशरथसअन  
सहाए॥ रामप्रणामकीन्हसबकाह॥ मुदितभएलहिलो  
चनलाह॥ देहिंअशीषपरमसुखपाई॥ फिरेमराहतसुन्दर  
ताई॥ दो॥ रामकीन्हविश्रामनिशिप्रातप्रयागअन्हाइ॥ च  
लेलषणसियजनसहितमुदितमुनिहिंशिरनाइ॥ १०॥ चो॥  
रामसप्रेमकहेउमुनिपांही॥ नाथकहियहमकेदिमगाजांही



सुनिमुनिविहंसिरामसनकहहीं॥ सुगमसकलमयुतम  
 कहंअहहीं॥ सायलागिमुनिशिष्यबुलाए॥ सुनिमनमुदि  
 तयचाशकआए॥ सबहिंदरामपदमेमअपारा॥ सबहिंदर  
 हिंदमयुदीखहमारा॥ मुनिनटुचारिसंगतबदीने॥ जिन्हबहु  
 जन्मसुकृतसबकीने॥ करिप्रणाममुनिआशिष्यपार्थ॥ प्र  
 मुदितहृदयचलेरचुरार्थ॥ ग्रामनिकटजवनिकसेहिंजार्थ  
 होहिंसनायजन्मफलपार्थ॥ फिरहिंदुखितमनसंगपठार्थ  
 दो॥ विद्याकीएवटुबिनयकरिफिरेपार्थमनकाम॥ उत्तरिअ  
 न्हानेजमुनजलजोशरीरसमप्रणाम॥ १०॥ चौ॥ सुनततीरथ  
 वासीनरनारी॥ थाएनिजनिजकाजविसारी॥ लषणारामसि  
 यसुन्दरतार्थ॥ देखिकरहिंनिजभाग्यबडार्थ॥ अतिलालसास  
 बहिंदमनमाहीं॥ नामगावसमऊतसऊचाहीं॥ जेतिनमहं  
 वयवृद्धसयाने॥ तिनकरियुक्तिरामपहिचाने॥ सकलकथा  
 कहितिनहिंसनार्थ॥ बनहिंचलेपितआयसपार्थ॥ सुनिसवि  
 षादसकलपद्धिताहीं॥ रानिराउकीनाभलनाहीं॥ तेहिंअवस  
 रणकतापसआवा॥ तेजपुत्रुलबुबयससहावा॥ कविअल  
 खितगतिवेषविरागी॥ मनबचकर्मरामअनुरागी॥ दो॥ सज  
 लनयनतनुपुलकनिजइष्टदेवपहिचानि॥ प रेउटाउजिमि



रामा०

अ०

३२

32

सिंधु

थरगितलदशानजातिवातानि॥१॥चौ॥रामसप्रेमपल  
किउरलावा॥परमरक्तजनुपारसपावा॥मनहुंप्रेमपरमार  
थदोऊ॥मिलतथरेतनुकहसबकोऊ॥बडरिलषणापायन  
सोइलागा॥लीन्हउठाइउमगिअनुरागा॥पुनिसियचरण  
रेणधरिसीषा॥जननिजानिशिशुदीन्हअशीषा॥कीन्हनि  
षाददण्डवततेही॥मिलेउमुदितमनरामसनेही॥पिवतन  
यनपुटरूपपिसूषा॥मुदितसअशानपाइजिमिभूषा॥कीचौ  
पाईतथा॥कादोहासोइहांतांईलेपकहै॥तेपितमातकहौस  
खिकैसे॥जिनपठएवनवालकऐसे॥रामलषणासियरूप  
निहारी॥शोचसनेहविकलनरनारी॥दो॥तवरनुदीरअ  
नेकविधिसखहिंशिखावनदीन॥रामरजायसुशीषथरि  
भवनगवनतेहिंकीन॥१२॥चौ॥पुनिसियरामलषणाक  
रजोरे॥जमुनहिंकीन्हप्रणामबहोरी॥चलेससीयमुदित  
हौभाई॥रवितनयाकरकरतबडाई॥पथिकअनेकमिलहिंस  
गुजाता॥कहहिंसप्रेमदेखिहौधाता॥राजलक्षणसदअरु  
तमारे॥देविशोचदियहोतहमारे॥मारगचलइयादेहिं  
पाप॥ज्योतिषजुंरहमारेभाए॥अगमयंथगिरिकाननभारी  
तेहिंसहंसायनारिसुऊमारी॥करिकेहरिवनजाहिनजोई॥र



ममरुचलहिंजोआयसुहोई॥जावजहांलगितहंपड।  
चाई॥फिरबबहोरितमहिंशिरनाई॥दो॥इहिविधिपूक  
हिंप्रेमवशपुलकगातजलनयन॥कृपासिंधुफेरहिंतिन  
हिंकरिविनीतमृदुवयन॥१२॥चौ॥जेपुरग्रामवसहिंम  
गुमाहो॥तिनहिंनागसरनगरसिहाही॥केहिंसकृती  
केहिचरीबसाप॥थन्यपुणमयपरमसहाप॥जहंजहं  
रामचरणचलिजाहो॥तेहिंसमानअमरावतिनाही॥३  
एणपुंजमगुनिकटनिवासी॥तिनहिंसराहहिंसरपुरवा  
सी॥जोभरिनयनविलोकहिंरामहिं॥सीतालषणसहित  
वनणामहिं॥जेसरसरितरामअबगाहहिं॥तिनहिंदेव  
सरसरितसराहहिं॥जेहितरुतरप्रभुबैठहिंजाई॥करहिं  
कल्पतरुतासबडाई॥परसिरामपदपमपरागा॥मानति  
भूमिभूरिनिजभागा॥दो॥कांहरहिंधनविबुधगाणावर  
षहिंसमनसिहाहिं॥देखतगिरिवनविहङ्गमृगरामच।  
लेमगुजाहिं॥१४॥चौ॥सीतालषणसहितरचुराई॥गां  
वनिकटजवनिकसहिंजाई॥सुनिसबवालवृद्धनरनारी  
चलहिंतरितगृहकाजविसारी॥रामलषणसियरूपनि  
हारी॥पाउनयनफलहोहिंसखारी॥सजलनयनअतिपुल



कशरीरा॥ सबभयमगनदेखिदौबीरा॥ वरणिनजाइदशा  
तिनकेरी॥ लहीरकुजनुपारसठेरी॥ एकहिंपकबोलिषिख  
देही॥ लोचनलाइलेइलतएएही॥ रामहिंदेखिएकअनु  
रागे॥ चितवतचलेजातसङ्गलागे॥ एकनयनमगुक्कविउर  
आनी॥ होंहिंशिथिलतनुमानसवाणी॥ दो॥ एकदेखिव  
दकाहभलिउासिमृदुलतएपात॥ कहहिंगवाइयतिनु  
कअमगवनबंधवहिंकिपात॥ १५॥ चौ॥ एककलशभ  
रिआनहिंपानी॥ अचरयनाथकहहिंसृदुवाणी॥ सुनिप्रि  
यवचनप्रीतिअतिदेखी॥ रामकृपालसुशीलविशेषी॥ जा  
निसीयअमितमनमांदी॥ घरीकविलम्बकीन्हवटकाही॥  
मुदितनारिनरदेखहिंशोभा॥ रूपअरूपनयनमललोभा॥  
एकटकसबजोवहिंचइंओरा॥ रामचन्द्रमुखचन्द्रचकोरा  
तरुणातमालवरुणातनुमोहा॥ देखतकामकोटिमनमोहा  
दामिनिवरणलषणसखीनीके॥ नखशिखसभगभावतेजी  
के॥ मुनिपटकटिन्हकसेतणीरा॥ सोहतकरकमलन्यनुती  
रा॥ दो॥ जटामुकुटशीसनिसभगउरभूजनयनविशाल  
स्वरदरणिमाविभुवदनलसतखेदकाजाल॥ १६॥ चौ॥  
वरणिनजाइमनोहरजोरी॥ शोभाअमितमोरमतिथोरी॥



रामलषणसियसुन्दरतारै॥ सबचितवहिंमतिमनचितला  
 ई॥ थकेनारिनरप्रेमपिआसे॥ मनऊंमृगीमृगदेखिदियासे॥  
 सीयसमीपगामतीयजाही॥ पूकृतअतिसनेहसऊचाही॥  
 बारबारसबलागहिंपाए॥ कहहिंवचनमृदुसरलसहाए॥  
 राजऊमारिविनयहमकरही॥ तियसुभावककुपूकृतउरही॥  
 स्वामिनिअबिनयहमवहमारी॥ विलगुणमानबजानिग  
 वारी॥ राजऊंअरदोउसहजसलोने॥ इनतेलहिद्वितिमरकत  
 सोने॥ दो॥ श्यामलगौरकिशोरवरसुन्दरसखमाअयन॥  
 शरदशार्वरीनाथमुखशरदसरोरुहनयन॥ ११०॥ चौ॥॥  
 कोटिमनोजलजावनिहारे॥ समुखिकदङ्ककोअहहिंतम्हा  
 रे॥ सुनिसनेहमयमंजुलबाणी॥ सऊचिसीयमनमहंसुस  
 कानी॥ तिनहिंबिलोकिबिलोकेउथरणी॥ डहंसंकोचसऊ  
 चतिबरवरणी॥ सऊचिसप्रेमबालमृगनयनी॥ बोलीमधु  
 रवचनपिकवयनी॥ सहजसुभावसुभगतनगोरे॥ नामलष  
 णालबुदेवरमोरे॥ बडरिवदनविधुअञ्जलजाकी॥ पियत  
 नत्रितैभौंहकरिबांबी॥ जस॥ सञ्जुतिरीकेंनयनी॥ निज  
 पातकरुनहिंसियसयनी॥ भईमुदितसबग्रामबभूटी  
 रकुन्दरत॥ गणपिजबलूटी॥ दो॥ अतिसप्रेमसियपायथरि  
 नूतविधिदेहिअशीष॥ सदासोहागिनिरुद्धतमजबलगिम



रा मा.

अ.

३५

३५

द्विप्रदिशीष ॥ ११८ ॥ चौ० ॥ पारवतीसमपतिप्रियहोइ ॥ देवि  
नरुमपरकाउवकोइ ॥ पुनिपुनिविनयकरहिंकरजोरी ॥ जौ  
इहिमारगफिरियबहोरी ॥ दरशनदेवजानिनिजदासी ॥ ल  
खीसीयसबप्रेमपियासी ॥ मधुरवचनकहिकहिपरितोषी  
जनुऊमुदिनीकोमुदीपोषी ॥ तबहिलषणारचुवररुषजानी  
पूछेउमगुलोगनिमृडवाणी ॥ सुनतनारिनरभण्डखारी ॥  
पुलकितअङ्गविलोचनवारी ॥ मिठासोदमनभणमलीने ॥  
विधिनिधिदिन्हलेतजनुकीने ॥ समुजिकर्मगतिपीरजकी  
न्हा ॥ शोधिसगममगुतिन्हकहिदीन्हा ॥ दो० ॥ लषणजान  
कीसहिततबगदनकीन्हरनुनाथ ॥ फेरेसबप्रियवचनक  
हिलिएलायमनसाथ ॥ ११९ ॥ चौ० ॥ फिरतनारिनरअतिय  
किताही ॥ दैवहिंदोषदेहिंमनमाही ॥ सहितविषादपरस्पर  
करही ॥ विधिकरतबसबउलटैअही ॥ निपटनिरंऊशानिदु  
रनिशंकू ॥ जेहिंशशिकीन्हसरुजसकलंकू ॥ रुषकल्पतरु  
सागरखारा ॥ तेउपठएवनराजऊमाश ॥ जौपैइन्हिंदीनवन  
वास ॥ कीनवादिविधिभेरा ॥ येनिचरहिंसगुविनु  
परजाणा ॥ रचेवादिविधिवादननाना ॥ सपाता ॥ सभगसेजकतसृजतविधाता ॥ चौ०  
विधिदीना ॥ भवलथामरचिअमकतकीना ॥ दो० ॥ जौएमास



पटथरजटिलसुन्दरसुठिसुऊमार॥विविधभांतिभूषणावस  
 नवादिकिएकरंतार॥चौ॥जौयेकन्दमूलफलखाही॥बादिस  
 थादिअसनजगमाही॥एककहहिंयेसहजसहाए॥आपुप्रग  
 टभएविधिनबनाए॥जहंलगिवेदकहेउविधिकरणी॥अवण  
 नयनमनगोचरबराणी॥देखइखोजिभुवनदशचारी॥कहंअ  
 सपुरुषकहांअसनारी॥इनहिंदेखिविधिमनअनुरागा॥पटन  
 रुयोगबनावनलागा॥कीनबडतअमएकनयाए॥तेहिंइर्षाव  
 नआनिडराए॥एककहहिंदमबडतनजानहिं॥आपुहिंपरम  
 थन्यकरिमानहिं॥तेपुनिपुणपुंजहमलेखे॥जेदेखहिंदेखहिं  
 जिनदेखे॥दो॥इहिविधिकहहिवचनप्रियलेहिनयनभरिनी  
 र॥किमिचलिहैंमारगअगमसुठिसुऊमारशरीर॥२२॥चौ॥  
 नारिसनेहविकलसबहोही॥चकईसांऊसमयजिमिसोही  
 मृदुपदकमलकठिनमगुजानी॥गहवरिरुदयकहहिंमृदुवा  
 णी॥परसतमृदुलचरणअरुणारे॥सऊचतिमहिजिमिरुदय  
 हमार॥जौजगदीशइनहिंबनदीना॥कसनसमनमयमारग  
 कीना॥जौमांगोपारयविधिपोंझी॥रुखिएसखिअदीआंखिनमां  
 ही॥जेनरकरिनावसरआए॥तिनसियगमनदेखनपाए॥सुनि  
 खरूपबुठहिंरगलाई॥अवलमिगएकहांलगिभाई॥समरथथा  
 इविलोकहिंजाई॥अमुदितफिरहिंनयनफलपाई॥दो॥अबला



बालकवृद्धजनकरमीजहिंप्रकृतिहिं॥होहिंप्रेमवशालोगइ  
मिरामजहांजहंजाहिं॥१२॥**नौ०॥**गांउंगांउंअसहोउंअननहू॥  
देविभानुऊलकैरवचनू॥जेककुसमाचारसुनिपावहिं॥ते  
चपराणिहिंदोषलगावहिं॥कहहिंप्रकृतिभलनरनाहू॥  
दीनहमदिजिनलोचनलाहू॥कहहिंपरस्परलोगलुगाई॥  
बातेंसरलसनेहसुहाई॥तेपितमातृयन्यजेहिंजाए॥यन्य  
सोनगरजहांतैंआए॥यन्यसोषौलदेशवनगाऊं॥जहंजहंजा  
हिंयन्यसोठाऊं॥सुखपाएविरचिरचितेही॥येजिनकेसबा  
भांतिसनेही॥रामललापयकथासुहाई॥रहीसकलमगुका  
ननकाई॥**दो०॥**इहिविधिरघुऊलकमलरविमगुलोगानिसु  
खदेत॥जाहिंचलेदेखतविपिनसिधसोमित्रिसमेत॥१२॥**चौ०॥**  
आगेंरामलक्षणपुनिपाकें॥तापसवेषविराजतकाकें॥उभय  
मध्यसियशोभतिकैसी॥ब्रह्मजीवविचमायाजैसी॥बडरि  
कहंउंविजसमनवसई॥जनुमधुमदनमथरतिलसई॥उपमा  
बडरि कहोंजियजोही॥बुधविधुमध्यहोहिणीसोही॥प्रभुप  
दरेखहीचविचसीता॥थरतिचरणमगुचलनिसभीता॥सीय  
रामपदयऊवराए॥लक्षणचलहिंमगुयदिनवांए॥रामलख  
णसिखीतिसुहाई॥वचनअगोचरकिमिकहिंआई॥खगमृ  
गमगनदेखिकविहोही॥लिप्योरिचितरामवहोही॥**दो०॥**



जिनजिनदेखेपथिकप्रियसीयसहितद्वौभाउ॥ सबमगुअग  
 मअनन्दतेविनुअमरहेसिराउ॥ १२५॥ चौ॥ अजडंजासुउरस  
 पनेऊकाऊ॥ वसहिंरामसियलषणानटाऊ॥ रामधामपथपा  
 इहिसोई॥ जोपथपावकबडमुनिकोई॥ तवरघुवीरअमितसि  
 यजानी॥ देखिनिकटबटशीतलपानी॥ तहवसिकन्दमूलफ  
 लखाई॥ प्रातअन्हाइचलेरघुगई॥ देखतवनसरषोलसहाप॥  
 बालमीकआप्रमप्रभुआप॥ रामदेखिमुनिवाससहावन॥ सु  
 न्दरगिरिकाननजलपावन॥ सरनिसरोजविपवनफूले॥ गुञ्ज  
 तमंजुमधुपरसभूले॥ खगमृगविपुलकोलाहलकरंही॥ वि  
 रहितवैरमुदितवनचरंही॥ दो॥ अचिसुन्दरआप्रमनिरखि  
 हर्षेराजिवनयन॥ सुनिरघुवरआगमनमुनिआगेआएलयन॥  
 चौ॥ मुनिकहंरामदाउवतकीन्हा॥ आशीर्वादविप्रवरदीन्हा॥  
 देखिरामकविनयनजुजाने॥ करिसनमानआप्रमहिंआने॥  
 मुनिवरअतिथिप्राणप्रियपाप॥ कन्दमूलफलमधुरमंगाप॥  
 सियसोमिविरामफलखाप॥ तबमुनिआसनदिपसहाप॥ बा  
 लमीकमनआनन्दभासी॥ मंगलमूरतिनयननिहारी॥ तबक  
 रकमलजोनिघुगई॥ बोलेवचनअवणसखदाई॥ तमत्रिकाल  
 दर्शीमुनिनापा॥ विषवदरनिमित्तदूरेहापा॥ असकदिप्रभुस

१२५॥



वकपावखानी ॥ जेहिं जहिं भांति दीन्हवनशानी ॥ दो॥ ता  
तवचन पुनि मातहित भाउ भरत असराउ ॥ सो कहंदरशातम्हा  
रप्रभु सब मम पुण्य प्रभाउ ॥ १२६ ॥ चौ॥ देखि पाय मुनि रायत  
म्हारे ॥ भयसकृत सब सुफल हमारे ॥ अब जहं राउर आ य सहो  
ई ॥ मुनि उदेगन पावहिं कोई ॥ मुनिताय सजिन तेंदुखल हंही ॥  
तेन रेस विनु पावक दहंही ॥ मरुल मूल विप्र परि तोष्ट ॥ दह  
उकोटि कुल भूसर रोष्ट ॥ असजिय जानिक दिव सो उठोऊ ॥ सि  
य सो मित्रि सहित जहं जांऊ ॥ तहं रचिरुचिर पर्ण तणा पाला  
वास करौं ककु काल कृपाला ॥ सहज सरल सुनिर सुवर वाणी  
साधु साधु बोले मुनि शानी ॥ कसन कहइ असर कुल केत  
तम पालक सन्तत प्रति सेत ॥ छन्दः ॥ प्रति सेत पालक राम  
तम जगदीश माया जानकी ॥ जो सृजति जग पालति हरति रु  
षपाश कृपा निधान की ॥ ५ ॥ जो सहस्र शीष अदीश महि धरिल  
षण सचराचर थनी ॥ सरकाज धरिन राजत उचले दलनाव  
ल निशिचर अनी ॥ १० ॥ सोरठा ॥ राम स्वरूप तम्हार वचन अगो  
चर बुदिवर ॥ अविगत अकथ अपार नेति नेति नित नित मक  
हं ॥ १२७ ॥ चौ॥ जग पेदाता तम प्रेक्षि हारे ॥ दिधि हरि शम्भु न  
चावन हारे ॥ तेउन जानहिं मर्म तम्हारा ॥ और तम हिंको जानन हा



रा॥ सो जानै जे हिंदे ऊज नार्इ॥ जानत त म्हे त म हिं होइ जाई॥ त  
 म्हरी कृपा त म हिं र चु न न्दन॥ जानत भक्त भक्त उ र च न्दन॥ विदा  
 न न्द म य देह त म्हारी॥ विगत विकार जान अ धिकारी॥ नर तनु  
 थरे ऊ स न्त सर का जा॥ कह ऊ कर ऊ ज स प्रा कृत रा जा॥ राम दे  
 खि सु नि च रि त त ह्यारे॥ ज उ मो ह हिं बु ध हो हिं सु खारे॥ त म जो क  
 ह ऊ कर ऊ स व सां चा॥ ज श का क्खि य त स न चा दि अ ना चा॥ दो०॥  
 पूजे ऊ मो हि कि र हों क हां में पू कृत स ऊ चा उं॥ ज हं न हा ऊ त हं दे  
 ऊ क हि त म हि व ता वों ग उं॥ १२८॥ चौ०॥ सु नि मु नि व च न प्रे म र  
 स मा ने॥ स ऊ चि रा म म न म हं मु सु का ने॥ बाल मी क हं सि क ह  
 दि व हो री॥ बा णी म भु र अ मि य र स बो री॥ सु न ऊ रा म अ व क हों  
 नि के ता॥ व स ऊं ज हो सि य ल ष ण स मे ता॥ जि न के अ व ण स मु द्र  
 स मा ना॥ क षा त ह्यार सु भ ग स रि ना ना॥ भ र हिं नि र न्त र हो दि न  
 पू रे॥ ति न के हृ द य स द न त व रू रे॥ लो च न चा त क जि न क रि रा षे  
 र ह दि द र श ज ल थ र अ भि ला षे॥ नि द र हिं सि न्धु स रि त अ ति भा री  
 रू प बि न्दु ज ल हो हिं सु खारी॥ ति न के हृ द य स द न सु ख दाय क॥  
 व स ऊ ल ष ण सि य स ह र चु ना य क॥ दो०॥ य श त म्हा र मा न स वि  
 म ल हं सि नि जी हा जा स॥ नु क्ता ह ल ग ण ग ण चु नै व स ऊ रा म हि  
 य ता स॥ १२९॥ चौ०॥ प्र भु प्र सा द अ चि सु भ ग स वा सा॥ सा द र जा स

आभीर



लहै नितनाशा ॥ तमहि निवेदित भोजन करही ॥ प्रभु प्रसाद पट  
भूषण थरही ॥ श्रीमन वहिं सुरगुरु द्विज देखी ॥ प्रीति सहित करि  
विनय विशेषी ॥ करनित करहिं रामसिय पूजा ॥ राम भरो सहृद  
य नहि दूजा ॥ चरण राम तीरथ चलि जाही ॥ राम बसइ तिन के मन  
माही ॥ मंत्र राजनित जपहि तम्हारा ॥ पूजहिं तमहिं सहित परि  
वारा ॥ तर्पण होम करहिं विधिनाना ॥ विप्र जे वाइ देहिं बड दाना ॥  
तम तैं अधिक गुरु हिं जिय जानी ॥ सकल भाव से वहिं सन मानी  
दो॥ ॥ सब करि मांगहिं एक फल राम चरण रति होउ ॥ तिन के म  
न मन्दिर बसइ सिय रचुन नन्दन दोउ ॥ १३० ॥ चौ॥ ॥ काम क्रोध मद  
मानन मोहा ॥ लोभन दोभन राग नद्रोहा ॥ जिन के कपट दम्भ न  
हि माया ॥ तिन के हृदय बसइ रचु राया ॥ सब के प्रिय सब के हित  
कारी ॥ दुख सुख सरिस प्रशंसा गरी ॥ कहहिं सत्य प्रिय वचन वि  
चारी ॥ जागत सोवत शरण तम्हारी ॥ तमहिं काडि गति दूसर ना  
ही ॥ राम बसइ तिन के उर माही ॥ जननी सम जानहिं परनारी ॥ य  
न पराय विष तैं विष भारी ॥ जे हरषहिं परसम्पति देखी ॥ दुखित हो  
हिं पर विपति विशेषी ॥ जिनहिं राम तम प्राण पियारे ॥ तिन के उ  
र प्रभु भसदन तम्हारे ॥ दो॥ ॥ स्वामि सखा पित मात गुरु जिन के स  
ब तम तात ॥ तिन के मन मन्दिर बसइ सीय सहित दौ भ्रात ॥ १३१ ॥



**चौ॥** अथ गुणतजिसबके गुण गहंही ॥ विप्रये उदित सक  
 ट सहंही ॥ नीतिनिपुण जिनकी जगलीका ॥ बरत म्हार ति  
 नके मननीका ॥ गुणत म्हार समुजहिं निज दोष ॥ जेहिं सब  
 भांति त म्हार भरोसू ॥ राम भक्त प्रियला गहिं जेही ॥ तेहिं उर  
 बसइ सहित बैदेही ॥ जातिपांति थन थर्म बडाई ॥ प्रिय परिवा  
 र सहृद समुदाई ॥ सबत जित महिर है लबलाइ ॥ ताके हृदय  
 वसइ रचुराई ॥ स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना ॥ जहंत हं दीख थ  
 रें थं बाराणा ॥ मनक्रम वचन जोरा उर चेरा ॥ राम करइ ताके उ  
 र डेरा ॥ **दो॥** जाहि न चाहिय कबइ ककुत मसन सहज सनेद  
 वसइ निरन्तर ता सउर सोरा उर निज गोद ॥ १३२ ॥ **चौ॥** इहि वि  
 थि मुनिवर सद न देखाए ॥ वचन सप्रेम राम मन भाए ॥ कद मु  
 निस नइ भाउ कुल नायक ॥ आश्रम कहौ समय सखदायक ॥  
 चित्रकूट गिरिकरइ निवास ॥ तहंत म्हार सब भांति सपाश्रु ॥  
 शैल सुहावन कानन चारु ॥ करिके हरि मृग विहइ विहारु ॥  
 नदी पुनीत पुराण वखानी ॥ अत्रि प्रिया निज तप बल आनी ॥  
 सरसरि थारनाम मन्दाकिनी ॥ जो सब पातक पोत कडाकिनी ॥  
 अत्रि आदि मुनिवर बइ वसही ॥ करहिं योग जपत पतनुक स  
 ही ॥ चलइ सफल आश्रम प्रभु करइ ॥ राम देइ गौरव गिरिवरइ



रामा.  
अ.  
१८

38

दो॥ चित्रकूटमहिमाप्रमितकहीमहामुनिगार॥ आरुअ  
नानेसरितवरसीयसहितद्वौभा॥ १३३॥ चौ॥ रघुवरकहे  
उलषणभलवाटू॥ करझकतजंअबठाहरवाटू॥ लषणदी  
खपयउतरकरारा॥ चङ्गदिशिफिरेउथनुषजिमिनारा॥ न  
दीपनचशरशमदमदाना॥ सकलकलूषकलिसाउजना  
ना॥ चित्रकूटजनुअचलअहेरी॥ चुकनघातमारुमुढभेरी॥  
असकहिलषणागाउंदेखावा॥ यलविलोकिरघुपतिसख  
पावा॥ रमेउराममनदेवन्हजाना॥ चलेसहितसरपतिपर  
थाना॥ कोलकिरातवेषधरिआए॥ रचेउपार्णतणमदनसु  
हाए॥ वरणिनजारुमंजुहृशाला॥ एकललितलघुएकवि  
शाला॥ दो॥ लषणाजानकीसहितप्रभुशजतपर्णनिकेत॥  
सोहमदनमुनिवेषजनुरतिअतराजसमेत॥ १३४॥ चौ॥  
अमरनागकिन्नरदिकपाला॥ चित्रकूटआएतेहिंकाला॥ रा  
मप्रणामकीन्हसबकाहू॥ मुदितदेवलहिलोचनलाहू॥ व  
र्षिसमनकहदेवसमाज्ज॥ नाथसनाथभएहमआज्ज॥ करि  
विनतीडावडुसहसनाए॥ हर्षितनिजनिजसदनसिधाए॥  
चित्रकूटरघुनन्दनकाए॥ समाचारसुनिसुनिमुनिआए॥ आ  
वतदेखिमुदितमुनिवृन्दा॥ कीन्हदाउवतरघुऊलचन्दा॥



मुनिरघुवरहिंलाउरलेही ॥ सफलहोनहितआशिषदेही  
 मियसोमित्रिरामकुविदेखी ॥ साथनसकलसफलकरिले  
 खी ॥ दो० ॥ यथायोगसनमानिप्रभुविदाकिप्रमुनिबृन्द ॥  
 करहिंयोगजपयज्ञतपनिजआश्रमसुखन्द ॥ १५ ॥ चौ० ॥  
 यहसुधिकोलकिरातनपाई ॥ हर्षजननवनिधिपरआई ॥  
 कन्दमूलफलभरिभरिदोना ॥ चलेरङ्गजनुलटनसोना ॥  
 तिनमहंजिनदेखेहोआता ॥ औरतिनहिंप्रहृदिमगुजाता  
 कहतसनतरघुवीरनिकाई ॥ आपसबदेखेहोभाई ॥ करहिं  
 जुहारिभेंठपरिआगे ॥ प्रभुहिंविलोकतअतिअनुरागे ॥ चि  
 त्तलिवेजनुजहंतहंठाछे ॥ पुलकशरीरनयनजलवाछे ॥  
 रामसनेहमगनसबजाने ॥ कहिप्रियवचनसकलसनमाने  
 प्रभुहिंजोहारिवहोरिवहोरी ॥ वचनविनीतकहिंकरजोरी  
 दो० ॥ अबहमनाथसनाथसबभएदेखिप्रभुपाय ॥ भाग्यह  
 मारेआगमनराउरकोशालराय ॥ १६ ॥ चौ० ॥ थन्यभूमिवन  
 पंथपहारा ॥ जहंजहंनाथपांवतमधारा ॥ थन्यविहंगमृग  
 कानचारी ॥ सफलजन्मभएतुमहिंनिहारी ॥ हमसबथन्य  
 सहितपरिकारा ॥ देविनयनभरिदरशतमहारा ॥ कीन्हवास  
 भलठामविचारी ॥ इहांसकलअवरहबसवारी ॥ हमसब



भांति करव सेवकाई ॥ करिके हरि अहि वाच बराई ॥ वन वि  
 हङ्ग गिरिकन्दर खोहा ॥ सबद मार प्रभु पगु पगु जोहा ॥ त  
 हंत हंत महिं अहेर खेलाउव ॥ सरनिर्जर सब गउं देखाउव ॥  
 हम सेवक परिवार समेता ॥ नाथन सकुच बआय सुदेता ॥  
 दो० ॥ वेद वचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुणा अयन ॥ वच  
 न किरातन केसन तजि मिपित बाल कबयन ॥ १३० ॥ चौ० ॥  
 राम हिं केवल प्रेम पिआरा ॥ जानिले झजे जान निहारा ॥ रा  
 म सकल वन पर परि तोषे ॥ कहि मृदु वचन प्रेम परि पोषे ॥  
 विदा कि पशिर नासि थाए ॥ प्रभु गुण कहत सुनत चर आए  
 इदिविधि सीय सहित दौभाई ॥ बस हिं विपिन सर मुनि सख  
 दाई ॥ जब तें आइर हेर चुनायक ॥ तब तें भए बन मङ्गल दाय  
 क ॥ फूल हिं फल हिं विटप विधिनाना ॥ मंजुललित वरवे  
 लिविताना ॥ सरतरु सरिस सभाव सहाए ॥ मन झं विबुध  
 वन पर हरि आए ॥ गुंजत मंजुल मधुकर अणी ॥ त्रिविध व  
 यार बहै सख देनी ॥ दो० ॥ नीलकंठ कलकंठ शुक चातक च  
 क्रचकोर ॥ भांति भांति बोल हिं विरग अवण सख दचित चो  
 र ॥ १३१ ॥ चौ० ॥ करिके हरि कपिकोल ऊरझा ॥ विगत वयर  
 विहर हिं एक मझा ॥ फिरत अखेट राम कवि देखी ॥ लोहिं मु



दितमृगवृन्दविशेषी॥ विबुधविधिजहंलगिजगमाही  
 देविरामवनसकलसिहाही॥ सरसरिसरस्वतिदिनकरक  
 न्या॥ मेकलसुतागोदावरियन्या॥ सबसरिसिन्धुनदीनदना  
 ना॥ मन्दाकिनिकरकरहिंवाखाना॥ उदयग्रस्तगिरिवरकैला  
 सू॥ मन्दरमेरुसकलसुरवासू॥ शैलहिंमाचलआदिकजेते  
 चित्रकूटयशगावहिंतेते॥ देवमुदितमनसखनसमाई॥ वि  
 बुधमविपुलबडाईपाई॥ दो॥ चित्रकूटकेविहंगमृगबेलि  
 विटपतराजाति॥ पुण्यपुंजसबयन्यग्रसकहहिंदेवदिन  
 राति॥ १३५॥ चौ॥ नयनवन्तरघुपतिहिंविलोकी॥ पाइज  
 न्मफलहोहिंविशोकी॥ परशिचरणारजग्रचरसखायी॥ भ  
 पपरमपदकेअधिकारी॥ सोवनशैलसुभायसुहावन॥ मङ्ग  
 लमयअनिपावनपावन॥ महिमाकहोंकवनविधितासू॥  
 सखसागरजहंकीन्हनिवासू॥ पयपयोधितजिअबयवि  
 हारै॥ जहंसियरामलषणरहआई॥ कहिनशकहिंसख  
 माजसकानन॥ जौशतसहसहोहिंसहसानन॥ सोमेवर  
 णिकहोंविधिकेही॥ आवरकमठकिमन्दरलेही॥ सेवहिं  
 लषणकर्ममनवाणी॥ जाइनशीलसनेदवाखानी॥ दो॥  
 हाणतणालविसियरामपदजानिआपुपरनेद॥ करतल  
 षणसपनेनचितबन्धमातपितगेद॥ १४०॥



चौ॥ रामसङ्गसियरहहिं सखारी॥ पुरपरिजनगृहसुखति  
विमारी॥ दाणदाणपियविधुवदननिहारी॥ प्रमुदितमनऊं  
चकोरकुमारी॥ नाहनेहनितबछतविलोकी॥ हर्षितरहति  
दिवसजिमिकोकी॥ सियमनरामचरणअनुरागा॥ अब  
धसहसममवनप्रियलागा॥ पणकुटीप्रियप्रियतमसङ्गा  
प्रियपरिवारऊरङ्गविहङ्गा॥ सासससरसममुनितियमुनि  
वर॥ अशानअमियसमकन्दमूलकर॥ नाथसाथसाथरीसु  
हाई॥ मयनशयनशतसमसखदाई॥ लोकपहोहिंविलोक  
तजासू॥ तेहि किमोदशकविषयविलासू॥ दो॥ समिर  
तरामहिंतजहिंजनतृणसमविषयविलासू॥ रामप्रिया।  
जगजननिसियककुनआचरजतासू॥ ५१॥ चौ॥ सीयल  
षणजेहिंविधिसखलहंदी॥ सोररनुनायकरहिंसोरक  
हंदी॥ कहहिंपुरातनकथाकहानी॥ सुनहिलषणसिया।  
अतिसखमानी॥ जबजबरामअवयसुधिकरंदी॥ तबत  
बवारिविलोचनभरंदी॥ सपिरिमातपितपरिजनभाई॥  
भरतसनेहशीलसेवकाई॥ कृपासिन्धुप्रभुहोहिंदुखारी॥  
धीरजयरहिंकुसमयविचारी॥ लखिसियलषणविकल  
होरजांदी॥ जिमिप्ररुषहिंअनुसरपरिकांदी॥ प्रियादनु



गतिलखिरचुनन्दन॥धीरकृपालुभक्तउरचन्दन॥लगेकह  
 नकक्ककथापुनीता॥सुनिसखलहदिलषणअरुसीता॥दो॥  
 रामलषणसीतासहितसोहतपर्णनिकेत॥जिमिवासवव  
 सअमरपुरशचीजयन्तसमेत॥१५२॥चौ॥युगवहिंप्रभुसिय  
 लषणहिंकैसे॥पलकविलोचनगोलकजैसे॥सेवहिलषण  
 सीयरचुवीरहिं॥जिमिअविवेकीपुरुषशरीरहिं॥इदिविधि  
 प्रभुवनवसहिसखारी॥खगमृगसरतापसहितकारी॥कहे  
 उरामवनगवनसहावा॥सनइसमंत्रअवयजिमिआवा॥  
 फिरेउनिषादप्रभुहिंपइंचाई॥सचिवसहितरथदेखेउआई॥मं  
 त्रिहिविकलविलोकिनिषाद॥कहिनसकहिंजशभपउविषाद  
 रामरामसियलषणपुकारी॥परेउथरणितलव्याऊलभारी  
 देखिदहिणदिशिहयहिदिनाही॥जिमिविउपंखविहंगअ  
 ऊलाही॥दो॥नदितरणचरहिंनपियहिंजलमोचतलोच  
 नवारि॥व्याऊलभपउनिषादपतिरचुवरवाजिनिहारि॥१५३॥  
 चौ॥धीरजथरितवकरुहिंनिषाद॥अवसमंत्रपरिहरइवि  
 षाद॥तमपंडितपरमारथज्ञाता॥थरइधीरलखिविमुख्या  
 ता॥विविधकथाकहिकहिमृडवाणी॥रथवैगरेसिवरवश  
 आनी॥शोकसिथिलरथकहिंनहांकी॥रचुपतिविरहपीरउ  
 रवोंकी॥तरफराहिंमगुचलहिनघोरे॥वनमृगमनइंआनिर



रामा.  
अ.  
५१

यजोरे॥ उऊ कि परहिं फिरि चित बहिं पीछे॥ राम वियोग वि  
कल डखती छे॥ जो कहं राम लषण बैदेही॥ नहि करहि करि  
हय देरहिं तेही॥ बाजि विरह गति किमि कहि जाती॥ मणि वि  
नु फणि कविकल जेहि भांती॥ दो॥ भयनिषाद विषाद वषा  
देखत सचिव तरङ्ग॥ दोलि ससेवक चारित बदि पसारथी स  
ङ्ग॥ १५५॥ चौ॥ गुरु सारथि फिरे पङ्क चारै॥ विरह विषाद वर  
णि नहिं जाई॥ चले अवध लै रथ हिं निषादा॥ होत क्षण हिं द  
ण भगन विषादा॥ शोच समुद्र विकल डख दीना॥ थिक जी  
वन रघुवीर विहीना॥ रह हिं न अन्त झ अथ मशरीरा॥ यशान  
ल हेउ विकुरतर रघुवीरा॥ भएउ अयश अवभाजन प्राणा॥ कों  
न हेत नहि करत पयाना॥ अहह मन्द मति अवसर चुका॥ अ  
जड न हृदय होत डुरडंका॥ मी जिहाय शिर पुनि पकितार्ई॥  
मन डंरु पणायन शशि गवाई॥ विरद बोधि वरवीर कहाई॥ च  
ले समर जनु सुभट पशई॥ दो॥ विप्र विवेकी बेद विद सम  
त साधु सुजाति॥ जि मिथो खेम दयान कर सचिव शोच तेहिं  
भांति॥ १५५॥ चौ॥ जि मित्र लीन तिय साधु सयानी॥ पति दे  
वता कर्म मन बाणी॥ रहै कर्म वश परिहरि नाहू॥ सचिव ह  
दयति मियारुणा दाहू॥ ह्नेचन सज लड़ी दिभर धोरी॥ सने  
न अवण विकल मति भोरी॥ सख हिं अथर लागि मुह लाटी



जीवन जाइ उर अबध कपाटी ॥ विवरण भए उन जाइ निहारी ॥  
 मारे सिमन जे पिता महतारी ॥ हानि गलानि विपुल मन व्यापी ॥  
 यम पुर पंथ शोच जिमि पापी ॥ वचन न आव हृदय पकिताई ॥ अ  
 वध कहा मै देख बजाई ॥ राम रहित रथ देखि हिंजोई ॥ सकुचि दि  
 मोहि विलोकत सोई ॥ दो० ॥ थारु पुछि रहि मोहि जब विकल नग  
 र नर नारि ॥ उत्तर देव मै सब दिंत बह दय वज्र वैठारि ॥ ४६ ॥ चौ०  
 पुछि रहि दीन दुखित सब माता ॥ कह बकहा मै तिन हिं विधाता  
 पुछि रहि जब दिं लषण महतारी ॥ कहि हों कवन सन्देश सखा  
 री ॥ राम जननि जब आइ दिं थारु ॥ समिरिवरस जिमि ये नुलवाई  
 पूछत उत्तर देव मै तेही ॥ गोवन राम लषण वैदेही ॥ जोरु पुछि दिं ते  
 दिउत्तर देवा ॥ जाइ अबध अवयह सख लेवा ॥ पूछि दिं जब दिं रा  
 उदख दीना ॥ जीवन जा सुखु नाथ अधीना ॥ दै हों उत्तर कवन मुह  
 लाई ॥ आपउं ऊषाल ऊं अपउं चारु ॥ सुनत लषण सिय राम सन्देश  
 पू ॥ तणाइ वतनु परिहर हिं नरे पू ॥ दो० ॥ हृदय न विदरत पंक जि  
 मि विकुरत प्रियतम नीर ॥ जानत हों मोहि दीन्ह विधि रुजात ना  
 शरीर ॥ ४७ ॥ चौ० ॥ इहि विधिकरत पंथ पकितावा ॥ तम साती रा  
 त्र तरथ द्यावा ॥ विद्या कि एक रि विनय निमाह ॥ फिरे पाय परि  
 विकल दिमाह ॥ पैठ न जाइ सचिव सकुचारु ॥ जनु जारे सिगुरु ब्रा  
 ह्मण जाई ॥ बैदिविद पतर दिवस गवावा ॥ सोऊ समेय तब अबसर



पावा॥ अबधप्रवेशकीन्संथिकारे॥ पैठभवनरथराखिदुआरे  
जिन्हजिन्हसमाचारसुनिपाए॥ भूपहाररथदेखनसाए॥ रथ  
पहिचानिविकललखिचोरे॥ गरहिंगातजिमिआतएओरे॥  
नगरनारिनरथ्याकुलकैसे॥ निबहतनीरजीनगणजैसे॥ दो॥  
सचिवआगमनसुनतयबविकलभएउरनिवास॥ भवनभय  
करलागतेहिंमानउं प्रेतनिवास॥ १४२॥ चौ॥ अतिआरतसुब  
पूछहिंराणी॥ उत्तरनयावविकलभईबाणी॥ सुनैनप्रवान  
यननहिसूजा॥ कहइकहांवृपजेहितेहिंबूजा॥ दासिन्हदीख  
सचिवविकलाई॥ कौशल्यागृहगईलवाई॥ जाइसुगंनदीखक  
सराजा॥ अमियरहितजनचन्दविराजा॥ अशाननप्रयनविभू  
षणाहीना॥ परेउभूमितलनिपटमलीना॥ लेनआसणोचैंइदि  
भांती॥ सुरपुरतैंजनउदसेउयजाती॥ देनशोचभरिदाणादाणा  
काती॥ जनुजरिपहुपरेउसम्माती॥ रामरामकहरामसनेही॥  
प्रनिकहरामलएरावैदेही॥ दो॥ देखिसचिवजयजीवकहि  
कीन्हसिदाउप्रणाम॥ सुनतउठेव्याकुलवृपतिकइसुखंदकह  
राम॥ १४२॥ चौ॥ भूपसनेवलीन्हउरलाई॥ दूउतकहुअपारज  
उपाई॥ सहितसनेहनिकटबैठासी॥ प्रहारनाहू॥ सावधि  
रामऊशलकइसाखासनेही॥ कहंरहुअदिभरुधोरी॥ सुनै  
नेउफेरिकिवनहिसिपाए॥ सुनतसचिवलोचनजलकाती



शोकविकलपुनिपुच्छिनरेश्च ॥ कङ्कसियरामलषणसन्देष्ट ॥  
 रामरूपगुणशीलसुभाज ॥ सुमिरिसुमिरितरशोचतराउ ॥  
 राजसुभाइदीन्दवनवास ॥ सुनिमनभयउनहरषहरासु ॥  
 सोसुतविकुरतगयनप्राणा ॥ कोयापीबउमोहिसमाना ॥ दो०  
 सावीरामसियलषणजहंतहोमोहियऊचाउ ॥ नाहितचार  
 तचेलनरुत ॥ प्रियतमसुअनसन्देष्टसुभाज ॥ करऊसखा  
 सोउवेगिउपाई ॥ रामलषणसियवेगिदिखाई ॥ सचिवधीर  
 थरिकहमृडबाणी ॥ महाराजतमपणितज्ञानी ॥ वीरसुधी  
 रपुरम्यदेवा ॥ साथसमाजसदातमसेवा ॥ जन्मकर्मरुबडु  
 खसखभोगा ॥ हानिलाभप्रियमिलनवियोगा ॥ कालकर्म  
 वशाहोहिंयोसाई ॥ दरवशरातिदिवसकीनाई ॥ सुखदुर्षहिं  
 जउदुखदिलखाही ॥ दोसमधीरथरहिंसनमाही ॥ थीरजथ  
 रऊविवेकविचारी ॥ क्वाडियशोचसकलहितकारी ॥ दो० ॥ प्र  
 यमबासतमसाभयउदुसरसरसरितीर ॥ न्हाइरहेजलपानक  
 रिसियसमेतदोवीर ॥ १५१ ॥ चौ० ॥ केवटकीन्दवडतसेवकाई ॥  
 तरेतरथिदीका ॥ विद्यावाई ॥ दोतप्रातबटवीरमझावा ॥ जटा  
 विकलदिशार ॥ पैठनेबा ॥ प्रसखातवनावमझाई ॥ प्रियाचछ  
 ह्याणनरुगार ॥ लषणभरेथुवाणावनाई ॥ आपुचछेप्रभुआय



सुपाई॥ विकल विलोकि मोहिर बुद्धी रा॥ बोले मधुर वचन थरि  
 धीरा॥ तात प्रणाम तात सनक देह॥ बार बार पद पङ्कज राहेह  
 कर विपाय परि विनय बहोरी॥ तात करिय जनि चिन्ता सोरी  
 वन मगु मङ्गल कुशल हमा रे॥ कृपा अतुल्य ह पुण्य तम्हारे॥  
 कृन्त॥ तन्हरे अतुल्य तात कानन जात सब रस॥ पति  
 पालि आय सऊ शल देखन पाय पुनि फिरि आय॥ रोजन  
 नीम कलपरितोषि परि पाय करि विनती चनी॥ तल सो  
 करेइ सोइ यत्र जेहिं विधि कुशल रहहिं कोशल थनी॥ सोइ रा  
 गुरु सनक कहव सन्देश बार बार पद पङ्कज राहि॥ करव सोइ उप  
 देश जेहिं न शोच मोहि अवय पति॥ १५२॥ चौ॥ पुरजन परि  
 जन सकल निहोरी॥ तात सुनायइ विनती सोरी॥ सोइ सब भां  
 ति मोरहित कारी॥ जातें रहन रनाह सखारी॥ कहव सन्देश भ  
 रत के आष॥ नीति न तजव राज पद पाष॥ पालइ प्रजहिं कर्म  
 मन बाणी॥ सेइ अइ मात सकल शम जानी॥ और निवाहव भा  
 यय भाई॥ करि पित मात सजन सेवकाई॥ तात भांति तेहिं रा  
 खवराऊ॥ शोच मोर जेहिं करहिं न काऊ॥ लषण कहै कहु व  
 चन कहोरा॥ वरजि राम पुनि मोहि निहोरा॥ बार बार निज प्रा  
 यय दिवाई॥ कहवित तात लषणाल रिकारी॥ दो॥ दाहि प्रणाम  
 मकहु कहन लिय सिय भइ शिषिल सनेह॥ यकित न चनलो



चनसजलपुलकपलवितदेह ॥ १५३ ॥ दो० ॥ तेहिं अब सर  
 बुवरुषपाई ॥ केवटपारहिं नावचलाई ॥ रबुजलतिलकच  
 लेइहिभांती ॥ देखेउं गठजलिषाकरिकाती ॥ मेंआपनकि  
 मिकहउंकलेपू ॥ जिअतफिरेउं लैरामसन्देपू ॥ असकहि  
 सकिरामिसिद्धिगपउ ॥ हानिगलानिषोचवषाभपउ ॥ स  
 नतसुमत्रवचननरनाह ॥ परेउथरणिउरदारुणादह ॥ त  
 लफतविकलमोहमनमापा ॥ मोजामनजंमीनकडव्यापा  
 करिविलापसबरोबहिंरानी ॥ महाविपतिकिमिजाइबला  
 नी ॥ सुनिविलापदुखहंडुखलागा ॥ धीरजडकरधीरजभा  
 गा ॥ दो० ॥ भएकोलाहलअवयअतिसुनिनृपराउरसोर ॥ विपु  
 लविहगवनपरेउनिशिमानजंजलिषाकठोर ॥ १५४ ॥ चौ० ॥  
 शणाकंदगतभपउभुआलू ॥ मणिविहीनजिमिआऊलव्या  
 लू ॥ इन्द्रियसकलविकलभरुभारी ॥ जनुसरसरसिजवन  
 विनुवारी ॥ कौशल्यानृपदीखमलीना ॥ रविऊलरविअप  
 पजियदीना ॥ उरथरिधीरसममहतारी ॥ बोलीवचनसमय  
 अनुसारी ॥ नाथसमुजिमनकरियविचारू ॥ रामवियोगप  
 योधिअपारू ॥ कर्णधारतमअवधजहाजू ॥ चढेउसकलप्रि  
 यवणिहसमाजू ॥ धीरजथरियतोपाइपारू ॥ नादितबूउहिं  
 सनपरिनारू ॥ जोजियथरियबिनयपियमोरी ॥ रामलषा  
 सियमिलववहोरी ॥ दो० ॥ प्रियावचनमृदुसुनतनृपचितपउआ



रामा०  
म०  
४४

आखिउचारि॥ तलफतमीनमलीनजनुसीचतणीतलवारि  
१५५॥ चौ॥ थरिपीरजउठिबैठभुआल॥ कइसुमंउकहंरामा  
कृपाल॥ कहालषणकहंरामसनेही॥ कहंप्रियपुत्रबंभुबैदे  
ही॥ विलपतराउविकलबडभांती॥ भइपुगसरिससिरातिन  
राती॥ तापसअन्यशापअथिआई॥ कौशल्यहिंसबकथासु  
नाई॥ भएविकलवरणातइतिहासा॥ रामरहितधिकजीवन  
आशा॥ सोतनुरादिकरबमेंकाहा॥ जोइनप्रेमपणमोरनिवा  
हा॥ हारचुनन्दनप्राणपिरीते॥ तमविनुजिअतबडतदिनवी  
ते॥ हाजानकीलषणहारचुवर॥ हापितहितचितचातकजल  
थर॥ दो॥ रामरामकहिरामकहिरामरामकहिराम॥ तउ  
परिहरिरचुवरविरहराउगएसरथाम॥ १५६॥ चौ॥ जियन  
मरणफलदशरणपावा॥ अण्डअनेकअमलयशाकावा॥  
जियतरामविभुबदननिहारा॥ रामविरहधरिमरणसंकारा  
शोकविकलसबरोवहिंरानी॥ रूपशीलबलतेजबखानी॥  
करहिंविलापअनेकप्रकारा॥ परहिंभूमितलवारहिंवार॥  
विलपहिंविकलदामअरुदासी॥ वरवररुदनकरहिंपुरवा  
सी॥ अणउआजुभाउऊलभानू॥ धर्मअवधियुगारूपनि  
धान॥ गरीसकलकैकेयिहिदेही॥ नयनविहीनकोरुजग  
जेही॥ इहिविधिविलपतरैनिविहानी॥ आपसकलमहाउ  
निजानी॥ दो॥ तबवशिष्टमुनिसमयसमकहिअनेकइति



हास ॥ शोकनिवारेउसबहिंकरनिजविज्ञानप्रकाश ॥ १५०  
 चौ॥ तेलनावभरि नृपतत्राखा ॥ दूतबुलाइबद्धरिअस  
 भाषा ॥ फवरेगिभरतपहंजाइ ॥ नृपशुधिकतहुं क  
 हइजनिकाइ ॥ दूतनेकहेइभरतसनजाई ॥ गुरुबुलाइ  
 पठपठोइ ॥ सुनिमुनिआयसुधावनथाए ॥ चलेवे  
 चरनाजिजाए ॥ अनरथअवयअरम्भेउजवते ॥ ऊषा  
 गुणहोहिंभरतकहंतवते ॥ देखहिरातिभयानकसपना  
 जागिकरहिंकटुकोटिकल्पना ॥ विप्रजेंबाइदेहिंदि  
 नदाना ॥ शिवअभिषेककरहिंविधिनाना ॥ मांगहिंहु  
 दयमहेशमनाई ॥ ऊषालमातपितपरिजनभाई ॥ दो॥  
 इहिंविधिणोचतभरतसनधावनपहुंचेआइ ॥ गुरुअनु  
 शासनअवणसुनिचलेगणेशमनाइ ॥ १५८ ॥ चौ॥ च  
 लेसमीरवेगिहयहांके ॥ नावतसरितशैलवनबांके ॥ ह  
 दयशोचवउककुनसोहाई ॥ असजानहिंजियजाउंउआई  
 एकनिमेषवरषसमजाई ॥ इहिविधिभरतअवयनियगई  
 असगुणहोहिंनगरपैगारा ॥ रटहिंऊभांतिऊखेतकरारा  
 खरशुगालबोलहिंप्रतिकूला ॥ सुनिसुनिहोहिंभरतम  
 नशूला ॥ श्रीदूतसरसरितावनवागा ॥ नगरविशेषभयाव  
 नलागा ॥ खगशृगदयगजजाहनिजोए ॥ रामवियोगऊरो



रामा.  
अ.  
५५

५५

गविगोप॥नगरनारिनरनिपटदुखारी॥मनइंसभनिसब  
संपतिहारी॥दो॥पुजनमिलहिंनकरहिंकहुगवहिंजो  
हारहिंजाहिं॥भरतऊशलनहिपुक्किशकभा॥चपुबदे  
माहिं॥१५२॥चौ॥हाटवाटनहिजाइगसरिससिरातिन  
पादिशिलागुदवारी॥आवतसुतसुनिकेदहएवकथासु  
रषीरविजलजलरुहचंद्रिनि॥सजिआरतीपुथकजीवन  
ई॥हारहिंभेटीभवनलैआई॥भरतदुखितपरिवारनिहारा  
मानइंतदिनवनजवनमारा॥कैकयीरधितभइइहिंभांती  
मनइंसुदितदवलाइकिराती॥सुतहिंसप्रोचदेविमनमा  
रे॥पूकतिनैहरऊशलहमारे॥सकलऊशलकहिभरतसु  
नाई॥पूकीनिजऊलऊशलभलाई॥कहकहंतातकहांस  
बमाता॥कहंसियरामलषणप्रियआता॥दो॥सुनिसुतव  
चनसनेहमयकपटनीरभरिनयन॥भरतप्रवणामनमूल  
समपापिनिबोलीबयन॥१५०॥चौ॥तातबातमेंसकलसं  
वारी॥भईमंणरामहाइविचारी॥कहुककाजविधिबीचवि  
गारे॥भूपतिसुरपतिपुरपगुधारे॥सुनतभरतभएविवश  
विषादा॥जनुसहमेउकरिकेहरिनादा॥ताततातहातात  
पुकारी॥परेभूमितलन्याऊलभारी॥चलतनदेखनपांछ  
उतोही॥तातनरामहिंसोंयेइमोही॥बइरिथीरथरिउठस०

पुत्राण  
२



मारी ॥ कइ पित मरण हेतु महतारी ॥ सुनि सुत वचन क  
 हति कै केई ॥ मर्म पाछि जनु माइ रदेई ॥ आदि हितै सब आ  
 भाषा ॥ याही ॥ ऊटिल कठोर मुदित मन वरणी ॥ दो० ॥ भर  
 हइ जनिकाइ ॥ रण सुनत राम वन गोन ॥ हेतु आपुन  
 पठ पठो री प्रथ कित र हेय रिमोन ॥ १५१ ॥ चौ० ॥ विकल वि  
 नर नाहि ॥ स मुजावति ॥ मन ऊंजरे परलोन लगावति  
 तातराउन हिशोच रोगू ॥ विविध सुकृत जपा कीहे उभोगू  
 जीवत सकल जन्म फल पाए ॥ अन्त अमर पति सदन सिधा  
 ए ॥ अस अनुमानि शोच परिहरइ ॥ सहित समाज राजपुर  
 करइ ॥ सुनि सह मेउं सुदि राज कुमारू ॥ पाके दत जनु ला  
 गु अरू ॥ थीर जय रिभरिले हिं उणासा ॥ पापिनि सब हिं  
 भांति कुल नाशा ॥ जो पै ऊं मति रही अस तोही ॥ जन मत का  
 हेन मारे सिमोही ॥ पेउ काटि तैं पलव सीचा ॥ मीन जिअन  
 हित वारि उलीचा ॥ दो० ॥ हं सबं शद शरण जन कराम ल  
 दाण से भाइ ॥ जन नीत जन नी भई विधि सों कहाव साइ ॥  
 चौ० ॥ जब तैं ऊं मति ऊं मत जिय वएऊ ॥ खाए खाए होइ ह  
 दयन गएऊ ॥ वर मांगत मन भइ नहि पीरा ॥ जरि न जीइ सु  
 रने उन कीरा ॥ भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही ॥ मरण का  
 ल विधि मति हरि लीन्ही ॥ विधि जन नारि हृदय गति जानी



रामा.  
अ.  
५६

सकलकपटप्रवचनगुणावानी॥ सरलसुशीलधर्मरत।  
राऊ॥ सोकिमिजानहिंतीयसुभाऊ॥ असकोजीवजन्तुजग  
माही॥ जेहिंरघुनाथप्राणप्रियनाही॥ भेप्रतिप्रदितरामते  
तोही॥ केतंत्रहसिसत्यकइमोही॥ जोरहिसोहसिमुहम  
सिलाइ॥ आंविओटउठिबैदेहिंजाइ॥ दो॥ रामविरोधीहृद  
यतेंप्रगटकीन्हविधिमोहि॥ मोसमानकोपानकीबादिक  
होंककुतोहि॥ १६३॥ चौ॥ सुनिपादुवनमातकुटिलाइ॥  
जरहिंगातरिसककुनवशाइ॥ तेहिंप्रबसरऊवरीतहंआइ  
वसनविभूषणविविधवनाइ॥ लखिसभरेउलषणालघुभा  
ई॥ वरतअनलघुतआइतिशई॥ इमकिलाततकिकुबरमाश  
परिमुहभरिमहिकरतिप्रकार॥ ऊवरदुदेउफुदिकणरू॥ द  
लितदशानमुखरुधिरप्रचार॥ आहिदृश्यमेंकाहनशावा॥  
करतनीकफलअपयशावा॥ सविरिपुहनलखिनखसि  
खावोटी॥ लगेवसीटनपरिधरिचोटी॥ भरतदयानिधिदीन्ह  
कुडाई॥ कोशाल्यापहिगेयोउभाई॥ दो॥ मलिनवसनविव  
रणविकलकृपाशरीरदुखभार॥ कनककल्पवरवेलिवन  
मानइंदनीतषार॥ १६४॥ चौ॥ भरतहिंदेविमातउठियाइ  
मूर्खितअवनिपरीऊषआइ॥ देवतभरतविकलभाभारी  
परेचरणतउदशाविमारी॥ माततातकहंदेहिदेखाई॥ कह



सियरामलषण दोउभाई ॥ कैकेयिकतजनमीजगमोजा ॥ जौ  
 जनमीभइकाहेनबांजा ॥ कलकलकुजेहिजनमेउमोही ॥ अप  
 यशभाजनप्रियजनदोही ॥ कोविभुवनमोहिसरिसअभागी ॥  
 गतिअसितोरिमातुजेहिंलागी ॥ पितरपुरवरनरचुऊलकेत  
 मैकेवलसबअनरथहेत ॥ पिगमोहिभएउवेणवनआगी ॥ दु  
 सहदाहदुखदुषनभागी ॥ दो० ॥ मातभरजकेवचनमृदुसुनिपु  
 निउदीसमरि ॥ लिपउठाइलगाउरलोचनसोचतिवारि ॥ १६५  
 चौ० ॥ सरलसुभायमाइहियलाए ॥ अतिहितमनइंरामफिरिआ  
 ए ॥ भेटेउबडरिलषणलचुभाई ॥ शोकसनेहनहृदयसमाई ॥  
 देविसुभावकहतसबकोई ॥ राममातअसकाहेनहोई ॥ मात  
 भरतगोदबैठारे ॥ आंसुपोंकिमृदुवचनउचारे ॥ अजइंवतसब  
 लिधीरजथरिइ ॥ ऊसमयसमुक्तिशोकपरिहरइ ॥ जनिमान  
 इहियहानिगलानी ॥ कालकर्मगतिअघटितजानी ॥ काइहिं  
 दोषदेइजनिताता ॥ भासोहिसबविधिबामविधाता ॥ जोमेतेइं  
 दुखमोहिजिआवा ॥ अजइंकोजानेकातेहिभावा ॥ दो० ॥ पित  
 आयसभूषणवसनताततजेरचुबीर ॥ विस्मयहर्षनहृदयककु  
 पहिरेबल्कलचीर ॥ १६६ ॥ चौ० ॥ सुखप्रसन्नमनरागनरोष ॥ स  
 कदलउविधिकरिपरितोष ॥ चलेविधिनसुनिसियसुऊला  
 गी ॥ रहेनरामचरणअनुगामी ॥ सुनतहिंलषणचलेउरिसाया



रहहिं नयतन कि परचुनाया ॥ तवरचुयति सबही फिरनाई ॥  
 चले सकुसिय अरु लचुआई ॥ रामलषण सिधवनहिं सिधाए  
 गईन सकुनहि माणायकाए ॥ इह सब भाउन्द आदिह्य गो ॥  
 तउनतजततनुजीवअभागे ॥ मोहिनलाज निजनेह निहारी ॥  
 रामसरिससुतमैमहतासी ॥ जिआइमरइभलभूपतिजाना ॥  
 मोरहृदयशतकुलिससमाना ॥ दो० ॥ कौशल्यादेवचनसुनि  
 भरतसहितरनिवास ॥ व्याकुलविलपतराजगृहमानद्रशोक  
 निवास ॥ १६० ॥ चौ० ॥ विलपहिं विकलभरतहौभाई ॥ कौशल्या  
 लिपहृदयलगाई ॥ भांतिअनेकभरतसमुजाए ॥ कहिविवेक  
 परवचनसुनाए ॥ भरतइमातसकलसमुजाई ॥ कहिपुण्य  
 श्रतिकथासुहाई ॥ कुलविहीनअनिसरलसदाणी ॥ बोले  
 भरतजोरिपुगणाणी ॥ जेअथमातपितासुतमाये ॥ गाईगोठ  
 महिसुरपुरजारे ॥ जेअवतियबालकबयकीन्दे ॥ मीतमही  
 परिमाइरदीन्दे ॥ जेपातकउपपातकअहदी ॥ कर्मवचनमन  
 भवकविकहदी ॥ तेपातकमोहिहोउविधाता ॥ जोंयहहोउमो  
 रमतिमाता ॥ दो० ॥ जेपरिहरिहरचरणभजहिंभूतगणचोर  
 तिनकीगतिमोहिदेउविधिजोजननीमतमोर ॥ १६१ ॥ चौ० ॥  
 वेचहिंवेदयमंदुहिलेही ॥ पिअनपरायणकहिदेही ॥ क  
 पटीकुटिलकलहप्रियक्रोधी ॥ वेदविहसकविअविरोधी



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



सनमभिलाषी॥ चन्दनअगरभारवड्कआए॥ अमितअनेक  
सगन्यसहाए॥ सरजूतीररविचिताबनाई॥ जनुसुरपुरसो  
पानसहाई॥ इहिविधिदाहक्रियासबकीन्हा॥ विधिबग॥  
इतिलाज्जलिदीन्हा॥ शोथिसुमृतिसबवेदपुराणा॥ कीनभ  
रतदशागात्रविधाना॥ जहंजसमुनिवरआयसुदीन्हा॥ तहं  
तससहसभांतिसबकीन्हा॥ भएविशुद्धदिएसबदाना॥ येउ  
वाजिगजवाहनाना॥ दो॥ सिंहासनभूषणबसनअन्नथ  
रणिथनयाम॥ दिएसभरतलहिभूमिसरभेपरिहरणकाम॥  
चौ॥ पितृहितभरतकीन्हिजशकरणी॥ सोमुखलाखजाउ  
नहिबरणी॥ सुदिनशोथिसुनिवरतवआए॥ सकलमहाज  
नसचिवबुलाए॥ बैठेराजसभासबजाई॥ पठपबोलिभरत  
दोउभाई॥ भरतवशिष्टनिकटबैठारे॥ नीतिधर्ममयवचनउचा  
रे॥ प्रथमकथासबमुनिवरबरणी॥ कैकेयीऊटिलकीन्हाजश  
करणी॥ भूपथर्मव्रतसत्यसराहा॥ जेहिंतनुपरिहरिप्रेमनि  
वाहा॥ कहतरामगुणशीलसुभाऊ॥ सजलनयनपुलकेसु  
निगाऊ॥ बड्करिलषणसियप्रीतिदाखानी॥ शोकसनेहमग  
नमुनिजानी॥ दो॥ सुनइभरतभावीप्रबलविलखिकहेउमु  
निनाथ॥ हानिलाभजीवनमरणायशअपयशविधिहाथ॥  
चौ॥ असविचारिकेहिदीजियदोष॥ व्यर्थकादिपरकीजियरोष॥



तात विचार करहु मन मांही ॥ शोच योगदशरथ नृपनांही ॥  
 शोचिय विप्रजो वेदविहीना ॥ तजिनिजधर्मविषयलयलीना ॥  
 सोचिय नृपतिजो नीतिनजाना ॥ जेदिन प्रजाप्रिय प्राणसमाना ॥  
 शोचिय वैश्यकृपणधनवान् ॥ जोन अतिथि शिवभक्तिसुजान् ॥  
 शोचिय शूद्रविप्रअपमानी ॥ सुखरमानप्रियज्ञानगुमानी ॥  
 शोचिय पुनियतिवञ्चिनिनारी ॥ ऊटिलकलहप्रियइच्छाचारी ॥  
 शोचिय वटुनिजव्रतपरिहरई ॥ जोन हिगुरुआयसुअनुसरई ॥  
 दो॥ शोचिय गृहीजो मोहवशकरै कर्मपथत्याग ॥ शोचिय  
 यतीप्रपञ्चरतविगतविवेकविराग ॥ ३१ ॥ चौ॥ वैखानस  
 सोइ शोचनयोग ॥ तपविहाय जेहि भावै भोग ॥ शोचिय पिशु  
 नअकारणाक्रोधी ॥ जननिजनकगुरुबन्धुविरोधी ॥ सबवि  
 धिशोचिय परअपकारी ॥ निजतनुपोषकनिर्दयभारी ॥ शो  
 चनीयसबहीविधिसोई ॥ जोन क्काडि कुलहरिजनहोई ॥  
 शोचनीयनहिकोशलराऊ ॥ भुवनचारिदशप्रगटप्रभाऊ ॥  
 भयउनअहईनहोनिहुं दारा ॥ भूपभरतजशपितातमारा ॥ वि  
 धिहरिहरसुरपतिदिशनाथा ॥ वरणाहिं सबदशरथगुण  
 गाथा ॥ दो॥ कहहु तात केहिभांतिकोउकरिहिं वडाईतासु ॥  
 रामलषणावमशत्रुहनसरिससुअनअविजासु ॥ ३४ ॥ चौ॥  
 सबप्रकारभूषतिबउभागी ॥ बादिविगादकरियतेहिं लागी ॥  
 इहसुनिसमुक्तिशोचपरिहरह ॥ शिरथरिराजरजायसकरह ॥



रामा.  
अ.  
५२

५१

रामराजपदतमकहं दीन्हा ॥ पितावचनपुरचाहियकीन्हा ॥  
तजेरामजेहि वचनहिं लागी ॥ तनपरिहरेउरामविरहागी ॥ नृ  
पहिं वचनप्रियनहिप्रियप्राणा ॥ करइतातपितवचनप्रमाणा  
करइशीशायरिभूपरजाई ॥ हैतमकहंसबभांतिभलाई ॥ पर  
शुरामपितृप्राज्ञाराखी ॥ मारीमातृलोकसबसाखी ॥ तन  
ययजातिहिं यौवनदण्ड ॥ पितृप्राज्ञाश्रवश्रयशनभण्ड ॥  
दो० ॥ अनुचितउचितविचारतजिजेपालहिंपितृवयन ॥ तेभा  
जनसुखसुयशकेवसहिंअमरपतिअयन ॥ ५०१ ॥ चो० ॥ अ  
शिनरेशवचनपुरकरइ ॥ पालइप्रजाशोकपरिहरइ ॥ सु  
रपुरनृपपाइहिंपरितोषू ॥ तमकहंसकृतसुयशानदिदोष  
वेदविहितसम्मतसबहीका ॥ जेहिंपितृदेउमोपाबैदीका ॥ क  
रइराजपरिहरइगलानी ॥ मानइमोरवचनहितजानी ॥ सुनि  
सखलहबरामबैदेही ॥ अनुचितकहंदिनपणितकेही ॥  
कौशल्यादिसकलमहतारी ॥ तेउप्रजासुखहोहिंसुखारी ॥  
मरमतम्हाररामसबजानहिं ॥ सोसबविधितमसनभलमान  
हिं ॥ सौंपेइराजरामकेआप ॥ सेवाकरेइंमनेइसदाप ॥ दो० ॥  
कीजियगुरुआयसुअवशिकहंमचिवकरजोरि ॥ रघुप  
तिआपउचितजशतबतसकरबबहोरि ॥ १०६ ॥ चो० ॥ कौशल्या  
धरिपीरजकरई ॥ पुत्रपण्यगुरुआयसुअहई ॥ सोआदरियक  
रियदितमानी ॥ तजियविषादकालगतिजानी ॥ बनरघुपतिस

आनंद  
३



© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri



रामा.  
अ.  
५०

सियरामवनकरणाकरुमोहिराज॥ इहितें जानइ मोरहित  
कैआपनबउकाज॥ १७८॥ चौ॥ हितहमारसियपतिसेवकाई॥  
सोहरिलीन्हमातऊदिलाई॥ मैअनुमानिदीखमनमांही॥ आ  
नउपायमोरहितनांही॥ शोकसमाजराजकेहिलेखे॥ लषणा  
रामसियपदविनुदेखे॥ बादिवसनविनुभूषणभारू॥ बादिवि  
रतिविनुब्रह्मविचारू॥ सरुजशरीरबादिवइभोगा॥ विनुह  
रिभक्तिजायजपयोगा॥ जायजीवविनुदेहसुहाई॥ बादिमो  
रसबविनुरचुराई॥ जाउरामपदंआयसुदेह॥ एकहिअङ्कमोर  
हितपहू॥ मोहिनृपकरिआपनभलचहू॥ सोसनेहजउताब  
राकरहू॥ दो॥ कैकेयीसुतऊदिलमतिरामविमुखगतलाज  
तमचाहतसुखमोहवशमोहिसेअथमकैराज॥ १७९॥ चौ॥ क  
होंसांचसबसुनिपतिआहू॥ चाहियथर्मशीलनरनाहू॥ मोहि  
राजदरिदैहहूजबंदी॥ रसारसातलजाइहितबंदी॥ मोहिस  
मानकोपापनिवासी॥ जेहिलगिसीयरामवनवासी॥ राउराम  
कहंकाननदीना॥ विहुरतगमनअमरपुरकीना॥ मेंशठस  
बअनरथकरहेतू॥ बैठवातसबसुनउसचेतू॥ विनुरचुबीरवि  
लोकियवासू॥ रहेआणसोउजगउपहासू॥ रामपुनीतविषयस  
रुषे॥ लोलपभूषभोगकेभूषे॥ कहंलगिकहउंरुदयकरिनाई  
निदरिऊलिशजेहिलईबडाई॥ दो॥ कारणातेंकारजकरिनहो



३ दोषमहि मोर ॥ ऊलिश अस्थिते उपलते लोह कराल क मोर  
 चौ॥ कैकेयी भवतनु अतुरागे ॥ यामर प्राण अवाइ अभागे ॥  
 जो प्रिय विरह प्राण प्रिय लागे ॥ देख वसन बद्धत अव आगे ॥  
 लषण राम सिय कहं वन दीना ॥ पठ प अमर पुर पति हित कीना ॥  
 लीन्ह विध वपन अय यश आ पू ॥ दीन्हे उपज हिंशोक सना पू ॥  
 मोहि दीन सख सय शस राज ॥ कीन कैकेयी सब कर काज ॥  
 ३ हितै मोर काह अवनी का ॥ तेहिं परदेन कहइ तम टीका ॥  
 कैकेयी जट रज निज गमाही ॥ यह मो कहं ककु अनुचित ॥  
 नाही ॥ मोर बात सब विधि दिवनाई ॥ प्रजा पंचकत करइ सहा  
 ई ॥ दो॥ ग्रह गृहीत पुनि वात वस तेहि पुनि बीछी मार ॥ ताहि  
 पिआइ य वारुणी कहइ कवन उपचार ॥ १८१ ॥ चौ॥ कैकेयी स  
 अनयोग जग जोई ॥ चतर विरश्चिर चेउ मोहि सोई ॥ दशरथ तन  
 य राम लचु भाई ॥ दीन मोहि विधि बादि वडाई ॥ तम सब कहइ  
 कछावन टीका ॥ राय राज सब ही कहं नीका ॥ उत्तर देउं के दि  
 विधि के दि के दी ॥ कहइ सखेन यथारुचि जे ही ॥ मोहि ऊमा  
 त समेत विहाई ॥ कहइ कह हिंको कीन भलाई ॥ मोहि विनु  
 को सचराचर माही ॥ जेहिं सिय राम प्राण प्रिय नाही ॥ परम  
 हानि सब कहं वड लाह ॥ अदिन मोर नहिं दूषण काह ॥ संशय  
 शील प्रेम वश यह ॥ सब उचित सब जो ककु कहइ ॥ दो॥ रा



समात सुटिसरलचितमोपरप्रेमविशेषि॥ कहहिं सभावस  
नेहवशमोरिदीनतादेवि॥ १८२॥ चो॥ गुरुविवेकसागरजग  
जाना॥ जिनहिंविष्ठाकरवटसमाना॥ मोकहंतिलकसाजस  
जिसोऊ॥ भाविथिविमुखविमुखसबकोऊ॥ परिहरिरामसि  
यजगमाही॥ कोउनकहहिंमोरमतनाही॥ सोमैसनवसहव  
सखमानी॥ अन्नझंकीचतहांजहंपानी॥ उरनमोहिजगकहहिं  
किपोचू॥ परलोकझकरनादिनशोचू॥ एकैबउउरदुसहदवारी  
मोहिलगिभेसियरामदुखारी॥ जीवनलाइलषणाभलपावा॥  
सबतजिरामचरणमनलावा॥ मोरजन्मरनुवरवनलागी॥ कु  
ठकहोंपकिताउंअभागी॥ दो॥ आपनिदारुणादीनतासबहिं  
कहेउंसमुजाय॥ देखिविजुरनुवीरपदजियकीजरनिनजय॥  
चो॥ आनउपायमोदिनहिसूजा॥ कोजियकीरनुवरविजुबूजा  
एकहिंआंकइहैमनमाही॥ प्रातकालचलिहोंप्रभुपाही॥ यय  
पिमैंअनभलअपराधी॥ भइमोहिकारणासकलउपाधी॥ तदपि  
शरणसनमुखमोहिदेखी॥ तमिसबकरिहहिंकृपाविशेषी॥  
शीलसऊचसुटिसरलसभाऊ॥ कृपासनेहसदनरचुराऊ॥  
अरिइअनभलकीन्हनरामा॥ मैशिष्टसेवकययपिवामा॥ त  
मसबपंचमोरभलमानी॥ आयसुआशिषदेइसुबाणी॥ जे  
हिंसुनिविनयमोहिजनजानी॥ आवहिंबइरिगमरजधानी॥



दो०॥ यद्यपि जन्म कुमावतें मैं शठ सदा स दोष॥ आपन जानि  
 न त्यागि हैं मोहि रघु वीर भरोष॥ १८४॥ चौ०॥ भरत वचन सब क  
 हं प्रिय लागे॥ राम सनेह सुधा जनु पागे॥ लोग वियोग विष  
 म दुख दागे॥ मंत्र सबीज सुनत जनु जागे॥ मात सचिव गुरु पु  
 रनर नारी॥ सकल सनेह विकल भे भारी॥ भरत हिं कहिं सरा  
 हि सराही॥ राम प्रेम मूरति जनु आही॥ तात भरत अस का दिन  
 कहइ॥ प्राण समान राम प्रिय अरुइ॥ जो पामुर आपनि जउता  
 ई॥ तम हिंसु गार्इ मात कुटिलार्इ॥ सो शठ कोटि कपुरुष समेता  
 बस हिं कल्प शत नर कनिकेता॥ अहि अच अवगुण मणि न  
 हि राई॥ हरै गरल दुख दारिदरई॥ दो०॥ अवश चलिय बन  
 राम जहं भरत मंत्र भल कीन्ह॥ शोक सिन्धु बूडत सब हिंतम  
 अबल म्वन दीन्ह॥ १८५॥ चौ०॥ भा सब के मन मोटन थोरा॥ जनु  
 चन धुनि सुनिचात कमोरा॥ चलव प्रातल विनिर्णय नीके॥ च  
 र चर चले मिटे दुख जीके॥ थन्य भरत जीवन जग माहीं॥ श्री ल  
 सनेह सगाहत जाहीं॥ कहिं परस्पर भाव उकाज॥ सकल कर  
 हिं चल हिं कर साज॥ जे हिं राख हिं चर रझ राख वारी॥ सो जानै ज  
 उगर दनि मारी॥ कोउ कहं रहन कही पनहि काइ॥ कोन चहै  
 जग जीवन लाइ॥ दो०॥ जरो सुसम्यति सदन सख सुहृद मात  
 पित भार॥ सख होत जो राम पद करेन सहज सहार॥ १८६॥ चौ०



रामा.

श्र.

५२

52

बरबर बाहन साजहिं नाना ॥ हर्ष हृदय परभात पयाना ॥ भरत  
जाइ घर कीन्ह विचारू ॥ नगर वाजि गज भवन भणारू ॥ सम्य  
ति सवर चुपतिकी आही ॥ जो विजय तन चलैं तजि ताही ॥ तौ  
परिणाम न मोर भलाई ॥ पापि शिशो मणि सांइ दुहाइ ॥ करि हिं  
स्वामि हित सेवक सोई ॥ दूषण कोटि देखि किन कोई ॥ अस विचा  
रि शुचि सेवक बोले ॥ जे सपने हं निज धर्म न ठोले ॥ कहि सब म  
र्म धर्म सब भाषा ॥ जो जे हिं लाइक सोत हं राषा ॥ करि सव यतन  
राखि राखवारे ॥ राम मात पदिं भरत सिधारे ॥ दो० ॥ आरत जन  
नी जानि सब भरत सनेह सुजान ॥ कहेउ सजावन पालकी स  
जन सुखासन जान ॥ १८० ॥ चौ० ॥ चकचकई श्वपुर नर नारी ॥  
चलव प्रात उर आरत भारी ॥ जागत सब निशि भणउ विद्वाना ॥  
भरत बुलाइ सचिव सुजाना ॥ कहेउ लेइ सब तिलक समाज ॥  
वनहिं देव मुनि राम हिं राज ॥ वेग चलइ सुनि सचिव जो हारे ॥  
तरत तर गरथ नाग संचारे ॥ अरु न्यनी अरु अग्रि समाज ॥ २  
अचछि चले प्रथम मुनि राज ॥ विप्र वृन्द चछि बाहन नाना ॥  
चले सकल तपतेज निधाना ॥ नगर लोग सब रुजि सजियाना ॥  
चित्रकूट कहं कीन्ह पयाना ॥ शिविका सभगन जाइ वखानी ॥  
चछि चछि चलत भई सब रानी ॥ दो० ॥ सौं पिनगर शुचि सेवक दि  
सादर सब हिं बुलाइ ॥ समिरि राम सिय चरण तब चले ॥ १८१ ॥



भा३॥१८८॥**चौ॥** रामदरशहितसवनरनारी॥ जनुकरिकरि  
 निचलेतकिवारी॥ वनसियरामसमुक्तिमनमांदी॥ सानुज  
 भरतपयादेजाही॥ देखिसनेहलोगअनुरागे॥ उत्तरिचलेर  
 यगजहत्यागे॥ जाइसमीपराखिनिजडोली॥ राममातमृदु  
 बाणीबोली॥ तातचछद्रथबलिमहतारी॥ होइहिंप्रियप  
 रिवारदुखारी॥ तहरेचलतचलहिंसबलोयू॥ सकलशोक  
 कुशनहिमगयोयू॥ शिरथरिवचनचरणसिरताई॥ रथचछि  
 चलतभएदोउभाई॥ तमसाप्रथमदिवसकरिवास्तू॥ दूसरेगो  
 मतितीरनिवास्तू॥**दो॥** पयअहारफलअशनएकनिशिभोज  
 नएकलोग॥ करतरामदितनेमब्रतपरिहरिभूषणभोग॥१८९॥  
**चौ॥** सईतीरवसिचलेविहाने॥ शृङ्गवेरपुरसवनियराने॥ समा  
 चारसबसनेनिषादा॥ हृदयविचारकरैसविषादा॥ कारणाकवन  
 भरतवनजाही॥ हैककुपटभावमनमांदी॥ जौपैंजियनहोति  
 ऊटिस्वाई॥ तौकतलीहिसङ्गकटकाई॥ जानहिंसानुजरामहिं  
 मारी॥ करौंअकंटकराजसरवारी॥ भरतनराजनीतिउरआनी॥  
 तबकलङ्कअवजीवनहानी॥ सकलसरासरजरहिंजकारा॥  
 रामहिंसमरकोजीतनहारा॥ काआश्चर्यभरतअसकरही॥ न  
 हिविषबेलिअमियफलफलही॥**दो॥** असविचारिगुरुज्ञाति  
 सुनदाहेरुजगसबहोइ॥ निजदायनिबोरइतरणिकीजियवा  
 दागोइ॥१९०॥



चौ०॥ होइ सजो रल लोक जंवाटा ॥ बाटइ सकल मरणा कैटाटा  
समुख लोह भरत मन लेइ ॥ जिय तन सूर सरि उतरा देइ ॥  
समर मरणा पुनि सूर सरि तीरा ॥ राम काज दाणा भंगु शरीरा ॥  
भरत भाइ नृप मै जननी चू ॥ बडे भाग असि पाइ यमी चू ॥ स्वामि  
काज करि दौं रण गरी ॥ यथाथ वलिल हउं भुवन दशाचारी ॥  
तजो प्राण रघुनाथ निहारे ॥ दुइं हाथ मूढ मोदक मोरे ॥ साधु  
समाजन जाकर लेखा ॥ राम भक्त महजा सुन रेखा ॥ जाय जि  
यत जग सोमहि भारू ॥ जननी यौवन विटप ऊढारू ॥ दो० ॥  
विगत विषाद निषाद पति सब हिं बजाय उक्ताह ॥ सुमिरि राम  
मंगो उतरत तरक सथनुष सनाह ॥ १११ ॥ चौ० ॥ वेगहिं भाइ सज  
इ संजोइ ॥ सुनिर जाय कदरायन कोइ ॥ भले हिं नाथ सब कहहिं  
सदर ॥ एक हिं एक बजावहिं कर्षा ॥ चले निषाद जुहारि जुहा  
री ॥ सूर सकल रणारू चै गरी ॥ सुमिरि राम पद पङ्क जपन ही  
भाषा बांधि चलावहिं थुही ॥ अग्नि गीप हिरि ऊणि शिर थर ही  
फरसा बांस मेल सम कर ही ॥ एक ऊशल अति ओउन खाडे ॥ ऊ  
द दिंग गण मन ऊं दिति कोडे ॥ निज निज साज समाज बनाई ॥  
गहरावत हिं जुहार हिं जाई ॥ देवि सुभट सब लायक जाने ॥  
लेलै नाम सकल मन माने ॥ दो० ॥ भाइ इला बड पोख निम्राज  
काज वउ मोइ ॥ सुनि सरोष बोले सुभट वीर अथीर न होइ ॥ ११२



चौ०॥ रामप्रतापनाथबलतोरे॥ करहिंकटकविनुभटविनुघो  
 रे॥ जीवतपांवनपाकेथरही॥ राउमुएउमयमेदिनिकरही॥ दी  
 खनिषादनाथभलदोलू॥ कहउबजाउजूजाऊछोलू॥ इतनाक  
 हतकीकभईवापें॥ कहेउशगुनिअन्हवेतसहापें॥ बूउएकक  
 हसगुणाविचारी॥ भरतहिंमिलियनहोइहिरारी॥ रामहिंभर  
 तमनावनजाही॥ शगुणाकहेअसविग्रहनाही॥ सुनिगुरुक  
 हैनीककहबूजा॥ सहसाकरिपकिताहिंविमूजा॥ भरतसुभाव  
 शीलविनुबूजे॥ बडिहितहानिजानिविनुजुजे॥ दो०॥ गहऊ  
 छाटभटसिमिटिसबलेउंमर्ममिलिजाइ॥ बूजिमित्रअरिमथग  
 तितवतसकरवउपाइ॥ १५३॥ चौ०॥ लाखवसनेहसुभावसहाप  
 धैरप्रीतिनहिद्वरतदूराप॥ असकहिभेटसजोवनलागे॥ कन्दमृ  
 सफलखगमृगमांगे॥ मीनपीनपाठीनपुराने॥ भरिभरिभारक  
 हारन्हआने॥ सकलसाजसजिमिलनसिधाप॥ मऊलमूलश  
 गुणाशुभपाप॥ देखिहरितकदिनिजनामू॥ कीनमुनीशदिद  
 एउप्रणामू॥ जानिरामप्रियदीनअशीषा॥ भरतहिंकहेउबूजाय  
 मुनीशा॥ रामसखासुनिस्पन्दनत्यागा॥ चलेउठरितउमगतअ  
 वरागा॥ गावजातिगुहनामसुनाई॥ कीनजुहारिमाथमहिला  
 ई॥ दो०॥ करतदएउवतदेवितेहिंभरतलीन्हउरलाइ॥ मनऊलष  
 णसनभेटभइप्रेमनहृदयसमाइ॥ १५४॥ चौ०॥ भेटेउभरततादिअ



तिप्रीती ॥ लोगसिहाहिंप्रेमकीरीती ॥ धन्यधन्यधनिमङ्गल  
मूला ॥ सरसरसहितेहिंवरषहिंफूला ॥ लोकवेदसबभांतिहिं  
नीचा ॥ जासुकांहुकुलैइयसीचा ॥ तेहिंभरिअङ्कुरामलबु।  
भाता ॥ मिलतपुलकपरिपूरितगाता ॥ रामरामकहिजेजम्भु  
हाही ॥ तिनहिंनपापपुञ्जसमूहाही ॥ यहतो रामलायउरली।  
न्हा ॥ कुलसमेतजगपानकीन्हा ॥ कर्मनाशजलसरसरिप  
रई ॥ तेहिंकोकहइशीसनहिथरई ॥ उलटानामजपतजगजा  
ना ॥ बालमीकभएब्रह्मसमाना ॥ दो० ॥ स्वपचपावरखसज  
नमजउपामरकोलकिरात ॥ रामकहतपावनपरमहोतभुव  
नविव्यात ॥ १५५ ॥ चौ० ॥ नहिअचरजयुगयुगचलिआई ॥ के  
दिनदीन्हरबुवीरवआई ॥ रामनाममहिमासरकहंदी ॥ सुनि  
सुनिअवथलोगसखलहंदी ॥ रामसखहिंमिलिभरतसप्रेमा  
पूकहिंऊशालसमङ्गलदेमा ॥ देविभरतकरशीलसनेह ॥ भा  
निषादतेहिसमयविदेह ॥ सकुचसनेहमोदमनबाजा ॥ भर  
तहिंचितवतएकटकबाजा ॥ थरिथीरजपदबन्धिवहोरी ॥ वि  
नयसप्रेमभरतकरजोरी ॥ ऊशालमूलपदपङ्कजपेखी ॥ मै  
तिउकालऊशालनिजलेखी ॥ अबप्रभुपरमअनुग्रहतोरे ॥ स  
हितकोरिऊलसङ्गलमोरे ॥ दो० ॥ समुक्तिमोरिकरततिऊल  
प्रभुमहिमानियजोरे ॥ जोनभजैरबुवीरपदजगविधिबन्धित  
मो३ ॥ १५६ ॥



चौ॥ कपटी कायर ऊमति ऊजाती॥ लोक वेदवाहिर सब  
 भांती॥ राम कीन्ह आपन जव हीतें॥ भए उं भूवन भूषण तब  
 हीतें॥ देखि प्रीति सुनि विनय सहार्इ॥ मिले बहोरिलषण  
 लघु भार्इ॥ कहि निषादन जनाम सुवाणी॥ सादर सकल  
 जुहारी राणी॥ जानिलषण सम देहिं अशीषा॥ जिय ऊस  
 खी पात लाख वरीषा॥ निरखि निषादन गरनर नारी॥ भए  
 सखी जनु लषण निहारी॥ कहहिं लहे उयह जीवन लाहू॥  
 भटेउ राम भार्इ भरिवाहू॥ सुनि निषादन जभाग्य बगार्इ॥  
 प्रसुदित मन महंचले उलिवाइ॥ दो॥ सनकारे सेवक सक  
 लचले स्वामि रुषणा॥ चरतरुतर सरवागवन वासवना प  
 दिजा॥ चौ॥ शृङ्गचेर पर भरत दीख जव॥ भए सने  
 हवण अङ्ग शिथिल तब॥ सोहत दिखि निषाद हिंलागू॥ ज  
 नुतनु थरे विनय अतु रागू॥ इहिविधि भरत सेन सब सङ्गा॥  
 दीख जाइ जग पावनि गङ्गा॥ राम वाटक हंकीन्ह प्रणामा॥  
 भामन मगन मिले जनु रागा॥ करहिं प्रणामन गरनर नारी  
 सुदित ब्रह्म मय वारि निहारी॥ करि मजन मांगहिं परजोरी  
 राम चन्द्र पद प्रीति नयोरी॥ भरत कहउ सरसरित बरेण  
 सकल सखद सेवक सुरयेन॥ जोरि पाणि वर मांगौं एह॥  
 सीय राम पद सहज सनेह॥ दो॥ इहिविधि मजन भरत करि



रामा.  
अ.  
५५

वसंत

गुरुअनुशासनपाई॥ मातनहानी जानिसबउराचलेल  
वाइ॥ १५८॥ चौ॥ जहंतहंलोगन्हउराकीन्हा॥ भरतशोधस  
बहीकहलीन्हा॥ गुरुसेवाकरियायसपाई॥ राममातप  
हिं गोदोउभाई॥ चरणचोंपिकहिमृडवाणी॥ जननीसक  
लभरतसनमानी॥ भाइहिंमोंपिमातसेवकाई॥ आपुनिषा  
दहिंलीन्हबुलाई॥ चलेसाखाकरमोंकरजोरे॥ शिथिलश  
रीरसनेहनथोरे॥ पूकृतसाखहिंसोटांबदेखाऊ॥ नेऊनय  
नमनजरनिजुआऊ॥ जहंसियरामलषणानिशिसोए॥ क  
हतभरेजललोचनकोए॥ भरतवचनसुनिभएउविषाद॥  
तरततहांलैगएउनिषाद॥ दो॥ जहंसिंशपापुनीततरुर  
बुवरकियविश्राम॥ अतिसनेहसादरभरतकीन्हेउदएउप्र  
णाम॥ १५९॥ चौ॥ ऊषासाथरीनिहारिसहाई॥ कीन्हप्र  
णामप्रदतिणजाई॥ चरणारेखरजआंखिन्हलाई॥ वन  
नकहतप्रीतिअधिकई॥ कनकविन्दुदुश्चारिकदेखे॥ रा  
खेणीसमीयसमलेखे॥ सजलविलोचनहृदयगलानी॥  
कहतसाखामनवचनसुवाणी॥ श्रीहतसीयविरहदुतिही  
ना॥ यथाअवधनरनारिमलीना॥ पिताजनकदेउंपटतरा  
केही॥ करतलभोगयोगजगजेही॥ ससुरभानुऊलभा  
वुभआल॥ जेहिमिहातअमरावतिपाल॥ प्राणनाथरघु



नाथ गोसाईं ॥ जो बड होत सो राम बडाई ॥ दो० ॥ पति देवतास  
 तीय मणि सीय साथ सी देवि ॥ विहरत हृदय उन हर हरि करि प  
 वितैं कटिन विशेषि ॥ २०० ॥ चौ० ॥ लालन योग लघाल बुलो  
 गो ॥ मेन भाइ अस अहं न होने ॥ पुरजन प्रिय पित मात दुला  
 रे ॥ सियर बुवीरहि प्राण पियारे ॥ मृदु मूरतिसु कुमारसु भाऊ  
 ताती बात न लागी न काऊ ॥ तेवन सहहि विपति सब भांती ॥  
 निदरे कोटि कुलिश यह छाती ॥ राम जनम जग कीन्ह उजागर  
 रूप शील सख मागुण सागर ॥ पुरजन परिजन गुरु पित मा  
 ता ॥ राम सभाव सबहिं सख दाता ॥ वैरि उराम बडाई कर ही  
 बोल निमिल निविन यम न हर ही ॥ शारद कोटि कोटि शत शो  
 षा ॥ करन शकहिं प्रभु गुण गण लेखा ॥ दो० ॥ सख सख परबु  
 वंश मणि मङ्गल मोदनिधान ॥ ते सोवत ऊषा उमि महि वि  
 धि गति अति बलवान ॥ २०१ ॥ चौ० ॥ राम सुना दुख कानन का  
 ऊ ॥ जीवन तरु जिमि जग वतराऊ ॥ पलकन यन फणि म  
 णि जेहिं भांती ॥ जगदहिं जननिसकल दिन राती ॥ ते अब  
 फिरत विपिन पदचारी ॥ कन्दमूल फल फूल आहारी ॥ थिक  
 कैकेयि अमंगल मूला ॥ भई सि प्राण प्रियतम प्रतिकूला ॥  
 में थिक थिक अचउदधि अभागी ॥ सब उत पात भयउ जेहिं ला  
 गी ॥ कुल कलक करि सजेउ विधाता ॥ सोइ दोही मोदि कीन्ह



रामा.  
अ.  
५६

ऊमाता ॥ सुनिसप्रेमसमुजावनिषाद ॥ नाथकरियकतवा  
दिविषाद ॥ रामतमहिंप्रियतमप्रियरामहिं ॥ यहनिरदोष  
दोषविधिर्वमही ॥ **कन्दः** ॥ विधिवामकीककरणीकठिनजे  
रमातकीन्दिवावरी ॥ तेहिंरातिपुनिपुनिकरहिंप्रभुसादर  
सराहनरावरी ॥ १५ ॥ तलसीनतमसोंरामप्रीयतमकहत  
होंसोंहैंकिप ॥ परिणाममङ्गलजानिअपनेआनिपथीरज  
हिप ॥ १६ ॥ **सोरवा** ॥ अन्तरजामीरामसऊचसप्रेमकृपायतन  
चलियकरियविश्रामयदिविचारटछानिमन ॥ २०२ ॥  
**चौ०** ॥ सखावचनसुनिउरथरिधीरा ॥ वासचलेसुमिरतरचु  
वीरा ॥ यहसुधिपाइनगरनरनारी ॥ चलेविलोकनआरत  
भारी ॥ प्रदतिगाहिंकरिकरहिंप्रणामा ॥ देहिंकैकेयिदिं  
खोरिनिकामा ॥ भरिभरिवारिविलोचनलेंदी ॥ वामविधा  
तहिंदूषणादेंदी ॥ एकसराहहिंभरतसनेह ॥ कोउकहनृप  
तिनिवाहेउमेह ॥ निंदहिंआपुसरादिनिषादहिं ॥ कोकहि  
सकैविमोहविषादहिं ॥ रहिविधिरातिलोगसबजागे ॥ भा  
भिनुसारउतारेंलागे ॥ गुरुहिंसुनावचजायसहाई ॥ नई  
नावसबमातचजाई ॥ दाउचारिमहंभेसबपारा ॥ उतरिभ  
रततबसबहिंसमभारा ॥ **दो०** ॥ प्रातक्रियाकरिमातपटबन्दि  
गुरुहिंसिरनाउ ॥ आगेकिपनिषादगाणादीन्हाकटकचालाउ

१३



**चौ॥** कियनिषादनाथअगुआई॥ मातृपालकीसकलच  
 लाई॥ सायबुलाइभाइलबुलीन्हा॥ विप्रन्हसहितगमनगु  
 रुकीन्हा॥ आपुसुरसरिहिंकीन्हप्रणाम॥ सुमिरेलषणम  
 हितसियराम॥ गवनेभरतपयादेहिपाए॥ कोतलसऊजा  
 हिंउरिआए॥ कहहिंससेवकबारहिंवार॥ होइयनाथ  
 अश्वअसवार॥ रामपयादेहिपांवसिपाए॥ हमकहंर  
 थगजवाजिवनाए॥ शिरभएजाउंउचितअसमोरा॥ सबते  
 सेवकथर्मकठोरा॥ देखिभरतगतिस्त्रनिमृदुवाणी॥ सब  
 सेवकमनगरहिंगलानी॥ **दो॥** भरततीसरेपहरकहंकी  
 न्हप्रवेशप्रयाग॥ कहतरामसियरामसियउमगिउमगि।  
 अनुराग॥ **चौ॥** फलकाफलकतपायन्हकैसे॥ पऊ  
 जकोषओसकणजैसे॥ भरतपयादेहिंआएआज॥ भएडु  
 खितस्त्रनिसकलसमाज॥ खवरिलीन्हसबलोगअन्हाए  
 कीन्हप्रणामचिवेणिहिंआए॥ सविधिसितासितनीरअन्ह  
 ने॥ दिपदानमहिसुरसनमाने॥ देखतणामलयवलहिं  
 लोरे॥ पुलकशरीरभरतकरजोरे॥ सकलकामप्रदतीर  
 थराऊ॥ वेदविदितजगप्रगटप्रभाऊ॥ मांगोभीखत्यागि  
 निजधर्म॥ आरतकाहनकरहिंऊकर्म॥ असनियजानिस्त्र  
 जानिसदाती॥ सफलकरहिंजगयाचकवाणी॥ **सोहा॥** अ



रामा.  
अ.  
५३

धनधर्मनकामरुचिरातिनचहउनिर्वाण॥जन्मजन्मरति  
रामपदयहवरदाननग्रान॥२०५॥चौ॥यानइरामऊटिल  
करिमोही॥लोगकहौगुरुसाहिबदोही॥सीतारामचरण  
रतिमोरे॥अनुदिनबढौअनुग्रहतोरे॥जलदजन्मभरिसुर  
तिविसारे॥याचतजलपविषादनउरे॥चातकरटनिघटे  
घटिजाई॥बढेप्रेमसबभातिभलाई॥कनकहिबानचढे  
जिमिदाहे॥तिमिप्रियतमपदप्रेमनिवाहे॥भरतबचनसु  
निमांजत्रिवेनी॥भरमृदुवाणिसुमलरुदेनी॥तातभरत  
तमसबविधिसाधु॥रामचरणअनुरागअगाधु॥वादिग  
ल्यानिकरऊमनमाही॥तमसमरामहिंकोउप्रियनाही॥  
दो॥तनुपुलकेहियहर्षसुनिबेणिवचनअनुकूल॥भर  
तथन्यकहियन्यकहिनभसरवरषहिंफूल॥२०६॥चौ॥  
प्रमुदिततीरथराजनिवासी॥वैखासनसबदुगृहीउदासी  
कहहिंपरस्परमिलिदशपांचा॥भरतसनेहशीलअचि  
सांचा॥सनतरामगुणग्रामसहाए॥भरद्वाजमुनिवरप  
हंआए॥दाउप्रणामकरतमुनिदेखे॥मूरतिवन्तभाग्य  
निजलेखे॥पाउठाइलाउरलीन्हे॥दीन्हअशीषकृतार  
थकीन्हे॥आसनदीन्हनाउशिरबैठे॥चहतसऊचगृहजउ  
भजिपैठे॥मुनिप्रकृदिककुयहवउणोचू॥बोलेअधिलवि



शीलसंकोच ॥ सुनइ भरत हम सब सुधि पाई ॥ विधिकर  
 तब परक कुन बसाई ॥ दो० ॥ तम गलानि जिय जनिकरइ  
 समुझि मात करति ॥ तात कै केयि हि दोष नहि गई गिरा  
 मति युति ॥ २०१ ॥ चौ० ॥ यहउ कहत भल कहहि न कोउ ॥  
 लोक वेद बुध समत दोऊ ॥ तात तम्हार विमलय पागई ॥ पा  
 इहिलोक इं वेद बडाई ॥ लोक वेद समत सब कहई ॥ जेहि पि  
 त राज देइ सोलहई ॥ राउ सत्य ब्रत तम हिं बुलाई ॥ देत राज  
 सख थर्म बडाई ॥ राम गवन वन अनरथ मूला ॥ जो सुनि स  
 कल विष्णु भइ मूला ॥ सो भावी वश राति सयानी ॥ करि ऊचा  
 लि अनाइ पकितानी ॥ तहन तम्हार अल्प अपराध ॥ कहै  
 सो अथ म अयान असाध ॥ करतेइ राज तम्हार नहि दोष ॥ रा  
 मइ होत सुनत सन्तोष ॥ दो० ॥ अब अतिकीन्हैइ भरत भल  
 तम्हें उचित मत पड ॥ सकल समइ लमूल जगर बुवर  
 चराण सनेइ ॥ २०८ ॥ चौ० ॥ सो तम्हार थन जीवन प्राणा ॥ भू  
 रि भाग्य को तम हिं समाना ॥ यह तम्हार अचर जनहि ताता  
 दशरथ सुअन राम प्रिय भाता ॥ सुनइ भरत रघुपति मन मा  
 ही ॥ प्रेम पावत म सम कोउ नाही ॥ लषाण राम सीत हिं अ  
 नि प्रीती ॥ तेहि निशित म्हिं सराहत बीती ॥ जाना मर्म अ  
 न्हात प्रयागा ॥ गमन होहि तम्हरे अत्र रागा ॥ तम पर अस

यथ  
 ६



रामा.

अ.

५८

SS

सनेहरचुवरके ॥ सुखजीवनजगजशजउनरके ॥ यह  
नअधिकरचुवीरवडाई ॥ प्रणतऊदुस्वपालरचुराई ॥ तम  
तौभरतमोरमतएहू ॥ थरेदेहजनु रामसनेहू ॥ दोहा ॥ तम  
कहंभरतकलकूयहहमसबकहउपदेश ॥ रामभक्तिरस  
सिद्धिहितभायहसिद्धिगणेश ॥ २०५ ॥ चौपाई ॥ नवविधुवि  
मलतातयशतोरा ॥ रचुवरकिङ्करऊमुदचकोरा ॥ उदित  
सदाअथइहिकबहना ॥ घटिदिनजगनभदिनदिनहूना  
कोकविलोकिप्रीतिअतिकरही ॥ प्रभुप्रतापरविक्रविहिन  
हरही ॥ निशिदिनसुखदसदासबकाहू ॥ ग्रसहिनकैके  
यिकरतवराहू ॥ पूर एरामसुप्रेमपिशूषा ॥ गुरुअपमान  
दोषनहिदूषा ॥ रामभक्तिरसअमियअवाहं ॥ कीन्देउसुल  
भसुधावसुधाहं ॥ भूषभगीरथसरसरिआनी ॥ सुमिरत  
सकलसमझलखानी ॥ दशरथगुणगणवरणिनजाही  
अधिककहाजेहिसमकोउनाही ॥ दोहा ॥ जासुसनेहस  
कोचवशरामप्रगटभेआइ ॥ जेहरहियनयनन्हकबडंनि  
रखेनाहिअवाह ॥ २०६ ॥ चौपाई ॥ कीरतिविधुतमकीन्दअ  
नपा ॥ जहंबस रामप्रेममृगरूपा ॥ तातगलानिकरऊजि  
यजाप ॥ उरऊदरिद्रहिंपारसपाप ॥ सुनइभरतहमजूठ  
नकहंही ॥ उदासीनतापसवनरहंही ॥ सबसाधनकरस



फलसहावा ॥ लघणारामसियदरशानपावा ॥ तेहिफल  
 करफलदरशानमारा ॥ सहितप्रयागसुभाग्यहमारा ॥ भ  
 रतथन्यतमजगयशालपु ॥ कहिअसप्रेममगनमुनिभ  
 पऊ ॥ सुनिमुनिवचनसभासदहर्षे ॥ साधुसरादिसुमन  
 सरवर्षे ॥ यन्यथन्यध्वनिगमनप्रयागा ॥ सुनिसुनिभरतम  
 गनअनुरागा ॥ दो० ॥ पुलकगातहियारामसियसजलस  
 रोरुहनयन ॥ करिप्रणाममुनिमाउलिहिंवोलेगदगदवय  
 न ॥ २११ ॥ चौ० ॥ मुनिसमाजअरुतीरथराजू ॥ सांचेऊशायप्र  
 दायअकाजू ॥ रहियलजोककुकरियबनार्ई ॥ रहिसमनहि  
 ककुअवअथमाई ॥ तमसरवजकहोंसतिभाऊ ॥ उरअन्तर  
 जामीरचुराऊ ॥ मोहिनमातकरतबकरशोचू ॥ नहिडखजि  
 यजगजानहिपोचू ॥ नाहिनउरविगरहिंपरलोक ॥ पित  
 डंमरणकरमोहिनशोक ॥ सुकृतसुयशभरिभुवनसहाप  
 लक्ष्मणारामसरिससतपाप ॥ रामविरहतजितनतणभंगू  
 भूषणोचकरकवनप्रसंगू ॥ रामलघणसियविनुपगपन  
 ही ॥ करिमुनिवेषफिरहिंबनवनही ॥ दो० ॥ अजिनबसनफ  
 लअशनमहिषायनडासिऊपापात ॥ बसितरुतरनिसहत  
 हिमआतपवरषावात ॥ २१२ ॥ चौ० ॥ रहडखदाहदहैनितका  
 ती ॥ भूखनवासरनीदनराती ॥ रहऊरोगकरऔषधनाही ॥



रामा.  
अ.  
५५

शोथेउंसकलविषमनमाही॥ मातऊमतवउहीअवमूला  
तेइहमारहितकीन्हवसूला॥ कलिकुकाठकरिकीन्हऊयें  
३॥ गाडिअवयपढिकठिनऊमं३॥ मोहिलगिइहऊठाट  
तेहिंठाटा॥ चालिसिसबजगवारऊबाटा॥ मिटेऊरोगरा  
मफिरिआए॥ वसैअवयनहिआनउपाए॥ भरतवचनसु  
निमनिसखपाई॥ सबहिंकीन्हवऊभांतिवजाई॥ तातक  
रऊजनिशोचविशेषी॥ सबडखमिटिहिंरामपटदेवी॥  
दो॥ करिप्रबोधमुनिवरकहेउअतिथिप्रेमप्रियहोऊ॥ क  
न्दमूलफलदेहिहमलेऊमुदितकरिकोऊ॥ २१३॥ चौ॥  
सुनिमुनिवचनभरतहियशोचू॥ भएऊअवसरकठिनसंको  
चू॥ जानिगरुइगुरुगिरावहोरी॥ चरणबन्दिबोलेकरजो  
री॥ सिरथरिआयसकरियतम्हारा॥ परमधर्मयहनाथह  
मारा॥ भरतवचनमुनिवरमनभाए॥ सुचिसेवकसबनिक  
टबुलाए॥ चाहियकीन्हभरतपऊनाई॥ कन्दमूलफलआ  
नऊजाई॥ भलहिनाथकहितिन्हशिरनाए॥ प्रमुदितनि  
जनिजकाजसिधाए॥ मुनिहिंशोचपाऊनवउनेवता॥  
॥ तसिपूजाचाहियजशदेवता॥ सुनिअथिसिथिअणि  
मादिकयाई॥ आयसहोइसोकरहिंगोसांई॥ दो॥ राम  
विरहव्याकुलभरतसावजसकलसमाज॥ पऊंनारक



रिहरऊअमकहामुदितमुनिराज॥२४॥**चौ॥**अथिसि  
 थिथिरथरिमुनिवरवाणी॥बउभागिनिआपुहिंअनुमानी  
 कहहिंपरस्परसिथिसमुदाई॥अतलितअतिथिरामलवु  
 भाई॥मुनिपदबन्धिकरियसोउआजू॥होरसखीसबराज  
 समाजू॥असकहिरुचिरचेगृहनाना॥जेहिंविलोकिवि  
 लखाहिंविमाना॥भोगविभूतिभूरिभरिराखे॥देखतजिन  
 हिंअमरअभिलाषे॥दासीदाससाजसबलीन्हे॥जोगवतर  
 हहिंमनहिंमनदीन्हे॥सबसमाजसजिसिथियलमांही  
 जेसखसपनेऊंसरपुरनाही॥अथमहिंवासदिएसबकेही  
 सुन्दरसखदयथारुचिजेही॥**दो॥**बडरिसपरिजनभरत  
 कहंअथिआयसअसदीन्ह॥विथिविस्मयदायकविभवमु  
 निवरतपबलकीन्ह॥२५॥**चौ॥**मुनिप्रभावजबभरतविलो  
 का॥सबलवुलगेलोकपतिलोका॥सखसमाजनहिजाउ  
 वावानी॥देखतविरतिविसारहिंजानी॥आसनशयनसब  
 मनविताना॥वनवाटिकाविहऊमृगनाना॥सरभिफूलफ  
 लअमियसमाना॥विमलजलाशयविविधविधाना॥अश  
 नपानअचिअमितअमीसे॥देविलोकसऊचातजमीसे॥  
 सरसरभीसरतरुसबहीके॥लखिअभिलाषसरेशाशीके  
 अतवसन्तवहविविधवगारी॥सबकहंसलभपदारथचारी



रामा०  
अ०  
६०

सकचन्दनवनितादिकभोगा ॥ देखि हर्षविस्मयवशलो  
गा ॥ दोहा ॥ सम्यतिचकरं भरतचकमुनिआयसखेलवार  
तेहिं निशिआमपीजुगाराखेभाभिनुसार ॥ २१६ ॥ चौ० ॥  
किन्दनिमजनतीरथराजा ॥ नाइमुनिहिंशिरसहितसमा  
जा ॥ अविआयसुअसीषशिरराखी ॥ करिदाउवतविन  
यवझभाषी ॥ पथगतिऊशलसायसबलीन्दे ॥ चलेचि  
उकूटहिंचितदीन्दे ॥ रामसखाकरिदीन्देलागू ॥ चलतदे  
हथरिजनुअनुरागू ॥ नहिपदजाणशीर्षनहिक्काया ॥ प्रेम  
नेमव्रतधर्मअमाया ॥ लषणारामसियपेणकहानी ॥ पू  
कृतसखहिंकहतमृदुबाणी ॥ रामवासयलविटपविलो  
की ॥ उरअनुरागरहतनहिरोकी ॥ देखिदणसरवरषहिं  
फूला ॥ भइमृदुमहिमगमऊलमूला ॥ दो० ॥ कीयेजाहिं  
कायाजलदसखदबहैबरवात ॥ तसमगुभपउनरामा  
कहंजसभाभरतहिंजात ॥ २१७ ॥ चौ० ॥ जउचेतनजगजी  
ववनेरे ॥ जेचितपप्रभुजिन्दप्रभुहेरे ॥ तेसबभपपरमप  
दजोगू ॥ भरतदरशमेदाभवरोगू ॥ यहवडिवातभरतकी  
नांदी ॥ सुमिरतजिवहिंराममनमांदी ॥ वारेकरामकह  
तजगजेऊ ॥ होततरणतारणनरतेऊ ॥ भरतरामप्रिय  
पुनिलमुभाता ॥ कसनहोरमगुमऊलदाता ॥ सिद्धसाधु



मुनिवर अस कहंही ॥ भरत हिं निरखि हर्ष दिय लहंही ॥  
 देखि प्रभाव सुरेश हिं शोचू ॥ जग भल भल हिं पोच कहं पो  
 चू ॥ गुरु सन कहें उकर ऊ प्रभु सोई ॥ राम हिं भरत नहि भेट न  
 होई ॥ दो० ॥ राम सको ची प्रेम वश भरत सप्रेम योधि ॥ बनी  
 बात विगारण चहत करिय यतन कूल शोधि ॥ २१८ ॥ चौ० ॥  
 वचन सुनत सुर गुरु मुसकाने ॥ सह सनयन विनु लोचन  
 जाने ॥ कह गुरु वादि हो भ कूल छाडू ॥ इहां कं पटक रिहोइ  
 य भांडू ॥ माया पति सेवक सन माया ॥ करिय तो उलटि य रै  
 सुर राया ॥ तब कछु कीन्ह राम रुचि जानी ॥ अब ऊ चालिक  
 रिहोइ हिं हानी ॥ सुनु सुरेश रनु नाथ सुभाऊ ॥ निज अपरा  
 थ रिसा दिन काऊ ॥ जो अपराध भक्त कर करई ॥ राम रोष पाव  
 क सो जरई ॥ लोक ऊं वेद विदित इतिहासा ॥ यह महि माजा  
 न हिं दुर्वासा ॥ भरत सरिस को राम सनेही ॥ जग जग राम राम  
 ज पुजे ही ॥ दो० ॥ मन ऊं न अनिय अपराधतिर वुवर भक्त अका  
 ज ॥ अथ शालोक परलोक दुख दिन दिन शोक समाज ॥ २१९ ॥  
 चौ० ॥ सुनु सुरेश उपदेश ह मारा ॥ राम हिं सेवक परम पिआरा  
 मानत सुख सेवक सेवकाई ॥ सेवक वै र वै रि अधिकार ॥ यद्य  
 पिस मन हि राग न रोष ॥ गह हिं न पाप पुण्य गुण दोष ॥ कर्म  
 प्रधान विष्णु करि राखा ॥ जो ज सकरै सो त सफल चाखा ॥ तदपि



रामा.  
अ.  
६१

करहिंसमविषमविहारा॥ रघुवरभक्तिभक्तअनुसारा॥  
अगुणअलेषअमानएकरस॥ रामसगुणभयभक्तप्रेमव  
श॥ रामसदासेवकरुचिराखी॥ वेदपुराणसाधुसुरभाखी  
असजियजानितजडकुटिलार्इ॥ करजभरतपदप्रीतिसुहाई  
दो॥ रामभक्तपरहितनिरतपरदुखदुखीदयाल॥ भक्तशि  
रोमणिभरततेजनिउरपदसुरपाल॥ २२०॥ चौ॥ सत्यस  
न्यप्रभुसरहितकारी॥ भरतरामआयसअनुसारी॥ स्वार  
णविवशविकलतमदोह॥ भरतदोषनदिराउरमोह॥ सु  
निसुरवरसुरगुरुवरवाणी॥ भाप्रमोदमनमिटीगलानी  
वरषिप्रसनदरिषिसुरराऊ॥ लगेसराहनभरतसभाऊ॥ इदि  
विधिभरतचलेमगुजादी॥ दशादेखिसुनिसिद्धसिहादी॥ ज  
बदिंगमकहिलेदिउशासा॥ उमरातप्रेममनऊंचऊंचापाशा॥  
द्वद्विचनसुनिकुलिषापाणा॥ पुरजनप्रेमनजाइवखा  
ना॥ वीचवासकरियमुनदिआप॥ निरखिनीरलोचनजलका  
प॥ दो॥ रघुवरवर्णविलोकिवरवारिसमेतसमाज॥ होतवि  
रहवारिधिमगनचछेविवेकजहाज॥ २२१॥ चौ॥ यमुनती  
रतेदिदिनकरिवासू॥ भयउसमयसमसबहिंसपाशू॥ राति  
दिवाटवाटकीतरणी॥ आईअगणितजाईनवरणी॥ प्रातपा  
रभेएकदिखेवा॥ तोषेरामसखाकरिसेवा॥ चलेअन्दाइनदि



हिंसिरनाई ॥ सायनिषादनायलबुभाई ॥ आगेमुनिवरवाह  
 नआके ॥ राजसमाजजाइसबपाके ॥ तेहिंपाकेदोउबन्युपा  
 यादे ॥ भूषणावसनवेषसुटिसोदे ॥ सेवकसहृदसचिवसत  
 साता ॥ सुमिरतलषणासीयरबुनाया ॥ जहंजहंरामवास  
 विश्रामा ॥ तहंतहंकरहिंसप्रेमप्रणामा ॥ दो० ॥ मगुवासीन  
 ननारिसुनिधामकामतजिधाइ ॥ देविसखरूपसनेहवषा  
 मुदितजन्मफलपाइ ॥ २२२ ॥ चौ० ॥ कहहिंसप्रेमपकपकपा  
 ही ॥ रामलषणासखिहोहिंकिनाही ॥ बयवपुवरणारूप  
 सोइआली ॥ शीलसनेहसरिससमचाली ॥ बेषनसोसखि  
 तीयनसझा ॥ आगेअनीचलीचतरझा ॥ नहिप्रसन्नमुखमा  
 नसखेदा ॥ सखिसन्देहहोतइहिमेदा ॥ तासुतर्कतियगुणि  
 मनमानी ॥ कहहिंसकलतोहिसमनसयानी ॥ तेहिसराहि  
 बाणीकरपूजी ॥ बोलीमभुरवचनतियहूजी ॥ कहिसप्रेम  
 सबकथाप्रसंग ॥ जेहिंविधिरामराजरसभंग ॥ भरतहिंबड  
 रिसराहनलागी ॥ शीलसनेहसुभावसभागी ॥ दो० ॥ चल  
 तपयादेखातफलपितादीन्हतजिराज ॥ जातमनावनरबु  
 वरहिंभरतसरिसकोआज ॥ २२३ ॥ चौ० ॥ भायपभक्तिभरत  
 आचरण ॥ कहतसनतडावहषणाहरण ॥ जोककु कहि  
 यथोरसखिसोई ॥ रामबन्युअसकाहेनहोई ॥ हमसबसान



रामा.

प्र.

६२

62

देशकार

जभरतहिंदेखे॥सुनिगुणिदेशिदशापछिताही॥कैकेयि  
जननियोगसुतनाही॥कोउकहदृषणरानिऊनाहिन॥वि  
थिसबकीन्हमहिंजोदाहिन॥कहंरुमलोकवेदविधिहीनी  
लबुऊलतियकरततिमलीनी॥वसहिंऊदेशऊगांवऊठामा  
कहंयहदरशपुण्यपरिणामा॥असआनन्दअचरजप्रतिआ  
मा॥जतुमरुभूमिकल्पतरुजामा॥दो॥भरतदरशदेखत  
खुलेउमगुल्लोककन्हकरभाग॥जतुसिंचलवासिन्हभय वि  
थिवशसुलभप्रयाग॥२२४॥चौ॥निजगुणसहितरामगु  
णगाथा॥सुनतजाहिंसुमिरतरबुनाथा॥तीरथमुनिआश्र  
मसुरथामा॥निरखिनिमजहिंकरहिंप्रणामा॥मनहीम  
नमोगहिंवरपद्म॥सीयरामपदपद्मसनेह॥मिलहिंकिरात  
कोलबनवासी॥वैखानसबदुयतीउदासी॥करिप्रणामपू  
छहिंजेहितेही॥केहिबनलषणरामबैदेही॥तेप्रभुसमा  
चारसबकहंही॥भरतहिंदेखिजन्मफललहंही॥जेजनक  
हहिंऊशलहमदेखे॥तेप्रियरामलषणसमलेखे॥इदिवि  
थिवृजतसबहिंसबाणी॥सुनतरामवनवासकहानी॥दो॥  
तेहिबामरबसिआतहिंचलेसुमिरिरबुनाथ॥रामदरशकी  
लालसाभरतसरिसमबसाथ॥२२५॥चौ॥मङ्गलशगुण  
होहिंसबकाह॥फरकहिंसखदविलोचनबाह॥भरतहिं



सहित समाज उक्ताह ॥ मिलि रहिं राम मिटिहिं दुख दाह  
 शेष के दुःख दक्षे पकहैं ॥ करत मनोरथ जग जिय जाके  
 जाहिं सनेह सखा सब काके ॥ शिथिल अङ्ग मगु पगु उगि  
 डोलहिं ॥ विद्वल वचन प्रेम वश बोलहिं ॥ राम सखा तेहिं  
 समय देखावा ॥ शैल शिरो मणि सहज सहावा ॥ जासु स  
 मीप सरित पय तीरा ॥ सीय समेत वसहिं दोउ बीरा ॥ देखि  
 करहिं सब दाउ प्रणामा ॥ कहि जय जानकी जीवन रामा  
 प्रेम मगन असराज समाज ॥ जनु फिरि अवध चले रघुराज  
 दो॥ ॥ भरत प्रेम तेहिं समय जगत सकहिं शकै न शेष ॥ क  
 विहिं अगम जिमि ब्रह्म सख अहम ममलिन जनेषु ॥ २२६  
 चौ॥ ॥ सकल सनेह शिथिल रघुवर के ॥ गण कोश दुःख दि  
 न कर छर के ॥ जल थल देखि वशे निशि बीते ॥ कीन्ह गव  
 न रघु नाथ पिरीते ॥ उहां राम रजनी अवशेषा ॥ जागी सी  
 य स्वप्न अस देखा ॥ सहित समाज भरत जनु आप ॥ नाथ  
 वियोग ताप तनु ताप ॥ सकल मलिन मन दीन दुखारी ॥  
 देखी सा सुआन अनुहारी ॥ सुनि सिय स्वप्न भरे जल लोच  
 न ॥ लक्षणा स्वप्न यह नीक न होई ॥ कठिन ऊचाह सुना  
 इहिं कोई ॥ अस कहि बन्धु समेत अन्धाने ॥ पूजि पुरारि सा  
 थु मन माने ॥ कन्दः ॥ सनमानि सरसु निबन्दि बैटे उत्तर दिशि



रामा.  
अ.  
६३

देखत भय ॥ न भयु रिखग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्र  
म गप ॥ १७ ॥ तल सी उठे अब लोकिकारणा का हचित सच  
कितर हे ॥ सब समाचार किरात को लनि आइ तेहिं अब स  
र कहै ॥ १८ ॥ सोरवा ॥ सुनत सुमङ्गल बयन मन प्रमोदत तु  
पुलक भर ॥ सरद सरोरुहन यन तल सी भरे सनेह जल ॥  
चौपाई ॥ बझरि शोच बश भेसिय रमण ॥ कारण कवन  
भरत आगमन ॥ एक आइ अस कह बहोरी ॥ सेन सङ्ग च  
तरङ्ग न थोरी ॥ सो सुनि राम हिं भा अति शोच ॥ इत पितव  
च इत बन्धु संकोच ॥ भरत सुभाव समुजिमन माही ॥ प्रभु  
हित चित थिति पावत नाही ॥ समाधान तब भाय हजाने ॥  
भरत कहै महं साथ सयाने ॥ लषणालखे उ प्रभु हृदय खमा  
रु ॥ कहत समय सम नीति विचारु ॥ बिउ पूछे ककु कह  
उंगो साई ॥ सेवक समय न जीठ छिगई ॥ तम सर्वज्ञ शि  
रोमणि स्वामी ॥ आपनि समुज कहों अनुगामी ॥ दो॥  
नाथ सहृद सुठि सरल चित शील सनेह निधान ॥ सब  
पर प्रीति प्रतीति जिय जानिय आपु समान ॥ २२८ ॥ चौ॥  
विषयी जीव पाइ प्रभु तई ॥ मूछ मोह वषा होहिं जनाई ॥ भ  
रत नीति रत साधु सुजाना ॥ प्रभु पद प्रेम सकल जग जाना  
तेऊ आचर राज पद पाई ॥ चले धर्म मरजाद मिटाई ॥ ऊटि

२२७



लजबधुजअवसरताकी॥ जानिरामवनवासएकाकी॥  
 करिऊमंत्रमनसाजिसमाज॥ आपकरणाअकंटकराज॥  
 कोटिप्रकारकपटऊटिलाई॥ आपदलबटोरिदोउभाई॥  
 जौजियहोतिनकपटऊचाली॥ केहिसोहातरथवाजिग  
 जाली॥ भरतहिंदोषदेशकोजाप॥ जगवौराजराजपदपाप  
 दो॥ शशिगुरुतियगामीनऊषचछेउभूमिसुरयान॥  
 लोकवेदतेंविमुखभाअथमकोवेणसमान॥ २२५॥ चौ॥  
 सहसबाहुसरनाथत्रिसंकु॥ केहिनराजमददीन्हकलंकु  
 भरतकीन्हयहउचितउपाऊ॥ रिपुऊणरञ्जनराखबका  
 ऊ॥ एककीन्हनहिभरतभलाई॥ निदरेरामजानिअसहाई  
 समुजिपरिहिंसोआजविशेषी॥ समरसरोषराममुखदेखी  
 इतनीकहतनीतिरसभूला॥ रणरसविटपपुलकजिमिफू  
 ला॥ प्रभुपदबन्दिणीसरजराषी॥ बोलेसत्यसहजबलभा  
 षी॥ अनुचितनाथनमानबमोरा॥ भरतहमहिउपचारन  
 योरा॥ कहलगिसहियरहियमनमारे॥ नाथसाथथनुहा  
 यहमारे॥ दो॥ तत्रीजातिरबुऊलजनमरामअनुजजग  
 जान॥ लातऊंमारेचछतशिरनीचकोधूरिसमान॥ २२६॥  
 चौ॥ उटिकरजोरिरजायसमागा॥ मनऊंवीररससोवतजा  
 गा॥ बांधिजटाशिरकटिकसिभाथा॥ साजिशरासनपाय



रामा.  
अ.  
६५

६५

कहाथा॥ आज रामसेवक यशालेऊं॥ भरतहिं समरशि।  
खावनदेऊं॥ रामनिरादरकरफलपाई॥ सोबझसमरसे  
जदोउभाई॥ आइवनाभलसकलसमाजू॥ प्रगटकरों रि  
सिपाकिलआजू॥ जिमिकरिनि करदलै मृगराजू॥ लेइ  
लपेटिलवाजिमिबाजू॥ तैसेहिं भरतहिं सेनसमेता॥ सा  
नुजनिदरिनिपातोंखेता॥ जोसहायकरशाङ्करआई॥  
तौमारोंरणरामदोहाई॥ दो॥ अतिसरोषमाषेलदणाल  
विसुनिपायप्रमाण॥ समयविलोकतलोकपतिचाह  
तमभरिभङ्गान॥ २३॥ चौ॥ जगभामगनगगनभवानी  
लषणबाइबलविपुलवखानी॥ तातप्रतापप्रभावतम्हा  
रा॥ कोकहिसकैकोजाननिहारा॥ अनुचितउचितकाजक  
हुहोई॥ समुझिकरियभलकहसबकोई॥ सहसाकरिपा  
केपकिताही॥ कहहिबेटबुधतेबुधनाही॥ सुनिसुरवच  
नलषणसऊचाने॥ रामसीयसादरसनमाने॥ कहीतात  
तमनीतिसहाई॥ सबतेकठिनराजमदभाई॥ जोअचवत।  
वृषमातहिंतेई॥ नादिनसाधुसभाजिनसेई॥ सुनइलषा  
णभलभरतसरीषा॥ विधिप्रपंचमहंसनानदीषा॥ दो॥  
भरतहिं होइनराजमदविधिहरिदरपटपाई॥ कबइकि  
काजीशीकरनिदीरसिंभुविनशाई॥ २४॥ चौ॥ तिमिरत



रुणातरणि हि मऊ गिलई ॥ गगनमगनमऊ मेव हिं मिल  
 ई ॥ गोपदजलबू उहिं टयोनी ॥ सहजतमावरुका उहिं दो  
 एनी ॥ मशकफूंकवरु मेरु उडा ॥ होइन नृपमदभरत हिं भाई  
 लषणा तम्हार शपथ पितृ आना ॥ शुचि सुबंधुन हिं भरत समा  
 ना ॥ सगुणा तीर अवगुणा जलताता ॥ मिलेरचे उपर पञ्च वि  
 धाता ॥ भरत हंसर विवंशत आगा ॥ जनमी कीन्द गुणा दोष वि  
 भागा ॥ गहियुणा पयत जि अवगुणा वारी ॥ निजयश जगत  
 कीन्द उजि आरी ॥ कहत भरत गुणा शील सुभाऊ ॥ प्रेम पयो  
 थि मगनरघुराऊ ॥ दो० ॥ सुनिरघुवर बाणी विबुध देखि भ  
 रत परहेत ॥ सकल सराहत राम से प्रभु को कृपा निकेत ॥ अर  
 चौ० ॥ जौन होत जग जन्म भरत को ॥ सकल थर मभुर थरणि थ  
 रत को ॥ कवि कुल अगम भरत गुणा गाथा ॥ को जानै तम वि  
 बुरघुनाथा ॥ लषणा राम सिय सुनि सुखाणी ॥ अति सुख  
 लहे उन जाखानी ॥ इहां भरत सब सहित सहाए ॥ मन्दा  
 किनी पुनीत अन्हाए ॥ सरित समीप राखि सब लोग ॥ मां गि  
 मात गुरु साचि वनियोगा ॥ चले भरत जहं सिय रघुराई ॥ सा  
 यनिषाद नाथ लघु भाई ॥ समुजि मात करत वसऊ चाही  
 करत ऊतर्क कोटि मन माही ॥ राम लषणा सिय सुनि ममना  
 ऊं ॥ उरिजनि अनत जाहिं तजि ठाऊं ॥ दो० ॥ मात मते महं जानि



मोहिजोककुकरहिंसोपोर॥अवअवगुणतमआदरहिंस  
मुक्तिआपनीओर॥३३४॥चौ॥जोपरिहरहिंमलिनमनजा  
नी॥जोसनमानहिंसेवकमानी॥मोरेशरणारामकीपनही॥  
रामसुखामिदोषसबजनही॥जगयशभाजनचातकमीना॥  
नेमप्रेमनिजनिपुणानवीना॥असमनगुणतचलेमगुजाता  
सऊचसनेहशिथिलसबगाता॥फेरतिमनहिमातकृतखो  
री॥चलतभक्तिबलथीरजयोरी॥जबसमुजहिंरचुनायस  
भाऊ॥तवपथपरतउताइलपाऊ॥भरतदशातेहिंअवसरकै  
सी॥जलप्रवाहजलअलिगतिजैसी॥देखिभरतकरशोच  
सनेह॥भानिषादतेहिंसमयविदेह॥दो॥लगेहोनमङ्गल  
शगुणसुनिगुणिकहतनिषाद॥मिटिहिंशोचहोइहिंहर  
षपुनिपरिणामविषाद॥३३५॥चौ॥सेवकवचनसत्यसब  
जाने॥आश्रमनिकटजाइनिअराने॥भरतदीखवनपौल  
समाजू॥मुदितक्षयितजनपारसुनाजू॥इतिभीतिजन  
प्रजादुखारी॥त्रिविधतापपीडितग्रहमारी॥जाइसराजसुदे  
शसखारी॥होहिंभरतगतितेहिअनुहारी॥रामवासवनस  
म्यतिसाजा॥सखीप्रजाजनपारसराजा॥सचिवविरागवि  
वेकनरेणू॥विपिनसहावनपावनदेणू॥भटयमनियमपौ  
लरजथानी॥शान्तिसमतिअचिसुन्दरिरानी॥सकलअ



गसम्पन्नसुराऊ ॥ रामचरणआश्रितचितचाऊ ॥ दो० ॥ जीति  
 मोहमहिपालदलसहितविवेकभुआल ॥ करतग्रकाटकरा  
 जपुरसखसंपदासुकाल ॥ ३२६ ॥ चौ० ॥ बनप्रदेशमुनिवासव  
 नेरे ॥ जनुपुरनगरमोंवगाणाखेरे ॥ विपुलविचित्रविहङ्गमृगना  
 ना ॥ प्रजासमाजनजाश्वखाना ॥ खगहांकरीहरिवाद्यवराहा  
 देविमहिषवृकसाजसराहा ॥ बैरविहाउचरहिंपकसझा ॥ ज  
 हैतहेंमनऊसेनचतरझा ॥ ऊरनाऊरहिंमनराजगाजहिं ॥ म  
 नऊनिसानविविधविधिबाजहिं ॥ चकचकोरचातकशुकपि  
 कगाणा ॥ ऊंजतमंजुमरालमुदितमन ॥ अलिगाणागावतनाच  
 तमोरा ॥ जनुसराजमंगलचङ्गओरा ॥ बेलिविटपट्टासफल  
 सफूला ॥ सबसमाजमुदमंगलमूला ॥ दो० ॥ रामशैलशोभानि  
 रविभरतहृदयअतिप्रेम ॥ तापसतपफलपाउजिमिसखीसि  
 रानेनेम ॥ ३२७ ॥ चौ० ॥ तवकेवटऊंचेचढिथार्ई ॥ कहाभरतसन  
 भुजाउठार्ई ॥ नाथदेखुयहविटपविणाला ॥ पाकरिजम्बुरसा  
 लतमाला ॥ तिन्हतरुवरन्हमध्यवटसोहा ॥ मंजुविणालदेवि  
 मनमोहा ॥ नीलसवनपलवफलताला ॥ अविचलकांहिसख  
 दसबकाला ॥ मानऊतिमिरअरुणामयराणी ॥ विरचीविधिस  
 केलिसखमासी ॥ तेहितरुसरितसमीपगोसाई ॥ रघुवरपाणी  
 ऊटीजहंकाई ॥ तलसीतरुवरविविधसहाप ॥ कडसियपिय  
 कडलसालगाप ॥ वटकायावेदिकावनाई ॥ सियनिजपाणिम



सरोजसुहाई॥दो॥जहं वैढे मुनिगण सहित नित सिय रा  
मसुजान॥सुनहिं कथा रतिहास सब आगम निगम पुराण  
रश्मि॥चौ॥सखा वचन सुनि विटपनिहारी॥उमगे भरत विलो  
चन भारी॥करत प्रणाम चले दोउ भाई॥कहत प्रीति शारद सु  
ऊचाई॥हर्षहिं निरखि राम पद अङ्गा॥मान डपार सपाय उर  
ङ्गा॥रज शिर धरि हिय नयन न्हिला वहिं॥रखु वर मिलन सखि  
ससख पावहिं॥देखि भरत गति अकथ अतीव॥प्रेम मगन  
खग मृगज उजीव॥सखहिं सनेह विवश मगु भूला॥कहि सु  
पंथ सुरवर षडि फूला॥निरधि सिद्ध साधक अनुरागे॥सह  
ज सनेह सराहन लागे॥होत न भूतल भाव भरत को॥अचर स  
चर चर अचर करत को॥दो॥प्रेम अमिय मन्दर विरह भरत प  
योधि गम्भीर॥मधि प्रगटे सुरसा युहित कृपा सिन्धु रघुवीर॥  
३३४॥चौ॥सखा समेत मनोहर जोटा॥लखे उनल घण सवन  
वन ओटा॥भरत दीख प्रभु आश्रम पावन॥सकल सुमङ्गल स  
दन सुहावन॥करत प्रवेश मिठा डख दावा॥जनु योगी परमा  
रथ पावा॥देख भरत लघण प्रभु आगे॥पूछे वचन कहत अनु  
रागे॥शीस जटा कटि मुनि पट बांधे॥तण कसे कर शरथ च  
कांथे॥बेदी पर मुनि साधु समाजू॥सीय सहित राजतरु राज  
बल्कल वसन जटिल तनु प्रपामा॥जनु मुनि वेष कीन्दरति  
कामा॥कर कमल न्दधनु शायक फेरत॥जिय कीजर निहर



तहंसि हेरत ॥ दो० ॥ लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीयर चुच  
न ॥ ज्ञान समाज नुत नुथरे भक्ति सच्चिदानन्द ॥ २५० ॥ चौ० ॥ सा  
नुज सखा समेत मगन मन ॥ विसरे हर्ष शोक सुख दुख गण  
पाहि नाथ कहि पादि गोसाई ॥ भूतल परे लऊट की नाई ॥ वच  
न सप्रेम लषण पहि चाने ॥ करत प्रणाम भरत जिय जाने ॥ बंधु  
सनेह सरस इंदियोरा ॥ उत साहिब सेवा वर जोरा ॥ मिलिन  
जाइन हि गुदरत बनई ॥ सुक विलषण मन की गति भनई ॥  
रहे राखि सेवा पर भारू ॥ चली चक्रु जनु खैंच खेलारू ॥ कह  
ह सप्रेम नाइ महि माया ॥ भरत प्रणाम करतर चुनाया ॥ उठे  
राम सुनि प्रेम अपीरा ॥ कइ पटक इनि षड्गुथनु तीरा ॥ दो० ॥  
वरवसलि पउठा उरला पकृपा निधान ॥ भरतराम की मिल  
निलखि विसरे उ सब हिंअ पान ॥ २५१ ॥ चौ० ॥ मिलनि प्रीति कि  
मि जाइ बखानी ॥ कवि कुल अगम कर्म मन बाणी ॥ परमप्रे  
म पूरण दोउ भाई ॥ मन बुधि चित अह मिति विसराई ॥ कहऊ  
सुप्रेम प्रगट को करई ॥ केहि कथा कवि मति अनुसरई ॥ कवि  
हिंअ र्ण आखर बल सांचा ॥ अनुहरताल गति हिंन टनांचा ॥  
अगम सनेह भरतर चुवर को ॥ जहंन जाइ मन विधि हरि हर  
को ॥ शोभै ऊमतिक हों केहि भांती ॥ बाजु सराग कि गाउ रि  
तांती ॥ मिलनि विलोकि भरतर चुवर की ॥ सुरगण सभय



कधुकीपरकी॥समुजाएसुरगुरुजउजागे॥वरविप्रसूनप्र  
शंसनलागे॥दो॥मिलिसप्रेमरिपुमुदनहिंकेवटभेटेउराम  
भूरिभाग्यभेटभरतलक्ष्मणाकरतप्रणाम॥२५२॥चौ॥भेटे  
लघाललकिलचुभाई॥बद्धरिनिषादलीन्हउरलाई॥पुनि  
मुनिगणादडभाइन्हबन्हे॥अभिमताशिषपाइआनन्हे॥  
सानुजभरतउमगिअनुरागा॥धरिशिरसियपदपद्मपरागा  
पुनिपुनिकरतप्रणामउठाए॥सिरकरकमलपरशिखैठाए॥  
सीयअशीयदीन्हमनमांही॥मगनसनेहदेहमुथिनाही॥स  
वविथिसानुकूललखिसीता॥भेनिशेचउरअपउरवीता॥॥  
कोउककुकहेनकोउककुपूका॥प्रेमभरामननिजगतिक्का  
तेहिंअवसरकेवटपीरजथरि॥जोरियाणिविनवतप्रणाम।  
करि॥दो॥नाथसाथमुनिनाथकेमातसकलपुरलोग॥से  
वकसेनएसचिवसवआएविकलवियोग॥२५३॥चौ॥शी  
लसिंधुसुनिगुरुआगमन॥सीयसमीपराखिरिपुदमन॥  
चलेसुवेगरामतेहिकाला॥पीरथरमथुरदीनदयाला॥गुरु  
हिंदेविसानुजअनुरागे॥दाउप्रणामकरतप्रभुलागे॥सु  
निवरपाइलिपउरलाई॥प्रेमउमंगिभेटेदोउभाई॥प्रेमपुल  
किकेवटकहिनामू॥कीन्हदूरितेहिंदेदाउप्रणामू॥रामस  
खाअधिवरवसभेटा॥जनुमहिलुटतसनेहसमेठा॥रघुप



तिभक्ति समझल मूला ॥ नभ सराहि सरवरष हिं फूला ॥ ३ ॥  
 दिसमनि पटनीच को उताही ॥ बउ वशिष्ठ सम को जगमाही ॥  
 दो० ॥ जे हिलखिल घणां ते अधिक मिले मुदित मुनिराउ ॥ सो  
 सीतायति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥ २५५ ॥ चौ० ॥ आरत लो  
 गराम सब जाना ॥ करुणा कर सु जान भगवाना ॥ जो जहिं भां  
 तिरहा अभिलाषी ॥ तेहि तेहि कीतै सीरुचिराखी ॥ सानु ज।  
 मिलि पल मह सब काह ॥ कीन्ह हरि दुख दारुणा दाह ॥ यह  
 बडि बात राम की नाही ॥ जिमि बट कोटि पकर बिछाही ॥ मि  
 लिके वटहिं उमगि अनुरागा ॥ पुरजन सकल सराह हिं भागा  
 देवी राम दुखित महतारी ॥ जनु सबे लिखवली हिममारी ॥  
 प्रथम राम भेटी कै केयी ॥ सरल सभाव भक्ति मति भेई ॥ पग प  
 रिकोन्ह प्रबोध बहोरी ॥ काल कर्म विधि शिर धरि खोरी ॥ दो० ॥  
 भेटी रघुवर मात सब करि प्रबोध परितोष ॥ अम्बई शास्त्री न  
 जग काहुन देख्य दोष ॥ २५५ ॥ चौ० ॥ गुरु तिय पद बन्दे दोउ भाई  
 सहित विप्रतियजे सङ्ग आई ॥ गङ्ग गौरि सम सब सनमानी ॥ दे  
 हि अशीष मुदित मृदुवाणी ॥ गहि पद लगे समिधा अङ्गा ॥  
 जनु भेटी संपति अतिरक्षा ॥ पुनि जननी चरण नन्द दोउ आता ॥  
 परे प्रेम व्याकुल सब गाता ॥ अति अनुराग अम्ब उर लाप ॥ नय  
 न सनेह सलिल अन्धवाप ॥ तेहि अवसर कर हर्ष विषाद ॥ कि



रामा.

अ.

६८

68

मिकविकहेसूकजिमिखाह ॥ मिलिजननिहिंसातुजरघु  
राऊ ॥ गुरुसनकहेउकिथारियपाऊ ॥ पुरजनपाइमुनीशानि  
योग ॥ जलजलतकितकिउतरेउलो ॥ दो० ॥ महिसुरमंत्री  
मातगुरुगणेलोगालिएसाथ ॥ पावनआप्रमगमनकिया  
भरतलषणारघुनाथ ॥ २५६ ॥ चौ० ॥ सीयआइमुनिवरपदला  
गी ॥ उचितअशीषलहीमनमागी ॥ गुरुपतिहिंसुनितियन्ह  
समेता ॥ मिलिसप्रेमकहिजाइनजेता ॥ बन्दिबन्दिपदसियस  
बहीके ॥ आशीबादलहेप्रियजीके ॥ साससकलजबसीय  
निहारी ॥ सुंदेउनयनसहमिसऊमारी ॥ यरीवथिकवशम  
नऊमराली ॥ काहकीन्हकरतारऊचाली ॥ तिन्हसियनिर  
विनियटदुखपावा ॥ सोसबसहियजोदेवंसहावा ॥ जन  
कसुतातबउरथरिधीरा ॥ नीलनलिनलोयनभरिनीरा ॥ मि  
लीसकलसासन्हसियजाई ॥ तेहिंअवसरकरुणामतिक्का  
ई ॥ दो० ॥ लागिलागियदसबनिसियभेटीअतिअनुराग ॥ ह  
दयअशीषहिंप्रेमवशरहिहजभरीसहाग ॥ २५८ ॥ चौ० ॥  
विकलसनेहसीयसवराणी ॥ बैठनसबहिंकहेउगुरुजानी  
प्रथमकहीजगगतिमुनिनाथा ॥ कहेउककुकपरमारथ  
गाथा ॥ रुपकरसरपुरगमनसनावा ॥ सुनिरघुनाथदुसहा  
दुखपावा ॥ मरणहेतनिजनेहविचारी ॥ भेअतिविकलथी



रथुरथारी॥ कलिशकटोरसनतकटुवाणी॥ विलपतल  
 घणसीयसवरानी॥ शोकविकलअतिसकलसमाज॥  
 मानङ्गराजअकाजेउआज॥ मुनिवरबडूरिरामसमुजाप  
 सहितसमाजसुसरितअन्हाए॥ व्रतनिरम्बुतेहिदिनप्रभु  
 कीन्हा॥ मुनिङ्कहेजलकाङ्कनलीन्हा॥ दो॥ भोरभपरचु  
 नन्दनहिंजौमुनिआयसुदीन्हा॥ अहाभक्तिसमेतप्रभु  
 सोसबसादरकीन्हा॥ २५५॥ चौ॥ करिपितृक्रियावेदजसि  
 वरणी॥ भेषुनीतपातकतमतरणी॥ जासुनामपावकअ  
 वतला॥ सुमिरतसकलसुमङ्गलमूला॥ शुद्धसोभएउ।  
 साधुसम्मतअस॥ तीरथआवाहनसुरसरिजस॥ शुद्धभ  
 एदुर्वासरबीते॥ बोलेगुरुसनरामपिरीते॥ नाथलोगस  
 वनिपट्टुवारी॥ कन्दमूलफलअम्बुअहारी॥ सानुजभ  
 रतसचिवसबमाता॥ देखिमोहिपलजिमियुगजाता॥  
 सबसमेतप्रथारियपाऊ॥ आपुइहांअमरावतिराऊ॥ बडु  
 तकहेउसबकियछिगोई॥ उचितहोइतसकरियगोसोई॥  
 दो॥ धर्मसेतकरुणायतनकसनकहइअसराम॥ लोग  
 उखितदिनदुर्दरशदेखिलहेउविश्राम॥ २५६॥ चौ॥ रा  
 मवचनसुनिसभयसमाज॥ जनुजलनिधिमहं विकल  
 जहाज॥ सुनिमुनिगिरासुमङ्गलमूला॥ भएउमनङ्गमारु



रामा.  
प्र.  
६५

६९

तत्रनुकूल ॥ पावनपयतिङ्कालग्रन्हाही ॥ जेहिं विलो ।  
किग्रवग्रोद्यनशाही ॥ मङ्गलमूरतिलोचनभरिभरि ॥ निरख  
हिं हर्षितदाउवतकरिकरि ॥ रामशैलवनदेखनजाही ॥ ज  
हेसखसकलकतङ्कडुखनाही ॥ ऊरर्नऊरहिंसयासमवा  
री ॥ त्रिविधतापहरत्रिविधवयारी ॥ विटपवेलितरणग्रगणि  
तजाती ॥ फलप्रसन्नपल्लववङ्गभांती ॥ सुन्दरशिलासख  
दतरुकाही ॥ जाइवरणिवनकविकेलिपाही ॥ दो० ॥ सर  
निसरोरुहजलविहगऊजतगुञ्जतभृङ्ग ॥ वैरविगतविहर  
तविपिनमृगविहङ्गवङ्गरङ्ग ॥ २५॥ चो० ॥ कोलकिरातभि  
लवनवासी ॥ मधुप्रचिसुन्दरस्वादुसयासी ॥ भरिभरिपर्ण  
पुटीटिरुचिरुरी ॥ कन्दमूलफलग्रंऊरभूरी ॥ सबहिंदेहि  
करिविनयप्रणामा ॥ कहिकहिस्वादुभेदगुणानामा ॥ देहिं  
लोगवङ्गमोलनलेही ॥ फेरतरामदोहाईदेही ॥ कहहिंस  
नेहमगनमृदुबाणी ॥ मानतसाधुप्रेमपदिचानी ॥ तमस  
कृतीहमनीचनिषादा ॥ पावादरशानरामप्रसादा ॥ हमहिं  
अगमअतिदरशातम्हारा ॥ जसमरुथरणिदेवभुनिधारा  
रामकृपालनिषादनेबाजा ॥ परिजनप्रजहिंउचितजस  
राजा ॥ दो० ॥ यहजियजानिसकोचतजिकरियकोहलवि  
नेऊ ॥ हमहिकृतारथकरणलगिफलतराग्रंऊरलेऊ ॥ २

५३



चौ॥ तमप्रियपाइनवनपगुधारे॥ सेवायोगनभाग्यह  
 मारे॥ देवकहाहमतमहिंगोसाई॥ इन्धनपातकिरातमि  
 ताई॥ यहहमारअतिबडीसेवकाई॥ लेहिंनवासनवसन  
 चोराई॥ हमजउनीचजीवगणाचाती॥ ऊटिलऊचालीऊ  
 मतिऊजाती॥ पापकरतनिशिवासरजाही॥ नहिकटिप  
 टनहिपेटअचाही॥ सपनेइधर्मबुद्धिकसकाऊ॥ यहरा  
 बुनन्दनदरशाप्रभाऊ॥ जबतेंप्रभुपदपअनिहारे॥ मिटे  
 अमरुलदोषहमारे॥ बचनसनतपुरजनअनुरागे॥ ति  
 न्हकेभाग्यसराहनलागे॥ **कुन्दः**॥ लागेसराहनभाग्यसब  
 अनुरागवचनसनाबही॥ बोलनिमिलनिसियरामचर  
 णामनेहलखिसखपाही॥ २५॥ नरनारिनिदरहिंनेहनिज  
 सनिकोलभिलन्हकीगिरा॥ तलसीकृपारबुवंशमणि  
 कीलोहलैनौकातिरा॥ २०॥ **सोरठा**॥ बिहरहिंवनचडंयो  
 रप्रतिदिनप्रमुदितलोगसब॥ जलज्यौंदाडुरसोरभपपी  
 नपावसप्रथम॥ २५३॥ चौ॥ पुरनरनारिमगनअतिप्रीती  
 वासरजाहिंपलकसमबीती॥ सीयसासप्रतिवेषबनाई  
 सादरकरहिंसरिससेवकाई॥ लघनमर्मरामविनुकाहू॥  
 मायासबसियमायानाहू॥ सीयसाससेवाबशकीन्ही॥  
 तिनहलहिसखसियआशिषदीन्ही॥ लखिसियमहितसर



रामा.  
अ.  
७०

लहौभाई॥ ऊटिलरानिपछिताइअचाई॥ अबनिजुमहिं  
याचतिकैकेई॥ मोहिनवीचुविधिमीचुनदेई॥ लोकऊंवे  
दविदितकविकहंही॥ रामविमुखयलनरकनलहंही॥  
यहसंशयसबकेमनमांही॥ रामगमनविधिअवधकिना  
ही॥ दो॥ निशिनदीन्दनहिंभूषदिनभरतविकलसुदिशो  
च॥ नीचकीचविचमगनजशमीनहिंसलिलसंकोच॥ २  
चौ॥ कीन्दमातमिसकालऊचाली॥ ईतिभीतिजसपाक  
तशाली॥ केहिविधिहोइरामअभिषेक॥ मोहिअवफुर  
तउपायनयक॥ अबशिफिरहिंगुरुआयसुमानी॥ मुनिपु  
निकहवरामरुचिजानी॥ मातकहेबझरहिंरघुराऊ॥ राम  
जननिहठकरविकिकाऊ॥ मोहिअनुचरकरकेतिकवाता  
तेहिमहंऊसमयबामविधाता॥ जौहठकरौतोनिपटऊ  
कर्म॥ हरगिरितेगुरुसेवकथर्म॥ पकोयुक्तिनममठहरा  
नी॥ शोचतभरतहिंरैनिविहानी॥ प्रातअन्दाइप्रभुहिंशि  
रनाई॥ बैठतपटएअषयबुलाई॥ दो॥ गुरुपदकमलप्रा  
णामकरिवैदेआयसुपाइ॥ विप्रमहाजनसचिवसबजुरे  
सभासदआइ॥ २५५॥ चौ॥ बोलेमुनिवरसमयसमाना॥  
सनइसभासदभरतसजाना॥ धर्मभुरीणभानुऊलभात्र  
राजारासखशभगवान्॥ सत्यसंथपालकश्रुतिसेत॥

पथ



रामजन्मजगमङ्गलहेतु ॥ गुरुपितृमातृवचनअनुसारी  
 खलदलदलनदेवहितकारी ॥ नीतिप्रीतिपरमारथस्वारथ  
 कोउनरामसमजानयणारथ ॥ विधिहरिहरशशिरविदिशि  
 पाला ॥ मायाजीवकर्मऊलिकाला ॥ अहीपमहीपजहंल  
 गिप्रभुताई ॥ योगसिद्धिनिगमागमगाई ॥ करिविचारजिय  
 देखऊनीके ॥ रामरजाइशीषसबहीके ॥ दो० ॥ राखे रामरजाइ  
 रुषहमसबकरहितहोइ ॥ समुजिसयानेकरऊअबसबमि  
 लिसम्मतसोइ ॥ १५६ ॥ चौ० ॥ सबकहंसखदरामअभिषेक ॥ म  
 ङ्गलमोदमुलगुणएक ॥ केदिविधिअवधचलहिंरघुराई ॥  
 कहऊसमुजिसोइकरियउपाई ॥ सबसादरसुनिमुनिवरवा  
 णी ॥ नयपरमारथस्वारथसानी ॥ उतरनआवलोगभेभोरे ॥  
 तबशिरनाइभरतकरजोरे ॥ भानुवंशभेभूपवनेरे ॥ अधिक  
 एकतेणैकबउरे ॥ जन्महेतुसबकहंपितृमाता ॥ करमप्रभा  
 शुभदेइविधाता ॥ दलिदुखसजईसकलकल्याणा ॥ असआ  
 णीषराउरजगजाना ॥ सोगोसाईविधिगतिजेइछेकी ॥ शाके  
 कोटारिटेकजोटेकी ॥ दो० ॥ बूजियमोहिउपायअबसोसबमो  
 रअभाग ॥ सुनिसनेहमयवचनगुरुउरउमगाअनुराग ॥ १५७  
 चौ० ॥ तातवातफररामकृपाही ॥ रामविशुखसिधिसपनेऊना  
 ही ॥ सकुचौतातकहतएकवाता ॥ अर्थतजहिंरघुपसरबसजाता ॥

दीपक राग



रामा.  
अ.  
३१

तन्मकाननगवनऊदौभाई॥ फेरियलषणसीयरवुराई॥  
 सुनिषुभवचनदुर्षदौधाता॥ भेप्रमोदपरिपूरणगाता॥ म  
 नप्रसन्नतनुतेजविराजा॥ जनुजीयेराउरामभेराजा॥ बऊ  
 तलाभलोगदलचुहानी॥ समदुखसुखसबदोबहिंरानी  
 कहंहिंभरतमुनिकहासोकीन्दे॥ फलजगजीवनअभिमत  
 दीन्दे॥ काननकरौंजन्मभरिवास्त॥ इहितेअधिकनमोरस  
 पास्त॥ दो॥ अन्तरजामीरामसियतमसरवत्तसुजान॥ जो  
 पुरकहोतोनयनिजकीजियवचनप्रमाणा॥ २५८॥ चौ॥  
 भरतवचनसुनिदेखिसनेहू सभासहितमुनिभएउविदेहू  
 भरतमहामहिमाजलराणी॥ मुनिमतिठाछितीरअबलासी  
 गाचहपारयतनबऊहेरा॥ पावतिनावनबोहितवेरा॥ और  
 करहिंकोभरतबडाई॥ सरसिसीपकिसिंधुसमाई॥ भरत  
 मुनिहिमनभीतरभाए॥ सहितसमाजरामपहंआए॥ प्रभु  
 प्रणामकरिदीन्दसुआसन॥ बैठेसबसुनिमुनिअनुशास  
 न॥ बोलेमुनिवररचनविचारी॥ देशकालअवसरअनुहारी  
 सुनऊरामसरवत्तसुजाना॥ धर्मनीतिगुणज्ञानविधाना॥  
 दो॥ सबकेउरअन्तरबसऊजानऊभावऊभाव॥ पुरजन  
 जननीभरतहितहोइसोकहियउपाय॥ २५९॥ चौ॥ आरतक  
 हदिविचारिनकाऊ॥ सुऊजआरिहिंआपनदाऊ॥ सुनिमु



निवचन कहतर बु राऊ ॥ नाथ तम्हारे हि हाथ उपाऊ ॥ सब क  
 रहित रुष राउ राखे ॥ आयस करिय मुदित फुर भाषे ॥ प्रथम  
 जो आयस मो कहें होई ॥ माथे मानिक रौषिख सोई ॥ पुनि जेहिं  
 कहें जस कहहिं गो साई ॥ सो सब भांतिक रिहि सेवकाई ॥ कह मु  
 निराम सत्य तम भाषा ॥ भरत सनेह विचारन राषा ॥ तेहि ते क  
 हें बहोरि बहोरी ॥ भरत भक्ति मम मति कृत भोरी ॥ मोरे जान  
 भरत रुचिराखी ॥ जो कीजिय सो भुभुषि वसाखी ॥ दो० ॥ भरत  
 विनय सादर सुनिय करिय विचार बहोरि ॥ करव साधु मत लो  
 कमत नृप नयनि गमनि चोरि ॥ २६० ॥ चौ० ॥ गुरु अत्र राग भरत  
 परदेखी ॥ राम हृदय आनन्द विशेषी ॥ भरत हिंम पुरन्य रजा  
 नी ॥ नित्य सेवक तनु मान सबाणी ॥ बोले गुरु आयस अनुकूल  
 वचन मंजु मृदु मङ्गल मूला ॥ नाथ शपथ पित चरण दोहाई ॥  
 भयउ न भुवन भरत सम भाई ॥ जे गुरु पद अम्बुज अत्र रागी ॥ ते लो  
 क उं वेद उं बउ भागी ॥ राउ रजा पर अस अत्र रागू ॥ को कहि सकै  
 भरत कर भागू ॥ लखिल बुबन्य बुद्धि सकुचाई ॥ करत बदन प  
 र भरत बडाई ॥ भरत कहहिं सो किये भलाई ॥ अस कहि सम रहे  
 अरगाई ॥ दो० ॥ तब मुनि बोले भरत मन सब संकोच तजितात ॥  
 कृपा सिन्धु प्रिय बन्धु मन कहहु हृदय की बात ॥ २६१ ॥ चौपाई ॥  
 सुनि मुनि वचन राम रुष पाउ ॥ गुरु साहिब अनुकूल अचाई ॥ ल



रामा.  
अ.  
७२

विश्रपनेसिरसवकरभाइ॥ कहिनसकहिंककुकरबविचा  
३॥ पुलकशरीरसभाभएढाढे॥ नीरजनयननेहजलबाढे॥  
कहवमोरमुनिनाथनिवाहा॥ इहितैंअधिककहोंमैंकाहा॥  
मैंजानोनिजनाथसभाऊ॥ अघराधिइपरकोहनकाऊ॥ मो  
परकृपासनेहविशेषी॥ खेलतखुनसकबडनहिदेवी॥ शि  
शुपनतैंपरिहरेउनसंगू॥ कबडनकीन्हमोरमनभंगू॥ मैप्र  
भुकरपारीतिजियजोही॥ हारेइखेलजिताबहिंमोही॥ दो॥  
मैंहंसनेहसकोचवशासनमुखकहेनवयन॥ दरशनतपि  
नआजुलगिप्रेमपिआसेनयन॥ २६२॥ चौ॥ विधिनशाकेउस  
हिमोरदुलारा॥ नीचबीजननीमिसुर्यरा॥ यहउकहतमोहि  
आजनशोभा॥ आपनिसमुजिसाधुशुचिकोभा॥ मातमंद  
मैंसाधुसचाली॥ उरअसआनतकोटिऊचाली॥ फेरेकिको  
दौबालिसुशाली॥ मुक्ताप्रसवकिशंबुकताली॥ सपनेजं  
दोषकलेशनकाइ॥ मोरअभागवउदधिअवगाइ॥ विनुसमु  
जेनिजअवपरिपाइ॥ जारेउजायजननिकहिकाइ॥ इदयहे  
रिहारेउंसवओरा॥ एकदिभांतिभलिहिभलमोरा॥ गुरुगोसां  
ईसाहिबसियराइ॥ लागतमोहिनीकपरिणाम॥ दो॥ साधु  
सभाप्रभुगुरुनिकटकहोंसथलसतिभाउ॥ प्रेमप्रपचकिऊठ  
पुरजानहिमुनिरचुराउ॥ २६३॥ चौ॥ भूपतिमरणप्रेमपणरा



एवी ॥ जननी कुमति जगत सपसाखी ॥ देखिन जाहि विकल  
 महतारी ॥ जरहिंदु सहज्वर पुरनर नारी ॥ मही सकल अनर  
 यकर मूला ॥ सो सुनि समुक्ति सहेउ सब मूला ॥ सुनिवन गम  
 न कीन्ह रघुनाथा ॥ करि मुनि वेष लषण सिय साथा ॥ विनु पन  
 ही अरु प्यादी रूपाय ॥ शङ्कर साखिरहेउ इहि वाप ॥ बड्ढरिनि  
 हारिनि साद सनेह ॥ कुलिश कठिन उर भयउ न वेह ॥ अब स  
 व अंखिन्ह देखेउं आई ॥ जियत जीव जउ सवै सहाई ॥ जिन्हहिं  
 निरषिम गुणों पिनि बीकी ॥ तजहिं विषम विषता मसती दी ॥  
 दो॥ तेर बुन नन्दन लषण सिय अनहित लागे जाहि ॥ तासुत न  
 यत जिदु सहदुख दैव सहावै काहि ॥ २६५ ॥ चौ॥ सुनि अति विक  
 ल भरत वरवाणी ॥ आरति प्रीति विनय नय सानी ॥ शोक मग  
 न सब सभा खम्भारु ॥ मन डंक मलवन परेउ तषारु ॥ कहि अने  
 क विधिक पापराणी ॥ भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी ॥ बोले  
 उचित वचन रघुनन्द ॥ दिन कर कुल कै रव वन चंद ॥ तात जाय  
 जिय कर डगलानी ॥ ईश अथीन जीव गति जानी ॥ तीनि काल वि  
 भुवन मत मोरे ॥ पुण्य शोक तात तनु तोरे ॥ उर आनत तम पर  
 ऊटिलाई ॥ जाइ लोक पर लोक न पारै ॥ दोष देहि जननि दि  
 जउ तेई ॥ जिन्ह गुरु साथु सभानहि सेई ॥ दो॥ मिटहिं पाप पर  
 पंच सब अखिल अमंगल भार ॥ लोक सय पापर लोक सख समि



रतनामतम्हार ॥ २६५ ॥ चौ० ॥ कहीं सुभाव सत्य शिव साखी ॥ भर  
रत भूमि रह राउ रिराखी ॥ तात ऊतर्क कर डज निजाए ॥ वैर प्रेम न  
हिं डुरै डुराए ॥ मुनि गणानिकट विहङ्ग मृग जाही ॥ बाथ कबधि  
क विलोकि पराही ॥ हित अनहित पशु पंति उजाना ॥ मानुष त  
नुगुण ज्ञान निधाना ॥ तात तमहि मै जानत नीके ॥ करों काह अ  
समझ सजीकें ॥ राघेउ राउ सत्य मोहित्यागी ॥ तन परिहरेउ प्रे  
म पणालागी ॥ तसुबचन मेंटत मन शोचू ॥ तेहितें अधिक तस्या  
र संकोचू ॥ तापर गुरु मोहि आयसु दीन्हा ॥ अवशिजो कह डचही  
सो कीन्हा ॥ दो० ॥ मन प्रसन्न करि सकुचत हिकह ड करों सो आज  
सत्य सिंधु रघुवर वचन सुनि भासखी समाज ॥ २६६ ॥ चौ० ॥ सर  
गण सहित सभय सरराज ॥ शोचत चाहत होन अकाज ॥ करत  
विचार वनत ककुनाही ॥ राम शरण वस गोमन माही ॥ बडरि वि  
चारि परस्पर कहही ॥ रघुपति भक्त भक्ति वश अहही ॥ अधिक  
रि अंवरीष दुर्वासा ॥ भेसर सरपति निपट निराशा ॥ सहेसर म्ह  
बडकाल विषादा ॥ नरहरि किए प्रगट प्रहलादा ॥ लगिल गि  
कान कह हिंयुनि माया ॥ अब सरकाज भरत केहाया ॥ आन उपा  
य नदे विषय देवा ॥ मानत राम सुसेवक सेवा ॥ दिय सप्रेम सेव ड  
सब भरतहि ॥ निज गुण शील राम वश करतहि ॥ दोहा ॥ सुनि  
सरमत सरगुरु कहै उभलतम्हार वउ भाग ॥ सकल समझल



मूलजगभरतचरणानुराग ॥ २६० ॥ चौ॥ सीतापतिसेवक  
 सेवकाई ॥ कामधेनुसमसरिससहाई ॥ भरतभक्तिमहरेमन  
 आई ॥ तजऊशोचविधिबातबनाई ॥ देखुदेवपतिभरतप्रभाऊ  
 सहजसुभावविवशारगुराऊ ॥ मनथिरकरइदेवउरनाही ॥ भ  
 रतहिजानिरामपरछांही ॥ सुनिसरगुरुसरसंमतशोच ॥ अं  
 तरजामीप्रभुहिसंकोच ॥ निजशिरभारभरतजियजाना ॥ क  
 रतकोटिविधिउरअनुमाना ॥ करिविचारमनदीन्हसिटीका ॥  
 रामरजायसुआपननीका ॥ निजपणतजिराखेउपनमोरा ॥  
 छोहसनेहकीन्हनहिंशोरा ॥ दो॥ कीन्हअनुग्रहअमितअति  
 सबविधिसीतानाय ॥ करिप्रणामबोलेभरतजोरिजलजयुहा  
 य ॥ २६८ ॥ चौ॥ कहउकहाबउंकाअबस्वामी ॥ कृपाअंबुनिधि  
 अन्तरयामी ॥ गुरुप्रसन्नसाहिवअनुकूला ॥ मिटीमलीनमन  
 कलपितभूला ॥ अपउरउरेउंनशोचसमूला ॥ रविदिनदोषदेव  
 दिशाभूला ॥ मोरअभाग्यमातऊटिलाई ॥ विधिगतिविषम  
 कालकटिनाई ॥ पांवसोपिसबमिलिमोहिवाला ॥ प्रणतण  
 लपणआपनपाला ॥ इहनउरीतिनराउरिहोई ॥ लोकअंवेद  
 विदितनहिगोई ॥ जगअनभलभलएकगोसांई ॥ कहियहो  
 इभलकासुभलाई ॥ देवदेवतरुसरिससभाऊ ॥ मनमुखविभु  
 खनकाइहिकाऊ ॥ दो॥ जाइनिकटपहिचानितरुछांहरामन



रामा०  
अ०  
७४

सबशोच॥ मांगत अभिमत पाव जग राउरं कभल पोच॥ २६५  
चौ॥ लखि सब विधि गुरु स्वामि सनेह॥ मिटे उदो भगत मन  
संदेह॥ अब करुणा कर कीजिय सोई॥ जनहित प्रभु चित दो  
भन होई॥ जो सेवक साहिब हि संकोची॥ निज हित चहै तास  
मति पोची॥ सेवक हित साहिब सेवकाई॥ करै सकल सुख लो  
भविदाई॥ स्वारथ नाथ फिरे सब ही का॥ किए राजा इको दिवि  
धीनी का॥ इह स्वारथ परमारथ सारु॥ सकल सकृत फल स  
गति सिगारु॥ देव एक विनती सुनि मोरी॥ उचित होइ तसक  
रब बहोरी॥ तिलक समाज साजि सब आना॥ करिय सुफल  
प्रभु जो मन माना॥ दो॥ सानु जयठ इय मोहि बदन कीजिय स  
बहिस नाथ॥ नतरु फेरिय बन्धु दोउ नाथ चलौ मै साथ॥ २७०  
चौ॥ नतरु जाहि बदन तीनि उभाई॥ बद्धरिय सीय सहित रघु राई  
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई॥ करुणा सागर कीजिय सोई  
देव दीन्ह सब मो परभारु॥ मोरे निति नथर्म विचारु॥ कहौं ब  
चन सब स्वारथ देत॥ रहत न आरत के चित चेत॥ उत्तर देइ सु  
नि स्वामि रजाई॥ सो सेवक लखिला जल जाई॥ असमै अब  
गण उदयि अगाध॥ स्वामि सनेह सराहत साथ॥ अब कृपा  
लु मोहि सो मत भावा॥ मुकुच स्वामि मन जाइ न पावा॥ प्रभु प  
द पाप कहुँ सति भाऊ॥ जग मंगल हित एक उपाऊ॥ दो॥



प्रभुप्रसन्नमनसंऊचतजिजो जे हिआयसुदेव॥ सोसि  
 रथरिथरि करहिं सबमिटिहिअनटअवरेव॥ २०१॥ चौ०॥  
 भरतबचनसुनिमुनिहियहरषे॥ साधुसराहिसुमनसर  
 वरषे॥ असमंजसबषाअवथनिवासी॥ प्रमुदितमनतापस  
 वनवासी॥ चुपुरहिगेरबुनाथसंकोची॥ प्रभुगतिदेविस  
 भासबषोची॥ जनकदूततेहिअबसरआए॥ मुनिवशिष्ट  
 सुनिबेगिबुलाए॥ करिप्रणामतिन्हरामनिहारे॥ वेषदे  
 खिभेनिपटडुखारे॥ हूतहिंमुनिवरबूजीबाता॥ कहऊवि  
 देहभूषऊशालाता॥ सुनिसऊचारुनाईमहिमाथा॥ बोले  
 चरवरजौरैहाथा॥ बूऊवराउरसादरसांई॥ ऊशलहेतसो  
 भयेगोसांई॥ दो०॥ नाहितकोशलनाथकैसाथऊशलगे  
 नाथ॥ मिथिलाअवथविशेषतेंजगसबभयउअनाथ॥ २०२  
 चौ०॥ कौशलपतिगतिमुनिजनकौरा॥ भेसबलोगशोकव  
 शवौरा॥ जेहिदेखातेहिसमयविदेह॥ नामसत्यअसलाग  
 नकेह॥ रानिऊचालिसुनतमहिपालहिं॥ सुऊनककुज  
 समणिविनुब्यालहिं॥ भरतराजरबुवरवनवास॥ भामि  
 थिलेशहृदयहरासू॥ नृपबूजेबुथसचिवसमाज॥ कद  
 ऊविचारिउचितकाआज॥ समुजिअवथअसमंजसदोऊ॥  
 चलियकिरहियनकहककुकोऊ॥ नृपतिपीरथरिहृदयवि



शमा.  
अ.  
७५

चारी॥ पठये अबध चतर चर चारी॥ बूझि भरत सत भाउ ऊभा  
ऊ॥ आये ऊ वेगिन होइ लषाऊ॥ दो॥ गप अबध चर भरत ग  
ति बूझि देविकर तति॥ चले चित्रकूटहि भरत चार चलेति  
रहति॥ २३॥ चौ॥ हत न्ह आइ भरत की करणी॥ जनक स  
माज यथा मति वरणी॥ सुनि गुरु पुरजन सचिव मही पति॥  
भेस वशोच सनेह विकल प्रति॥ थरि थीर जकरि भरत बडाई  
लिए सुभट साहनी बुलाई॥ वर पुर देश राखि रखवारे॥ हय  
गजरथ बढयान संवारे॥ दुवरी साधि चलेत त काला॥ कि  
य विप्रामन मगुमहि पाला॥ भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा॥  
चलेय मुन उतरन सब लागा॥ खबरिलेन हम पठ पनाथा॥  
तिन्ह कदि असमहि नाये उमाथा॥ साय किरात कसात कदी  
न्हे॥ मुनि वरतरत विदाचर कीन्हे॥ दो॥ सुनत जनक आगम  
न सब दर्षेउ अबध समाज॥ रघुनन्दन हिं संकोच बुझोच  
विबश सरराज॥ २४॥ चौ॥ गरगलानि ऊटिल कै कैयी  
काहिक है केहि दूषण देई॥ असमन आनि मुदित नरनारी॥  
भयेउ बहोरि रहब दिन चारी॥ इहि प्रकार गत वासर सोऊ॥ प्रा  
त अन्हान लाग सब कोऊ॥ करि मजन पूजहिं नरनारी॥ गणा  
पति गोरि पुरारित मारी॥ रमारमाण पद बंदि वहोरी॥ विन  
बहिं अंजलि अञ्जल जोरी॥ राजाराम जानकी रानी॥ आनन्द अ



बधिअबधरजथानी ॥ स्वशवसहिंफिरिसहितसमाजा  
 भरतहिंरामकरहिंयुवराजा ॥ इहिसुखसुखासीचिसवका  
 ह ॥ देवदेजगजीवनलाह ॥ दो० ॥ गुरुसमाजभाइन्हसहि  
 तरामराजपुरहोउ ॥ अकृतरामराजाअबधमरियमांगस  
 बकोउ ॥ २५ ॥ चौ० ॥ सुनिसनेहमयपुरजनबाणी ॥ निंदहिं  
 योगविरतिमुनिजानी ॥ इहिविधिनित्यकर्मकरिपुरजन  
 रामहिंकरहिंप्रणामपुलकितनू ॥ ऊंचनीचमध्यमनरना  
 री ॥ लहहिंदरशनिजनिजअनुहारी ॥ सावधानसबही  
 सनमानहिं ॥ सकलसराहतकृपानिधानहिं ॥ लरिकाही  
 तैरबुबरबाणी ॥ पालतनीतिप्रीतिपदिचानी ॥ शीलसको  
 चसिंधुरबुराऊ ॥ सुमुखसलोचनसरलसुभाऊ ॥ कहत  
 रामगुणगणअनुरागे ॥ सबनिजभार्यसराहनलागे ॥ ह  
 मसमपुण्यपुज्जगद्योरे ॥ जिनहिंरामजानतकरिमोरे ॥  
 दो० ॥ प्रेममगनतेहिसमयसबसुनिआवतमिथिलेश ॥ स  
 हितसभासंभ्रमउदरेविजलकमलदिनेश ॥ २६ ॥ चौ० ॥ भा  
 इमचिवगुरुपुरजनसाथा ॥ आगेगवनकीन्हरबुनाथा ॥ गि  
 रिवरदीखजनकनृपजबंदी ॥ करिप्रणामत्यागारथतबंदी  
 रामदरपालालसाउछाह ॥ पणअमलेशकलेशनकाहू ॥ म  
 नतहंजहंरबुबरबैदेही ॥ विनुमनतनुदुखसुखसधिकेही



रामा.  
अ.  
७६

आवतजनकचलेरहिभांति॥ सहितसमाजप्रेममतिमांती  
आपनिकटदेखिअनुरागे॥ सादरमिलनपरस्परलागे॥ लगे  
जनकमुनिगणपदवन्दन॥ अविन्दप्रणामकीन्हरचुनन्दन  
भाइनसहितराममिलिराजहिं॥ चलेलवाइसमेतसमाजहिं  
दो॥ आश्रमसागरशांतरसप्रणपावनपाथ॥ सैनमनझंक  
रुणासरितलिपजातरचुनाथ॥ २००॥ चौ॥ तीरतिज्ञानवि  
रागकरारे॥ वचनसशोकमिलतनदनारे॥ शोचउसांससमी  
रतरंगा॥ भीरजतटतरुवरकरभंगा॥ विषमविषादतरावति  
धारा॥ भयभ्रमभंवरआवर्तअपारा॥ केवटबुदिवियापडिना  
वा॥ सकहिंनखेइएकनरिआवा॥ वनचरकोलकिरातविचा  
रे॥ एकैविलोकिपथिकहियहारे॥ आश्रमउदधिमिलीजब  
जाई॥ मनझंउटेअबुधियऊलाई॥ शोकविकलहोंराजसमा  
जा॥ रहानज्ञाननभीरजलाजा॥ भूपत्रपगुणशीलसराही॥  
रोवहिंशोकसिंधुअवगाही॥ कुन्द॥ अबगहिशोकसमुद्रशो  
चहिंनारिनरव्याऊलमहा॥ दैदोषसकलसरोषबोलहिंवा  
मविधिकीन्होकहा॥ २१॥ सरसिद्धतापसयोगिजनमुनिदशा  
देखिविदेहकी॥ तलसीनसमरथकोउजौतरिषाकैसरितस  
नेहकी॥ २२॥ सोरठा॥ किपअमितउपदेशजहंतजंलोगन्दमु  
निवरन्ह॥ भीरजथरियनरेशाकहेउवशिष्टविदेहसन॥ २३॥



चौ॥ जासु ज्ञानरविभवनिशिनाशा ॥ वचनकिरणमनकम  
 लविकाशा ॥ तेहि किमोहममतानियराई ॥ यहसियरामस  
 नेहवगई ॥ विषयीसाधकसिद्धसयाने ॥ विविधजीवजगवे  
 दवरवाने ॥ रामसनेहसरसमनजासू ॥ साधुसभावउआदरता  
 सू ॥ सोहनरामप्रेमविनुज्ञाना ॥ कर्णधारविनुजिमिजलयाना  
 मुनिबद्धविधविदेहसमजाए ॥ रामघाटसबलोगअन्हहाए ॥  
 सकलशोकसंजलनरनारी ॥ सोवासरवीतेउविनुवारी ॥ य  
 अखगमृगनिनकीन्हअहारा ॥ प्रियपरिजनकरकवनविचा  
 रा ॥ दो॥ दोउसमाजमिलिराजरबुराजनहानेप्रात ॥ बैठेस  
 बबटविटपतरमनमलीनकृपागात ॥ २५ ॥ चौ॥ जेमहिसु  
 रदशरथपुरवासी ॥ जेमिथिलापतिनगरनिवासी ॥ हंसबं  
 शगुरुजनकपुरोधा ॥ जिन्हजगमगपरमारथशोधा ॥ लगे  
 कहनउपदेशअनेका ॥ सहितधर्मनयविरतिविवेका ॥ कौ  
 शिककहिकहिकथापुराणी ॥ समुजाइसबसभासबाणी  
 तबरचुनाथकौशिकहिकहेऊ ॥ नाथकालिजलविनुसबर  
 हेऊ ॥ मुनिकहउचितकहतचुराई ॥ गयउवीतिदिनपहर  
 अजाई ॥ अषिरुषलखिकहतिरङ्गतिराज ॥ इहांउचितनहिं  
 अशानअनाज ॥ कहाभूपभलसबहिंसोहाना ॥ पाइजायस  
 चलेनहाना ॥ दो॥ तेहिअबसरफलफूलदलमूलअनेकप्र



कार॥ लैआएवनचरविपुलभरिभरिकावरिभार॥ २८० ॥  
 चौ॥ कामदभेगिरिरामप्रसादा॥ अबलोकतअपहरतवि  
 षादा॥ सरसरितावनभूमिविभागा॥ जबुउमगतआनन्दअ  
 नुरागा॥ बेलिविटपसबसफलसफूला॥ बोलतखगमृग  
 अतिअनुकूला॥ तेहिअबसरवनअधिकउक्ताहू॥ त्रिविधस  
 मीरसुखदसबकाहू॥ जाईनवरणिमनोहरताई॥ जनुमहि  
 करतजनकएऊनाई॥ तबसबलोगनहाइनहाई॥ रामज  
 नकमुनिआयसुपाई॥ देविदेवितरुवरअनुरागे॥ जहेत  
 हेपुरजनउत्तरणालागे॥ दलफलफूलकन्दविधनाना॥ या  
 वनसुन्दरसुधासमा<sup>ना</sup>॥ दो॥ सादरसबकहेरामगुरुषठएभ  
 रिभरिभार॥ पूजिपितरसरगुरुअतिथिलगेकरणाफला  
 हार॥ २८१ ॥ चौ॥ इहिविधवासरवीतेचारी॥ रामनिरखिनर  
 नारीसखारी॥ डूऊसमाजअसरुचिमनमाही॥ विनुसिय  
 रामफिरवभलनाही॥ सीतारामसंगवनवास॥ कोटिअम  
 रपुरसरिससुपासू॥ परिहरिलषणरामवैदेही॥ जेहिव  
 रभावरामविधितेही॥ दाहिनदैवहोइजबसबही॥ रामस  
 मीपवसियवनतबही॥ मन्दाकिनिमजनतिऊकाला॥ रा  
 मदरगामुदमङ्गलमाला॥ अटनरामगिरिवनतापसथल  
 अशानअमियसमकन्दमूलफल॥ सुखसमेतसंवतडुइसाता



पलसमहोदिनजानीयजाता॥दो॥ यहिसुखयोगनलोगसब  
 कहहिंकाहोअसभाग॥सहजसुभावसमाजदुंअरामचरणअनुरा  
 ग॥२२॥चौ॥इहिविधसकलमनोरथकरही॥वचनसप्रेमसुन  
 तमनहरही॥सीयमाततेहिसमयपढाई॥दासीदेखिसुअवसर  
 आई॥सावकाशसुनिसबसियसासु॥आपउजनकराजरनिवास्त  
 कौशल्यासादरसनमानी॥आसनदीन्हसमयसबजानी॥शील  
 सनेहसरसदुंअगोरा॥इवहिंदेखिसुनिकलिशकठोरा॥पुलक  
 शिथिलतनुवारिविलोचन॥महिनखलिखनलंगीसबशोचन  
 सबसियरामप्रेमकीसूरति॥जनुकरुणाबहुवेषविसूरति॥सीय  
 मातकहविधिबुढिबांकी॥जिमियफेनुफोरपविठोकी॥दो॥  
 सुनियसुधादेखियगरलसबकरततिकराल॥जहंतहंकाकउ  
 लकवकमानससुकृतमराल॥२३॥चौ॥सुनिसशोचकहदे  
 विसुमित्रा॥विधिगतिअतिविपरीतविचित्रा॥जोसुजिपालइह  
 रइवहोरी॥बालकेलिसमविधिमतिमोरी॥कौशल्याकहदोषन  
 काहू॥कर्मविवशदुखसुखततिलाहू॥कठिनकर्मगतिजानवि  
 थाता॥जोअभुअभुभकर्मफलदाता॥ईशरजाइशीससबहीके  
 उतपतिस्थितिलयविषअमीके॥देविमोहवशशोचियवादी  
 विधिप्रपंचअसअचलअनादी॥भूपतिजियवमरवउरआनी॥शो  
 चिअसविलखिनिजहितहानी॥सीयमातकहसत्यसबाणी॥स



रामा.  
प्र.  
७८

कृतप्रवधिप्रवयतिपरांनी॥दो॥ लषणरामसियजोहिंबनभ  
लिपरिणामनपोच॥गहवरिदियकरकौशल्यामोहिभरतकर  
शोच॥२२४॥चौ॥ ईशप्रसादप्राशीषतहारी॥सतसतबधुदे  
वसरिवारी॥रामसपथमैकीन्हिनकाऊ॥सोकरिसखीकहौस  
तिभाऊ॥भरतशीलगुणविनयबडाई॥भायपभक्तिभरोसभा।  
लाई॥कहतशेषशारदमतिहीचे॥सागरसीपकिकरहुउली  
चे॥जानौसदाभरतऊलदीपा॥बारबारमोहिकहेउमहीपा॥  
कसैकनकमणिपारिषपाप॥पुरुषपरीतियसमयसुभाप॥  
अनुचितआजकहवअसमोरा॥शोकसनेहसयानपथोरा॥सु  
निसुरसरिसमपावनिबाणी॥भईसनेहविकलसबरानी॥दो॥  
कौशल्यकहिपीरथरिसुनहुदेविमिथिलेशि॥कोविवेकनि  
थिवलभहंतमहिंसकैउपदेशि॥२२५॥चौ॥रानिरायसुन।  
अवसरपाई॥आपनिभांतिकहवसमुजाई॥राखियलषणभर  
तगवनहिबन॥जोयहमतमानैमहीपमन॥तोभलयतनकरब  
सुविचारी॥मोरेंशोचभरतकरभारी॥गूढसनेहभरतमनमाही  
रहेनीकमोहिलागतनाही॥लखिसुभावसुनिसरलसबाणी  
सबभइमगनकरुणारससानी॥नभप्रसूनजरियन्यथन्यधनि  
मिथिलसनेहमिदयोगीमुनि॥सबरनिबंसविषकिलखिरहे  
ऊ॥तबपरिपोरसुमित्राकहेऊ॥देविदाउपुगयामिनिबीती॥



राममातृसुनिउंभीसप्रीती॥दो॥ बेगियायथारिअथलहिं  
 कहिसनेहसतिभाय॥दमरेंतवअवईशगतिकेंमिथिलेश  
 सहाय॥२८६॥चौ॥ लघिसनेहसुनिवचनविनीता॥जनक  
 प्रियागहिपांयपुनीता॥देविउचितअसविनयतह्यारी॥द  
 शरथवरणिराममहतारी॥प्रभुअपनेनीचहुंआदरही॥अ  
 ग्रिभुमगिरिशिरतणथरही॥सेवकराउकर्ममनवाणी॥स  
 दासहायमहेशभवानी॥रौरेअंगयोगजगकोहै॥दीपसहा  
 यकिदिनकरसोहै॥रामजाईवनकरिसरकाजू॥अचलअ  
 बधपुरकरिहहिंराजू॥अमरनागनररामबाहुबल॥सख  
 वसिहहिंअनेकअपनेयल॥इहसबयाजबल्ककहिराखा॥  
 देविनहोईमुधामुनिभाषा॥दो॥ असकहिवदपरिप्रेमअति  
 सियहितविनयसुनाइ॥सियसमेतसियमातृतबचलीसुआ  
 यसुपाइ॥२८७॥चौ॥ प्रियपरिजनहिंमिलिवैदेही॥जो जे  
 हियोगभांतितिहिंतेही॥तापसवेषजानकिहिंदेही॥भेसब  
 विकलविषादविशेषी॥जनकरामगुरुआयसुपाइ॥चलेथ  
 लहिसियदेखेउआई॥लीन्हिलाउरजनकजानकी॥पाऊनि  
 पावनिप्रेमप्राणाकी॥उरउमगेउअम्बुधिअनुरागू॥भयउभु  
 यमनमनहुंअयागू॥सीयसनेहवटबाछतजोहा॥तापररामप्रे  
 मशिषुसोहा॥चिरंजीविमुनिज्ञानविकलजनू॥दूउतलहेउ।



बालप्रबलवत् ॥ मोहमगनमतिनहि विदेहकी ॥ महिमा  
सीयरघुवरसनेहकी ॥ दो० ॥ सियपितृमातृसनेहवशविक  
लनशकेसंभारि ॥ थरणि सुताथीरजथरेउ समयसुधर्मवि  
चारि ॥ २८८ ॥ चौ० ॥ तापसवेषजनकसियदेवी ॥ भणउप्रेमपरि  
तोषविशेषी ॥ पुत्रियवित्रकिएऊलदोऊ ॥ सुयशधवलजग  
कहसबकोउ ॥ जिनि सरसरि कीरति सरितोरी ॥ गवनकीन्ह  
विधिअणउकरोरी ॥ गरुअवनिपलतीनिबडेरे ॥ इहिकिए  
साधुसमाजचनेरे ॥ पितृकहसत्यसनेहसुबाणी ॥ सीयसं  
ऊचमहंमनइसमानी ॥ पुनिपितृमातृलीन्हउरलाई ॥ शिख  
आसिषहितदीन्हिसुहाई ॥ कहति संऊचितमनमाही ॥ ३  
हांवसवरजनीभलनाही ॥ लखिरुखिगनिजनायउराऊ  
रुदयसराहतशीलसुभाऊ ॥ दो० ॥ बारबारमिलिभेंटिसिय  
विदाकीन्हसनमानि ॥ कहीसमयशिरभरतगतिगानिसुबा  
णिसयानी ॥ २८९ ॥ चौ० ॥ सुनिभूणालभरतव्यवहारू ॥ स्वर्ण  
सुअरू सुधाशशिसारू ॥ मृदेसजलनयनपुलकेतन ॥ सुय  
शमराहनलगेसुदितमन ॥ सावधानसुनुसुमुखिसुलोचनि  
भरतकथाभवबंधविमोचनि ॥ धर्मराजनयब्रह्मविचारू ॥ ३हां  
यथा मतिमोरप्रचारू ॥ सोमतिमोरिभरतमहिमाही ॥ कहौका  
दकुलकुअतिनकाही ॥ विधिगणपतिअहिपतिशिवशारद



कविकोविदबुधबुद्धिविषारद॥ भरतचरितकीरतिकरतृती  
 धर्मशीलगुणाविमलविभूती॥ समुजतसुनतसुखदसबका  
 ह॥ सुचिसुरसरिरुचिनिदरिसुधाह॥ दो॥ निरवधिगुणानि  
 रूपमपुरुषभरतभरतसमजानि॥ कहियसुमेरुकिसेरसम  
 कविऊलमतिसऊचानि॥ २६०॥ चौ॥ अगमसबहिवरणातब  
 रवरणी॥ जिमिजलहीनमीनगणाथरणी॥ भरतअमितमहि  
 मासुठरानी॥ जानहिंरामनशकहिंवाखानी॥ वरणिसेप्रेम  
 भरतअनुभाउ॥ तियजियकीरुचिलखिकहराऊ॥ बडूरहिंल  
 षणाभरतवनजाही॥ सबकरभलसबकेमनमांही॥ देविप  
 रंतभरतरघुवरकी॥ प्रीतिप्रतीतिजाईनहिंतरकी॥ यद्यपिरा  
 मसीमसमताके॥ भरतअवधिसनेहममताके॥ परमारथसा  
 रथसुखसारे॥ भरतसपनेऊंमनऊंनिहारे॥ साथनसिद्धराम  
 पदनेऊ॥ मोहिलखियरतभरतमतिपहू॥ दो॥ भोरेऊभरतन  
 बोलरुहिंमनमहंरामरजाइ॥ करियनशोचसनेहवशकहेउभू  
 पविलखाइ॥ २६१॥ चौ॥ रामभरतगुणागणातसप्रीती॥ निसि  
 दंपतिहिंपलकसमवीती॥ रामसमाजप्रातपुगजागे॥ न्हाइन्हा  
 रसरसजनलागे॥ गेनहाइगुरुपदिंरघुगई॥ बन्दिचरणबो  
 लेरुषपाई॥ नाथभरतपुरजनमहतारी॥ शोकविकलवनवा  
 सडावारी॥ सहितसमाजराउमिथिलेशू॥ बडूतदिवसभेसह



तकलेष्ट॥ उचित होइ सो कीजिय नाथा॥ हित सब ही करै रो  
रेहाया॥ अस कहिय तिस ऊँचे रघुराज॥ मुनि प्रल के लखि शी  
ल सभाऊ॥ तम विनुराम सकल सुख साजा॥ नरक सरिस दुअं  
राज समाजा॥ दो०॥ प्राण प्राण के जीय जीय के सुख के सुख त  
म राम॥ तम तजिता त सो हान गृह जिन्ह हिंतिन्ह विधि बाम  
२५२॥ चौ०॥ से सुख कर मथर मजरि जाऊ॥ जहं न राम पद पं  
कज भाऊ॥ योग ऊँ योग ज्ञान अज्ञान॥ जहं न राम प्रेम परथा  
न॥ तम विनु दुखी सुखी तम ते ही॥ तम जानइ जिय जो जेहि  
के ही॥ राउर आय सुशिर सब ही के॥ विदित कृपाल दिगति स  
बनी के॥ आपु आपु महिं थारिय पाऊ॥ भयेउ सनेह शिथिल मुनि  
राऊ॥ करि प्रणाम तब राम सिधाए॥ अविथरि धीर जनक पहिं  
आए॥ राम वचन गुरु नृपहि सुनाए॥ शील सनेह सुभाव सुहाए  
महाराज अब कीजिय सोई॥ सब कर धर्म सहित हित होई॥ दो०  
ज्ञान निधान सुज्ञान अविधर्म धीर नरपाल॥ तम विनु अस मं  
जस राम न को समर्थ हिं काल॥ २५३॥ चौ०॥ सुनि मुनि वचन  
जनक अनुरागे॥ लखि गति ज्ञान विराग विरागे॥ शिथिल सने  
ह गुण तम न मोही॥ आइइ हां कीन्हा भल नाही॥ राम हिं राउ  
कहे उवन जाना॥ कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाणा॥ हम अब बन  
तेवन हिं पठाई॥ प्रसुदित फिरव विवेक बजाई॥ ताप समुनि म



हिस्तरसुनिदेखी ॥ भएप्रेमवशविकलविशेषी ॥ समयस  
 मुजियरिधीरजराजा ॥ चलेभरतपहिंसहितसमाजा ॥ भर  
 तआयआगेहोयलीन्दे ॥ अबसरसरिससुआसनदीन्दे ॥ ता  
 तभरतकहतिरहुतिराऊ ॥ तमहिंविदितरघुवीरसभाऊ ॥  
 दो० ॥ रामसत्यव्रतधर्मरतसबकरणीलसनेऊ ॥ संकटसहत  
 संकोचवशचहियसोआयसुदेऊ ॥ चौ० ॥ सुनितनुपुलकि  
 नयनभरिवारी ॥ बोलेभरतधीरधरिभारी ॥ प्रभुप्रियपूज्य  
 पितासमआपू ॥ कुलगुरुसमहितमायनबापू ॥ कोशिका  
 दिमुनिसचिवसमाजू ॥ ज्ञानअंबुनिधिआपुनआजू ॥ शि  
 सुसेवकआयसुअनुगामी ॥ जानिमोहिशिखदेश्यस्वामी  
 इहिसमाजथलबूजबराउर ॥ मनमलीनमैबोलतबाउर ॥  
 कोटेबदनकहोबडिवाता ॥ तमवतातलखिवामविधाता ॥  
 आगमनिगमप्रसिद्धपुराणा ॥ सेवाधर्मकठिनजगजाना ॥  
 स्वामीधर्मस्वारथहिविरोधू ॥ बैरअंधप्रेमहिंनप्रबोधू ॥ दो० ॥  
 राखिरामरुसधर्मव्रतपराधीनमोहिजानि ॥ सबकेसंमतसर्व  
 हितकरियप्रेमपहिचानि ॥ २५ ॥ चौ० ॥ भरतवचनसुनिदेखि  
 सभाऊ ॥ सहितसमाजसराहतराऊ ॥ सगमअगममृदुमंजु  
 कठोरे ॥ अर्थअमितअतिआखरथोरे ॥ ज्योंमुखमुकुरमुकुरनि  
 जगणी ॥ गहिनजाइअसअदुतवाणी ॥ भूपभरतमुनिसाधुस  
 माजू ॥ गोजहंविबुधऊमुदहिजराजू ॥ सुनिसुधिषोचविकल



रामा.  
प्र.  
८१  
८

सबलोगा॥ मनइंमीनगणनवजलयोगा॥ देवप्रथमकुल  
गुरुगतिदेवी॥ निरखिविदेहसनेहविशेषी॥ रामभक्तिमय  
भरतनिहारे॥ सुरस्वारीहीहरिदियहारे॥ सबकोउरामप्रे  
ममयपेखा॥ भएअलेखशोचवशलेखा॥ दो॥ रामसनेह  
संकोचवशकहसशोचसुरराज॥ रचइप्रपंचहिंपंचमिलि  
नाहितभएउअकाज॥ २५६॥ चौ॥ सुरन्दिमिरिशारदास  
राही॥ देविदेवशरणागतपाही॥ फेरिभरतमतिकरिनिज  
माया॥ पालुविबुधकुलकरिकुलकाया॥ विबुधविनयसु  
निदेविसयानी॥ बोलीसुरस्वारीजउजानी॥ मोसनकहइ  
भरतमतिफेरु॥ लोचनसहसनसूजसुमेरु॥ विधिहरिह  
रमायाबडिभारी॥ सोनभरतमतिशकैनिहारी॥ सोमतिमो  
हिकहतकरुभोरी॥ चांदनिकरैकिचन्द्रकरचोरी॥ भरतह  
दयसियरामनिवास॥ तहंकितिमिरजहंतरणिप्रकास॥  
असकहिशारदगइविधिलोका॥ विबुधविकलनिशिमान  
इकोका॥ दो॥ सुरस्वारीमलीनमनकीन्हऊमंत्रऊठाट॥  
रचिप्रपंचमायाप्रबलभएभ्रमआर्तउचाट॥ २५७॥ चौ॥ करि  
ऊचालिशोचतसुरराज॥ भरतहायसबकाजअकाज॥ गण  
जनकरवुनायसमीपा॥ मनमानेसबरवुकुलदीपा॥ समय  
समाजयमअविरोधा॥ बोलेतबरवुबंशपुरोधा॥ जनकभरत  
संवादसनाई॥ भरतकहाउतिकहीसहाई॥ तातरामजसआय



सुदेह ॥ सो सब करै मोर मत पढ़ ॥ सुनिरवु नाय जो रिगुगपा  
 णी ॥ बोले सत्य सरल मृदुवाणी ॥ विद्यमान आशुन मिथिलेष्ट ॥  
 मोर कहव सब भांति भदेसू ॥ राउर राय रजाय सहोई ॥ राउरिण  
 पथ सही सिर सोई ॥ दो० ॥ राम राय सुनि सुनि जनक सऊचे  
 सभा समेत ॥ सकल विलोकहिं भरत मुख बने न उतर देत ॥ २४६  
 चौ० ॥ सभा सऊच वश भरत निहारी ॥ राम बंधु धरि धीर जभारी  
 ऊ समय देखि सनेह संभारा ॥ बढत विंध्य जिमि बट जनि वारा  
 शोक कनक लोचन मति तोणी ॥ हरी विमल गुणगण जगयोनी  
 भरत विवेक बराह विणाला ॥ अनायास उथरी तिहि काला ॥ क  
 रि प्रणाम सब कहं कर जोरै ॥ राम राउ गुरु साधुनि होरै ॥ तम  
 व आज्ञा अति अनुचित मोरा ॥ कहउं वदन मृदु बचन कठोरा  
 हृदय सुमिरि शारदा सहोई ॥ मान सतें मुख पंकज आई ॥ विम  
 ल विवेक धर्म नयणाली ॥ भरत भारती मंजु मराली ॥ दो० ॥ नि  
 रखि विवेक विलोचन दिशि थिलनेह समाज ॥ करि प्रणाम  
 बोले भरत सुमिरि सीयरवु राज ॥ २४७ ॥ चौ० ॥ प्रभु पित मात सु  
 हृद गुरु स्वामी ॥ पूज्य परम हित अंतरजामी ॥ सरल सुसाहि  
 वशील निधान ॥ प्रणत पाल सर्वज्ञ सजान ॥ समरथ शरण  
 गत हितकारी ॥ गुणग्राहक अवगुण अवहारी ॥ स्वमि गोसो  
 ईहि सरिस गोसोई ॥ मोहि समान मै स्वामि दोहाई ॥ प्रभु पित व  
 चन मोह वश पेली ॥ आपउं इहां समाज संकेली ॥ जग भल पोच

कायोदिनी  
२



रामा.  
अ.  
८२  
८२

ऊंचग्रुनीचू॥ अमियअमरपदमाझरमीचू॥ रामरजायमे  
 टिमनमाही॥ देखासुनाकतऊंकोउनाही॥ सोमैसबविधि  
 कीन्हिठिडाई॥ प्रभुमानीसनेहसेवकाई॥ दो०॥ कृपाभला  
 ईअपनीनाथकीन्हभलमोर॥ दूषणभेभूषणसरिससुय  
 पाचारुचऊंओर॥ ३००॥ चौ०॥ राउरिरीतिसुवाणिबडाई॥  
 जगतविदितनिगमागमगाई॥ ऊरऊटिलखलऊमतिक  
 लंकी॥ नीचनिःशीलनिरीशनिशंकी॥ तेसुनिशरणसासु  
 हेंआप॥ सकृतप्रणामकिअपनाप॥ देविदोषकबझनउ  
 रआने॥ सुनिगुणसाधुसमाजवरवाने॥ कोसाहिवसेवक  
 हिनिवाजी॥ आपुसमानसाजसबसाजी॥ निजकरततिन  
 समुजियसपने॥ सेवकसंऊचशोचउरअपने॥ सोगोसांउन  
 दिदूसरकोपी॥ भूजाउठारकहोंपणरोपी॥ पशुनाचतपुक  
 पाटप्रवीणा॥ गुणगतिनटवाटकआधीना॥ दो०॥ योंसुधा  
 रिसनमानिजनकिएसाधुशिरमोर॥ कोकृपालुविनुपालि  
 हैविरुदाबलिवरजार॥ ३०१॥ चौ०॥ शोकसनेहकिबालसु  
 भाप॥ आपउंराउरजायमिटाप॥ तबऊंकृपालुहेरिनिजओ  
 रा॥ सबहिंभांतिभलमानेऊमोरा॥ देखेउंयंसुमऊलमूला  
 जानेउंस्वामिसहजअनुकूला॥ बडेसमाजविलोकेउभागू॥  
 बडीचुकसाहिवअनुरागू॥ कृपाअनुग्रहअऊअचाई॥ कीन्हि  
 कृपानिधिसबपथिकाई॥ राखामोरदुलारगोसांई॥ अपनेशी



लसुमावभलाई॥ नाथनिपटमैकीन्हिठिवाई॥ स्वामिसमा  
जसंकोचविहाई॥ अविनयविनययथारुचिवाणी॥ तमिय  
देवअतिआरतजानी॥ दो॥ सहृदसुजानसुसाहिबहिंब।  
ऊतकहवबडिखोरि॥ आयसुदेख्यदेवअवसबहिंसुधारिय  
मोरि॥ ३०२॥ चौ॥ प्रभुपदपमपरागदोहाई॥ सत्यसकृतसु  
खसीमसुहाई॥ सोकरिकहोहियेअपनेकी॥ रुचिजागतसो  
वतसपनेकी॥ सहजसनेहस्वामिसेवकाई॥ स्वारथकुलफल  
चारिविहाई॥ आज्ञासमनहिसाहिबसेवा॥ सोप्रसादजनपा।  
वैदेवा॥ असकहिप्रेमविवशभयभारी॥ पुलकशरीरविलोच  
नवारी॥ प्रभुपदकमलगहेअऊलाई॥ समयसनेहनसोकहि  
जाई॥ कृपासिंधुसनमानिसुवाणी॥ वैठाएसमीपगदिपाणी  
भरतविनयसुनिदेविसुभाऊ॥ शिथिलसनेहसभारचुराऊ  
कुन्द॥ रचुराउशिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाथनी  
मनमहंसराहतभरतभायपभक्तिकीमहिमावनी॥ २३॥ भर  
तहिंप्रसंशतविबुधवरषतसमनमानसमलिनसे॥ तलसी  
विकलसवलोगसुनिसंऊचेनिशागमनलिनसे॥ २४॥ सोरठा  
देखिबडुखारीदीनडुऊसमाजनरनारिसब॥ मद्यवामहामलीन  
मुणमारिमऊलचहत॥ २०३॥ चौ॥ कपटऊचालिसीससुरराज  
परअकाजप्रियआपनकाज॥ काकसमानपाकरिपरीती॥ कली



मलीनकतहंनप्रतीती॥ प्रथमऊमतिकरिकपटसंकेला॥  
 सोउचाटसबकेसिरमेला॥ सुरमायासबलोगविमोहे॥ राम  
 प्रेमप्रतिशयनविहोहे॥ भएउचाटवशमनथिरनाही॥ दाणा  
 वनरुचिदाणासदनसोहाही॥ दुविथमनोगतप्रजाडखारी॥  
 सरितसिंधुसङ्गमजिमिवारी॥ दुचितकतङ्गपरितोषनलहही  
 एकएकसनमर्मनकहही॥ लखिहियहंसिकहकृपानिथा  
 न॥ सरिसम्मानमदवाकरवान॥ दो॥ भरतजनकमुनिगणा  
 सचिवसाधुसचेतविहाइ॥ लगीदेवमायासबहिंयथायोगज  
 नपाइ॥ ३०४॥ चौ॥ कृपासिंधुलखिलोगदुखारे॥ निजसनेह  
 सुरपतिछलभारे॥ सभाराउगुरुमहिसुरमंत्री॥ भरतभक्तिस  
 बकीमतियंत्री॥ रामहिंचितवतचित्रलिखेसे॥ सऊचतबो  
 लतवचनशिखरे॥ भरतप्रीतिनितिविनयबडाई॥ सुनतसु  
 खदवरणातकठिनाई॥ जासुविलोकिभक्तिलबलेशू॥ प्रेम  
 मगनमुनिगणमिथिलेशू॥ महिमातासुकहैकिमितलसी  
 भक्तिप्रभावसुमतिहियझलसी॥ आपुछोटमहिमावडिजानी  
 कविऊलकानिमानिसऊचानी॥ कदिनसकतिगुणरुचिअ  
 थिकाई॥ मतिगतिबालवचनकीनाई॥ दो॥ भरतविमलय  
 शविमलविधुसुमतिचकोरऊमारि॥ उदितविमलजनह  
 दयनभएकटकरहीनिहारि॥ ३०५॥ चौ॥ भरतप्रभावनसु



गमनिगमहं॥ लघुमतिचापलताकवित्तमहं॥ कहतसु  
 नतसतिभावभरतको॥ सीयरामपदहोइनरतको॥ सुमिर  
 तभरतहिप्रेमरामको॥ जेहिनसुलभतेहिसरिसवामको॥  
 देविदयालुदशासबहंकी॥ रामसुजानजानिजनजीकी॥  
 धर्मधुरीणाधीरनयनागर॥ सत्यसनेहशीलसुखसागर॥ देश  
 काललखिसमयसमाज॥ नीतिप्रीतिपालकरबुराज॥ बोले  
 वचनबाणीसरबससे॥ हितपरिणामसुनतशशिरससे॥ ता  
 तभरततमधर्मधुरीणा॥ लोकवेदविधिपरमप्रवीणा॥ दो॥  
 कर्मवचनमानसविमलतमसमानतमतात॥ गुरुसमाज  
 लघुबंधुगुणकुसमयकिमिकहिजात॥ ३०६॥ चौ॥ जानहु  
 ताततरणिऊलरीति॥ सत्यसंधपितकीरतिप्रीती॥ समयस  
 माजलाजगुरुजनकी॥ उदासीनहितअनहितमनकी॥ तम  
 हिंविदितसबहंकीकरमरमू॥ आपनमोरपरमहितधरमू॥ मोहि  
 सबभोतिभरोसतम्हारा॥ तदपिकहुअवसरअनुसारा॥ तात  
 तातविनुबातहमारी॥ केवलऊलगुरुकृपासथारी॥ नतरुप्र  
 जापुर्जनपरिवारु॥ हमहिंसहितसबहोतबुआरु॥ जोंवि  
 उअवसरअथवदिनेमू॥ जगकहंकाहेनहोइकलेशू॥ तसउत  
 पाततातविधिकीन्हा॥ मुनिमिथिलेशराखिसबलीन्हा॥ दो॥  
 राजकाजसबलाजपतिधर्मधरणिधनधाम॥ गुरुप्रभावपालिहिं



रामा.

अ.

८५

सबहिंभलहोइहिपरिणाम॥३००॥चौ॥सहितसमाजत  
म्हारहमारा॥चरवनगुरुप्रसादराववारा॥मातपितागुरुस्वा  
मिनिदेशू॥सकलधर्मधरणीथरुदेशू॥सोतमकरझकराव  
ऊमोहू॥ताततरणिऊलपालकहोहू॥साधनएकसकलसि  
धिदेनी॥कीरतिसुगतिभूतिमयवेणी॥सोविचारिसहिसक  
टभारी॥करझप्रजापरिवारसुखारी॥बोटीविपतिसबहिं  
मोहिभाई॥तमहिअवधिभरिअतिकठिनार्इ॥जानितमहिं  
मृदुकहोंकठोरा॥ऊसमयतातनअनुचितमोरा॥होंहिऊठो  
वसबंधुसहाए॥ओटियहाथअसिनकोवाए॥दो॥सेवक  
करपदनयनसेमुखसोसाहिवहोइ॥तलसीप्रीतिकिरीति  
सुनिसुकविसराहहिंसोइ॥३०१॥चौ॥सभासकलसुनिर  
बुबरवाणी॥प्रेमपयोधिअमियजनुसानी॥सिथिलसमाज  
सनेहसमाधी॥देखिदशाचुपशारदसाधी॥भरतहिंभणउप  
रमसेतोषू॥सनमुखस्वामिविमुखदुखदोषू॥मुखप्रसन्नम  
नमिटाविषादू॥भाजनुगुरुहिंगिराप्रसादू॥कीन्हसप्रेमप्रणा  
मवहोरी॥बोलेपाणिपंकहरुजोरी॥नाथभणउंखसमाथग  
एको॥लहेउंलामजगजन्मभणको॥अवकृपालजसआयस  
होई॥कौंशीसथरिसादरसोई॥सोअवलंबदेवमोहिदेई॥अ  
वधिपारपावउंजेहिंसोई॥दो॥देवदेवअभिषेकहितगुरुअ



नृणां मनपाइ ॥ आनेउं सब तीरथ सलिल तेहिं कहं काहर  
 जाइ ॥ ३०६ ॥ चौ० ॥ एक मनोरथ बउ मन मांही ॥ भएउं संको  
 च जात कहि नांही ॥ कहइ तात प्रभु आय सुपाई ॥ बोले बा  
 णि सनेह सुहाई ॥ चित्रकूट मुनि थल तीरथ बन ॥ खग मृग  
 सरिसर निर्जर गिरि गण ॥ प्रभु पद अंकित अब निविशे घी  
 आय सु होइ तो आवउं देखी ॥ अवशिष्ट त्रिआय सुशिर परह  
 तात विगत भय कानन चरह ॥ मुनि प्रसाद बन मंगल दाता  
 पावन परम सोहावन भ्राता ॥ अधिनायक जहं आय सु देखी  
 राखेइ तीरथ जल थल तेही ॥ मुनि प्रभु वचन भरत सुख पा  
 वा ॥ मुनि पद कमल सुदित सिर नावा ॥ दो० ॥ भरत राम संवा  
 द सुनि सकल सुमङ्गल मूल ॥ सरस्वारी सगहिं कुल दधि  
 तवर धहिं फूल ॥ ३१० ॥ चौ० ॥ धन्य भरत जय राम गोसांई ॥ क  
 हत देव दरशित वरिआई ॥ मुनि मिथिलेश सभा सब काह ॥ भ  
 रत वचन सुनि भएउं उक्ताह ॥ भरत राम गुण ग्राम सनेह ॥ पुल  
 कि प्रशंसत राउ विदेह ॥ सेवक स्वामि सभाव सुहावन ॥ नेम  
 प्रेम अति पावन पावन ॥ मति अनुसार सगहन लागे ॥ सचिव  
 सभा सद सब अनुरागे ॥ सुनि सुनि राम भरत संवाह ॥ दुइंस  
 माज हिय दर्प विषाह ॥ राम मात दुख सुख समजानी ॥ कहि



रामा०  
श्री०  
८५

गुणदोषप्रबोधीरानी॥ एककरहिंरघुबीरबडाई॥ एकस  
राहतभरतभलाई॥ दो॥ अत्रिकहेउतबभरतसनशैलस  
मीपसुकूप॥ राखियतीरथतोयतहंपावनअमलअनूप॥  
३॥ चौ॥ भरतअत्रिअनुशासनपाई॥ जलभाजनसबदि  
एचलाई॥ सानुजआपुअत्रिसुनिमाथू॥ सहितगएजहंकू  
पअगाभू॥ पावनपायपुणपयलराखा॥ प्रमुदितप्रेमअ  
त्रिसभाषा॥ तातअनादिसिद्धयलएहू॥ लोयेउकालवि  
दितनहिकेहू॥ तबसेवकनसरसयलदेवा॥ कीन्हसुजल  
हितकूपविशेषा॥ विधिबशभयेउविषउपकारू॥ सगमअ  
गमअतिथर्मविचारू॥ भरतकूपअबकहिहहिंलोगा॥ अति  
पावनतीरथजलयोगा॥ प्रेमसनेमनिमजतप्राणी॥ होइह  
हिंविमलकर्ममनवाणी॥ दो॥ कहतकूपमहिमासकल  
गएजहांरघुराउ॥ अत्रिसनायेउरघुवरदितीरथपुणप्रभाउ  
३॥ चौ॥ कहतथर्मइतिहाससप्रीती॥ भयेउभोरनिशिखो  
सखवीती॥ नित्यनिवाहिभरतदोउभाई॥ रामअत्रिगुरुआय  
सपाई॥ सहितसमाजसाजसबसादे॥ चलेरामवनअटनप  
सादे॥ कोसलचरणचलतविनुपनही॥ भईमृदुभूमिसंजुचि  
मनमनही॥ ऊपाकटककांकरीऊराइ॥ कटककदोरऊवस



दुगार ॥ महिमंजुमृदुमारगकीन्दे ॥ बहतसमीरत्रिविधिसु  
 खलीन्दे ॥ समनवरधिसुरवनकरिछांही ॥ विटपफुलिफ  
 लितरामृदुलाही ॥ मृगविलोकिखगबोलिसबाणी ॥ सेव  
 हिंसकलरामप्रियजानी ॥ दो० ॥ सुलभसिद्धिसवप्राकृतजंग  
 मकहतजंभुआत ॥ रामप्राणप्रियभरतकहंयहनहोशब्दि  
 वात ॥ ३३ ॥ चौ० ॥ इहिविधिभरतफिरतवनमांही ॥ नेमप्रेम  
 लखिमुनिसंजुचांही ॥ पुण्यजलाश्रयभूमिविभागा ॥ खग  
 मृगतुरुतरागिरिवनवागा ॥ चारुविचित्रपवित्रविशेषी ॥  
 ब्रूजतभरतदिव्यथलदेवी ॥ सुनिमनमुदितकहतअधिराऊ  
 हेतनामगुणापुण्यप्रभाऊ ॥ कतऊनिमजनकतऊंप्रणामा  
 कतऊंविलोकतवनअभिरामा ॥ कतऊंबैदिमुनिआयसुपा  
 ई ॥ समिरतसीयसहितद्वौभाई ॥ देविसभावासनेहससेवा ॥  
 देतअशीषमुदितवनदेवा ॥ फिरहिंगयेदिनपहरअजाई ॥  
 प्रभुपदकमलविलोकहिंआई ॥ दो० ॥ देखेथलतीरथसक  
 लभरतपांचदिनमांऊ ॥ कहतसुनतहरिहरसयशगयउदि  
 वसभइसांऊ ॥ ३४ ॥ चौ० ॥ भोरन्हाइसबजुरासमाजू ॥ भरत  
 भूमिसुरतिरऊतिराजू ॥ भलदिनआजुमानिमनमांही ॥ रा  
 मकृपालुकहतसंजुचांही ॥ गुरुनृपभरतसभाअबलोकी ॥ सं  
 ऊचिरामफिरिअबनिविलोकी ॥ शीलसरादिसभासबशोची



रामा.  
प्र.  
६६

कङ्कनरामसमस्वामिसकोची॥ भरतसुजानरामरुखदेवी  
उविसप्रेमपरिधीरविशेषी॥ करिदंडवतकहतकरजोरी॥ राखी  
नाथसकलरुचिमोरी॥ मोहिलगिसबहिंसहेउसंतापू॥ बङ्ग  
तभांतिडाखपावाआपू॥ अबगोसांमोहिदेउरजाई॥ सेबौअब  
थिअबथलगिजाई॥ दो॥ जेहिउपायपुनिपायजनदैखैदीन  
दयालू॥ सोशिखदेउयअबथिलगिकोशलपालकृपालू॥ ३  
चौ॥ पुरजनपरिजनप्रजागोसांई॥ सबअचिसरसमनेहसगा  
ई॥ राउरसङ्गभलभवडाखदाह॥ प्रभुविनुबादिपरमपदलाह  
स्वामिसुजानजानिसबहीकी॥ रुचिलालसारदनिजनजीकी  
प्रातपालपालहिंसबकाह॥ देवदुङ्गदिशिओरनिवाह॥ अ  
समोहिसबविधिभूरिभरोसो॥ कियेंविचारनशोचखरोसो॥ १  
आरतिमोरिनाथकरकोह॥ दुहंमिलिकीन्दढीठहडिमोह॥  
यहवउदोषहरिकरिसामी॥ तजिसंकोचशिखइयअनुगामी  
भरतविनयसुनिसबहिंप्रशंसी॥ तीरनीरविवरणागतिहंसी  
दोहा॥ दीनबंधुसुनिबंधुकेबचनदीनकुलहीन॥ देशकाल  
अबसरसरिसबोलेरामप्रवीण॥ २६॥ चौपाई॥ ताततम्हार  
मोरपरिजनकी॥ चिन्तागुरुहिंनृपदिवरवनकी॥ माथेपरग  
रुमुनिमिणिलेशू॥ हमहिंतमहिंसपनेङ्कनकलेशू॥ मोरत  
म्हारपरमप्रसारय॥ स्वारयसयशथरमपरमारय॥ पितआप



सुपालियदुद्धभाई ॥ लोकवेदभलभूपभलाई ॥ गुरुपित  
 मातस्वामिशिवपालै ॥ चलतसुमगुपगुपरतनखालै ॥ अ  
 सविचारिसबशोचविहाई ॥ पालइअवधअवधिभरिजाई ॥  
 देशकोषपुरजनपरिवारु ॥ गुरुपदरजहिंलागकृतभारु ॥  
 तममुनिमातसचिवशिवमानी ॥ पालइपुडमिप्रजारजया  
 नी ॥ दोहा ॥ मुखियामुखसोचाहियैखानपानकहंपक ॥ पालै  
 पोषैसकलअरुतलसीसहितविवेक ॥ ३१७ ॥ चौपाई ॥ राजधर्म  
 सरवसइतनोई ॥ जिमिमनमांहमनोरथगोई ॥ बंधुप्रबोधकी  
 न्हवहुभांती ॥ विनुअधारमनतोषनशांती ॥ भरतशीलगुरुस  
 चिवसमाज ॥ संजचसनेहविवशरचुराज ॥ प्रभुकरिकृपा  
 पांवरीदीन्ही ॥ सादरभरतशीसधरिलीन्ही ॥ चरणपीठकरु  
 णानिधानके ॥ जनुयुगजामिकप्रजाप्राणके ॥ संपुटभरतस  
 नेहरतनके ॥ आखरयुगजनुजीवयतनके ॥ ऊलकपाटकर  
 ऊशालकर्मके ॥ विमलनयनसेवासधर्मके ॥ भरतमुदितअब  
 लंबलहेते ॥ अससखजससियरामरहते ॥ दोहा ॥ मांगउविदा  
 प्रणामकरिरामलिपउरलाइ ॥ लोगउचाटेअमरपतिकुटिल  
 ऊअबसरपाइ ॥ ३१८ ॥ चौपाई ॥ सोऊचालिसबकहंभइनीकी ॥  
 अवधियाशसबजीवनजीकी ॥ नतरुलखणसियरामवियोगा  
 हरिभरतसबलोगऊरोगा ॥ रामकृपाअबरेवसुधारि ॥ विनुअ



रामा.  
प्र.  
८२

धारिभरगुणदगुहारी॥ भेंटतभूजभरिभाइभरतसो॥ रामप्रे  
मरसकदिनपरतसो॥ तनमनवचनउमगिअचुरागा॥ थीर।  
पुरन्यरधीरजत्यागा॥ वारिजलोचनमोचतवारी॥ देविदशा  
सरसभाडुखारी॥ मुनिगाणगुरुजनधीरजनकसे॥ ज्ञानअन  
लमनकसेकनकसे॥ ज्ञानअनलमनकसेकनकसे॥ जेविर  
झिनिरलेपउपाए॥ पद्यपत्रजिमिजगजलगाए॥ दोहा॥ तेउ  
विलोकिरचुवरभरतप्रीतिअनूपअपार॥ भएमगनमनतनुव  
चनसदितविचार॥ ३१५॥ चौपाई॥ जहांजनकगुरुगतिमतिभो  
री॥ प्राकृतप्रीतिकहतबडखोरी॥ वराणतरचुवरभरतवियोशू॥  
सुनिकठोरकविजानिहिलोयू॥ सोसंकोचवशअकथसबाणी॥  
समयसनेहसुमिरिसंऊचानी॥ भेटिभरतरचुवरसमुजाए॥ पु  
निरिपुटमनहर्षिहियलाए॥ सेवकसचिवभरतरुखपाई॥ निज  
निजकाजलगेसबजाई॥ सुनिदारुणाडुखराजसमाजा॥ लगेच  
लनकेसाजनसाजा॥ प्रभुपदपद्मबन्दिदौभाई॥ चलेशीसथरि  
रामराजाई॥ मुनितापसवनदेवनिहोरी॥ सबसनमानिवहोरि  
बहोरी॥ दोहा॥ लषणाहिंभेटिप्रणामकरिशिरथरिमियपदधू  
रि॥ चलेसप्रेमअशीषसुनिसकलसमझलमूरि॥ ३२०॥ चौ॥  
सानुजरामचपहिंशिरनाई॥ कीन्हिबहुतविधिविनयवडाई॥ दे  
वदयावशबडडुखपाए॥ सदितसमाजकाननहियाए॥ ३२५



गुधारियदेइअशीषा ॥ कीन्हधीरपरिगमनमहीशा ॥ मुनि  
 सहिदेवसाधुसनमाने ॥ विदाकिपरहरिसमजाने ॥ सासुस  
 मीपगएहोभाई ॥ फिरेबन्दिपदआशिषपाई ॥ कौशिकवामदे  
 वजाबाली ॥ परिजनपुरजनसचिवसचाली ॥ यथायोगक  
 रिविनयप्रणामा ॥ विदाकिएसबसानुजरामा ॥ नारिपुरुष  
 लचुमध्यबडेरे ॥ सबसनमानिकृपानिधिफेरे ॥ दोहा ॥ भरत  
 मातपदबन्दिप्रभुप्रचिसनेहमिलिभेटि ॥ विदाकीन्हसजि  
 पालकीसंऊचशोचसबमेदि ॥ ३२१ ॥ चौपाई ॥ परिजनमातपि  
 तहिंमिलिसीता ॥ फिरीप्राणप्रियप्रेमपुनीता ॥ करिप्रणा  
 मभेटीसबसासू ॥ प्रीतिकहतकविहियनहूलासू ॥ सुनिशि  
 खअभिमतआशिषपाई ॥ रहीसीयदुहुं प्रीतिसमाई ॥ रघुपति  
 पटुपालकीमंगई ॥ करिप्रबोधसबमातचछाई ॥ बारबारहि  
 लिमिलिदोभाई ॥ समसनेहजननीपहुंचाई ॥ साजिबाजिग  
 गजबाहननाना ॥ भूपभरतदलकीन्हपयाना ॥ हृदयरामसि  
 यलषणाममेता ॥ चलेजाहिंसबलोगअचेता ॥ बसहबाजि  
 गजपशुहियहारे ॥ चलेजाहिंपरवशमनमारे ॥ दोहा ॥ गुरु  
 गुरुतियपदबन्दिप्रभुसीतालषणाममेत ॥ फिरेहर्षविस्मय  
 सहितआपपणानिकेत ॥ ३२२ ॥ चौपाई ॥ विदाकीन्हसनमानि  
 निषादू ॥ चलेउहृदयवडिविरहविषाद ॥ कोलकिरातभिलवन  
 चारी ॥ फेरेफिरेजोहारिजहारी ॥ प्रभुमियलषणावेरिवटकाही



रामा०

प्र०

८८

४४

प्रियपरिजनवियोगविलाही ॥ भरतसनेहसभावसुवाणी  
प्रियाअनुजसनकहतवखानी ॥ प्रीतिप्रतीतिवचनमनकरणी  
श्रीसुखरामप्रेमवशावरणी ॥ तेहिंअवसरखगमृगजनमीना  
चित्रकूटचरअचरमलीना ॥ विबुधविलोकिदशारचुवरकी ॥  
वरषिसुमनकहिगतिचरवरकी ॥ प्रभुप्रणामकरिदीन्हभरो  
सो ॥ चलेमुदितमनउरनखरोसो ॥ दोहा ॥ साजुजसीयसमेत  
प्रभुराजतपार्णकुटीर ॥ भक्तिज्ञानवैराग्यजनुसोहतथरेश  
रीर ॥ ३२३ ॥ चौपाई ॥ सुनिमहिसुरगुरुभरतभुआलू ॥ रामवि  
रहसबसाजवेहालू ॥ प्रभुगुणग्रामगुणतमनमाही ॥ सब  
उपपापचलेमगुजाही ॥ यमुनाउत्तरिपारसबभण्ड ॥ सोवा  
सरबिनुभोजनगण्ड ॥ उत्तरिदेवसरिहसरिवास्तू ॥ रामसखा  
सबकीन्हसुपास्तू ॥ सरुउत्तरिगोमतीनहाण ॥ चौथेदिवसअ  
वधपुरग्राण ॥ जनकरहेपुरवासरचारी ॥ राजकाजसबसाज  
सम्भारी ॥ सौंघिसचिवगुरुभरतहिंराज ॥ तिरहुतिचलेसाजि  
सबसाज ॥ नगरनारिनरगुरुशिखमानी ॥ वसैसुखेनराम  
रजधानी ॥ दोहा ॥ रामदरशालगिलोगसबकरतनेमउपवास  
तजितजिभूषणभोगसखजिअतअवधिकीआश ॥ ३२४ ॥  
चौपाई ॥ सचिवससेवकभरतप्रबोधे ॥ निजनिजकाजपाइ  
शिषशोधे ॥ पुनिशिषदीन्हवोलिलबुभाई ॥ सौपीसकलमा  
तमेवकाई ॥ भूसरबोलिभरतकरजोरे ॥ करिप्रणामवरविनय



निहोरे ॥ ऊंचनीचकारजभलपोह ॥ आयसुदेवनकरवसेंको  
 च ॥ परिजनपुरजनप्रजाबुलाए ॥ समाधानकरिसुखसबसा  
 प ॥ सानुजगेगुरुगोहबहोरी ॥ करिदाउवतकहतकरजोरी ॥  
 आयसुहोइतोरहेउसनेमा ॥ बोलेमुनिमुनिमुलकिसप्रेमा ॥  
 समुजवकहवकरवतमसोई ॥ धर्मसारजगहोइहिंजोई ॥ दो॥  
 मुनिशिषपाइअशीषवडिगाणकबोलिदिनसाथि ॥ सिंहासन  
 प्रभुपादुकावैठारीनिरुपाथि ॥ ३२५ ॥ चौपाई ॥ राममातगुरुपद  
 सिरनाई ॥ प्रभुपदपीठरजायसुपाई ॥ नन्दिशामकरिपर्णऊटी  
 रा ॥ कीन्हनिवासधर्मधुरधीरा ॥ जटाजूटशिरमुनिपटथारी  
 महिखनिऊषासाथरीसंबारी ॥ अशनवसनआसनव्रतनेमा  
 करतकठिनव्रतधर्मसप्रेमा ॥ भूषणवसनभोगसुखभूरी ॥ म  
 नतनुवचनतजेतुणातोरी ॥ अबधराजसुरराजसिंहाही ॥ दश  
 रथथनलखिथनदलजाही ॥ तेहिंपुरवसबभरतविजुरागा  
 चञ्चरीकजिमिचंपकबागा ॥ रमाविलासरामअनुरागी ॥ त  
 जतबमनइवजनबउभागी ॥ दोहा ॥ रामप्रेमभाजनभरतबडेन  
 इहिकरतुति ॥ चातकहंससराहिअतटेकविवेकविभूति ॥ ३२६  
 चौपाई ॥ देहदिनहिंदिनदुवरिहोई ॥ बढततेजबलमुखविमो  
 ई ॥ नितनवरामप्रेमपापीना ॥ बढतधर्मबलमननमलीना ॥  
 जिमिजलनिघटतशरदप्रकाशे ॥ बिलसतवेतसुवनजविकासे



रामा.

प्र.

८५

४५

शमदमसंयमनेमउपासा ॥ नावतभरतदियविमलअकाशा  
भवविश्वासअविधिराकासी ॥ स्वामीसुरतिसुरवीथिविकाशी ॥  
रामप्रेमविभुअचलअदोषा ॥ सहितसमाजसोहनितचोषा ॥  
भरतरहनिममुज्जुनिकरतूती ॥ भक्तिविरतिगुणावमलविभूती  
वराणातसकलसुकविसंजुचाही ॥ शेषगणेशगिरागमनाही  
दोहा ॥ नितपूजतप्रभुपांवरीप्रीतिनहृदयसमाति ॥ मांगिमां  
गिआयसकरतराजकाजबद्धभांति ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ पुलका  
गातदियसियरसुवीरा ॥ जीहनामजपुलोचननीरा ॥ लषणा  
रामसियकावनवसही ॥ भरतभवनवसितपतनुकसही ॥ दु  
इंदिशिममुज्जिकहतसबलोरा ॥ सबविधिभरतसराहनयोरा  
सुनिव्रतनेमसाथसंजुचाही ॥ देखिदशा मुनिराजलजाही ॥  
परमपुनीतभरतआचराए ॥ मथुरमज्जुमुदमकुलकराए ॥  
हरणाकठिनकलिकलूषकलेष्ट ॥ महामोहनशिदलन  
दिनेष्ट ॥ पापपुञ्जकुञ्जरमृगराज ॥ शमनसकलसन्तापसमा  
ज ॥ जनरञ्जनभञ्जनभवभारू ॥ रामसनेहसुधाशशिसारू ॥  
कन्द ॥ सियरामप्रेमपिष्टपशराहोतजन्मनभरतको ॥ मुनि  
मनअरामयमनियमशमदमविषमव्रतआचरतको ॥ २५ ॥  
डाखदाददरिदमदूषणासुयशमिसुअपहरतको ॥ कलि  
कालतलसीमेशावहिंदिरामसनमुखकरतको ॥ २६ ॥ सो



रथा॥ भरतचरितकरिनेमतलसीजेसादरसुनहिं॥ सीयराम  
 पदप्रेमप्रवशिहो३भवरसविरति॥ ३२२॥ इति श्रीरामचरितमा  
 नसेसकलकलिकलूषविध्वंसनेविमलविज्ञानवैराग्यसंपादनो  
 नामतलसीकृतायोध्याकाण्डद्वितीयः सोपानः समाप्तः शुभमस्तु  
 सिद्धिरस्तु॥॥

रामा.  
 प्र.  
 २०



१०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥



ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ आरण्यका एड लिख्यते ॥ श्लोक ॥ मू  
 लं धर्मतरो विवेकजलधौ पूर्णेन्दुमानन्ददम् ॥ वैराग्यमुज  
 भास्करं अचहरं ध्वान्तापहंतापहम् ॥ मोहामोथरपुञ्जपाठन  
 विधौ स्वशाम्भवं शङ्करम् ॥ वन्दे ब्रह्मजलं कलङ्कशमनं श्रीरा  
 मभूषप्रियम् ॥ १ ॥ साद्रानन्दपयोदसौ भगतनुं पीताम्बरं सुन्द  
 रं ॥ पाणौ वाराणशसुनं कटिलसत्तूणीरभारम्बरं ॥ राजीवाय  
 तलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं ॥ सीतालक्ष्मणसंयुतं पथि  
 गतं रामाभिरामम्भजे ॥ २ ॥ सौरवा ॥ ३ ॥ मारामगुणगूढपण्डि  
 तमुनिपावहिं विरति ॥ पावहिं मोहविमूढजे हरि विमुखनभ  
 मं रत ॥ १ ॥ चौपाई ॥ पूरणभरतप्रीतिमैगाई ॥ मतिशत्रुरूपअ  
 नूपसहाई ॥ अबप्रभुचरितसुनइअतिपावन ॥ करतजुवन  
 सरनरमुनिभावन ॥ एकवारचुनिऊसुमसहाए ॥ निजकर  
 भूषणरामबनाए ॥ सीतहिं पदिसाए प्रभुसादर ॥ वैढेसफटि  
 कशिलापरभाथर ॥ सरपतिसुतधरिवायसवेषा ॥ शठचा  
 हतरचुपतिबलदेखा ॥ जिमिपिपीलिकासागरथाहा ॥ महा  
 मन्दमतिपावनचाहा ॥ सीताचरणचुंचहतिभागा ॥ मूढम  
 न्दमतिकारणकागा ॥ चलारुधिररवुनायकजाना ॥ सीकथ  
 नुषणायकसंभाना ॥ दोहा ॥ अतिकृपालुरवुनायकहिंसदादी



रामा०

श्री०

नपरनेह॥तासनआइसुकीन्हकुलमूरखअबगुणगोह॥२॥  
**चौपाई॥** विनापराधप्रभुहतेनकाह॥अबसरपरैयसैशशिरा  
ह॥जबप्रभुलीन्हसीकथनुवाणा॥क्रोधजानिभाअनलसमा  
ना॥प्रेरितमंत्रब्रह्मसरथावा॥चलाभाजिवायसभयपावा॥  
धरिनिजरूपगयेउपितपाही॥रामविमुखराखातिन्हनाही  
भारिराशउपजीउरत्रासा॥यथाचक्रभयअधिदुर्वासा॥ब्रह्म  
धामशिवपुरसबलोका॥फिराअमितव्याकुलभयशोका॥  
काइबैठनकहानओही॥रखिकोशकैरामकरदोही॥मातृ  
मृत्युपितृशमनसमाना॥सुधाहोइविषसुनुहरिजाना॥मि  
त्रकरैशतरिपुकीकरणी॥ताकहंविबुधनदीबैतरणी॥स  
बजगतादिअनलतैंताता॥जोरबुवीरविमुखसुनुभाता॥  
**दोहा॥** जिमिजिमिभाजतशक्रसतव्याकुलअतिदुखदीन॥  
तिमितिमिभावतरामशरपाकेंपरमप्रवीण॥३॥**चौपाई॥** व  
चदिउरगावरुग्रसैखगेशा॥रघुपतिशरकुटिवचवअदेशा॥  
नारददेखाविकलजयंता॥लागिदयाकोमलचितसंता॥ह  
रदितैंकहिप्रभुप्रभुताई॥भजेजातबहुविधिसमुजाई॥पट  
वातरतगमपहंताही॥कहसिपुकारिप्रणतदितपाही॥आ  
तरसभयगरुसिपदजाई॥त्रादित्रादिदयालुरघुगई॥अतलि



तबल अतलित प्रभुतार्इ ॥ मैमति मन्दजानि नहि पार्इ ॥ नि  
जकृत कर्म जनित भय पायेउं ॥ अब प्रभु पादि शरण तकि आ  
येउं ॥ सुनि कृपालु अति आरत बाणी ॥ एक नयन करित जा भ  
वानी ॥ सोरवा ॥ कीन्द मोह बषाद्रोह यय पिते हि कर बथउ चित  
प्रभु छाडेउ करि छोड़ को कृपालु रघु वीर सम ॥ ४ ॥ चोपाई ॥ रघु  
पति चित्रकूट वसिना ॥ चरित करत श्रुति सुधा समाना ॥  
वज्र रिगम अ समन अनुमाना ॥ होइ हि भीर सब हि मोहि जा  
ना ॥ सकल मुनि नन्द सन विदा कराई ॥ सीता सहित चले दोउ  
भाई ॥ अत्रिके आश्रम प्रभु चलि गयेउ ॥ सनत महा मुनि हर्षि  
त भयेऊ ॥ पुलकित गत अत्रि उठि थाए ॥ देखि राम आत रच  
लि थाए ॥ करत दाण्ड वत मुनि उर लाए ॥ प्रेम वारि द्वौ जन अ  
न्दाए ॥ देखि राम छवि नयन जुगाने ॥ सादर निज आश्रम त  
ब आने ॥ करि पूजा कहि बचन सुहाए ॥ दिष्ट मूल फल प्रभु म  
न भाए ॥ सोरवा ॥ प्रभु आसन आसीन भरिलोचन शोभा निरवि  
मुनि वर परम प्रबीण जो रिपाणि अस्तुति करत ॥ ५ ॥ छन्दः ॥  
नमामि भक्तवत्सलं ॥ कृपालु शील कोमलं ॥ भजामि ते पदाम्बु  
जं ॥ अकामिनां स्वधामदं ॥ १ ॥ निकाम प्रणाम सुन्दरं ॥ भवाम्बुना  
पमन्दरं ॥ प्रफुलकं अलोचनं ॥ मदादि दोष मोचनं ॥ २ ॥ प्रलंब  
वाङ्मयिक्रमं ॥ प्रभोः प्रमेवैय भवं ॥ निषंग चापसायकं ॥ ४ ॥ त्रिलो



रामा.  
प्रा.  
२

कनायकं ॥३॥ दिनेशवंशमेउने ॥ महेशचापखंडने ॥ मुनी  
न्दसन्नरंजने ॥ सरारिवृन्दभंजने ॥४॥ मनोजवैरिवन्दिते ॥ अ  
जादिदेवसेविते ॥ विशुद्धबोधविग्रहे ॥ समस्तदूषणापहं ॥५॥  
नमामिन्द्रिरापतिं ॥ स्वाकारं सतांगतिं ॥ भजे सशक्तिसा  
जं ॥ शचीपतिप्रियानुजं ॥६॥ तदंघ्रिमूलयेनरा ॥ भजनिहीन  
मतमरा ॥ पतन्ति नो भवार्णवे ॥ वितर्कबीचिसंकुलं ॥७॥ वि  
विक्रवासनासदा ॥ भजनिमुक्तिदं मुदा ॥ निरस्य इन्द्रियादि  
कं ॥ प्रयान्ति ते गतिं स्वकं ॥८॥ त्वमेकमद्भुतं प्रभुं ॥ निरीहमी  
श्वरं विभुं ॥ जगद्गुरुं च शाश्वतं ॥ त्वरीयमेव केवलं ॥९॥ भजा  
मिभावबलभं ॥ ऊयोगिनां सुदुर्लभं ॥ स्वभक्तकल्याणदपं ॥ स  
मस्तसेव्यमन्त्रहं ॥१०॥ अनूपरूपभूयति ॥ न तोह मुर्वीजाप  
तिं ॥ प्रसीद मे नमामिते ॥ यदाज्ञ भक्तिदेहि मे ॥११॥ पठन्ति ये  
स्त्वं उदं ॥ नरादरेणाते पदं ॥ ब्रजतिनात्र संशयं ॥ त्वदीयभाव  
संयुतं ॥१२॥ दोहा ॥ विनती करि मुनिना ॥ सिरकह कर जोरि ब  
होरि ॥ चरण सरोरुदनाथ जनिक बहंत जै मति मोरि ॥६॥ चौ  
पाई ॥ अनुसूया के पद गहि सीता ॥ विलीब होरि सुशील विनी  
ता ॥ अषिपत्नी मन सुख अधिकाई ॥ आशिष देरि निकट बैठा  
ई ॥ दिव्य वसन भूषण पहिराए ॥ जे नित नूतन अमल सहाय ॥  
अरु कीचो पाई मो ॥॥ जन्म जन्म तव पद सुख कन्दा ॥ बछो



प्रेमचकोरजिमिचन्दा ॥ देखिराममुनिविनयप्रणामा  
 विविधभांतिपापउविश्रामा ॥ जेसियसकललोकसखदा  
 ता ॥ अखिलकोटिब्रह्माण्डकीमाता ॥ तेउपाइमुनिबरबर  
 भामिनि ॥ सुखीभईकुमुदिनिजिमियामिनि ॥ जाहिनिर  
 खिडखहरिपराही ॥ गरुडजानिजिमियन्नगजाही ॥ दोहा  
 एसेवसनविचित्रसृष्टिदिएसीयकरंआनि ॥ सनमानीप्रि  
 यवचनकहिप्रीतिनजाइवावनि ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ कहअधि  
 बधूसरलमृदुवाणी ॥ नारीधर्मककुब्जाजवावानी ॥ मा  
 तृपिताभ्राताहितकारी ॥ मितसखप्रदसुत्रराजकुमारी  
 अमितदानिभर्ताबैदेही ॥ अथमसोनारिजोसेवनतेही ॥  
 धीरजधर्ममित्रअरुनारी ॥ आपदकालपरिखिपहिचारी  
 बृद्धरोगवशजउधनहीना ॥ अन्यबधिरकोपीअतिदी ॥ ८ ॥  
 सेइपतिकरकियअपमाना ॥ नारिपावयमपरडखनाना  
 एकैधर्मएकव्रतनेमा ॥ कायवचनमनपतिपदप्रेमा ॥ जग  
 पतिव्रताचारिविधिअहंही ॥ वेदपुराणसन्तअसकरहंही ॥  
 दोहा ॥ उत्तममध्यमनीचलसुसकलकरहउंसमुजाइ ॥ आगे  
 सनहिंतेभवतरहिंसुनइसीयचितलाइ ॥ ९ ॥ इहदोहादेपक  
 है ॥ चौपाई ॥ उत्तमकेअसबसमनमाही ॥ सपनेइंआनपुरु  
 षजगनाही ॥ मध्यमपरपतिदेखहिंकैसे ॥ भ्रातापितापुत्रनि



जजै से ॥ धर्म विचारि समुजिजल रहंही ॥ सो निरुष्ट त्रिय  
 प्रतिप्रसक रहंही ॥ विनु अवसर भयतें रह जोई ॥ जाने ऊअथ  
 मनारि जग सोई ॥ पतिवच्च कपर पतिरति करई ॥ रौरवनर  
 ककल्य शत परई ॥ किनु सखला गि जन्म सत कोटी ॥ दुख  
 न समुजै ते सम कै सोटी ॥ विनु प्रमारि प्रेम गति लहई ॥ प  
 तिब्रत धर्म छाडि कल गहई ॥ पतिप्रतिकूल जनमि जहं जा  
 ई ॥ विथवा होय पाइ तरुणाई ॥ सोरवा ॥ सहज प्रपाव निनारि  
 पति सेवत प्रभ गति लहहिं ॥ यश गावत प्रतिचारि अजडं  
 तलसिका हरिः प्रिया ॥ ५ ॥ सुनु सीता तब नाम सुमिरि नारि  
 पतिव्रत करहिं ॥ तमहिं प्राण प्रिय राम कहें कथा संसार हि  
 त ॥ १० ॥ चौपाई ॥ सुनि जान की परम सख पावा ॥ सादरता सु  
 चरण सिर नावा ॥ तब मुनि सन कह कृपानिधाना ॥ आयस  
 होइ जाउं बन आना ॥ सन्तत मो पर कृपा करेह ॥ सेवक जानि  
 तजइ जनि नेह ॥ धर्म पुरन्यर प्रभु कै बाणी ॥ सुनि सप्रेम बो  
 ले सुनि जानि ॥ जा सकृप अज शिव सन कादी ॥ चहत सक  
 ल परमार पवादी ॥ ३६ सो ॥ ते तम राम अकाम पिआरे ॥ दी  
 न दी वन्यु मृदु वचन उचारे ॥ अब जानि मै श्री चतुराई ॥ भजइ  
 तमहिं सब देव विहाई ॥ जेहिं समान अति शायन दि कोई ॥ ता  
 कर शील कसन अस होई ॥ केहि विधिक हों जाइ अब स्वामी ॥



कहइ नाथ तम अन्तरजामी ॥ अस कहि प्रभु विलोकि मुनि  
 धीरा ॥ लोचन जल वह पुलक शरीरा ॥ **छन्द** ॥ तनु पुलकनिर्भ  
 र प्रेम सूरान नयन मुख पंकज दिप ॥ मन ज्ञान गुण गोती त  
 प्रभु मै दीख जय तय काकि ॥ **१३** ॥ जय योग धर्म समूह तेन  
 र भक्ति अनुपम पावई ॥ रघु वीर चरित पुनीत निशि दिन दास  
 तल सी गावई ॥ **१४** ॥ **दोहा** ॥ कलि मल शमन दमन भव राम  
 सुशय सुख मूल ॥ सादर सुनहिं जे ताहि पर राम रहहिं अनु  
 कूल ॥ **१५** ॥ **सोरठा** ॥ कटिन सुकलि मल कोष धर्म न ज्ञान न  
 योग तप ॥ परिहरि सकल भरो सराम भजहिं ते चतुर नर ॥ **१६**  
**दोहा** ॥ मुनि कुंकि अस्तुति कीन्ह प्रभु दीन्ह सुभग वरदान ॥  
 समन वृष्टि न भसं कुल जय जय कृपानिधान ॥ **१७** ॥ **ईहा तोई**  
**दोष कहै ॥ चौपाई** ॥ मुनि पद कमल नाई करिणी सा ॥ चले  
 वनहिं सरनर मुनि ईशा ॥ आगे राम अनुज पुनि पाछे ॥  
 मुनि वर वेष वने अतिकाछे ॥ उभय वीच सिय सो दतिकें सी  
 ब्रह्म जीव विच माया जैसी ॥ उपमा बड रिहों जिय जोही  
 विधु बुध मध्य रोहिणी सोही ॥ सरिता वन गिरि अब घट वा  
 टा ॥ पति पहि चानि देहिं वर वाटा ॥ जहं जहं जाहिं देवर चु  
 राया ॥ करहिं मेघ न भत हंत हं काया ॥ **दोहा** ॥ **दोहा** ॥ ते दोष कहै ॥ आ  
 अम विपुल दीघ वन मांही ॥ देव सदन तेहि पट तरनाही ॥



रामा.  
आ.  
४

बहुतवागसुन्दरअमराई॥ भौंतिभौंति सबमुनिहलगाई॥  
दिव्यविटपफलचंद्रदिशसोहैं॥ देखतसुनतसकलमनमो  
हैं॥ पतिअनेकओरबहुकरू॥ कूजहिंकलरबकरहिविह  
रू॥ दोहा॥ निजनिजआअमवेदिकातेहिपरतसिविराज  
अनुजजानकीसहिततहाराजतभपरचुराज॥ १४॥ आनि  
सआसनमुदितमनपूजिपडनईकीन्ह॥ कन्दमूलफल  
अमीयसमआनिरामकहेदीन्ह॥ १५॥ चौपाई॥ अनुजसी  
यसहभोजनकीन्हा॥ जोजेहिभावसुभगवरदीन्हा॥ तेहि  
दिनतहंप्रभुकीन्हनिवासा॥ सकलमुनिहमिलिकीन्हसु  
पासा॥ आतःकालउठिरचुऊलदेवा॥ मजनकीन्हकरिपा  
पिंवसेवा॥ तवरचुवीरमुनिहसिरनावा॥ आशीर्वादसब  
हिसनपावा॥ समिरिउमापतिसिद्धगणेशा॥ पुनिप्रभुच  
लेसनइंखगाईशा॥ वनअनेकसुन्दरगिरिनाना॥ लांचत  
चलेजाहिंभगवाना॥ मिलाअसुरविराधमगुजाता॥ गरज  
तवोरकदोररिसाता॥ रूपभयंकरमानइकाला॥ वेगवन्त  
थापउजिमिव्याला॥ गगनदेवगणमुनिवरनाना॥ तेहि  
दाणहृदयहारिभयमाना॥ गहेपाणित्रिशूलअतिघोरा  
केहरिमारिबांधिचंद्रओरा॥ तरतहिंसोसीतहिलैगयेऊ  
रामहृदयककुविस्मयभयेऊ॥ समुजिहृदयकैकेयिकरकर



णी॥ कही अनुजसन बद्धविधि वरणी॥ बद्धरिलषणरचु  
वरहिं प्रबोधा॥ पांचबाणकांडाकरिकोथा॥ **छन्द॥** भयेको  
थलषणसंधानियनुशरमारिते दिव्याकुलकियो॥ पुनिउ  
ठिनिशाचरराखिसीतहिं मूललै छाउतभयो॥ १५॥ जनुका  
लदाउकरालपावतविकलसबखगमृगयये॥ धनुतानि  
श्रीरचुवंशमणिपुनिकाटिते दिरजसमकिये॥ १६॥ **चौपाई**  
येसे कहत निशाचरथावा॥ अवनदिवचद्धतमहिमैखावा  
आवप्रवलजेहिं विधिजनुभूथर॥ होइदिकहाकहहिं व्या  
कुलसुर॥ तासतेजशतमरुतसमाना॥ दूटहिं तरुबद्धउउ  
हिं पषाना॥ जीवजंतुजहंलगिरहेजेते॥ व्याकुलभागिच  
लेसबतेते॥ उरगसमानजोरिशरणाता॥ आवतहीरचुना  
पनिपाता॥ तरतहिं रुचिररूपतेहिपावा॥ देखिदुखीनि  
जधामपठावा॥ तासुअस्थिगाउउप्रभुथरणी॥ देवमुदितल  
धिप्रभुकीकरणी॥ सीताआइचरणालपटानी॥ अनुजसहि  
ततवचलेभवानी॥ पुनिआएजहंमुनिशरभरु॥ सुन्दरअ  
नुजजानकीसक्रा॥ गएकहनप्रभुदेनशिषावणा॥ दिशिव  
लभेदवसतजहरावणा॥ **दोहा॥** सरपतिसंशयतमसमरा  
रचुपतितेजदिनेश॥ रावणाजीवननिशासमवीतेकुटहिंक  
लेश॥ १७॥ **चौपाई॥** सुनासीरप्रभुतेहिंदणदेषा॥ तेजनिधान



रामा.  
प्रा.  
५

शुभप्रतिवेष्टा ॥ तरंगचारिबलमरुतसमाना ॥ रथविम  
मयनहीजारबधाना ॥ क्षितिनपरशरुअनरहितरहई ॥  
श्वेतकुत्रचामरसिरछर ॥ इहिविथप्रभुसुरेशकहदेवा  
भयेमगनसखपायविशेषा ॥ अनुजहिप्रियहिकहीसमु  
जाई ॥ सुरपतिमहिमागुणाप्रभुताई ॥ जेहिकारणाबामवत  
हआए ॥ सोककुवचनकहेनहीपाए ॥ वीचहिसुनिआग  
मनप्रभुकेरा ॥ कहिसारथिहिंतरतरथफेरा ॥ हरिहिते  
करिप्रभुहिप्रणामा ॥ हरषसुरेशागयेउनिजधामा ॥ ३  
होताईदोषकहै ॥ मिलाअसुरविशयमगजाता ॥ आवत  
हीरचुवीरनिपाता ॥ तरतहिंरुचिररूपतिहिंपावा ॥ देखि  
डुखीनिजधामपढावा ॥ पुनिआएजहमुनिसरभंगा ॥ सु  
न्दरअनुजजानकीसंगा ॥ दोहा ॥ देखिराममुखपंकजहि  
मुनिवरलोचनभृङ्ग ॥ सादरणनकरतअतिथन्यजन्मशरभ  
ङ्ग ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ कहमुनिसुनरचुवीरकृपाला ॥ शङ्करमा  
नसराजमराला ॥ जातरहेउविरंचिकेधामा ॥ सुनेउंअवण  
वनआवतरामा ॥ चितवतपस्यरहेउदिनराती ॥ अवप्रभुदे  
खिजुडानीकृती ॥ नाथसकलसाधनमैहीना ॥ कीन्दीकृ  
पाजानिजनदीना ॥ सोककुदेवनमोरनिहोरा ॥ निजपण  
राखेउजनमनचोरा ॥ तबलगिरहइदीनहितलागी ॥ जब



लगित नै मिलौ तनु त्यागी ॥ योग यज्ञ जयत पद्म तकीन्दा ॥  
 प्रभुक हं देइ भक्ति वर लीन्दा ॥ इहि विधि शर विमुनि शर भंगा  
 बैठे हृदय छाडि सब संग ॥ दोहा ॥ सीता अजसमेत प्रभु नील  
 जल दतनु श्याम ॥ मम हिय वसइ निरन्तर हिंस गुण रूप श्री रा  
 म ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ अस क हियोग अशितनु जारा ॥ राम कृपा वै  
 ऊण सिधारा ॥ तातैं मुनि हरि लीन न भयेऊ ॥ प्रथम हिं भेद भ  
 क्ति वर लेऊ ॥ अविनिकाय मुनि वर गति देषी ॥ सुखी भए निज  
 हृदय विशेषी ॥ अस्तुति कर हिंसकल मुनि वृन्दा ॥ जयति प्रा  
 णात हित करुणा कन्दा ॥ पुनिर चुनाय चलेवन आगे ॥ मुनि  
 वर वृन्द चले संग लागे ॥ अस्थि समूह दे विरचुराया ॥ पूछा मु  
 निन्द लागि अति दया ॥ जानत इंका पूछइ स्वामी ॥ सम दर  
 शीत म अन्तर जामी ॥ निशिचर निकर सकल मुनि लाय ॥ सु  
 निरचुनाय नयन जल छाए ॥ दोहा ॥ निशिचर हीन करौ मही  
 भुज उठाउ पाणी कीन्दा ॥ सकल मुनिन्द के आश्रम न्द जाउ जाइ  
 सुख दीन्दा ॥ २० ॥ चौपाई ॥ मुनि अगमत्य कर शिष्य सुजाना ॥  
 नाम सुती दाण रत भगवाना ॥ मन क्रम वचन राम पद सेवक ॥  
 सपनेइ आन भरो मन देवक ॥ प्रभु आगमन अवण सुनि पावा  
 करत मनोरथ आनर पावा ॥ हे विधि दीन बन्धु रचुराया ॥ मोसे  
 पाठ पर करि हिंदाया ॥ सहित अज मोहि राम गोमोई ॥ मिलि



रामा.  
आ.  
६

हहिनिजसेवककीनाई॥ मोरेदृढभरोसजीयनाही॥ भक्ति  
नविरतिज्ञानमनमाही॥ नहिसतसंगयोगजपयागा॥ न  
हिदृढचरणकमलअनुगगा॥ एकवाणिकरुणानिधानकी  
सोप्रियजाकेगतिनश्रानकी॥ **कृन्**॥ सोपरमप्रियश्रुतिपा  
तकीजिन्हकवडप्रभुसुमिराकस्यो॥ तेआजुमैनिजनय  
नदेखोंपूरिपूलकितहियभस्यो॥ १७॥ जेपदसरोजअनेका  
मुनिकरिध्यानकवडनपावही॥ तेरामश्रीरघुवंशमणिप्र  
भुप्रेमतेसखपावही॥ १८॥ **दोहा**॥ पन्नगारिसनुप्रेमसमभ  
जननहसरआन॥ इहविचारिमुनिपुनिपुनिकरतरामगुण  
गान॥ १९॥ **चौपाई**॥ दोइहहिंसफलआजुममलोचन॥ देवि  
वदनपंकजभवमोचन॥ निर्भरप्रेममगनमुनिज्ञानी॥ कदि  
नजाईसोइदशाभवानी॥ दिशिअरुविदिशिपत्पनहिसूजा  
कोमैचलेउंकहानहिबूजा॥ कवडंकनृत्यकरैगुणागाई॥  
अविरलप्रेमभक्तिमुनिपाई॥ कवडंकफिरिपाछेंहटिजाई॥  
प्रभुदेखहिंतरुओटलुकाई॥ अतिशयप्रीतिदेखिरघुवीरा॥  
प्रगटेहृदयहरणभवभीरा॥ मुनिमगुमांजअचलहोइवैशा  
पुलकशरीरपनसफलजैसा॥ तवरघुनाथनिकटचलिआप  
देखिरणनिजजनमनभाप॥ **सोरठा**॥ रामसुसादिवसंतप्रि  
यसेवकडखदारिदमन॥ मुनिसनप्रभुकदिआयउठउठवि



जममप्राणसम ॥२२॥ **चौपाई** ॥ मुनिहिंरामवद्वभांतिजगावा  
जागनध्यानजनितसुखपावा ॥ भूपरूपतवगमदुरावा ॥ हृद  
यचतुर्भुजरूपदिखावा ॥ मुनिअऊलाउठातवकैसे ॥ विकल  
हीनमणिविनुफणिजैसे ॥ आगेदेखिरामतनुश्यामा ॥ सीता  
अनुजसहितसुखधामा ॥ परेउलऊटवचरणान्हलागी ॥ प्रेम  
मगनमुनिबनवउभागी ॥ भुजविशालगहिलियउठाई ॥ पर  
मप्रीतिराखेउरलाई ॥ मुनिहिंमिलतअससोहकृपाला ॥ कन  
कतरुहिजनुभेंटतमाला ॥ रामवदनविलोकिमुनिठाजा ॥ मा  
नउंचित्रमांजलिविकाजा ॥ **दोहा** ॥ तवमुनिहृदयेधीरथरिग  
हिपदवारहिंवार ॥ निजआश्रमप्रभआनिकरिभूजाविविधप्रका  
र ॥ **२३** ॥ **चौपाई** ॥ कहमुनिप्रभुसुनुविनतीमोरी ॥ अस्ततिकरौं  
कवनविथतोरी ॥ महिमाअमितमोरमतिथोरी ॥ रविसन्मुख  
खयोतअंजोरी ॥ श्यामतामरसदामशरीरं ॥ जटामुऊटपरिध  
नमुनिचीरं ॥ पाणिचापशरकटितूणीरं ॥ नौमिनिरन्तरश्रीरचु  
वीरं ॥ मोहविपिनवनदहनकृषानुं ॥ सत्तसरोरुहकाननभानुं  
निशिचरकरिवरूपमृगराजं ॥ शत्रुसदानोभवखगवाजं ॥ अरु  
णनयनराजीवसुवेधं ॥ सीतानयनचकोरनिषेधं ॥ हरहृदेमा  
नसबालमरालं ॥ नौमिरामउरवाङ्गविशालं ॥ संशयसर्पग्रसन  
उरगादं ॥ शमनसकलसन्तापविषादं ॥ भयभङ्गनरञ्जनसरस्यं  
ज्ञानसदानोकृपावरूपं ॥ निर्गुणसगुणविषमसमरूपं ॥ ज्ञानमि



रामा.  
श्री.  
५

रामोतीतयनूपं॥ अमलमखिलमनवद्यमपारे॥ नौमिरा  
रामभञ्जनमहिभारं॥ भक्तकल्याणदयप्रारामं॥ तर्जनक्रोधलो  
भमदकामं॥ अतिनागरभवसागरसेतं॥ शतसदादिनकरऊ  
लकेतं॥ अतलितभुजप्रतापबलधामं॥ कलिमलविपुल  
विभञ्जननामं॥ धर्मवर्मशर्मदगुणग्रामं॥ सन्ततशान्तनेत्र  
भिरामं॥ यद्यपिविरजव्यापकअविनाशी॥ सबकेहृदयनि  
रन्तरवासी॥ तदपिअनुजसियसहितखरारी॥ वसइमानस  
ममकाननचारी॥ जेजानहितेजानइस्वामी॥ सगुणअगुण  
उरअन्तरजामी॥ जोकोशलपतिराजीवनयना॥ करौसोराम  
हृदयममअयना॥ सोरठा॥ मायावशजगजीवरहहिंसदासन्त  
तमगन॥ तिमिलागइमोहिपीवकरुणाकरसुन्दरसखद॥ २  
चौपाई॥ असअभिमानजाइनहिभोरे॥ मैसेवकरचुपतिपतिमो  
रे॥ रामभक्तिजिचहकल्याण॥ सोनरअथमपृणालसमा  
ना॥ परमप्रसन्नजानिमुनिमोही॥ जोबरमोगुदेउंमैतोही॥ सु  
निमुनिबचनराममनभाए॥ बइरिहर्षिमुनिवरउरलाए॥ मु  
निकहमैबरकबडंनयांचा॥ समुजिनपरैकूठकासांचा॥ तम  
हिंनीकलागौरचुराई॥ सोमोहिदेइदाससखदाई॥ अविरल  
भक्तिविरतिविज्ञाना॥ होइसकलगुणज्ञाननिधाना॥ प्रभुजो  
दीन्हसोबरमैपावा॥ अबसोदेइमोमाहिजोभावा॥ दोहा॥ अनु  
जज्ञानकीसहितप्रभुचापवाणथरराम॥ ममदियगगनउंडुइ



ववसङ्गसदायहकाम॥२५॥**चौपाई॥** एवमस्तकहिरमानिवा  
 सा॥ हर्षिचलेऊम्भजऋषिपाशा॥ पुनिप्रणाकरिकहकरजोरी  
 सनऊनाथककुविनतीमोरी॥ बडतदिवसगुरुदरशनपाये॥  
 भएमोहिपरिआप्रमआये॥ अवप्रभुसङ्गजाउंगुरुपाही॥ तम  
 कहंनानिहोरानाही॥ चलेजातमगतवपदकंजा॥ देखिहों  
 सौंविशयमदमंजा॥ देखिकृपानिधिमुनिचतराई॥ लिपसङ्ग  
 विहंसेहोभाई॥ पस्यकहतनिजभक्तिअनूपा॥ मुनिआप्रमप  
 ऊंचेसरभूपा॥ आप्रमदेखिमहाशुचिसुन्दर॥ सरितसरोवर  
 काननभूषर॥ वनचरजलचरजीवजहीते॥ वैरनकरहिंप्रीति  
 सबहीते॥**दोहा॥** तरुबडविधविहंसृगबोलतविविधप्रकार॥  
 वसहिंसिद्धमुनितपकरहिंसहिमागुणाआगार॥**२६॥ चौपाई॥**  
 तरतसतीदाणगुरुपहंगयऊ॥ करिदेउवतकहतअसभयऊ  
 नाथकोशलाधीशऊमारा॥ आपमिलनजगतआधारा॥ राम  
 अनुजसमेतवैदेही॥ निशिदिनदेवजपतहऊजेही॥ सनत  
 अगसत्यतरतउठिपाए॥ हरिहिं विलोकिलोचनजलकाए॥ मु  
 निपदकमलपरैहोभाई॥ ऋषिअतिप्रीतिलिपउरलाई॥ सादर  
 ऊशलएकिमुनिज्ञानी॥ आसनपरवैठारेआनी॥ पुनिकरिबड  
 प्रकारप्रभुसजा॥ मोहिसमभाषवंतनहिंदूजा॥ जहंलगिरहे  
 अपरमुनिवृन्दा॥ हर्षसबविलोकिसखकन्दा॥**दोहा॥** मुनिसम  
 हमहंवैठप्रभुसमुखसबकीओर॥ शरदइनुजवचितवतमान



रामा.  
प्रा.  
८

इतिकरचकोर ॥ २० ॥ चौपाई ॥ पारसुथलजलहर्षितमीना ॥  
पारसपाइसुखीजिमिदीना ॥ प्रभुहिनिरषिसुखभाइहिभांती  
चातकजथापाइजलखाती ॥ तबरबुवीरकहामुनिपाही ॥ तम  
सनप्रभदुरावककुमाही ॥ तमजानइजेहिकारणाआयेउं ॥ ता  
तेनाथनकरिसमुजायेउं ॥ अबसोमंत्रदेइप्रभुमोही ॥ जेहिप्र  
कारमारोंसुरद्रोही ॥ निशिचरअवनवचहिंमुनिराई ॥ जिमियं  
कजवनहिमअतपाई ॥ मुनिमुसकानेसुनिप्रभुवाणी ॥ पूछ  
इनाथमोहिकाजानी ॥ तम्हरेभजनप्रभावअचारी ॥ जानोंमहि  
माककुकतम्हारी ॥ दोहा ॥ भृऊढीनिरखतनाथतबरहतसदा  
पदकमलतर ॥ जिन्हउरेनिजउदमइंविबुधविधातासिद्धहर  
चौपाई ॥ अतिकरालसबपरजगजाना ॥ औरोंकहोंसुनियभ  
गवाना ॥ उमरतरुविशालतबमाया ॥ फलब्रह्माण्डअनेक  
निकाया ॥ जीवचराचरजन्तुसमाना ॥ भीतरवसहिंनजानहिं  
आना ॥ तेफलभक्षककठिनकराला ॥ तबभयउरतसदासो  
काला ॥ तेतमसकललोकपतिसाई ॥ पूछेइमोहिमनुजकी  
नाई ॥ एहवरमागौकृपानिकेता ॥ बसइहृदयसियअनुजसमे  
ता ॥ अविरलभक्तिविरतिसतसङ्गा ॥ चरणसरोरुहप्रीतिअभ  
रु ॥ ययपिब्रह्मद्रावाउअनन्ता ॥ अनुभवगम्यभजहिंजेसन्ता  
असतबरूपवाकनौजानों ॥ फिरिफिरिसगुणब्रह्मरतिमानों  
सोरजा ॥ जाहिजीवपरमायरहततम्हहिंसन्ततदिवस ॥ तिनकी



महिमानजायसेवकतमकहप्राणप्रिय॥२५॥**चौपाई॥**  
 सनतदासन्हदेऊवडाई॥ तातेमोहिपूछेऊरचुराई॥ हैप्रभु  
 परममनोहरवाऊं॥ पावनपंचवटीतेदिनाऊं॥ गोदावरीन  
 दीतहंवहई॥ चारिअयुगप्रसिद्धसोअहई॥ दाउकवनप्र  
 नीतप्रभुकरहू॥ उग्रशापमुनिवरकैहरहू॥ वासकरऊतहं  
 रचुऊलराया॥ कीजैसकलमुनिन्हपरदाया॥ चलेराममु  
 निआयसपाई॥ तरतहिपंचवटीनिअराई॥ दिव्यलताउम  
 प्रभुमनभाए॥ निरखिरामतेभएउसोहाए॥ लक्ष्मणरामसि  
 यचरणनिहारी॥ काननअवभागासखकारी॥**दोहा॥** गी  
 हरजसोभेंटभइवज्रविधप्रतीतिटछाई॥ गोदावरीसमीपप्र  
 भुरहेपर्णगृहकाई॥**३०॥ चौपाई॥** जबतेरामकीन्हतहंवासा  
 सखीभएमुनिवीतीनासा॥ गिरिवननदीतालकूविकाए  
 दिनदिनप्रीतिअतिहोतसहाए॥ खगमृगवृन्दअनन्दितर  
 हंही॥ मयुरमयुपगुंजतकूविलहंही॥ सोवनवरणिनशक  
 अहिराजा॥ जहांप्रगटरचुवीरविराजा॥ एकवारप्रभुसख  
 आसीना॥ लक्ष्मणवचनकहेकूलहीना॥ सरनरमुनिसच  
 राचरसांई॥ मैपूछौनिजप्रभुकीनाई॥ मोहिसमुजाइकहऊ  
 सोइदेवा॥ सबतजिकरौंचरणरजसेवा॥ करऊज्ञानविराग  
 अरुमाया॥ कहऊसोभक्तिकरऊजेहिदाया॥**दोहा॥** ईश्वर  
 जीवभेदप्रभुसकलकहऊसमुजाई॥ जातेहोईचरणरतिशो



कमोदभ्रमजाइ ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ प्योरेमहंसबकहोंबुजाई ॥ स  
नइतातमतिमनचितलाई ॥ मैअरुमोंरतोरतैंमाया ॥ जेहिब  
शकीन्देजीवनिकाया ॥ गोगोचरजहंलगिमनजाई ॥ सोस  
बमायाजानेइभाई ॥ तेहिकरभेदसुनइतमसोऊ ॥ वियाअ  
परअवियादोऊ ॥ एकदुष्टअतिशयदुखरूपा ॥ जावशजीव  
परेभवकूपा ॥ एकरचैजगगुणवशजाके ॥ प्रभुपेरितनहि  
निजबलताके ॥ ज्ञानमानजहंपकौनाही ॥ देखतब्रह्मरूप  
सबमाही ॥ कहियेतासोंपरमविरागी ॥ तृणसमसिद्धितीनि  
गुणत्यागी ॥ दोहा ॥ मायाईशानआपुकहंजानिकहैसोजीव  
बंधमोक्षप्रदसर्वपरमायाप्रेरकशीव ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ धर्मतैंवि  
रतियोगतैंज्ञाना ॥ ज्ञानमोक्षप्रदवेदवाखाना ॥ जातैंवेगिद्र  
वोंमैभाई ॥ सोममभक्तिभक्तसुखदाई ॥ सोसतंत्रअवलम्बन  
आना ॥ तेहिंआधीनज्ञानविज्ञाना ॥ भक्तितातअनुपमसुखमू  
ला ॥ मिलिटुजोसन्नहोहिंअनुकूला ॥ भक्तिकेसाधनकहोंव  
खानी ॥ सुगमपथमोहिपावहिंआणी ॥ प्रथमहिंविप्रचरण  
अतिप्रीती ॥ निजनिजधर्मनिरतअतिरीती ॥ एहिकरफलपु  
निविषयविरागा ॥ तबममचरणउपजअनुरागा ॥ अवणादि  
कनवभक्तिदछाही ॥ ममलीलारतिअतिमनमाही ॥ सन्नच  
रणपंकजअतिप्रेमा ॥ मनक्रमवचनभजनदृढनेमा ॥ गुरुपि  
तमातबंधपतिदेवा ॥ सबमोहिकहंजानेंदृढसेवा ॥ ममगुणा



गावतपुलकशरीरा ॥ गदगदगिरानयनबहनीरा ॥ का  
 मादिकमददंभनजाके ॥ तातनिरन्तरवशमैताके ॥ दोहा  
 वचनकर्ममनमोरिगतिभजनकरैनिः काम ॥ तिन्हकेह  
 दयकमलमहंकरों सदाविश्राम ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ भक्तियोग  
 सुनिअतिसुखपावा ॥ लल्लापप्रभुचरणान्दशिरनावा ॥  
 नाथसुनेगतममसंदेहा ॥ भयउज्ञानउपजेनवनेहा ॥ अ  
 नुजवचनसुनिप्रभुमनभाष ॥ हर्षिरामनिजहृदयलगाप  
 र्हिविधिगयेककुकदिनबीती ॥ कहतविरागज्ञानगुणानी  
 ती ॥ शूर्पणाखारावणाकीबहिनी ॥ दुष्टहृदयदारुणाजसि  
 अहिनी ॥ पंचवटीमोगईएकवारा ॥ देखिविकलभरपुगल  
 कुमारा ॥ भ्रातापितापुत्रउरगारी ॥ पुरुषमनोहरनिरखति  
 नारी ॥ होइविकलशकमननहिरोकी ॥ जिमिरविमण्ड  
 वरविहिविलोकी ॥ दोहा ॥ अथमनिषाचरिऊटिलअतिच  
 लीकराउपहास ॥ सुखगेशभावीप्रबलभाचहनिशि  
 चरनाश ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ रुचिररूपपरिप्रभुपहंजाई ॥ बोली  
 वचनमधुरमुसकाई ॥ तमसमपुरुषनमोसमनारी ॥ यह  
 संयोगविधिरचाविचारी ॥ ममअनुरूपपुरुषजगनाही ॥  
 देखिउंखोजिलोकतिद्वंमोही ॥ तातेंअबलगिरहीकुमारी  
 मनमानाककुतमहिनिहारी ॥ सीतहिचितइकहीप्रभुवा  
 ता ॥ अहैकुमारमोरलबुभाता ॥ गरलषणारिपुभगिनीजानी



रामा.  
आ.  
१०

प्रभुविलोकिबोलेमृदुवाणी॥सुन्दरिसुनुमैउन्दकरदासा  
पराधीननदितोरसपाशा॥प्रभुसमर्थकोशलपुरराजा॥॥  
जोककुकरहिंउन्हैसबकाजा॥**दोहा**॥केहरिसमनदिकरि  
हिंबलवाकिवाजसमान॥प्रभुसेवकइमिजानइमानइव  
चनप्रमाण॥३५॥**चौपाई**॥सेवकसुखचहमानभिखारी॥॥  
ब्यासनीयनशुभग्रतिव्यभिचारी॥लोभीयसचहचाहगुमा  
नी॥नभटुहिदूधचहतपपाणी॥पुनिभिरिरामनिकटसोआ  
ई॥प्रभुलक्ष्मणपहं बझरिपठई॥लक्ष्मणकहातोहिसोबरई  
जोतएतोरिलाजपरिहरई॥तवरिसिआनिरामपहंजाई॥॥  
रूपभयङ्करप्रगटिदेखाई॥विशुरेकेशवदनविकराला॥भृ  
कुटीकुटिलकरणलगिगाला॥सीतहिंसभयटेखिरबुराई  
कहाअनुजसनसैनबुजाई॥अनुजराममनकीगतिजानी॥  
उटेरिसाइसोसनइंभवानी॥**दोहा**॥लक्ष्मणअतिलाचवसों  
नाककानविनुकीन्ह॥नाकेकरावणाकहंमनइंचुनौती  
दीन्ह॥३६॥**चौपाई**॥नाककानविनभरविकरारा॥जनुसब  
पौलगेरुकेधारा॥श्यामचटादेखतचनवेरी॥तहवासवथ  
नुमनइउगेरी॥खरदसणपहंगइविलर्षता॥थिकथिक  
तबपौरुषबलभाता॥तेइएकासबकहेसिबुजाई॥यात  
धानसुनिमैनबनाई॥चोदहसहससभटसङ्गलीन्हे॥ति  
न्हसपनेइंरणपीढनदीन्हे॥थापनिशिचरनिकरवरुथा

दीपकप्र  
कमलराम



जनुसपत्नकजलगिरिपुष्पा ॥ नानावाहननानाकारा ॥ नाना  
 आयुधचोरअपारा ॥ शूर्पनखहिंआगेकरिलीन्ही ॥ अशुभरूप  
 अतिनासाहीनी ॥ दोहा ॥ निजनिजबलसबमिलिकहहिंपक  
 हिंपकसुनाइ ॥ वाजनवाजजजावनेदुर्षनहृदयसमाइ ॥ १० ॥  
 चौपाई ॥ अशगुणाअमितहोहिंभयकारी ॥ गणाहिंनमृसुविव  
 शवशाजारी ॥ गर्जहिंतर्जहिंगगनउडाही ॥ देखिकटकभट  
 अतिहरषाही ॥ कोउकहजिअतथरऊदोउभाई ॥ थरिमारऊति  
 यलेऊऊडाई ॥ कोउकहसुनियसत्यहमकहही ॥ काननफिर  
 हिवीरकोउअहही ॥ एकनकहामुष्टहैरहह ॥ खरकेआगेअ  
 सजनिकहह ॥ बऊविथवचनकहतराणीरा ॥ आपसकलज  
 हारबुबीरा ॥ धूरिपूरिनभमएउलरहेऊ ॥ रामबुलाइअनुजस  
 नकहेऊ ॥ लैजानकीहिंजाऊगिरिकन्दर ॥ आवानिशिचरक  
 टकभयऊर ॥ रहेऊसजागसुनिप्रभुकैबाणी ॥ चलेसहितप्रि  
 यशरथनुपणी ॥ देखिरामरिपुदलचलिआवा ॥ विहंसिकटि  
 नकोटाउचढावा ॥ छन्द ॥ कोटाउकटिनचढाउप्रभुशिरज  
 दाबांधतसोहक्यों ॥ मरकतपालपरलसतदामिनिकोटिसौयु  
 गभुजगज्यों ॥ ११ ॥ कटिकसिनिषऊविशालभुजगदिचापवि  
 शिखसुधारिके ॥ चितवतमनऊंमृगराजप्रभुगजराजचटानि  
 हारिके ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ आउगयेवगमेलथरऊथरऊथावहिंसभट  
 यणाविलोकिअकेलबालरविहिंवेरतदनुज ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ वे



रिरहेतिशिचरसमुदाई॥ दाउकाखगमृगचलेपराई॥ प्रभुवि  
 लोकिशरपाकहिंनडाई॥ यकितभईरजनीचरपारी॥ सचिव  
 बोलिबोलेखरदृषा॥ यहकोउत्पबालकनरभूषा॥ सुर  
 नरनागअसुरमूढिजेते॥ देखेसुनेहतेहमकेते॥ हमभरिज  
 नमसनइंसबभाई॥ देखीनहीअससुन्दरताई॥ यद्यपिभगि  
 निहिंकीन्हऊरूपा॥ बथलायकनहिपुरुषअनृपा॥ देऊत  
 रतनिजनारिदुगई॥ जीवतभवनजाऊदौउभाई॥ मोरकहात  
 मताहिसनावऊ॥ तासुवचनसुनिआतरआबऊ॥ दोहा॥ भ  
 एकालवशामूढसबजानहिंनहिंरचुवीर॥ मशकफूंककिमि  
 मेरुउउसनऊगरुउमतिपीर॥ २५॥ चौपाई॥ हूतन्हकहाराम  
 मनजाई॥ सुनतरामबोलेमुसुकाई॥ आजभयेउबउभाग्यह  
 मारा॥ तन्हरेप्रभुअसकीन्हविचारा॥ हमतत्रीमृगयावनकर  
 ही॥ तमसेखलमृगखोजतफिरही॥ तमसेखलमृगखोज  
 तफिरही॥ रिपुबलवन्तदेखिनहिउरही॥ एकवारकालऊ  
 मनलरही॥ यद्यपिमनुजदनुजऊलवातक॥ मुनिबालकख  
 लशालकबालक॥ जौनहोइबलवरफिरिजाहू॥ समरविमु  
 खमैहतौनकाहू॥ रणचढिकरियकपटचतगई॥ रिपुपर  
 कृपापरमकदगई॥ हूतन्हजाइतरतसबकहेऊ॥ सुनिखरदृ  
 षाउरअतिदहेऊ॥ छन्द॥ उरदहेउकहेउकिथरऊपाबऊ  
 विकटभटरजनीचरा॥ शरचापतोमरशक्तिशूलकृपाणाप-



रिपुपरमृथरा ॥ २१ ॥ प्रभुकीन्हयनुषटंकारप्रथमकठोरवो  
 रभयम्बहा ॥ भएवधिरव्याकुलयातयाननज्ञानतेदिअवस  
 ररहा ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सावधानहोइथापउजानिसबलआराति  
 लागेवरषणारामपरअसुशसबझभांति ॥ २३ ॥ तिन्हकेआयु  
 धतिलसरिसकरिकाटेरबुवीर ॥ तानिशारामनअवणालगि  
 पुनिक्काडेनिजतीर ॥ २४ ॥ कुन्द ॥ तबचलेंबाणकरालफुंकरत  
 जनुबझब्याल ॥ कोपेउसमरश्रीरामचलेविशिखनिसितनि  
 काम ॥ २५ ॥ अबलोकिवरतरतीरमुरिचलनिशिचरवीर ॥ ए  
 कएककोउनसंभार करेंतातमातपुकार ॥ २६ ॥ भएकुदतीने  
 भाइ जोभागिराणतेंजाइ ॥ तेदिवधवमेंनिजपाणि फिरेमरण  
 मनमहंठानि ॥ २७ ॥ आयुधअनेकप्रकार ॥ सनमुखतेकरहिंप्र  
 हार ॥ रिपुपरमकोपेजानि ॥ प्रभुयनुषशरसंधानि ॥ २८ ॥ क्काडे  
 विपुलनागच ॥ लगेकटनविकटपिशाच ॥ उरशीसकरभुज  
 चरण ॥ जहंतहेंलगेमहिपरण ॥ २९ ॥ चिक्करतलागतबाण  
 धरपरतऊपरसमान भटकटततनूपातशंड ॥ पुनिउठतक  
 रिपाखंड ॥ ३० ॥ नभउउतबझभुजमुंड ॥ विनुमोलियावतरुंड  
 खगकंककाकशृगाल ॥ कटकटहिंकठिनकराल ॥ ३१ ॥ कुन्द  
 कटकटहिंजंघुकभूतप्रेतपिशाचावपरसंचही ॥ बैतालबी  
 रकपालतालबजाइयोगिनिनाचही ॥ ३२ ॥ रबुवीरबाणप्रचंड  
 खंडहिंभटन्हकेउरभुजशिरा ॥ जहंतहेंपरहिंडिलरहिंथरुथ



रामा.  
आ.  
१२

12

रुकरहिं गिराभयेकरा ॥ ३१ ॥ अंजावलीलै उउत गौद पिशा  
चकरगहि थावही ॥ संगमपुरवासी मन ऊँ बङ्ग बाल गुडी उ  
डावही ॥ मारे पकारे उर विदारे विपुल भटक हं रत परे ॥ अब  
लोकि निज दल विकल भट विशिरा दिखर दृषण फिरे ॥ ३२ ॥  
शरशक्ति तो मर परशु मूल कृपा ए एक हिं बारही ॥ करिकों  
पश्री रघु वीर पर अगणित निशा चर डारही ॥ प्रभु निमिष म  
हं रिपु शर निवारि प्रचारि डारै शायका ॥ दश दश विशिख  
उर मांऊ मारे सकल निशि चर नायका ॥ ३३ ॥ महि परत उठि  
भट भिरत पुनि पुनि करत माया अति घनी ॥ सुर उरत चौदह  
सहस निशि चर एक श्री रघु ऊल मणी ॥ सुर मुनी सभय प्रभु  
देवि माया नाथ अति कौतुक कसौ ॥ देव हिं परस्पर राम का  
रि संगम रिपु दल लरि मसौ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ राम राम कहित  
बुत जहिं पावहिं पद निर्वाण ॥ करि उपाय रिपु मारे उल्लाम  
हं कृपा निधान ॥ ३५ ॥ हर्षित वर्ष हिंस मन सुर वाज हिं गगन  
निशान ॥ अस्तुति करि करि सब चले शोभित विविध विमान  
धर ॥ चौपाई ॥ जबरघु नाथ समर रिपु जीते ॥ सुर नर मुनि सब  
केदुख बीते ॥ तब लक्ष्मण सीत हिं लआए ॥ प्रभु पद परत ह  
र्षित लआए ॥ सीता निरखि श्याम मृदु गाता ॥ परम प्रेम लोचन  
न अवाता ॥ पञ्चवटी वसि श्री रघु नायक ॥ करत चरित सुर मु  
नि सख दायक ॥ भुजा देवि खर दृषण केरा ॥ जाइ शूर पन खारा



वणाप्रेरा ॥ बोलीबचनक्रोधकरिभारी ॥ देशकोशकईसुरति  
 विसारी ॥ करसिपानसोवसिदिनराती ॥ शुधिनतोहिशिरप  
 रआराती ॥ राजनीतिविनुयनविनुथर्मा ॥ हरिहिसमर्पेविनु  
 सतकर्म ॥ विद्याविनुविवेकउपजाये ॥ अमफलपाढेकियेअ  
 रुपाये ॥ सङ्गतेयतीऊमंत्रतेराजा ॥ मानतेज्ञानपानतेंलाजा ॥  
 प्रीतिप्रणयविनुमदतेगुणी ॥ नाशहिंवेगिनीतिअससुनी ॥  
 सोरठा ॥ रिपुरुजपावकपापप्रभुअहिगणियनछोटकरि ॥ अ  
 सकहिविविधविलापपुनिलागीरोदनकरणा ॥ ४५ ॥ दोहा ॥  
 सभामांऊपरिव्याऊलबडप्रकारकहरोउ ॥ तोहिजिअतदश  
 कन्धरमोरिकिअसगतिहोउ ॥ ४५ ॥ चौपाई ॥ सुनतसभासद  
 उठिअऊलाई ॥ समुजाईगहिवाऊउठाई ॥ कहलंकेशकहसि  
 निजवाता ॥ केहिंतबनासाकाननिपाता ॥ अबधनृपतिदश  
 रथकेजाप ॥ पुरुषसिंहवनखेलनआप ॥ समुजिपरीमोहिउ  
 न्हकैकरणी ॥ रहितनिशाचरकरिहहिंवरणी ॥ जिनकरभु  
 जबलपाइदशानन ॥ अभयभयेमुनिविचरहिंकानन ॥ देख  
 तबालककालसमाना ॥ परमभीरथत्वीगुणानाना ॥ अतलि  
 तबलप्रतापदोउभाता ॥ खलबधरतम ॥ रमुनिसखदाता ॥ शो  
 भायामरामअसनामा ॥ तित्दकेसंगनारिपकशपामा ॥ सोरठा  
 अतिसुऊमारिपियारिपटतरयोगनआदिकोउ ॥ मैमनदीख  
 विचारिजहोरदेतेहिसमनकोउ ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ अजडजारदे



खवतमतवही ॥ हैरुद्रविकलतासुवशतवही ॥ जीवनमु  
 क्ललोकसबताके ॥ दशमुखसुनइनसुन्दरिअसजाके ॥ रूप  
 राशिविधिनारिसंभारी ॥ रतिशतकोटितासुबलिहारी ॥ ता  
 सुअनुजकादीश्रुतिनासा ॥ सुनितवभगिनीकरिपरिहा  
 सा ॥ खरदृषणसुनिलागुगोहारी ॥ दणमहंसकलकटक  
 उनमारी ॥ खरदृषणविशिराकरचाता ॥ सुनिदशशीसजरा  
 सबगाता ॥ दोहा ॥ शूर्पनखहिंसमुजाइकरिबलबोलेसि  
 बडभांति ॥ भवनगयेउअतिशोचवशनीदपरीनहिराति ॥ ४  
 चौपाई ॥ सरनरअसरनागमहिमांही ॥ मोरेअनुचरकहंको  
 उनाही ॥ खरदृषणमोसमबलवंता ॥ तिहेकोमारेविभुभग  
 वंता ॥ सरंजनभंजनमहिभारा ॥ जौंजगदीशलीन्दुअवता  
 रा ॥ तौमैजाइबरहरिकरुं ॥ प्रभुकरमरिभवसागरतरुं ॥  
 होयभजननहिंतामसदेहा ॥ मनक्रमवचनमत्रटछपहा ॥  
 जौनररूपभूपसुतकोऊ ॥ हरिहौंनारिजीतिरणदोऊ ॥ चला  
 अकेलयानचढितहंबा ॥ बसमारीचसिंधुतटजहंबा ॥ रण  
 अनूपजोरेखरचारी ॥ वेगवन्तरमिजिमिउरगारी ॥ कन्द ॥ ३  
 रगारिममअतिवेगवर्णातजाइनहीउपमाकही ॥ शिरछत्र  
 शोभितणामवनजनुचवरसेतविराजही ॥ ३५ ॥ एदिभांति  
 नाखवतसरितशैलअनेकवापीमोहही ॥ वनबागउपवन  
 वाटिकासुचिनगरमुनिमनमोरही ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ बहतउग



शुचिविहगमृगबोलतविविधप्रकार॥ एहिविधिआयो  
 सिंधुतटशातयोजनविसतार॥ ४८॥ चौपाई॥ सुन्दरजीववि  
 विधविधजाती॥ करहिंजलाहलदिनअरुगती॥ एककूट  
 हिंतेगर्जहिंचननाई॥ महाबलीबलवर्णिनजाई॥ कनकवा  
 लसुन्दरसुखदाई॥ वैठहिंसकलजंततहंजाई॥ तेहिपरदि  
 बलताडुमभागो॥ जेहिदेषतमुनिमनअनुरागो॥ गुहाविवि  
 धविथरहदिवनाई॥ वर्णातशारदमतिसऊचाई॥ चाहिय  
 जहांअधिनकरवासा॥ तहानिशाचरकरहिंनिवासा॥ दश  
 मुखदेखिसकलसऊचाने॥ जेजउजीवसजीवयराने॥ इहां  
 रामजशायुक्तिबनाई॥ सुनइउमासोकथासुहाई॥ दोहा॥ ल  
 क्ष्मणागएवनहिंजबलेनमूलफलकन्द॥ जनकसुतासनबो  
 लेउविहंसिकृपासुखवृन्द॥ ४९॥ चौपाई॥ सुनइप्रियाव्रतरु  
 चिरसुशीला॥ मैककुकरबललितनरलीला॥ तमपावकम  
 हंकरइनिवासा॥ जौलगिकरौनिशाचरनाशा॥ जबहिगम  
 सबकहेउबखानी॥ प्रभुपदथरिहियअनलसमानी॥ निजप्र  
 तिबिम्बरखितहंसीता॥ तैसइशीलस्वरूपविनीता॥ लक्ष्मणाऊ  
 यहमर्मनजाना॥ जोककुचरितरचाभगवाना॥ दशमुखगणउ  
 जहांमारीचा॥ नाइमाघसारथरतनीचा॥ नमनिनीचकीअति  
 दुखदाई॥ जिमिशंऊशयनउरगविलाई॥ भयदायकखलकी  
 प्रियवाणी॥ जिमिशकालकेकुसुमभवानी॥ दोहा॥ करिभूजा



मीरीचतबसादरसुखीबात॥ कवनहेतुमनब्यग्रप्रतिपक  
सआयेइतात॥ ५०॥ चौपाई॥ दशमुखसकलकथातेहिआगे  
कहीसहितअभिमानअभागे॥ होइकपटमृगतमकलकारी  
जेहिविधदरिआनोंनृपनारी॥ तेइपुनिकहासुनइदशशीशा  
तेनरूपचराचरईशा॥ तासोंतातबैरनहिंकीजै॥ मारेमरियजि  
आपजीजै॥ मुनिमखराखनगयेउऊमारा॥ बिनुफरशरर  
चुपतिमोहिमारा॥ शतयोजनआयेउंताणमाही॥ तिन्हस  
नबैरकिपभलनाही॥ भइममकीटभृङ्गकीनाइ॥ जहंतहैं  
मैदेखोंदोउभाई॥ जौंनरताततदपिअतिपूरा॥ तिनहिविरो  
धनआइहिपूरा॥ दोहा॥ जेहिंताउकासुबाइहतिखंडेउहर  
कोदंड॥ खरदषणविशिखावधेउमनुजकिअसवरिवंड॥ ५१॥  
चौपाई॥ जाइभवनऊलऊशालविचारी॥ सुनतजरादीन्हसि  
बइगारी॥ गुरुजिमिपूछकरसिममबोधा॥ कइजगमोहि  
समानकोयोधा॥ तबमारीचहृदयअनुमाना॥ तबहिविरोधे  
नहिकल्याण॥ शास्त्रीममीप्रभुशठधन्वी॥ वेदबंधकविमान  
सगुणी॥ उभयभांतिदेखानिजमरण॥ तबताकेसिरनुनायक  
शरण॥ उत्तरदेतमोहिविधिद्विआभागे॥ कसनमरौंरचुपतिश  
रलागे॥ असजियजानिदशाननसंगा॥ चलारामपदप्रेमअभंग  
मनअनिहर्षजनावनतेही॥ आजदेखिहोंपरमसनेही॥ कन्द  
निजपरमप्रीतमदेखिलोचनसफलकरिसुखपाइहों॥ श्री



सहित अजसमेत कृपानिकेत पदमनलाई हों ॥ ३० ॥ नि  
 बाणादायक क्रोध जाकर भक्ति अवश हिं वश करी ॥ निज पा  
 णि शर संधानि सो मोहि बध हिं सख सागर हरी ॥ ३१ ॥ दोहा  
 मम पाछें थर थर वत थरे शरासन बाणा ॥ फिरि फिरि प्रभुहि  
 विलोकि हों धन्य नमो सम आन ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ सीताल घणा  
 सहित रघुगई ॥ जे हिवन वसहिं मुनिन्ह सख दाई ॥ तेहि व  
 न निकट दशानन गयेऊ ॥ तब मारीच कपट मृग भयेऊ ॥ अ  
 निविचित्र ककुवरणि न जाई ॥ कनक देह मणि रचित बनाई  
 सीता परम रुचिर मृग देखा ॥ अरु अरु समनोहर वेषा ॥ स  
 नद देवरघु वीर कृपाला ॥ एहि मृग कर अति सुन्दर काला ॥  
 सत्य संध प्रभु बध करि पही ॥ आनद चर्म कहा बैदेही ॥ तब  
 रघुपति जाना सब कारण ॥ उठे हर्षि सरकाज संवारणा ॥ मृ  
 ग विलोकिक टिपरि कर बांधा ॥ करतल चापरुचिर शर सा  
 था ॥ प्रभुलक्ष्मणाहिं कहा समुजाई ॥ फिरत विपिन निशि  
 चर बड्ढ भाई ॥ सीता के रिकरे झर खवारी ॥ बुधिविवेक बल स  
 मय विचारी ॥ दोहा ॥ अस कहि चले उतहां प्रभुज हांक पट मृ  
 ग नीच ॥ देव हर्ष विस्मय विवस चातक जिमि वरषा बीच ॥ ५  
 चौपाई ॥ प्रभुहि विलोकि चला मृग भाजी ॥ थापरा मशारा स  
 न साजी ॥ निगमने ति शिव ध्यान न पावा ॥ माया मृग पाछें सो  
 थावा ॥ कबड्ढ निकट पुनि हुरि पगई ॥ कबड्ढ कप्रगटै कबड्ढ

अंतम  
 २



रामा.  
आ.  
१५

कृपाई॥ प्रगटतदुरतकरतकुलभूरी॥ इहिविधप्रभुहिं ग  
योंलैहरी॥ तबतकिरामकटिनशरमारा॥ धरणिपरेउक  
रिघोरपुकरा॥ लक्ष्मणकरप्रथमहिंलैनामा॥ पाकेंसुमि  
रेसिमनमहंरामा॥ प्राणातजतप्रगटेसिनिजदेहा॥ सुमि  
रेसिरामसमेतसनेहा॥ अन्तरप्रेमतासुपहिचाना॥ मुनिडु  
लंभगतिदीन्हसुजाना॥ दोहा॥ विपुलसुमनसुखवर्षहिं  
गावहिंप्रभुगुणगाय॥ निजपददीन्हाअसुरकहंदीनबं  
धुरचुनाय॥ ५५॥ चौपाई॥ खलबधितरतफिरेरचुवीरा॥ सो  
हचापकरकटितूणीरा॥ आरतगिरासुनीजबसीता॥ कहे  
लक्ष्मणसनपरमसभीता॥ जाइवेगिसकुटअतिभ्राता॥  
लक्ष्मणविहंसिकहासुनुमाता॥ भुङ्कटिविलाससुखिलय  
होई॥ सपनेइसंकटपरैकिसोई॥ सोंपिगएमोहिरचुपतिथा  
ता॥ जोंतजिजाउंतोषनहिक्काती॥ यहजियजानिसुनइम  
ममाता॥ पूकृतकहवकवनमैवाता॥ मर्मवचनसीताजब  
बोला॥ हरिप्रेरितलक्ष्मणमतिजोला॥ चंद्रदिशिरेखखचा  
इअहीशा॥ बारवारनावापदसीशा॥ बनदिशिदेवसोंपिसब  
काह॥ चलेजहोरावणाशशिगह॥ चितवहिंलक्ष्मणसिय  
दिफिरिकेंमें॥ तजतवतसनिजमातहिजैते॥ दोहा॥ एकउ  
रतउररामकेइजेसीयअकेलि॥ लक्ष्मणातेजतनुहतभयो  
जिमिबाढीदबवेलि॥ ५५॥ चौपाई॥ शून्यवीचदशकन्यर



देखा ॥ आवा निकट यती के भेषा ॥ जा के उर सर अ सर उर  
 राही ॥ निशिन नीन्द दिन अन्न न खाही ॥ सो दशाशी सखा  
 न की नाई ॥ इत उत चित इ चला भंडि हाई ॥ जिमि ऊपम्य पग  
 देत खगोशा ॥ रहन तेज बल बुधिल बलेषा ॥ करि अनेक वि  
 थि कल चत राई ॥ मांगे उभिदा दश मुख जाई ॥ अति थि जा  
 नि सिय कन्द मूल फल ॥ देन लगी तेहिं कीन्द वड रिखल ॥  
 कह दश मुख सुनु सुन्द रिवाणी ॥ बांधी भीखन लेउं सेयानी  
 विधि गति वाम काल करि नाई ॥ रेखलां वि सिय बाहिर आई ॥  
 दोहा ॥ विष्वभरणि अ बटल नि सिय करणि सकल सर काज  
 जाना नहि तेहि समय महं दश शिर कपट के साज ॥ ५८ ॥ चौपा  
 नाना विथ कहि कथा सुहाई ॥ राज नीति भय प्रीति देखाई ॥ क  
 ह सीता सुनु यती गोसांई ॥ बोले डवचन दुष्ट की नाई ॥ तब रा  
 वण निजरूप देखावा ॥ भई स भीत जवना मसनावा ॥ कह सी  
 ता थरि थीर जगाजा ॥ आश गप प्रभुर डखल ठाजा ॥ जिमि ह  
 रि बधू दित दश शचाहा ॥ भयसि काल वषा निशि चरनाहा  
 वाय सक रिच हख गयति समता ॥ सिन्धु समान होइ किमि स  
 रिता ॥ खरी कि होई सर येनु समाना ॥ जाइ भवन निज सुनु अ  
 जाना ॥ सुनत बचन दशाशी शाल जाना ॥ मन मह चरण बन्दि  
 सुख माना ॥ दोहा ॥ जो थवन्त तब रावणाली न्हे सिर थवै रा  
 चले उगगन पथ आतर भयर थहां किन जाइ ॥ ५९ ॥ चौपाई ॥



हाजगदीशदेवरचुराया ॥ केहिअपराधविसारेइदाया ॥  
आरतिहरणशरणसखदायक ॥ हारचुऊलसरोजदिनना  
यक ॥ हालत्मणातम्हारनहिदोषा ॥ सोफलपायेउंकीन्दे  
उंरोषा ॥ कैकेयीमनजोककुरहेऊ ॥ सोविधियाजुमोहिदुख  
दयेऊ ॥ पंचवटीकैखगमृगजाती ॥ दुखीभएजलचरबझभां  
ती ॥ विविधविलापकरतिबैदेही ॥ भूरिकृपाप्रभुहरिसनेही  
विपतिमोरिकोप्रभुहिसुनावा ॥ पुरोडाशचहरासभखावा  
सीताकैविलापसुनिभारी ॥ भयेउचराचरजीवदुखारी ॥ दो  
हा ॥ बझविधकरतिविलापनभलिपजातदशशीश ॥ उरत  
नखलवरणभलजोदीन्होअजईश ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ गृहरा  
जसुनिआरतबाणी ॥ रचुऊलतिकनारिपदिचानी ॥ अथ  
मनिशाचरलीन्देजाई ॥ जिमिमलेकवशकपिलागाई ॥ अ  
दहप्रथमबलममतनुनाही ॥ तदपिजाइदेखौबलताही ॥  
सीताप्रतिकरसिजनित्रासा ॥ करिहोंयातथानकरनाशा ॥  
थावाक्रोधवंतखगकैसैं ॥ कूटैपविपर्वतकहंजैसैं ॥ रेरुडघटा  
छकिनहोही ॥ निभंयचलेसिनजानेसिमोही ॥ आवतदेवि  
कृतोतसमाना ॥ फिरिदशकंथकरतअनुमाना ॥ कीमैनाक  
किखगपतिहोई ॥ ममबलजानिसहितपतिमोई ॥ जानाज  
रठजटाएपहा ॥ ममकरतीरथछाडिदिदेहा ॥ दोहा ॥ ममभु  
जबलनहिजानहीआवतकिन्दमहार ॥ समरचढैतौयदि



हतों जिअतन निज थल जाइ ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ सुनत गृध्र को पा  
 तर थावा ॥ कह सुनु रावण मोर शिखावा ॥ तजि जान किहि ऊ  
 शल गृह जाइ ॥ नाहित खंडित होइ हिवाइ ॥ राम रोष पावक  
 अति चोरा ॥ होइ हि सकल शल भऊल तोरा ॥ उतर न देत दशा  
 न नयोथा ॥ तब हिं गृध्र थावा करि कोथा ॥ थरि कच विरथ कीन्ह  
 मदि गिरा ॥ सीत हि राखि गृध्र पुनि फिरा ॥ दश मुख उठि कृत  
 प्रार संधाना ॥ गृध्र आइ काटे उपनुवाणा ॥ चोंचन्ह मारि विदारे  
 सिदेही ॥ दंड एक भइ मूर्छा तेही ॥ दोहा ॥ जेइ रावण निज वश वि  
 ए मुनि गण सिद्ध सुरेश ॥ तेहि रावण सन समर अति भीरवीर  
 गृध्रेश ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ सुर ॥ तिभ पुनि उठि सो थावा ॥ मारी गृध्र  
 सन्मुख तेहि थावा ॥ कीन्ह सिबइ विथ युद्ध खगेश ॥ थकित भ  
 यात बजरट गिध्रेश ॥ तब सक्रोथ निशि चरवि सिआना ॥ काटे  
 सिपरम कराल कृपाणा ॥ काटे सिपंख पराख गथरणी ॥ सुमि  
 रिराम कर अद्भुत करणी ॥ मन मह गृध्र परम सुख माना ॥ राम का  
 जम मलारोउ प्राणा ॥ सीत हिं यान च छाइ वदोरी ॥ चलाउ ताइल  
 जामन थोरी ॥ करति विलाप जाति न भसीता ॥ व्याथ विवश जनु  
 मृगी समीता ॥ गिरि परवैठे कपिन्ह निहारी ॥ कहि हरि नाम दीन्ह  
 पटारी ॥ इहि विथ सीत हि सोलै गयऊ ॥ बन अशोक महं राखत  
 भयऊ ॥ दोहा ॥ हारि पराखल वद्धत विथ भय अरु प्रीत देखी ॥  
 तब अशोक पाद पतरे राखे सि यतन करी ॥ ६१ ॥ चौपाई ॥ उहं वि



धातामनअनुमाना॥ सरपतिबोलिमत्रअसठाना॥ तातजन  
 कतनयापहिजाऊ॥ सुथिनपावजिमिनिशिचरनाऊ॥ असक  
 दिविधिसुन्दरहविशानी॥ सोंपिवडरिबोलेमृदुबाणी॥ इदि  
 भतणकृतक्षथानपियासा॥ वर्षसदसएकसंशयनाशा॥ सो  
 प्रसादलैंआयसुपाई॥ चल्पोहियसुमिरतरचुराई॥ ककुवास  
 वमायानिजहोई॥ रत्नकरहेगएतहंसोई॥ तदपिउरतसीता  
 पहेंआयो॥ करिप्रणामनिजनामसुनायो॥ निश्चयजानिसु  
 रेणसुजाना॥ पिताजनकदशरथसममाना॥ करिपरितोष  
 हरिकरिशोका॥ हव्यखबाइगयोनिजलोका॥ दोहा॥ जेदि  
 विधकपटऊरऊसऊथाइचलेश्रीराम॥ सोकुविसीतागविव  
 ररटतिरहतिहरिनाम॥ ६२॥ चौपाई॥ रचुपतिअनुजदिआव  
 तदेखी॥ मनमऊचिनाकीन्हविशेषी॥ जनकसतापरिहरेऊ  
 अकेली॥ आयेऊतातवचनममपेली॥ निशिचरनिकरफिर  
 दिवनमाही॥ मममनसीताआअमनाही॥ अरुहतातभलकी  
 न्दऊनाही॥ सियविहीनममजीवननाही॥ पहितेकवनविप  
 तिवउभाई॥ खोपउंसीयकाननहीआई॥ गहिपटकमलअनु  
 जकरजोरी॥ कहेउनाथककुभोहिनखोरी॥ अनुजसमेतग  
 एप्रभुतहवां॥ गोदावरितटआअमजहवां॥ आअमदेविजान  
 कीहीना॥ भएविकलजमप्राकृतदीना॥ दोहा॥ काननरहेउ  
 तडागईबचकचकईसियराम॥ गवणानिशिविकुरनभयेडु



खवीतेचङ्गेयाम॥६२॥**चौपाई॥** परदुखहरणशोकदुखता।  
 ही॥ भाविषादतिहकेमनमांही॥ हागुणावानिजानकीसीता  
 रूपशीलव्रतनेमपुनीता॥ लक्ष्मणासमुजाएवङ्गभांती॥ पूरु  
 तचलेलतातरुपांती॥ हेखगमृगहेमभुकरश्रेणी॥ तमदेवी  
 सीतामृगनयनी॥ एवंजनशुककपोतमृगमीना॥ मधुपनिक  
 रकोकिलाप्रवीणा॥ ऊन्दकलीदाडिमदामिनी॥ शरदकम  
 लशशिअहिभामिनी॥ वरुणायाशमनोजयनुहंसा॥ गजके  
 हरिनिजकरतप्रशंसा॥ श्रीफलकनककदलिरघाही॥ नेऊ  
 नशंकसऊचमनमांही॥ सुनुजानकीतोहिविनुआज॥ हर्ष  
 सकलपाईजनुराज॥ किमिसहिजातअनखतोहियांही॥ पि  
 यावेगिप्रगटसिकसनाही॥**दोहा॥** फणिमणिहीनदीनजिमि  
 मीनहीनजिमिवारि॥ तिमिव्याऊलभयेलषणातहंरचुवरद  
 शानिहारि॥६३॥**चौपाई॥** धरीउरधीरबुजावहिंरामहिं॥ तजहिं  
 नशोकअधिकसखयामहिं॥ रहिविधखोजतविलपतस्वामी  
 मनङ्गमहाविरहीअतिकांमी॥ पूरणाकामरामसखराशी॥  
 मनुजचरितकरअजअविनाशी॥ सरवरअमितनदीगिरि।  
 खोहा॥ बडविधरामलषणातहंजोहा॥ आगेंपरागृध्रपतिदे  
 खा॥ समिरतरामचरणजिन्हपेखा॥ शोचहृदयककुहिन  
 दिआवा॥ टूटयउषशरआगेपावा॥ कङ्कङ्कशोणितदेखि  
 यकैसे॥ आवणजलभादोंरजजैसे॥ कहतरामलक्ष्मणाहिं॥



बूजाई॥ काहू कीन्ह पुद एहि बोई॥ दोहा॥ कर सरोज शिर प  
 र से उकृपा सिंधु रचु वीर॥ निरखि राम कृविधाम मुख विगत  
 भई सब पीर॥ ६५॥ चौपाई॥ तब कह्यु वचन परिधीरा॥ सुन  
 इ राम भंजन भव भीरा॥ नाथ दशानन यद्गति कीन्ही॥ तेहि  
 खल जनक सुता हरिलीन्ही॥ लै दत्ति एादि शिगये उगो सोई  
 विलपति अति करी की नाई॥ दरशला गि प्रभुराखे उं प्राणा  
 चलन चहत अब कृपा निधाना॥ राम कहात नुराख डताता  
 मुख मुसुकाइ कही ते रवाता॥ जाकर नाम मरत मुख आवा॥  
 अथ मउ मुक्त होइ प्रतिगावा॥ सोम मलोचन गोचर आगे॥ रा  
 खों देह नाथ के हिलागे॥ जल भरिन यन कहार चु राई॥ तात क  
 र्म निज तें गति पाई॥ परहित वसु जिन्ह के मन मोही॥ तिन्ह क  
 हं जग दुर्लभ ककु नाही॥ तनु तजिता तजाइ मम धामा॥ दे  
 उं कहात म पूरण कामा॥ गृध्र देत जिथ रिहरि रूपा॥ भूषण  
 बड पट पीत अनूपा॥ श्याम गात विशाल भुज चारी॥ अस्तति  
 करत नयन भरि बारी॥ दोहा॥ सीता हरण न तात जिमि कहइ  
 पिता मन जाइ॥ जो मै रावण कुल सहित कहहिं शानन जाइ॥  
 ६६॥ छन्द॥ जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक सही  
 दशशी सबाइ प्रचंड खंडन चाप शर मंडन मही॥ ३५॥ पाथो  
 जगात सरोज मुख राजीव आयत लोचन॥ नित नौ मिरा मरु  
 पालु बाइ विशाल भव भय मोचन॥ ४०॥ बलम प्रमेय मनादि



मजमव्यक्तमेकगोचरं॥ गोविन्दगोपरद्वंद्वद्विज्ञानच  
 नथरणीथरं॥४॥ जेराममंत्रजयंतसन्तश्चनतजनमनरंज  
 नं॥ नितनौभिरामश्चकामप्रियकामादिखलदलंगंजनं॥४॥  
 जेहिफ्रतिनिरंतरबल व्यापकविरजश्चजकहिगावही॥ क  
 रिथानज्ञानविशगयोगश्चनेकमुनिजेहिगावही॥४॥ सोप्र  
 गटकुरुणाकन्दशोभावृन्दश्चगजगमोहई॥ ममहृदयपंक  
 जभृङ्गश्च नंगवड्कविमोहई॥४॥ जोअगमसुगमस्व  
 भावनिर्मलश्चसमसमशीतलसदा॥ यश्यनियेयोगीयतन  
 करिकरतमनगोवशयदा॥४॥ सोरामरमानिवासमन्तत  
 दासवशविभुवनधनी॥ ममउरवसड्सोशमनसंस्तुतिजा  
 सुकीरतिपावनी॥४॥ दोहा॥ अविरलभक्तिमोगिवरगृथग  
 यउहरिधाम॥ तेहिकीक्रियायचोचितनिजकरकीन्हीराम॥  
 चौपाई॥ कोमलचित्तप्रतिदीनदयाला॥ कारणाविनुरचुना  
 यकृपाला॥ गृथअथमखगआमिषभोगी॥ सहितेहिदीन्  
 जोयाचतयोगी॥ सुनइउमातेलोगअभागी॥ हरितजिहोहि  
 विषयअनुगामी॥ पुनिसीतहिंखोजतदोउभाई॥ चलेविलो  
 कतबडताई॥ संकुललताविटपचनकानन॥ बडखगमृग  
 तहंगजपंचानन॥ आवतपंथकबन्धनिपाता॥ तेइसबकही  
 शापकीवाता॥ डवांसा मोहिदीन्हीशापा॥ प्रभुपददेविमि  
 दासोपापा॥ सुतगन्यर्वकहोंमैंतोही॥ मोहिनसहाईबलक

६३



लडोही ॥ दोहा ॥ मनक्रमवचनकपटतजिजोकरभूसरसेव ॥  
मोहिसमेतविरंचिशिववशाताकेसबदेव ॥ ६८ ॥ चौपाई ॥ शाप  
तताउतपरूषकहन्ता ॥ विप्रपूज्यअसगावहिंसन्ता ॥ पूजि  
यविप्रशीलगुणाहीना ॥ शूद्रनगुणागणज्ञानप्ररुवीणा ॥  
कहिनिजधर्मताहिसमुजावा ॥ निजपटप्रीतिदेखिमनभा  
वा ॥ रघुपतिचरणकमलशिरनाई ॥ गणउगगनआपनिग  
तिपाई ॥ ताहिदेइगतिरामउदाश ॥ शवरीकेआश्रमपगुथारा  
शवरीदेखिरामगृहआप ॥ मुनिकेवचनसमुजिजियभाए ॥  
सरसिजलोचनबाहुविशाला ॥ जटामुकुटसिरउरवनमाला  
श्यामगौरसुन्दरदोउभाई ॥ शवरीपरीचरणालपटाई ॥ प्रेमम  
गनमुखवचननआवा ॥ पुनिपुनिपटसरोजसिरनावा ॥  
सादरजललैचरणपखारी ॥ पुनिसुन्दरआसनबैठारी ॥  
दोहा ॥ कन्दमूलफलसरसअतिदिपरामकहंआनि ॥ प्रे  
ममहितप्रभुखापउवारहिंवारवखानि ॥ ६९ ॥ चौपाई ॥ पाणि  
जोरिआगेभइढाढी ॥ प्रभुहिंविलोकिप्रीतिअतिबाढी ॥ के  
दिविधिअस्ततिकरौतम्हारी ॥ अथमजातिमैजउमतिभारी  
अथमतेअथमअथमअतिनारी ॥ तिनमहंमैअतिमन्दआ  
बारी ॥ कहरघुपतिसुनुभामिनिवाता ॥ मानोंएकभक्तिकौ  
नाता ॥ जातिपातिलुलधर्मवडाई ॥ थनबलपरिजनगुणच  
तराई ॥ भक्तिहीननरसोदेकैसे ॥ बिनुजलवारिददेखियजैसे

रामदास



नवधामभक्तिकहों तो ही पाही ॥ सावधान सुनुथरुमन  
 मोही ॥ प्रथमभक्तिसन्तनकरसंगा ॥ दूसरि रतिममकथा  
 प्रसंगा ॥ दोहा ॥ गुरुपदपङ्कजसेवातीसरिभक्तिअमान ॥ चौ  
 थिभक्तिममगुणागणकरैकपट ॥ जिगान ॥ ७० ॥ चौपाई ॥  
 मंत्रजापममदृढविश्वासा ॥ पंचमभजनसोवेदप्रकाशा  
 कूटेंदमशीलविरतिवड्कर्म ॥ निरतनिरन्तरसजनथ  
 र्मा ॥ सप्रमसबमोहिमयजगदेखै ॥ मोतेसन्तअधिकक  
 रिलेखै ॥ अष्टमयथा लाभसन्तोषा ॥ सपनेइनदिदेखैप  
 रदोषा ॥ नवमसरलसबसोंकलहीना ॥ ममभरोसजिय  
 दर्षनदीना ॥ नवमहंएकौजिन्हकेंहोई ॥ नारिपुरुषसचरा  
 चरकोई ॥ सोअतिशयप्रियभामिनिमोरे ॥ सकलप्रकारभ  
 क्तिदृढतोरे ॥ योगिवृन्ददुर्लभगतिजोई ॥ तोकहंआजसु  
 लभभईसोई ॥ ममदरशानफलपरमअनूपा ॥ जीवपावनि  
 जसद्वजस्वरूपा ॥ दोहा ॥ सबप्रकारतबभागवतममचर  
 णान्दअनुराग ॥ तबमहिमाजेहिउरबसिहिंतासपरमवत  
 भाग ॥ ७१ ॥ चौपाई ॥ सुनिशुभवचनदर्षकहंपाई ॥ पुनिबो  
 लेप्रभुगिरासहाई ॥ जनकसुताकैसुधिकइंभामिनि ॥ जा  
 नहिंकइकरिवरगामिनी ॥ यस्यासरहिंजाइरघुराई ॥ मुनि  
 वरविपुलरहेजहंकाई ॥ अविमतरुमहिमागुणभारी ॥  
 जीवचराचररहतसखारी ॥ वैरनकरकाहुरनकोई ॥ जास



रामा.  
श्री.  
२०

नवैरप्रीतिकरुसोई॥ शिखरसुहावनकाननफूले॥ खग  
मृगजीवजन्तुअनुकूले॥ करझसफलआश्रमसबजाई॥  
तहेहोइहिंसुग्रीवमिताई॥ सोसबकहहिंदेवरसुवीरा॥ जान  
तइंशुकुतमतिपीरा॥ बारबारप्रभुपदसिरनाई॥ प्रेमसहि  
तसबकथासुनाई॥ **कुन्द**॥ कहिकथासकलविलोकिह  
रिमुखहृदयपदपङ्कजधरे॥ तजियोग्यपावकदेहह  
पादलीनभइजहनहिफिरे॥ ५०॥ नरविविधकर्मअथर्मव  
इमतशोकप्रदसबत्यागइ॥ विष्णुसकरिकहदासतल  
सीरामपदअनुरागइ॥ **दोहा**॥ जातिहीनअवजन्ममहिं  
मुकुकीन्दुअसनारि॥ महामन्दमनसुखचहसिऐसेप्रभु  
हिंविहारि॥ ५१॥ **चौ०**॥ चलेउरामत्यागावनसोऊ॥ अतलि  
तबलनबकेहरिदोऊ॥ विरहीइवप्रभुकरतविषादा॥ कह  
तकथाअनेकसंवादा॥ लक्ष्मणदेखइकाननशोभा॥ देख  
तकेहिकरमनहिनतोभा॥ नारिसहितसबाखगमृगवृन्दा  
मानइमोरिकरतहहिंनिन्दा॥ हमहिंदेखिमृगनिकरपरा  
ही॥ मृगीकहहिंतमकहभयनाही॥ तमआनन्दकरइमृ  
गजाप॥ कञ्चनमृगखोजनएआप॥ सरुलाइकरिणीक  
रिलेही॥ मानइमोहिसिखावनदेही॥ शासुसुचिन्तित  
पुनिपुनिदेखिय॥ भूपसुसेवितबशानहिलेखिय॥ राखि  
यनारियदपिउरमांही॥ युवतीशासुनृपतिवशनाही॥ दे



खड्गतातवसन्तसहावा ॥ प्रियाहीनमोहिभयउपजावा  
 दोहा ॥ विरहविकलबलहीनमोहिजानेसिनिपटअकेल  
 सहितविपिनमधुकरखगन्दमदनकीन्हवगमेल ॥ ३ ॥  
 देखिगपउभ्रातसहिततासहृतसुनिवात ॥ उरादीन्देउम  
 नइतिन्हकटकहटकिमनजात ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ विटपवि।  
 शाललताअरुजानी ॥ विविधवितानदिपजनुतानी ॥ क  
 दलितालवरध्वजापताका ॥ देखिनमोहभीरमनजाका ॥  
 विविधभांतिफूलेतरुनाना ॥ जनुवानेतवनेबडवाना ॥ क  
 डंकडंसन्दरविटपसुहाप ॥ जनुभटविलगविलगहोइ।  
 क्हाप ॥ कूजतपिकमानइगजमाते ॥ टेकमहिषकुंड विस  
 राते ॥ मोरचकोरकीरवरबाजी ॥ पारावतमरालसवताजी ॥  
 तीतरलावापदचरूपा ॥ वरणिनजारमनोजवरूपा ॥ र  
 यगिरिशिलादुन्दभीऊरणा ॥ चातकवन्दीगुणगणवरणा  
 मधुकरमुखभेरीसहनाई ॥ विविधवयारिवसीठीआई ॥ च  
 तरंगिनीसेनसंगलीन्दे ॥ विचरतसबहिंचुनौतीदीन्दे ॥ ल  
 क्षणादेखइकामअनीका ॥ रहहिंधीरतिन्हकैजगलीका  
 पहिंकेएकपरमबलनारी ॥ तेहितेंउबरेसभटसाभारी ॥  
 दोहा ॥ ताततीनिअतिप्रबलखलकामक्रोधअरुलोभ ॥ मु  
 निविज्ञानिधानममकरहिंनिमिषिमहंतोभ ॥ ५ ॥ लोभ  
 केइकादंभवलकामकेकेवलनारि ॥ क्रोधकेपुरुषवचनब



लमुनिवरकरहिंविचारि॥७६॥चौ॥गुणातीतसचराचर  
 स्वामी॥रामउमासबअनरजामी॥कामिन्दकीदीनतादि  
 खार्इ॥पीरकेन्दकेमनविरतिटछार्इ॥क्रोधमनोजमहम  
 दमाया॥कूटहिंसकलरामकीदाया॥सोनरइन्द्रजालल  
 नहिभूला॥जापरहोइसोनटअनुकूला॥उमाकहोंमैअनु  
 भवअपना॥सत्यहरिभजनजगतसबसपना॥पुनिप्रभु  
 गणसरोवरतीरा॥पंथानामसुभगगंभीरा॥सन्तहृदयज  
 सनिर्मलवारी॥बान्येछाटमनोहरचारी॥जहंतहंपिअदि  
 विविधमृगनीरा॥जनुउदारगृहयाचकभीरा॥दो॥पुरइ  
 निसवनओटजलवेगिनपाइयमर्म॥मायाअकृतनदीख  
 जिमिकेबलिनिर्गुणाब्रह्म॥७७॥दो॥सुखीमीनसबएकर  
 सअतिअगाथजलमांदि॥यथाधर्मशीलन्दिकेदिनसुख  
 संयुतजाहिं॥७८॥चौ॥विकसेसरसिजनानारझा॥मधुर  
 सुखरगुंजतबझभृङ्गा॥बोलतजलकुक्कूटकलहंसा॥  
 प्रभुविलोकिजनुकरतप्रसेसा॥चक्रवाकवकखगसमुदा  
 ई॥देखतबनैवरणिनहिजार्इ॥सुन्दरखगगणगिरासुहा  
 ई॥जातपथिकजनुलेतबुलार्इ॥तालसमीपमुनिन्दगृहका  
 प॥चंद्रदिशिकाननविटपसुहाप॥चंपकवज्रलकटंबत  
 माला॥पाटलपनमपलाशरमाला॥नवपलवकसमित  
 तरुनाना॥चंचरीकपटलीकरगाना॥शीतलमटसंगंधसु



भाऊ॥ सन्ततव है मनोहरवाऊ॥ कइं कइं को किलपिकथ  
 निकरंही॥ सुनिरवसरसथानमुनिटरंही॥ दोहा॥ फूलेफ  
 लेविटपसवरहेभूमिनिअराइ॥ परउपकारीपुरुषजिमि  
 नमहिसुसंपतिपाइ॥ ७६॥ चौ॥ देखिरामअतिरुचिरत  
 लावा॥ मजनकीन्हपरमसुखपावा॥ देखेउसुन्दरतरुव  
 रकाया॥ बैठेअनुजसहितरघुराया॥ तहंपुनिसकलदे  
 वमुनिआप॥ अस्ततिकरिनिजधामसिथाप॥ बैठेपरम  
 प्रसन्नकृपाला॥ कहतअनुजसनकथारसाला॥ विरह  
 वल्लभगवन्तहिदेखी॥ नारदमनभाषोचविशेषी॥ मोर  
 शापकरिअंगीकारा॥ सहतरामनानाडखभारा॥ ऐसेप्र  
 भुहिविलोकौंजाई॥ पुनिनवनहिअसअवसरआई॥ यह  
 विचारिनारदकरवीणा॥ गपजहांप्रभुसुखआसीना॥  
 गावतरामचरितमृदुबाणी॥ प्रेमसहितवड्ढभांतिवखानी  
 करतदंडवतलिपउठाई॥ राखेवडीवारउरलाई॥ स्वागत  
 पूकनिकटबैठारे॥ लक्ष्मणसादरचरणपावारे॥ दोहा  
 नानाविधिविनतीकरीप्रभुप्रसन्ननियजानि॥ नारदबो  
 लेवचनतबजोरिसरोरुहपाणि॥ ८०॥ चौपाई॥ सुनइउ  
 दारपरमरघुनायक॥ सुन्दरअगमसुगमवरदायक॥ दे  
 इएकवरमोगोंस्वामी॥ यद्यपिजानतअन्तरजामी॥ जा  
 नइमुनितममोरसुभाऊ॥ जनसनकवड्ढनकरौंदराऊ



समा.  
आ.  
१२

कवनवस्तुअसप्रियमोदिलागी॥ जोमुनिवरनशकइतममा  
गी॥ जनकहंककुअदेयनहिमोरे॥ असविष्ठासतजइजनि  
भोरे॥ तवनारदबोलेहर्षाई॥ असवरमागोंकरोंछिछाई॥ य  
द्यपिप्रभुकेनामअनेका॥ अतिकहअधिकएकतेएका॥ रा  
मसकलनामन्हतेअधिका॥ होउनाथअथखगणावधिका  
दो॥ राकारजनीभक्तितवरामनामसोइसोम॥ अपरनाम  
उडुगणाविमलबशइभक्तउरयोम॥ ५१॥ एवमस्तुमुनिस।  
नकहेउकृपासिंधुरचुनाथ॥ तवनारदमनहर्षअतिप्रभुप  
दनापउमाथ॥ ५२॥ चौपाई॥ अतिप्रसन्नरचुनाथदिंजानी  
पुनिनारदबोलेमृदुवाणी॥ रामजबहिप्रेरेइनिजमाया  
मोहेइमोदिसनइरचुराया॥ तवविवाहचाहोंमैकीन्हा  
प्रभुकेदिकारणाकरैनदीन्हा॥ सुनुमुनितोहिकहोंसहरो  
या॥ भजहिंमोदितजिसकलभरोसा॥ करोंसदातिन्हकीर  
खवारी॥ जिमिबालकदिंराखुमहतारी॥ गदिशिषुवत  
सअनलअदियाई॥ तहंराखेंजननीअरुगाई॥ प्रौढभएते  
दिसतपरमाता॥ प्रीतिकरैनदिपाकिलबाता॥ मोरेप्रौढ  
तनयसमजानी॥ बालकसतसमदासअमानी॥ जिन।  
दिमोरबलनिजबलताही॥ ताकहंकामक्रोधरिपुआही  
यरविचारिपंडितमोदिभजही॥ पापइंज्ञानभक्तिनदित  
जही॥ दोहा॥ कामक्रोधलोभादिमदप्रबलमोहकैथारि



तिन्दमहं प्रतिदारुणा दुखदमाया रूपी नारि ॥ ८२ ॥ चौपाई ॥  
 सुनु मुनिकह पुराण प्रकृति संता ॥ मोह विपिन कहें नारि वसे  
 ता ॥ जपत पने मजला शयजारी ॥ होइ ग्रीष्म शोषे सब नारी  
 काम क्रोध मद मत सरभेका ॥ इन्हि हर्ष प्रद वरषा एका ॥ दु  
 र्वासना ऊ मुद स मुदाई ॥ तिन्ह कहें शरद सदा सुख दाई ॥ धर्म  
 सकल सरसी रुह वृन्दा ॥ होइ हिमति नहि देति दुख मन्दा ॥ पु  
 निममता जवा सब झुताई ॥ बाढ दिनारि शिशिर मृत पाई ॥ पा  
 प उलूकनिकर सुखकारी ॥ नारि निविउ रजनी अंधि आरी ॥  
 बुधि बलशील सत्य सब मीना ॥ बउशी समविय कहहिं प्रवी  
 णा ॥ दोहा ॥ अवगुण मूल मूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि ॥ ता  
 तें कीन्ह निवारण मुनि मै यह जिय जानि ॥ ८४ ॥ चौपाई ॥ सुनि  
 रघुपतिके वचन सुहाए ॥ मुनि तनु पुलकिन यन भरि आए ॥  
 कहइ कवन प्रभु की असरीती ॥ सेवक परम मता अति प्रीती ॥  
 जेन भजहिं स प्रभु भ्रम त्यागी ॥ ज्ञान रंकन रमंद अभागी ॥ पु  
 नि सादर बोले मुनि नारद ॥ सुनइ राम विज्ञान विशारद ॥ सं  
 तन्ह के लक्ष्मण रघुवीरा ॥ कहइ राम भंजन भव भीरा ॥ सुनु  
 मुनि संतन के गुण कहऊं ॥ जेहि तें मै उन्ह के वश रहऊं ॥ षट  
 विकार जित अनव अकामा ॥ अकल अकिंचन शुचि सुख पा मा  
 अमित बोध परमार्य भोगी ॥ सत्य सार कविकोविद योगी ॥  
 सावधान मानद मद हीना ॥ थीर धर्म गति परम प्रवीणा ॥ दोहा



गुणगारसंसारदुखरहितविगतसंदेह॥ तजिममचरण  
सरोजप्रियतिन्दुकहंदेहनगेह॥ ८५॥ चौपाई॥ निजगुण  
सुनतश्रवणसज्जचांदी॥ परगुणसुनतअधिकहर्षांदी॥  
समशीतलनदित्यागहिनीती॥ सरलसुभावसबहिसन  
प्रीती॥ जपतपव्रतदमसेयमनेमा॥ गुरुबिंदविप्रपदप्रेमा  
अद्वातमामरुओदाया॥ मुदिताममपदप्रीतिअमाया॥ विर  
तिविवेकविनयविज्ञाना॥ बोधजथारथवेदपुराणा॥ दंभ  
मानमदकरदिनकाऊ॥ भूलिनदेहिंऊमारगपांऊ॥ गावहि  
सुनहिंसदाममलीला॥ हेतरहितपरहितरतशीला॥ सु  
नुमुनिमाधुन्दकेगुणजेते॥ कदिनसकहिंशारदश्रुतितेते  
कुन्दः॥ कहिषकनशारदशेषनारदसुनतपदपंकजगदे  
असदीनबंधुकृपालुअपनेभक्तगुणनिजमुखकहे॥ ४६॥  
शिरनाश्वारदिवारचरणन्दब्रह्मपुरनारदगये॥ तेथन्यत  
लसीदामआशविहारजेहरिरङ्गरये॥ ५०॥ दोहा॥ राव  
णारियषापावनगावहिंसुनहिजेलोग॥ रामभक्तिदृढपा  
बंदीविनुविगगजपयोग॥ ८६॥ दीपशिखासमपुवतिज  
नमनजनिहोसिपतंग॥ भजदिगमतजिकाममदकरदि  
सदासतसंग॥ ८७॥ इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलि  
कलषविधं सनेविमलवैराग्यसंपादनोनाम तृतीयः सो  
पानः समाप्तः॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु॥ श्रीरामचन्द्राय नमः



ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ किं चिन्हाकार लिख्यते ॥ श्लोक ॥ ॐ  
 फुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामबुभौ ॥ शोभाज्यौव  
 रधन्विनौ प्रतिबुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ॥ मायामानुषरूपिणौ  
 रघुवरौ सद्वर्मवर्मोद्दिता ॥ सीतान्वेषणाततपरौ पथिगतौ भ  
 क्रिप्रदौ देहिनः ॥ १ ॥ ब्रह्मामोयिसमुद्रवंकलिमलप्रथ्वंसने  
 चाव्ययं ॥ श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुन्दरवरं संशोभितं सर्वदा ॥ सं  
 सारामयमेषजंसमभुरं श्रीजानकीजीवनं ॥ धन्यास्ते कृति  
 नः पिवन्ति सततं श्रीरामनामा मृतम् ॥ २ ॥ सोरठा ॥ मुक्तिजन्म  
 महिजानिज्ञानखानि अवहानिकर ॥ जहं वशशंभुभवानि  
 सोकाशीसेइयनकिन ॥ १ ॥ जरतसकलसरवृन्दविषमगर  
 लजेदिपानकिय ॥ तेदिनभजसिमतिमन्दकोकृपालशङ्क  
 रसरिस ॥ २ ॥ चौपाई ॥ आगेचलेबडूरिरघुगई ॥ अष्टमूकपर्व  
 तगयेनियगई ॥ तहंरहसचिवसहितसुग्रीवा ॥ आवतदेवि  
 अतलबलसीवा ॥ अतिसभीतकहसुनुहुमाना ॥ पुरुष  
 पुगलबलरूपनिधाना ॥ थरिवटुरूपदेखतैंजाई ॥ कहेसिमो  
 दिजियसैनबुजाई ॥ पठवावालिहोश्मनमैला ॥ भागोंतरतत  
 जोंयहशैला ॥ विप्ररूपथरिकपितहंगपरु ॥ मायनाइपूकृत  
 असमपरु ॥ कोतमण्यामलगौरशरीरा ॥ लत्रीरूपफिरऊव  
 नचीरा ॥ करिनभूमिकोमलपदगामी ॥ कवनहेतविचाइवन

अंतल  
 ५



स्वामी ॥ मृदुल मनोहर सन्दरगाता ॥ सहत दुसहवन आतप  
वाता ॥ कैतमतीनि देवमहं कोऊ ॥ नरनारायण कैतम दोऊ ॥  
दोहा ॥ जगकारण तारण भवहिं भञ्जन धरणी भार ॥ कैतम  
अविलभुवन पतिलीन्ह मनुज अवतार ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ को।  
शलेश दशरथ के जाए ॥ हम पितवचन मानि बन आए ॥ ना  
म राम लक्ष्मण दोउ भाई ॥ सङ्ग नारि सुकुमारि सह आई ॥ इहां  
हरी निशि चरदै देही ॥ खोजत विप्र फिरहिं हम तेही ॥ आप  
न चरित कहा हम गाई ॥ कहइ विप्र निज कथा बुजाई ॥ प्रभु  
पदि चानि परे गहि चरण ॥ सो मुख उमा जाइ नहि वरण ॥  
पुलकित तनु मुख आवन बचना ॥ देखत रुचिर वेष कै रच  
ना ॥ पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्हा ॥ हर्ष हृदय निज नाथ  
हिं चीन्हा ॥ मै अजान होए प्रकासांई ॥ तमक सपूछु जनकी  
नाई ॥ तब माया वश फिरौं भुलाना ॥ तातैं नहि प्रभु पद पदिचा  
ना ॥ दोहा ॥ एक मन्द मै मोहवश ऊटिल हृदय अज्ञान ॥ पुनि  
प्रभु मोहि विसारेऊ दीन बन्यु भगवान ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ यद्यपि  
नाथ बहू अवगुण मोरे ॥ सेवक प्रभुहिं परै नहि भोरे ॥ नाथ जी  
वतव माया मोहा ॥ सो निस्तरे तमारे हिं कोहा ॥ तौ परमै रचु  
वीर दोहाई ॥ जानौ नहि ककु भजन उपाई ॥ सेवक सत पिता  
मात भगोसे ॥ रदै अणोचबनै प्रभु पोषो ॥ अस कहि चरण परे



अऊलाई ॥ निजतनुप्रगटप्रीतिउरछाई ॥ तवरचुपतिउठाइउ  
 रलाई ॥ निजलोचनजलसीचिंजुआप ॥ सुनुकपिजियजनि।  
 मानेसिऊना ॥ तैंममप्रियलक्षणातेंहना ॥ समदरशीमोहि  
 कहसबकोई ॥ सेवकप्रियअनन्यगतिहोई ॥ दोहा ॥ सोअन  
 न्यअसजाहिकेमतिनटैहनुमन ॥ मैसेवकसचराचररूप  
 राशिभगवन् ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ देखिपवनसुतपतिअनुकूल ॥  
 हृदयहर्षवीतासबशूल ॥ नाथशैलपरकपिपतिरहई ॥ सो  
 सुग्रीवदासतबअहई ॥ तासननाथमइकीजै ॥ दीनजानिते  
 हिअभयकरीजे ॥ सोसीताकरखोजकराईहिं ॥ जहंतहंमर  
 कटकोटिपठाईहिं ॥ इहिविधिसकलकथासमुझाई ॥ लिये  
 दोऊजनपीठचढाई ॥ जबसुग्रीवरामकहंदेखा ॥ अतिशय।  
 जन्मथन्यकरिलेखा ॥ सादरमिलेनाइपदमाया ॥ भेटेअनुज  
 सहितरचुनाया ॥ कपिकेमनविचारयहरीती ॥ करिदहिं।  
 विधिमोसनयेप्रीती ॥ दोहा ॥ तबहनुमन्तउभयदिशिकहिस  
 बकथाबुझाई ॥ पावकसादीदेशकरिजोरीप्रीतिदृढाई ॥ ६ ॥  
 चौपाई ॥ कीन्हप्रीतिककुबीचनराषा ॥ लक्षणासमचरितसब  
 भाषा ॥ कहसुग्रीवनयनभरिवारी ॥ मिलहिंनाथमिथिले  
 शऊमारी ॥ मंत्रिनसहितइहांएकवारा ॥ बैठरहउंमैकरतवि  
 चारा ॥ रागनययदेखीमैजाता ॥ परबशपरीबहुतबिलषा  
 ता ॥ रामरामहा रामपुकारी ॥ ममदिशिदेखीदीन्हपटगरी



मोगागामतरतसोदीन्हा ॥ पटउरलाइ शोचअतिकीन्हा ॥ क  
हसुग्रीवसुनइरबुबीरा ॥ तजइसोचमनआनइधीरा ॥ सब  
प्रकारकरिहोंसेवकाई ॥ जेहिंविधिमिलहिंजानकीआई ॥  
दोहा ॥ साखावचनसुनिहर्षेहिंकृपासिंधुबलसीव ॥ कारणा  
कवनवसइसबमोसनकहइसुग्रीव ॥ ॥ चौपाई ॥ नाथबा  
लिअरुमैहोभाई ॥ प्रीतिरहीककुवरणिनजाई ॥ मयसुतम  
याबीतेहिंनऊं ॥ आवासोप्रभुहमरेगाऊं ॥ अर्द्धरातिप्रहार  
पुकारा ॥ बालिइंरिपुबलसहेनपारा ॥ थावाबालिदेविमो  
भागा ॥ मैपुनिगपउबन्धुसंगलागा ॥ गिरिवरगुहापैठसो  
थाई ॥ बालिमोहितबकहाबुजाई ॥ परषेइमोहिपकपखवा  
रा ॥ नहिआवौतौजानेइमारा ॥ मासदिवसतहंरहेउखरारी  
निसरीरुधिरधारतहंभारी ॥ तबमैनिजमनकीन्हविचारा ॥  
जानातिन्हबंधुकहंमारा ॥ बालिहतेसिमोहिमारिहिंआई ॥  
शिलाहारदेचलेउपराई ॥ मंविन्हपुरदेखाविनुसोई ॥ दीन्हे  
उराजमोहिबरिआई ॥ बालिताहिमारिगृहआवा ॥ देविमोहि  
जियभेदबछावा ॥ रिपुसमानमोहिमारसिभारी ॥ हरिलीन्हे  
सिसर्वस्रअरुनारी ॥ ताकेभयरबुबीरकृपाला ॥ सकलभु  
वनमैफिरेउविहाला ॥ इहांशापवशाआवतनाही ॥ तदपिम  
भीतरहोंमनमाही ॥ सुनिसेवकडुखदीनदयाला ॥ फरकि  
उठेदोउभुजाविहाला ॥ दोहा ॥ सुनसुग्रीवमैमारिहोंबालि



हिं एकहिं बाण ॥ ब्रह्मरुद्रशरणागतद्गणनउबरहिं प्राण  
 चौपाई ॥ जेन मित्र दुख होहिं दुखारी ॥ तिनै विलोकत पातक  
 भारी ॥ निज दुख गिरि समरज कै जाना ॥ मित्र के दुख रज मेर  
 समाना ॥ जिन के अ समति सह जन आई ॥ तेषा ठहठकत क  
 रत मिताई ॥ ऊपय निवारि सुपय चलावा ॥ गुण प्रगटे अब  
 गुण हिंदु रावा ॥ देत लेत मन शंकन थर ही ॥ बल अतु मान स  
 दाहित कर हीं ॥ विपति काल कर शत गुण नेहा ॥ प्रतिक  
 ह सन्त मित्र गुण एहा ॥ आगे कह मृदु वचन बनाई ॥ पाछे अ  
 नहित मन ऊटिलाई ॥ जाकर चित अहि गति सम भाई ॥ अ  
 सक मित्र परिहरे भलाई ॥ सेवक शठ नृप कृपा ऊनारी ॥ क  
 पटी मित्र शूल समचारी ॥ सखा शोचन्या गड बल मोरे ॥ सब  
 विधिकर बकाज मै तोरे ॥ कह सुग्रीव सुन डर बुबीरा ॥ बालि  
 महा बल अति राधीरा ॥ दुन्दुभि अस्थिता लदिवराए ॥ वि  
 नुप्रयासर बुनाय छहाए ॥ देवि अमित बल बाजी प्रीती ॥  
 बालि बधन कर भइ परतीती ॥ बारहिं बार नाइ पदशीसा ॥ प्र  
 भुहिं जानि मन दर्ष कपीशा ॥ उपजा ज्ञान वचन तब बोला ॥ ना  
 य कृपा मन भए अलोला ॥ सख सम्पति परिवार बडाई ॥ सब  
 परिहरि करि हों सेवकाई ॥ यह सब राम भक्तिके बाथ ॥ कह हिं  
 सन्त तब पद अवगथक ॥ शत्रु मित्र दुख सख जग माही ॥ माया  
 कृत परमारथ नाही ॥ बालि परमहित जा सुप्रसादा ॥ मिले दरा



मतमशामनविषादा ॥ सपनेजेहिसनहोइलराई ॥ जागेस  
 मुजतमनसेऊचाई ॥ अबप्रभुकृपाकरइयहिंभांती ॥ सबत  
 जिभजनकरोंदिनराती ॥ सुनिविरागसेपुतकपिबाणी ॥  
 बोलेविहंसिरामथनुपाणी ॥ जोककुक्कहेउसत्यसबसोई ॥  
 सखावचनमममृषानहोई ॥ नटमरकटइवसबहिंनचावत  
 रामावगेशवेदग्रसगावत ॥ लैसुग्रीवसेगरनुनाथा ॥ चले  
 चापशायकगहिहाथा ॥ तवरनुपतिसुग्रीवपठावा ॥ गर्ज  
 सिजाइनिकटबलपावा ॥ सुनतबालिकक्रोधातरपावा ॥  
 गहिकरचरणनारिसमुजावा ॥ सुनुपतिजिनहिंमिलासुग्री  
 वा ॥ तेदोउबन्युतेजबलसीवा ॥ कोशलेशसुतलक्ष्मणरामा  
 कालइजीतिशकहिंसेग्रामा ॥ दोहा ॥ कहाबालिसुनुभीरुप्रि  
 यसमदरशीरनुनाथ ॥ जौंकदोपिमोदिमारिहैंतौपुनिहोव  
 सनाथ ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ असकहिचलामहाअभिमानी ॥ तृण  
 समानसुग्रीवहिंजानी ॥ भिरेउभयबालिअतितर्जा ॥ मुष्टिक  
 मारिमहाधनिगर्जा ॥ तवसुग्रीवविकलहोइभाग ॥ मुष्टिप्र  
 हारबनुसमलागा ॥ मैजोकहारनुबीरकृपाला ॥ बंधुनहोइमो  
 रयदकाला ॥ एकदूपतमभ्रातादोऊ ॥ तेहिअमतेनहिमारेउ  
 सोऊ ॥ करपरणासुग्रीवशरीरा ॥ तनुभाऊलिशागईसबपीरा  
 मेलीकाएदसमनकैमाला ॥ पठवापुनिवलदेइविणाला ॥ उ  
 निनानाविधिभईलराई ॥ विटपओटदेखहिंरघुराई ॥ दोहा ॥



बद्धकलबलसुग्रीवकरिहृदयहारिभयमानि॥ मारावा  
 लिहिरामतबहियेमाऊशरतानि॥१०॥ **चौपाई॥** पराविक  
 लमहिशरकेलागे॥ पुनिउठिवैठदेखिप्रभुआगे॥ प्रणाम  
 गातसिरजटाबनाय॥ अरुणानयनशरचापचढाय॥ पुनि  
 पुनिचितैचरणचितदीन्हे॥ सफलजन्ममानाप्रभुचीन्हे  
 हृदयप्रीतिमुखवचनकदोरा॥ बोलाचितैरामकीओरा॥  
 धर्महेतुअवतरेऊगोसाँई॥ मारेऊमोहिबाधकीनाई॥ मै  
 बैरीसुग्रीवपिआरा॥ कारणाकवननाथमोहिमारा॥ अ  
 नुजवधूभगिनीसुतनारी॥ सुनुशठयेकन्यासमचारी॥  
 इन्हेऊठष्टिविलोकैजोई॥ ताहिबयेककुपापनहोई॥ मूढ  
 तोहियतिशयअभिमाना॥ नारिशिखावनकरेसिनकाना  
 ममभुजबलआश्रिततेहिजानी॥ माराचहसिअथमअभि  
 मानी॥ **बोहा॥** सुनऊरामस्वामीसुभगचलनचातरीमोरि  
 प्रभुअजडंमैपातकीअनकालगतितोरि॥११॥ **चौपाई॥** सु  
 नतरामअतिकोमलबाणी॥ बालिशीमपरसउनिजपा  
 णी॥ अचलकरोंतनुराखऊआणा॥ बालिकहासुनुकृपा  
 निधाना॥ जन्मजन्मपुनियतनकराही॥ अन्तरामकहि  
 आवतनाही॥ जासुनामबलशंकरकाशी॥ देतसबहि  
 समगतिअविनाशी॥ ममलोचनगोचरसोआवा॥ बद्धरि  
 किप्रभुअमवनहिबनावा॥ **कुन्द॥** सोनयनगोचरजासुग



रामा.  
कि.  
५

एनितनेतिकहिप्रतिगावही॥ जीतिपावनमनगोचर  
सकरिमुनिध्यानकवडंकपावही॥१॥ मोहीजानिअतिअ  
भिमानवशाप्रभुकहेउराबुशारीरही॥ असकवनशरद्वि  
दटिकाटिसरतरुवारिकरहिंकरही॥२॥ अबनाथकरि  
करुणाविलोकइदेयहवरमोगऊं॥ जेहिंयोनिजनमोक  
र्मवशातहेरामपदअनुगऊं॥ यहतनयममसमविन  
यवलकल्याणपदप्रभुदीजियै॥ गहिवांहरसरनरनाहअ  
इददामआपनकीजियै॥५॥ दोहा॥ रामचरणदृष्टीति  
करिबालिकीन्हतनुत्याग॥ समनमालजिमिकारतेंगि  
रतनजानैनाग॥१॥ चौपाई॥ रामबालिनिजयामपगवा॥  
नगरलोकसबव्याऊलपावा॥ नानाविधविलापकरतारा  
कूटेकेशनदेहसमारा॥ ताराविकलटेखिरबुगया॥ दी  
न्हजानहरिलीन्हीमाया॥ तितिजलपावकगगनसमीरा  
पंचरचितयहअथमशरीरा॥ प्रगटसोतनुतबआगेसोवा  
जीवकेहिकेदिलगितमरोवा॥ उपजाज्ञानचरणतबला  
गी॥ लीन्हेसिरपरमभक्तिवरमोगी॥ उमादारुयोधितकी  
नाई॥ सबदिनचावतरामगोसोई॥ तबसुग्रीवहिंआयस  
दीन्हा॥ मृतककर्मविधिवतसबलीन्हा॥ रामकहाअनुज  
हिंसमजाई॥ राजदेइसुग्रीवहिंजाई॥ रघुपतिचरणनाइ  
करिमाया॥ चलेसकलप्रेरितरघुनाथा॥ दोहा॥ लक्ष्मणा



तरतबुलावपपरजनविप्रसमाज॥ राजदीन्दसुग्रीवक  
 हैअरुदकहैयुवराज॥ १३॥ चौपाई॥ उमारासमसहितजग  
 माही॥ गुरुपितमातबन्धुकोउनाही॥ सरनरमुनिसबके  
 यहरीती॥ स्वारथलागिकरैसबप्रीती॥ बालिनासब्याऊ  
 लदिनराती॥ तनुविवरणचिंताजरक्काती॥ सोसुग्रीवकी  
 न्हकपिराऊ॥ अतिकोमलरसुवीरसभाऊ॥ येसेप्रभुकहै  
 जोपरिहरही॥ काहेनविपतिजालनरपरही॥ पुनिसुग्री  
 वहिंलीन्हबुलाई॥ बड़प्रकारनृपनीतिसिखाई॥ कहप्र  
 भुसुनुसुग्रीवहरीणा॥ पुरनजाउं दशचारिवरीषा॥ गत  
 ग्रीषमवरषाअतआई॥ रहिहोंनिकटशैलपरछाई॥ अरु  
 दसहितकरहतमराऊ॥ सन्ततहृदयपरैऊममकाऊ॥  
 तबसुग्रीवभवनफिरिआए॥ रामप्रवर्षणगिरिपरछाप  
 दोहा॥ प्रथमहिंदेवनगिरिगुहाराखीरुचिरबनाई॥ रामकृ  
 पानिधिककुंकदिनवासकरहिंगेआई॥ १४॥ चौपाई॥ सु  
 न्दरवनऊसुमिततरुशोभा॥ गुंजतचंचरीकमधुलोभा॥  
 कन्दमूलफलपत्रसहाये॥ भयेबड़तजबतेप्रभुआये॥ दे  
 विमनोहरशैलअनूपा॥ रहेतहांअनुजसहितसरभूषा  
 मंगलरूपभप्रवनतबते॥ कीन्हनिवासरमापतिजबते॥  
 मधुकरखगमुगतनुपरिदेवा॥ करहिंसिद्धमुनिप्रभुकैसे  
 वा॥ स्फटिकशिलाअतिप्रभुसहाई॥ सावयासीनतहांदो



रामा.  
कि.  
५

उभाई॥ कहत अरु जसन कथा अनेका॥ भक्ति विरति नृप  
नीति विवेका॥ वरषा काल मेवन भक्ता प॥ गरजत लागत प  
रम सहार॥ दोहा॥ लक्ष्मणा देखइ मोरगाणा चतवारि द  
पेखि॥ गृही विरति रत हर्ष जश विस्मृ भक्त कहं देखि॥ १५॥  
चौपाई॥ वन वमाउ न भगरजत घोरा॥ प्रिया हीन उर पत म  
न मोरा॥ दामिनि दमकि रहे वन मांही॥ खल कै प्रीति यथा  
थिर नाहीं॥ वरषा हिंजल दभूमि निअराये॥ यथानम हिं बु  
ध विया पाये॥ विन्दु आवात सहै गिरि कै से॥ खल के वचन  
सन्त सहै जै से॥ लखन दी भरि चलि उतराई॥ जश घोरे थन  
खल वौराई॥ भूमि परत भाजा वरपानी॥ जिमि जीव हिं मा  
या लपटानी॥ सिमिटि सिमिटि जल भरै तलावा॥ जिमि स  
दगुण सजन पहें आवा॥ सरिता जल जल निधि सहें जाई  
होइ अचल जिमि जन हरि पाई॥ दोहा॥ हरित भूमि तरा सं  
कुल समुजि परै नहि पम्य॥ जिमि पाषाण विवाद ते गुप्त भ  
पसद गम्य॥ १६॥ चौपाई॥ दादुर धनि चङ्ग ओर सहार॥ वेद  
पढै जनु बटु समुदाई॥ नव पलव भेविट प अनेका॥ साथ  
क मन जश होइ विवेका॥ अर्क जवा सपात बिनु भएऊ॥ ज  
स सराज्या खल उय मगएऊ॥ खोजत कत डं मिलै नहि धूरी  
करै कोथ जिमि धर्म हिं दूरी॥ सस्य संपन्न सोहम हिं कै से॥  
उपकारी की संपति जै से॥ निशित मथन खद्योत विराजा॥



जनुदम्भिनकरमिलासमाजा ॥ महावृष्टिचलिफूटिकियारी  
 जिमिस्वतेत्रहोइविगारहिंनारी ॥ कृषीनिगवहिंचतरकृषाना ॥  
 जिमिबुधतजहिंमोहमदमाना ॥ देखियचक्रवाकखगनाही ॥  
 कलिहिंपाइजिमिथर्मपराही ॥ ऊसरवरषेतएनहिजामा ॥  
 सनहृदयजसउपजनकामा ॥ विविधजन्तुसंजलमहिभाजा ॥  
 बढेप्रजाजिमिपाइसराजा ॥ जहेतहेपथिकरहेथकिनाना ॥  
 जिमिशुद्धियगणउपजेज्ञाना ॥ दोहा ॥ कबहुं प्रबलचलमारुत  
 जहेतहेमेवविलाहिं ॥ जिमिऊतऊलऊयजेसंपतिधर्मन  
 साहिं ॥ १० ॥ कबहुं दिवसमहंनिबीउतमकबहुंकप्रगटपतहुं  
 उपजैविनशेज्ञानजिमिपाइससहुंऊसहुं ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ वर्षा  
 विगतशरदअतआई ॥ देखहुलक्ष्मणपरमसुहाई ॥ फूलेका  
 शसकलमहिह्वाई ॥ जनुवर्षाहुतप्रगटबुढाई ॥ उदितअगस  
 त्यपन्यजलशोषा ॥ जिमिलोभहिंशोषैसन्तोषा ॥ सरितासर  
 जलनिर्मलसोहा ॥ सनहृदयजसगतमदमोहा ॥ रसरसशो  
 षसरितसरपानी ॥ ममैत्यागकरहिंजिमिज्ञानी ॥ जानिसरद  
 अतखंजनआए ॥ पाइसमयजिमिसकृतसहाए ॥ पङ्कनरे  
 एगसोहअसथरणी ॥ नीतिनिपुणनृपकेजसकरणी ॥ जलसं  
 कोचविकलभेमीना ॥ अबुधऊदुम्बीजिमिथनहीना ॥ विनुव  
 ननिर्मलसोहअकाशा ॥ जिमिहरिजनपरिहरसवआशा ॥  
 कहुंकहुंवृष्टिपारदीयोरी ॥ कोउएकपावभक्तिजिमिमारी ॥  
 दोहा ॥ चलेदधतजिनगरनृपतापसवणिकरिबारि ॥ जिमिह



रामा.  
कि.  
६

रिभक्तिपाइ अमृत जहिं आश्रमी वारि ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ सुखीमी  
नजहं नीर अगाथा ॥ जिमि हरि शरण न पकौ बाधा ॥ फूले कम  
ल सोह सरकै से ॥ निरुं गावस सगुण भए जैसे ॥ गुंजत मधुकर  
निकर अतृणा ॥ सुन्दर खगर वनाना रूपा ॥ चक्रवाक मन दुखा  
निशि पेखी ॥ जिमि दुर्जन पर संपति देखी ॥ चातकर टत तृषा  
अति ओही ॥ जिमि सुख लहै न शङ्कर दोही ॥ शरदा तपनि  
शि शशि अपहरई ॥ सनदर शजिमि पात कटरई ॥ देवहिं विधु  
चकौर समुदाई ॥ चितवहिं हरि जन हरि जिमि पाई ॥ मशक न  
शाबी तेहि मत्रासा ॥ जिमि दिज द्रोह किये ऊलनाशा ॥ दोहा ॥  
भूमि जीव संजल रहे गण शरद अतृणा ॥ सतगुरु मिले जाहिं  
जिमि संशय भ्रम समुदाई ॥ २० ॥ चौपाई ॥ वर्षागत निर्मल अ  
तृणाई ॥ सुधिन तात सीता की पाई ॥ एकवार कै से उं सुधि पावों  
काल इंजीति निमिष महं ल्यावों ॥ कत इंर है जो जीवत होई ॥  
तात यतन करि आनौ सोई ॥ सुग्रीव इं सुधि मोरि विसारी ॥ पा  
वारज कोष पुरनारी ॥ जेहिं शायक मै मारा बाली ॥ तेहिं शर  
द तों मूछ कहं काली ॥ जासु कृपा कूटै मद मोहा ॥ ता कहं उमा  
कि सपने इं कोहा ॥ जानहिं यह चरित्र मुनि जानी ॥ जिन्ह रघु  
वीर चरण रति मानी ॥ लत्मान क्रोध वन प्रभु जाना ॥ धनुष  
चछा उगहे करवाणा ॥ दोहा ॥ तव अनुज हिंस मुजा वार घुप  
निकरणा सीव ॥ भय देवाइ लैं आवइ तात माया सुग्रीव ॥ २१ ॥  
चौपाई ॥ रहोय वन सत हृदय विचार ॥ राम काज सुग्रीव वि



सा ॥ निकट जाइ चरणान सिरनावा ॥ चारिहु विधितेहि कहि  
 समुजावा ॥ सुनि सुग्रीव परम भयमाना ॥ विषय मोर हरिली  
 नहु जाना ॥ अब मारुत सुत हत समूहा ॥ पठवहु जहंत हंवा  
 नरगूहा ॥ कहेहु जमदग्निवन जोई ॥ मोरे करता करवथ हो  
 ई ॥ तबहु नुमन बुला पदता ॥ सब कर करि मन मानवहुता ॥  
 भय अरु प्रीति नीति दिखराइ ॥ चले सकल चरणानि सिरनाइ  
 तेहि अवसर लक्ष्मण पुर आय ॥ क्रोध देखि जहंत हं कपि थाप  
 दोहा ॥ यत्र घच छाइ कहा तब जारिक रौं पुर द्वार ॥ व्याकुल न  
 गर देखित वयाप उवालि कुमार ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ चरणानाइ सिर  
 विनती कीन्हा ॥ लक्ष्मण अभय बांह तेहिं दीन्हा ॥ क्रोध वल्ल  
 क्ष्मण सुनिकाना ॥ कह कपीश अति भय अकुलाना ॥ सुनुह  
 नुमन सकलै तारा ॥ करि विनती समजा उकुमारा ॥ तारा सहि  
 त जाइहु माना ॥ चरणानि प्रभु सुग्रीव वावा ॥ करि विन  
 ती मन्दिर लै आय ॥ चरण पखारि पलङ्ग वैठाप ॥ तब कपीश  
 चरणान सिरनावा ॥ गहि भुज लक्ष्मण कण्ठ लगावा ॥ नाथ वि  
 षय सम सदक कुनाही ॥ सुनि मन मोह करै तण माही ॥ सु  
 नत विनीत वचन सुख पावा ॥ लक्ष्मण तेहि बड विध समुजा  
 वा ॥ पवनत नय सब कथा सुनाई ॥ जेहि विध गयेहुत समुदाई  
 दोहा ॥ हर्षि चले सुग्रीव तव अङ्ग दादिक पिमाथ ॥ राम अत्र  
 जया गों किये आय जहं रघुनाथ ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ नाइ चरणान सिर



रामा.  
कि.

कहकरजोरी॥ नाथ मोहि ककुना दिन खोरी॥ अति शय प्रब  
ल देवत वमाया॥ कूटत बहिं करज्जबदाया॥ विषय विवश  
सरनर मुनि स्वामी॥ मैणामर पशुक पि अतिकामी॥ नारिन य  
न शरजा दिन लागा॥ महाघोर निशि सों वत जागा॥ लोभ पा  
श जेहि गरन बधाया॥ सोनर तम समानर चुराया॥ वह गुण  
साधन तेन हि होई॥ तमहरी कृपा पाव कोइ कोइ॥ तबर चुप  
ति बोले मुसकाई॥ तम प्रिय मोहि भरत जि मि भाई॥ अब सो  
इयतन करज्ज मन लाई॥ जेहि विथ सीता की सुधि पाई॥ दोहा  
इहि विथ होत बत कही आए वानर गूथ॥ नाना वरणा अतल  
बल देविय की शवरूथ॥ २४॥ चौपाई॥ वानर कटक उमा मे  
देवा॥ सो मूरख जो किय चह लेखा॥ आइ राम पटना वदि माया  
निर विवदन सब होहिं मनाया॥ अस कपि एकन सेना माही॥  
राम ऊशल पूछा जेहि नाही॥ यहन ककु कप्रभु के अधिकारी  
विश्वरूप व्यापकर चुराई॥ ठाछे जहैं तहें आय सपाई॥ कहि  
सुग्रीव सबहिं समुजारी॥ राम काज अरु मोरनि होरा॥ वानर गू  
थ जाइ चहुं बोरा॥ जनक सुता कहें खोज जाई॥ मास दिवस  
महं आयेइ भाई॥ अब थिमे टिजो विनु सुधि पाये॥ अब सिम  
रिहिं सोम मकर आये॥ दोहा॥ बचन सुनत सब वानर जहैं तहें  
चले तरन॥ तब सुग्रीव बुलाए अरु दादि हनुमन्त॥ २५॥  
चौपाई॥ सुनइ नील अरु दहनु माना॥ जाख बंत मति थीर स



जाना ॥ सकलसुभटमिलिदतिगाजाहू ॥ सीतासुधिपूकु  
 डसबकाहू ॥ मनवचक्रमसोयतनविचारेड ॥ रामचन्द्रकर  
 काजसम्बारेड ॥ भानुपीठसेइयउरआगी ॥ स्वामीसेइयसब  
 कुलत्यागी ॥ तजिमायासेइयपरलोका ॥ मिटैसकलभवसं  
 भवशोका ॥ देहधरेकरयहफलभाई ॥ भजियरामसबकाम  
 विहाई ॥ पाछेंपवनतनयसिरनावा ॥ जानिकाजप्रभुनिकट  
 बुलावा ॥ आयसुमांगिचरणसिरनाई ॥ चलेहर्षिसुमिरतरवु  
 राई ॥ स्पर्शाशीससरोरुहपाणी ॥ करमुद्रिकादीन्हजनिजा  
 नी ॥ बडप्रकारसीतहिसमुजायेड ॥ कहिवलवीर्यवेगितम  
 आयेड ॥ हनुमन्तजन्मसुफलकरिजाना ॥ चलेहृदयधरिकु  
 षानिधाना ॥ यद्यपिप्रभुजानतसबवाता ॥ राजनीतिराखत।  
 सरजाता ॥ दोहा ॥ चलेसकलवनखोजतसरितासरगिरिखो  
 रामकाजलयलीनमनविसरातनकरकोइ ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ क  
 तडंढोइनिमिचरसनभेटा ॥ प्राणलेंदिपकपकचपेटा ॥ बड  
 प्रकारगिरिकाननहेरहिं ॥ कोउमुनिमिलैताहिसबघेरहिं ॥  
 लागितषाअतिशयअऊलाने ॥ मिलैनजलवनगहनभुलाने  
 तबहनुमानकीन्हअनुमाना ॥ मरणचहतसबविनुजलपाना  
 चछिगिरिशिखरचडदिशिदेखा ॥ भूमिविवरएककौतक  
 पोखा ॥ चक्रवाकबकहंसउजाही ॥ बडतेकखगप्रविशहिंतेदि



माही॥ गिरितेउतरपवनसुतआवा॥ सबकहंलैसोविवर  
 दिखावा॥ आगेकरिहनुमन्तहिलीन्हा॥ पैटेविवरबिलम्ब  
 नकीन्हा॥ दोहा॥ देखिजाउउपवनसुभगसरविकसेबकंज  
 मन्दिरएकरुचिरतहांबैठिनारितपपुत्र॥ २० ॥ चौपाई॥ हरि  
 दितेंतेहिसवसिरनावा॥ पूछेसिनिजवृत्तान्तसुनावा॥ त  
 वतेशकहाकरइजलपाना॥ खाइसरससुन्दरफलनाना॥  
 मजनकीन्हमधुरफलखाए॥ तासुनिकटपुनिसबचलि।  
 आप॥ तेउसबआपनिकयासुनाई॥ मैअवजावजहांरघुआई  
 मूढइनयनविवरतजिजाहू॥ पैहइसीतहिजनिकटराइ  
 नयनमूंदितबदेखहिंवीरा॥ बाढेसकलमिंथुकेतीरा॥  
 सोपुनिगईजहांरघुनाथा॥ जाइकमलपदनाएसिमाथा॥  
 नानाभांतिविनयतेइकीन्ही॥ अनपावनिभक्तिप्रभुदीन्ही॥  
 दोहा॥ बढीवनकहंमोगईप्रभुआजापरिशीस॥ उरपरिगम  
 चरणपुगजोवन्दितअजई॥ २१ ॥ चौपाई॥ इहांविचारकपि  
 न्दमनमाही॥ बीतीअवधिकाजककुनाही॥ सबमिलिकहहिं  
 परस्परगाता॥ विनुसुधिलियेकरवकाआता॥ कहअइन्द  
 लोचनभरिवारी॥ दुइप्रकारभइमृत्युहमारी॥ इहांनसुधिसी  
 तांकरपाई॥ उहागयेमारिहिकपिराई॥ पितावधेपरमारत  
 मोही॥ राखारामनिहोरनबोही॥ पुनिपुनिअइन्दकहसबपा



ही॥ मरणाभयोककु संशयनाही॥ असकहिलबाणसिंभुत  
 टजाई॥ बैठकपीसबदर्भउसाई॥ जाम्बवन्तअरुददुखदेखी॥  
 कहीकथाउपदेशविशेखी॥ तातरामकहंनरजनिमानऊ॥  
 निर्गुणाब्रह्मअजितअजजानऊ॥ हमसबसेवकअतिवउभागी  
 सन्ततसगुणाब्रह्मअनुगामी॥ दोहा॥ निजइच्छाअवतरेउप्रभु  
 सरदिजगोमहिलागि॥ सगुणाउपासकरहहिंसबमोक्षस  
 कलसखत्यागि॥ २५॥ चौपाई॥ इहिविधिकहतभयवडभांती  
 गिरिकन्दरासनासंघाती॥ बाहिरहोइदेखेसबकीशा॥ मोहि  
 आहारदीन्हजगदीशा॥ आजसबन्हकहंभक्षणाकरऊं॥ दिन  
 वडचलेआहारविनुमरऊं॥ कबडनमिलेभरिउदरआहारा॥  
 आजदीन्हविधिपकहिवारा॥ उरपेगृध्रवचनसुनिकाना॥ अ  
 वभामरणासत्यहमजाना॥ कपिसबउठेगृध्रकहंदेखी॥ जाम्ब  
 वन्तमनशोचविशेखी॥ कहविचारअरुदमनमांदी॥ धन्यज  
 टायुसरिसकोउनाही॥ रामकाजकारणातनुत्यागी॥ हरिपुर  
 गयेउपरमवउभागी॥ सुनिखगदर्षशोकपुतबाणी॥ आवा  
 निकटकपिन्हभयमानी॥ ताहिदेखिसबचलेपराई॥ टाछकी  
 न्हतेइशायपदिवाई॥ तिन्हैअभयकरिप्रछेसिजाई॥ कथास  
 कलतिन्हताहिसनाई॥ सुनिसंघातिबन्धुकीकराणी॥ रघुप  
 तिमदिमावडविधवरणी॥ दोहा॥ मोहिलैचलदसिंभुतटदेउ॥

यऊलराग  
 ६



रामा.  
कि.  
५

तिलांजलिताहि॥ बचनसहायकरवमैपैहइखोजइजाहि  
३०॥ चौपाई॥ अनुजक्रियाकरिसागरतीरा॥ कहनिजकथासु  
नइकपिबीरा॥ हमदोउबन्युप्रथमतरुणाई॥ गगनगयेउंर  
विनिकटउडाई॥ तेजनसहिसकसोफिरिआवा॥ मैअभिमानि  
रविहिनिअरावा॥ जरेपंखरवितेजअपारा॥ परेउंभूमिकरि  
घोरचिकारा॥ मुनिएकनामचन्द्रमाबोही॥ लागीदयादेखि  
करिमोही॥ बइप्रकारतिन्हजानसिखावा॥ देहजनितअभि  
मानकुडावा॥ वेताब्रह्ममनुजतनुपरिहैं॥ तासुनारिनिशिच  
रपतिहरिहैं॥ ताहिखोजपठउबप्रभुहता॥ तिन्हैमिलेतमहो  
वपुनीता॥ जामिदिपंखकरसिजनिचिन्ता॥ तिन्हैदेखाइदेव  
तैंसीता॥ मुनिकैगिरासत्यभईआजू॥ सुनिममवचनकरइ  
प्रभुकाजू॥ गिरिविकूटऊपरवसलइ॥ तहंरहरावणसह  
जअशकु॥ तहांअशोकवाटिकाअहई॥ सीतावैदितहंशोच  
तिरहई॥ दोहा॥ मैदेखौंतमनाहिनगृध्रहिंदहिअपार॥ बूढ  
भएउनतोकरितेउंककुसहायतम्हार॥ ३१॥ चौपाई॥ जोलां  
वेषातयोजनसागर॥ करैसो रामकाजमतिआगर॥ जोकोइक  
रैरामकरकाजू॥ तेहिसमथन्यआननहिआजू॥ मोहिविलो  
किथरइमनपीरा॥ रामकृपाकसभयेउपारीरा॥ पापिउजा  
करनामसुमिरिहो॥ अतिअपारभवसागरतरही॥ तासुहृतत



मतजिकदराई॥ रामहृदयपरिकरऊपाई॥ असकहिउमागु  
 भजवगयेऊ॥ सबकेमनअतिविस्मयभयेऊ॥ निजनिजबल  
 सबकाहूभाषा॥ पारजानकरसंशयराखा॥ जटभयेउअबक  
 हेउअदोषा॥ नहितनुरहाप्रथमबललेखा॥ जबहिविविक्रम  
 भयेउखरासी॥ तबमैतरुणारहाबलभारी॥ दोहा॥ बलिबाधतप्र  
 भुवाछेऊसोतनुवरणिनजाइ॥ उभयवरीमहंदीन्हमैसातप्रद  
 क्षिणथाइ॥ ३२॥ चौपाई॥ अरुदकहाजाउंमैपारा॥ जियसंशय  
 ककुफिरतीवारा॥ जाम्बवन्तकहतमसबलायक॥ किमिपठवों  
 सबहीकरनायक॥ कहाअक्षयतिसुनुहुमाना॥ काचुपसा  
 थिरहाबलवाना॥ पवनतनयबलपवनसमाना॥ बुद्धिविवेकवि  
 ज्ञाननिधाना॥ कौनसोकाजकदिनजगमाही॥ जोनहितातहो  
 रतमपाही॥ रामकाजलगितवअवतारा॥ सुनिकपिभयउपव  
 ताकारा॥ कनकवरणातनुतेजविराजा॥ मानअंघपरगिरन्हक  
 रराजा॥ सिंहनादकरिवारहिवारा॥ लीलहिलांवोंजलनिधि।  
 खारा॥ सहितसहायरावणाहिंमारी॥ आनोइहांत्रिकूटउपारी  
 जाम्बवन्तमैपूछोंतोही॥ उचितशिखावनदीजैमोही॥ इतना  
 करऊताततमजाई॥ सीतहिंदेखिकहोंसुधिआई॥ तबनिज  
 भुजबलराजिवनयना॥ कौतुकलागिसऊकपिसयना॥ कन  
 कपिसेनसंगसंघारिनिशिचररामसीतहीआनिहैं॥ त्रैलोक्य



10

[illegible]



रामाखंजगदीश्वरं सरगं माया मनुष्यं हरिं ॥ वन्दे हं करुणाकरं रघुवरं भूषणलचूडामणिम् ॥ तुटी ३

ॐ श्री श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुन्दरकाण्ड लिख्यते ॥

श्लोक ॥ शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ब्र  
ह्मशम्भुफलीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ॥ १ ॥ नान्य  
स्पृहारघुपते हृदये स्मदीये सत्यं वदामि च फवानखिला  
नरान्तत्मा ॥ भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गवनिर्मगमे कामादिदोष  
रहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥ अतलितबलधामं स्वर्णशेलाभदे  
हं दनुजबनकृशां तु ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥ सकलगुणानि  
धानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदत्तं वातजातन्ममामि ॥ ३ ॥  
चौपाई ॥ जाम्बवन्तके वचनसहाये ॥ सुनिहतमानहृदयप्र  
तिभाये ॥ तबलगिमोहिपरे खड्गभाई ॥ सहिदुखकन्दमूलफ  
लखाई ॥ जबलगि आवों सीतहि देषी ॥ होइ काजमनहर्षवि  
शेषी ॥ असकहि नारपवनकहं माया ॥ चलेउरर्षिहियथरि  
रघुनाथा ॥ सिन्धुतीर एक सुन्दरभूधर ॥ कौतुककूदिचढे ते  
हिऊपर ॥ बारवार रघुवीरसंभारी ॥ तरकेउपवनतनयबलभा  
री ॥ जेहि गिरिचरणदेउरनुमन्ता ॥ सोचलिगयेउपतालतर  
न्ता ॥ जिमिअमोघरघुपतिके बाणा ॥ पहीभांतिचलाहउमा  
ना ॥ जलनिधिरघुपतिदूतविचारी ॥ तैमैनाकहोउअमहारी  
होहा ॥ हउमानतेहिपरसिकरपुनितेहि कीन्दप्रणाम ॥ राम  
काजकीन्दे विनामोहिकहं विश्राम ॥ ॥ चौपाई ॥ जातपवन  
सतदेवनदेवा ॥ जानेचहं बलबुद्धिविशेषा ॥ सरसानामअदि



रामा.  
स.  
१

नकैमाता॥ पठईन्हिआइकहीतेहिवाता॥ आजसुरनमो  
हिदीन्हअहारा॥ सुनिहंसिबोलपवनऊमारा॥ रामका।  
जकरिफिरिमैआवों॥ सीताकरसुधिप्रभुहिसुनावों॥  
तबतबवदनपैदिहौआई॥ सत्यकहोंमोहिजानदेमाई॥ क  
वनिअयतनदेशनहिजाना॥ यससिनमोहिकहाहनुमाना  
योजनभरितेहिंवदनपसारा॥ कपितनकीन्हदियुणावि।  
सारा॥ सोरहयोजनमुखतेइंठपऊ॥ तरतपवनसुतवती  
सभपऊ॥ जसजससुरसावदनबछावा॥ तासुद्विगणक  
पिरूपदिखावा॥ शतयोजनतेइआननकीन्हा॥ अतिल  
चुरूपपवनसुतलीन्हा॥ वदनपैदिपुनिवाह॥ रआवा॥  
मांगीविद्याताहिसिरनावा॥ मोहिसुरन्हजेहिलागिपटा  
वा॥ बुधिवलमर्मतोरमैपावा॥ दोहा॥ रामकाजसबक  
रिहइतमवलबुद्धिनिधान॥ आशिषटैसरसागयीहधि  
चलेहनुमान॥ २॥ चौपाई॥ निशिचरिपकसिंधुमहंरहई  
करिमायानभकेखगगहई॥ जीवजन्तजेगगनउडांही॥ ज  
लविलोकितिनकीपरिक्कांही॥ गहैछादशकशोनउडा  
ई॥ इदिवियमदागगनचरखार्इ॥ सोईकुलहनुमानतेकी।  
न्हा॥ तासुकपटकपितरितहिंचीन्हा॥ तादिमारिमारुतसु  
तबीरा॥ कारिधिपारगपउमतिपीरा॥ ताहंजाइदेखीवनशो  
भा॥ गुंजतचंचरीकमधुलोभा॥ नानातरुफलफूलसहाये



खगमृगवृन्ददेखिमनभाए॥ शैलविशालदेखिएकआ  
 गे॥ तापरकूदिचढेउभयत्यागे॥ उमानककुकिपीकीअ  
 थिकारै॥ प्रभुप्रतापजोकालहिवारै॥ गिरिपरचढिले  
 कातेरदेवी॥ कहिनजाअतिदुर्गविशेषी॥ अतिउतअज  
 लनिथिचडंपाशा॥ कनककोटकरपरमप्रकाशा॥ **क**  
**न्द॥** कनककोटविचित्रमणिकृतसुन्दरायतअतिचुना  
 चौहट्टहट्टसबट्टवीथीचारुपुरबडविधवन॥ **१॥** गजवा  
 जिखचरनिकरपदचररथवरुथनिकोगनै॥ बडरूप  
 निशिचरएअतिबलसेनवरणातनहिवनै॥ **२॥** बनवा  
 गउपवनवाटिकासररूपवापीसोहंदी॥ नरनागसरग  
 न्धर्वकन्यारूपमुनिमनमोहंदी॥ **३॥** कडंमलदेहविशा  
 लशैलसमानअतिबलगर्जंदी॥ नानाअखारहभिरहिं  
 बडविधएकएकन्हितर्जंदी॥ **४॥** करियतनभटकोटिह  
 विकटतनुनगरचडंदिशिरघंदी॥ कडंमदिषमानुषपेउ  
 खरअजखलनिशाचरभलंदी॥ **५॥** इहिलागितलसीदा  
 सअनकीकणामंदेपहिकही॥ रघुवीरशरतीरथसरितत  
 नुत्यागिगतिपैहैंसही॥ **६॥ दोहा॥** ररखवारेदेखिवडक  
 पिमनकीन्हविचार॥ अतिलघुरूपथरौंनिशिनगरकरौं  
 पैसार॥ **७॥ कोपारै॥** मशकसमानरूपकपिथरी॥ लंका  
 चलेसुमिरिनरदरी॥ नामलङ्किनीएकनिशिचरी॥ सो



रामा.  
सं  
२

कहचलेसिमोहिनिरदरी॥जानसिनाहिंमर्मशठमोरा  
मोरआहारलंकाकरचोरा॥शुद्धिकाएकताहिकपिहनी॥  
रुथिरबमतथराणीढनमनी॥पुनिसंभारिउठीसोलंका॥  
जोरिपाणिकरिविनयसशंका॥जबरावणाहिंब्रह्मवर  
दीन्हा॥चलतविरंचिकहामोहिचीन्हा॥विमलहोसिज  
वकपिकेमारे॥तबजानेसिनिशिचरसंहारे॥तातमोरअ  
तिपुण्यवद्धता॥देखेउंनयनरामकरहुता॥दोहा॥तातस  
र्गअपवर्गसखथरियतलाएकअरु॥तलैनताहिसक  
लमिलिजोसखलवसतसरु॥४॥चौपाई॥प्रविशिन  
गरकीजैसबकाजा॥हृदयरविकोशलपुरराजा॥गरल  
सुधारिपुकरैमितार्ई॥गोपदसिंधुअनलसितलाई॥गरु  
असमेरुरेणसमताही॥रामकृपाकरिचितवहिजाही  
अतिलघुरूपथरेउहनुमाना॥पैठानगरसुमिरिभगवाना  
मन्दिरमन्दिरप्रतिकरिशोभा॥देखाजहंतहंअगीणितयो  
भा॥गयेउटशाननमन्दिरमाही॥अतिविचित्रकहिजात  
सोनाही॥शयनकिण्देखाकपितेही॥मन्दिरमहंनदीख  
वैदेही॥भवनएकपुनिदीखसहावा॥हरिमन्दिरतहंभि  
न्ववनावा॥रामनामअंकितगृहशोहा॥वरणिनजाइदेवि  
मनमोहा॥दोहा॥रामायुथअङ्कितगृहशोभावरणिन  
जाइ॥नवतलसीकेचुन्दबडदेविवर्षकपिरा॥५॥चौ॥



लंका निशि चरनि करनि वासा ॥ इहां कहां सजन करवासा  
मनमहंत कर्क करण कपिलागे ॥ ताही समय विभीषण जागे  
राम राम तेहि समिरण कीन्हा ॥ हृदय हर्ष कपि सजन ची  
न्हा ॥ इहि सन हठि करि हों यहि चानी ॥ साधु ते होइन कारज  
हानी ॥ विप्र रूप धरि बचन सुनावा ॥ सुनत विभीषण उठि  
तहं आवा ॥ करि प्रणाम पूकी ऊपलार्थ ॥ विप्र कहइ नि  
ज कथा बुजाई ॥ कीतम हरि दासन मे कोई ॥ मोरे हृदय प्रीति  
अति होई ॥ कीतम राम दीन अनुरागी ॥ आयेइ मोहि कारण  
बड भागी ॥ दोहा ॥ तब हनुमन्त कही सब राम कथा निज ना  
म ॥ सुनत युगल तनु पुलक अति मगन समिरि गुण ग्राम  
६ ॥ चौपाई ॥ सुनइ पवन सतरहनि हमारी ॥ जिमि दशानन्द  
महजी भविचारी ॥ तात कबहुं मोहि जानि अनाथा ॥ करि  
हिं कृपा भानु कुलनाथा ॥ ताम सतनु ककुसाधन नाही ॥ प्री  
तिन पद सरोज मन मांही ॥ अब मोहि भाभरो सहनु मना ॥ १  
विनु हरि कृपा मिलि नहि मना ॥ जौ रघुवीर अनुगृह कीन्हा  
तो तम मोहि दरश रहि दीन्हा ॥ सुनइ विभीषण प्रभु कैरी ती  
करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥ कहइ कवन मै परम ऊलीना ॥  
कपि चञ्चल सब ही विधि दीना ॥ प्रात लेइ जो नाम हमारा ॥  
ता दिन ता दिन मिलै अहार ॥ दोहा ॥ अस मै अथम साखस  
नु मोह पर रघुवीर ॥ कीन्ही कृपा समिरि गुण भरे विलोचन



रामा.  
सं.  
३

नीर ॥ चौपाई ॥ जानतइं प्रसस्वामि विसारी ॥ फिरिते का  
हेन होहिं दुखारी ॥ इहिविथ कहत राम गुण ग्रामा ॥ पाव  
न प्रवण सुखद विप्रामा ॥ पुनिसव कथा विभीषण कही  
जेहिविथ जनक सुता जहं रही ॥ तबहु मन्त्र कहा सुवभा  
ता ॥ देखा चहों जानकी माता ॥ युक्ति विभीषण सकल सुना  
ई ॥ चल उपवन सुत विदा कराई ॥ करि सो रूप गये उपनि त  
हंवा ॥ वन प्रशोक सीतारहि जहंवा ॥ देखि मनहि मन की  
न्ह प्रणामा ॥ बैठे कीति जात निशियामा ॥ कृपातनु शीस ज  
टा एक बेणी ॥ जपति हृदय रघुपति गुण प्रेणी ॥ दोहा ॥ नि  
जपदनयन दियें मन राम चरण महं लीन ॥ परम दुखी भाप  
वन सुत निरखि जानकी दीन ॥ चौपाई ॥ तरु पलव महं र  
हा लुकाई ॥ करै विचार करों का भाई ॥ तेहि प्रवसर रावण त  
हंवा ॥ सरूना रिबड़ कि एवनावा ॥ बड़ विथ खल सीत  
हिं समुजावा ॥ साम दाम भय भेद दिखावा ॥ कहावणा  
सुन सुमुखि सयानी ॥ मन्दोदरी आदि सब राणी ॥ तब प्र  
वचरी करों पण मोरा ॥ एक बार विलोकु मम ओरा ॥ तण थ  
रि ओट कहति वैदेही ॥ सुमिरि प्रवध पति परम सनेही ॥ सु  
चदश मुख खयो दप्रकाश ॥ कबहुं किनलिनी करहिं वि  
कासा ॥ असमन समुजति कहति जानकी ॥ खल सुथिन दि  
रघुवीरवाण की ॥ शठ शूने हरि आने सि मोही ॥ अथ मनिल



जलाजनहितोही ॥ दोहा ॥ आपुहि सुनिखयोत समराम  
 हिंभातु समान ॥ पुरुषवचन सुनिका छिप्रसिवोला अति  
 रिसिआन ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ सीता तैं ममकृत अपमाना ॥ काटों  
 तव सिर कठिन कृपाणा ॥ नाहित सपदि मातु मम बाणी  
 सुमुखि होत न तु जीवन हानी ॥ प्रणाम सरोज दाम सम सु  
 न्दर ॥ प्रभु भुज करिकर सम दशकंधर ॥ सो भुज कंठ कित  
 बअसिवोरा ॥ सुनु शठ असप्रमाण पण मोरा ॥ चन्द्रहास  
 हरु मम परितापा ॥ रघुपति विरह अनल सन्तापा ॥ शीतल  
 निशित बअसिवर थारा ॥ कह सीता हरु मम दुख भारा ॥ सु  
 नत वचन पुनि मारण थावा ॥ मयत नया कहि नीति बुजावा  
 कहेसि सकल निशि चरन्हि बुलाई ॥ सीतहि बड विधवा स  
 ड्जाई ॥ मासदिवस महे कहान माना ॥ तौ मै मारव कठिन कृ  
 पाणा ॥ दोहा ॥ भवन गयउ दशकंधत बइहां निशाचरि वृन्द  
 सीतहि त्रास दिखावंदी थर दिं रूप बड् मन्द ॥ १० ॥ चौपाई ॥  
 विजयानाम राक्षसी एका ॥ रामचरण रतनि पुण विवेका ॥  
 सबहि बुलाई सुनायेसि सपना ॥ सीतहि सेइ करौ हित अप  
 ना ॥ सपने बानर लंका जारी ॥ यातु धान सेना सब मारी ॥ खर  
 आरु छन गन दशशीसा ॥ मुंडित शिर खंडित भुज बीसा ॥  
 पहि विथ सोद तिगा दिशि जाई ॥ लंकाम न डं विभीषण पाई  
 नगर फिरी रघुवीर दोहाई ॥ तव प्रभु सीता बोलि पढाई ॥ ११ ॥



रामा.

सं.

४

संस्कृत

५

सपनामैकहोंविचारी॥ होइ है सत्यगपें दिनचारी॥ तासुव  
चनसुनितैं सबउरी॥ जनकसुताकेचरणान्धिपरी॥ दोहा॥  
जहांतहोंगरतरितसबसीताकेमनशोच॥ मासदिवसबी  
तेमोहिमारिहिंनिशिचरपोच॥ १॥ चौपाई॥ विजटासनबो  
लीकरजोरी॥ मातविपतिसंगिनितैमोरी॥ तजोंदेहकरू  
वेगिउपाई॥ दुसहविरहअवनहिंसहिंजाई॥ आनुकाठरा  
चुचितावनाई॥ मातअनलतमदेइलगार्ई॥ सत्यकरइम  
मप्रीतिसयानी॥ सुनैकीश्रवणशूलसमवाणी॥ सुनतब  
चनपदगहिसमुजावा॥ प्रभुप्रतापबलसुयशसुनावा॥ नि  
शिनअनलमिलु राजकुमारी॥ असकहिसोनिजभवनसि  
थारी॥ कहसीताविधिभाप्रतिकूला॥ मिलैनपावकमिटैन  
शूला॥ देवियतप्रगटगगनअंगारा॥ अबनिनआवतए  
कौतारा॥ पावकमयशशिसुवतनआगी॥ मानइंमोहिजा  
निहतभागी॥ सुनइविनयममविटपअशोका॥ सत्यनाम  
करूहरूममशोका॥ नूतनकिशलयअनलसमाना॥ देइ  
अगिनिममकरइनिदाना॥ देविपरमविरहाकुलसीता॥  
सोतणकपिहिकल्पसमवीता॥ सोरठा॥ कपिकरिहृदय  
विचारदीन्हमुद्रिकाउरितब॥ जनुअशोकअरुदीन्हद  
धिउदिकरगहेउ॥ २॥ चौपाई॥ तबदेखीमुद्रिकामनोहर॥  
रामनामअंकितअतिसोहर॥ चकितचितैमुद्रिकपहिचानी



हर्षविषादहृदयग्रजलानी॥ जीतिकोशकैअजयखुरा  
 ई॥ मायातेअसरचीनजाई॥ सीतामनविचारकरनाना॥ म  
 पुरवचनबोलेहनुमाना॥ रामचन्द्रगुणवरणानलागे॥ सु  
 नतहि सीताकरदुखभागे॥ लागीसुनेअवणामनलाई॥ आ  
 दिहिंतेसबकथासुनाई॥ तबहनुमन्निकट<sup>लग</sup>चयेऊ॥ फिरि  
 बैठीमनविस्मयभयेऊ॥ रामहूतमैमातृजानकी॥ सत्यशप  
 थकरुणानिधानकी॥ यहमुद्रिकामातृमैआनी॥ दीन्हरा  
 मतमकहंसहिदानी॥ नरवानरहिंसंगकइकैसे॥ कहीक  
 थासंगतिभइजैसे॥ दोहा॥ कपिकरवचनसप्रेमसुनिउपजा  
 मनविश्वास॥ जानामनक्रमवचनयहकृणसिंधुकरदास॥  
 चौपाई॥ हरिजनजानिप्रीतिअतिबाढी॥ सजलनयनपुल  
 काबलिटाढी॥ बूडतविरहजलधिहनुमाना॥ भयेइतातमो  
 कहंजलयाना॥ अबकइऊशालजाउंबलिहारी॥ अनुजसहि  
 तसखभवनखरागी॥ कोमलचित्तकृणालखुराई॥ कपि  
 केहिहेतथरीनिदुराई॥ सहजवानिसेवकसखदायक॥ क  
 बइंकमोहिसुमिरतरुनायक॥ कबइंनयनममशीतल  
 ताता॥ होइहिंनिरविस्माममृदुगाता॥ वचननआवनयन  
 भरिवारी॥ अहोनाथमोहिनिपटविसारी॥ देविविरहव्याऊ  
 लअतिसीता॥ बोलेउकपिसुदुवचनविनीता॥ मातृऊशाल



रामा.  
सं.

प्रभुअनुजसमेता॥ तबडुखडुखीसोकृपानिकेता॥ जन  
नीजनिमानइमनऊना॥ तमतेप्रेमरामकहंहना॥ दोहा  
रघुपतिकेसन्देशअवसुनुजननीधरिधीर॥ असकहिक  
पिगङ्गदभपभरेविलोचननीर॥ १५॥ चौपाई॥ रामवियो।  
गकहासुनुसीता॥ मोकहंसकलभपउविपरीता॥ नूत  
नकिशलयमनइंकृशानू॥ कालनिशासमनिशिशा।  
शिभानू॥ ऊबलयविपिनऊनवनसरिसा॥ वारिदतप्र  
तेलजनुवरिषा॥ जेहिंतरुरहोंकरतसोपीरा॥ उरगस्यास  
समविविधसमीरा॥ कहेइतेडखवटिककुहोई॥ काहि  
कहोंयहजाननकोई॥ तत्वप्रेमकरममअरुतोरा॥ जान  
तप्रियाएकमनमोरा॥ सोमनसदारहततोहिपांही॥ जा  
नुप्रीतिरसपतनेहिमांही॥ प्रभुसन्देशसुनतवैदेही॥ मग  
नप्रेमतनुसुधिनहितेही॥ कहकपिहृदयधीरथरुमाता॥  
समिरिरामसेवकसखदाता॥ उरआनइरघुपतिप्रभुताई  
सुनिममवचनतजइविकलाई॥ दोहा॥ निशिचरनिक  
रपतरुसमरघुपतिबाणकृशानू॥ जननीहृदयेधीरथ  
रुजरेनिशाचरजानू॥ १६॥ चौपाई॥ जोंरघुवीरहोतअधि  
पाई॥ करतेनहिविलम्बरघुगई॥ रामबाणरविउदयजान  
की॥ तमवरूपकहंजातयानकी॥ अबहिंमातमैजातले



वार्ह॥ प्रभुआयसुनहिंरामदोहाई॥ ककु कदिवसजननीथ  
 रुथीरा॥ कपिन्हसहितपेहैंरुवीरा॥ निशिचरमारितम  
 हिंलेजैहैं॥ तिहेंपुरनारदादियशरीहैं॥ हैसुतकपिसबत  
 महिसमाना॥ यातथानभटअतिबलवाना॥ मोरेहृदयपर  
 मसन्देहा॥ सुनिकपिप्रगटकीन्हनिजदेहा॥ कनकभूथरा  
 कारशरीरा॥ समरभयङ्करअतिबलथीरा॥ सीतामनभरो  
 सतबभपऊ॥ पुनिलचुरूपपवनसुतलपऊ॥ दोहा॥ सुनु  
 माताशाखासृगहिंनदिवलबुद्धिविशाल॥ प्रभुप्रतापतेग  
 रुउहीखाइपरमलचुबाल॥ १५॥ चौपाई॥ मनसन्तोषसुन  
 तकपिबाणी॥ तनुअतिपुलकनयनछरुपानी॥ भक्तिप्रता  
 पतेजबलसानी॥ आशिषदीन्हरामप्रियजानी॥ अजरअम  
 रगुणनिधिसुतहोइ॥ करइसदारचुनायकछोइ॥ करिहिं  
 कृपाप्रभुअससुनिकाना॥ निर्भरप्रेममगनहनुमाना॥ वार  
 वारनावहिंपदशीसा॥ बोलेवचनजोरिकरकीशा॥ अबहु  
 तकृत्यभपउंमैमाता॥ आशिषतबअमोघविव्याता॥ सुनि  
 यमातमोदिअतिशयभूखा॥ लागिदेखिसंदरफलरूखा  
 सुनसुतकरहिंविपिनरखवारी॥ परमसुभटरजनीचरभा  
 री॥ करभयमातामोदिनाही॥ जौतमसखमानइमन  
 माही॥ दोहा॥ देखिबुद्धिवलविपुलकपिकहाजानकीजा  
 इ॥ रघुपतिचरणहृदयधरितातमथरफलखाइ॥ १६॥ चौपाई॥



रामा.  
सं.  
६

चलाना ३ सिर पै डे उवागा ॥ फल खाएत रुतोर नलागा ॥  
रहेत हां बड़ भटर खवारे ॥ ककु मारे ककु जा ३ पुकारे ॥ ना  
य एक आवा कपि भारी ॥ तेई अशोक वाटिका उजारी ॥ खा  
ए सि फल अरु विट पउ पारे सि ॥ जहेत हं पट कि पट कि भ  
ट मारे सि ॥ सुनि रावण पठ ए भट नाना ॥ तिन्ह दिंदे विग  
र जाहु माना ॥ सब रजनी चर कपि संचारे ॥ गण पुकारत क  
कु अथ मारे ॥ पुनि पठ वाते अत ऊमारा ॥ चला सऊ लै स  
भट अपारा ॥ आवत दे वि विट पग हित जा ॥ ताहि निपाति  
महा धनि गर्जा ॥ दोहा ॥ ककु मारे सि ककु मर्दे सि ककु क  
मिला ए सि चुरि ॥ ककु पुनि जा ३ पुकार प्रभु मर्कट भट ब  
ल भूरि ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ सुनि सुत बथल क्लेश रिणाना ॥ पठ  
वामे चनाट बलवाना ॥ मारे सि जिनि सुत बांये सिताही ॥ दे  
वों की शक हां कर आही ॥ चला इन्द्र जित अतलित योथा ॥  
बनुनि धन सुनि उपजा क्रोथा ॥ कपि देखा दारुण भट आ  
वा ॥ कट कटा ३ गर्जा अरु थावा ॥ अति विशाल तरु एक उपा  
रा ॥ विरथ की न्हल क्लेश ऊमारा ॥ रहे महा भट ताके सऊ ॥  
गहि गहिक पि मर्दे सि निज अऊ ॥ तिन्ह निपाति ताहि स  
नवाजा ॥ भिरे युगल मान डंग जराजा ॥ मुषिक मारि चण  
तरु जाई ॥ ताहि एक तण मूर्खा आई ॥ उरि बहोरि की न्हे सि ब  
हु माया ॥ जोति न जा ३ प्रभु न जाया ॥ दोहा ॥ ब्रह्म अस्त ते-



हिंसाया कपि मन कीन्ह विचार ॥ जौ न ब्रह्म शरमानौ महिमा  
 मिटै अणार ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ब्रह्म बाण तेहिं कपि कहं मारा ॥ पर  
 तेइ वार कटक संवारा ॥ तेहिं जाना कपि मूर्खित भएऊ ॥ नाग पा  
 श बांधत तब भएऊ ॥ जा सुनाम जपि सुनइ भवानी ॥ भव बन्ध  
 न काटहिं न रजानी ॥ ता सुहृत किवन्धन तरु आवा ॥ प्रभु कार  
 ज लगि आ पुबंधावा ॥ कपि बन्धन सुनि निशि चरथाए ॥ कौत  
 क लगि सभालै आए ॥ दशमुख सभा दीख कपि जाई ॥ कहिन  
 जाइ ककु अति प्रभुताई ॥ कर जौ रे सरदिशि पविनीता ॥ भृऊ  
 टि विलोकहिं सकल सभोता ॥ देखि प्रताप न कपि उर शंका ॥  
 जिमि अहि गण महंगरु उअ शंका ॥ दोहा ॥ कपि हिं विलोकि  
 दशानन बिहंसा कहि डुबाद ॥ सतवध सरति कीन्ह पुनि उप  
 जाइ दय विषाद ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ कहलं केश कवन तैं कीशा ॥ के  
 हि केवल चालेहि बनावीशा ॥ कीयौं अवण सुने दिन दि मोही  
 देखौं अति अशंक शठ तोही ॥ मारे सि निशि चर केहि अणराथा  
 कइ शठ तो दिन प्राण कीवाथा ॥ सुन रावण ब्रह्माण्ड निकाया  
 पाइ जा सबल विरचित माया ॥ जा केवल विरचि हरि ईशा ॥ पा  
 लत हरत सृजत दशशीसा ॥ जावलणी सपरे सह सानन ॥ अ  
 णउ कोष समेत गिरिकानन ॥ थरे जो विविध देह सरजाता ॥ त  
 म सेशठ शिखावन दाता ॥ हर को दंड कटिन जेइ भंजा ॥ तोहि  
 समेत नृपदल मदगंजा ॥ खरदूषण त्रिशिरा अरुवाली ॥ बभे



रामा.

सु.

सकलप्रतलितवलशाली॥**दोहा**॥ जाकेवललवलेश।  
तेंजितेउंचराचरजारि॥ तासुहतहोंजाहिकीहरिआनेअप्रिय  
नारि॥२॥**चौपाई**॥ जानोंमैतम्हारिप्रभुताई॥ सहसबाहुसन  
परीलराई॥ समरबालिसनकरिजसपावा॥ सुनिकपिव।  
चनविहंसिवहलावा॥ खायेउंफलमोहीलागीभूखा॥ कपि  
सुभावतेंतोरेउंरूखा॥ सबकेदेहपरमप्रियस्वामी॥ मारहिं  
मोहिऊमारगामी॥ जिन्हमोहिमारातेहिमैमारा॥ तेहि  
परवांयेउतनयतम्हारा॥ मोहिनककुवांयेकरलाजा॥ की  
न्हचहोंनिजप्रभुकरकाजा॥ विनतीकरोंजोरीकरावगा॥  
सनइमानतजिमोरशिषावगा॥ देखइतमनिजहृदयविचा  
री॥ भ्रमतजिभजइभक्तभयहारी॥ जाकेउरअतिकालउराई  
जोसुरअसुरचराचरखाई॥ तामोंवैरकवडंनहिकीजै॥ मोरे  
कहेजानकीदीजै॥**दोहा**॥ प्रणतपालरघुवंशमणिकरूणा  
सिंधुखरारि॥ गणशरणप्रभुराखिहैंतबअपराधविसारि॥  
**चौपाई**॥ रामचरणपंकजउरथरह॥ लंकाअचलराजतमक  
रह॥ अषिपुलसत्ययशविमलमयंका॥ तेहिऊलमहंज  
निहोसिकलंका॥ रामनामविनुगिरानसोहा॥ देखुविचा  
रित्यागिमदमोहा॥ सबभूषणभूषितवरनारी॥ बसनहीन  
नहिसोहसगरी॥ रामविमुखसेपतिप्रभुताई॥ जाइरहीपाइ  
विउपाई॥ सजलसजेहिसरितानाही॥ वरषिगणप्रनितबहिं

२



सुखाही ॥ सुनुदशकंडकहों पणरोपी ॥ रामविमुखजातान  
 हिकोपी ॥ शंकरसहविस्मयजतोही ॥ शकहिनराखिरामा  
 करद्रोही ॥ दोहा ॥ मोहमूलबद्धशूलप्रदत्यागद्वतमग्रभिमा  
 न ॥ भजद्वरामरचुनायकहिंकृपासिंधुभगवान ॥ २१ ॥ चौपाई  
 ययपिकहीकपिअतिहितवाणी ॥ भक्तिविवेकविरतिनय  
 सानी ॥ बोलाविहंसिअथमग्रभिमानी ॥ मिलाहमहिंकपि  
 गुरुबउजानी ॥ मृत्निकटआईखलतोही ॥ लागेसिअथम  
 शिखावनमोही ॥ उलटाहोरकहाहुमाना ॥ मतिभ्रमतोदि  
 प्रगटमैजाना ॥ सुनिकपिवचनबद्धतरिसिआना ॥ वेगिन  
 दूरउमूढकराणा ॥ सुनतनिशाचरमारणाथाये ॥ सचिव  
 न्दसहितविभीषणाआये ॥ नाइशीसकरिविनयबद्धता ॥ नी  
 तिविरोधनमारियहता ॥ आनदेउककुकरियगोसोई ॥ सब  
 हीकहतमंत्रभलभई ॥ सुनतविहंसिबोलादशकंधर ॥ अ  
 गभंगकरिपटबद्धबन्दर ॥ दोहा ॥ कपिकरममतापूकपर  
 सबहिंकहासमुजार् ॥ तेलबोरिपटबांधिप्रनिपावकदेइल  
 गाइ ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ पूकहीनबंदरजबजाइदि ॥ तबशठनिज  
 नाथहिलेआइदि ॥ जिन्हकैकीन्देसिअमितबडाई ॥ देखों  
 पोंतिन्हकैप्रभुताई ॥ वचनसुनतकपिमनमुसकाना ॥ भई  
 सहायशारदमैजाना ॥ यातथानसुनिगवाणवचना ॥ लागे  
 रचनमूढसोइरचना ॥ रहाननगरवसनचुततेला ॥ बाणी



रामा.  
सं.  
८

४

पूछ कीन्ह कपिलेला ॥ कोतक कहं आप् पुरवासी ॥ मारहिं  
चरण करहिं बज्रहंसी ॥ वाजहिं छोल देहिं सबतारी ॥ नगर  
फेरि पुनि पूछ प्रजारी ॥ पावक जरत देवि हनुमन्ता ॥ भयउ  
परमलघु रूप तरन्ता ॥ निबू किच छेउ कपिकनक अरारी ॥  
भये स भीत निशाचरजारी ॥ दोहा ॥ हरि प्रेरित तें हि अबसर  
बहे पवन उनचाश ॥ अट्टहास करि गर्जहिं कपि बछिलाशु  
आकाश ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ देह विशाल परम हरु आई ॥ मंदिर  
ते मंदिर चढि जाई ॥ जरे नगर भेलोग बेहाला ॥ लपट ऊप  
ट बज्र कोटि कराला ॥ तात मात सब करहिं प्रकारा ॥ एहि अ  
बसर कोहम हिउ बारा ॥ हम जो कहायह कपिन हि होई ॥ बा  
नर रूप थरे सर कोई ॥ साधु अबज्ञा कर फल पेसा ॥ जरे नग  
र अनाथ कर जैसा ॥ जाग नगर निमिषि एक माही ॥ एक वि  
भीषणा को गृह नाही ॥ ताकर दूत अनल जें उमिर जा ॥ जगन  
मोते दि कारागिरि जा ॥ उलटि पलटिलें का सबजारी ॥ क  
दि परात बसिंधु मजारी ॥ दोहा ॥ पूछ बुजार्खो उअम थरि  
लघु रूप बहोरि ॥ जनक सुता के आगे ठाढ़ भयउ कर जोरि  
चौपाई ॥ मात मोहि दी जै ककुचीन्हा ॥ जै सें रघुनाथ क मो  
हि दीन्हा ॥ चूडामणि उतारित बट पऊ ॥ हर्ष समेत पवन सु  
तल पऊ ॥ कहेइ तात तम मोर प्रणामा ॥ सब प्रकार प्रभु पू  
रा का मा ॥ दीन दयाल विरद समारी ॥ हरइ नाथ मम सं

२६



कटभारी॥ तातशक्रसुतकथासुनायेइ॥ बाणप्रतापप्रभु  
 हिंसमुजायेइ॥ मासदिवसमहं नाथनआपइ॥ तौपुनिमो  
 हिजियतनहिपायेइ॥ कइकपिकेहि विथराखों प्राणा॥  
 तमइं तातकहतअवजाना॥ तमहिदेखिशीतलभइछाती  
 पुनिमोकहंसोइदिनसोइराती॥ दोहा॥ जनकसुतहिंसमु  
 जाइकरिवइविथपीरजदीन्ह॥ चरणकमलसिरनाइकपि  
 गमनरामपदंकीन्ह॥ २३॥ चौपाई॥ चलतसहाधनिगरजे  
 उभारी॥ गर्भसवेउसुनिनिशिचरनारी॥ लोचिसिंधुएहिपा  
 रहिंआवा॥ शब्दकिलकिलाकपिन्हसुनावा॥ हर्षेसबवि  
 लोकिहनुमाना॥ नूतनजन्मकपिनतवजाना॥ मुखप्रसन्न  
 तनुतेजविराजा॥ कीन्हेसिरामचन्द्रकरकाजा॥ मिलेसकल  
 अतिभयेसुखारी॥ तलफतमीनपावजनुवारी॥ चलेहर्षि  
 रघुनायकपासा॥ पूकृतकहतवलइतिहासा॥ तवमधुव  
 नभीतरसबआप॥ अइदसहितमधुरफलखाप॥ राखवारे  
 तववरजनलागे॥ मुष्टिप्रहारकरतसबभागो॥ दोहा॥ जाइपु  
 कारेसकलनेवनउजारुघुवराज॥ सुनिसुग्रीवहर्षकपिक  
 रियायेप्रभुकाज॥ २४॥ चौपाई॥ जौनहोतसीतासुधिपाई॥  
 मधुवनकेफलसकहिंकेखाई॥ एदिविथमनविचारकरु  
 राजा॥ आइगपकपिसहितसमाजा॥ आइसबहिंनावापद  
 शीरा॥ मिलेसबहिअतिप्रेमकपीशा॥ पूकेउरुशलऊश

हिमाल



रामा.  
सं.  
५

लपटदेवी॥ रामकृपाभाकाजविशेषी॥ नाथकाजकीन्देउ  
हनुमाना॥ राघेसकलकपिन्हकराणा॥ सुनिसुग्रीववद्भरि  
उदिमिलेऊ॥ कपिन्हसहितरघुपतिपहंचलेऊ॥ रामकपिन्ह  
जवआवतदेवा॥ कियेकाजउरहर्षविशेषा॥ स्फटिकशिलावे  
टदोउभाई॥ परेसकलकपिचरणनजाई॥ दोहा॥ प्रीतिसहित  
भेटेसकलरघुपतिकरुणापुंज॥ पूछेउऊशलनाथअवऊ  
शलदेविपटकंज॥ २५॥ चौपाई॥ जाम्बवन्तकहसुनरघुरा  
या॥ जापरनाथकरइतमदाया॥ ताहिसदाशुभऊशलनि  
रन्तर॥ सुनरघुनिप्रसन्नतेहिऊपर॥ सोविजयीबिनयीग  
णसागर॥ ताससयशत्रैलोकउजागर॥ प्रभुकीकृपाभय  
उसबकाजू॥ जन्महमारसफलभाआजू॥ नाथपवनसतकी  
न्हजोकराणी॥ सोमुखलतइंजारनवरणी॥ सुनिकृपालु  
उदिरुदयलगाये॥ जानिसुभटरघुपतिमनभाये॥ कइइंता  
तकेहिभांतिजानकी॥ रहनिकरतिरदासप्राणाकी॥ दोहा॥  
नामपाहरुदिवसनिशिथ्यानतम्हारकपाट॥ लोचननिज  
पदयंत्रिकाप्राणाजाहिकेहिवाट॥ ३०॥ चौपाई॥ चलतमोहि  
चूडामणिदीन्हा॥ रघुपतिरुदयलारतेहिलीन्हा॥ नाथगुग  
ललोचनभरिवारी॥ वचनकहेउककुजनकऊमारी॥ अनु  
जसमेतगहेइप्रभुचरण॥ दीनबंधुप्रणतारतिहरणा॥ मन  
क्रमवचनचरणअनुरागी॥ केहिअपराधनाथमोहिन्यागी॥



अब गुण एक मोर मै जाना ॥ विकुरत प्राण न कीन्ह प्रयाना ॥  
 नाथ सो नयन न्ह कर अघराथा ॥ निसरत प्राण करहिं हठि बाधा  
 विरह अनल तनु तूल समीरा ॥ आस जरे क्षण मां ह शरीरा ॥ नय  
 न सवै जल निज दित लागी ॥ जरै न पाव देह विरहागी ॥ सीता  
 कै अति विपति विशाला ॥ विनहिं कहे भल दीन दयाला ॥ दो०  
 निमिष निमिष करुणायतन जादिक लप शत बीति ॥ बेगि च  
 लिय प्रभु आनियै भुज बल खल दल जीति ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ सुनि  
 सीता दुख प्रभु सुख अघना ॥ भरि आए जल राजीवन यना ॥ व  
 चन काय मन मम गति जाही ॥ सपने अं विपति किचा हिय ता  
 ही ॥ कहहु नुमान विपति प्रभु सोई ॥ जब तब सुमिरण भजन  
 न होई ॥ केतिक बांत प्रभु पात धान की ॥ बेगि च लिय आनियै  
 जान की ॥ सुनु कपितोहि समान उपकारी ॥ नहि कोउ सरन र  
 मुनितनु धारी ॥ प्रसुपकार करौं का तोरा ॥ मन मुख होइ न श  
 कत मन मोरा ॥ सुनु कपितोहि उरिणामें नाही ॥ देखे उं करि  
 विचार मन मांही ॥ पुनि पुनिक पिहिं चितव सरजाता ॥ लो  
 चन नीर पुलक अति गाता ॥ दोहा ॥ सुनि प्रभु वचन विलोकि  
 मुख हृदय दर्पहु मन ॥ चरण परेउ प्रेमाऊ लजादि जादि  
 भगवन्त ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ बारबार प्रभु चहत उरावा ॥ प्रेम मग  
 न तेहि उठवन भावा ॥ प्रभु पद पङ्कज कपि करशी शा ॥ सुमि  
 रि सो दशा मगन गौरी शा ॥ सावधान मन करि पुनि शङ्कर ॥



रामा.  
सु.  
१०

लागे कहन कथा अतिसुन्दर ॥ कपि उदाय प्रभु हृदय लगा ॥  
वा ॥ करगहि परम निकट बैठावा ॥ कइ कपि रावण पालित ले  
का ॥ केहि विषद हे उदुर्ग गति बंका ॥ प्रभु प्रसन्न जाना हनु मा  
ना ॥ बोले वचन विगत अभिमाना ॥ शाखा मृग कै बडि मनु सा  
ई ॥ शाखा तें शाखा पर जाई ॥ लोचि सिन्धु हाटक पर जा रा ॥ नि  
शि चरगा वधि विपिन उजारा ॥ सो सब तब प्रता पर चु राई ॥ ना  
थन ककु क मोर प्रभु ताई ॥ दोहा ॥ ता कहं प्रभु ककु अगमन दि  
जा परत म अतुल ॥ तब प्रता पवडवान लहिं जारि सकै खल  
तल ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ नाथ भक्ति तब अति अनपावनि ॥ देइ क  
पा करि शिव मन भावनि ॥ सुनि प्रभु परम सरल कपि वाणी ॥  
एवमस्त तब कहै उभावानी ॥ उमारा म सुभाव जिन्ह जाना ॥  
ताहि भजन तजि भावन आना ॥ यह सम्बाद जा सुउर आवा ॥ र  
चु पति चरण भक्ति तें उपावा ॥ सुनि प्रभु वचन कहिं कपि वृन्दा  
जय जय जय कृपाल सावकन्दा ॥ तब रचु पति कपि पति हिं  
बुलावा ॥ कहा चले कर कर डबनावा ॥ अब विलम्ब केहि कार  
ण कीजै ॥ सरत कपिन कहं आय सुदीजै ॥ कौतुक देखि सु  
मन बडवर्षे ॥ नभ ते भवन चले सरहर्षे ॥ दोहा ॥ कपि पति वे  
गि बुलाए उपाए यूथ यूथ ॥ नाना वरा अतल बलवान र  
भाल वरुण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ प्रभु पद पङ्कज नावहिं शीशा ॥ ग  
रज दिंभाल म सावल कीशा ॥ देखाराम सकल कपि मेना ॥ चि



तैकृपाकरि राजीवनयना ॥ रामकृपावलपारकपिन्द्रा ॥ भ  
 एपलपुतमनङ्गिरीन्द्रा ॥ हर्षिरामतबकीन्द्रप्रयाणा ॥ मगु  
 णभएसुन्दरशुभनाना ॥ जाससकलमंगलमयकीती ॥ ता  
 सुपयानमगुणायदनीती ॥ प्रभुपयानजानावैदेही ॥ फरके  
 वामग्रंजजनुतेही ॥ जोजोसगुणजानहिं होई ॥ अशगुणभय  
 उरावणहिं होई ॥ चलाकटककोवरणोपारा ॥ गरजहिं बानर  
 भालुअपारा ॥ नखआयुधगिरिपादपथारी ॥ चलेगगनमहि  
 इच्छाचारी ॥ केहरिनादभालुकपिकरही ॥ उगमगमहिदि  
 गगजचिक्करही ॥ **कुन्द** ॥ चिक्करहिंदिगगजडोलमहिगि  
 रिलोलसागरखरभरे ॥ मनहरषदिनकरसोमसरमुनिनाग  
 किन्नरदुखटरे ॥ १ ॥ कटकटहिंमरकटविकटभटवडकोटि  
 कोटिन्दयावही ॥ जयगामप्रबलप्रतापकोशलनाथगुणग  
 णगावही ॥ २ ॥ सहिषकनभारअपारअहिपतिवारवारवि  
 मोहई ॥ गहिदशनपुनिपुनिकमठपृष्ठकठोरसोकिमिसो  
 दई ॥ ३ ॥ रघुवीररुचिरपयानप्रस्थितिजानिपरमसहावनी ॥  
 जनुकमठवर्परसर्पराजसोलिखतअविचलपावनी ॥ ४ ॥  
**दोहा** ॥ इहिंविधजाइकृपानिधिउतरेसागरतीर ॥ जहंतहंला  
 गेखानफलभालुविपुलकपिवीर ॥ ५ ॥ **चौपाई** ॥ उहांनिशा  
 चररहिंसशक्ता ॥ नवतेंजारिगएउकपिलका ॥ निजनिजगु  
 दमवकरहिंविचार ॥ नहिनिशिचरकलकेरउवाग ॥ जासद्वन



बलवरणिनजाई॥ तेहिं आए प्रकवन भलाई॥ अतिसभीति  
सुनि पुरजन बाणी॥ मन्दोदरी हृदय अऊलानी॥ रहसि जोरि  
कर पति पटलागी॥ बोली बचन नीति रस पागी॥ कान्त कर्ष  
हरि मन परिहरइ॥ मोर कहा अति हित चित थरइ॥ समुज  
त जा सहत की करणी॥ सब हिं गर्भ रजनी चर चरणी॥ ता सु  
नारि निज सचिव बुलाई॥ पट बड कान्त जो चरइ भलाई॥  
तव ऊल कमल विधि न डुख दई॥ सीता सीत निशा सम आई  
सनइ नाथ सीता विनु दीन्हे॥ हित न त म्हार शम्भु अज कीन्हे  
दोहा॥ राम बाण अदि गण सरिस नि कर निशा चर भेक॥ ज  
बल गि प्रसत न त बहिल गिय तन करइ त जिते क॥ ३६॥ चौ  
पाई॥ अवण सुनत शठ ता करि बाणी॥ विहं साज गत विदि  
त अभिमानी॥ समय सुभाव नारिक ह सोचा॥ मंगल मोह  
अमंगल राचा॥ जो आवै मर कट कट कट काई॥ जि अहिं वि  
चारे निशि चरवाई॥ कंप हिलोक पजा के ज्ञासा॥ ता सुनारि  
सभीति वडिहासा॥ अस कहि विहं सिताहि उर लाई॥ चले ३॥  
सभाम मता अथि काई॥ मन्दोदरी हृदय करु चिन्ता॥ भएका  
न पर विधि विपरीता॥ बैठे सभा खवरि अस पाई॥ सिन्धु  
पार सेना सब आई॥ बूजे सि सचिव उचित मत कहइ॥ ते सब हं  
से मष्ट करि रहइ॥ जिते इ सरा सरत व अमनाही॥ नरवानर  
के दिले आमाही॥ दोहा॥ सनिव वैय गुरु तीनि जों बोल दिप्रि



यप्रभुआशा॥ राजधर्मतनुतीनिकरहोइवेगदीनाश॥३॥  
 चौपाई॥ सोइरावणकहवनीसहाई॥ अस्तुतिकरहिंसुनारस  
 नाई॥ अबसरजानिविभीषणाआवा॥ आताचरणशीसतेहिं  
 नावा॥ पुनिसिरनाइवैटिनिजआसन॥ बोलावचनपाइअनु  
 शासन॥ जौकृपालपूछेइमोहिवाता॥ मतिअनुरूपकहव  
 मैताता॥ जौआपनचाहइकल्याणा॥ सुयशसुमतिअभग  
 तिसखनाना॥ तौपरनारिनिवारिगोसाई॥ तजौचौथिचन्दा  
 कीनाई॥ चौदहभुवनएकपतिहोई॥ भूतन्द्रोहतिष्ठैनहिकोई  
 गुणसागरनागरनरजोऊ॥ अल्पलोभभलकहेनकोऊ॥ दो॥  
 कामक्रोधमदलोभसबनाथनरककरपम्य॥ सबपरिहरिरा  
 नुवीरपदभजइकहहिंसदयम्य॥३८॥ चौपाई॥ तातरामन  
 दिनरभूपाला॥ भुवनेष्वरकालइकरकाला॥ ब्रह्मअनामय  
 अजभगवन्ता॥ व्यापकअजितअनादिअनन्ता॥ गोविजयनु  
 देवहितकारी॥ कृपासिंधुमानुषतनुपारी॥ जनरञ्जनभञ्जन  
 खलवृता॥ वेदधर्मरत्नकसुरजाता॥ ताहिबैरतजिनाइयमा  
 या॥ प्रणतारतिभञ्जनरचुनाया॥ देइनाथप्रभुकहंबैदेही॥  
 भजइरामविनुकामसनेही॥ शरणागतप्रभुकाइनत्यागा॥  
 विष्वद्रोहकृतअवजेहिंलागा॥ जासुनामत्रयतापनशावन  
 सोप्रभुप्रगटसमऊइजियरावण॥ दोहा॥ बारबारपदलाग  
 उंविनयकरौंदशशीश॥ परिहरिमानमोहमदभजइकोश



लाभीषा ॥३५॥ मुनिपुलस्त्यनिजशिष्यसनकरिपठई यह  
वात ॥ तरत सो मैतमसनकही पाइ सुअवसरतात ॥४०॥ चौ  
पाई ॥ माल्यवन्त एक सचिव सयाना ॥ ता सुवचन सुनिअति  
सुखमाना ॥ तात अजुजतवनीति विभूषण ॥ सो उरपरिय जो  
कहहिं विभीषण ॥ रिपु उत कर्ष कहत शठ दोऊ ॥ हरिकरु  
इतर है न कोऊ ॥ माल्यवन्त गृहगण्डवहोरी ॥ कहे उ विभीष  
ण पुनिकर जोरी ॥ समति ऊमति सब के उर रहई ॥ नाथ पुरा  
णनिगम अस कहई ॥ जहा सुमतित हंस मयति नाना ॥ जहां  
ऊमति तहं विपति निदाना ॥ तव उर ऊमति वसी विपरीती ॥  
दित अनदित मानइ रिपु प्रीती ॥ काल राविनिशिचर ऊलके  
री ॥ तेहिं सीता पर प्रीति वनेरी ॥ दोहा ॥ तात चरण गहि मागुं  
राखइ मोर डुलार ॥ सीता देखे राम कह अति दित होइ तमहार ॥  
चौपाई ॥ बुध पुराण श्रुति सम्मत बाणी ॥ कही विभीषण नी  
ति बाखानी ॥ सुनत दशानन उदारी साई ॥ खल तोहि मृसुनि  
कट चलि आई ॥ जिअसि सदा शठ मोर जिआवा ॥ रिपु करपा  
स सदा तोहि भावा ॥ कहे सिनखल अस को जग माही ॥ भुजव  
ल जेहिं जिते हम नाही ॥ मम पुरवसित पस्वी मन प्रीती ॥ पा  
र मिल जाइ ताहिं कइ नीती ॥ अस कहि की देखि चरण प्रहार  
अनुजग देखे पद कारहिं वारा ॥ उमा सनत वै इहै वडाई ॥ मन्द कर  
त जो करै भलाई ॥ तम पित सरिस भले मोही मारा ॥ राम भजे



दित होइ तम्हारा ॥ सचिव संग लैन भय पग पऊ ॥ सब हिंस  
 नाइ कहत अस भय ॥ दोहा ॥ राम सत्य संकल्प प्रभु सभा का  
 लव शा तोरि ॥ मै रघुनायक शरण अब जाउं देइ जनि खोरि ॥ ४२  
 चौपाई ॥ अस कहि चला विभीषण जवहीं ॥ आयु हीन भए नि  
 शिचर तवहीं ॥ साधु अवज्ञा तरत भवानी ॥ कर कल्याण अवि  
 ल कै हानी ॥ रावण जवहिं विभीषण त्यागा ॥ भए उ विभव विनु  
 तवहि अभागा ॥ चले उ हर्षि रघुनायक पांहीं ॥ करत मनोरथ  
 बड़ मन मांहीं ॥ देवि हौं जाइ चरण जल जाता ॥ अरुण मृदु  
 ल सेवक सख दाता ॥ जे पद परसित री अघि नारी ॥ दण्डक का  
 नन पावन कारी ॥ जे पद जनक सुता उर लाए ॥ कपट ऊर रुस  
 रु थर थाए ॥ हर उर सर सरोज पद जोई ॥ अहो भाग्य मै देखव सो  
 ई ॥ दोहा ॥ जिन पायन कर पादुका भरत रहे मन लाइ ॥ ते पद आ  
 ज विलोकि हौं रन नवन अब जाइ ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ इह विधि  
 करत सप्रेम विचारा ॥ आयउ सपदि सिंधु के पारा ॥ कपिन्ह विभी  
 ण आवत देखा ॥ जाने उ कोउ रिपु दूत विशेषा ॥ ताहि राखि कपी  
 श पहिं आय ॥ समाचार सब जाइ सुनाए ॥ कह सुग्रीव सुनियर  
 चु राई ॥ आवा मिलन दशानन भाई ॥ कह प्रभु सखा बूजिये का  
 हा ॥ कहे कपीश सुनइ न राहा ॥ जानि जाइ निशाचर माया  
 काम रूप के हिकारण आय ॥ भेट हमार लेन शर आवा ॥ राखि  
 य बांधि मोहि अस भावा ॥ सखानी तित मनी क विचारी ॥ मम पण

श्रीरामः  
 ५



समा.

सं.

१२

13

शरणागतभयहारी॥ सुनिप्रभुवचनदर्षद्विमाना॥ शरणा  
गतवत्सलभगवाना॥ दोहा॥ शरणागतकहेजेतजहिनिज  
अनदितअनुमानि॥ तेनरपामरपापमयतिनहिं विलोकतहा  
नि॥ ४५॥ चौपाई॥ कोटिविप्रबधलागहिंजाही॥ आपशरणा  
तजौनहिताही॥ सन्मुखहोरजीवमोहिजबही॥ जन्मकोटि  
अचनाशौतबही॥ पापवन्तकरसहजसुभाऊ॥ भजनमोर  
तेहिभावनकाऊ॥ जोपैदुष्टहृदयसोहोई॥ मोरेसन्मुखआव  
किसोई॥ निर्मलमनजनसोमोहिपावा॥ मोहिकपटकुलकि  
इनभावा॥ भेदलेनपठवादशाशीशा॥ तबइंनककुभयहानि  
कपीशा॥ जगमहंसखाणिशाचरजेते॥ लक्ष्मणाहनहिंनि  
मिषमहंतेते॥ जौसभीतआवाशरणाई॥ रखिहोंताहिपाणा  
कीनाई॥ दोहा॥ उभयभांतिलेआवइहंसिकहकृपानिधान॥  
जयकृपालकहिकपिचलेअंगादादिहनुमान॥ ४५॥ चौपा  
सादरतेहिंआगेकरिवानर॥ चलेजहोरचुपतिकरुणाकर॥  
हरिहिंतेदेखेदोऊआता॥ नयनानन्ददानकेदाता॥ बडरिग  
मकुविधामविलोकी॥ रहासोदाऊनयनपलरोकी॥ भुज  
प्रलम्बकझारुणालोचन॥ श्यामलगातप्रणातभयमोचन  
सिंहकन्यआयतउरशोहा॥ आननअमितमदनकुविमोहा॥  
नयननीरपलकितअतिगाता॥ मनथरिधीरकहीमृदुवाता॥  
निशिचरवेंशजनमसुरजाता॥ नाथदशाननकरमैआता॥ स



सहजपापप्रियतामसदेहा ॥ यथाउलूकहितमपरनेहा ॥  
 दोहा ॥ अवणस्यशसुनिआपऊं प्रभुभञ्जनभवभीर ॥ आदि  
 आदिआरतिहरणशरणसखदरचुवीर ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ अ  
 सहिकरतदाउवतदेखी ॥ तरतउटेप्रभुहर्षविशेषी ॥ दीन  
 वचनसुनिप्रभुमनभावा ॥ भुजविशालगदिहृदयलगावा  
 अनुजसहितमिलिछिगबैठारे ॥ बोलेवचनभक्तभयहारे ॥  
 कइलकेशसहितपरिवारा ॥ ऊशलऊठाहरवासतम्हारा  
 खलमणउलीवसइदिनराती ॥ सखाधर्मनिबहेकेहिभां  
 ती ॥ मैजानौतम्हारासबरीती ॥ अतिनयनिपुणानभावअ  
 नीती ॥ वरुभलवासनरककरताता ॥ दुष्टसङ्गजनिदेहिंवि  
 धाता ॥ अवपददेखिऊशलरचुराया ॥ जौतमकीन्हिजानि  
 जनदाया ॥ दोहा ॥ तबलगिऊशलनजीवकहंसपनेइंमन  
 विश्राम ॥ जबलगिभजतनरामकहंशोकथामतजिकाम  
 चौपाई ॥ तबलगिहृदयवसतखलनाना ॥ लोभमोहमत्स  
 रमदमाना ॥ जबलगिउरनवसतरचुनाया ॥ थरेचापशाय  
 ककरिभाया ॥ ममतातिमिरतरुणाग्रंथिआरी ॥ रागद्वेष  
 उलूकसखकारी ॥ तबगिवसतजीवउरमाही ॥ जबलगि  
 प्रभुप्रतापरविनाही ॥ अवमैऊशलमिटेभयभारे ॥ देखि  
 रामपदकमलतम्हारे ॥ तमकृपालजापरअनुकूला ॥ ता  
 दिनव्यापत्रिविधभवशूला ॥ मैनिशिचरअतिअधमसुभाऊ



रामा.  
सं.  
१४

शुभआचरणकीन्हनदिकाऊ॥जासूरूपमुनिध्याननआ  
वा॥सोप्रभुहर्षिहृदयमोहिलावा॥दोहा॥अहोभाग्यममअ  
मितअतिरामकृपासखपुंज॥देखेउनयनविरञ्चिशिवसे।  
व्यगुगलपदकंज॥४८॥चौपाई॥सुनइसाखानिजकरुंशुभा  
ऊ॥जानभुशुगिषशम्भुगिरिजाऊ॥जोनरहोरचराचरदोही॥  
आवैसभयशरणतकिमोही॥तजिमदमोहकपटकुलनाना  
करौंसयतेहिंसाधुसमाना॥जननीजनकबंधुसुतदारा॥त  
नुपनभवनसुहृदपरिवारा॥सबकेममतातागबटोरी॥म  
मपदमनहिंवांधिवरदोरी॥समदरशीश्चक्राककुनाही॥  
दुर्घशोकभयनहिमनमाही॥अससजनममउरबसकैसे॥  
लोभीहृदयवसतथनजैसे॥तमसोसन्तसदाप्रियमोरे॥थरे  
उदेरनदिआननिहोरे॥दोहा॥सगुणउपासकपरमहित  
निरतनीतिरुढनेम॥तेनरप्राणसमानममजिनकेहिदि  
जपदप्रेम॥४९॥चौपाई॥सुनुलकेशसकलगुणातोरे॥ता  
तेतमअतिशयप्रियमोरे॥रामवचनसुनिवानगुणा॥स  
कलकरुहिंजयकृपावरुणा॥सुनतविभीषणप्रभुकर  
वाणी॥नदिसुवातप्रवणामृतजानी॥पदअसुजगहि।  
नारहिंवारा॥हृदयसमातनप्रेमअपारा॥सुनिपदेवचरा।  
चरस्वामी॥प्राणतपालउरअनरजामी॥उरकुप्रथमवा  
सनारहेऊ॥प्रभुपदपीतिसरितसोवहेऊ॥अवकृपालनि



जभक्रिजोपावनि॥ देऊदयाकरिशिवमनभावनि॥ एवम  
 सप्रभुकहिरण्णीरा॥ मोगातरतसिंधुकेनीरा॥ यद्यपिस  
 खातोहिश्चकानाहीं॥ ममदर्शनअमोचजगमांदी॥ असक  
 हिरामतिलकतेहिंसारा॥ समनवृष्टिनभभपउअपारा॥  
 दोहा॥ रावणक्रोधअनलनिजआसमसीरप्रचण्ड॥ जरतवि  
 भीषणराखेउदीन्देउराजअवाण्ड॥ ५०॥ जोसंपतिशिवराव  
 णाहिंदीन्ददिपदशमाय॥ सोसंपदाविभीषणाहिसऊचिदी  
 न्दरचुनाय॥ ५१॥ चौपाई॥ असप्रभुकाडिभजहिंजेआना॥ तेन  
 रपशुविनुसूक्विषाणा॥ निजजनजानिताहिएपनावा  
 प्रभुसुभावकपिऊलमनभावा॥ पुनिसरवत्तसर्वउरवासी  
 सर्वरूपसवरहितउदासी॥ बोलेवचननीतिप्रतिपालक  
 कारणामनुजदनुजऊलवालक॥ सुनुकपीशलकूपतिवी  
 रा॥ केहिविधिउतरियजलधिगंभीरा॥ संऊलउरगमकरऊ  
 षजाती॥ अतिअगाददुसरसबभांती॥ कहलकेशसनडर  
 चुनायक॥ कोटिसिंधुशोषकतवसायक॥ यद्यपितदपि  
 नीतिअसगाई॥ विनयकरियसागरपहंजाई॥ दोहा॥ प्रभु  
 तम्हारऊलगुरुजलधिकहहिंउपायविचारि॥ विनुप्रया  
 समागरतरहिंसकलभालुकपिथारि॥ ५२॥ चौपाई॥ सावा  
 कहितमनीकरपाई॥ करवदेव॥ जोंहोरसदाई॥ मंत्रनयद  
 ललमाणमनभावा॥ रामवचनसुनिअतिडावपावा॥ नाथदेव



रामा.  
सं.  
१५

करकवनभरोसा॥ शोषियसिंधुकरिवमनरोषा॥ काटरम  
नकरएकअधारा॥ दैवदैवशालसीपुकारा॥ सनतविहंसि  
बोलेरचुवीरा॥ ऐसेरकरवथरझमनपीरा॥ असकहिप्रभुअ  
नुजहिसमुजार्इ॥ प्रथमप्रणामकीन्हप्रभुजार्इ॥ वैटेतटपु।  
निदर्भउसार्इ॥ जबहिंविभीषणप्रभुपहिंआए॥ पाकेंरावणा  
हतपठाए॥ दोहा॥ सकलचरितदेखातिन्हथेकपटकपिदे  
ह॥ प्रभुगुणहृदयसराहिसतिशरणागतपरनेह॥ ५३॥ चौ  
पाई॥ प्रगटवावानतरामसुभाऊ॥ अतिसप्रेमगाविशरिडरा  
ऊ॥ रिपुकेहतकपिन्हतबजाने॥ ताहिबान्धिकपिपतिपहं  
आने॥ कहसुग्रीवसुनइसबनचर॥ अरुभरुकरिपटवज  
निशिचर॥ सुनिसुग्रीववचनकपिधाए॥ बान्धिकटकच।  
इंणशफिराए॥ बरुप्रकारमारणाकपिलागे॥ दीनपुकारत  
दपिनत्यागे॥ जोहमारहरनासाकाना॥ तेहिकोशलाधीषा  
करआना॥ सुनिलत्माणातेहिनिकटबुलाए॥ दयालागिहं  
सिदीन्हऊआए॥ रावणाकरदीन्हैइयदपाती॥ लत्माणावच  
नवांचुऊलघाती॥ दोहा॥ कहेइशुवागरशूऊसनममसं  
देणउदार॥ सीतादेईमिलजनतआवाकालतम्हार॥ ५४॥ चौ  
पाई॥ तरतनाइलत्माणापदमाया॥ चलेहतवरणातगुणागा  
या॥ कहतरामयशालंकाआए॥ रावणाचरणशीमतिन्हना  
ए॥ विहंसिदणननपूकेसिवाता॥ कहशिनशुकआपनि



ऊशालाता ॥ पुनिकइ ऊशालविभीषणकेरी ॥ जासुमृत्युआ  
 ईअतिनेरी ॥ करतराजलेकाशठत्यागा ॥ होइहिंदवकरकीट  
 अभागा ॥ पुनिकइ भालुकीसकटकाई ॥ कठिनकालप्रेरत  
 चलिआई ॥ तिइन्हकेजीवनकरखवारा ॥ भयउमृदुलचित  
 सिंधुविचारा ॥ कइतपसिन्हकरवातबहोरी ॥ जिन्हकेहृद  
 यशसअतिमोरी ॥ दोहा ॥ किभइभेटकिफिरिगएअवणासुय  
 शासुनिमोर ॥ कहसिनरिपुदलतेजबलवइतचकितचित  
 तोर ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ नाथकृपाकरिपूछेइजैसें ॥ मानेइवचन  
 क्रोधतजितैमें ॥ मिलाजाइअवअनुजतमारा ॥ जातहिराम  
 तिलकतेहिसारा ॥ रावणाहृतहमहिसुनिकाना ॥ कपिन्ह  
 बांधिदीन्हैउदुखनाना ॥ अवणानासिकाकाटनलागे ॥ राम  
 शपथदीन्हीहमत्यागे ॥ पूछेइनाथकीशकटकाई ॥ बदन  
 कोटिशतवराणीनजाई ॥ नानावराणभालुकपिथारी ॥ विक  
 टाननविशालभयकारी ॥ जेइपुरदहेउबधेउसततोरा ॥ स  
 कलकपिन्हमहंतेहिवलथोरा ॥ अमितनामभटकठिनक  
 राका ॥ विपुलवराणातनुतेजविशाला ॥ दोहा ॥ द्विविदमयं  
 दनीलनलगंगदादिविकटास्य ॥ दधिमुखकेसरिऊमुद  
 गवजामवनबलराशि ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ एकपिसबसुग्रीव  
 समाना ॥ इन्हसमकोटिगणोंकोआना ॥ रामकृपाअतलि  
 तबलतिनही ॥ तणासमानत्रयलोकहिगंदी ॥ असमैअव



रामा.  
सं.  
१६

एसनादशकंधर॥ पद्मप्रद्वारहयूषपवंदर॥ नाथकटकम  
हंसोकपिनाही॥ जोनतमहिजीतैरामांही॥ परमक्रोधमी  
जहिंसवहाथा॥ आयसुपैनदेहिंरुनाथा॥ शोषहिंसिंधुस  
हितऊखवाला॥ पूरहिंनतौभरिऊधरविशाला॥ मर्दिगर्द  
मिलबहिसदशीशा॥ ऐसेवचनकहहिंसवकीशा॥ गर्जहिं  
तर्जहिंसदजअशंका॥ मानऊंअसनचहतहहिलंका॥ दोहा  
सदजशूरकपिभालुसवपुनिशिरपरश्रीराम॥ रावणकाल  
कोटिकहजीतिमकहिंसंगाम॥ ५॥ चौपाई॥ रामतेजबल  
बुधिबिपुलाई॥ शेषसहस्रशतशकहिंनगाई॥ शकशरप  
कशोषिशतसागर॥ तबभ्रातहिंएकेउनयनागर॥ नासव  
चनसुनिसागरपांही॥ मांगतपंथकृणामनमांही॥ सुनतव  
चनविहंसादशशीसा॥ जोअसमतिसहायकृतकीशा॥ स  
हजभीरुकरवचनटछाई॥ सागरसनठानीमचलाई॥ मूढ  
मृषाकाकरसिवडाई॥ रिपुबलबुद्धियादमैपाई॥ सचिवस  
भोतविभीषणाजाके॥ विजयविभूतिकहोलगिताके॥ सुनि  
खलवचनदूतरिसिबाछी॥ समयविचारिपत्रिकाकाछी॥  
रामअनुजदीन्हीयहंपांती॥ नाथवचारजडावडकाती॥  
विहंसिवामकरलीन्देसिरावण॥ सचिवबोलिशदलागु  
वचावन॥ दोहा॥ बातन्दमनहिरिजाइशदजनिवालसि  
ऊलखीश॥ रामविरोधनउवरिहइशरणाविस्मयजईश



होउ मानत जिअनु जइव प्रभु पद पंकज भृङ्ग ॥ होहिं राम  
 शरअनल खलज निजल सहित पतङ्ग ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ सु  
 नत सभय मन मुख मुसुकाई ॥ कहत दशानन सबहिंसु  
 नाई ॥ भूमि पराकर गहत अकाशा ॥ लघुता पसकर बाग  
 विलासा ॥ कह प्रकनाथ सत्य सबवाणी ॥ समुज्जक कटि  
 प्रकृति अभिमानी ॥ सुनइ वचन मम परिहरि क्रोधा ॥ ना  
 थ राम मनत जइ विरोधा ॥ अतिकोमल रघुवीर सभाऊ ॥  
 यद्यपि अलिल लोक कराराऊ ॥ मिलत कृपा प्रभु तम पर  
 करि हैं ॥ उर अघ राधन एको धरि हैं ॥ जनक सत्तार रघुनाथ  
 दिदी जै ॥ एतना कहा मोर प्रभु की जै ॥ जब तेरे देन कहे उवै  
 देही ॥ चरण प्रहार कीन्ह शठ तेही ॥ चरण नार शिर चला  
 सोत हंवा ॥ कृपा सिंधु रघुनाथ कज हंवा ॥ करि प्रणाम नि  
 ज कथा सुनाई ॥ राम कृपा आपन गति पाई ॥ अघि अग स  
 त्य कर शाप भवानी ॥ राक्षस भए उर हा मुनि ज्ञानी ॥ बंदि रा  
 म पदवार दिवारा ॥ पुनि निज आश्रम कह पगु थारा ॥ दो  
 हा ॥ विनयन मानत जलधि जउ गपती निदिन वीति ॥ बो  
 ले राम सकोपत बभय विनु होइ न प्रीति ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ लक्ष्म  
 ण बाण शरामन आनू ॥ शोषों वारि धि विशिख कृशानू ॥  
 शठ मन विनय कटिल मन प्रीती ॥ सहज कृपा मन सु  
 न्दरीती ॥ मम तारत मन ज्ञान कहानी ॥ अतिलोभी मन



रामा.  
सं.  
२३

17

विरतिवावानी॥ क्रोधिहि शमकामिहि हरिकथा॥ उष  
रबीजवये फलयथा॥ असकहि रघुपतिचापचढावा॥ या  
हमतल दमणके मनभावा॥ संधाने उपनुविशिखकराला॥  
उठीउदधिउरग्रंतरज्वाला॥ मकरउरगजघगणाश्रुल्लाने  
जरतजंतजलनिधिपहिचाने॥ कनकथारभरिमणिग  
णानाना॥ विप्ररूपआणउतजिमाना॥ दोहा॥ काटेपैंकद  
लिफरैकोदियतनकोउसीच॥ विनयनमानखगोशसुनु  
डाटेहिपैंनमनी॥ ६१॥ चौपाई॥ सभयसिंधुगहिपदप्रभुके  
रे॥ तमझनाथसबअवगुणामेरे॥ गगनसमीरअनलजल  
धरणी॥ इनकैनाथसहजजउकरणी॥ तबप्रेरितमायाउप  
जाये॥ सृष्टिहेतुसबअननगाये॥ प्रभुआयसजेहिकहेज  
सअरही॥ सोतेहिभांतिअहेसखलहही॥ प्रभुभलकीन्ह  
मोहिशिखदीन्हा॥ मर्यादासबतम्हरीकीन्हा॥ छोलगं  
वारत्तद्रपशुनारी॥ येसबताउनकेअधिकारी॥ प्रभुप्रताप  
मैजावसखाई॥ उत्तरहिकटकनमोहिवडाई॥ प्रभुआजा  
अपेलश्रुतिगाई॥ करइवेगिजोतमहिमोहाई॥ दोहा॥  
सनतविनीतबचनअतिकहकृपालुमुसकाई॥ जेहिवि  
धिउत्तरैकपिकटकतातसोकरइउपाई॥ ६२॥ चौपाई॥ ना  
थनीलनलकपिदोउभाई॥ लरिकाइअपिआपिषपाई॥  
तिनकेपरसकिपेगिरिभारे॥ तरिहहिजलधिप्रतापतम्हा



१॥ मैत्रुनिउरथरिप्रभुप्रभुतार्इ॥ करिहौंवलअनुमानसहार्इ॥  
 इहिविधिनाथपयोधिवन्धा३॥ जेहियसुयशलोकतिअगा  
 ३॥ इहिशरममउत्तरतटवासी॥ तदङ्गनाथनखलअवराणी  
 सुनिकृपालसागरमनपीरा॥ तरतहिदरीरामराणीपीरा॥ देवि  
 रामवलअतलितभारी॥ हर्षिययोनिधिभएउसुखारी॥ सक  
 लचरितकहिप्रभुहिसुनावा॥ चरावदिपायोधिसिधावा  
 ६॥ निजभवनगवनेउसिंधुश्रीरघुवीरहियमतभाएऊ॥ य  
 हचरितकलिमलहराजशमतिदामतलसीगाएऊ॥ १॥  
 सुखभवनसंशयशमनदमनविषादरघुपतिगुणागण॥  
 तजिआशसकलभरोसगावहिंसुनहिसजनसुदिमना॥ २॥  
 दोहा॥ सकलसुगङ्गलदायकरघुनायकगुणागण॥ सादर  
 सुनहिंतेतरहिभवसिन्धुविनाजलयान॥ ६॥ इतिश्रीरामच  
 रितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञानवै  
 राग्यसंघादनोनामपंचमः सोपानः सुन्दराकाण्डसमाप्तः॥ शुभम्







ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ लक्षाकाराऽलित्वे ॥ श्लोक ॥  
 प्रावेदाभमतीव सुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं ॥ कालव्या  
 लकरालभूषणधरं गङ्गाशशांकप्रियम् ॥ काशीशंकलि  
 कल्मषौघशमनं कल्याणकल्पदुम् ॥ नौमीशं गिरिजाप  
 तिगुणनिधिं श्रीशंकरं कामदम् ॥ १ ॥ यो ददाति सतांशं भुः  
 केवल्यमतिदुर्लभम् ॥ खलानां देउकृद्योसौ शंकरः संतनो  
 त्वमे ॥ २ ॥ रामं कामारिसेव्यं भवभयहरं कालमते भसिंहं  
 योगीन्द्रं ध्यानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणनिविकारं ॥  
 मायातीतं सूरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं देउकृन्दा  
 वदातं सरसिजनयनं देवमूर्वीशरूपम् ॥ ३ ॥ दोहा ॥ लव  
 निमेषपरमाणुयुगवर्षकल्पशरचंड ॥ भजसि न मनते  
 हि रामकहं कालजासुकोदंड ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सिंधुवचनसु  
 निरामसचिवबो लिप्रभुप्रसकहेउ ॥ अबविलंबकेहिका  
 मकरऊसेतउतरैकटक ॥ २ ॥ सुनइभाउऊलकेतजाम्ब  
 वन्तकरजोरिकह ॥ नाथनामतवसेतनरचढिभवसाग  
 रतरहिं ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ यहलचुजलधितरतकतिवारा ॥ अस  
 सुनिपुनिकहपवनऊमारा ॥ प्रभुप्रतापवडवानलभारी  
 शोषेउप्रथमपयोनिधिवारी ॥ तवरिपुनारिरुदनजलधा  
 रा ॥ भर्यौबहोरिभयोतेहिंखारा ॥ सुनिप्रसउक्तिपवनस  
 तकेरी ॥ विहंसेरचुपतिकपितनहेरी ॥ जाम्बवन्तबोलेदो

श्रीगणेश  
 शायिका  
 कर्णाटी



रामा.  
ले.  
१

भाई॥ नलनीलहिंसवकथासुनाई॥ रामप्रतापसुमिरि।  
मनमोही॥ करउसेतप्रपासककुनाही॥ बोलिलियेक।  
पिनिकरबहोरी॥ सकलसुनइविनतीएकमोरी॥ रामच  
रणपंकजउरथरह॥ कौतकएकभालुकपिकरह॥ थाव  
इमर्कटविकटवरूपा॥ आनइविटपगिरिन्दकेयूपा॥  
सुनिकपिभालुचलेकरिहहा॥ जयरघुवीरप्रतापसमू  
हा॥ दोहा॥ अतिउतंगगिरिपादपलीलहिंलेहिंउठाई॥  
आनिदेहिंनलनीलकहंविचहिंसेतवनारई॥ ४॥ चौपा॥  
शैलविशालआनिकपिदेही॥ कंदुकइवनलनीलसोले  
ही॥ देविसेतअतिसुन्दररचना॥ विहिंसिकृपानिधिबो  
लेबचना॥ परमरस्यउतमयहथराणी॥ महिमाअमित  
जाइनदिवराणी॥ करिहौंइहांशंभुआपना॥ मोरेहृदय  
परमकलयना॥ सुनिकपीशाबइहतपढाये॥ मुनिब  
रसकलबोलिलैआये॥ लिंगआपिविधिवतकरिपूजा  
शिवद्रोहीममभक्तकहावै॥ सोनरखपनेइमोहिनपावै  
शंकरविमुखभक्तिचहमोरी॥ सोनरमूढमंदमतिथोरी  
दोहा॥ शंकरप्रियममद्रोहीशिवद्रोहीममदास॥ तेनर  
करहिंकल्पभरिघोरनरकमहंवास॥ ५॥ चौपाई॥ जोरामे  
सरदरशनकरिहहिं॥ तेतउतजिममधामसिथरिहहिं  
जोगगाजलआनिचछाईहिं॥ सोसायुज्यमुक्तिनरपाईहिं

॥ शिवसमानप्रियमोहिनइजा जुटी ॥



होइ अकाम जो कलतजि से रहिं ॥ भक्ति मोर तेहि संकर ॥  
 देखिं ॥ मम कृत सेत जो दरशन करहिं ॥ सो विनु अमभव  
 सागर तरहिं ॥ राम वचन सब के मन भाये ॥ मुनि वर निज नि  
 ज आश्रम आये ॥ गिरिजार चुपत की यहरी ती ॥ सनत क  
 रहिं प्रणत पर प्रीति ॥ बांधे सेत नील नल नागर ॥ राम कृ  
 पा जस भए उज्जगर ॥ बूडहिं आनहि बोरहिं जेई ॥ भये उ  
 पल बोहित सम तेई ॥ महिमा ककुन जल धि की वरणी ॥  
 पाहन गुण कपिन की करणी ॥ दोहा ॥ श्री रघु वीर प्रताप  
 तें सिंधु तरे पाषाण ॥ ते मति मन्द जे राम तजि भजहिं जाइ  
 प्रभु आन ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ बांधि सेत अति सुदृढ बनावा ॥ देवि  
 कृपा निधि कै मन भावा ॥ चली सैन ककु वरणि न जाई ॥ गर्ज  
 हिं मर्कट भट समुदाई ॥ सेत बंधु छिग च छिर चुगई ॥ चितव  
 कृपालु सिंधु वहताई ॥ देखन कह प्रभु करुणा कन्दा ॥ प्रग  
 ट भये सब जल चरवृन्दा ॥ मकरन क्रनाना ऊष व्याला ॥ शत  
 योजन तनु परम विशाला ॥ ऐसे एक दिंति न जे खाही ॥ एक  
 निके उर ते कपि उराही ॥ प्रभु दिविलोक हिं टरहिं न टारे ॥ म  
 न हर्षित सब भए सखारे ॥ तिन की ओट न देखिय बारी ॥ म  
 गन भये हरि रूप निहारी ॥ चला कटक प्रभु आय सुपाई ॥  
 कोक दिश ककपि दल विपुलाई ॥ दोहा ॥ सेत बंधु भूभीर अ  
 तिकपिन भयंघ उडाहिं ॥ अपर जल चरन्ति उपर च छि विउष



रामा.  
ले.  
२

मणारहिंजाहिं॥१॥चौपाई॥असकौतकविलोकिदोभा  
ई॥विहंसिचलेकृपालरचुराई॥सेनसहितउत्तरेरचुवीरा  
कहिनजाइककुसुमपभीरा॥सिंधुपारप्रभुडैराकीन्हा॥  
सकलकपिनकहंआयसुदीन्हा॥खाऊजाइफलमूलसु  
हाये॥सनतभालुकपिजहंतहंथाये॥सबतरुफरेराम।  
हितलागी॥अतअरुऊअतकालगतित्यागी॥खाहिं  
मधुरफलविट्पहिलावहिं॥लंकासमुखशिखरचलाव  
हिं॥जहंकहंफिरतनिशाचरपावहिं॥चेरिसकलबड।  
नाचनचावहिं॥दशननकाटिनासिकाकाना॥कहिप्रभु  
सुयशदेहितबजाना॥जिनकरनासाकाननिपाता॥तेउं  
रावणादिकहीसबवाता॥सनतअवणावारिधिबंधाना  
दशमुखबोलिउठाअऊलाना॥दोहा॥बांधेउजलनिधि।  
नीरनिधिजलधिसिंधुवारीश॥सत्यतोयनिधिपंकनि  
धिउदधिपयोधिनदीश॥२॥चौपाई॥निजव्याऊलतास  
मुजिवहोरी॥विहंसिचलागृहकरिभयभोरी॥मन्दोद।  
रीसनाप्रभुआये॥कौतकहीपायोधिबंधाये॥कराहि  
पतिहिंभवननिजआनी॥बोलीपरममनोहरवाणी॥च  
रणनाइमिरअञ्जलरोपा॥सनऊवचनप्रियपरिहरिको  
पा॥नाथवैरकीजैताहीसों॥बुधिवलजीतिशकियजाही  
सों॥तमहिंसुपतिहीअनारकैसा॥खलुखयोतहिंदिन



करजैसा ॥ अतिबलमयुकैटभजिनमारे ॥ महावीरदिति  
 सतसंहारे ॥ जेशबलिवाधिसहसभुजमारा ॥ सोअवतरेउ  
 हरणमहिभारा ॥ तासुविरोधनकीजियनाथा ॥ कालक  
 र्मगुणजिनकेहाथा ॥ दोहा ॥ रामहिंसोंपइजानकीनाइ  
 कमलपदमाथ ॥ सतकहंराजसमर्पिवनत्ताइभजइरचु  
 नाथ ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ नाथदीनदयालुरचुराई ॥ वाचउसन्नु  
 खगयेनखाई ॥ चाहियकराणसोसबकरिवीते ॥ तमसु  
 रअसरचराचरजीते ॥ बेदकहहिंसनीतिदशानन ॥ चौ  
 पेपनजाइयनृपकानन ॥ तासुभजनकिजैतहंभर्ता ॥ जो  
 कर्तापालकसंहर्ता ॥ सोइरचुवीरप्रणतअनुरागी ॥ भजइ  
 नाथममतामदत्तागी ॥ सुनिवरयतनकरहिंजेहिलागी  
 भूपराजतजिहोहिंविरागी ॥ सोइकोशलाधीशरचुराया  
 आयेकराणतोहिपरदाया ॥ जौंप्रियमानइमोरशिखावन  
 सयशहोइतिहपुरअतिपावन ॥ दोहा ॥ असकहिलोचन  
 वारिभरिगदिपटकंपितगात ॥ नाथभजइरचुनाथपदम  
 मअदिवातनजात ॥ १० ॥ चौपाई ॥ तवरावणमयसताउठा  
 ई ॥ कहैलागुखलनिजप्रभुताई ॥ सनतैंप्रियामृषाभयमा  
 ना ॥ जगयोधाकोमोहिसमाना ॥ वरुणऊवेरपवनयमा  
 काला ॥ भुजबलजितेसकलदिगणला ॥ देवदनुजनरवस  
 वषागोरे ॥ कवनहेतउपजाभयतोरे ॥ नानाविधतेहिकहिस



रामा.

ले.

३

३

सुजाई॥ सभावहोरिवैदुसोजाई॥ मन्दोदरीहृदयप्रसजा  
ना॥ कालविवशाउपजाअभिमाना॥ सभाजाइमेविनते।  
दिवूजा॥ करियकवनविधिरिप्रसनजूजा॥ कहहिंस  
चिवसुननिशिचरनाहा॥ बारवारप्रभुप्रकृदकाहा॥ कह  
दूकवनभयकरियविचारा॥ नरकपिभालुआहारहमारा  
दोहा॥ सबकेवचनकानकरकहप्रहसकरजोरि॥ नीति  
विरोधनकरियप्रभुमेविनमतिअतिथोरि॥ १॥ चौपाई॥  
कहहिंसचिवसवठऊरसोहाती॥ नाथनप्ररआपइहि।  
भांती॥ वारिथिलांचिपककपिआवा॥ तासुचरितमनम  
हंसवगावा॥ लथानरहीतमहिंतवकाहू॥ जारतनगरन  
कसपरिखाहू॥ सुनतनीकआगेदुखपावा॥ सचिवन्दप्र  
समतप्रभुहिंसनावा॥ जोवारीषाबंधापउहेला॥ उत्तरेक  
पिदलमहितसुबेला॥ सोजनमनुजखावहमभाई॥ वच  
नकहदूसबगालफुलाई॥ सुनिममवचनतातअतिआद  
र॥ जनिमनगुणदूमोहिकरिकादर॥ प्रियबाणीजेसुन  
दिंजेकहहीं॥ ऐसेजगनिकायनरअहहीं॥ वचनपरमहि  
तसुनतकदोरे॥ कहहिंसनहिंतेनरप्रभुथोरे॥ प्रथमव।  
शीठपठाइयनीती॥ सीताहिंदेइकरियपुनिप्रीती॥ दोहा  
नारिणइफिरिजाहिंजोंतौनवजाइयरा॥ नाहितोसनु  
खसमरमहेनाथकरियहठमार॥ २॥ चौपाई॥ यहमतजों



मानद्वयभुमोरा॥ उभयप्रकारसुयशजगतोरा॥ सतस  
 नकदृष्टाकादरिसार्इ॥ असमतिशततोहिकवनशिखा  
 इ॥ अवहीतेउरसंशयहोई॥ वेणुमूलसतभणउथसोई॥ सु  
 निपितगिरापरुशुअतिघोरा॥ चलाभवनकदिवचनक  
 दोरा॥ दितमतितोहिनलागतकैसे॥ कालविवशकंहमे  
 षजजैसे॥ संध्यासमयजानिदशशीसा॥ भवनचलानि  
 राखतभुजवीसा॥ लंकाशिखररुचिरआगारा॥ अतिवि  
 चित्रतहंहोइआवारा॥ वैद्यजाइतेहिमंदिररावणा॥ लागे  
 किन्नरगुणगणगावन॥ वाजैतालपावाउजवीणा॥ नृ  
 त्यकरहिअपराप्रवीणा॥ दोहा॥ सुनासीरशतसरिससो  
 सनतकरैविलास॥ परमप्रवलरिप्रशीसपरतदपिनम  
 नककुशास॥ १३॥ चौपाई॥ इहांसुवेलशीलरबुवीरा॥ उत  
 रेसेनसहितअतिभीरा॥ शोलशृंगएकसंदरदेवी॥ परम  
 रम्यसमशुभविशेषी॥ तहतरुकिशलयसमनसहाये  
 लक्ष्मणरचिनिजहायउसाये॥ तापररुचिरमृदुलमृग  
 काला॥ तेदिआसनआसीनकृपाला॥ प्रभुकृतशीसक  
 पीशउतसक्रा॥ वामदहीनदिशिचापनिषक्रा॥ दुइकर  
 कमलशुभारतवाना॥ कहलंकेशमंत्रलगिकाना॥ वउभा  
 गीअंगदरुजमाना॥ चरणकमलचोपतविधिनाना॥ प्र  
 भुपाकेलक्ष्मणवीरामन॥ कटिनिषक्रकरधरेसरासन



रामा.  
ले.  
५

दोहा॥ इति विथकृपारूपगुणधामरामआसीन॥ धन्यसो  
नरयहध्यानरतरहतसदालवलीन॥ १४॥ पुरवदिशावि  
लोकिप्रभुदेखाउदितमयंक॥ कहेउसबहिंदेखइशशि  
हिमृगपतिसरिसअशंक॥ १५॥ चौपाई॥ पुरवदिशिमिरि  
गुहानिवासी॥ परमप्रतापतेजबलराणी॥ मत्तनागतम  
ऊम्भविदारी॥ शशिकेसरीगगनवनचारी॥ विभुरेनभ  
मुकुतालतारा॥ निशिसुन्दरीकेरभृंगारा॥ कहप्रभुप्रा।  
शिमहमेचकतार्इ॥ कहइकहानिजनिजमतिभार्इ॥ क  
हसुग्रीवसनडरचुगार्इ॥ शशिमहंप्रगटभूमिकीजार्इ  
मारेउगाइशशिहिकहकोइ॥ उरमहंपरीश्यामतासोइ॥  
कोउकहजबविधिरतिमुखकीन्हा॥ सारभागशशिक  
रहरिलीन्हा॥ किइसोप्रगटइंदुउरमांदी॥ तेहिमगदेवि  
यनभपरिकोंदी॥ कहप्रभुगरलबंभुशशिकेरा॥ अतिप्रि  
यतमउरदीन्हवसेरा॥ विषसंयुतकरनिकरपसारी॥ जा  
रतविरहबन्तनरनारी॥ दोहा॥ कहहनुमन्तसनडप्रभु  
शशितम्हारप्रियदास॥ तबमूरतितेदिउरवसतसोइर्ष  
मताभास॥ १६॥ पवनतनयकेवचनसुनिविहंसेरामसु।  
जान॥ दतिणदिशाविलोकिप्रभुबोलेकृपानिधान॥ १७॥  
चौपाई॥ देखविभीषणदतिणआशा॥ वनजुमंडदामिनी  
विलासा॥ मथुरामथुरगर्जतनभचोरा॥ होइवृष्टिजनउप



लकठोरा ॥ कहहिं विभीषण सुनइ कृपाला ॥ होइन त  
डितन वारिदमाला ॥ लंका शिखर ऊपर आगारा ॥ तहेंद  
शकंथर केर आखारा ॥ कुत्र मेव उंवर सिरपारी ॥ सो प्रभु  
जलद बुढा अतिकारी ॥ मन्दोदरी अवण ताटंका ॥ सो प्र  
भुज बुढा मिनीदमंका ॥ वाजहिं तालमृदङ्ग अतूपा ॥ सो  
इरव मथुरा सुनइ सरभूषा ॥ प्रभु सुखान समुजि अभिमा  
ना ॥ चाप चण्डावाण संधाना ॥ दोहा ॥ कुत्र मुकुट ताटंका  
सब हते एक ही बाण ॥ सब के देखत महि गिरे मर्मन कोऊ  
जान ॥ १८ ॥ यह कौतुक करि राम शर प्रविशे आनि घंग ॥  
रावण सभा सशंक सब देखि महारस भंग ॥ १९ ॥ चौपाई ॥  
कंपन भूमि न मरुत विशेषा ॥ असु शसु कोउन यन न देखा  
शोचहिं सब निज हृदय विचारी ॥ अशगुण भयउ भयङ्कर  
भारी ॥ रावण दीख सभा भय पाई ॥ विहंसि वचन कह युक्ति  
बनाई ॥ शीश गिरे सन्तत शुभ जाही ॥ मुकुट गिरे कस अश  
गुण ताही ॥ शयन करइ निज निज गृह जाई ॥ रावने भवन  
सकल सिरनाई ॥ मन्दोदरी शोचउ रवसेऊ ॥ जब ते अवण फू  
ल महि खसेऊ ॥ सजल नयन कह युग कर जोरी ॥ सुनइ आ  
ण पति विनती मोरी ॥ कान्त राम विरोध परिहरइ ॥ जानि म  
नुज निहउ उर परइ ॥ दोहा ॥ विश्वरूप रचुं वंशमणि कर  
इ वचन विश्वास ॥ लोक कल्याण वेद कह्यो मंगल प्रतिजा



गमा.  
ले.  
५

सु॥१०॥चौपाई॥ पदपातालशी सप्रजधामा॥अपरलोक  
अंगअंगविश्रामा॥भृङ्गटिविलासभयंकरकाला॥नयन  
दिवाकरकचवनमाला॥जासुझाणाअश्वनीकुमारा॥निशि  
अरुदिवसनिमेषअपारा॥अवगादिशादशावेदवखानी॥  
मारुतश्वासनिगमनिजवाणी॥अथरलोभयमदशनकरा  
ला॥मायाहासवाङ्मदिगपाला॥आननअनलअसुपति  
जीहा॥उतपतिपालनप्रलयसमीहा॥रोमराजिअष्टादशा  
भारा॥अस्थिशैलसरितानसजारा॥उदरउदधिअथगोजात  
ना॥जगमयप्रभुकीबद्धकल्पना॥दोहा॥अरुङ्गारशिवबुद्धि  
अजमनशशिवित्तमहान॥मनुजवासचराचररूपराशिभ  
गवान॥२॥असविचारिसनुषाणपतिप्रभुसनवैरविहार॥  
प्रीतिकरङ्गरबुवीरपदममअदिवातनजार॥२२॥चौपाई॥  
विहंसानारिवचनसुनिकाना॥अहोमोहमहिमाबलवाना  
नारिसभावसत्यकविकहरई॥अवगुणाआढसदाउररहरई॥  
साहसअनृतचपलतामाया॥भयअविवेकअशौचअदाया  
रिपकरूपसकलतैंगावा॥अतिविशालभयमोहिसनावा  
मोसवप्रियासहजवशामोरे॥समुजिपराप्रसादअवतौरे॥  
जानेउप्रियातोरिचतरार्ई॥यहमिसकहेइमोरिप्रभुतार्ई॥त  
बवतकहीमृदुमृगलोचनि॥समुजतसुखदसुनतभयमो  
चनि॥मन्दोदरिमनमहंयहदृष्टयऊ॥प्रियदिकालवशमतिभ्र

सादरी  
२



मभयऊ॥**दोहा**॥ बद्धविथजल्येसिसकलनिशिशातभयेद  
 शकन्य॥ सहजअसङ्गः सोलंकपतिसभागयोमदअन्य॥ २३  
**सोरठा**॥ फूलैफरैनवेतयद्यपिसुधावरषैजलद॥ मूरखरुद  
 यनचेतजोगुरुमिलदिंविरञ्चिशत॥ २४॥**दोहा**॥ मंत्रिनसदि  
 तदशाननचढेउपौरहरजा॥ शुक्सारनकदराजसबदेखउ  
 दलसमुदा३॥ २५॥**चौपाई**॥ यहजोसिंहनादकिलकाई॥ तरु  
 वरसप्रसमानउचाई॥ सहसकोटिशतशंऊममाना॥ एहिके  
 सङ्गवानरपरिमाना॥ राणअजीतअरुसहजअशंका॥ नाद  
 सुनेकोपैगढलंका॥ लगिअकाशवनचरलङ्कूरा॥ जनुअ  
 तपावसथनुनभपरा॥ विश्वकरमाकेसुतअभिमानी॥ इनसा  
 गरबांयेउअनुमानी॥ वसहिताअगिरिकन्दरमाही॥ गोदाव  
 रीविमलजलपाही॥ अतिबलआगेभावहिबीरा॥ इनपरकृपा  
 करहिरचुवीरा॥ इनकेपरसकियेगिरिशीला॥ जलमेतरदि  
 नामनलनीला॥**दोहा**॥ पयअटारहकपिकटकचलेइनकेभु  
 जछोह॥ अपनेहाथसुपुष्पलैरचुपतिपूजीवांह॥ २६॥**चौपाई**  
 यहजोआवतअचलसमाना॥ चौदहतारऊचपरमाना॥ वास  
 पुलिन्दाकेतटकरई॥ अम्बुदऊपरयहसंचरई॥ रक्तकमलके  
 सरसमदेहा॥ जनुआकाशसंध्याकरमेहा॥ हतैमेदिनीपूछ  
 भुमाई॥ लंकागोहचितैजनुवाई॥ तारासअनवालिकोजायो  
 अतिनऊारचुपतिमनभायो॥ मनमेजपैरामकरनोऊ॥ नि



शिदिनयेकरयहैसुभांऊ॥करैवज्रवासवकरभरू॥उदया  
 चलकहंलेउतसऊ॥सैनापतियहसबकेआगे॥रनुपति  
 कृपाकरतबउभागे॥दोहा॥पांवभूमिजोचापहीपन्नगहो  
 दिअकाज॥पांचपयवानरलियेयहअरूदयुवराज॥२॥  
 चौपाई॥यहजोसेतलसैतनुरेखा॥जनुहूऐकरअरूअवे  
 षा॥दोर्वकेपादारुणभुजदंडा॥पायचपलस्रवंगबुद्धिप्र  
 चंडा॥वासकौजलनिधिकेतीरा॥पानकरेगोमतीसुनीरा  
 चपसग्रीवकेअधिकारी॥सबलबूहयहरचैसंवारी॥ब  
 लअरुबुदिनइनसमआना॥इनकरपुर्षारथजगजाना॥  
 जेदिदिनजनमेउबलअधिकारै॥चढेउगगनशशिदेविल  
 लारै॥चन्द्रदियरेगगनउक्रेउ॥सत्तरिजोजनतेउनिफेरै  
 दोहा॥मरकटकोटिपंचाशसैरहैसर्वदासाय॥कालइतेर  
 णामेजुजैऊमुदनामकपिनाथ॥२॥चौपाई॥यहदेवइजो  
 वटासोहारै॥मनोभरभादोंकैबइतारै॥आगेपाकैदशदिशि  
 आवदि॥शिलाशृङ्गतरुतोरतआवदि॥सहसनागबलशो  
 ऊसमाना॥सप्रपयइनकरपरमाना॥येअतपकाशीकेवा  
 सी॥अजरअजीतअचलअविनाशी॥तीलाटादंतनखापुथा  
 थारी॥गदिमारदिगजदन्तउपारी॥इनअतनकरएथअपा  
 रा॥भूमकेतयहपालनहार॥इहकरनोषुबन्युजामवन्ता  
 जिदिकेवलकरअरदिनअन्ता॥तीनिलोकसोज्रैपारै॥



मरुटपरैसुमेरुउखारै॥ वसैअशंकनर्मदातीरा॥ वज्रस  
 मानअभेदशरीरा॥ दोहा॥ राजाकरयहमंतरीरुपतिके  
 प्रियदास॥ कालइतेजूजैसमरनेकनलेउआस॥ २५॥ चौ॥  
 अबदेखइयहयूथअपारा॥ पीतवरणाहोउगपउपहारा॥  
 बालअरुणारविकीरणासफूटी॥ ऊंऊममाटदिशाजनुकूटी  
 चौविशअर्बुदइनकरयूहा॥ सहसवृन्दसौकोटिसमूहा॥  
 शिलाशृङ्गजेशागेपरही॥ पायनमीडिकिरिकिराकरही  
 कञ्चनगिरिकन्दरकेवासी॥ इनकरयूथनाथअविनाशी  
 अतिबलवासवकरहितकारी॥ सखासकएकैरशुभका  
 री॥ पानकरैगंगाकरनीरा॥ पर्वतशृङ्गसमानशरीरा॥ त  
 णाक्षणासिंदनादजोहोई॥ यहगरजतआवतहैसोई॥ सोर  
 ढा॥ यशतिङ्गगाण्डगलितराजबलकरनाहिनआना॥ यह  
 कपिराजाकेसरीजिहिकरसतहनुमन्त॥ ३०॥ चौपाई॥ व  
 टाएकआवतहैजूटी॥ जनुमधुसिंधुबलैनिशिफूटी॥ भू  
 मिअकाशअचलअवसाने॥ उत्तरतेंजनुसलभउगने॥ यदि  
 महयूथनाथजोअहई॥ अतिबलराजाकेसंगरहई॥ कपि  
 केरूपअनलअविनासी॥ येदोउपारिपात्रकेवासी॥ अतिस  
 न्दरअरुसमरवियही॥ महावीरदोरुगवयगवाली॥ पीव।  
 हितरुभद्रकरनीरा॥ एमर्दनगंधमादनदोरुवीरा॥ सादि  
 सहसनागबलजाही॥ इनमहएककहौमैताही॥ भेरीनाद



रामा.  
सं.

सिंहकराणा ॥ विक्रमसारहल अनुमाना ॥ दोहा ॥ देवन  
मेजस सरपति ते जन मेजस भाव ॥ यन सनाम यहवानर अ  
तिबल नीति निधान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ यह जो कमल पत्र सम  
देहा ॥ जनु कैलास पृष्ठ की रेहा ॥ लोचन मधुपिङ्गल अति  
लोणो ॥ कामरूप चितवत चंद्रकोणो ॥ लंका सौंदर्य रभ  
वाई ॥ गर्जत आववतु की नाई ॥ सरपति सङ्ग पुष्पक हंगय  
उ ॥ तब ते कामरूप यह भयउ ॥ पदिसो वासव सो जमि नाई  
ता ते यह देवन को भाई ॥ सहस्र कोटि कपि पदिके सङ्गा ॥ रा  
ते पीत स्रेत बद्ध रङ्गा ॥ दोहा ॥ गिरिवर लंचत आवही चलत  
उडावै रेण ॥ तरणि तेज यह रुं पेउ तारा तनय सुषेण ॥ ३२ ॥  
चौपाई ॥ यह कपि को देखत नु फेरा ॥ जनु सपत्न उडचलेउ  
सुमेरा ॥ एक बार लंका पदि जारी ॥ पुनि गर्जत आवत पदिया  
री ॥ जेहि दिन गर्भ अंजनी जायो ॥ बाल अरु नली लन कह्या  
यो ॥ जो जन तीन सहस्र उडि गयउ ॥ उदया चलरूप रद्वै गहेउ  
सब देव नद मिलि अस्तुति कीन्हा ॥ तब रविकुंठि पवन सुत  
दीन्हा ॥ कामरूप अतलित बल येही ॥ काल दण्ड कलि शा  
सम देंही ॥ वेगवन्त जस गरु उडाही ॥ बुद्धि वन्त हसर अस  
नाही ॥ विया पढन भानु पद जांही ॥ उलटे गति रविसङ्ग उडा  
ही ॥ नाक नाग नर पुरगति कारी ॥ महा अवधित पते जपरा  
री ॥ वारि पिलोचे उगो पद जै से ॥ यह कपीश मन जूब अव



कैसे ॥ दोहा ॥ तेजतरणि उवपावक पवन ते वेग अपार ॥ कंध  
 लिये दो उवंधुकों श्रीरघुवंश कुमार ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ अत सी वर  
 ण ऊ समत तुरेषा ॥ पुरुष पुराण थरे नर वेषा ॥ मन्न गजेन्द्र  
 ण उभुज दण्डा ॥ धनुष बाण असि धरणि प्रचंडा ॥ उर विशाल  
 अति उन्नत कन्यार ॥ कम्बु कंठ रेखा प्रसन्न वर ॥ मुख क्विकी  
 उपमा कवि जो हैं ॥ शशि सरोज सम कहै न सो हैं ॥ दशन पों  
 तिकी कान्तिक है को ॥ ललत मनः पट तरहि लै है को ॥ देवत  
 अथरन की अरुणाई ॥ विंवा फल बन्धू कल जाई ॥ सुकत एउ  
 दिनाशिकाल जावैं ॥ थके सकविन हि पट तर पावैं ॥ शीर्ष ज  
 दा के मुकुट वनाये ॥ भाल विशाल तिलक अति भाये ॥ दक्षि  
 ण दिशि लक्ष्मण बलवीर ॥ राम वाइ अरु प्राण समीर ॥ दो  
 हा ॥ वाम भाग विभीषण सिर अभिषेकाराज ॥ बीज मंत्र सब  
 जान ही अवक सर करहि अकाज ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ अब देखइ  
 यह सैन्या आई ॥ जस भर भादों की मेखवाई ॥ रक्त पीत अरु स्येत  
 शी आहा ॥ शिला शृङ्ग तरु वर की क्राहा ॥ कन्या एक ब्रह्म उप  
 जाई ॥ नैन भूरि अरु रूप लोणाई ॥ बालि भाय दिन कर बल दी  
 न्हा ॥ अत जानै वास वर तिकी न्हा ॥ जात कज मल वीर दोऊ  
 जाये ॥ देव अंशवान रहो य आये ॥ कि किन्या पुरि रन कर अ  
 म्पाना ॥ देव सरिस मधुवन उद्याना ॥ अघ मूक रन कर विश्रामा  
 वात मां सव से जहं रामा ॥ बाली ज्येष्ठ राम रा माग ॥ यहिक



दराजतिलकप्रभुसारा॥ तारातासुपाटकीराणी॥ जिहि  
 करसतअंगदअभिमानी॥ सहसशंऊकरअर्बुदएका॥ अ  
 र्बुदसहसकीचुन्दविशेका॥ सहसचुन्दजोहोइअमाना॥  
 महापयतेहिकरपरमाना॥ अैसेपयअटारदसाजा॥ विग्र  
 हबढेउरामकेकाजा॥ वीरवेषअरुनयनविशाला॥ कसुक  
 एरमोतिनकीमाला॥ दोहा॥ हस्तीसादिसहसबलसदा  
 धर्मकीसींब॥ अेतकुत्रमिरशोभितयहराजासुग्रीव॥ १५  
 इहिविधसकलदेखापशारनकपिदलसूह॥ गणोनराच  
 णाकालवशाअतिशयगर्वसमूह॥ १६॥ चौपाई॥ इहांप्रात  
 जागेरचुगई॥ पूछामतसबसचिवबुलाई॥ कहइवेगिका  
 करियउपाई॥ जाम्बवन्तकहपदमिरनाई॥ सुनुसर्वज्ञसा  
 कलउरवासी॥ बुद्धिबलतेजधर्मगुणराणी॥ मंत्रकहवनि  
 जमतिअनुसारा॥ दूतपटारयबालिऊमारा॥ नीकमंत्रसा  
 वकेमनमाना॥ अंगदसनकहकृपानिधाना॥ बालितनय  
 बुधिबलगुणधामा॥ लंकाजाइतातममकामा॥ वडतबु  
 जाइतमहिकाकहऊं॥ परमचतरमैजानतअहऊं॥ काज  
 हमारतासुहितहोई॥ रिपुसनकरइवतकहीसोई॥ सोरठा  
 प्रभुआजाथरिशीसचरणबन्दिअरुदकहेउ॥ सोईगुणसा  
 गरईशरामकृपाजापरकरइ॥ १७॥ स्वयंसिद्धसबकाजना  
 यमोहिआदरदयउ॥ असविचारिपुवराजतनुपुलकितह



धितदिये ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ बन्दिचरणउरपरिप्रभुताई ॥  
 अंगदचलेउसबहिसिरनाई ॥ प्रभुप्रतापउरसहजअंश  
 का ॥ रणाबांजराबालिसुतबंका ॥ पुरपैठतरावणाकर  
 वेटा ॥ खेलतरहासोइहोइगइभेटा ॥ बातहिंवातकर्षव  
 ढिआई ॥ युगलअतलबलअरुतरुणाई ॥ तेहिअंगदक  
 हंलातउठाई ॥ गहिपदपटकेउभूमिआमाई ॥ निशिच  
 रनिकरदेखिभटभारी ॥ जहंतहंचलेनएकहिंपकारी  
 एकएकसनमर्मनकहंदी ॥ समुजितासुबधचुपहोइ  
 रहंदी ॥ भयउकोलाहलनगरमजारी ॥ आवाकपिलङ्क  
 जैइजारी ॥ अबधोंकहाकरहिंकरतारा ॥ अतिसभीतसब  
 करहिंविचारा ॥ विनुएकेमगुदेदिंवताई ॥ जिदिचितव  
 हिमोजाइसुखाई ॥ दोहा ॥ गणउसभादरवारतबसमिरि  
 रामपदकज्ज ॥ सिंहठवनिइतउतचितैपीरवीरवलपुञ्ज ॥  
 चौपाई ॥ तरितनिशाचरएकपरावा ॥ समाचाररावणा  
 हिजनावा ॥ सुनतबचनबोलेउदशशीशा ॥ आनइबो  
 लिकहांकरकीशा ॥ आयसुपाइहतवइथाये ॥ कपिऊ  
 झरहिबोलिलैआये ॥ अरुददीखदशाननबैसा ॥ सहित  
 प्राणकजलगिरिजैसा ॥ भुजाविटपसिरशृङ्गसमाना ॥  
 रोमाबलीलगतारुनाना ॥ सुखनासिकानयनअरुकाना  
 गिरिकन्दराखोइअनुमाना ॥ गयउसभामनमेऊनमुरा ॥



रामा.  
ले.  
५  
९

बालितनयश्रतिवलबोऊरा॥उठेसभासदकपिकहं  
 देखी॥रावणाउरभाक्रोधविशेषी॥**दोहा॥**यथामत्तगज  
 मृथमहंपञ्चाननचलिजाय॥रामप्रतापसम्भारिउर  
 वैदुसभहिसिरनाय॥५०॥**चौपाई॥**कहदशकन्यकवन  
 तैंवन्दर॥मैरचुवीरहतदशकन्यर॥ममजनकहितोदि  
 रहीमिताई॥तबहितकारणआपउंभाई॥उत्तमकुलपु  
 लसत्यकरनाती॥शिवविरञ्चिपूजेइवइभांती॥वरपा  
 येउकीन्देउसबकाजा॥जीतेइलोकपालसरराजा॥नृ  
 पश्रभिमानमोहवशाकिम्बा॥हरिआनेइसीताजग  
 दम्बा॥श्रवशुभकहाकरइतममोरा॥सबश्रपणथल  
 महिंप्रभुतोरा॥दशानगरइइतगाकंठऊठारी॥पुनजन  
 संगसहितनिजनारी॥मादरजनकसताकरिआगे॥३  
 दिविधिचलइसकलभयत्यागे॥**दोहा॥**विश्वरूपरघु  
 वंशमणिआदिआहिश्रवमोदि॥सनतहिआरतवच  
 नप्रभुश्रभयकरहिगैतोदि॥५१॥**चौपाई॥**रेकपियोच  
 बोलुसम्हारी॥मूढनजानसिमोदिसगरी॥कइनिज  
 नामजनककरभाई॥केदिनातेमानियैमिताई॥अंगद  
 नामबालिकरबेटा॥तामोंकवइंभइतोदिभेटा॥अंगद  
 वचनसनतसऊचाना॥रहाबालिवानरमैजाना॥अंग  
 दतेदिबालिकरबालक॥उपजेइवंशअनलकुलबालक



गर्भनखसे झूट्यातमजाय ॥ निजमुखतापसहतक  
 हाय ॥ अबकहुं ऊशलवालिकहं अहं ॥ विहंसिवचन  
 अंगदअसकहं ॥ दिनदशागएवालिपहं जाई ॥ पूछेऊ  
 ऊशलसावाउरलाई ॥ रामविरोधऊशलजशाहोई ॥ सो  
 सबतमहिंसुनाइहिंसोई ॥ सुनुशठभेदहोइमनजाके ॥  
 श्रीरघुवीरहृदयनहिताके ॥ दोहा ॥ हमऊलवालकम  
 तपमऊलपालकदशाशीश ॥ अन्योवधिरनकहिंसस  
 अवगनयनतोहिबीश ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ शिवविराजिसुरा  
 मुनिसमुदाई ॥ चाहतजासुचरणसेवकाई ॥ तासुहत  
 होइहमऊलबोरा ॥ ऐसीमतिउरविहरूनतोरा ॥ सुनिक  
 होरबाणीकपिकेरी ॥ कहतदशानननयनतरैरी ॥ खल  
 तबवचनकटिनमैसहं ॥ नीतिधर्मसबजानतअहं ॥  
 कहकपिधर्मशीलतातोरी ॥ हमऊसुनाकृतपरतीयचो  
 री ॥ देखेऊनयनदूतरखवारी ॥ बूडिनमरऊधर्मव्रतपारी  
 नाककानविनुभगिनीनिहारी ॥ लमाकीन्हतमधर्मवि  
 चारी ॥ धर्मशीलतातबजगजागी ॥ पावाटरशाहमऊं  
 उभागी ॥ दोहा ॥ जनिजल्पसिजउजन्तकपिशठविलोऊ  
 ममबाऊ ॥ लोकपालबलविपुलशशिग्रसनहेतजिमि  
 राऊ ॥ ४३ ॥ पुनिनभशरममकरनिकरकरकमलनपर  
 काम ॥ प्रोभितभयउमरालश्वशम्यसदितकैलाश ॥ ४४ ॥



रामा.  
ले.  
१०

चौपाई॥ तमरेकटकमोजसुनुग्रंगद॥ मोसनभिरहिं  
कवनयोपावद॥ तवप्रभुनारिविरहबलहीना॥ अनुज  
तासुदुखदुखितमलीना॥ तमसुग्रीवकुलडुमदोऊ॥  
अनुजहमारभीरुअतिसोऊ॥ जाम्बवन्तमंत्रीप्रतिगूढा  
सोकिमिहोइसमरआरूढा॥ शिल्पकर्मजानतनलनी  
ला॥ हैकपि एकमहाबलशीला॥ आवाप्रथमनगरजे  
हिंजारा॥ सुनिहंसिबोलेउवालिऊमारा॥ सत्यवचनक  
हनिशिचरनाहा॥ सांचडंकीशकीन्हपुरदाहा॥ रावण  
नगरअल्पकपिदहई॥ सुनिअसवचनसत्यकोकदहई॥  
जोअतिसुभटसराहेइरावण॥ सोसुग्रीवकेरलबुधा  
वन॥ चलेबडतसोवीरनहोइ॥ पटवाखवरिलेनहमसो  
ई॥ दोहा॥ सत्यनगरकपिजापउविनुप्रभुआयसुपाइ॥  
फिरिनगपउसुग्रीवपहंतेहिभयरहेउलुकाइ॥ ४५॥ स  
त्यकहसिदशकाणसबमोहिनसनेककुकोह॥ कोउ  
नहमरेकटकअसतमसनलरतजोसोह॥ ४६॥ प्रीति  
विरोधसमानमनकरियनीतिअसिआदि॥ जौमृगपति  
वधमेउकहिभलौकहैकोतादि॥ ४७॥ यद्यपिलचुतारा  
मकहंतोहिवधेबउदोष॥ तदपिकठिनदशकाणसुनु  
तत्रिजातिकररोष॥ ४८॥ हंसिबोलेउदशमौलितवकपि  
करबउगुणपक॥ जोप्रतिपालैतासहितकरैउपायअनेक

४५



**चौपाई**॥ यन्त्रकीशजोनिजप्रभुकाजा॥ जहंतहं नाचहिं प  
 रिहरिलाजा॥ नाचिकुदिकरिलोकरिजाई॥ पतिहितकर  
 हिंयर्मनिपुणार्ई॥ अंगदस्वामिभक्ततबजाती॥ प्रभुगुणक  
 सनकरहसिपहिभांती॥ मैगुणागाहकपरमसुजाना॥ तब  
 कटुवचनकरोनहिकाना॥ कहकपितवगुणागाहकताई॥  
 सत्यपवनसुतमोहिसुनाई॥ वनविधंसिसुतवधिपुरजारा  
 तदपिनतेहिककुतप्रयकारा॥ सोरविचारितवप्रकृतिस  
 हाई॥ दशकन्यरमैकीन्दछीठाई॥ देखेउआइजोककुकिपि  
 भाषा॥ तमहरेलाजनरोषनमाखा॥ दोहा॥ वक्रउक्तिपनुवच  
 नशरहृदयदहेउरिपुकीश॥ प्रतिउत्तरसनसिन्हमनइंकाट  
 तभटदशशीशा॥ ५०॥ **चौपाई**॥ जोअसमतिपितवायेइकी  
 शा॥ कहिअसवचनहंसादशशीशा॥ पितहिंवाशवातेउ  
 अबतोही॥ अबहीसमुजिपराककुमोही॥ बालिविमलय  
 शाभाजनजानी॥ हतौनतोहिअथमअभिमानी॥ कइंरावण  
 रावणजगकेते॥ मैनिजअवणसुनेसुनुतेते॥ रावणएकम  
 हाबलगर्वा॥ जीतनचलेउसरासरसर्वा॥ सागरउत्तरिपारा  
 सोरापउ॥ नारिवृन्दसोदेखतभपउ॥ तिनसनकरहसिपतिन  
 पहिजाह॥ कहुएकआपउनिशिचरनाह॥ तबमैतिनहिंजी  
 तिसंशामा॥ लैजैहौं तमहकोनिजधामा॥ सुनतवचनएकज  
 हरिसानी॥ आचरणगहिगगनउजानी॥ गईहरियरियरिज



रामा.  
ले.  
५

कजोरा॥ शरेसि सिंधु मध्य अतिजोरा॥ दोहा॥ गणउ अगाथ  
अचेत होइ मरै न विप्र प्रसाद॥ सावधान उठि चले उ पुनि हियेन  
हरष विषाद॥ ५१॥ चौपाई॥ एकरावण के कहे उ कहानी॥ जी  
तई चले उ शशी अभिमानी॥ गणउ निकट अतिशीत भएऊ  
कम्पित गात्र विकल भय फिरेऊ॥ बलिजीत नएक गणउ पता  
ला॥ राखा बांधि शिशु न हय शाला॥ खेलहि बालक मा  
रहिं जाई॥ दयाला गि बलि दीन्ह कुडाई॥ एक वदोरि सहस  
भुज देखा॥ पाइथ राज नु जन्त विशेषा॥ कौतुक लागि भव  
न लै आवा॥ सो पुल सत्य मुनि जाइ कुडावा॥ बझ प्रकार मु  
नि ताहि सिखावा॥ गणउ सो पुर परिला जन आवा॥ दोहा॥  
एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालिके काँख॥ इन्ह महे  
रावण तैं कवन सत्य कहइ तजि माँख॥ ५२॥ चौपाई॥ सुनु  
शठ सोइ रावण बल शीला॥ हरि गिरि जान जासु भुज लीला  
जानउ मापति जासु शूराई॥ पूजे जे हिंशिर समन चढाई॥  
शिर मगे जनि जकर मूउतारी॥ पूजेउ अमित वार विपु गरी  
भुज विक्रम जानहि दिक्पाला॥ शठ अजहू जिन के उरणा  
ला॥ जानहिं दिग गज उर करि नाई॥ जब जब भिरेउ जाइ वरि  
आई॥ जिन के दशन कराल न फूटे॥ उरलागत मूल कइ बट्टे  
जासु चलत डोलत इमि धरणी॥ चढत मत गज निमिल चु  
तरणी॥ सोइ रावण जग विदित प्रतापी॥ सुनेन अवण अलीक



प्रलापी॥**दोहा**॥ तेहि रावण कहल चुकह सिनर कर कर  
 सिव खान॥ रेक पि वर र खर्व खल तवन जान अब जान॥ ५३  
**चौपाई**॥ सुनि अंगद सकोप कहवाणी॥ बोलु सम्भारि अथ  
 म अ भि मानी॥ सह सबा ड भुज गरुन अ पारा॥ दहन अनल  
 कुल जा सुकुठारा॥ जा सुपर सुसागर खर धारा॥ बूडे नृप अ  
 गणित बद्ध बारा॥ ता सुगर्व जेहि देवत भागा॥ सो नर कि मि  
 दशक एव अ भागा॥ राम मनुज कस रेशा टवंगा॥ यन्त्री काम  
 नदी पुनि गंगा॥ पशु सरथे नुकल्प तरु रूपा॥ अन्न दान अरु  
 रस किपी पूषा॥ चैन ते यख ग अहि सदसानन॥ चिन्ता मणि  
 की उपल दशानन॥ सुनु मति मन्द लोक वै ऊ एठा॥ लाभ कि  
 रनु पति भक्ति अऊ एठा॥**दोहा**॥ सेन सहित तव मान मथिव  
 न उजारि पुर जारि॥ कस रेशा टहनु मान कपि गाय उजोत वसुत  
 मारि॥ ५४॥**चौपाई**॥ सुनु रावण परिहरि चतु राई॥ भज सिन  
 कृपा सिंधु रघु राई॥ जौं खल भये सि राम कर दोही॥ ब्रह्म  
 रुद्र शकरा खिन तोही॥ मूढ मूषा जनि मार सि गाला॥ रा  
 म वैर दोइ हि अ महाला॥ तव सिर निकर कपिन के आगे॥ प  
 रि है धरणी राम शर लागे॥ ते तव सिर कंडु कर वना ना॥ खे  
 लि हिं भालु की श चौगाना॥ जब हिंस मर कोप हिं रघु नायक  
 कुटि हि अति कराल बद्ध शायक॥ तब किचलि हि अ सगा  
 लत म्हा रा॥ अम विचारि भजु राम उदा रा॥ सुनत वचन राव  
 ण पर जरा॥ जरत महान लमहन नु चेत परा॥**दोहा**॥ ऊम्भ

रामकली



रामा.  
ले.  
१२

12

कर्णसमबंधुममसुतप्रसिद्धशक्रारि॥ममबलप्रवणसु  
नेमिशठजितेउंचरचरजारि॥५५॥चौपाई॥शठशाखासु  
गजोरिसहाई॥बान्यासिंधुइहैप्रभुताई॥लोचहिंखगअने  
कवारीणा॥सुरतहोहिंतेसुनकीणा॥ममभुजसागरजल  
बलपूरा॥जहंदूउंसुरनखड्गशूरा॥वीसपयोधिअगाधअ  
पारा॥कोअसवीरजोपावहिंपारा॥दिकपालनपरनीरभ  
रावा॥भूपसुयशाखलमोहिसुनावा॥जौपैसमरसुभटतब  
नाथा॥पुनिपुनिकहसिजासुगुणागाथा॥तौवशीठपठ  
वाकेहिकाजा॥रिपुसनप्रीतिकरतनहिंलाजा॥हरगिरि  
मथननिरखिममनाहू॥पुनिशठकपिनिजप्रभुहिंसराहू  
दोहा॥शूरकवनरावणसरिसखकरकाटिनिजशीशा॥इ  
तेअनलमहवारवड्गदुर्धितसाखिगिरीणा॥५६॥चौपाई॥  
जरतविलोकेउंजबहिंकपाला॥विधिकेलिखेअंकनिज  
भाला॥नरकेकरआपनवधवांची॥हंसेउंजानिविधिगिरा  
असांची॥सोमनसमुजिआसनहिमोरे॥लिखाविरंचिजर  
ठमतिभोरे॥आनवीरबलशठममआगे॥पुनिपुनिकह  
सिलाजपरित्यागे॥कहअंगदसलजजगमांदी॥रावण  
तोहिसमानकोउनाही॥लाजवन्ततबसहजसुभाऊ॥नि  
जगणनिजमुखकहसिनकाऊ॥शिरअरुशैलकथाचि  
तरहदी॥तातेंवारवीषातेकहदी॥सोभुजबलगालेउउरवा  
ली॥जीतेउंसहसबाइबलिवामी॥सुनुमतिमन्ददेहीअब



पूरा॥ काटेसीसनहोइहिपूरा॥ इन्द्रजालिकहकहिय  
 नवीरा॥ काटेनिजकरसकलशरीरा॥ दोहा॥ जरहिंय  
 तइमोहवशभारवहहिंखरवृन्द॥ तेनहिपूरकहाव  
 हींसमुजिदेखुमतिमन्द॥ ५०॥ चौपाई॥ अबजनिवात  
 बजावखलकरही॥ सुनममवचनमानपरिहरही॥ द  
 शमुखमैनवशीठीआयेउ॥ असविचारिबुवीरपढाये  
 उ॥ बारबारअसकहेउकृपाला॥ तहिगजारियशवयेंशृ  
 गाला॥ मनमहंसमुजिवचनप्रभुकेरे॥ सहेउंकढोरव  
 चनशठतेरे॥ नाहितकरिमुखभेनतोर॥ लैजातौसी  
 तहिवरजोर॥ जानातबबलअथमसरारी॥ शूनेह  
 रिआनिहिंपरनारी॥ तैनिशिचरपतिगर्ववद्वता॥ मै  
 रबुपतिसेवककरहता॥ जौनरामअपमानहिउरुं॥  
 तोहिदेखतअसकौतककरुं॥ दोहा॥ तोहिपटकिम  
 हिसेनहितचौपटकहितवगांउं॥ तवपुवतिन्दसमेत  
 शठजनकसुतहिलैजांउं॥ ५१॥ चौपाई॥ जौअसकरुं  
 तदपिनबडाई॥ मुयेवथेककुनहिंसत्रुशार्इ॥ कौलका  
 मवशकृपणविमूढ॥ अतिदरिद्रअयशीअतिबूढा  
 सदारोगवशमन्ततक्रोधी॥ विमुविमुखप्रतिसन्त  
 विरोधी॥ तबपोषकनिन्दकअवतानी॥ जीवतसब  
 समचौदहप्राणी॥ असविचारिखलवथौंनतोही॥ अ



वजनिरिसिउपजावसिमोही॥ सुनिसकोपकहनि  
 शिचरनाथा॥ अथरदशानउसिमीजतहाथा॥ रेकपि  
 अथममरणअवचहसी॥ कोटेवदनवातबउकहसी  
 कटुजलल्पसिशाटबुधिबलजाके॥ बलप्रतापबुधि  
 तेजनताके॥ दोहा॥ अगुणअमानविचारितेहिं पिता  
 दीन्हवनवास॥ सोदुखअरुपुवतीविरहप्रनिनिशि।  
 दिनममत्राम॥ ५५॥ जिनकेवलकरगर्वतोहिपेसेम  
 नुजअनेक॥ खाहिंनिशाचरदिवसनिशिमूढसमुक  
 तजिटेक॥ ६०॥ चौपाई॥ जबतेहिंकीन्हगमकरनिन्दा॥  
 क्रोधवन्ततवभपउकपीन्दा॥ हरिहरनिन्दासुनहिंजे  
 काना॥ होरपापगोवातसमाना॥ कटकठाइकपिऊं  
 जरभारी॥ दौभुजदाउतमकिमहिमारी॥ डोलतपरणि  
 सभासदावसे॥ चलैभागिभयमारुतयसे॥ गिरतद  
 शाननउठेउसमारी॥ भूतलपरेउमुकुटषटचारी॥ क  
 कुतेहिलैनिजसिरनिममारे॥ ककुग्रंगदप्रभुपासप  
 वारे॥ आवतमुकुटदेखिकपिभागो॥ दिनहीलूकपर  
 विधिलागे॥ कीरावणकरिकोपचलाए॥ ऊलिशचा  
 रियावतप्रतिपाए॥ कहप्रभुहंसिजनिहृदयउराइ॥  
 लूकनअशानिकेतनहिगाइ॥ एकिरीटदशकन्यारके  
 रे॥ आवतबालितनयकेप्रेरे॥ दोहा॥ तरकिपवनसुतक



रगदेशानिथरेप्रभुपास॥ कौतुकदेवहिंभालुकपिदि  
 नकरसरिसप्रकाश॥६१॥ सोरठा॥ उहोकोपिदशाननस  
 वसनकहतरिसाय॥ थरुडकपिहिंथरिमारुसुनिअरु  
 दमुसुकाय॥६२॥ चौपाई॥ उहोकहतदशकन्यरिसाई॥  
 थरिमारुडकपिभागिनजाई॥ इहिविथवेगिसुभटसब  
 पावाड॥ एवाडभालुकपिजहंजहंपावड॥ मर्कटहीनक  
 रडमहिजाई॥ जिअतथरुडतपसीदोउभाई॥ पुनिसकोप  
 बोलेउयुवराजा॥ गालबजावततोहिनलाजा॥ मरुगर  
 काटिनिलजकुलवाती॥ बलविलोकिविदरतिनहि।  
 क्वाती॥ रेतियचोरकुमारगगामी॥ खलमलराशिमन्द  
 मतिकामी॥ सन्निपातजल्यसिदुर्वादा॥ भएसिकालव  
 शाखलमनुजादा॥ याकोफलपावडगोआगे॥ वानरभा  
 लुचपेटनलागे॥ राममनुजबोलतअसुवाणी॥ गिरहि  
 नतबरसनाअभिमानी॥ गिरिहैरसनासंशयनाही॥ शि  
 रनसमेतसमरमदिमाही॥ सोरठा॥ सोनरकसदशकन्य  
 बालिवयेउजेहिंपकशर॥ बीसडलोचनअन्यधुकतब  
 जन्मकुजातिजउ॥६३॥ तवशोणितकीष्पासतधितराम  
 शायकनिकर॥ तजेउंतोहितेहिंआमकडजल्यसिनिशि  
 चरअथम॥६४॥ चौपाई॥ मैतबदशानतोरिवेलायक॥ आ  
 पसमोदिनदीनरचुनायक॥ असिरिसिहोतदशोमुख



तोरो॥ लंकागहिसमुद्रमहेंवोरो॥ गूलरफलसमान  
तबलंका॥ बसहिंमथजनुजन्तअशंका॥ मैवानरफ  
लखातनवारा॥ आपसुदीन्दनरामउदारा॥ युक्तिसुनत  
रावणमुसकाई॥ मूढशिवेसिकहंवडतकुटाई॥ बालि  
कबडंअसगालनमोरा॥ मिलितपसिनतैभणशिलवारा  
सांचेडमैलवारभुजवीहा॥ जौनउपारौतबदशजीहा॥  
रामप्रतापसमुक्तिकपिकोपा॥ सभामाऊप्रणकरिपद  
रोपा॥ जौममचरणशकसिशाठटारी॥ फिरहिंरामसीता  
मैहारी॥ सुनइसुभटसबकहदशशीसा॥ पदगहिथ  
रणिपकारइकीशा॥ इन्द्रजीतआदिकबलवाना॥ हर्षि  
उटेजहंतहैभटनाना॥ ऊपटहिंकरिवलविपुलउपाई  
पदनटरैवैटहिंसिरनाई॥ पुनिउठिऊपटहिंसुरआरा  
ती॥ टरहिनकीशचरणयहिभाती॥ पुरुषऊयोरीजि  
मिउरगारी॥ मोहविटपनाशकहिंउपारी॥ दोहा॥ भूमि  
नकाउतकपिचरणदेखतरिपुमदभाग॥ कोटिविचन  
जिमिसन्तकहंतदपिनीतिनहित्याग॥ ६५॥ चौपाई॥  
कपिवलदेविसकलदियहारे॥ उठाआपुपुवराजप्रचा  
रे॥ गहतचरणकहवालिकुमारा॥ ममपदगहेनतोरउ  
वारा॥ गहमिनरामचरणशठजाई॥ सुनतफिरामनअ  
तिमऊचाई॥ भयेउतेजहतश्रीसवगाई॥ मथ्यदिवसजिमि



शशिसोदर॥ सिंहासनवैद्यसिरनार॥ मानऊसंपति  
 सकलगवार॥ जगदाधारप्रणतपतिरामा॥ तासवि  
 मुखकिमिलहविश्रामा॥ उमारा मकरभृकुटिविला  
 सा॥ होइविश्वपुनिपावैनाशा॥ तणातेंकुलिशकुली  
 शतराकरंदी॥ तासदूतप्रणकडंकिमिटरंदी॥ पुनिक  
 पिकहानीतिविधिनाना॥ मानतनाहिकालनिअराना  
 रिपुमदमधिप्रभुसुयशनायेउ॥ यहकपिचलाबालि  
 नृपजायेउ॥ सबहीमुखकाकरौंबडाई॥ हतैहोंखेतखे  
 लाखेलार॥ प्रथमहिंतासतनयनकपिमारा॥ सोस  
 निरावणभयेउडखारा॥ यातथानअरुदबलदेखी॥ भ  
 यव्याकुलसबहृदयविशेषी॥ दोहा॥ रिपुबलहर्षिह  
 र्षिहियबालितनयबलपुञ्ज॥ सजलनयनतनुपलक  
 अतिगहेरामपदकञ्ज॥ ६६॥ सोऊजानिदशकन्यतव  
 भवनगयेउविलखार॥ मन्दोदरीअनेकविधवक्ररि  
 दासमुजार॥ ६७॥ चौपाई॥ कान्तसमुझिमनतजऊऊ  
 मतिंदी॥ सोदनसमरतमहिंरुपतिंदी॥ रामअनुज  
 लचुरेखखचार॥ सोनहिलांवेडअसमनुसार॥ प्रिय  
 नेहितेंजीतवहंगामा॥ जाकेहतकेरअसकामा॥ कोत  
 कसिंपुलांचितबलंका॥ आउकपिकेसरीअशंका  
 रावबारेइतिविधिउजारा॥ देखततमहिंअत्यजिन्द



रामा.  
ले.  
१५

15

मारा॥जारिनगरजेरकीहेसितारा॥कहोरहाबल  
गर्वतम्हा॥अवपतिवृषागालजनिमारड॥मोरकहा  
ककुहृदयविचारड॥पतिरचुपतिहिंनृपतिजनिजा  
नड॥अगजगनाथअतलबलामानड॥बाणप्रताप  
जानमारीचा॥तासुकहानहिमानेडनीचा॥जनकस  
भाअगणितमहिपाला॥रहेउतहांतमगर्वविशाला  
भस्त्रिधनुषजानकीविवाही॥तवसंग्रामजितेडनहि  
ताही॥सरपतिसुतजानाबलचोरा॥राखाजिअतग्रं  
खिगदिफोरा॥सूर्यनखाकीगतिबमदेखी॥तदधि  
हृदयनहिलाजविशेषी॥दोहा॥बधिविगथखरदृष  
णाहिंलीलारुतेउकबन्ध॥बालिएकशरमारेउतेहि  
नरकहृदशकन्द॥३८॥चौपाई॥जेहिजलनाथबन्धये  
उहेला॥उतरेउकपिटलमहितसवेला॥कारुणीक  
दिनकरऊलकेत॥हृतपटापउतबहितहेत॥सभामं  
ऊजेउतबमदमथा॥करिवरूथमहंमृगपतियथा॥  
अंगदहनुमतअनुचरजोके॥राणबांऊरेवीरअतिवां  
के॥तेहिंकहंप्रियपुनिपुनिनरकहृद॥सुधामानम  
मतामदबहृद॥अहृदकान्तकृतगमविरोधा॥काल  
विषममनहोयनबोधा॥कालदाउगदिकाइनमारा  
हैरथर्मबलबडिविचारा॥निकटकालजेहिंआवतसाई



तेहिं भ्रम होइ तमहारिहिं नारै ॥ दोहा ॥ दुइ सुत मारेउ  
 नगर जरा अजं परतिय देइ ॥ कृपा सिंधु रघुवीर भजि  
 नाथ विमलयशालेइ ॥ ६५ ॥ चौपाई ॥ नारिवचन सुनि  
 विशिष समाता ॥ सभाग पउउटि होत विहाना ॥ बैठा जा  
 उ सिंहासन फूली ॥ अति अभिमान जामगा भूली ॥ इहां  
 राम अंगद हिं बुलावा ॥ आइ चरण पडू जसिर नावा ॥ अ  
 ति आदर समीप बैठारी ॥ बोले विहंसि कृपालु खरारी ॥  
 बालितनय अति कौतुक मोही ॥ तात सत्य कइ पूछैं तो  
 ही ॥ रावण यात धान कुलटीका ॥ भुजबल अतल जासु  
 जगलीका ॥ नासु कुटत मचारि चलाए ॥ कहइ तात  
 कवने विधि पाए ॥ कहा बालि सुत सुनइ खरारी ॥ सु  
 कुटन होइ भूषण गुण चारी ॥ साम दाम अरु दण्ड विभे  
 दा ॥ नृप उरवसहिं नाथ कहवे दा ॥ नीति धर्म के चरण सु  
 हाए ॥ असजिय जानि नाथ पहे आए ॥ दोहा ॥ धर्म हीन  
 प्रभु पद विमुख काल विवश दशशीश ॥ आप गुण तजि  
 रावण हिंसन इकोश लाथीश ॥ ७० ॥ परम चतर नाथ  
 वण सुनि विहंसै राम उदार ॥ समाचार तब सब कहै ग  
 ढ के बालि कुमार ॥ ७१ ॥ चौपाई ॥ रिपु के समाचार जब पा  
 ए ॥ राम सचिव सम निकट बुलाए ॥ लंका बंका चारि दु  
 आरा ॥ केहि विधिलागिय करइ विचार ॥ तब कपीश ॥

सिंधु



अक्षेणविभीषण॥ सुमिरिहृदयदिनकरजलभूषण  
 करिविचारतिहमंत्रदृढवा॥ चारिअनीककपिकटक  
 बनावा॥ यथायोगसेनापतिकीन्हे॥ पूषपसकलबो।  
 लितिहलीन्हे॥ प्रभुप्रतापसबकपिसमुजाये॥ सिंहना  
 दकरिसबकपिथाये॥ गर्जहिंतर्जहिंभालकपीशा॥ ज  
 परचुवीरकोशलापीशा॥ जानतपरमदुर्गअतिलंका  
 प्रभुप्रतापकपिचलेअशंका॥ छटाटोपकरिचंद्रदिश  
 चेरी॥ सुखहिंनिसानवजावहिंभेरी॥ दोहा॥ जयतिरा  
 मभ्रातासहितजयकपीशासग्रीव॥ गर्जहिंकेहरिनाट  
 कपिभालमहाबलसीव॥ ३२॥ चौपाई॥ लङ्काभएउको  
 लाहलभारी॥ सुनेउदशाननअतिहहकारी॥ देखइवा  
 नरकेरिछिछाई॥ विहसिनिशाचरसेनबुलाई॥ आये  
 कीशकालकेप्रेरे॥ लधावनरजनीचरमेरे॥ असकहि  
 अटहामशठकीन्हा॥ गृहवैठेअहारविधिदीन्हा॥ स  
 भटसकलचारिइदिशिजाइ॥ थरिथरिभालकीशम  
 वावाइ॥ उमाशवणादिअसअभिमाना॥ जिमिटिटिही  
 खगसुतउताना॥ चलेनिशाचरआयसमोगी॥ गहिक  
 रभिंदियालवरमोगी॥ तोमरमुझपरिचप्रचण्डा॥ शू  
 लकृष्णाणपरशुगिरिखण्डा॥ जिमिअरूणोपलनिकर  
 निहारी॥ पायेखगशठमोमअहारी॥ चौंचभऊडावति



नहिंनसूजा॥तिमियायेमनुजादश्रुजा॥दोहा॥ना  
 नापुथशरचापपरियातथानवरवीर॥कोटककुंरनच  
 ढिगयेकोटिकोटिराधीर॥१५॥चौपाई॥कोटकेकुंर  
 नसोहहिंकैसे॥मेरुशृङ्गपरजनुवनवैसे॥बाजहिंछो।  
 लनिमानजुजाऊ॥सुनिसुनिसुभटनकेमनचाऊ॥बाज  
 हिंभेरीनफीरिअपारा॥सुनिकादरउरहोइदारा॥देखि  
 नजाइकपिनकैदहा॥अतिविशालतनुभालसुभटा॥  
 कटकटाइकोटिनभटगर्जहिं॥दशननओठकाटिअति  
 तर्जहिं॥उतरावगाइतरामदोहाई॥जयतिजयतिकरि  
 परीलराई॥निशिचरशिखरसमूहछहावहिं॥कूटिथर  
 हिंकपिफेरिचलावहिं॥कुन्द॥थरिऊथरखारप्रचार  
 मर्कटभालगछपरगारही॥ऊपटहिंचरणागदिपटकि  
 महिमहंवारवारप्रचारही॥१॥अतितरुणातरलप्रताप  
 तर्जहितमकिगछपरचढिगये॥कपिभालचढिमन्दि  
 रनजहंतहंरामयशगावतभये॥२॥दोहा॥एकएकनि  
 शिचरगदिपुनिकपिचलेपरा॥ऊपरआपनतरअस  
 रगिरहिंथरणिमहंआर॥१५॥चौपाई॥रामप्रतापप्रबल  
 कपियूथा॥मर्दहिंनिशिचरसुभटवरूपा॥चछेडुर्गप्र  
 निजहंतहंनर॥जयरनुवीरप्रतापदिवाकर॥चलेनि  
 शाचरनिकरपराई॥प्रबलयवननिमिचनसमुदाई॥हा



रामा.  
लं.  
९

17

हाकारभयेउपुरभारी॥ रोवहिंआरतबालकनारी॥ स  
बमिलिदेहिंरावणाहिंगारी॥ राजकरतजेरमृत्सुहंकारी  
निजदलविचलसुनाजबकाना॥ फिरेसुभटलंकेशरिसा  
ना॥ जोरणविमुखफिरामैजाना॥ तेहिमारिहोंकरालकृ  
पाणा॥ सर्वस्वखाशभोगकरिगाना॥ समरभूमिभादुर्लभ  
प्राणा॥ उग्रवचनसुनिसकलउगने॥ फिरेवीरकरिक्रोथ  
लजाने॥ सन्मुखमरणवीरकीशोभा॥ तबतिनतजाप्रा  
णाकरलोभां॥ दोहा॥ बहूआपुथपरियरिसुभटभिरहिं  
प्रचारिप्रचारि॥ कियेव्याकुलभालकपिपरिवत्रिशूल  
निमारि॥ ५६॥ चौपाई॥ भयआतरकपिभागनलागे॥ य  
द्यपिउमाजीतिहैंआगे॥ कोउकहकहेंअरुदहवमन्ता  
कहेंनलनीलदुबिदवलबन्ता॥ निजदलविचलसुनाह  
नुमाना॥ पश्चिमद्वारहावलवाना॥ मेघनादतहेंकरैल  
गाई॥ दूटनद्वारपरमकठिनाई॥ पवनतनयमनभाअति  
क्रोथा॥ गर्जेंउप्रबलकालसमयोथा॥ कूदिलझागछरु  
परआवा॥ गहिगिरिमेघनादपरआवा॥ भञ्जेउरथसार  
थीनिपाता॥ तासुहृदयमहंमारेउलाता॥ दूसरसतवि  
कलतेहिजाना॥ स्पन्दनबालितरतवरआना॥ दोहा॥  
अरुदसुनेउकिपवनसतगछपरगणउअकेल॥ समर  
वांऊगबालिसततरकिचछेउकरिलेल॥ ५७॥ चौपाई॥



युद्धविरुद्धकुद्धदोउबन्दर॥ रामप्रतापसुमिरिउरअन्तर॥  
 रावणभवनचढेदोउधार्ई॥ करहिंकोशलापीशदोहाई॥  
 कलशसहितगहिभवनछहावा॥ देखिनिशाचरअति  
 भयपावा॥ नारिबृन्दकरपीटहिंछाती॥ अबहोकपिआये  
 उतपाती॥ कपिलीलाकरिसवहिंउरावहिं॥ रामचन्द्रकर  
 सुयशसुनावहिं॥ पुनिकरगदिकचुनकरखम्भा॥ कर  
 हिराउतपातअरम्भा॥ गर्जिपरेरिपुकटकमजारी॥ ला  
 गोमर्दनभुजवभारी॥ काङ्कहिलातचपेटनकेङ्क॥ भजेङ्क  
 नरामहिंसोफललेङ्क॥ दोहा॥ एकएकसनमर्दहिंतोरि  
 चलावहिंमुण्ड॥ रावणआगेपरहिंतेजनुफूटहिंदधिऊ  
 ण्ड॥ ३८॥ चौपाई॥ महामहामुखिआजेपावहिं॥ तेपदगदि  
 प्रभुपासचलावहिं॥ कहहिंविभीषणातिनकेनामा॥ देहिं  
 रामतिन्दकानिजधामा॥ खलमनुजाददिजामिषभोगी  
 पावहिंगतिजोयाचतयोगी॥ उमाराममृदुचितकरुणाक  
 र॥ वयरभावमोहिसुमिरतनिशिचर॥ देहिंपरमगतिअ  
 सजियजानी॥ कोकपालअसअहेभवानी॥ जेअसप्रभु  
 नभजहिंभुमत्यागी॥ तेमतिमन्दसोपरमअभागी॥ अरु  
 दअरुहनुमन्तप्रवेशा॥ कीन्दुर्गअसकदियवयेशा॥  
 लेका मरेकपिसोहहिंकेसे॥ मणहिंसिंधुदुर्मन्दरजैसे  
 दोहा॥ भुजबलरिपदलदलिमलेउदेखिरिवसकोअन्त॥



रामा.  
ले.  
१८

कूदिपुगलविगतप्रमथायेजहंभगवन्॥१५॥चौपाई  
प्रभुपदकमलशीमतिननाये॥देखिसुभटरचुपतिमन  
भाये॥रामकृपाकरिपुगलनिहारे॥भयेविगतप्रमपरम  
सुखारे॥गयेजानिअंगदहनुमाना॥फिरेभालुमर्कटभ  
टनाना॥यात्रपानप्रदोषबलपाई॥पायेकरिदशशीसुदो  
हाई॥निशिचरअनीदेखिकपिफिरे॥कटकटाइजहंतहं  
भटभिरे॥दोउदलभिरदिंप्रबलप्रचारी॥लरहिंसुभटन  
दिंमानदिंदारी॥वीरनिशाचरसबअतिकारे॥नानावर  
णबलीमुखभारे॥सबलपुगलदलसबअतियोथा॥वि  
विधप्रकारलरहिकरिक्रोपा॥आवृटपारटपयोदचनेरे॥  
लरतमनइंमारुतकेपेरे॥अनीअकंपनअरुअतिकाया॥  
विचलतसेनकीनतिनमाया॥भणउनिमिषिमहंअतिअ  
न्धिया॥बृष्टिहोउरुथिरोपलदारा॥दोहा॥देविनिवि  
उतमदशहृदिशकपिटलभणउखभार॥एकदिएकनदे  
खजबजहंतहंकरदिपुकार॥१६॥चौपाई॥यदसबमर्म  
विभीषणजाना॥लियेबोलिअंगदहनुमाना॥समाचा  
रसबकदिसमुजाये॥सुनतकोपिकपिऊझरथाये॥पु  
निकृपालहंसिचापचढावा॥पावकणायकसपदिच  
लावा॥भयउप्रकाशकतइंतमनाही॥ज्ञानउदयजिमि  
मंशयजाही॥भालुबलीमुखपाइप्रकाशा॥पायेकोपि



विगतप्रमत्तासा ॥ हनुमानअंगदरणागाजे ॥ हांकसुन  
 तरजनीचरभाजे ॥ भागतभटपटकहिंथरिथरणी ॥ करहिं  
 भालकपिअदभुतकरणी ॥ गरिपदगरहिंसागरमांदी ॥  
 मकरग्राहजषथरिथरिखोंदी ॥ दोहा ॥ ककुवायलककु  
 राणपरेककुगाछचलेपरा ॥ गर्जहिमर्कठभालुभटरिपु  
 दलबलविचला ॥ ८२ ॥ चौपाई ॥ निशाजानिकपिचारिउ।  
 अनी ॥ आयेसबजहेंकोशलथनी ॥ रामकृपाकरिचितये  
 जबंदी ॥ भयेविगतप्रमवानरतबंदी ॥ उदादशाननसचि  
 वहेंकारे ॥ सबसनकहेसिसभटजेमारे ॥ आदाथाकटकक  
 पिनसंहारा ॥ कहजवेगिकाकरियविचारा ॥ माल्यवन्नप  
 कजरठनिशाचर ॥ रावणमातपितामंजीवर ॥ बोलाबच  
 ननीतिअतिपावन ॥ तातसुनइककुमोरशिखावन ॥ ज  
 बतेंतमसीताहरिआनी ॥ असगुणहोहिंनजातवावानी  
 वेदपुराणजास्यशगावा ॥ रामविमुखसखकाइनपावा  
 दोहा ॥ हिरण्याक्षभ्रातासहितमधुकैटभवलवान ॥ जेंइ  
 मारेसोइअवतरेउकृपासिंधुभगवान ॥ ८३ ॥ कालरूपख  
 लबलदहनगुणागारवनवोथ ॥ शिवविरंचिजेंहिसेवहि  
 नासोंकवनविरोथ ॥ ८४ ॥ चौपाई ॥ परिहरिवैरदेइवैदेही  
 भजजकृपानिधियरमसनेही ॥ ताकेवचनबाणसमलागे  
 करियामुखकरिजाइअभागे ॥ बूढभयमिनतमरतोंतोही



अवजनिवदनदेखावसिमोही॥ तें अयनेमनप्रसन्न  
 माना॥ वयेंचहतएदिकृपानिधाना॥ सोउठिगणउकहत  
 दुर्वादा॥ तवसकोपवोलेउचननादा॥ कौतुकशतदेवि  
 येऊमोरा॥ करिहोंवडतकहतहोंघोरा॥ सुनिसुतवचन  
 भरोसाआवा॥ प्रीतिसमेतनिकटवैठावा॥ करतविचार  
 भयउभिनुसारा॥ लगेभालुकपिचारिऊदारा॥ कोपि  
 कपिनदुर्गमगढचेरा॥ नगरकोलाहलभयउचनेरा॥  
 विविधप्रसंगाहनिशिचरयाय॥ गढतेपर्वतशिखरढा  
 हाये॥ **छन्द॥** जाहेमहीथरशिखरकोटिनवि विधविधि  
 गोलाचले॥ चहरातजिमिपविपातगर्जतप्रलयकेजउ  
 वादले॥ **३॥** मर्कटविकटभटजुटतलरतकटततेतउजर्ज  
 रभये॥ गदिशैलतेरगढपरचलावहिंजहैसोहतहंनिशि  
 चरहये॥ **४॥ दोहा॥** मेवनादसुनिअवणप्रसगढपुनिके  
 काआ॥ उतरिदुर्गतेवीरवरसनमुखचलावजा॥ **५॥**  
**चौपाई॥** कहांकोशलाथीशदोउभाता॥ पुत्नीसुकललो  
 कविख्याता॥ कहेनलनीलदुविदसुग्रीवा॥ कहेहनुमंत  
 अरुदवलसीवा॥ कहांविभीषणभाताद्रोही॥ आजुशठ  
 हिंदुमारउओही॥ असकहिकठिनबाणसंधाने॥ अति  
 शयकोपिअवणलगिताने॥ शरसमृदसोकाउंलागा॥  
 जनसपक्षयवैवदनागा॥ जहेतहंपरतदेवियेबानर॥



मनमुखहोइनशकततेहिअवसर॥भागेभयव्याकुलक  
 पिअला॥विशरीसबहिंदुद्धकीरुका॥सोकपिभालनराण  
 महंदेषा॥कीन्देसिजेहिनप्राणअवशेषा॥दोहा॥दशद  
 शशतसबमारेसिपरेभूमिकपिवीर॥सिंहनादकरिग।  
 जंतवमेवनादराणीपीर॥८५॥चौपाई॥देविपवनसतकट  
 कविहाला॥क्रोधवननपावाजनुकाला॥महामहीधरत  
 रतउपारा॥अतिरिसिमेवनादपरशरा॥आवतदेविगये  
 उनभसोई॥रथसारणीतरङ्गसबखोई॥बारवारप्रचारह  
 नुमाना॥निकटनआवमरमसोजाना॥रामसमीपगए  
 उवननादा॥नानाभांतिकहतदुर्वादा॥अस्रशस्रबद्धआ  
 युधशरे॥कोतकहीप्रभुकाटिनिवारे॥देविप्रभावमूढ  
 विमियाना॥करैलागुमायाविधिनाना॥जिमिकोउक  
 रैगरुउमनखेला॥उरपावहिंगहिसल्यसखेला॥दोहा॥  
 जासुप्रबलमायाविवशशिवविरंचिवउकोट॥ताहिदे  
 खावैनिशिचरनिजमायामतिखोट॥८६॥चौपाई॥नभच  
 ढिवरषैविपुलअरुग॥महितेप्रगटहोइजलधारा॥ना  
 नाभांतिपिशाचपिशाची॥मारुकाटुधनिबोलहिंनानी  
 कीन्देसिबुधिरुथिरकचहाडा॥वर्षेकबजेउपलबद्धका  
 ग॥वर्षेधुरिकीन्देसिअंधियाग॥सूजनआवनहायप  
 ताग॥अकुलानेकपिमायादेखे॥सबकरमरणवनायह

श्रीगणेशः  
 सिंधुरागः



रामा.  
सं.  
२०

लेखे॥ कौतुकदेविराममुसकाने॥ भयेसभीतसकल  
कपिजाने॥ एकबाणकाटीसबमाया॥ जिमिदिनकर  
हरतिमिरनिकाया॥ कृपाटष्टिकपिभालविलोके॥ भ  
येप्रबलरणरहहिंनरोके॥ दोहा॥ आयसुमोंगारामप  
हिंअरुन्दादिकपिसाय॥ लक्ष्मणचलेसकोपतवबा  
णशरसनहाय॥ ८७॥ चौपाई॥ जलजनयनउरबाहु  
विशाला॥ हिमगिरिनिभतनुककुएकलाला॥ उहो  
दशाननसुभीटपदाये॥ नानाअसुशसुगदिधाये॥ भू  
परविटपआपुथपरिभारी॥ थाएकपिजयरामपुकारी  
भिरेसकलजोरीसनजोरी॥ उतउतजयइच्छानहिथोरी  
मुटिकनलातनदोतनकाटहिं॥ कपिगिरिशिलामारि  
पुनिडोंटहिं॥ मारुमारुथरुथरुथरुमारु॥ शीसतोहि  
गदिभुजाउपारु॥ असिधनिप्ररिहीनववण॥ पाव  
हिंजहंतहंउप्रचण॥ देखहिंकौतुकनभसरवृन्दा॥  
कवडंकविस्मयकवडंअनन्दा॥ दोहा॥ रुथिरगाउभ  
रिभरिजम्पोऊपरभूरिउडा॥ जिमिशरारगणिनिपर  
मृतकभूमरदिका॥ ८८॥ चौपाई॥ वायलवीरविराजहिं  
कैसे॥ ऊसमितकिंशुककेतरुजैसे॥ लक्ष्मणमेवनाददो  
उयोथा॥ भिरहिंपरस्परकरिअतिक्रोथा॥ एकदिएकश  
कैनहिंजीतो॥ निशिचरकलबलकरैअनीती॥ क्रोधवन



तव भय उच्यते ॥ भजे उच्यते सारथी त्वं ॥ नाना युध प्र  
 हार करि शेषा ॥ राक्षस भय उच्यते शेषा ॥ तेहि अने  
 मन अस्मिन्नुमाना ॥ सुदुष्ट भये हरि हि मम प्राणा ॥ वीर  
 वातिनी छाडे सिसो गी ॥ तेज पुञ्ज लक्ष्मण उर लागी ॥ मू  
 र्खा भई शक्ति के लागे ॥ तव चलि गप उ निकट भय त्यागे ॥  
 दोहा ॥ मेघनाद सम कोटि पात यो धार हे उदा ॥ जगदधा  
 र अनन्त सो उठहि न च लाल जा ॥ ८५ ॥ चौपाई ॥ सुनि गि  
 रिजा क्रोधान लजा ॥ जार भुवन चारि दश आशू ॥ सकै  
 संग्राम जीति को ताही ॥ सेवहि सरन रघु गजगजाही ॥  
 यह कौतुक जानहि जन सोई ॥ जेहि पर कृपा राम की होई  
 संध्या भई फिरी दोउ वाहिनी ॥ लगे संभारण निज निज अ  
 नी ॥ व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर ॥ लक्ष्मण कहैं बूजा  
 करुणा कर ॥ तवल गिलै आये हनुमाना ॥ अनुज देवि  
 प्रभु अति दुख माना ॥ जाम्बवन्त कहैं वैद्य सुषेणा ॥ ल  
 क्ष्मण पट इय को उलेना ॥ थरिल चुरूप गये हनुमन्ता  
 आने उभवन समेत तरन्ता ॥ दोहा ॥ रघुपति चरण सरो  
 ज सिरनाय उच्यते सुषेणा ॥ कहाना मगिरि औषधी जा  
 ह्यन सुत लेन ॥ ८६ ॥ चौपाई ॥ राम चरण सरसि ज उर  
 धी ॥ चले उच्यते भजन सुत बल भाषी ॥ उहो हत एक मरम  
 जनीवा ॥ रावण काल ने मिश्र दयावा ॥ दश मुख कहा म



रामा.  
ले.  
२१

रमतेरुसनेऊ॥ पुनिपुनिकालनेमिशिरधुनेऊ॥ देवत।  
तमहिंनगरजेहिंजारा॥ तासुपेयकोरोकनहारा॥ भजि  
रघुपतिहिकरइहितअपना॥ तजइनाथअबवृथाकल  
पना॥ नीलकंजतनुसुन्दरश्यामा॥ हृदयगावुलोचनअ  
भिरामा॥ अहंकारममतामदत्याग॥ महामोहनिशिमो  
वतजागू॥ कालब्यालकरभलकजोई॥ सपनेऊंसमर  
किजीतीयसोई॥ दोहा॥ सुनिदृष्टाकंठरिसानअतितें  
मनकीन्हविचार॥ रामहेतकरमराणभलयहावलनत  
मोहिमार॥ ५१॥ चौपाई॥ असकहिचलारचेसिमगमाया  
सरमन्दिरबरवागवनाया॥ मारुतसुतदेवाशुभआश्रम  
मुनिहिंवृजिजलपियौंजाइअम॥ राक्षसकटपभेषतहं।  
सोहा॥ मायापतिहतहिंचदमोहा॥ जाइपवनसुतनाए  
उमाया॥ लागाकहनरामगुणगाथा॥ होतमहाराणा  
रामरावणादि॥ जीतहिंरामनसशायामदि॥ इहांभये।  
मैदेवोंभाई॥ ज्ञानदृष्टिवलमोहिअधिकारै॥ मांगाज  
लतेंरुदीन्हकमंडल॥ करकपिनदिअचाउंथोरेजल॥  
सरमजनकरिआतुरआवइ॥ दीक्षादेउंज्ञानजेदिपाव  
इ॥ दोहा॥ सरपठतकपिपदगहामकरीतवप्रकृतान।  
मारीसोथरिदिव्यतनुचलीगगनचक्रियान॥ ५२॥ चौ॥  
कपितवदराभरनिष्ठाया॥ मिटीतातमुनिवरकीशायी॥



मुनिन होइ यह निशि चरघोरा ॥ मानइ सत्य वचन क  
 पि मोरा ॥ अस कहि गई अथ राज बहो ॥ निशि चरनिकट  
 गण्ड कथित बहो ॥ कह कपि मुनि गुरु दक्षिणा लेह ॥ पा  
 केह महि मंत्र तम देह ॥ सिरलं गुरल पे टि पक्का रा ॥ नि  
 जतन प्रगटे सिमरीती वारा ॥ राम राम कहि छाडे सि प्राणा  
 सुनि मन हरि चले हनुमाना ॥ देखा शैल नग्रीषधि ची  
 न्हा ॥ सहसा कपि उपागिरि लीन्हा ॥ गहिरि गिरि नभ प  
 थ पावत भय ॥ अब थपरा ऊपर काप गण्ड ॥ दोहा ॥ दे  
 खा भरत विशाल अति निशि चर मन अनुमानि ॥ विनु  
 फर शर तेहि मारे उचाप प्रवाल गितानि ॥ ५३ ॥ चौपाई ॥  
 पोउ मूर्छि महिला गत शायक ॥ सुमिरत राम राम रचु  
 नायक ॥ सुनि प्रिय वचन भरत उटि थाये ॥ कपि समीप  
 अति आतुर आये ॥ विकल विलोकि कीश उर लावा ॥ जा  
 गत नहि बज्र भंति जगावा ॥ सुख मलीन तन भण्डु ला  
 री ॥ कहत वचन भरिलोचन वारी ॥ जेहि विधि राम विमु  
 ख मोहि कीन्हा ॥ तेहि प्रिय ददरुण डख दीन्हा ॥ जौं मो  
 रे मन वचन रुकाया ॥ प्रीति राम पटक मल अमाया ॥ तौ  
 कपि होउ विगत अमशूला ॥ जौं मो पर रचु पति अनुकूला  
 वचन सनत उटि बैदु कपीशा ॥ कहि जय जयेति कोशला  
 पीशा ॥ सोरठा ॥ लीन्हा कपि दिउ लाउ पुलक गात लोचन



रामा.  
ले.  
२२

सजल॥ श्रीतिनहृदयसमाश्रुमिरिरामरचुलति  
लक॥ २५॥ चौपाई॥ तातऊशालकडसखनिधानकी॥  
सहितअनुजअरुमातजानकी॥ कपिसबचरितसमास  
बखाने॥ भयेदुःखितमनमहं पचिताने॥ अहहैदेवमैक  
तजगजाएऊ॥ प्रभुकेएकौकाजनआएऊ॥ जानिऊअव  
सरमनथरिपीरा॥ पुनिकपिसनबोलेबलवीरा॥ तात  
गहरुहोइदितोहिजाता॥ काजनशरिहोतप्रभाता  
चढममशायकशालसमता॥ पढवोंतोहिजहंकृपानि  
केता॥ सुनिकपिमनउपजाअभिमाना॥ मोरभारचलहि  
किमिवाणा॥ रामप्रतापविचारिवहोरी॥ बन्दिचरणबो  
लेउकरजोरी॥ तबप्रतापउरराखिगोसांई॥ जेहोंनाथबा  
णाकीनाई॥ हर्षिभरततवआयसुदीन्हा॥ पदसिरनाशग  
मनकपिकीन्ह॥ दोहा॥ भरतबाहुबलशीलगुणप्रभुप  
दप्रीतिअपार॥ जातसराहतमनहिंमनपुनिपुनिपवन  
ऊमार॥ २५॥ चौपाई॥ उहौरामलक्ष्मणादिनिहारी॥ बोले  
बचनमनुजअनुसारी॥ अर्द्धरातिभईकपिनहिंआवा॥  
रामउठाइअनुजउरलावा॥ शकइनदुखितदेखिमोंहि  
काऊ॥ बंधुसदातबमृदुलसभाऊ॥ ममदितलागितजे  
अपितमाता॥ सहेउविधिनिहिमआतपवाता॥ सोअनुरा  
गकहोअवभाई॥ उदइविलोकिमोरिविकलाई॥ जोजा



नतवनबंधुविहोह ॥ पितावचननहिंमनतेउंश्रीह ॥ सु  
 तवितनारिभवनपरिवारा ॥ होहिजाहिंजगवारहिंवाग  
 असविचारिजियजागइताता ॥ मिलहिनजगतसहोद  
 रभाता ॥ यथापेखविनुखगअतिदीनां ॥ मणिविनुफणि  
 करिवरकरहीना ॥ असममजीवनबंधुविनुतोही ॥ जोजं  
 उदैवजिआवैमोही ॥ जैहोंअबथकवनमुखलाई ॥ नारि  
 हेतप्रियबंधुगवाई ॥ तरुअपयशमदतेरजगमाही ॥  
 नारिहानिविशेषदतिनाही ॥ अबअपलोकशोकसुत  
 तोरा ॥ सहेकदोरनिदुरउरमोरा ॥ निजजननीकेएककुमा  
 रा ॥ ताततासुतमप्राणअपारा ॥ सोंपेसिमोहितमहिंग  
 रिपाणी ॥ सबविधिसखदपरमहितजानी ॥ उतरताहि  
 दैहोंकाजाई ॥ उठिकिनमोहिसमुजाबइभाई ॥ बइविधा  
 शोचतशोचविमोचन ॥ अवतसलिलराजीवदललोचन  
 उमाअखंडएकरनुराई ॥ नरगतिभक्तिकृपालुदेखाई ॥ सो  
 रवा ॥ प्रभुविलापसनिकानविकलभयेउबानरनिकर ॥  
 आउगएउदनुमानजिमिकरुणामहेवीररस ॥ ५६ ॥ चौ०  
 हर्षिगमभेदेदनुमाना ॥ अतिकृतज्ञप्रभुपरमसजाना ॥  
 तरतवैयतवकीन्दउपाई ॥ उठिवैठउलत्सणादुर्षाई ॥ रुदा  
 यलारभेदेप्रभुभाता ॥ हर्षसकलभालुकपिबाता ॥ पुनि  
 कपिवैरातहोपइंचाना ॥ जेदिविधतवहिंताहिलैआवा ॥



रामा.  
ले.  
२३

यहवृत्तान्तदशाननसुनेऊ॥ अतिविषादप्रतिपुनिशि  
रथुनेऊ॥ व्याकुलकुम्भकर्णपहंगएऊ॥ करिवद्वयतन  
जगावतभएऊ॥ जागानिशिचरदेखियकैसा॥ मानइंका  
लदेहपरिवेसा॥ कुम्भकर्णएकासुनभाई॥ काहेतबसु  
खरहासुखाई॥ कथाकहीसबतेहिअभिमानी॥ जेहि  
प्रकारसीताहरिआनी॥ तातकपिननिशिचरसंहारे॥  
महामहायोध्यासुवमाये॥ दुर्मूलसुररिपुमनुजअहारी  
भटअतिकायअकम्पनभारी॥ अपरमहोदरआदिकवी  
रा॥ परेसमरमहंसवरणधीरा॥ दोहा॥ सुनिदशकंधर  
केवचनकुम्भकर्णविलखान॥ जगदम्बाहरिआनिश  
वअवचाहसिकल्याणा॥ २५॥ चौपाई॥ भलनकीन्दतैनि  
शिचरनाहा॥ अबमोहिआनिजागयेइकाहा॥ अजहं  
तातत्यागुअभिमाना॥ भजइरामहोइदिकल्याणा॥ है  
दशशीसमनुजरनुनायक॥ जाकेहनूमानसोपायक॥ अ  
हहवंधुतैकीन्दखोटाई॥ प्रथमहिंमोहिनसुनायेइआई  
कीन्देइप्रभुविरोधतेहिदेवक॥ शिवविराडिसरजाकेसेव  
क॥ नारदमुनिमोहिज्ञानजोकहा॥ कहतेउतोहिसमय  
निर्वहा॥ अबभरिअंकभेटमोहिभाई॥ लोचनसुफलक  
रौमैजाई॥ अणामगातसरसीरुदलोचन॥ देखोंजाइताप  
त्रयमोचन॥ दोहा॥ रामरूपगणसुमिरिमनमगनभए



उल्लास एक ॥ रावण मांगे उकोटि चटमदग्रुमहिष अने  
 क ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ महिष खाइ करि मदि रापाना ॥ गर्जे उव  
 जावात समाना ॥ ऊम्भकर्ण दुर्मद रण रक्षा ॥ चले उदुर्ग  
 तजि सेन न सखा ॥ देवि भीषण आगे आ पउ ॥ पुनि पदग  
 हि निज नाम सुना पउ ॥ अनुज उठाइ हृदय तें हिलावा ॥ र  
 चुपति भूजा निमन भावा ॥ तात लात मोहि रावण मारा  
 कहत परम हित मंत्र निचाग ॥ त्रेहि गला निरचुपति पहि  
 आयेउं ॥ दीन जानि प्रभु के मन भायेउं ॥ सुन सुत भयउं का  
 लव शरावण ॥ सो किमि मानै तो रशिखावन ॥ यन्थ य  
 न्य तैं यन्थ विभीषण ॥ भयइ तात निशि चर कुल भूषण  
 बंधु बंश तैं कीन्ह उजागर ॥ भजेइ राम शोभा सख सागर  
 दोहा ॥ वचन कर्म मन कपट तजि भजइ तात रचु वीर ॥  
 जाइ न निज परसूजा मोहि भयेउं कालव शवीर ॥ ५९ ॥  
 चौपाई ॥ बंधु वचन सुनि चला विभीषण ॥ आ पउ जहं त्रे  
 लोक्य विभूषण ॥ नाथ भूय राकार शरीरा ॥ ऊम्भकर्ण  
 आवतरा पीरा ॥ इतना कपिन सुना जब काना ॥ किल  
 किलाइ थाये बलवाना ॥ लिये उठाइ विटप अरु भूधर ॥ क  
 टक दाइ डारहिं ताऊ पर ॥ कोटि कोटि गिरि शिखर प्रहारा  
 डारहिं तेहि पर एक दिवारा ॥ मुरेन मन तनु टरै न दिहारे  
 जिमि गज अंक फलहि के मारे ॥ तब मारुत सुत मुष्टिका



रामा.  
लं.  
२४

हनेउ॥ परोउपरणिव्याकुलसिरधुनेऊ॥ पुनिउठितेंउमा  
रेउहनुवन्ता॥ बुणिंतभूतलपरोउतरन्ता॥ पुनिनलनी  
लहिअवनियकारेसि॥ जहंतहंपटिकिपटिकिभटमार  
सि॥ चलीवलीमुखसेनपराई॥ अतिभयत्रसितनकोउस  
मुहार्इ॥ दोहा॥ अरुदादिकपिमूर्छितकरिसमेतसुग्रीव  
काखदाविकपिराजकहंचलाअमितबलसीव॥ १००  
चौपाई॥ उमाकरतरजपतिनुरलीला॥ खेलगरुउजिमि  
अदिगणमीला॥ भूऊदिविलासजोकालहिराई॥ ता  
तादिकिपेसीसोहलराई॥ जगपावनकीरतिविस्तरही  
गाइगाइनरभवनिधितरही॥ मूर्छागइमारुतसतजाग  
सुग्रीवदितबखोजनलागा॥ कपिराजइकरमूर्छावी  
ती॥ निबुकिगयेतिहिमृतकप्रतीती॥ काटेसिदशनना  
सिकाकाना॥ गर्जिअकाशचलातेंदिजाना॥ गहेसिच  
चरणथरिथरणिपकारा॥ अतिलाचवपुनिउठितेहिमा  
रा॥ पुनियापउप्रभुपहंवलवाना॥ जयतिजयतिजय  
कृपानिधाना॥ नाककानकाटेतेंदिजानी॥ फिराक्रोध  
करिमानिगलानी॥ सहजभीमपुनिविबुद्धतिनासा  
देखतकपिदलउपजीवासा॥ दोहा॥ जयजयजयर  
बुवंशमणिथायेकपिकरिहर॥ एकदिवारजोतास  
परकाडेगिरितरुज्जह॥ १०१॥ चौपाई॥ ऊमकगंरगार



ॐ विरुद्धा ॥ मनमुखचला कालजिमि क्रुद्धा ॥ कोटिको  
 टिकपिथरिथरिखाई ॥ जनुटिडी गिरिगुहा समाई ॥ कोटि  
 न्द्रगहि शरीर मनमर्दा ॥ कोटिन मीजिमिलाये सिगर्दा ॥  
 मुखनासिका अग्रवणा कीवाटा ॥ निकसि पराहिं भालुकपि  
 दाटा ॥ रणमदमजनि शाचरदपी ॥ मानइ विश्वगुमन कहं  
 श्रीपी ॥ सुरे सुभटराग फिरहिं न फेरे ॥ सूजन नयन सुनैन  
 हिटेरे ॥ ऊम्भकर्ण कणिफौज निदारी ॥ मनि धाये रजनी  
 चरजारी ॥ देखा रामविकल कटकाई ॥ रिपुअनी कनाना  
 विधिआई ॥ दोहा ॥ सुनु सौमित्र विभीषण सकल संभारइ  
 मयन ॥ मै देखों खल दल बल हिं बोले राजीवनयन ॥ १०२  
 चौपाई ॥ कर शायनुष साजिक टिभाया ॥ अरि दल दल न  
 चले रघुनाथा ॥ प्रथम कीन्ह प्रभु यनुष टंकोरा ॥ रिपु दल  
 वधिर मये सुनि सोरा ॥ यनु संधानि कोंडे शरलदा ॥ कालम  
 र्प जनु चले सपत्ता ॥ जहंत हं विपुल चले नाराचा ॥ लगे क  
 टन भट विकट पिशाचा ॥ काटहिं चरणा उरसि रभुज दंडा ॥  
 बडते कवीर होहिं शत खंडा ॥ घूर्मि घूर्मि वायल महि पर  
 हीं ॥ उटहिं संभारि सुभट फिरि लरहीं ॥ लागत बाण जल  
 दजिमि गाजहिं ॥ बडते कटेखि कठिन शर भालहिं ॥ रुंउ  
 प्रचंड मुंड विनु पावहिं ॥ परुथरु मारु मारु गोहरावहिं ॥ दो  
 हा ॥ दाणम हं प्रभु केशयक न्हिकाटे विकट पिशाच ॥ पुनि

मालव



रघुपतिके तूणामहं प्रविशे सबनाराच ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥  
 ऊमकर्णमनदीखविचारी ॥ तूणामहं हते निशाचरभारी ॥  
 भयउक्रोधदारुणबलवीर ॥ करि मृगनायकनादगभीर ॥  
 कोपिमहीधरलिये उउपारी ॥ उारेसिजहंमर्कटभटभारी ॥  
 आवतदेखिषैलप्रभुभारे ॥ शरनिकाटिरजसमकरिउारे ॥  
 पुनिधनुतानिकोपिरघुनायक ॥ छाउअतिकरालबड ॥  
 शायक ॥ तनुमुटप्रविणिनिमपिशरजाही ॥ जिमिदामि  
 निचनमांदसमाही ॥ शोणितसुवतसोहतनुकोरे ॥ जि  
 मिकजलगिरिगेरुपनारे ॥ विकलविलोकिभालुकपि  
 थाप ॥ विहंसाजबहिंनिकटचलिआप ॥ दोहा ॥ गर्जतथा  
 येउवेगअतिकोटिकोटिगिदिकीश ॥ महिपटकैगजराज  
 उवशपथकौदशशीश ॥ १०४ ॥ चौपाई ॥ भागेभालुकपि  
 नकेयूथा ॥ प्रबलपवनजिमिमेववरूथा ॥ चलेभालुक  
 पिभागिभवानी ॥ विकलप्रकारतआरतबाणी ॥ यहनि  
 शिचरदुःकालसमग्रहई ॥ कपिऊलदेशपरनअवचहई  
 कृपावारिथरगमखारी ॥ पादिपादिप्रणतारतिहारी ॥  
 सकरुणवचनसुनतभगवाना ॥ चलेसुधारिशरासन  
 वाणा ॥ रामसेननिजपाकैवाली ॥ चलेसकोपिमहाबल  
 वाली ॥ तैंचिधनुषशतशरसंधाने ॥ कूटेतीरशरीरसमा  
 ने ॥ लागतशरथावारिसभरा ॥ ऊपरउगमगेउडोलतीथरा



लीन्हातेरे एक शैल उपादी ॥ रघु कुल तिलक भुजा सोरका  
 दी ॥ थावावाम बाहु गिरिधारी ॥ प्रभु सो उभुजा काटि मदि  
 अरी ॥ काटै भुज सो है खल कै सें ॥ पत हीन मन्दर गिरि जै से  
 उग्र विलोकनि प्रभु हिं विलोका ॥ मान जंग्र मन चहत वै लो  
 का ॥ दोहा ॥ करि चिक्कार अति चोर रव थावा वदन पसारि ॥  
 गगन सकल सुरग सम्यति हाहाकार त प्रकारि ॥ २०५ ॥ चौ  
 पाई ॥ सभ यदेव करुणानिधि जाने ॥ अवगप्यन्त शरा स  
 नताने ॥ छाडे विशिखनिकर मुख भरेऊ ॥ तदपि महा बल  
 भूमि न प रेऊ ॥ शरनि भरा मुख मन मुख थावा ॥ काल त  
 णा सजीव ज उथावा ॥ तब प्रभु को पिती न शर लीन्हा ॥ थर  
 तें भिन्नता सु सिर कीन्हा ॥ सो सिर परा दशानन आगे ॥ वि  
 कल भय उजिमि फणिमणि त्यागे ॥ थरणि थ सै थर थाव प्र  
 चण्डा ॥ तब प्रभु काटि कीन्दु रवण ॥ परणो भूमि जिमि  
 न तें भू थर ॥ हेट दायिक पिभालु निशाचर ॥ ता सु तेज प्रभु  
 बदन समाना ॥ सुर मुनि सब दिशु चम्पामाना ॥ न भदु नु भी  
 वजा वहिं हर्ष हिं ॥ जय जय करि प्रसून सरवर्ष हिं ॥ करि  
 विनती सुर सकल सिधाए ॥ तब तेहि समय देव अविश्राए ॥  
 गगनोपरि हरि गुण गाणाये ॥ रुचिर वीर स प्रभु मन भाये  
 वेगि हत कर खल मुनि कहि गए ॥ राम समर महिं शोभित भ  
 एउ ॥ कन्द ॥ संग्राम भूमि विराज रघु पति अतल बल कोशल



रामा.  
ले.  
२६

26

धनी॥ अमविन्दुमुखराजीवलोचनरुचिरतनुशोणित।  
कणी॥ ५॥ भुजयुगलफेरतशरसरामनभालुकपिचङ्गेदि  
शिवने॥ कहदासतलसीकहिनशकक्विशेषजेहिआ  
ननवने॥ ६॥ दोहा॥ निशिचरअथममलायतनताहिदीन्ह  
निजधाम॥ गिरिजातेनरमन्दमतिजेनभजहिंश्रीराम॥ १॥  
चौपाई॥ दिनकेअनफिरीदोउअनी॥ समरभपउसभटन  
अमवनी॥ रामकृष्णकपिदलवलवाढा॥ जिमित्तापा  
अनलअतिगढा॥ कीजेहिनिशिचरदिनअरुगती॥ नि  
जमुखधर्मकहेजेहिभांती॥ बडविलापदशकन्यारकर  
॥ पुनिपुनिबधुशीसउरथरई॥ रोवहिंनारिहृदयदतिपा  
णी॥ तासतेजवलविपुलवर्षनी॥ मेचनादतेहिअवसर  
आवा॥ कहिवडकषापितहिंसमुजावा॥ देखिडकालि  
मोरिमनुषाई॥ अवहिंबडतकाकरोंवडाई॥ इष्टदेवसनजो  
वरपाएउं॥ सोवलतातनतमहिंसनाएउं॥ एदिविधजल  
पतभपउविहाना॥ लगेभालुकपिचङ्गेदिशिनाना॥ इतक  
पिभालुकालसमवीरा॥ उतरजनीचरअतिरणधीरा॥ लर  
हिंनिशाचरनिजजयहेत॥ वरणिनजाइसमरखगकेत  
दोहा॥ मेचनादमायामयरथचढिगयेउअकाश॥ गर्जेउअ  
इहासकरिभइकपिदलअतित्रास॥ १०॥ चौपाई॥ शक्तिशु  
लशरपरिचक्रपाणा॥ अस्रशस्रकलिसाग्रधनाना॥ ओरेप



रघुचंडपाषाणा॥ लागेउवृष्टिकरैविधनाना॥ दशादिशि  
 रहेउवाणानभक्ताई॥ मानडेमचामेचजरिलार्इ॥ थरुथरु  
 मारुसुनहिंकपिकाना॥ जोमारेतेहिकोउनजाना॥ गहि  
 गिरितरुआकाशकपिधावहिं॥ देखहिंतेदिनडुवितफि  
 रिआवहिं॥ अवचटचाटवाटगिरिकंदर॥ मायावलकीर  
 न्हेसिणारंपंजर॥ जांदिकहोव्याऊलभएवंदर॥ सरपति  
 वेंदिपरेजनमंदर॥ पुनिलत्माणसुग्रीवविभोषण॥ श  
 रन्दिमारिकीन्हेसिजजरतनु॥ पुनरघुपतिसनजुजे।  
 लाग॥ शरकांउतहोइलागहिंनागा॥ ब्यालपाशवश  
 भएउखरागी॥ अविगतअजितएकअविकारी॥ नटइव  
 चरितकरतविधनाना॥ सदास्वतंत्ररामभगवाना॥ रण  
 शोभालगिअप्रबंधावा॥ देखिदशादेवनभयपावा॥ दो०  
 गिरिजाजाकरनामजपिमुनिकाटहिंभवपाश॥ सोकिवें  
 धनतरआवेव्यापकविषनिवास॥ १०८॥ चौपाई॥ चरित  
 रामकेसुनइभवानी॥ तरकिनजाइबुद्धिमनवाणी॥ अ  
 सविचारिजोपरमविरागी॥ रामहिंभजहिंतर्कसवन्या  
 गी॥ ब्याऊलकटककीन्हचननादा॥ पुनिभाप्रगटकह  
 तडवांदा॥ जाम्बवंतकहखलरइटाढा॥ सुनिकेतादि  
 क्रोथअनिवाजा॥ छुछजानिणठक्काउतेही॥ लगेसिअ  
 धमप्रचारणामोही॥ असकहितरलविशूलचलावा॥ जा



स्ववतसोकरगदिधावा॥मारेसिमेवनादकैछाती॥परा  
 थरणिचूर्णितसुरवाती॥पुनिरिसाइगदिचरणफिरावा  
 महिपकारिनिजबलहिदेखावा॥वरप्रसादसोमरैनमा।  
 रा॥तवपदमहिलेंकापरआरा॥इहांदेवअधिगरुउपगवा  
 प्रभुसमीपअतिआतरआवा॥**दोहा**॥खगपतिसबधरि।  
 खाण्ऊमायानागवरुथ॥मायाविगतभण्डसुबहर्षेवा  
 नरयूथ॥१०५॥गदिगिरिपादपउपलनखथायेकीशरि  
 साइ॥चलेतमोचरावकलेंआतगछपरचछेपराइ॥११०  
**चौपाई**॥मेवनादकैमूर्छाजागी॥पितहिविलोकिलाजअ  
 तिलागी॥तरतगण्डगिरिवरकंदरा॥करइअजयमख  
 असमनधरा॥सोसुधिपाइविभीषणाकहई॥सुप्रभुस  
 माचारअसअहई॥मेवनादमखकरैअपावन॥खलमा  
 याविदेवसतावन॥सोप्रभुसिद्धहोअजोंपाइहि॥नाथवे  
 गिरिपुजीतिनजाइहि॥सुनिरनुपतिअतिशयसखमा  
 ना॥बोलिलियेअरुदहनुमाना॥लत्मणासंगजाइस  
 बभाई॥यत्तविधंसकरइतमजाई॥तमलत्मणारण  
 मारेइओही॥देविसभयसुरबउडखमोही॥जाम्बव  
 न्तकपिराजविभीषणा॥सेनसमेतरहइतीनौजन॥ज  
 वरचुवीरदीन्हअनुशासन॥कटिनिषंगकरवाणश  
 रासन॥प्रभुप्रतापउरधरिराणीरा॥बोलेउचनइवगिरा



गभीरा ॥ जौ तेहि आज वध विनु आवौ ॥ तौरु पति सेव  
 कन कहावौ ॥ जौ शत शङ्कर करहि सहाई ॥ तदपि हतौं  
 रघु वीर दोहाई ॥ दोहा ॥ वन्दिराम पद कमल युग चलेत  
 रत्न अनन ॥ अङ्गद नील मयंदन लसङ्ग सभट हनुमन्त  
 चौपाई ॥ जाइ कपिन्ह देखा सो वैसा ॥ अङ्गति देत रुधिर अ  
 रुमैसा ॥ तब कीशन कृत यज्ञ विधेसा ॥ जवन उठै तब क  
 रहि प्रशंसा ॥ तदपि न उठै धरि कच जाई ॥ लात न हतिह  
 ति चलहि पराई ॥ लै त्रिशूल थावा कपि भागे ॥ आवा राम  
 अनुज के आगे ॥ आवत परम क्रोध करि मारा ॥ गर्जि चोर  
 रव वारहि वारा ॥ कोपि मरुत सत अङ्गद थाये ॥ हति त्रिशू  
 ल उर धरि गिराये ॥ प्रभु परकाउे सि शूल प्रचागा ॥ शर  
 हति कृत अनन युग खण्डा ॥ उठि वहोरि मारुत युवरा  
 जा ॥ हते उकोपितेहि वाउन वाजा ॥ फिरे वीर रिपु मरै न मा  
 रा ॥ पुनि थावा करि चोर चिकारा ॥ आवत देखि कुद्वजनु  
 काला ॥ लक्ष्मण काउे विशिख काला ॥ आवत देखि व  
 ज्र समवाणा ॥ तरत भयो खल अनर्थाना ॥ विविध वेष ध  
 रिकरै लराई ॥ कबहुं प्रगट कबहुं डरि जाई ॥ तब त्रिशूल  
 उरै मिल लक्ष्मण पर ॥ काटि कीन्ह शत खण्ड धरि धर ॥  
 शिखर एक लै पुनि सो थायो ॥ राम अनुज सो काटि खिंसा  
 यो ॥ दोहा ॥ आयुध विविध प्रहार किय रजसम कीन्ह फणी



रामा.  
लं.  
२८

28

श॥ विस्मयहर्षलणहिलणविबुधसहितसुरईश॥ ११२  
चौपाई॥ विविधायुधसोकांउनलागा॥ रणकाननकूटहिं  
जिमिनागा॥ रामअनुजशरगरुउसमाना॥ उमाअसता  
कूटअभिमाना॥ देविअजयरिपुउरपेकीशा॥ परमकु  
दतवभपउअहीशा॥ लक्ष्मणमनअसमंउदळावा॥ एहि  
पापीमैवद्वतखेलावा॥ समिरिकोशलायीशप्रतापा॥  
शरसन्यानकीन्दकरिदापा॥ देविअजिमिरविउदयसमा  
ना॥ फंकरतमनइव्यालअनुमाना॥ काउउवाणामाऊउर  
लागा॥ मरतीवारकपटसवत्यागा॥ शीसपरेउथरणीपर  
जवई॥ भुजादाहिनीनभसोगई॥ वनसमानसोगर्जिअभा  
गा॥ शीसभुजाकाटेनपनागा॥ दोहा॥ रामअनुजकहिरा  
मकहिअसकहिक्कोउसिप्राणा॥ थन्यशक्रजितजननि  
तवकहअरुदहनुमान॥ ११३॥ चौपाई॥ जोजगकहंदेउ  
कयमदंडा॥ हरिद्रोहीसुतसमरप्रचंडा॥ मदिमाअमित  
महाबलसीवा॥ जासुप्रतापअभयदशग्रीवा॥ भुजबल  
सुरनायकवशकीन्हा॥ चौदहभुवनजीतियशालीन्हा॥  
रिपुतरुलक्ष्मणमुलखनिगंजेउ॥ जिमिगजकमलना  
लगदिभंजेउ॥ जिमिवासवगहिकलिशकराला॥ की  
न्दविकलगिरिपतविहाला॥ रणसागरमहपरेउशरीर  
तैरैदरुजिमिरुधिरसुनीरा॥ दन्तविकटमुखपरमभयाव



न॥ चिऊरसवनचखिअशुभअपावन॥ रसनालालरङ्ग-  
 जनजावक॥ दबकिशिखासोहजनपावक॥ पाइसुआ  
 यसुअशुभकपीशा॥ करगहिलीन्हदुष्टकरशीसा॥ दोहा  
 करिअममारेउमहारिपुहिंरामानुजराणी॥ विउरसुम  
 नवर्षहिंविबुधकरिजयगिरागम्भीर॥ ११४॥ चौपाई॥ वि-  
 बुप्रयासहनुमानउठावा॥ लंकाद्वारराखिपुनिआवा॥ ता-  
 सुमरणसुनिसुरगंथर्वा॥ चछिविमानआएनभसर्वा॥ व-  
 र्षिसुमनडुंडभीबजावहिं॥ श्रीरघुवीरविमलयशगावहिं  
 जयअनन्तजयजगदाधारा॥ प्रभुतन्हसबदेवन्हनिस्तारा  
 अस्तुतिकरिसुरसिद्धसिधाए॥ लत्माणकृपासिंधुपरिआए  
 सुतवधसुनादशाननजबही॥ मुर्कितभएउपरेउमहितबही  
 मन्दोदरीरुदनकरभारी॥ उरताउतबद्धभोतिपुकारी॥ नग-  
 रलोकसबव्याकुलशोचा॥ सकलकहहिंदशकन्धरपो-  
 चा॥ दोहा॥ तवदशकण्ठविविधविधिसमुजार्इसबनारि॥  
 नश्वररूपजगतसबदेखइहदयविचारि॥ ११५॥ चौपाई॥  
 तिन्हहिंज्ञानउपदेशारावण॥ आपुनमन्दकथाशुभभावन  
 परउपदेशकुशलबद्धतेरे॥ जेआचरहिंतेनरनवनेरे॥ प्रभु-  
 हिविलोकिणीसपदनाएउ॥ उठिप्रभुहर्षिअनुजउरलाएउ  
 कृपादहिअनुजहिप्रभुहेरा॥ विगतवायकीन्हेंउंकरफेरा॥  
 बाणवेधदेखियतनुकैमै॥ कनकतराणशरपूरितजैमै॥ म



रामा.

ले  
२५

खप्रसन्नतादेखिमिलेसब॥रिपुबधकहेउविभीषणहीत  
व॥थरतेंहिंसीसगानिप्रभुआगे॥वानरभालुविलोकनला  
गी॥प्रभुकौतकीविलोकेउशीसा॥राखनकहेउकोशला  
भी॥**दोहा**॥प्रभुआयसुसुनिकीशपतिराखेउयतनकरा  
कटकसदितरबुवंशमणिशोभितदोनोभाउ॥१६॥**चौ॥**  
कृपादृष्टिकपिभालुनिहारे॥भयभ्रमरहितरामवैठारे॥  
सुनइउमापदिविधिरिपुमारे॥सुरनरमुनिसबभयेसखा  
रे॥अबसोसुनइबोदतिहिंकेरी॥खगज्यौंलंकागईशार  
प्रेरी॥मेवनादआरुनमहिंपरी॥बाणविदिशोणितसों  
भरी॥राजतितहांसलोचनावैसी॥रतितैंरुचिररूपगण  
जैसी॥नागसुतादशकंदपतोइ॥वासवरिपुनियकविम  
यजोइ॥हेमसिंहासनसोदतिवाला॥सेवदिविद्याथरिति  
यमाला॥पूजहिंविबुधविनयकरिताही॥सखप्रमैदको  
शकदिसराही॥तहंपतिभुजापरीपदिभाती॥मनइंसक  
लसखतरुकीकांती॥**दोहा**॥तिहिंदिशिटासीदेखिकद  
शोणितसखभुजदंड॥भयउसमरआश्चर्यमनइंसखेउल  
खेउ॥१७॥**चौपाई**॥सुनिकेसकलसखीसखबयना॥तजि  
सिंहासनउठीसनयना॥नारिसुभावधकथकीथरकी॥  
सूचकप्रभुभदतिगभुजफरकी॥होतमहारणरावण  
गमहिं॥वीरपुरीगामोरप्रीयतामहिं॥सकलसरासरश



कहिनजूजी॥ विधिकोमतोंपरैनहिबूजी॥ इतनाकह  
 तिगईचलिआपू॥ पतिभुजलखिकरिकोटिविलापू॥ कं  
 कणमणिगणभूषणसोई॥ महाविटपसमआननहो  
 ई॥ देखतिमनहिनआवततेही॥ तासुप्रभावसुनापहिले  
 ही॥ नीदनारिभोजनपरिहरई॥ वारहवरषतासकरमरई  
 दोहा॥ करिविचारमनठीकदैमैपतिदैवतनारि॥ भुजलि  
 खिमेटड्डुचितईसुनिकरदीन्हपसारि॥ १८॥ चौपाई॥ ल  
 खिरुखतासुसखीउठिथाई॥ तरतहीखाजिखरीलैआई  
 दीन्हहाथपरमणिअंगनाई॥ लिखतिलखणकोरतिरु  
 चिगई॥ नीदनारिभोजनशतकोटिक॥ तजैंतासुमहिमा  
 यहकोटिक॥ अतयअव्ययअजअविनाशी॥ अतलअ  
 मितचटचटकेवासी॥ प्रगटहिंपालहिंपुनिजगहरही॥  
 त्रिगुणरूपत्रयमूरतिकरही॥ जोकालझकरकालभ  
 यंकर॥ वरणातसुयशशारदाशंकर॥ थरहिंविविधत  
 नुसेवकहेत॥ जासुनामभवसागरसेत॥ मुनिमनपुंउरी  
 कजाकेसर॥ वचनविवेकविचारबुद्धिपर॥ दोहा॥ कोटि  
 कल्पवरणातनिगमअगमजासुगुणगाथ॥ तमशरीर  
 जउजीहविनकिमिवरणोंलिविहाथ॥ १९॥ चौपाई॥ म  
 मसिरगपउजहोरगुगई॥ तववचननिलगिभुजापठई  
 पदिविधलिखीसकलभुजवाता॥ परीभूमितलअतिविल

गोड  
३



रामा.  
ले.  
३०

पाता॥ बांचि सकल भुजलिखव जयारथ॥ लक्ष्मण राम  
जानि परमारथ॥ नारि स्वभावत दपि बद्ध भोती॥ विलपहिं  
मिलि सखीयनिकी पांती॥ गुणगण साहस शील नाह  
को॥ कहि रोवहि बल विजय बाह को॥ जिहिं भुजबल  
सुरनाथ विगोप॥ सो प्रभु आनु समर महिं सो प॥ मणि  
गण भूषण वसन विसारहिं॥ महिलोटहिं करतल सि  
रमारहिं॥ मग्न शोक मरित न सुधि नाही॥ दारुण विप  
ति कहों किहि पाही॥ तणों क प्रबोध सखी को उकरई॥ व  
रुण शोक दावानल जरई॥ तण तण उठति परति थर  
णीतल॥ पुनि रोवहि सरहि पति करबल॥ दोहा॥ निज  
मह सखी सयानि एक कहि समुझाईवैन॥ शोक छाडि  
पति देवता समतिकरिय जिय चैन॥ २२०॥ चौपाई॥ सुनि  
कह सहसा ननतनु जाता॥ सत्य कहात मह सखी सवाता  
विधि निर्मित मो कह डखलाह॥ सख परिश्रि भुवन सब  
काह॥ विजय राम लक्ष्मण कहें या पउ॥ सयश सकल म  
कंठ कुल पापउ॥ कुल कल कुबल देउ विभीषण॥ कुल  
कुटार अम सुनेउ न दीषण॥ कुटी बन्दि अब सरगण केरी  
निज निज पुरनि दुहाई फेरी॥ मुनि पुलसत्य कर भा कुल  
नाश॥ अबर विषा शिखर कहि प्रकाश॥ तेज वन पाव  
क परिहरि दुख॥ वहहि समीर अज अपने सख॥ मलिन



गगनभूनिर्मलआज॥ सुबसवसहिंसरनायकराज॥  
 दोहा॥ यमऊबेरदिकपालसबप्रमुदितसरनरनाग॥ खा  
 ईआवायविहायडुखपायसुयत्तविभाग॥ १२१॥ चौपाई॥  
 इतनाकहिमेंदिरमहआई॥ देखतिमणिगणायनबद्धता  
 ई॥ सरपतिभवनपटतरताई॥ अदिसिद्धिजहंसकलक  
 माई॥ देखतविषयनमनअनुरागेउ॥ पतिपदनेहनिपुण  
 मनलागेउ॥ दीन्हेंमणिगणभूषणचीरा॥ येनुथरणिग  
 जहाटकहीरा॥ मणिमयशिखकारचउवनार्ई॥ भुजच  
 छारपहराववनार्ई॥ आपुनुचछतिभईतहेंआई॥ सरदु  
 र्लभसुखसदनविहाई॥ वीतरागजिमितजहिविषयग  
 ण॥ सहसभांतिपतिपदलागेउमन॥ अकशारिकासु  
 लोचनाआप॥ कनकपिञ्जरन्हिराखिपछाप॥ व्याकुल  
 कहहिंतेकहासुनयना॥ सुनिधीरजपरिहरियसुवय  
 ना॥ भयेविकलखगमृगएहिभांती॥ अपरदशकेंसैंक  
 दिजाती॥ प्रजालोगआतरसंगलागे॥ प्रेमउमगिलोचन  
 जलपागे॥ दोहा॥ वाजनलगेनिसानगणछोलडुनुभी  
 भेर॥ पुरजनपरिजनसंगसबचलेपालकीचेरि॥ १२२॥ चौ  
 पाई॥ देखिभीरदशकंधरद्वारे॥ सजगहोउसबवीरप्रचारे  
 जानाकरकरिप्रदिकरआई॥ असुशसुकरथरद्ववनार्ई  
 थनुषवजायतगाकरिकोंयहिं॥ गदियसिचर्मवीरवरसा



रामा.  
ले.  
३१

31

जहिं॥ तोमरपरप्रचण्डगदागहि॥ तीतणचोखेसूल  
शक्तिलहि॥ मारुमारुथरुथरुकदिधावहिं॥ प्रगटदशा  
ननविजयसुनावहिं॥ गर्जितर्जिकहिगिरागम्भीरा॥ स  
मरभयंकरनिशिचरवीरा॥ निपटहिंनिकटपालिकीआ  
ई॥ चीन्हसकलभटारदेलजाई॥ देविजुहारिनागपतिक  
न्या॥ सतीशिरेमणित्रिभुवनयन्या॥ दोहा॥ द्वारपालद  
शकंथकहसमयसुनायउजाइ॥ भईरजायसवेगिंदी  
लेइसुतादिबुलाइ॥ १२३॥ तिहंअवसरहिसुलोचना  
गहेचरणसिरनाइ॥ राखिभुजाघननाटकीकरुणाव  
चनसुनाइ॥ १२४॥ चौपाई॥ तमहियकृतप्रमहालहमा  
री॥ सुखतजिभयउणोकप्रधिकारी॥ नभमारगभुजम  
मगृहपरी॥ संशयजानिदीन्हकरखरी॥ लिखीरामल  
त्तणामदिमाइन्ह॥ क्रमसोंसबविधकथाकदीतिन्ह॥ ४  
गिसीरहीवांचिगुणगाथा॥ जरउंमंगजौपाऊंमाथा॥ रण  
केमथभुजममगृहआई॥ सिरतहंजहंनरेसद्वोभाई॥ क  
रियसोजतनमिलैमोदिशीशा॥ तमहसर्वज्ञचराचरईशा  
सुनतकुलिशसमगिरावधूकी॥ जीवनआपादशाननमू  
की॥ तदपिपीरपरिकरतप्रबोधा॥ कइजगमोदिसमानको  
जोधा॥ दोहा॥ रामलत्तणसग्रीवनलनीलदिविदहनु  
न॥ सायविभीषणअरुमहोशानोंमारितरन॥ १२५॥



**चौपाई॥** अबल गिरहा भरोसा भारी॥ ऊम करण बनना  
 दसगरी॥ मैहं आज लगी कीन्ह नजूजा॥ इन्ह सब कर पुरु  
 षारथ दूजा॥ मरे ते नरवानर के मारे॥ बात सुनत बडिला ज  
 ह मारे॥ गणती कवन बीर महति न्ह की॥ अति दुर्दशा कीन्ह  
 कपि जिन्ह की॥ क्वाडि सोच ऊलव भुप तोह॥ जाने उउन्ह स  
 मान जिन्ह मोह॥ पुत्रि विलंब करइ चटि चारी॥ देखइ मो  
 रि भयंकर मारी॥ अनिइ शीश सब शत्रु न्ह केरा॥ विनु प्रया  
 स नहि लागा हिवेरा॥ भूगवहि जन्तु पुरा कृत भोगा॥ तनु  
 कत निशि चरवन चरयोगा॥ **दोहा॥** मेरु उपार नहार जेध  
 रापर हिकर बीच॥ ते भटखा एम शक शिष्ट काल ऊटिल  
 ता नीच॥ १२६॥ **चौपाई॥** क्रोधावेश प्रगट बल बोलहि॥ हृद  
 य शोक तरु अचल न डोलहि॥ समाधान नहि मानति सोई  
 सुनि प्रलाप परि तोषन होई॥ नरवानर पुरुषारथ देखत॥  
 बडौ प्रपञ्च कोट करिले खत॥ कहति सिंधु लंका कपिजारी  
 लघु करि मानत ताहि सगरी॥ ऊम कर्ण अतिकाय महोद  
 र॥ ममपति गिरे उ संशय न सहोदर॥ तेंदिरि पुचहं हिदशा  
 न न जीती॥ उत्तरु दें उ तौ पात कहोई॥ करि विवाह अवसर्व  
 सखोई॥ फिरे उं राज तो दिन काज॥ विनु प्रिय सकल नरक  
 कर साज॥ **दोहा॥** तरन ही उ दी सलोचना गई मय सताज  
 पास॥ पदगहि गोवति सब कही प्रगट शोक उपहास॥ १२७॥

देखिय महामोह की रीती॥ उटी ४



चौपाई॥ आदिहितें सब कथा वखानी॥ सुनि सुनि रोवहि।  
रावणानी॥ कही सो पति भुजलित वहोरी॥ राम लक्ष्म  
ण महि मानहि प्योरी॥ कहे उवड रिदश कंथर कोथा॥ मरे उ  
विउं बन कीन्ह सो जोथा॥ सुनि सो पुत्र बंधु की बाणी॥ बोली  
दुखित मंदोदरि रानी॥ कहौ सो मान बसत्य मयानी॥ सुनि  
जो नारद मुख की बाणी॥ पाकिली बात भई सब सोची॥ अ  
नुभव कीन्ह नय कौवांची॥ देखिन होइ वृथा अविभाषित  
अपने महामोह मन माखित॥ अगिली कथा समाज समे  
ता॥ सुनइ पुत्रि अविवाहो उजेता॥ वीर भाव दशकंथर जू  
ऊहि॥ आणइ गये नीति नहि बूझहि॥ बंधु भेद लंका गछ  
ट्टहि॥ सरन राग वेदितें कूटहि॥ सीय शोक संकट तें कु  
टहि॥ बानर भाल राजगृह लुटहि॥ यन मणि भूषण वसन  
विमाना॥ भोग करहि मर्कट कुल नाना॥ दोहा॥ राजविभी  
षण पाइ है अमर कल्प निर्वाहि॥ भावी वश सावदुख जग  
त उपदेशिय कइ काहि॥ २२॥ चौपाई॥ मुनि वचन निकी मो  
हि प्रतीती॥ अनुभव सदाहारि अरु जीती॥ तें प्रीति परिहरि  
अवशोका॥ पति संग तरित साधि परलोका॥ जाहि राम प  
दि पति सिर लागी॥ तजि सकोच आनहि सिर मांगी॥ होव  
न लाज आज्ञा को भूषण॥ समय दीन गुण गाणी यन दूष  
ण॥ एक नारि बतर चुपति केग॥ लक्ष्मण सुजश तें सुना।



बनेरा॥ हैपुनिससुरविभीषणातोर॥ बालिसवनहै  
 बालकमोरा॥ मंत्रीजाम्बवन्तसुग्रीवा॥ दुविदमयन्द  
 पनसबलसींवा॥ जानियब्रह्मचर्यहनुमन्ता॥ शिव  
 स्वरूपभयहरभगवन्ता॥ सदातीतिरतरामनरेशू॥ त  
 हांजातकडकवनकलेशू॥ दोहा॥ विदिततोहिपतिभु  
 जलिवितलक्ष्मणरामप्रभाउ॥ महासुअधिभाषित  
 भयउअवविलेवनहिंलाउ॥ १२५॥ चौपाई॥ सुनतसासु  
 सुखकीहितवाणी॥ जाऊरामपादियहउरानी॥ वार  
 वारचरणानिसिरनाई॥ चलीजहांलक्ष्मणरघुराई॥ दे  
 खिकटकभालुकपिकेरी॥ सिंधुसबेलमहीधरचेरी॥  
 उमगोउमनऊमहोदधिहसर॥ हरतिपिंगकपिभूमिल  
 भूसर॥ लूमिलालमाशकीनहेरी॥ मनडंलपटवउ  
 बानलकेरी॥ सवतरुथिरभुजसहजभयंकर॥ जहेत  
 हैप्रगटहोतजनुजलथर॥ लक्ष्मणशेषसुअंकशीस  
 थरि॥ कटकजलथिसोवतराचवहरि॥ अक्षयवटतह  
 बैटविभीषणा॥ अससुकृतीजगसुनानदीषणा॥ दो०  
 देखतिहर्षसुलोचनाथीरजधरतिवहोरि॥ महाराज  
 रघुवीरकहंविनयसुनायदिमोरि॥ १२०॥ चौपाई॥ बा  
 नरसकलउदेअसबोली॥ अरिपुरतेंआवतएकडोली  
 रहजानीयरावणअबबूजा॥ भयीमतिमेचनाटजउज



रामा.  
ले.  
३३

33

का॥ दहतजि सीतहिं दीन्ह पगार्॥ तजइं शोच अवमि  
दील गार्॥ जेहिल गि प्रगट कीन्ह पुर आगीं॥ बोयेउ सेत  
हेत जेहिल गी॥ सो सीता अव विनु प्रम पार्॥ जानइ वि  
थि अतुल्य अर्चार्॥ विजय राम सग्रीव हिं आ पउ॥ सय  
पाम कलवान रज्जु लपा पउ॥ विरहराम लक्ष्मण कर कूटे  
उ॥ विनु प्रयास लेका गछ दूटेउ॥ युग युग की रति रह  
हिं हमारी॥ कतरा कतरा हमल चुवन चारी॥ दोहा॥ प  
हिविधि चारु विचार करि दीन्ह ठीक मन मोहि॥ भएउ  
काजर चुराज करवात हमरी नां हि॥ १३॥ चौपाई॥ पै दत  
कटक अति शय सऊ चार्॥ आन चिन्हारि जिमि परवरा  
ई॥ आगे जाइ दीखर चुवीर हिं॥ कवि मय प्रणमल गौर पा  
री रहि॥ मर्कत कनक कवि हिं जनु निदक॥ सो जन धन्य  
उमा जे बंदक॥ मत्त गयेंद सुं उभुज दंडा॥ यनुष बाण अ  
सिधैं प्रचंडा॥ उर विशाल अति उन्नत कंधर॥ कंबु कंद  
रो बा प्रसन्नतर॥ सुख कविकी उपमा कवि जो रहिं॥ श  
शिमरो जसम कहे न सो रहिं॥ दशन पांति की कान्ति  
कहे को॥ ललकत मन पटतर हिल है को॥ देखत अथर  
निकी अरुणा॥ विन्वा फल बंधू कल जाई॥ अकत गाउ  
हिं नामि काल जावहि॥ यके सक विनहि पटतर पावहि  
दोहा॥ कवि मय प्रणमय तेज मय राम उदधि अवगाह॥



जहोन पावत पारसर को वरणो कवि पाह ॥ १३३ ॥ चौ०  
भृङ्ग दीविकटकपोल सहाये ॥ शीश जटा के मुकट बना  
ये ॥ भाल विशाल तिलक जत सोह ॥ ध्यान समय लखि  
मुनि मन मोह ॥ बल्कल वसन तूणा कटि बांधे ॥ कर श  
र सभग शरासन कांधे ॥ वीरासन आसन मृग काला ॥ न  
व पलव प्रसून की माला ॥ चरण सरोज वरणि नहि जाई  
रहं मुनि मथुकर सदा लोभाई ॥ प्रगट भई जे दिखल तै गं  
गा ॥ अति पुराण कहि कथा प्रसंगा ॥ नवहिं महेश वि  
रंचि जाहि कइ ॥ लोचन गोचर होइ काहि कइ ॥ भजन  
आरत भजन जोहित ॥ भव सागर तारण कहं वोहित ॥ दो  
हा ॥ प्रणत पाल विरदावली जिन्ह चरणानि की बानि ॥  
शोच हरण संशय दरण सकल समंगल खानि ॥ १३४ ॥  
चौपाई ॥ कर जोरैं अरु दहनु माना ॥ दुविद मयंद ऊ मुद  
बलवाना ॥ जाम्बवन्त कपि पतिबल शीला ॥ अशभा  
सुषेणा सहित नल नीला ॥ महावीरवानर सवराज हिं ॥  
लक्ष्मणा विभीषण दुइ दिशि आज हिं ॥ मितभाषित सर्वज्ञ  
सुसेवक ॥ चितवहि रुखरचुन नन्दन देवक ॥ सभामध्य  
शोभित रचुन नन्दन ॥ कीन्हे सि सफल निरखि निज अज  
न ॥ करति दण्डवत सिरथरिथरणी ॥ तब सब कथा वि  
भीषण करणी ॥ पुत्रवधू दशकंथर की है ॥ पति देवता

गंभीर  
४



रामा.  
ले.  
३५

34

सुलोचनाती है ॥ मेवनादकी नारी सुशीला ॥ यह गति  
तब विरोध की लीला ॥ दोहा ॥ मुयें ज्ञानपति भुजलिवित  
कहि समुझाई बोहि ॥ महाराजरघुवंशमणि जाचन आ  
ई तोहि ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ करि प्रणाम आदर नदी पोरै ॥ करु  
नावचन कहत कर जोरै ॥ अति अस्तुती की न्हावइ भाती  
इहै सोच चिन्ता दिन राती ॥ अस्तुति किन्हु प्रहो प्रभु देवा  
कृपा अनुग्रह अद्भुत सेवा ॥ नीत सुमीरौ मै तद्दे गोसाई ॥  
जेही विधि मोहि होउ सुख दाई ॥ दया करइ देव न्ह कै दे  
वा ॥ राम नाम रहये हके सेवा ॥ दीन दयाल अनुग्रहकारी  
मोहि पतित प्रभु लेइ उपाही ॥ पतित इमह जे पतित कहा  
ई ॥ ताइ गति दीन्हो रघु राई ॥ तह विभुवन पति सकल वि  
श्रामी ॥ करो दया प्रभु गरुडागामी ॥ छन्द ॥ विनती प्रभु  
मोरी मै मती भोरी नाथ नवरमागै आना ॥ पदकमल प  
रागारस अनुराग मनमथुप करपाना ॥ १ ॥ एही भांति  
सुमैना अस्तुति बैना बारवार चरन न्दीपरी ॥ जो अती म  
नभावा सो वरपावा चरन नारभुसी सथरी ॥ ८ ॥ मै नारी  
अपावन प्रभु जगपावन त्रीभुवन जन सुख दाइ ॥ मै दासी  
प्रभु चरन न्हवामी अलखलखै नहि कोइ ॥ ९ ॥ जेहिला गि  
मै आइ तसिर नारसो मोहि देइ कृपालहरी ॥ प्रभु दयाला  
अतिकृपाल पावो भगती अनुपदरी ॥ १० ॥ दोहा ॥ अम



भुदीनबन्धुहरिकारनरहीतकृपाल॥ तलसीदाससठता  
 हीभजुकाडीकपटजंजाल॥ १३५॥ तम्हविभुअनविलोक  
 कैहसरअवरनको३॥ काहीपुकारोतहैकोप्रभुनामसतहो  
 ३॥ १३६॥ चौपाई॥ तम्हअन्तरजामीभगवाना॥ प्रभुताआदि  
 मध्यअवसाना॥ करुणावचनसनतरचुवीरा॥ पुलकराम  
 भएशिथिलशरीरा॥ देउजिवायतोरपतिआज॥ भुंजडैले  
 ककल्पशतराज॥ क्हांडिशोचमनअतिहरषाई॥ तरितभ  
 वनअपनेंफिरिजाई॥ सुनिअससत्यसिंधुकावाणी॥ मन  
 महवानरचमुंउरानी॥ कहिनसकैककुप्रभुरुखदेखी॥ क  
 हाकरियकरतारअलेखी॥ सीयशोचकरफलनहिहोइहि  
 जोकरिकृणारामयेहिजोइहि॥ असविचारपरीमनआसा॥  
 जेहितेपावोप्रभुकैविलासा॥ दोहा॥ राजविभीषणलेकक  
 रकेहिविथकरिहहिंभाइ॥ समुझिवैरचननादजबगहहि  
 शरामनजाइ॥ १३७॥ चौपाई॥ मुखरुखलखिकपिशसबजा  
 ना॥ प्रणतपालभगवानसमाना॥ देखिवहुतरचुपतिकर  
 कोइ॥ विनयकरतिदशकण्ठपतोइ॥ आपुउदारदेवसब  
 लायक॥ करुणामयदेखेउंरचुनायक॥ मेंडंविचारकीन्ह  
 मनमाही॥ जीवनतैअसंमरणसराही॥ भुजबलजीतिलो  
 कावसकीन्है॥ कोदहभुवनभोगकरिलन्है॥ रणतीरयजा  
 चतमलचिन्हैउं॥ प्राणसोथनलक्षकरदिन्हैउं॥ अवनउचि



तवितदैश्र्यपदारा॥तिहिंपरअधिकसुदर्शतमारा॥जा  
नियहमहैमरवसतसाथी॥मिलवतमहदिजिमिमिलेंस  
माथी॥**दोहा**॥निर्मलगतिअवसरभणउसनियसत्परबुकी  
॥तमहदिमिलेंनदिहोउभवयथासिंधुगतनीर॥३८॥  
**चौपाई**॥मनकीजाननहारसुदेवा॥भवसागरनाचदि३।  
दिखेवा॥लीन्देउअषभकपिशबुलाई॥मेघनादसिरदी  
न्दमगाई॥पाउकृतारथमानेउआपू॥मेढाविरहसंभवपरि  
तापू॥अंचलपोंचतिमुखकीधूरी॥कहिममप्राणसजीव  
नमूरी॥देखिकरतसंशयसुग्रीवा॥भुजमहिलिखासोमो  
दिनसीवा॥हसैवदनतौतीययहसांची॥नाहितोनिशिच  
रमायानांची॥कहयहज्ञानमृतकभुजगावै॥जोमुनिव  
रसाथनतेंपावै॥प्रभुयहकहेउहमहियहसीशा॥कियेंऊ  
तर्कनउचितकपीशा॥**दोहा**॥सिरसोंकहतिसुलोचना  
हमद्रवेगिममनाप॥नतरुप्रतीतिनमानिहैंलिखाजो  
तमहरेहाप॥३९॥**चौपाई**॥दलौकविलंबकीन्दनदिवोला  
मृतकसोमुखमृंदितनदिवोला॥पुनिपुनिकहतिसोना  
गऊमारी॥अमितभणउरणामहिकरिभारी॥लगेउलखण  
शरदोभवजावहिं॥प्रभुसमीपकतमोहिलजावहिं॥जो  
मनवचनकर्मयहदेही॥यतिदैवतानआनसनेही॥तौप्र  
भुमभावीचसिरबोलहि॥रहिजाउहिजासयशायमोला



हि॥ जोजानतितवयदगतिमांई॥ बोलिपटावतिपितहि  
 महाई॥ सुनितीयवचनहसेउतवसीशा॥ चौकिउदेउसब  
 भालुकपीशा॥ हसेउदटावदनसबदेखत॥ विस्मयभण  
 उमकलजनपेखत॥ कोटिमेवसमसुनिनहिजाई॥ रहेउ  
 सोबदनबझरिअरगाई॥ सऊचकपीशहितोषेउनारिहि  
 वउआश्चर्यभणउवनचारिहि॥ कहसुग्रीवचरणसिरना  
 ३॥ कारणाकवनहसाशिरमांई॥ इहसुनिविहसिकहार  
 चुगाई॥ सुनुसुग्रीवकुतर्कविहाई॥ पतिव्रततोयजिनके  
 गृहमाही॥ यहवडिवाततिन्हदिककुनाही॥ पुनितवसं  
 प्रायभणउकपीशा॥ तिहिकारणातेहसायहशीसा॥ दोहा॥  
 शीशानाप्रभुचरणगदिवझविधविनयसना३॥ आजके  
 दिनरणपरिहरइममहितकोशलरा३॥ १५०॥ चौपाई॥ व  
 झरिविभीषणपदहिनमतिमो॥ रघुवरगुणगणहृदयभ  
 णातिसो॥ तमपितसमदशकंथरभाई॥ यहिऊलकीतोहि  
 लाजवडाई॥ सुनिप्रलसत्यपरिवारकेदीपक॥ पापउफल  
 रघुवीरसमीपक॥ प्रथममोहवशाअनहितमानेउ॥ ज्ञानभ  
 येतवगुणपहिचानेउ॥ युगयुगकरवअकंदकशज्ज॥  
 सहितसुकीरतिसुकुतसमाज्ज॥ समिरततमूहिसुयश  
 जनपेहै॥ रघुवरचरितसंगकरगौहै॥ सुनतविभीषणकरू  
 णाभासी॥ प्रगटनकरतसमयअनुहारी॥ कालकर्मगतिक



हिममुजार्इ ॥ चलीतरितगुरुआयसुपाई ॥ दोहा ॥ बाहि  
 रकरिकपिकटकतैफिरेविभीषणआपु ॥ विसरेउदशकं  
 धरवयरनिरखिहोतसंतापु ॥ १५१ ॥ चौपाई ॥ सिरचढाशुपा  
 लिकीचढीसो ॥ रघुपतिकृपाप्रभावबढीसो ॥ हृदयरखि  
 मूरतिवनश्यामहिं ॥ रसनारटतिनिरन्तरामहिं ॥ सरि  
 तसिंधुसंगमजहपावन ॥ यहसुधिपाशगयेतहंरावण  
 मरुमन्दोदरिसवरनिवासू ॥ मनअंशोकरविकीन्दप्रवा  
 सू ॥ पाशंजीयसुसेवकथाये ॥ चन्दनअगरभारबझल्या  
 ये ॥ रचीदारुमयचितावनार्इ ॥ जनुसरलोकनसैंनीलाई ॥  
 करिप्रणामसबजनपरितोषे ॥ पीरजपरिसुमिरतसन  
 चोषे ॥ सिरभुजपरिवैठीकरिआसन ॥ भईजनुयोगसिद्धि  
 कौवासन ॥ दोहा ॥ दीन्हअग्निज्वालबढीलपटगगनल  
 गिजाइ ॥ लखीनकाहंजातसोसरपुरपडंचीपाइ ॥ १५२ ॥  
 चौपाई ॥ सुतबयदीखदशाननजबही ॥ संभ्रममूर्छिपरे  
 उमहितबही ॥ दुखितहृदयनयनभरिआवा ॥ जनुसिरम  
 णिअदिगजगवावा ॥ हासुतसन्ततआज्ञाकारी ॥ करि  
 विलापदशकंधपुकारी ॥ शक्रआदिजीतेऊसबदेवा ॥ स  
 रमुनिनागकरहिमबसेवा ॥ दूसररहानभुजबलदाया ॥  
 स्वर्गभूमितलतपेउप्रताप ॥ इहिविधकरिविलापलंक  
 शा ॥ भयउतेजरतशुनुउरगेसा ॥ मंदोदरीरुदनकरिभा



री॥ उरताउहिबझभांतिपुकारी॥ नगरलोगसबव्याकुल  
 षोचा॥ सकलकहहिंदशकंथरपोचा॥ दोहा॥ तबलंकेश  
 अनेकविधसमुजार्ईसबनारि॥ नश्वररूपप्रपंचयहदेख  
 इहदयविचारि॥ १४३॥ चौपाई॥ तिन्हहिज्ञानउपदेशहिरा  
 वण॥ आपुनमंदकथाअतिपावन॥ परउपदेशऊशालव  
 ऊतैरे॥ जेआचरहितेनरनचनेरे॥ देखिचरितपुनितसुर  
 गावहि॥ वर्षिसमनदुंदुभीबजावहि॥ तासक्रियाकरिनि  
 शिचरनाह॥ भयउषोचवशाअतिउरदाहा॥ सचिवआउस  
 बलगेबुजावन॥ वादिविषादकरियजिनरावण॥ सतवि  
 तनारिविविधसखकैमें॥ उपजहिवटाजाहिउडिजैमें॥ त  
 डितदमकदेखियचनमाही॥ रहउनस्थिरतेबझरिक्किया  
 ही॥ असजियजानिसुनियदशभाला॥ वचहिनकोउजग  
 आपकाला॥ अबप्रभुजतनविचारऊसोई॥ रिपकरनाश  
 जवनविधहोई॥ वचनसुनततेहिककुसखमाना॥ काल  
 विवशाजिमितीरथज्ञाना॥ दोहा॥ लागेउकरणाविचारपुनि  
 बझप्रकारदशशीश॥ समुकिहृदयअहिरावणाहिआपउ  
 जहौगिरीश॥ १४४॥ चौपाई॥ दंडचारितवतहंनिशिबीती  
 संध्याबन्दनकीन्हसप्रीती॥ लागेउकरणाध्यानदशशीश॥  
 बझरिहृदिजोरेउकरबीसा॥ शिवसेवकसोअतिअनुगामी॥  
 सुनुखगोशतिहितेवउभागी॥ आकर्षणमंउजयेउदशभाला



अदिरावणाचितडोलपताला॥लगेउकराणसोमनअनु  
माना॥केहिकाराणदशमुखअऊलाना॥निशिचरनाह  
भुवनवशाजाके॥जीतनकरनवीरकोऊताके॥मनक्रम  
वचनआननहिसेवी॥थरेउध्यानउरकामदादेवी॥चलेउ  
बडरिआपउसोतहंवा॥शिवमंउपदशमुखरहंजहंवा॥  
निशिचरपतिकहितेहिशिरनापउ॥करगहिनजिआ  
सनबैठापउ॥**दोहा॥**अदिरावणातबरवणाहिपूकेउऊ  
शलसप्रीति॥प्रथमकहीतेहिंसोकयाभगिनीकीन्हअ  
नीति॥**॥४५॥ चौपाई॥**बयखरदूषणजिमिसुधिपाई॥मा  
रीचकपटमृगकयासुनाई॥कहेसिवडरिसीताकरहर  
णा॥पवनतनयबललेकादहना॥सेतबांधिजिमिप्रभु  
चलिआपउ॥वालितनयसंवादसुनापउ॥अनीयअंकप  
नअरुअतिकाया॥परैसमरमहसुनुअदिराया॥तातऊ  
शलअवआसिरानी॥कटकनिशाचरसकलनशानी॥  
ऊम्भकराणचननादोमारें॥रामलत्माणतेमनुजविचारे  
आनेउबोलितोहिनजपाणा॥कडसोरजतनहोयरिपा  
नाणा॥सनतवचनकहिकेतिकवाता॥हरिलैजैहोंदोनों  
आता॥लैपातालदेविहिंवलिटैहों॥यशपूराणनिशिचर  
ऊललैहों॥लैजबजाउजानेउतमतवही॥रविसमतेजहो  
यनिशिजबही॥**दोहा॥**कहिअमवचनप्रबोधकरिशीघ



नारवलभाषि॥ आयेउरनुपतिकटकतबनिजदेवीउरगधि  
 चौपाई॥ सृजनकरनिजिअतिअधियारी॥ मर्कटभटजाग  
 दितहंभारी॥ कहहिंजयतिजयजयतिकृपाला॥ अतिहि  
 अगमगमनाहिनकाला॥ तहंमारुतसतरचाउपाई॥ नि  
 जलंगूरकीकोटबनाई॥ सोशोभाककुवरणिनजाई॥ जनु  
 भुजंगपतिरहेतहंआई॥ अरुजिमिदेखियशैलसमाना॥  
 दरवाजेकृतमुखहनुमाना॥ देखिहृदयअदिगवणहारा  
 जिमिरविउदयनतिमिरप्रसारा॥ एकोपुर्निमनदहरा  
 नी॥ कपटवेषतिहिकीन्हभवानी॥ वेषविभीषणासबअनु  
 हारी॥ पवनतनयपहगोकुलकारी॥ दोहा॥ सहजप्रता।  
 पीपवनसुतपुनिसुरपतिपतिदास॥ तिन्हहिंनिदरिच  
 ल्योगमपदिमूढहृदयनहिआस॥ १५७॥ चौपाई॥ मरमन  
 जानेउककुसुतपवना॥ वेषविभीषणाकैसोगवना॥ छा।  
 छहोइबोलेउसनुभाता॥ चलेउजहंकृपालजनजाता॥  
 मैरनुपतिसनआयसुपाई॥ संध्याकरणागपउसनुभाई॥  
 तेदितेतारितचलेउप्रभुपोंही॥ भईविलंबजनिगमरिसों  
 ही॥ सत्यवचनकपिनिजमनमाना॥ सुनुखगेशभावीव  
 लवाना॥ कपटचतरगतिजानिनजाई॥ परमनहरैहरैथ  
 नभाई॥ आयसुपाइगपउसोतहंगा॥ फणिपतिप्रभुदौनो  
 रहजहंगा॥ कपिपतिजाम्बवन्तनलनीला॥ बालिननयस



षेगागावलशीला॥**दोहा**॥ दुविदमयंदकपीशगागागया।  
 गवातकपिवीर॥ सहितविभीषणाप्रपरभटसोयेसवर  
 गापीर॥**१४८**॥**चौपाई**॥ तिन्हहिंमथरावणाशशिराङ्ग॥ प  
 कसंगसोवतफणिनाङ्ग॥ ददिणादिशिसोवतरचुनाथा  
 अनुजवामदिशितिहिंपरहाथा॥ प्रभुकरकरपरराजत  
 कैमें॥ जातरूपपरफणियतिजैमें॥ कपिसबभैजनुसा  
 गरतीरा॥ तहोसोयेमानङ्गहोवीरा॥ सुभगवाणापनुथरे  
 वनाई॥ लक्षणासहितसमीपरचुराई॥ अदिगावणमन  
 कीन्हप्रणामा॥ देखिरामचनसुन्दरण्यामा॥ ब्रह्मादिक  
 जेहिध्याननपावहिं॥ मुनिमहेशपूजामनलावहिं॥ क  
 रहिंविविधजपयोगविरागी॥ रटदिनिरत्तरदिननिशि।  
 जागी॥ सोप्रभुतिहिंदेखाभरिलोचन॥ कृपासिंधुसेवक  
 भयमोचन॥ बडरिहृदयतेहिंकीन्हविचारा॥ रावणाका  
 जकरौअनुसारा॥ ककुनिजमायाकृतगुणाआई॥ कवनी  
 भांतिजाहिंदोभाई॥**दोहा**॥ मोहनतेंमोहेसबदिमंत्रन्हनै  
 सुखमूंदि॥ भणउअटप्यउठाइकरिप्रभुहिचलेउलेकूंदि  
 ॥**१४९**॥**चौपाई**॥ एदिविधप्रभुहिंगयोलैसोई॥ नभमारग  
 प्रकाशअतिहोई॥ सोप्रकाशजबरावणादेखा॥ वचनप्र  
 माणातासकरिलेखा॥ मनमेंदर्षकरैअतिभारी॥ अदिग  
 वणलैगाअसगरी॥ लैनजलोकगयोदणामाही॥ सो



रुभयोतवकपिदलमाही॥ जागे वानर श्रीहतजारी  
 देवियजिमिसरिताविनुवारी॥ असदेवियजिमिनि  
 शिविनुइन्हू॥ तेजहीनवासरजिमिचन्हू॥ रविविनुदि  
 वसजीवविनुदेहा॥ जिमिदीपकविनुदेवियगोहा॥  
 एकहि एकलागतवपूकन॥ कहोंगपत्रैलोक्यविभूष  
 णा॥ दोहा॥ सोधासबमिलिकटकतिन्हनहिणयेदोऊ  
 वीर॥ भेव्याकलसबभालकपिजिमिजलचरविनुनीर  
 चौपाई॥ सकलकहदिविधिकायहकीन्हा॥ रघुपति।  
 विनाप्राणचहलीन्हा॥ शोकग्रसितथरिसकैनथीरा॥  
 कहदिरामलक्ष्मणादोउवीरा॥ करुणाकरैकपीशाच  
 पारा॥ बनीबातविधिकहाविगारा॥ कटकनिशाचर  
 सकलसंतारी॥ रहाएकरिपुरावणाभारी॥ सोउनरहत  
 रामशरलागे॥ भाइइहमसमकोउनअभागे॥ कबड।  
 कजौदशसिरअरीजीतहिं॥ उतरकवनदेवहमसीतहिं  
 यहकहिविकलमूर्खिमहिपरेऊ॥ लागेवज्रशैलजिमि  
 गिरेऊ॥ विभीषणाकीगतिकहीनजाई॥ फिरेवतसजनु  
 पेनुलवाई॥ दोहा॥ सहितपवनसतअवपतिदुखम  
 नभावइभांति॥ खगपतिसूजनकतइककुतमअपार  
 तेहिराति॥ चौपाई॥ पवनतनयपुनिकहमवपांही  
 विस्मयएकहोइमनमोही॥ कोरुएकआवविभीषणावे

२५०

गुप्त



रामा.  
ले.  
३५

३९

षा॥ प्रभु के निकट जात में देषा॥ पूछे वचन कहे सि अ  
ति नीका॥ कपट न जानौ निशि चरजीका॥ वचन सुनत  
बोले उलं केशा॥ अहि रावा लै गा अवधेशा॥ पन्न कलो  
कवसत है सोई॥ ममत नुवेष अवर नहि कोई॥ महा बली  
जानौ बड़ माया॥ नि अय वर दश शीष पठाया॥ जिमि ब  
ल होइ वहाँ सो जाई॥ ताहि जीति आनै दौ भाई॥ कहइ भा  
लु पति सुनु दनु माना॥ तव बल तात सकल जग जाना  
वेगि सो जत भविचारइ ताता॥ कृपा सिंधु आनइ दौ धाता  
दोहा॥ विलखि कहे उ कपि पति बड़ रिमामरुत सुत सुनु ता  
त॥ विनु रुपति थिक थिक जनम पल युग सरि सविहा  
त॥ १५२॥ चौपाई॥ तू धित होय विनु वारि दुखारी॥ तै सेह  
म सब विना खारी॥ रवि विनु पंकज होइ ऊझ लाना॥  
तै सेह म सब हैं दनु माना॥ सीता सुधि जिमि ओषधि आ  
नी॥ तेहि प्रकार आनइ गुण खानी॥ यह सुनि बड़ रिप  
वन सुत बोला॥ चित्र करइ स्थिर में न डोला॥ भुवन  
चारि दशा तीनि हू लोका॥ आनौ प्रभु दित जइ तमह शो  
का॥ अब तैं स जग रहै उ सब भाई॥ लरेइ काल सों जौ च  
डि आई॥ यह कहि गर्जि चले उ दनु माना॥ प्रलय का  
ल के मेव समाना॥ चले जात एक तरु तरंग पकू॥ शुभ  
नि शुभ कहत प्रसभ पकू॥ दोहा॥ शुभ नारि ही शुर्विणी वो



लीपति सौं वै न ॥ आनइ आमिष मनुज करखो उहो ॥  
 जीयचैन ॥ १५३ ॥ चौपाई ॥ ता सुवचन सुनिखग असक  
 देऊ ॥ अहि रावणा रामहिं लै गयेऊ ॥ देखि बलि देवि  
 हिं सो जाई ॥ बडे भाग्य आमिष जो पाई ॥ कवने इंजतन  
 देव में आनी ॥ अस कहि गृध्र नारी सनमानी ॥ जब दिप  
 वन सुत यह सुधि पाई ॥ चले उह दय सुमिर तरबुराई ॥  
 तरत पताल हिं तिहिं दगा गयेऊ ॥ अहि रावणा पुर प्र  
 विशत भयेऊ ॥ द्वारपाल मकर ध्वज की शा ॥ कपिसन  
 डाटि कहत बझरी शा ॥ निदरहि मोहितो हि उर नाही ॥  
 जिमि दीप दिन पतंग उड़ाही ॥ मारुत सुत करहों मैं बा  
 लक ॥ स्वामि भक्त भजुन मुख कालक ॥ सोरठा ॥ सुन  
 तवचन हनुमान विस्मय बश बोलत भये ॥ अरे रे मूढ  
 अज्ञान मोरैं सुत स्वयने नही ॥ १५४ ॥ चौपाई ॥ कहत  
 वचन शठ तो दिन खोरी ॥ काम विवश कवमति भे मो  
 री ॥ मम सुत हो सि मूढ केहिका जा ॥ रतना कहत तो हि  
 न दिला जा ॥ किहि प्रकार तैं मम सुत भये सी ॥ निज उत  
 पति मो मन किन कहे सी ॥ सुनत कह दि मकर ध्वज व  
 चना ॥ कीन्ह तात जब लंका दहना ॥ जब आप उचलि उ  
 दयि समीपा ॥ भये प्रखेद तनू दि कपि दीपा ॥ कूटि प्र  
 खेद सागर महर गये ॥ सोऊषपी ये उत हां में भये ॥ ३३ ॥



प्रकारमैतवसुतताता॥ गोबद्धनहिनिजपितानमाता  
अहिगवणसेवामैंकरुं॥ प्रभुआयसइहिंदोरेरहुं॥  
दोहा॥ सत्यवचनहनुमानकदिपुनिपूछेउसबबात॥  
आनेउलत्तमणारामकहेकहाकरतहैतात॥ १५५ ॥ चौपा॥  
कहइताततिहिंलकोनौं॥ जानचहौंमेनिजप्रभु।  
दोहं॥ यहवृत्तान्तनजानइताता॥ असमैश्रवणसुना  
ककुवाता॥ ग्रीतापतिअरुफणियतिसाथा॥ सोलै।  
आयेउनिशिचरनाथा॥ करतसोअहेहोमथोंआज्ज॥ दे  
विहिंबलिदेइहिनृपराज्ज॥ जोककुनिजश्रवणनसु।  
निपाएउ॥ तातसकलमेंतमहिसुनाएउ॥ निजप्रभुका  
जलागिउखसहेकुं॥ तहसनसत्यमरममेंकहेकुं॥ जान  
कहौपेजाननदेकुं॥ प्रभुआज्ञातजिअयशानलेकुं॥ सुनि  
असपैलिचलेउहनुमाना॥ भयउक्रोधमकरध्वजजाना  
दोहा॥ कपिकहेहनेसिएकमुष्टिकाकपिपुनिमाराता  
दि॥ एकदिएकहनेउतबबलपुगसमयदिनादि॥ १५६  
चौपा॥ एकदिएकसकैनहिपारी॥ मारुतसुतसुतदो  
उभटभारी॥ सुतकीपूछसुतबोधिभवानी॥ अलेउवहो  
रिविलंबवडिजानी॥ परिलचुरूपहोमगृहदेखा॥ जी  
वसजीवपरैनदिलेखातहंदेवीकरमेंउपरहई॥ शोणित  
घटबद्धकोकहिसकई॥ विविधभांतिप्रवायकवाना॥ ५



रेआनिदेवीअस्थाना॥ मालिनितहोंसमनलैआई॥ सम  
 नमथ्यप्रविशोकपिराई॥ समनहूतेंअतिकृतदलकाई॥ सो  
 लैसमनमंउपमहिआई॥ समनसकलदेवीपरचढेऊ॥  
 विकटरूपतबतहेंकपिभयेऊ॥ दोहा॥ कुवतचरणतबदे  
 वीथरणीगईसमाइ॥ मुखपसारिढाढेभयेउकपिकुविव  
 रणिनजाइ॥ १५३॥ चौपाई॥ रूपदेखभाआनन्दजारी॥ क  
 रहिविचारनिशाचरभारी॥ कहहिंकिदेनिप्रगटभईआ  
 ज॥ बउभागीभानिशिचरराज॥ करिप्रणामपुनिपूजाक  
 रहीं॥ जोककुआवसोकपिसुखपरहीं॥ रहीजोसकलव  
 ससमुदाई॥ बचीनपकोसबकपिखाई॥ कपिविलारको  
 तकविस्तारा॥ भयोचहनिशिचरऊलसंचारा॥ अदिगव  
 णउरभासुखकैसें॥ चढेकाथपरबलिपणुजैसें॥ जबहीं  
 होमसिद्धतबजाना॥ लक्ष्मणरामतरिततहेंआना॥ बाउ  
 कीन्दतहेंप्रभुकहेंआनी॥ निशिचरवडआयुधपरिपा  
 णी॥ थरेंगदाकोउअरुपनुवाणा॥ शक्रिशूलतरवारिकु  
 पाणा॥ दोहा॥ तोमरमुझपरपुअसिपाणफांसिअरुवेत  
 ओउनखउगथनुषशरदेखतरहदिनचेत॥ १५४॥ चौपाई  
 मायाबलनेसकलविचतण॥ अतिविकारलसोउजउल  
 तण॥ इदिविषसकलवीरतहेंरही॥ अदिगवणाआजा  
 यउसरही॥ आयसपाशखउगतिरुकाढे॥ मारनकहैप्रभ



परभेदाडे ॥ कोउ कह राजनीति अनुसरइ ॥ तीनि द्वाउ वि  
लेव अवकरइ ॥ सुनि सुसवचन मूछइ मिकहरइ ॥ सुमिरो  
जो तमरे कोउ अहरइ ॥ नाहित काल अवपडं चा आइ ॥ निशि  
स्वपना सम होउ दौ भाई ॥ कहहिं मूछ प्रभु कहं बड्वाणी ॥  
कहत मऊ चमोहि अति ही भवानी ॥ दोहा ॥ फणि पति वि  
तवहिं राम कहं राम चितव अदि राज ॥ प्रभु कर कोत कक  
हीय किमि सुनइ गरुड खग राज ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ पुनि प्र  
भु मन महं कीन्ह विचार ॥ जपै सकल जग नाम हमारा ॥  
इहि अवसर सुमिरिय रहनु माना ॥ निकटहि अदहि वीर ब  
लवाना ॥ यह विचारि प्रभु सुमिरन कीन्हा ॥ दोइ हि सो जो  
विधिलिखि दीन्हा ॥ तब मारण कहं उद्यत भयेऊ ॥ चन स  
मान कपि गर्जत भयेऊ ॥ निशि चर सकल तृषित भे भारी  
कहहिं वचन निजरुदय विचारी ॥ अदि रावण भल की  
न्हन काज ॥ आनेउ कपट वेष सराज ॥ तिहितें देवि कुइ  
भई आज ॥ अवभासव कर परम अकाज ॥ सभय भये तब  
निशि चर जारी ॥ दूसरें कपि गर्जेउ अति भारी ॥ दोहा ॥ प्रग  
ट रूप करि पवन सत करि अदृहा मझ भारी ॥ अति भयत्र  
मित निशाचर सुनइ उमा मति पीर ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ उगम  
मभे निशि चर अभिमानी ॥ मारुत वहें जिमि सागर पानी  
तिरित गा कपिली न्हे दोउ भाई ॥ इतें लाग निशि चर समुदा



ई॥ खउगकुशलीन्हनुमाना॥ कोटेंलागभुजासिरना  
 ना॥ काइहिंनाकप्रवणविनुकीन्हा॥ थरिपदडारिअनल  
 महेदीन्हा॥ निजलङ्गुरकीकोटबनाई॥ जिहिमेंकोउभा  
 गिनहिजाई॥ इहिंविधेसबनिशिचरसंचारे॥ अदिगवण  
 तबवचनउचारे॥ रेकपिछीटत्रासनहितोही॥ अदिगवण  
 मेंजाननमोही॥ जंबुमालिकेहिंजिमितन्हमारा॥ अरुग  
 वणसुतहनेउविचारा॥ दोहा॥ कालनेमिपुममेंनहींसुन  
 इवचनहनुमान॥ असकदिखउगप्रहारकियकपितनु  
 वज्रसमान॥ १५॥ चौपाई॥ लैअसिताहियवनततमारा॥ का  
 टापीशाअनलमहेडारा॥ पूर्णाइतिकरितबसोपीशा॥ पु  
 निप्रभकहेलैचलेउकपीशा॥ मकरध्वजतवविनतीकी।  
 न्हा॥ बंधनछोरिराजतेहिंदीन्हा॥ इहोंकरराजकरइतम  
 ताता॥ भजइसदाममप्रभुदोउभाता॥ असकदिकपिनिज  
 दलमहेआवा॥ हर्षउकटकममरसुखपावा॥ मृतकशरीर।  
 प्राणफिरिआवै॥ गइंमणिफणि कमनइंफिरिपावै॥ विकु  
 रालिलैबइरिजिमिआई॥ तिमिसबभयेनिरखिदोउभाई॥  
 मिलेउकपीशाचरणपरिमाणा॥ पुनिपदधरेउनिशाचरना  
 णा॥ दोहा॥ जाम्बवन्तअरुदसहितमिलेभालुअरुकीशा॥  
 सनमानेअियवचनकदिलह्मणकोशलापीशा॥ १६॥ चौ  
 पाई॥ बइरिसउन्निभेटेहनुमाना॥ कदहिंताततह्मणखेउ।



प्राणा॥ देवदिसमनवृष्टितवकीन्ही॥ प्रमुदितहृदयदु  
 नुभीदीन्ही॥ अनुजसहितहर्षेरचुवीरा॥ कहेउवचनसुत्र  
 तनयसमीरा॥ तोहिसमाननदिकोउहितकारी॥ सरमुनि  
 सिद्धजोकोउतनुपारी॥ यशतम्हारत्रिभुवनमेंभयेऊ॥ सु  
 निग्रसवचनचरणकपिनयेऊ॥ नाथकरौतम्हमैकेदिले  
 खें॥ तरणीचलैअगमजलदेखें॥ तैसेंसबप्रतापतवना  
 पा॥ सुनिग्रसकपिहिंमिलेरचुनाथा॥ कटकसहितहर्षे  
 दोउभाई॥ तेहिअवसरसखकुहिकिमिजाई॥ उहांदणान  
 नसबपुथिपाई॥ हूतनकदिखैरिसबजाई॥ अहिरावणक  
 रवथसुनिकाना॥ भएउतेजरुतअतिदुखमाना॥ वचनका  
 णासमलागेउताही॥ संभ्रममूर्च्छिपरेउमदिमाही॥ सुख  
 सखानलोचनजलबहरई॥ वचननआवपुनिप्रुनिमिरपु  
 निई॥ दोहा॥ मयतनयातवआइकरिवऊप्रकारसमुजा  
 व॥ माननमूढकालवशापरमक्रोधकहेपाव॥ १६३॥ चो  
 पाई॥ रावणउरअवरैककुठएऊ॥ मेढिकोसकेजोविधि।  
 निर्मयेऊ॥ प्रभुविरोधकरिचहेकल्याणा॥ मूढमोदवशा  
 अतिज्ञाना॥ कृपासिंधुसेवकभयहारी॥ तेहिविरोधसख  
 चरेसगरी॥ एहिविषजल्यतभाभिनुसारा॥ लगेभालु।  
 कपिचारिद्वारा॥ सुभटबुलाइदणाननबोला॥ रासमन  
 सुखताकरमनसोला॥ सोअवहीवरुजाइपराई॥ रासमन



मुखभोगै न भलाई ॥ निज भुजबल मै वैर बढावा ॥ दै हों ३।  
 तरजोरि पुचि आवा ॥ अस कहि मारुत वै गरथ साजा ॥ बा  
 जहिं सकल जूजा ऊबाजा ॥ चलै बीर सब अतलित बली ॥ ज  
 नुक जल गिरि आं पी चली ॥ अश गुण अमित होहिं तेहि का  
 ला ॥ गणै न भुजबल गर्व विशाला ॥ **कुन्द** ॥ अति गर्व गण ३  
 न अश गुण सगुण सब हिं आ पुथ हाथ ते ॥ भट गिरि हिं रथ ते  
 वाजि गज चिक्कर हिं भाज हिं साथ ते ॥ १॥ गो मायु गृध्र करा  
 लख रव आन बोल हिं अति चने ॥ जनु काल दूत उलूक बो  
 ल हिं वचन परम भयावने ॥ **दोहा** ॥ ताहि कि सम्यति श गुण अम  
 सपने डमन विश्राम ॥ भूत दोहरत मोहव शराम विमुख र  
 त काम ॥ १६५ ॥ **चौपाई** ॥ चली निशाचर अनी अघारा ॥ चत  
 रङ्गिनी चमूब डपारा ॥ विविध भांति बाहन रथ जाना ॥ विपु  
 ल वरण पताक ध्वज नाना ॥ चले मत गज यूथ चने रे ॥ प्रावृ  
 ट जल दमारुत के प्रेरे ॥ वरण वरण वर दै त्यनिकाया ॥ सम  
 र शूर जाना हिं बड माया ॥ अति विचित्र वाहिनी विराजी ॥ वी  
 र वसन्त सेन जनु साजी ॥ चलत कटक दिगसि तुर उगही ॥  
 लुभित पयोधि ऊथर उगम गही ॥ उठी रेणु रवि गण उक्कण  
 पवन अकित वसथा अऊलाई ॥ पवन निशान चोर रव बाज  
 हिं ॥ महा प्रलय के जनु वन गाज हिं ॥ भेरी नफिरी बाजु सह  
 नाई ॥ मारुता गशूर सावदाई ॥ केहरि नाद बीर सब करही ॥



निजनिजवलपौरुषउचरहौ॥ कहैदशाननसनइसुभट्टा  
मर्दइभालुकपिनकरठट्टा॥ हौंमारिहौंभूषदोउभाई॥ अस  
कहिसनमुखफौजचलाई॥ यहशुधिसकलकपिनजवण  
ई॥ पाएकरिरचुवीरदुहाई॥ **कृन्द**॥ पाएविशालकरालम  
कंठभालुकालसमानते॥ मानइंसपत्तउडाहिंभूषरवन्दना  
नावराणते॥ **१३**॥ नाखदशनपौलकरडुमायुथसबलशङ्क  
नमानहौं॥ जयरामरावणमत्तगजमृगराजसुयशसुना  
वहौं॥ **१४**॥ **दोहा**॥ दुइदिशिजयजयकारकरिनिजनिजजो  
रीजानि॥ भिरेवीररतरचुपतिहिउतरावणहिवाखानि॥ **१५**  
**चौपाई**॥ रावणारणीविरथरचुवीरा॥ देखिविभीषणभयउग्र  
भीरा॥ अधिकप्रीतिउरभासन्देहा॥ बन्दिचरणकहसहित।  
सनेहा॥ नाथनरथपदनहिपदत्राणा॥ केहिविथजीतव।  
वीरबलवाना॥ सुनइसखाकहकृपानिथाना॥ जेदिजय  
होरसोस्पन्दनशाना॥ शोरजभीरजाहिरथचाका॥ सत्य।  
शीलरुढध्वजापताका॥ बलविवेकदमपरहितचोरे॥ त  
मादयासमतारजुजोरे॥ ईशभजनसारणीसुजाना॥ विर  
तिचर्नसन्तोषकृपाणा॥ दानपरशुबुधिशक्तिप्रचंडा॥ वर  
विज्ञानकटिनकोदंडा॥ संयमनियमशिलीमुखनाना॥ अ  
मलशचलमनतणिसमाना॥ कवचअभेद्यविप्रपदपूजा॥  
एहिसमविजयउपायनइजा॥ सखाधर्ममयअसरथजा



के॥ जीतनकहंनकतइंरिपुताके॥ दोहा॥ महाअजयसेसा  
रिपुजीतिसकैसोवीर॥ जाकेअसरयहोइदछसनइसखा  
मतिथीर॥ १६६॥ सुनतविभीषणाप्रभुवचनहरषिगदेपदके।  
ज॥ इदिविधमोहिउपदेशोउरामकृपासखपुंज॥ १६७॥ उज।  
प्रचारदशर्कथरइतअङ्गदहनुमान॥ लरतनिशाचरभाल  
कपिकरिनिजनिजप्रभुआन॥ १६८॥ चौपाई॥ सरब्रह्मादि  
मिहमुनिनाना॥ देखहिंरानभचढेविमाना॥ हमइउमा  
रहेउंतेहिसंगा॥ देखतरामचरितरणरंगा॥ सुभटसमररस  
दुइदिशिमाते॥ कपिजयशीलगमबलताते॥ एकएकस  
नभिरहिंप्रचारहिं॥ एकएकमर्दहिंमहिपारहिं॥ मारहिंर्क  
टहिंथरणिपकारहिं॥ शीसतेरिगहिभुजाउपारहिं॥ उद  
रविदारहिंभुजाउपाटहिं॥ गहिपदअबनिपटकिभटउंटा।  
हिं॥ निशिचरभटमहिगाउहिंभाल॥ ऊपरशरिदेहिंबहु।  
बाल॥ वीरबलीमुखपुहविरुहे॥ देखियविपुलकालजनु  
कुहे॥ छन्द॥ कुहेकृतान्तसमानकपितनुसवतशोणितरा  
जही॥ मर्दहिंनिशाचरकटकभटबलबलवनजिमिगाज  
ही॥ १५॥ मारहिंचपेटनिशटिदाननिकांटिलातनमौजही॥  
चिकरहिंमर्कटभालकुलबलकरहिंजेहिखलकीजही  
थरिगालफारहिंउरविदारहिंबलसंगवलिमेलही॥ प्रहला  
दगतिजनुविविधतनु॥ रिसमरअरुनखेलही॥ १६॥ धरुमा



रामा.  
ले.  
धध

५५

रुकाटुपक्कारुवोरगिरागगनमहिभरिरही॥जयरामजो  
तृणतैजलिशकरजलिशतैतृणकरमही॥१८॥**दोहा॥** नि  
जदलविचलविलोकितववीशभुजादशचाप॥चलादशा  
ननकोपकरिफिरडफिरडकरिदाप॥१९॥**चौपाई॥** थापउप  
रमक्रोधदशकंधर॥सनमुखचलेइहोदैवन्दर॥गहिकरपा  
दपउपलपहारा॥डारहिंतेहिपरएकदिबारा॥लागहिंपौ  
लवजुतनुतासू॥खंडखंडहोइफूटहिआशू॥चलानअच  
लरहारथरोपी॥रणदुर्मदरावणअतिकोपी॥उतउतऊप  
टिदपटिकपियोधा॥मर्दनलागुभयोअतिक्रोधा॥चलेपरा  
शभालकपिनाना॥त्राहित्राहिअरुदहनमाना॥पाहिपाहि  
रचुवीरगोसोई॥यहखलखाइकालकीनाई॥तेहिदेखेक  
पिसकलपराने॥दशइचापशायकसन्धाने॥**कन्द॥** संधा  
नियनुशरनिकरकाडेसिउरगजिमिउडिलागंदी॥रहेपूरि  
शरथरणीगगनदिशिबिदिशिकहंकपिभागंदी॥२०॥**भा**  
अतिकोलाहलविकलदलकपिभालबोलहिंआतरे॥रचु  
वीरकरुणसिंधुआरतबंधुजनरतकहरे॥२०॥**दोहा॥** नि  
जदलविचलदेखिकटककटिनिषरुथनुहाप॥लदम  
णचलेसकोपतवनाइरामपदमाप॥२०॥**चौपाई॥** रेख  
ल **कामारसिकपिभाल**॥मोहिविलोऊतोरेमैकाल  
खोजतरेउतोहिसतचाती॥आजुनिपातिचुडावोंकाती



असकहिक्काउेसिबाणप्रचंडा॥ लक्ष्मणाकिएसकलश  
 तखंडा॥ कोटिनशक्तिविश्रुलपवारे॥ तणासमानप्रभुका  
 टिनिवारे॥ पुनिनिजबाणन्हकीन्हप्रहारा॥ स्यन्दनभञ्जि  
 सारणीमारा॥ शतशतशरमारेदशभाला॥ गिरिशृङ्गनि  
 जनुप्रविशहिंवाला॥ पुनिशतशरमारेउरमांही॥ परेउ  
 अवनितनुशुधिककुनांही॥ उठाप्रबलपुनिमूर्छाजागी  
 क्काउेसिब्रह्मदत्तजोसांगी॥ **छन्द॥** सोब्रह्मदत्तप्रचंडशक्ति  
 अनन्तउरलागीसही॥ पर्योविकलवीरउठावदशमुख  
 अतलवलमहिमारही॥ **२१॥** ब्रह्महंडभुवनविराजजा  
 केएकशिरजिमिरजकणी॥ सोचहउवठावनमूढराव  
 णजाननहित्रिभुवनधनी॥ **२२॥ दोहा॥** देवतथावापवन  
 सुतबोलतवचनकदोर॥ आवततेहिउरमहंरुनेउमुष्टि  
 प्रहारप्रचोर॥ **२३॥ चौपाई॥** जानुटेकिकपिभूमिनपरेऊ  
 उठासम्भारिवडरिरिसिभरेऊ॥ मुष्टिकाएकताहिकपि  
 मारा॥ परेउशैलजिमिवज्रप्रहारा॥ मूर्छाविगतवडरि  
 सोजागा॥ कपिवलविपुलमराहनसागा॥ धिक्थिक्  
 ममवलपौरुषमोही॥ जौतैजियतेउठासरदोही॥ अस  
 कहिकपिलक्ष्मणाकहैल्यावा॥ देखिदशाननविस्मय  
 णवा॥ कहरसुवीरसमुजिजियभ्राता॥ तमकृतानभ  
 लकसुरगता॥ सुनतवचनउठिवैरुक्कपाला॥ गगनग



ईसोशक्रिकशला॥ थरिशरचापचलतप्रतिभयऊ॥ रि  
 पुसमीपशातरप्रतिगयऊ॥ **छन्द॥** शातरबहोरिविम।  
 त्रिस्पन्दनमारितेहिवाऊलकियो॥ गिर्योथरणिदश  
 कंथविकलतववाणशतवेधोदियो॥ **२३॥** सारथीदूसर  
 वालिरथतेहिंतरतलंकालैगयो॥ रघुवीरबंधुप्रतापपु  
 न्नवहोरिप्रभुचरणान्दिनयो॥ **२४॥ दोहा॥** उहोदशानन।  
 जागिकरिकरणलायककुयज्ञ॥ रामविरोधीविजयच  
 दैशठहठवप्रतिग्रज॥ **२५॥ चौपाई॥** उहोविभीषणसब  
 अथिपाई॥ सपदिजाइरघुपतिहिसनाई॥ नाथकरैराव  
 णएकयाग॥ सिद्धभयेनहिमरहिअभागा॥ पटवऊन  
 पवेगिभटबंदर॥ करहिंविधेसम्रावदशकंथर॥ शात  
 होतप्रभुसभटपदाये॥ हनुमतादिवन्दरसबपाये॥ कौ  
 तककूदिचछेकपिलंका॥ पैटेरावणभवनअशंका॥  
 जबहीयज्ञकरततेहिदेखा॥ सकलकपिन्हभाक्रोथवि  
 शेखा॥ रातेभाजिनिलजगृहयावा॥ **२६॥** आइवकथा  
 नलगावा॥ असकहिअरुदमारेउलाता॥ चितवनशाठ  
 सारथमनराता॥ **छन्द॥** गहिवितवजवकपिकोपितव  
 गहिटशनलातन्हमारही॥ परिकेशनारिनिकारिवादि  
 रतेप्रतिदीनप्रकारही॥ **२७॥** तवरुठाकोपिकृतान्तसम  
 गहिवराणवानराही॥ यहिवीचयज्ञविधेसकरिकपि



देविमनमहहारही॥२६॥**दोहा॥** मखविधेसकरिक  
 पिसकलआपरचुपतिपास॥चलादशाननक्रोधकरि॥  
 क्वाजियकीआश॥२७॥**चौपाई॥** चलतहोहिंतेहिअशुभ  
 भयंकर॥वैटहिंगृध्रउडहिंशिरन्हिपर॥भयउकालवश  
 काइनमाना॥कहेसिवजावडपुडनिसाना॥चलीतमी  
 चरअनीअपाश॥बडगजरथपदचरअसवार॥प्रभुससु  
 खखलथावहिंकैसे॥शालभसमूरअनलकहुंजैसे॥रहो  
 देवसबविनतीकीन्हा॥दारुणविपतिहमहिइन्दीन्हा  
 अबजनिनाथखेलावडपही॥अतिशयदुखितहोतिवै  
 देही॥देववचनसुनिप्रभुसुसकाना॥उठिरचुवीरसुपारे  
 उवाणा॥जटाजूटदृढबांधीमाथे॥सोहतसमनवीच  
 विचगांथे॥अरुणानयनवारिदतनुश्यामा॥अखिललो  
 कलोचनअभिरामा॥कटितटपरिकरकसेनिषंगा॥कर  
 कोटंकटिनसारंगा॥**कुन्द॥** सारंगकरसुन्दरनिषंगाशि  
 लीमुखाकरकटिकस्यौ॥भुजदेउपीनमनोहरायतउरप  
 रासरपदलस्यौ॥२८॥**कहदासतलसीजवहिंप्रभुशरचा**  
**पकरफेरनलगे॥ब्रह्मांडदिगगजकमटअदिमदिमिंधु**  
**भुथरउगमगे॥२९॥**दोहा॥** शोभादेखिहर्षेसरवर्षहिंसुम**  
**नआपार॥जयजयजयकरुणानिधिकविवलगुणआ**  
**गार॥३०॥**चौपाई॥** एदिकेवीचनिशाचरअनी॥कसमसा**



ति आर्य अतिथनी ॥ देखि चले मन मुख कपि भरा ॥ प्रल  
य काल के जिमि घन वहा ॥ बड़ कृपा पातर वारि चमक  
हिं ॥ जनु दश दिशि दामिनी दम कहिं ॥ गजर पतर गचि  
कार कठोरा ॥ गर्जत मन डं बलाहक चोरा ॥ कपिलें गुरा  
विपुल नभ काये ॥ मन डं द्रुप नु उ गो उ सहाये ॥ उदी रे रा उ  
मान डं जल धारा ॥ बान बृन्द भर वृष्टि अषारा ॥ दुइ दिशि  
पर्वत कर दिं प्रहारा ॥ वज्र पात जनु वार दिवारा ॥ रघु पति  
को पिवाण ऊर लाई ॥ वायल भे निशि चर समु दारै ॥ ला  
गत बाण वीर चि कर ही ॥ चुर्मि चुर्मि अगणित मदि पर  
ही ॥ सब हिं शैल जनु निर्जर वारी ॥ शोणित सरिकाट  
र भयकारी ॥ कुन्द ॥ काटर भयंकर रुथि रसरिता बधि प  
र म अषावनी ॥ दोउ कूल दल रण रेत चक्रावर्त वहति भा  
षावनी ॥ २५ ॥ जल जंत गज पद चर तरंग खर विविध बा  
हन को गणे ॥ शर कितो मर पर सुचा पतरंग चर्म कमठ  
चने ॥ २६ ॥ दोहा ॥ वीर परे जनु तीर तरु मजा वह जनु फेन ॥  
कादि रदेखत उर दिं जिय सभटन के मन चैन ॥ २७ ॥ चौ ॥  
मज्ज दिं भूत पिशाच वेताला ॥ प्रथम महा योगिनी करा  
ला ॥ काक कंकलै भुजा उडां दी ॥ एक ते एक की निध रिखा  
ही ॥ एक कद दिं पे सि उ सौ धारै ॥ शर त म्हा र दारि दन जा  
ई ॥ कटर म्हा र दारि दन जा ॥ न दंत हं मन डं अर्थ जल परे



त्वेचहिंशान्तगृथतटगये॥ जनुवनशीखेलतचितदये॥ ब  
 डभटवरुहिंवेखगजांही॥ जिमिनावरिखेलहिंसरिमा  
 ही॥ योगिनिभरिभरिखर्परसंचहिं॥ भूतपिशाचविविधवि  
 यनाचहिं॥ भटकपालकरतालवजावहिं॥ चामुण्डानानावि  
 यगावहिं॥ जम्बुकनिकरदत्तकटकट्टही॥ खाहिंइंअवाहिं  
 आहिंइंवट्टही॥ कोटिनरुणमुण्डविनुडोलहिं॥ शीर्षपरेम  
 हिजयजयबोलहिं॥ **छन्द॥** बोलहिंजोजयजयमुण्डरुण  
 प्रचण्डसिरविनुथावही॥ खगगणपरस्परअरुजियुजहिं  
 सुभटसरपुरपावही॥ **३॥** वानरनिशाचरनिकरमर्दहिंरा  
 मबलदर्पितभये॥ संग्रामआंगनसुभटसोवहिंरामशर  
 निकरदिहये॥ **३॥ दोहा॥** हृदयविचारेसिदशवदनभानि  
 शिचरसंहार॥ मेअकेलकपिभालुबडमायाकरौंअपार॥  
**चौपाई॥** देवहिंप्रभुहिंपयादेहिंदेखा॥ उपजाउरअतिलो  
 भविशेषा॥ सरपतिनिजरथतरतपटावा॥ हर्षसहितमा  
 तलिलैआवा॥ तेजपुंजरथदिव्यअनूपा॥ विहंसिचढेको  
 शलप्रभूपा॥ चञ्चुलतरगमनोदरचारी॥ अजरअमरम  
 नसमगतिकारी॥ रथारूढरघुनाथहिंदेखी॥ थायेकपि  
 बलपारविशेषी॥ सहानजाइकपिन्दकीमारी॥ तवराव  
 णमायाविस्तारी॥ सोमायारघुवीरहिंवाची॥ लखिसवक  
 पिन्दमानीसोची॥ देखाकपिहिनिशाचरअनी॥ बडअरुद



लक्ष्मणाकपिथनी॥ **कुन्द**॥ बडवालि सुत लक्ष्मणाकपी  
 षा विलोकि मर्कट अण्डरे॥ जनु चित्रलिखित समेत लक्ष्म  
 णा जहं सोत दचित वत खरे॥ **३३**॥ निज सेन चकित विलोकि  
 हसि थनुता निशकोशलथनी॥ मायाहरी हरिनिमिष मह  
 हर्ष सकल मर्कट अनी॥ **३४**॥ **दोहा**॥ बडरिराम सबतन चित  
 य बोले वचन गम्भीर॥ हं द्युद देखइ सकल अमित भये  
 कपि वीर॥ **३५**॥ **चौपाई**॥ अस कहिरथ रघुनाथ चलावा॥ वि  
 प्रचरण पङ्कज सिरनावा॥ तब लङ्के शाक्रोथ करि थावा॥  
 गर्जत तर्जत प्रभुसन मुख आवा॥ जीतेइ जो भट शंभुगमादी  
 सनताप समैतिन समनाही॥ रावण नाम जगत यश जाना  
 लोक पजा के वन्दी खाना॥ खरहृषणक बन्धन ममारा॥ व  
 धेइ व्याध श्ववालिविचारा॥ निशिचर सभट सकल संहारे  
 ऊम्भुकर्णवन नारदमारे॥ आजु वैर सबलेउं निवाही॥ जों  
 राणभूमि भागिन दीजाही॥ आजु करों खलु कालहवाले  
 पड़ेइ कठिन रावण के पाले॥ सुनि दुर्वचन कालवश जाना  
 विहंसि वचन कहं कृपानिधाना॥ सत्य सत्य तब सब प्रभुताई  
 जनि जल पसि दिखाउ मनुषाई॥ **कुन्द**॥ जनि जल्पना करि  
 संयशना शदिनीति सुनि शठ करुतमा॥ संसार महपु  
 रुष विविध पाटल रसाल पनस समा॥ **३५**॥ एक समन प्रद  
 एक समन फल एक फलै केवल लागी॥ एक कहहिं क



रहिनकरिकहहि एकहिकरिवागही ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ रामव।  
 चनसुनिविहंसिकहमोदिसिखावडज्ञान ॥ वैरकरतनहि  
 तवउरेइअवलागेप्रियप्राण ॥ १०८ ॥ चौपाई ॥ कहिदुर्वचनकु  
 ददशकन्यार ॥ ऊलिशसमानलागुकाउँशर ॥ नानाकारशि  
 लीमुखपाये ॥ दिशिअरुविदिशिगगनमहिक्काये ॥ अनल  
 बाणकाउँरेचुवीरा ॥ दाणमहंजरेनिशाचरतीरा ॥ काउँसिती  
 व्रणक्रिगिबिसिआई ॥ बाणसङ्गप्रभुफेरिपदाई ॥ कोटिनच।  
 क्रविशूलपवार ॥ विनुप्रयासप्रभुकाटिनार ॥ विफल  
 होहिंरावणशरकैसे ॥ खलकेसकलमनोरथजैसे ॥ तव  
 शातबाणसारथिदिमारेसि ॥ परेउभूमिजयरामपुकारेसि  
 रामकृपाकरितादिउगवा ॥ तवप्रभुपरमक्रोधउक्कावा ॥  
 कुन्द ॥ भयेकुदपुद्विरुद्धरचुपनित्वाणशायककसमसै  
 कोटाउध्वनिअतिचणउसनिमनुजादसबमारुतग्रसे ॥  
 मंदोदरीउरकंपकंपितकमटभूभूथरत्रसे ॥ चिक्करहिंदिग  
 गजदशनगहिमहिदेखिकौतकसरहसे ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ ता  
 निशरामनअवणलगिकेकाउँविशिखकराल ॥ नभमारग  
 शरगाचलेलहलहातजनब्याल ॥ १०९ ॥ चौपाई ॥ चलेबा  
 णसपत्तजनउरगा ॥ प्रथमदिहतेसारथीतरगा ॥ रथवि  
 भङ्गिहतिकेतपनाका ॥ गर्जाअतिअन्तरबलयाका ॥ तरि  
 तआवरणचक्रिगिबिसिआना ॥ असशस्त्रकाउँसिविधनाना ॥

३७



विफलहोइसबउयमताके॥जिमिपरद्रोहनिरतमनसाके  
 तवरावणादशपूलचलावा॥वाजिचारिमहिमारिगिरावा॥  
 तरितउठाइकोपिरचुनायक॥कूडेअतिकरालवद्रशायक  
 रावणसिरसरोजवनचारी॥चलेरचुनायशिलीमुखधारी  
 दशदशबाणभालदशमारे॥निसरिगयेचलेरुधिरपनारे  
 सवतरुधिरथावावलवाना॥प्रभुप्रनिकृतधनुशरसंधाना॥  
 तीसतीररचुवीरपवारे॥भुजनिसमेतशीसमहिपारे॥काट  
 तहीपुनिभयनवीने॥रामवहोरिभुजाशिरहीणे॥प्रभुवद्र  
 वारवाइसिरहये॥कटितऊटितिपुनिनूतनभये॥पुनिपु  
 निप्रभुकाटहिंभुजशीसा॥अतिकौतकीकोशलाधीशा॥  
 रहेकाइनभसिरग्रुवाइ॥मानइअमितकेतग्रुराइ॥  
 कन्द॥जनुराइकेतअनेकनभपयसवतशोणितथावही  
 रचुवीरतीरप्रचाउथावहिंभूमिगिरननपावही॥३५॥एक  
 एकशरसिरनिकरुकेदेनमउउतरुमिसोहही॥जनुको  
 टिटिनकरकोपिजहंतहेंविधुंतदपोहही॥४०॥दोहा॥जि  
 मिजिमिप्रभुहरतासुसिरतिमितिमिहोहिंअपार॥सेव  
 तविषयविवर्यजिमिनितनितनूतनमार॥६०॥चौपाई॥  
 दशमुखदीखसिरनिकीवाजी॥विसरामरणभईरिसगा  
 जी॥गजैउमृदमहाअभिमानी॥थापउदशाइसरामनता  
 नी॥समरभूमिदशकन्यरकोपा॥वर्धिकागारचुपतिरथ



तोपा॥ दण्ड एक रथ देवि न परऊ॥ जनु निहार महे दिन क  
 रदुरेऊ॥ हाहाकार सरन्ह जव कीन्हा॥ तव प्रभु को पिथनुष  
 करलीन्हा॥ शरनिवारि रिपु के सिरकाटे॥ तेदिशि विदिशि  
 गगन महि पाटे॥ काटे सिर नभ मार गथा वहिं॥ जय जय ध  
 निकरि भयउ पजा वहिं॥ कहै लक्ष्मण सग्रीव कपीश॥ क  
 हरचु वीर को शलाधीश॥ **कुन्द**॥ कह राम कहि सिरनिका  
 रथा वहिं देवि मर्कट भजि चले॥ सन्यानि शरचुवंश म  
 णितव शरनि सिरवेये भले॥ **४॥** सिरमालिका गहिका लि  
 का जनु चन्द चन्द निवड मिली॥ करि रुथि रसरिम जन मन  
 डे सें ग्राम बट सजन चली॥ **४२॥ दोहा॥** पुनिरावण अतिको  
 प करि कुंडी शक्ति प्रचण्ड॥ सनमुख चली विभीषणाहिं  
 मन डे काल को दाण्ड॥ **४३॥ चौपाई॥** आवत देवि शक्ति खर  
 धारा॥ प्रणतारति हर विरुद समभारा॥ तरत विभीषणा  
 के मेला॥ सनमुख राम सहेउ सोशेला॥ लगी शक्ति मूर्छी  
 ककुभई॥ प्रभु कृत खेल सरन्ह विकलई॥ देखि विभीषणा  
 प्रभु प्रमपाएउ॥ गहिकर गदा क्रोध करि धाएउ॥ रेऊ भा  
 ग्य पाद मन्द कुबुद्धे॥ तै सरनर मुनि नाग विरुद्धे॥ सादर शि  
 व कहें शीस चढाए॥ एक एक के कोटिन पाए॥ तेहिं कार  
 णा खल अवल लितोंचा॥ अबतव काल शीस परनोंचा॥ रा  
 म विमुख पाद चह सिंघदा॥ प्रसकहि रहते सिंघां ऊरगादा



रामा.  
ले.  
५२

कुन्द॥ उरमांऊगदाप्रहारघोरकटोरलागतमहिषरा॥ द  
शवदनशोणितस्रवतपुनिसम्भारिषायोरिसभरा॥ ५३॥  
दौभिरेप्रतिबलमलयुद्धविलोकिएकहिंरुकरनै॥ रघुवी  
रबलगर्वितविभीषणाचालिनहिताकहंगनै॥ ५४॥ दोहा॥  
उमाविभीषणरावणहिंसनमुखचितवकिकाउ॥ सोअव  
भिरतकालसमग्रीरघुवीरप्रभाउ॥ ५५॥ चौपाई॥ देखाप्र  
मितविभीषणभारी॥ यावाहनुमानगिरिधारी॥ रथतर  
ङ्गसारणीनिपाता॥ हृदयमांऊमारेउतेहिंलाता॥ दाढर  
हाअतिकंपितगाता॥ गयेउविभीषणजहंजनजाता॥ पु  
निरावणकपिहतेउप्रचारी॥ चलागगनकपिपुच्छप्रसा  
री॥ गहेसिपूंककपिसहितउजाना॥ पुनिनभभिरेउप्रबल  
हनुमाना॥ लरतप्रकाशपुगलसमयोधा॥ हनतएकएक  
हिंकरिक्रोधा॥ शोभितनभकुलवलवडकरंदी॥ कजल  
गिरिसमेरुजनुलरंदी॥ बुधिवलनिशिचरपरैनपारा॥  
तवमारुतस्रतप्रभुहिंसंभारा॥ कुन्द॥ संभारिषीरघुवीर  
धीरप्रचारीकपिरावणहन्यो॥ महिपरतपुनिउदिलरत  
देवपुगलकहंजयजयभन्यो॥ ५५॥ हनुमन्तसंकटदेवि  
संकटभालक्रीडातरचले॥ रामततरावणसकलसुभ  
टप्रचाउभुजबलदलमले॥ ५६॥ दोहा॥ तवरघुवीरप्रचा  
रउपायेकीशप्रचाउ॥ कपिरलप्रबलविलाकितैरकीन्द



प्रगटपाषाण॥१८३॥चौपाई॥अन्तर्धानभयोत्तणपका॥प्र  
 निप्रगटेसिखलरूपअनेका॥रघुवरकटकभालुकपिजेते  
 जहेतहेप्रगटदशाननतेते॥देखाकपिन्हप्रगटदशशीशा  
 जहेतहेभजेभालुअरुकीशा॥चलेवलीमुखपरहिंनधीरा  
 शहिआदिलत्माणरघुवीरा॥दशदिशिकोटिनथावहिंराव।  
 शा॥गर्जहिबोरकठोरभयावन॥उरेसकलसरचलेपरई  
 जयकीआशातजइअवभार॥सबसरजीनेउएकदशकंध  
 र॥अववइभयेतकइगिरिकदंर॥रहेविरंचिशम्भुमुनि  
 ज्ञानी॥जिनजिनप्रभुकीमहिमाजानी॥छन्द॥जानहिंप्र  
 तापतेरहेनिर्भयकपिन्हरिपुमानेफुरे॥चलेविचलिमर्क  
 टभालुसकलकृपालुपाहिभयआतरे॥४॥हनुमन्तअरु-  
 दनीलनलबलबलअतिरणावांऊरे॥मर्दहिदशाननको  
 टिकोटिन्हकपटभटकेअंऊरे॥४॥दोहा॥सरवानरदेखे  
 विकलहंसेकोशलाधीश॥साजिशाअरुएकशरहतेस  
 कलदशशीशा॥१८४॥चौपाई॥प्रभुदाणमहेमायासबका  
 ही॥जिमिरविउदयजाहिंतमफाटी॥रावाणएकटेखिसर  
 हर्षे॥विपुलसमनपुनिप्रभुपरवर्षे॥भुजउठाअरघुपतिक  
 पिफेरे॥फिरेएकएकन्हिकेटेरे॥प्रभुवलपाशभालुकपिथा  
 ये॥तरलतमनिसंप्रगमहेआये॥अस्तितकरतदेवतेहिं  
 देखे॥भपउपकमैरनकेलेखे॥शब्दसदासमरणमनाये॥



रामा.  
ले.  
५०

कल्याण

असकहि गगन पंथ कहं पाये ॥ हाहाकार करत सुरभागे ॥  
खलइ जाइ कहं मोरे आगे ॥ देखि विकल सुर अरु दयावा  
कूटि चरण गहि भूमि गिरावा ॥ छन्द ॥ गहि भूमि पास्यो ला  
त मास्यो बालि सुत प्रभु पहिं गयो ॥ संभारि उटि दशकंद चो  
र कठोर रव गर्जत भयो ॥ ५९ ॥ करि दाय पथ पुष च छाउ दशम  
न्यानि शरव इव वर्षई ॥ किय सकल भटवाय लभया ऊल  
देखि निज बल हर्षई ॥ ५० ॥ दोहा ॥ तब रघु पतिलं केश के  
बीस भुजा दशचाप ॥ काटे भये बहोरि बइजि मितो रथ के  
पाप ॥ ६५ ॥ चौपाई ॥ शिर भूज बाछि देखि रिपु केरी ॥ भाल  
कपिन्ह रि सभई चनेरी ॥ मरत न मूढ कटेइ भुज सीशा ॥ या  
ये कोपि भाल भटकी शा ॥ बालित नय माहुत न लनी ला  
द्विविद मयन्द महा बल शीला ॥ विटप मही पर करहिं प्र  
हारा ॥ सोरगिरित रुगहि कपिन्ह सो मारा ॥ एक नखिन्हि  
रिपु वपुष विदारी ॥ भागि चलहिं एक लातहि मारी ॥ तब  
नलनील शिर निच छिगयेऊ ॥ नख निल लाट विदारत भ  
येऊ ॥ रुथिर विलोकिस कोप सगरी ॥ तिनहिं थरन कहं भु  
जा प्रसारी ॥ गयेन जाहि शिर निपर फिरि ही ॥ जनय गम पु  
पक मलवन चरि ही ॥ कोपि कूटि द्यौ थरे सिव होरी ॥ महि प  
टक भजे भुजा मगरी ॥ पुनि सकोपि दशयु करली न्हा  
शर निमारि वायल कपि कीन्हा ॥ हनुमदादि मूर्छित क



रिबन्दर॥ पा३ प्रदोषहर्षदशकन्य॥ मूर्च्छितदेखिस  
 कलकपिवीरा॥ जाम्बवन्तथावारणधीरा॥ सङ्गभालु  
 भूथरतरुधारी॥ मारणालगेप्रचारिप्रचारि॥ भयोक्रोध  
 रावणबलवाना॥ गहिपदमहिपटकेभटनाना॥ देखि  
 भालुपतिनिजदलघाता॥ कोपिमोजउरमारउलाना॥  
 छन्द॥ उरलातघातप्रचण्डलागतविकलरथतेमहिपा  
 रा॥ गहिभालुवीशझकरनिमानझकमलनिशिवसि  
 मधुकरा॥ ५॥ मूर्च्छितबहोरिविलोकिपदहतिभालु  
 पतिप्रभुपहिंगयो॥ निशिजानिस्यन्दनजालितेहित  
 वसुतयतनकरतभयो॥ ५२॥ दोहा॥ मूर्च्छाविगतभा  
 लुकपिसवग्रायेप्रभुपास॥ सकलनिशाचररावणहिं  
 वेरिरहेअतित्रास॥ १८८॥ चौपाई॥ तेदिनिशिमहंसीता  
 पहिंजाई॥ विजटाकहिसबकथाबुजाई॥ सिरभुजवा  
 णिसुनतरिपुकेरी॥ सीताउरभरत्रासवनेरी॥ मुखम  
 लीनउपजीमनचिंता॥ विजटामनबोलीतवसीता॥ हो  
 रहिकहाकहसिकिनमाता॥ केदिविधमरिदिविश्व  
 दासदाता॥ रघुपतिशरशिरकटेझनमरई॥ विधिविप  
 सेनचरितसबकरई॥ मोरअभाग्यजियावतगोही॥ जे  
 दिहोंहरिपदकमलविकोही॥ जेउरुतकनककपटा  
 मगजुंटा॥ अजहंसोदेवमोहिरुपररुहा॥ जेदिविधि॥



मोहिदुखदुसहसहाय॥ ललामा कहें कदुवचन कहा  
 प॥ रघुपति विरह सविष शर भारी॥ त कित कि वार वार  
 मोहि मारी॥ ऐसे दुख जो राखहिं प्राणा॥ सो रवि धिता  
 हि जि आवन आना॥ बड़ विथ करति विलाप जान की॥  
 करि करि सरति कृपा धान की॥ कहि विजय सुन राज  
 कुमारी॥ उर शर लागत मरहिं सरारी॥ तातें प्रभु उरहत  
 हिन तेही॥ एहि के हृदय वसति वै देही॥ **कृन्**॥ इहि के हृ  
 दय वस जान की मम जान की उर वास है॥ मम उदर भुव  
 न अने कलागत वाण सब को वास है॥ **५३**॥ यम सुनत  
 हर्ष विषाद उर अति देखि पुनि विजय कहा॥ अब मरहिं  
 रिपु सुन्दरि सुन हयहत जइत मम सें शय महा॥ **५४**॥ दो  
**हा**॥ काटत शिर होइ हिं विकल कूटि जाइत बथान॥ त  
 बरावण हिं हृदय मइं मारहिं राम सुजान॥ **५५**॥ चौपा.  
 यम कहि बड़ प्रकार ममु जाई॥ पुनि विजय निज भव  
 न सिधार्थ॥ राम स्वभाव सुमिरि वै देही॥ उपजी विरह  
 व्याप्य अति तेही॥ निशि हिं शशि हि निन्दति बड़ भांती  
 युग मम भई मिराति न राती॥ करति विलाप मन हिं मन  
 भारी॥ राम विरह जान की दुखारी॥ जब अति भये उ विर  
 हार दाइ॥ फरके उवा मन यन अरु वाइ॥ सुगुण वि  
 नारिय गमन थीरा॥ अब मिरि हिं कृपालु रघुवीरा



३३० अर्द्धनिशिरावणजागा ॥ निजसारथिसनखीऊ  
 नलागा ॥ शटराणभूमिकुशयेइमोही ॥ थिकथिकअ  
 थममन्दमतितोही ॥ तेंउपदगदिवइविथसमुजावा ॥  
 भोरभयेंरथचढिपुनिआवा ॥ सुनिआगमनदशाननके  
 रा ॥ कपिदलखरभरभउचनेरा ॥ जहंतहंभूथरविटप  
 उपासी ॥ थायेकटकटाभटभारी ॥ कुन्द ॥ थायेजोमर्कट  
 विकटभालुकालकरभूथरथरा ॥ अतिकोपिकरहिंशा  
 हारमारतभजिचलेरजनीचरा ॥ ५५ ॥ विचलाइदलवल  
 वनकीशान्दिवेरिपुनिरावणालियो ॥ दशदिशिचहेट  
 न्मारिनखनिविदारितेदिवाऊलकियो ॥ ५६ ॥ दोहा ॥  
 देखिमहामर्कटप्रवलरावणकीन्हविचार ॥ अन्तरदि  
 तभानिमिषमहंकृतमायाविस्तार ॥ ५७ ॥ तोमरकुन्द  
 जबकीन्हतेंउपाषंउ ॥ भयेप्रगटजन्तप्रचंड ॥ बैतालभूत  
 पिशाच ॥ करथरेथनुनाराच ॥ ५८ ॥ योगिनिगहेकरवा  
 ल ॥ एकहाथमनुजकपाल ॥ करिसयशोणितपान ॥  
 नाचहिंकरहिंवइगान ॥ ५९ ॥ धरुमारुबोलहिंघोर ॥ र  
 दिपूरिधनिचइंघोर ॥ मुखवायधावहिंखान ॥ तवल  
 लेकीणपगान ॥ ६० ॥ जहंजादिमर्कटभागि ॥ तहंवरत  
 देखहिंआगि ॥ अथविकलवानभाल ॥ पुनिलागवर्ष  
 गाबाल ॥ ६१ ॥ जहंतहंयकितकरिकीश ॥ गर्जउबइरि



दशशीश॥ लक्ष्मणकपीशसमेत॥ भयेसकलवीर्य  
चेत॥ ६१॥ हारामहारचुनाय॥ कहिसुभटमीजुहिहाय  
यहिविधसकलबलतोरि॥ तेहि कीन्हकाटबहोरि॥ ६२  
प्रगटेसिविपुलहनुमान॥ पायेगहेंपाषाण॥ तिनिचेरि  
रामहिंजा३॥ चडेंदिशिवरूपबना३॥ ६३॥ मारझपरझ।  
जनिजा३॥ कटकटहिंपूंकुडा३॥ दशदिशिलंगूरवि  
राज॥ तेहिमध्यकोशलराज॥ ६४॥ **कुन्द॥** तेहिमध्यको  
शलराजसुन्दरश्यामतनुशोभालही॥ जनुइन्द्रधनुष  
अनेककीवरवारितरुतमालही॥ ६५॥ प्रभुदेखिहर्ष  
विषादसुखउरवेंदिजयजयजयकरी॥ रघुवीरएकहिती  
रकोपिसोनिमिषमहंमायाहरी॥ ६६॥ मायाविगतका  
पिभालुहर्षविटपगिरिगहिमवफिरे॥ शरनिकरका  
उरामरावणबाझशिरमहिमहंगिरे॥ ६७॥ श्रीरामराव  
णसमरचरितअनेककल्पजेगावही॥ शतशेषशार  
रनिगमआगमतदपिपारनपावही॥ ६८॥ **दोहा॥** कहे  
तासुगुणगणककुंकजउमतितलसीदाम॥ जिमि  
निजबलअनुरूपतैमशकउउहिंआकाश॥ ६९॥ प्रभु  
चितयेसरसिद्धमुनिव्याकुलदेखिकलेश॥ काटेशर  
भुजवारवडमरैनभटलंकेश॥ ७०॥ **चौपाई॥** काटेसि  
रघुनिहोहिंअणग॥ भोगकरतजिमिवाटैमारा॥ मरै



नरिपुत्रमभयउविशेषा॥ रामविभीषणातनतवदेषा॥ ३  
माकालमरुजाकीरुक्का॥ सोप्रभुकरजनप्रीतिपरीला॥  
सुनुसर्वज्ञचराचरनायक॥ प्रणतपालसुरमुनिसुखदा  
यक॥ नाभीऊपिपुष्पवसयाके॥ नाथजिअतगवणाव  
लताके॥ सुनुतविभीषणावचनकृपाला॥ हर्षिगहेकरवा  
णाकराला॥ अशुभहोनलगोविधनाना॥ रोवहिंबद्रष्टृगा  
लखरस्याना॥ बोलहिंखगजगआरतहेत॥ प्रगटभयेज  
हेतहेनभकेत॥ दशदिशिदाहहोनतबलागा॥ भयेउपर्व  
विनुरविउपरागा॥ मन्दोदरिउरकांपतभारी॥ प्रतिमासव  
हिनयनमगवारी॥ **कुन्द॥** प्रतिमारुदहिंपविपातनभअति  
वातवहडोलतिमही॥ वर्षहिंबलाहकरुथिरकचरजअ  
शुभअतिशककोकही॥ **६५॥** उतपातअमितविलोकिसुर  
नभविकलबोलहिंजयजये॥ सुरसभयजानिकृपालरचु  
पतिचापशरजोरतभये॥ **१०॥ दोहा॥** आकर्षेउपनुअवणा  
लगिकुडेशरएकतीश॥ रचुनायकशायकचलेमानडे  
कालफणीश॥ **११॥ चौपाई॥** शायकएकनाभशिरशोषा  
अपरलगेशरभुजकरिरोषा॥ लैसिरबाइचलेनाराचा॥ सि  
रभुजहीनरुगाउमहिनाचा॥ थरगियसैथरथावप्रचंडा॥  
तबशरदतिप्रभुकुतप्रगाखंडा॥ गजउमरतछोररवभारी  
कहोशमराणहतौप्रचारी॥ डोलीभूमिगिरतदशकंधार॥



त्वभितसिंपुसरिदिगगजभूधर॥ परेउभूमिपुगाखेउबडा  
 ई॥ चापिभालुमकंटसमुदाई॥ मन्दोदरिआगेभुजशीशा॥  
 धरिषारचलेजहांजगदीशा॥ प्रविशेसबनिषेगमहेजाई  
 देखिसुरन्दुन्दभीवजाई॥ तासुतेजप्रविशेउप्रभुआनन  
 हर्षेदेखिशंभुचतुरानन॥ जयध्वनिप्ररिहीब्रह्माखंडा॥  
 जयरघुवीरप्रबलभुजदेडा॥ वर्षहिंसमनदेवमुनिवृन्दा  
 जयकृपालजयजयतिमुकुन्दा॥ **कुन्द॥** जयकृपाकंदमु  
 कुन्दरिमर्दननिशाचरमदप्रभो॥ खलदलविदारणा  
 परमकारणकारुणीकसदाविभो॥ १॥ सुरसिद्धमुनिगं  
 धर्वहर्षेवाजदुन्दुभिगहगदी॥ संगमसंगनरामग्रन्थन  
 रूबद्रशोभालही॥ २॥ शिरजदामुकटप्रसूनविचिवि  
 चिअतिमनोहरराजही॥ जनुनीलगिरिपरतडितपटल  
 समेतउडुगाभाजही॥ ३॥ भुजदेउषारकोदेउफेरतरुधि  
 रकातनअतिवने॥ जिमिराजमुनिअतमालऊपरबैठि  
 विपुलसुखआपने॥ ४॥ **दोहा॥** कृपाट्टिकरिवृष्टिप्रभु  
 अभयकियेसुरवृन्द॥ हर्षेवानरभालकपिजयसुखधाम  
 मुकुन्द॥ ५॥ **चौपाई॥** पतिसिरदीखजबहिंसन्दोदरि॥  
 मुर्च्छितविकलधरणाखसिपरि॥ युवतिवृन्दरोवतिउठि  
 पाई॥ तेहिउदारगवणपहिल्यारै॥ पतिगतिदेखतिकर  
 प्रकार॥ कुटेकेशनदेहसंभारा॥ उरताउनाकरहिंविधना



ना॥ रोदन करि हिं प्रताप वाणा॥ तब बल नाथ जो लनि  
 तथ रणी॥ तेज हीन पावक शशित रणी॥ शेष कमट सहि  
 शक हिं न भारा॥ सोतनु आनु पराजरि कारा॥ वरुण ऊवेर  
 सुरेश समीरा॥ राणा सन्मुख परकाइन पीरा॥ भुज बल जी  
 तेइ काल यम सोई॥ आज सोपेऊ अनाथ की नाई॥ जगत  
 विदित तमहार प्रभु नाई॥ सुत परिजन बल वरणि न जाई॥  
 राम विमुख अस हाल तमहारा॥ रहान ऊल कोउ रोवन हा  
 रा॥ तब वश विधि प्रपंच सब नाथा॥ सब दिग पति तोहि  
 नावहि माथा॥ अब तब सिर भुज जंबुक खाही॥ राम विमु  
 यद अनुचित नाही॥ काल विवश पतिक दान माना॥ अ  
 ग जग नाथ मनुज करि जाना॥ दोहा॥ अहह नाथ रघुनाथ  
 सम कृपा सिंधु को आन॥ मुनि दुर्लभ जो परगति तमहिं  
 दीन भगवान॥ १५३॥ चौपाई॥ मन्दोदरी वचन सुनिकाना  
 सर मुनि सिद्ध सब हिंसखि माना॥ अज महेश नारद सन  
 कादी॥ जे मुनि वर परमार थवादी॥ भरिलोचन रघुपति  
 हिं निहारी॥ प्रेम मगन सब भयेउ सखारी॥ रोदन करत  
 किलोकेउ नारी॥ भयेउ विभीषण मन दुख भारी॥ बन्धु दा  
 शा देखत दुख भयेऊ॥ तब प्रभु अनुज हि आय सुदयेऊ॥ ल  
 क्ष्मण तेहि बह्विध समुजाये॥ सहित विभीषण प्रभु परि  
 आये॥ कृपा देखि भुनाहि विलोका॥ करइ क्रिया परिहरि।



रामा.  
ले.  
५४

54

सबशोका॥ कीन्हक्रियाप्रभुआयसुमानी॥ विधिवतदे  
शकालजियआनी॥ दोहा॥ मयतनयादिनारिनदेइति  
लाजुलितहि॥ भवनगईरचुवीरगणगणवरणातिमन  
माहि॥ १५४॥ चौपाई॥ आश्विभीषणपुनिसिरनावा॥ कृ  
पासिंभुतवअनुजबुलावा॥ तमकपीशअरुदनलनीला  
जाम्बवतमारुतिगयशीला॥ सममिलिजाइविभीषण  
साथा॥ सारेइतिलककहेउरचुनाथा॥ पितावचनमेन  
गारनआऊं॥ आपुसरिसकपिअनुजपढाऊं॥ तरतचले  
कपिसुनिप्रभुवचना॥ कीन्हीजाइतिलककीरचना॥ सा  
दरसिंहासनवैठारी॥ तिलकमारिअस्तुतिअनुसारी॥ जो  
रिपाणिसबहीसिरनाये॥ सहितविभीषणप्रभुपहिंआ  
ये॥ तवरचुवीरबोलिकपिलीन्हे॥ कहिप्रियवचनसु  
खीसबकीन्हे॥ छन्द॥ कहेउसुखीसबकहिसुबाणीव  
लतम्हारेरिपुहयो॥ पायोविभीषणराजतिइंपुरयशत  
म्हारेनितनयो॥ १५५॥ मोहिसहितशुभकीरतितम्हारी  
परमप्रीतिजेगाइहै॥ संसारसिन्धुअपारपारप्रयासवि  
नुनरपाइहै॥ १५६॥ दोहा॥ प्रभुकेवचनअवणसुनिनहि  
आबतकपिप्रज्ज॥ वारहिंवारसिरनावहिंगहेरामपदक  
ज्ज॥ १५७॥ चौपाई॥ पुनिप्रभुबोलिलियेदनुमाना॥ लंका  
जाइकहेउभगवाना॥ समाचारजानकिहिसुनावइ॥



तासुऊशललैतमचलिआबद्ध॥ तबहुनुमन्ननगरमहे  
 आये॥ सुनिनिशिचरीनिशाचरथाये॥ पूजाबद्धप्रकार  
 तिन्हकीन्हा॥ जनकसुतादिखाईसबदीन्हा॥ हरहितैप्र  
 णामकपिकीन्हा॥ रघुपतिदूतजानकीचीन्हा॥ कहइ  
 तातप्रभुकृपानिकेता॥ ऊशलअनुजकपिसेनसमेता  
 सबविधऊशलकोशलाधीशा॥ सातसमरजीतेउदशा  
 शीशा॥ अविचलराजविभीषणपावा॥ सुनिकपिवच  
 नहरषउरकावा॥ छन्द॥ अतिहरषमनतनुपुलकलोचन  
 सजलपुनिपुनिकहरमा॥ काटेउंतोदितैलोक्यमहे  
 कपिकिमपिनहिवाणीसमा॥ १०॥ सुनुमातमैपापउं  
 अखिलजगराजआजनसंशयें॥ राजीतिरिपुदलवं  
 भुपुतपण्यामिराममनामयें॥ ११॥ दोहा॥ सुनुसुतसद  
 गुणसकलतबहुदयवसोहनुमन्त॥ सावकूलरघुवंश  
 मणिरहरिसमेतअनन्त॥ १२॥ चौपाई॥ अबसोइयतन  
 करइतमताता॥ देखौनयनण्याममृदुलगाता॥ तबह  
 नुमन्नरामपहिंआपउ॥ जनकसुताकरऊशलसुना  
 पउ॥ सुनिसन्देशपतऊकुलभूषण॥ बोलिलियेकपिरा  
 जविभीषण॥ मारुतसुतकेसऊसिधाबद्ध॥ सादरजन  
 कसुतालैआबद्ध॥ तरतहिंसकलगयेजहैसीता॥ सेवहिं  
 सवनिशिचरीविनीता॥ वेगिविभीषणतिन्हदिंसिलावा



तिन्हवइविधमजनकरवावा॥वइप्रकारभूषणपहि  
रा॥शिविकारुचिरसाजिपुनिल्या॥तेहिपरहर्षिच  
जीवैदेही॥समिरिरामसखधामसनेही॥देखनभाल  
कीशबइथा॥रत्नकोपिनिवारणआ॥वेतपाणि  
रत्नकचइंणसा॥चलेसकलमनपरमइलासा॥कहर  
चुवीरकहासममानइ॥सीतहिंसखापयादेहिंआन  
इ॥देखहिंकपिजननीकीनाई॥विहंसिकहारचुवीर  
गोसाई॥सनिप्रभुवचनभालकपिहर्षे॥नभतेसरन्ह  
समनवइवर्षे॥सीताप्रथमअग्रिमहंराखी॥प्रगटकी  
न्हचहंअन्तरसाती॥दोहा॥तेहिंकारणकरुणायतन  
कहेककुकडुवांद॥सनतजातुथानीसकललागीक  
रणविषाद॥५०॥चौपाई॥प्रभुकेवचनशीर्षधरिसीता  
बोलीमनक्रमवचनपुनीता॥लक्ष्मणहोइधर्मकेनेगी  
पावकप्रगटकरइतमवेगी॥सुनिलक्ष्मणसीताकीबा  
णी॥विरहविवेकधर्मनयसानी॥लोचनसजलजोरि  
करदोऊ॥प्रभुसनककुकहिशकतनओऊ॥देखिराम  
रुखलक्ष्मणथा॥प्रगटइतासदारुवइला॥प्रबल  
अनलविलोकिवैदेही॥हृदयहर्षककुभयनहितेही॥  
जोमनकर्मवचनममउरमांदी॥तजिरचुवीरआनगति  
नाहं॥तौकृष्णसबकीगतिजाना॥मोकहंहोइश्रीर



एउसमाना ॥ **कुन्दा** ॥ श्रीखण्डसमपावकप्रवेशकियसु  
 मिरिप्रभुपदमैथिली ॥ जयकोशलेशमहेशवन्दितचर  
 णरजप्रतिनिर्मली ॥ **२१** ॥ प्रतिविम्बग्ररुलौकिककलङ्क  
 प्रचण्डपावकमहंजरे ॥ प्रभुचरितकाङ्कनलखेउसरसु  
 निसिद्धसबदेखहिंखरे ॥ **२२** ॥ तवग्रनलभूसुररूपकर  
 गहिसत्यश्रीश्रुतिविदितसो ॥ जिमितीरसागरइन्दिरा  
 समहिंसमपीआनिसो ॥ **२३** ॥ सोउरामवामविभागराज  
 तिरुचिरअतिशोभामली ॥ नवनीलनीरजनिकटमाम  
 डंकनकपङ्कजकीकली ॥ **२४** ॥ **दोहा** ॥ हर्षिसमनवर्षहिं  
 विबुधबाजहिंगगननिशान ॥ गावहिंकिन्नरअपसरा  
 नाचहिंचढीविमान ॥ **२५** ॥ **चौपाई** ॥ तवरचुपतिअनुशा  
 सनपाई ॥ मातलिचलेउचरणसिरनाई ॥ आपदेवसदासा  
 रणी ॥ वचनकहहिंजनुपरमारणी ॥ दीनबंधुदयालरचु  
 राया ॥ देवकीन्हदेवनपरदाया ॥ विष्णुद्रोहरतखलअति  
 कामी ॥ निजअवगणउऊमारगगामी ॥ तमसर्वज्ञब्रह्म  
 अविनाशी ॥ सदापकरसमहजउदासी ॥ अकलअगुण  
 अजअनघअनामय ॥ अजितअमोघशक्तिकरुणामय  
 मीनकमठशुकरनरहरि ॥ वामनपरशुरामवपुपरि ॥ ज  
 नुजबनाथसरन्हडुखपावा ॥ नानातनुधरितमहिंनशा  
 ना ॥ उदाखलमलिनसदासरद्रोही ॥ कामलोभमदरतअ



तिकोही॥ अथमशिरोमणितवपदपावा॥ यहहमरेमा  
नअचरजआवा॥ हमदेवतापरमअधिकारी॥ स्वारथरा  
तप्रभोभक्तिविसारी॥ भवसागरसन्ततहमपरे॥ अबप्रभु  
पादिशरणअनुसरे॥ दोहा॥ करिविनतीसुरसिद्धसब  
रहेविरञ्चिकरजोरि॥ अतिसप्रेमतनुउलकितअस्तति  
करतवहोरि॥ १५५॥ छन्द॥ जयरामसदासखधामहरे  
रघुनायकसायकचापधरे॥ भववारणदारणसिंहप्रभो  
गुणसागरनागरनाथविभो॥ १५६॥ तनुकामअनेकअनू  
पकृवी॥ गुणगावतसिद्धमुनीन्द्रकवी॥ जशयावनराव  
णनागमहा॥ खगनाथयथाकरिकोपगहा॥ १५७॥ जनर  
जूनभजूनशोकभयं॥ गतक्रोधसदाप्रभुबोधमये॥ अ  
वतारउदारअपारगुणं॥ महिभारविभजूनज्ञानघने॥ १५८॥  
अजव्यापकएकअनादिसदा॥ करुणाकररामनमामि  
मुदा॥ रघुवंशविभूषणदूषणहा॥ कृतभूषविभीषणदी  
नरहा॥ १५९॥ गुणज्ञाननिधानआमानमजे॥ नितिरामन  
मामिविभूविरजे॥ भुजदाउप्रचाउप्रतापवलं॥ खिलवृ  
न्दनिकन्दमहाकुशलं॥ १६०॥ विनुकारणादीनदयालुहि  
ते॥ कृविधामनमामिरमासहितं॥ भवतारणकारणका  
र्यपरं॥ मनसम्भवदारुणदोषहरं॥ १६१॥ शरचापमनोह  
रतणितरं॥ जलजारुणलोचनभूषवरं॥ सखमन्दिरस



नदर श्रीरमणो॥ मदमारमहाममताशमने॥ ८५॥ अन  
 वयश्रवाउनगोचरगो॥ सबरूपसदासबहोयनसो॥  
 इतिवेदवदन्तिनदन्तिकथा॥ रविश्रातपभिन्नमभिन्न  
 यथा॥ ८६॥ कृतकृत्यविभोसबवानरप॥ निरखन्तितवा  
 नरसादरप॥ थिकजीवनदेवशरीरहरे॥ यवभक्तिविना  
 भवभुलिपरे॥ ८७॥ अवदीनदयालुदयाकरिप॥ मतिमो  
 रिविभेदकरीहरिप॥ जेहितेंविपरीतकृपाकरिप॥ दुख  
 सोसखमानिसखावीचरिप॥ ८८॥ खलखराउनमणउनर  
 म्यत्तमा॥ पदपङ्कजसेवितशंभुउमा॥ नृपनायकदेवर  
 दानमिदं॥ चरणाम्बुजप्रेमसदाशुभदं॥ ८९॥ दोहा॥ वि  
 नयकीन्दचतराननप्रेमपुलकअतिगात॥ शोभासिंधु  
 विलोकतलोचननहींअवात॥ ९०॥ चौपाई॥ तेहिअव  
 सरदशरणतहंआप॥ तनयविलोकिननयजलकाप  
 अनुजसहितप्रभुवन्दनकीन्हा॥ आशिर्वादपितातबदी  
 न्हा॥ तातसकलतवप्रणप्रभाऊ॥ जीत्योअजयनिशा  
 चराऊ॥ सुनिसुतवचनप्रीतिअतिबाढी॥ नयनसलि  
 लरोमावलिढाढी॥ रघुपतिप्रथमप्रेमअनुमाना॥ चित  
 पितहिंदीन्देउटछजाना॥ तातेंउमामोदनहिपावो॥ द  
 शरणभेदभक्तिमनलावो॥ सगुणोपासकमोदनलेही  
 तिन्दकहरामभक्तिविजदेही॥ बारबारकरिप्रभुहिंप्रण



रामा.  
ले.  
५०

अंगणाः

५७

मा॥ दशरथहरविगणसुरथामा॥ दोहा॥ अनुजजान  
कीसहितप्रभुजशालकोशलापीश॥ शोभादेखिहर  
षमनअस्तुतिकरसुरेश॥ २०१॥ लघुकुन्द॥ जयराम  
शोभाथाम॥ दायकप्रणतविश्राम॥ भूततूणिवरशर  
चाप॥ भुजदाउप्रबलप्रताप॥ २०२॥ जयदूषणारिख  
रारि॥ मर्दननिशाचरथारि॥ इहदुष्टमारेइनाथ॥ भय  
देवसकलसनाथ॥ २०३॥ जयहरणथरणीभार॥ महि  
माउदारअपार॥ जयरावणारिखरारि॥ मर्दननिशाच  
रथारि॥ २०४॥ जयरावणारिकुपाल॥ कियेजातथानवि  
हाल॥ लंकेशअतिबलगर्व॥ कियेवश्यसुरगन्धर्व॥ २०५॥  
मुनिसिद्धनखगनाग॥ हरियेंयसबकेलाग॥ परद्रो  
हरतअतिदुष्ट॥ पायोसोफलपापिष्ट॥ २०६॥ अवसनइ  
दीनदयाल॥ राजीवनयनविशाल॥ मोहिरहाअति।  
अभिमान॥ नहिकोउमोहिसमान॥ २०७॥ अवदेखिप्रभु  
पदकज्जु॥ गतमानप्रददुखपुञ्ज॥ कोउब्रह्मनिर्गुण।  
प्याव॥ अव्यक्तजेहिप्रतिगाव॥ २०८॥ मोहिभावको  
पालभूष॥ श्रीरामसगुणस्वरूप॥ वैदेहिअनुजस  
मेत॥ ममहृदयकरइनिकेत॥ २०९॥ मोहिजानियेनि  
जदास॥ दैभकिरमानिवास॥ कुन्द॥ दैभकिरमानिवा  
सजसहरणशरणसखदायक॥ सखथामरामन।



नामिका मयनेक छ विरचु नायकं ॥ १०१ ॥ सरवृन्द रेज  
नदं दभञ्जनमवजतवुअतलितबले ॥ ब्रह्मादिशोक  
रसेव्यगमनमामिकरुणाकोमले ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ अव  
करिकृपाविलोकिमोहिआयसुदेऊकृपाल ॥ कहाक  
रोंसुनिप्रियवचनबोलेदीनदयाल ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥ शृ  
णसरपतिकपिभालहमारे ॥ परेभूमिनिशिचरन्हजे  
मारे ॥ ममहितलागितजेईन्हप्राणा ॥ सकलजिआउसु  
रेशसजाना ॥ शृणखगेशप्रभुकेइहवाणी ॥ अतिप्रगा  
थजानहिमुनिज्ञानी ॥ प्रभुशकविभुवनमारिजिआई ॥  
केवलशक्रहिदीन्हवआई ॥ सथावरषिकपिभालुजि।  
आए ॥ हरषिउटेसबप्रभुपहंआये ॥ सथावृष्टिभईदुइंद  
लऊपर ॥ जिऐभालकपिनहिरजनीचर ॥ रामाकारभप  
तिन्हकेमन ॥ मुक्तभएकूटेभवबेथन ॥ सरअंसिकसब  
कपिअरुअला ॥ जियेसकलरघुपतिकीईच्छा ॥ राम  
सकोपदीनहितकारी ॥ कीन्हमुक्तनिशाचरजारी ॥ ख  
लमलथामकामरतरावण ॥ गतिपाईजोमुनिवरणावन  
दोहा ॥ सुमनवरषिसबसरचलेचछिचछिरुचिरविमा  
न ॥ देखिसअवसरप्रभुपहिंआएशंभुसजान ॥ १०४ ॥ प  
रमप्रीतिकरजोरिगुगनलिननयनभरिवारि ॥ पुलकि  
ततवुगदगदगिराविनयकरतत्रिप्रारि ॥ १०५ ॥ चौपा०



रामा.  
ले.  
५८

नन्दीचढेउमहागणसंगा॥शोभितमानगौरीअरथंगा  
जलकगंगसिरचन्द्रलिलारा॥नीलकाण्डकविगरलकी  
जारा॥करखपपरगरेनरसिरमाला॥अदिऊलपतिशु  
तिगरेविशाला॥तीननयनपिङ्गलसिरजूटा॥श्वेतविभू  
तिदेहअतिकूटा॥डिमडिमडिमउमरुकरवाजे॥शृंगी  
गरेमृगकालविराजे॥तरुणाश्रुणाश्रुमुजसमचर  
णा॥नयदुतिभक्तहृदयतमहरणा॥मणिविभूतिभूष  
णविप्रहारी॥आननसरदचन्द्रकविहारी॥इदिविधसो  
हकामरिपुकैसे॥धरेशरीरशान्तरसजैसे॥दोहा॥नाशि  
लंकापतिसपनसबवैटेकोशलथीश॥संगचारिगन्ध  
र्वगणगणउतहोगिरीश॥२००॥परमप्रीतिकरजोरिजु  
गकमलनयनभरिवारि॥पुलकगातगदगदगिरावि  
नयकरतप्रहारि॥२०१॥कुन्द॥मामभिरतयस्तुऊल  
नायक॥भूतवरचापरुचिरकरसायक॥मोहमहावन  
पटलप्रभञ्जन॥संशयविपिनअनलसरञ्जन॥२०२॥  
अगुणसगुणगुणमन्दिरसन्दर॥भ्रमतमप्रबलप्रताप  
दिवाकर॥कामक्रोधमदगजपंचानन॥वसइतिरन्तर  
मममनकानन॥२०३॥विषयमनोरथप्रज्ञकज्ञवन॥प्र  
बलतपारउदारपारमन॥भववारिधिमन्दरपरमन्दर॥वा  
रयनारयसंस्तुतिदुस्तर॥२०४॥सामगात्रराजीवविलोच



न॥ दीनबन्धु प्रणतारतमोचन॥ अनुज जानकी सहित।  
 निरन्तर॥ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ सुनिरञ्जनमहि  
 मण्डलमण्डन॥ तलसिदासप्रभु जस विखाडन॥ दोहा॥  
 नाथ जबहि कोशलपुरी होई हितिलकतम्हार॥ कृपासिं  
 धुमै आउव देखन चरितउदार॥ २०५॥ चौपाई॥ करिविनती  
 जबशम्भुसिंहाप॥ तबप्रभु निकटविभीषणआप॥ नाइच  
 राणसिरकहि मृदुबाणी॥ विनय सुनइ प्रभु शररूपानी  
 सकुलसदणप्रभु रावणमारा॥ पावनजशविभुवनविस्म  
 रा॥ दीनमलीन हीनमतिजाती॥ मोपरकृपाकीन्हवइ भो  
 ती॥ अबजनगृहपुनितप्रभुकीजै॥ मजनकरियसमरअ  
 मकीजै॥ देखिकोशमन्दिरसम्पदा॥ देखकृपालकपिन्द  
 कहैमुदा॥ सबविधनाथमोहिअपनाये॥ पुनिमोहिसहि  
 तअबधप्रभुजाये॥ सुनतवचनमृदुदीनदयाला॥ सजल  
 भयेदोउनयनविशाला॥ दोहा॥ तोरकोशगृहमोरसबस  
 तवचनपृणभ्रात॥ भरतदणसुमिरतमोहिनिसिषक  
 ल्यसमजात॥ २१०॥ नाथसवेषगात्रकृशजपतनिरन्तरमो  
 हि॥ देखौंवेगिसोजतनकरुसखानिहोरौं तोहि॥ २११॥ बी  
 तेअवधिजाउंजो जियतनपाओवीर॥ सुमिरतअनुजप्री  
 तिप्रभुपुनिपुनिपुलकशरीर॥ २१२॥ करइकल्पभरिराज  
 तममोहिसुमिरइमनगाहि॥ पुनिममथामपाइइज



होसतसबजाहिं॥२३॥चौपाई॥सुनतविभीषणावचन  
रामके॥हरषिगहेपटकृपाथामके॥वानरभालुसकल  
हरषाने॥गदिप्रभुपदगुणविमलबखाने॥वज्ररिविभी  
षणभवनसिधावा॥मणिगणावसनविमानभरावा॥लैपु  
ष्पकप्रभुआगेरावा॥हेसिकेकृपासिन्धुतबभाषा॥चढि  
विमानशृणुसखाविभीषणा॥गगनजाइवर्षद्वपटभूष  
णा॥नभपरजाइविभीषणातबही॥वर्षिदियेमणिभूषणा  
सबही॥जोजेहिमनभावैसोलई॥मणिमुखमेलिआरिक्  
पिदेई॥हेसतरामसियअनुजसमेता॥परमकौतकीकृ  
पानिकेता॥दोहा॥मुनिजेहिंध्याननपावहिंनेतिनेतिक  
हवेद॥कृपासिन्धुसोइकपिनसोकरतअनेकविनोद॥२४॥  
उमायोगजपदानतपनानाव्रतमखनेम॥रामकृपानहि  
करहितसिजसिनिःकेवलप्रमे॥२५॥चौपाई॥भालुक  
पिनपटभूषणपाये॥परिपदिपरिचुपतिपहिंआये॥  
नानाजिनिसदेखिप्रभुकीशा॥पुनिपुनिहसतकोशला  
पीशा॥चितैसबनिपरकीन्हीदाया॥बोलेमभुरवचनस  
राया॥तम्हरेबलमैरावणमारा॥तिलकविभीषणाक  
हेपुनिसारा॥निजनिजगृहअवतमसबजाहू॥सुमिरेइ  
मोहिउरपडजनिकाहू॥सुनतवचनपरमाऊलवानर  
जोपाणिबोलेसबसादर॥प्रभुजोकरइतमहिंसवशो



हा ॥ हमरे होत वचन सुनि मोहा ॥ दीन जानिक पि किये स  
 नाथा ॥ तम वै लोकाई शरवु नाथा ॥ सुनि प्रभु वचन लाजा ॥  
 हम मरही ॥ मशक कव डंख गपति हित करही ॥ देवि रा  
 म रुषवान रझता ॥ प्रेम मगन नहि गृह की रक्का ॥ दोहा ॥  
 प्रभु पेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि ॥ हर्ष विषाद स  
 मेत सब चले विनय बद्ध भाषि ॥ २६ ॥ कपि पति नील झल  
 पति अरु दन लहनु मान ॥ सहित विभीषण अरु जे शूय  
 कपि बलवान ॥ २७ ॥ कहिन सकदिंक कुप्रे मवश भरि भ  
 रिलोचन वारि ॥ सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निनेष  
 निवारि ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ अति शय प्रीति देवि रचु राई ॥ ली  
 न्हे सकल विमान चलाई ॥ मन महं विप्र चरण सिरनावा  
 उत्तर दिशि दिं विमान चलावा ॥ चलत विमान कोलाहल  
 होई ॥ जय रचु वीर कहै सब कोई ॥ सिंहासन अति उच्च मनो  
 हर ॥ सिय समेत बैठे प्रभुता पर ॥ राजत राम सहित भामिनी  
 मेरु पृष्ठ जु वचन दामिनी ॥ रुचिर विमान चला अति आत  
 र ॥ कीन्ही सुमन वृष्टि हर्षे सर ॥ परम सुख दचलि विविध  
 वयारी ॥ सागर सरि निर्मल भई वारी ॥ शृणु होहि सुन्दर  
 चंद्र पासा ॥ मन प्रसन्न निर्मल आकाश ॥ कहर रचु वीर देख  
 रण सीता ॥ लक्ष्मण हते उर होइ नृजीता ॥ अरु दहनु मान  
 के मारे ॥ राम महं परे निशाचर मारे ॥ ऊम्भकर्ण रावण हो भा

मेच मलाररा



रामा.  
ले.  
६०

३॥ इहो हत ते उं सर मुनि दुख दार ॥ दोहा ॥ इहा सेत बांध्यो  
अरुणा पे उं शिव सख धाम ॥ सीता सहित कृपा यतन समु  
हिं कीन्ह प्रणाम ॥ २१५ ॥ जहं जहं कृपा सिन्धु वन कीन्ह वा  
स विप्राम ॥ सकल देवा ए जान किहिं कहि कहि सब के  
नाम ॥ २२० ॥ चौपाई ॥ सपदि विमान तहां चलि आवा ॥ द  
ण्ड कवन जहं परम सुहावा ॥ कुम्भ जादि मुनि नायक  
नाना ॥ गये राम सब के अस्थाना ॥ सकल ऋषिन्ह सों पा  
र आशीषा ॥ आये चित्रकूट जगदीश ॥ तहं करि ऋषि  
न्ह के रिसे तोषा ॥ चला विमान तहां ते चोषा ॥ बद्ध रि राम  
जान किहि देखाई ॥ यमुना कलि मल हरणि सुहाई ॥ ७  
नि देखि सर सरि पुनीता ॥ राम कहा प्रणाम करु सीता  
तीर पति पुनि दिख प्रयागा ॥ देखत जाहि पाप सब भा  
गा ॥ देखि राम पावन पुनि बेणी ॥ हरण शोक सुर लोक  
निसे नी ॥ देख द्रव्य पुरी अति पावनि ॥ त्रिविध ताप भव  
रोग न शावनि ॥ दोहा ॥ सीता सहित अवध कहं कीन्ह कृ  
पाल प्रणाम ॥ सजल विलोचन पुलकत नु पुनि पुनि ह  
रित राम ॥ २२१ ॥ पुनि प्रभु आरि त्रिवेणि महं हरित मजन  
कीन्ह ॥ कपिन्ह समेत मही सरहि दान विविध विध दी  
न्ह ॥ २२२ ॥ चौपाई ॥ प्रभु हनुमन्त हिं कहा बुजाई ॥ धरि  
वद रूप अवध पर जाई ॥ भरत हिं कुशल दमा र सुनाइ ॥



समाचारलैपुनिचलिआवड ॥ तरतपवनसतगवनत  
भएऊ ॥ तबप्रभुभरदाजपहिगएऊ ॥ नानाविधिपूजासु  
निकीन्ही ॥ अस्तुतिकरिपुनिआशिषदीन्ही ॥ सुनिपद  
बन्दिपुगलकरजोरी ॥ चढिविमानप्रभुचलेवहोरी ॥ इहां  
निषादसुनाप्रभुआए ॥ नावनावकहिलोगबुलाए ॥ सर  
सरिलोविजानचढिआवा ॥ उतरेतहंप्रभुआयसुपावा ॥  
तबसीतापूजीसुरसरी ॥ बहूप्रकारपुनिधरणाहिपरी ॥  
दीन्हअशीषमुदितमनगऊ ॥ सुन्दरितबअहिवातअ  
भऊ ॥ सुनतहिंघुहथावाप्रेमाऊल ॥ आवानिकटपरम  
सुखसंकुल ॥ प्रभुहिंविलोकिसहितबैदेही ॥ परेउअव  
नितनुसुथिनहितेही ॥ परमप्रीतिविलोकिरचुराई ॥ हर्षि  
उठाइलीन्हउरलाई ॥ **कुन्द** ॥ लियहृदयलाइकृपानिधान  
सुजानरामरमापति ॥ वैठारिपरमसमीपपूकीऊशाल  
सोकरिवानति ॥ १०५ ॥ अबऊशालपदपङ्कजविलोकि  
विरञ्चिशङ्करसेव्यजे ॥ सुखथामपूरणकामरामनमा  
मिरामनमामिते ॥ १०६ ॥ सबभोतिअथमनिषादसोहरिभ  
रतज्योउरलाइयो ॥ मतिमन्दतलसीदाससोप्रभुमोदव  
शविसराइयो ॥ १०७ ॥ यहरावणारिचरित्रपावनरामपद  
तिप्रदसदा ॥ कामादिहरविज्ञानकरसुरसिद्धमुनिगाव  
हिंसदा ॥ १०८ ॥ **दोहा** ॥ समरविजयरवुवीरकेजेसनहिंस



रामा.  
ले.  
६१

न सजान ॥ विजयविवेकविभूतिनितनितहिंदेहिभ  
गवान ॥ २२३ ॥ यहकलिकालमलायतनमनकरिदेखु  
विचार ॥ श्रीरघुनायकनामतजिनहि ककुआनग्रथार ॥  
२२४ ॥ इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलूषविध्वं  
सने विमलवैराग्यसंपादिनो नाम षष्ठः सोपानः समाप्तः ॥  
शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ ॥ श्रीरामचन्द्राय नमः ॥ ॥ ॥ ॥



ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ उत्तराकाण्ड लिख्यते॥ श्लोकः॥  
 केकीयीवाभनीलं सरवरविलसद्विप्रपादाञ्जलिं॥  
 शोभाढ्यपीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्॥  
 पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं वंधुना सेव्यमानं॥  
 नौमीर्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारुढरामं॥  
 कौशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलोकमलयोनिमहेश्वरं दि-  
 तौ॥ जानकीकरसजलालितौ चित्तकस्य हृदयालि-  
 सेगिनौ॥ कुन्दुश्चन्दुरगौरसुन्दरमम्बिकापतिमभी-  
 ष्टमन्दिरम्॥ कारुणीककलकञ्जलोचननौमिश-  
 क्कर्मनङ्गमौचनम्॥ दोहा॥ रहा एक दिन अवधिकर  
 अति आरत पुरलोग॥ जहै तहै शोचहिं नारिनरकृश  
 तनु रामवियोग॥ १॥ शगुण होहिं सुन्दर सकल मन  
 प्रसन्न सब केरि॥ प्रभु आगमन जनावजनु नगरस्य  
 चहै फेरि॥ २॥ कोशल्यादिक मातु सब मन आनंद अस  
 होइ॥ आये प्रभु सिय अनुज युत कहन चहत अस कोइ  
 ३॥ भरत नयन भुजदक्षिण फरकहिं वारहिं वार॥ जानि  
 शगुण मन दर्ष अतिलागे करण विचार॥ ४॥ चौपाई॥ र  
 हा एक दिन अवधि अथा॥ समुक्त मन दुख भये अ  
 पारा॥ कारण कवन नाथ नहि आपउ॥ जानि कुटिल प्र  
 भु मोहि विमरापउ॥ अह हय नल लस रावउ भागी॥ राम



पदारविन्दप्रनुगामी॥ कपटीऊटिलमोहिप्रभुचीन्हा॥ ता  
 तेंनाथसङ्गनहिलीन्हा॥ जौकरणीसमुजेंप्रभुमोरी॥ न  
 हिनिसारकल्पशातकोरी॥ जनप्रवगुणप्रभुमाननका  
 ऊ॥ दीनबन्धुप्रतिमृदुलसुभाऊ॥ मोरेजियभरोसदृढसो  
 ३॥ मिलिहहिंरामशगुणप्रभुहोई॥ बीतेंप्रवधिरहेंजोप्रा  
 णा॥ अथमकवनजगमोहिसमाना॥ दोहा॥ रामविरह  
 सागरमहंभरतमगनमनहोत॥ विप्ररूपपरिपवनसु  
 तआरगपउजिमिपोत॥ ५॥ बैढेदेखिऊणामननिजटा  
 मुऊटकृपागात॥ रामरामरघुपतिजपतसुवतनयनज  
 लजात॥ ६॥ चौपाई॥ देखतदनुमानप्रतिदुर्घेउ॥ पुलकि  
 तगातलोचनजलवर्षेउ॥ मनमहंबडतभाँतिसखमानी  
 बोलेउप्रवणसुधाममवाणी॥ जासुविरहशोचइदिनरा  
 ती॥ रटइनिरन्तरगुणगणपांती॥ रघुऊलतिलकसुज  
 नसखदाता॥ आयेऊशलदेवमुनिजाता॥ रिपुराणीती  
 सयशसुरगावत॥ सीताअनुजसहितप्रभुआवत॥ सुण  
 तवचनविमोरेसबदुःखा॥ तृषावन्तजनुपावपियूषा॥  
 कौतुमतातकहाँतेंआप॥ मोहिपरमप्रियवचनसुनाप  
 मारुतसतमैकपिहनुमाना॥ नाममोरशृणुकृपानिधा॥  
 दीनबन्धुरघुपतिकरकिंकर॥ सुनतभरतभेटेउरिसादर  
 मिलतप्रेमनहिरहदयसमाता॥ नयनसुवतजलपुलकित



गाता॥ कपितवदरशसकलदुखवीते॥ मिलेआजमो  
 हिरामपिरीते॥ बारबारपूछाऊशालाता॥ तोकहैकहा  
 देउंशृणुआता॥ यहसंदेशसरिसजगमोही॥ करिविचा  
 रदेखउंककुनाही॥ नादिनउरिनतातमैतोहि॥ अबप्रभु  
 चरितसनावहुमोहि॥ तबहनुमाननाउपदमाया॥ कही  
 सकलरघुपतिगुणगाया॥ कहुकपिकवहुंरूपालगो  
 मोई॥ सुमिरतमोहिदासकीनाई॥ **छन्द॥** निजदासज्यो  
 वुवंशभूषणकबहुंममसमिरणकह्यो॥ सुनिभरतव  
 चनविनीतअतिकपिपुलकितनुचरणान्हियह्यो॥ १॥  
 वुवीरनिजमुखजासुगुणगणकहतअगजगनाथसो  
 काहेनहोहुविनीतपरमपुनीतसदगुणसिंधुसो॥ २॥ **दो-**  
 रामप्राणप्रियनाथतमसत्यवचनममतात॥ पुनिपुनि  
 मिलतभरतसनप्रेमनहृदयसमात॥ ३॥ **सोरठा॥** भरतच  
 रणसिरनाउतरितगणउकपिरामपहै॥ कहीऊशालस  
 वजाउहर्षिचलेप्रभुयानचढि॥ ४॥ **चौपाई॥** हर्षिभरत  
 कोशालपुरआए॥ समाचारसबगुरुहिंसनाए॥ पुनिम  
 न्दिरमहैबातजनार्ण॥ आवतनगरऊशालरघुराई॥ सुण  
 नसकलजननीउठिथाई॥ कहिप्रभुऊशालभरतसमुजा  
 ई॥ समाचारप्रवासिन्दुपाए॥ नरअरुनारिहर्षिउठिथाए  
 दधिहवीरोचनफलफूला॥ नवतलसीदलमरुलमूला



रामा  
३  
२

भरिभरिहेमपारवरभामिनि॥ गावतिचलीसिंधुरगामी  
नि॥ जोजैसहिंसोतैसहिंभावहिं॥ बालवृद्धकोउसंगन।  
लावहिं॥ एकएकसनपूछहिंथाई॥ तमदेखेदयालुरवु  
राई॥ अबथपुरीप्रभुआवतजानी॥ भईसकलशोभाकीखा  
नी॥ भईसरजुअतिनिर्मलनीरा॥ वहैसोहावनत्रिविधसमी  
रा॥ दोहा॥ हर्षितगुरुपरिजनअनुजभूसुरवृन्दसमेत  
चलेभरतअतिप्रेममनसन्मुखकृपानिकेत॥ ९॥ बडते  
कचडीअटारिन्हनिरावहिंगगनविमान॥ देखिमथुरा  
स्वरहर्षितकरहिंसमझलगान॥ १०॥ राकाशशिरचुप  
तिपुरीसिंधुदेखिहर्षान॥ बडेउकोलाहलकरतजउन  
रितरऊसमान॥ ११॥ चौपाई॥ रविऊलकमलदिवाकर।  
आवत॥ नगरमनोहरकपिन्हदेखावत॥ शृणुकपीशअ  
ऊदलेकेश॥ पावनिपुरीरुचिरयहदेशा॥ ययपिसबवै  
ऊठवाखाना॥ वेदपुराणविदितजगजाना॥ अबथसरि  
सप्रियमोहिनसोऊ॥ यहप्रसऊजानेकोउकोऊ॥ जन्मभू  
मिममपुरीसोहावनि॥ उत्तरदिशिसरजुबहपावनि॥ जेम  
जहिंसोविनहिंप्रयासा॥ ममसमीपनरपावहिंवासा॥ अ  
तिप्रियमोहिरहोंकेवासी॥ ममपामदापुरीसुखराशी॥  
दोहा॥ अबकपिसनिप्रभुकीवाणी॥ यन्मअबथजेदिगमव  
जाती॥ दोहा॥ आवतदेखेलोगसबकृपासिंधुभगवान॥ न

रागिणी  
मल्लारी



गरनिकटप्रभुआयेउत्तरेउभूमिविमान॥२॥उत्तरिक  
 हेउप्रभुपुष्पकहितमऊवेरपहंजाऊ॥प्रेरितरामचले  
 उसोहर्षविरहअतिताऊ॥३॥चौपाई॥आएभरतसंगस  
 बलोगा॥कृशतनुभीरुवीरवियोगा॥वामदेवदशिष्ठ  
 मुनिनायक॥देखेप्रभुमदियरिपनुसायक॥पारथरे।  
 गुरुचरणसरोरुह॥अनुजसहितअतिपुलकतनुरुह  
 भेटेऊशालपूछिमुनिराया॥हमरेऊशलतम्हारिहिंद  
 या॥सकलद्विजद्विकहंनयेउमाया॥धर्मधुरंधररघु  
 कुलनाथा॥गहेभरतपुनिप्रभुपदपंकज॥नमहिंजि।  
 नहिंशंकरसरमुनिअज॥परेभूमिनहिउठतउठाये॥ब  
 लकरिकृपासिंधुउरलाये॥एवमलगातरोमभएढाढे  
 नवराजीवनयनजलबाढे॥४॥राजीवलोचनस्रव  
 तजलतनुललितपुलकाबलिवनी॥अतिप्रेमहृदयल  
 गा॥अनुजहिमिलेप्रभुत्रिभुवनधनी॥५॥प्रभुमिलतअ  
 नुजदिसोहमोएहिजातनहिउपमाकही॥जनुप्रेमअरु  
 शृङ्गारतनुपरिमिलतवरसखमालही॥६॥पूकतकु।  
 णानिधिऊपालभरतदिवचनवेगिनआवई॥शृणुशिवा  
 सोसखवचनमनतेंभिन्नजोजनपावई॥७॥अबऊपाल  
 कोशलनाथ॥भरतजानिजनदरशनदियो॥बुउतविरह।  
 वारिधिकृपानिधिकाढिमोहिकरगहिलियो॥८॥



पुनिप्रभुहर्षिषात्रुहनभेदेहृदयलगा३॥लक्ष्मणाभेदेभर  
 तपुनिप्रेमनहृदयसमा३॥१५॥चौपाई॥भरतअनुजलक्ष्म  
 णातबभेदे॥दुसहविरहसंभवदुखमेदे॥सीताचरणभरत  
 सिरनावा॥अनुजसमेतपरमसुखपावा॥प्रभुविलोकि  
 हर्षेपुरवासी॥जनितवियोगविपतिसबनाशी॥प्रेमात  
 रसबलोगनिहारी॥कोतककीन्हकृपालुखगरी॥अमि  
 तरूपप्रगटेतेहिकाला॥यथायोग्यमिलिसबहिकृपा  
 ला॥कृपादृष्टिसबलोगविलोकी॥कीयेसकलनरनारि  
 विशोकी॥दाणामहंसबहिमिलेभगवाना॥उमामर्मयह  
 काइनजाना॥इहिविधसबहिसुखीकरिरामा॥आगे  
 चलेशीलगायामा॥कौशल्यादिमातसर्वथाई॥निरा  
 विवतसजनयेनुलवाई॥छन्द॥जनयेनुबालकवतस  
 तजिगृहचरणवनपरवशागई॥दिनअनपुररुषसवत  
 यनअंकारकरिपावतिभई॥॥अतिप्रेमप्रभुसबमातभेटी  
 वचनमृदुबडविधकहे॥गईविषमविपतिवियोगभव  
 तिन्हहर्षसुखअगणितलहे॥८॥दोहा॥भेदेउतनयसु  
 मित्रारामचरणारतजानि॥रामहिमिलतकेकयीहृदय  
 बडतमऊचानि॥१५॥लक्ष्मणसबमातन्हिमिलेहर्षेआ  
 शिषणा॥केकयिकहंपुनिपुनिमिलेमनकरतोभनजा  
 ॥१५॥चौपाई॥सासुन्हिसबनिमिलीवैदेही॥चरणान्दि



लागि हर्षि अति तेही ॥ देहि अशी घबूजि कुशलाता ॥ हो  
 द्रुअ चलत म्हार अविवाता ॥ सब रघुपति पद कमल विलोक  
 हिं ॥ मंगल जानि नयन जल रोकि हिं ॥ कनक पार आरती उ  
 तार हिं ॥ बार बार प्रभु गात निहार हिं ॥ नाना भांति निक्कावरि  
 कर हीं ॥ परमानन्द हर्ष उर भर हीं ॥ कौशल्या पुनि पुनिरघु  
 वीर हिं ॥ चितवति कृपा सिंधुराणी रीर हिं ॥ हृदय विचारति  
 वार दिवारा ॥ कवनि भांति लंका पति मारा ॥ अति सुकुमा  
 र युगल मम वारे ॥ निशि चर सभट महाबल भारे ॥ दोहा ॥  
 लक्ष्मणा अरु सीता सहित प्रभु हिं विलोकति मात ॥ परमा  
 नन्द मगन मन पुनि पुनि पुलकित गात ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ लंका  
 पति कपीशान लनीला ॥ जासु वल्लभ अरु दशु भणीला ॥ हनु  
 मदादि सब वानर वीरा ॥ थरें मनोहर मनुज शरीरा ॥ भरत स  
 नेहणी लघुतने मा ॥ सादर सब वरणा हिं अति प्रेमा ॥ देवि न  
 गरवा सिद्धि कैरी ती ॥ सकल सराह हिं प्रभु पद प्रीती ॥ पुनि  
 रघुपति सब सखा बुलाए ॥ मुनि पद लागइ सब न्हिसिखाए  
 गुरु वशिष्ठ कुल पूज्य हमारे ॥ इनकी कृपा दनुजरण मारे ॥  
 पसब सखा सुनइ मुनि मेरे ॥ भये समर सागर कडवेरे ॥ मम  
 दित लागि जन्म इन्हारे ॥ भरत इंते मोहि अधिक पिआरे ॥  
 सुनि प्रभु वचन मगन सब मप ॥ निमिष निमिष उपजत सु  
 ख मप ॥ दोहा ॥ कौशल्या के अरण नहि पुनि तिदनाये उमा



रामा.

३.  
४

य ॥ आशिषदीन्हि हर्षिहियतमप्रियजिमिरचुनाय ॥ १५ ॥  
सुमनवृष्टिनभसंजलभवनचलेसखकन्द ॥ चढीअटा  
रिन्देखहीनगरनारिनरवृन्द ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ कञ्चनकल  
शविचित्रसवारे ॥ सबहिंथरेसजिनिजनिजद्वारे ॥ बन्दन  
वारपताकाकेत ॥ सबहिबनायेउमङ्गलहेत ॥ बीपीस  
कलसुगंधसिंचाई ॥ गजमणिरचिवज्जचौकपुराई ॥ ना  
नाभांतिसुमङ्गलसाजे ॥ हर्षिनिसाननगरवज्जवाजे ॥ ज  
हंतहैनारिनिष्ठावरिकरही ॥ देहिअशीषहर्षउरभरही  
कञ्चनथारआरतीनाना ॥ युवतींसाजिकरहिंकलगाना  
करहिंआरतींआरतिहरकी ॥ रचुजलकमलविपिनदिनक  
रकी ॥ पुरणोभासंपतिकल्याण ॥ निगमशेषशारदावखा  
ना ॥ तेयहचरितदेखिवगिरहही ॥ उमातासुगुणनरकि  
मिकहही ॥ दोहा ॥ नारिकुमुदिनीअवयसररचुपतिविरह  
दिनेश ॥ अस्तभयेविकसितभईनिरखिरामराकेश ॥ २० ॥  
होहिंसगुणशुभविविधविधवाजहिंनानकनिसान ॥ पुरन  
रनारिसनाथकरिभवनचलेभगवान ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ प्रभु  
जानीकेकयीलजानी ॥ प्रथमतासुगृहगयेभवानी ॥ तारि  
प्रबोधिबज्जतसखदीन्हा ॥ पुनिनिजभवनगमनप्रभुकी  
न्हा ॥ कृपामिंधुजबमन्दिरगये ॥ पुरनरनारिसखीसबभ  
ये ॥ सुवशिष्टहिजलियेबुलार् ॥ आजुसबरीसुदिनसख



दाई॥ सब दिज देइ हरि अत्रु शासन॥ रामचन्द्र बैठहि सिंहा  
 सन॥ मुनि वशिष्ठ के वचन सुहाए॥ सुनत सकल विप्र नृप  
 ति भाए॥ कहहि वचन मृदु विप्र अनेका॥ जग अभिराम राम  
 अभिषेका॥ अब मुनि वर विलंब नहि कीजे॥ महाराज कहै नि  
 लक करीजे॥ दोहा॥ तब मुनि कहै उ समंत्र सन सुहात चले उ  
 सिरनाइ॥ रथ अनेक बड्का जिगजतरत सहारे जाइ॥ २५॥ ज  
 है तहें थावन पठय पुनि मङ्गल द्रव्य मंगाइ॥ दूर्घसमेत वशि  
 ष्ठ पुनि सिरनाये उआइ॥ २६॥ चौपाई॥ अब थपरी अति रुचि  
 बनाई॥ देव नृसिंह समन वृष्टि ऊरिलाई॥ राम कहा सेवक नृ  
 बुलाई॥ प्रथम सख नृवै बैठा जाई॥ सुनत वचन जहै तहें ज  
 न थाए॥ सुग्रीवादि तरतर नृवाए॥ पुनि करुणानिधि भरत  
 है कारे॥ निज कर जटाराम निरवारे॥ अन्हवाए पुनि तीन डभा  
 ई॥ भक्त वत्सल कृपालु रघुनाई॥ भरत भाग्य प्रभु को मलताई॥  
 शेष कोटि शत शक दिन गाई॥ पुनि निज जटाराम विवराये  
 गुरु अनुशासन मागि अन्हाये॥ करि मजन भूषण प्रभु साजे  
 अङ्ग अनेग कोटि कुविछाजे॥ दोहा॥ सा सुनि सादर जान  
 किहें मजन तरत कराइ॥ दिव्य वसन मणि भूषण साजे अङ्ग  
 बनाइ॥ २७॥ राम नाम दिशि शोभित रमारूप गुणाखानि॥ दे  
 विमात सब हर्षित जन्म सुफल करि जानि॥ २८॥ सुहात ख  
 गेश तेहि अवसर वस्त्रा शिव पुनि वन्द॥ चढि विमान आपस

सोरठी  
 २



शमा.

३.

५

वैसुरदेवनसखकन्द॥२६॥**चौपाई॥** प्रभुविलोकिमुनिमन  
अनुरागा॥ तरितदिव्यसिंहासनमोंगा॥ रविसमतेजसवर  
गानहिजाई॥ बैटेरामद्विजन्दसिरनाई॥ जनकसतासमेत  
रघुनाई॥ देखिप्रहर्षमुनिसमुदाई॥ वेदमंत्रतबद्विजन्दिउचा  
रे॥ नभसुरमुनिजयजयतिपुकारे॥ प्रथमतिलकवशिष्ठ  
मुनिकीन्हा॥ पुनिसबविप्रन्दिआयसुदीन्हा॥ सुतविलो  
किहरषीमहतारी॥ वारवारआरतीउतारी॥ विप्रन्हदानवि  
विधविधदीन्हा॥ याचकसकलअपाचककीन्हा॥ सिंहास  
नपरविभुवनमोंई॥ देखिसुरन्दिउनुभीवजाई॥**कन्द॥** नभ  
दुन्दभीवाजहिंविपुलगंथर्वकिन्नरगावही॥ नाचहिंअप  
सरावृन्दपरमानन्दसुरमुनिपावही॥५॥ भरतादिअनुजवि  
भीषणोंगदहनुमदादिसमेतते॥ गहेकुत्रचामरव्यजनथ  
नुअसिचर्मशक्तिविराजते॥६॥ सियसहितदिनकरवंशभू  
षणकामबद्धकुविमोहदी॥ नवग्रंथुथरवरगातअंबरपी  
तमुनिमनमोहदी॥७॥ मुकुटोंगदादिविचित्रभूषणअङ्गअ  
ङ्गनिप्रतिसजे॥ अम्भोजनयनविशालउरभुजयत्पनरनिर  
खेंतिजे॥८॥**दोहा॥** बहणोभाममाजसखकहतनवनैखगे  
श॥ वरणौशोरदशेषशक्तिसोरसजानमहेश॥९॥ भिन्नभि  
न्नयस्तुतिकरिगएसुरनिजनिजधाम॥ बंदीवेषथरिवेदत  
बआएजहंश्रीराम॥१०॥ प्रभुसर्वजकीन्दअतिआदरकृपानि



धान॥लखेउनकाहमर्मककुलगेकरागुणगण॥२५  
 हृद॥लवाई॥जयसगुणनिर्गुणरूपरामअनूपभूपशि  
 रोमणो॥दशकंधरादिप्रचंडनिशिचरप्रवलखलभुजव  
 लहने॥१३॥अवतारनरसंसारभारविभंजिदारुणदुखदहे  
 जयप्रणतपालदयालुप्रभुसंयुक्तशक्तिनमामहे॥१४॥त  
 वविषममायावशासुरासुरनागनराग्रजगहरे॥भवपंथ  
 भ्रामितस्रष्टमितदिननिशिकालकर्मस्वगणभरे॥१५॥जे  
 नापकरिकरुणविलोकितत्रिविधदुखतेनिर्वहे॥भवेद  
 केदनदत्तहमकहंरत्नरामनमामहे॥१६॥जेज्ञानमोनवि  
 मत्ततवभवहरणिभक्तिनआदरी॥तेपाउसुरदुर्लभपदाद  
 पिपरतहमदेखतहरी॥१७॥विष्णुसकरिसबआशपरिह  
 रिदासतबजेहोउहरे॥जपिनामतबविनुअमतरहिंभवना  
 थसोसमरामहे॥१८॥जेचरणसिवअजपुज्यरजअभपर  
 शिशुनिपतनीतरी॥नखनिर्गतासुरबन्दितात्रैलोक्याव  
 निसुरसरी॥१९॥ध्वजकुलिशअंकुशकंजयुवचनफिरतकं  
 टककिन्दलहे॥पदकंजदंडमुकुन्दरामरमेशानित्यभजा  
 महे॥२०॥अव्यक्तमूलमनादितरुतवचचारिनिगमागमभ  
 णो॥वटकंधरायापंचविंशअनेकपर्णसुमनचने॥२१॥फल  
 युगलविधिकदुसपुरवेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे॥पल  
 वितफूलतनवलनितसंसारविटपनमामहे॥२२॥जेब्रह्म



जयदेवतशत्रुभवगम्यमनपरपावही ॥ ते कहहिं जानहिं ना  
 यहमतवसगुणायशानितगावही ॥ २३ ॥ करुणायतनप्रभु  
 सदगुणकरदेवयहवरमांगही ॥ मनकर्मवचनविकारत  
 जितवचरणहमशत्रुगही ॥ २४ ॥ दोहा ॥ सबके देखतवेद  
 सबविनतीकीन्हउदार ॥ अन्तर्यानभयेपुनिगयेब्रह्मआगा  
 ॥ २५ ॥ बैनतेयष्टाशुभतवआपजहंरघुवीर ॥ विनयकर  
 तगदगदगिरपुरितपुलकशरीर ॥ २६ ॥ छन्द ॥ जयगमर  
 मारमाणसमने ॥ भवतापभवाकुलपाहिजन ॥ अबधेशसुरे  
 शारमेशविभो ॥ शरणागतमागतपाहिप्रभो ॥ २७ ॥ दशशीर्ष  
 विनाशानवीशभुजा ॥ कृतहरिमहामहिभूरिहजा ॥ रजनीच  
 रवृन्दपतंगरहे ॥ शरणावकतेजप्रचाण्डहे ॥ २८ ॥ महिमंडल  
 मंडनचारुतरं ॥ शतशायकचापनिषंगवरं ॥ मदमोहमहामम  
 तारजनी ॥ तमपुञ्जदिवाकरतेजअनी ॥ २९ ॥ मनुजातकिरात  
 निपातकिये ॥ मृगलोकऊभोगसरेनहिये ॥ हतिनाथअनाथ  
 निपादिहरे ॥ विषयावनपामरभूलिपरे ॥ ३० ॥ बडरोगवियो  
 गन्धलोगहये ॥ भवदंघ्रिनिगदरकेफलये ॥ भवसिंधुअगा  
 धपरेनरते ॥ पदपंकजप्रेमनजेकरते ॥ ३१ ॥ अतिदीनमलीन  
 डाकीनितही ॥ जिनकेपदपंकजप्रीतिनही ॥ अबलंबभवन्त  
 कथाजिन्हकें ॥ प्रियसंतअनन्तसदातिन्हकें ॥ ३२ ॥ नहिगग  
 नरोपीनमानमुरा ॥ तिन्हकेंसमवैभववादिपदा ॥ यहितंतव



सेवक होत मुदा ॥ मुनि त्यागहि योग भरोस सदा ॥ ३१ ॥ करि  
 प्रेम निरन्तर नेम लियें ॥ पद पंकज सेवत छुट्टि हियें ॥ मम मा  
 न नि सदा दृष्टा दरी ॥ सब सन्त सखी विचरति मही ॥ ३२ ॥  
 मुनि मान सपंकज भृङ्ग भजे ॥ रघु वीर महाराणा थीर अजे  
 तव नाम जपामि नमामि हरी ॥ भव रोग महामद मान अ  
 री ॥ ३३ ॥ गुण शील कृपा परमायतन ॥ प्रणामा मि निरन्तर  
 श्रीरमण ॥ रघु नन्द निकन्द यद्वन्द्वने ॥ महिपाल विलोकि  
 यदीन जन ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ बार बार वर मांगों हर्षि देखी रू  
 पद सरोज अनपायिनी भक्ति सदा सत सक ॥ ३५ ॥ वरणि  
 उमा पति राम गुण हर्षि गये कैलास ॥ तव प्रभु कपि न्हदि  
 बाप सव विध सख प्रदवास ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ शृणु खग पति  
 यह कथा सुनावनि ॥ विविध ताप भव दोष नष्टावनि ॥ महा  
 राज करु भुभुषेका ॥ सुनत लहहि नर विरति विवेका  
 जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं ॥ सख संपति नाना विध  
 पावहिं ॥ सरदुर्लभ सख करि जग मांदी ॥ अनकाल रघु प  
 ति पुर जांदी ॥ सुनहिं विमुक्त विरक्त अरु विषई ॥ लहहिं भ  
 क्ति गति संपति नितई ॥ खग पति राम कथा मै वरणी ॥ स्व  
 मति विलास जग सुख हरणी ॥ विरति विवेक भक्ति टूट क  
 रणी ॥ मोहनरी कह सुन्दर तरणी ॥ नित नव मंगल को  
 शल पुरी ॥ हर्षित रह दि लोग सब करी ॥ नित नव प्रीति



रामा.

३.

७

रामपदपंकज ॥ सेवतजिन्हिनमतशिवमुनिअज ॥  
मंगनबद्धप्रकारपरिगण ॥ दिजन्हिदाननानाविधपाप  
दोहा ॥ ब्रह्मानन्दमगनकपिसबकहेप्रभुपदप्रीति ॥ जात  
नजानेउदिवसनिशिगयेमासषटवीति ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ वि  
सरेगृहसपनेशुथिनाहीं ॥ जिमिपरदोहसन्तमनमाहीं  
तबरचुपतिसबसाखाबुलाए ॥ आउसबहिसादरसिरनाए  
परमप्रीतिसमीपबैठारे ॥ भक्तसुखदमृदुवचनउचारे ॥ त  
म्हअतिकीन्हमोरसेवकाई ॥ सुखपरकेहिविधकरोबडा  
ई ॥ तातेमोहितम्हअतिप्रियलागे ॥ ममहितलागिभवन।  
सुखत्यागे ॥ अनुजराजसंपतिवैदेही ॥ देहगोहपरिवार  
सनेही ॥ सबममप्रियनहितमहिसमाना ॥ मृषानकहों  
मोरयहवाना ॥ सबकहप्रियसेवकयहनीती ॥ मोरेंअधि  
कदासपरप्रीती ॥ दोहा ॥ अबगृहजाऊसाखासबभजऊमो  
हितछनेम ॥ सदासर्वगतगर्वहितजानिकरेऊअतिप्रेम ॥ ३६ ॥  
चौपाई ॥ सुनिप्रभुवचनमगनसबभयेऊ ॥ कोहमकहों।  
विसरितनुगयेऊ ॥ एकटकरहेजोरिकरआगे ॥ कहिनहि  
सकहिककुअतिअनुगगे ॥ परमप्रेमतिन्हकरप्रभुदेखा  
कहाविविधविधज्ञानविशेषा ॥ प्रभुसन्मुखककुकहैनपा  
रहि ॥ पुनिपुनिचरणसरोजनिहारहि ॥ तबप्रभुभूषणाव  
सनमंगाए ॥ नानारंगअनूपसहाए ॥ सोसुग्रीवहिंप्रथम

५



पहिराये॥ बसनभरतनिजहाथबनाये॥ प्रभुप्रेरितलक्ष्म  
 णपहिराये॥ लंकापतिरघुपतिमनभाये॥ अरु-दबैदिर  
 हानहिडोला॥ प्रीतिदेखिप्रभुताहिनबोला॥ दोहा॥ जाम्ब  
 वननीलादिसबपहिरापरचुनाय॥ हियथरिगमस्वरूप  
 सबचलेनाउपदमाय॥ ३८॥ तबअरु-दउठिनाउसिरसजल  
 नयनकरजोरि॥ अतिबिनीतबोलेउवचनमनझप्रेमरसबो  
 रि॥ ३९॥ चौपाई॥ शृणुसर्वज्ञकृपासाखसिंथो॥ दीनदयाक  
 रआरतबंधो॥ मरतीवारनाथमोहिबाली॥ गयेतम्हारेप  
 रातरघाली॥ अशरणशरणविरटसंभारी॥ मोहिजनितज  
 डभक्तहितकारी॥ मोरेप्रभुतमहगुरुपितमाता॥ जाउंकर  
 हौतजिपदजलजाता॥ तमहिंविचारिकदडनरनाहा॥  
 प्रभुतजिभवनकाजममकाहा॥ बालकअवुधज्ञानबल  
 हीना॥ राखडशरणनाथजनदीना॥ नीचटहलगृहकेस  
 बकरिहौं॥ पदपंकजविलोकिभवतरिहौं॥ असकहिच  
 रणपरेउप्रभुपाही॥ अबजनिनाथकहडगृहजाही॥ दो०  
 अरु-दवचनबिनीतसनिरघुपतिकरुणांसीव॥ प्रभुउठा  
 उठलायेऊसजलनयनराजीव॥ ४०॥ निजउरमालावसन  
 मणिबालितनयपहिरा॥ विदाकिन्हभगवानतबबडप्र  
 कारसमुजाउ॥ ४१॥ चौपाई॥ भरतअनुजसौमित्रासमेता॥ प  
 ठवनचलेभक्तकृतचेता॥ अरु-ददयप्रेमनदियोश॥ कि



रामा.

३.

८

४

रिफिरिचितवतप्रभुकीओरा॥वारवारकरिदंडप्रणामा  
मनअसरहनकदहिंमोहिरामा॥रामविलोकनिबोलनि  
चलनी॥समिरिसमिरिशोचतहंसिमिलनी॥प्रभुरुखदे  
खिविनयबडभाषी॥चलेउरुदयपदपंकजराखी॥अति  
आदरसबकपिपडंचाए॥भरुन्हसहितभरतपुनियाए॥  
तवसुग्रीवचरणगहिनाना॥भांतिविनयकीन्हीहनुमा  
ना॥दिनदशकरिरचुपतिपदसेवा॥तबफिरिचरणदे  
खिहोंदेवा॥पुणपुत्रतमह्यवनकुमारा॥सेबडजाउकु  
णआगारा॥असकहिकपिसबचलेतरना॥अरुदकहे  
उसनइहनुमना॥दोहा॥कहेइदणउवतप्रभुसनतम  
हिंकहोंकरजोरि॥वारवारचुनायकहिसुरतिकरापड  
मोरि॥४॥असकहचलेउबालिसुतफिरिआयेउहनुम  
ना॥तासुग्रीतिप्रभुसनकहीमगनभयेभगवन्ता॥५॥कु  
लिशडचादिकठोरअतिकोमलकुसुमडचादि॥चितख  
गेशअसगमकरसमुजिपरैकडकादि॥६॥चौपाई॥पुनि  
कृपाललियबोलिनिषादा॥दीन्हेउभूषणवसनप्रसादा॥  
जाडभवनममसुमिराकरेह॥मनक्रमवचनयर्मअनुस  
रेह॥तमममसावाभरतजिमिधाता॥सदारहेइपुरआ  
वतजाता॥वचनसुनतउपजासखभारी॥परैउचरणलो  
चनभरिबारी॥चरणकमलउपरिशृङ्खलावा॥प्रभुसुभा

असकही  
३



वपरिजनहिं सनावा ॥ रघुपतिचरितदेवि पुरवासी ॥ ७  
 निपुनिकहहिं यन्मसखवासी ॥ रामराजवैदेव यलोका ॥  
 हर्षितभयेउगयेउसबशोका ॥ वैरनकरहिकाइसनकोई  
 रामप्रतापविषमताखोई ॥ दोहा ॥ वर्णाश्रमनिजनिजय  
 रमनिरतवेदपथलोग ॥ चलहिंसदापावहिंसखहिंनहि  
 भयशोकनरोग ॥ धर ॥ चौपाई ॥ दैहिकदैकविभौतिकता  
 पा ॥ रामराजनहिकाइहिव्यापा ॥ सबनरकरहिं परस्पर  
 ती ॥ चलेहिंसयर्मनिरतप्रतिनीती ॥ चारिउचरणथर्मज  
 गमोही ॥ पुरिरहासपनेइअचनाही ॥ रामभक्तिरतनरअ  
 रुनारी ॥ सकलयरमगतिकेअधिकारी ॥ अपमृत्युनहिक  
 वनिउपीरा ॥ सबसुन्दरसबनिरुजशरीरा ॥ नहिदरिद्रको  
 उदुखीनदीना ॥ नहिकोउअबुधनलक्षणाहीना ॥ सबनि  
 र्दमथर्मरतथरणी ॥ नरअरुनारिचतरशुभकरणी ॥ सब  
 गुणजसबपंडितज्ञानी ॥ सबकृतज्ञनहिकपटुसयानी ॥  
 दोहा ॥ रामराज्यविहगेशशृणुसचराचरजगमोहि ॥ काल  
 कर्मस्वभावगुणकृतदुखकाइहिनांहि ॥ धध ॥ चौपाई ॥ भू  
 मिसप्रसागरमेखला ॥ एकभूपरघुपतिकोशला ॥ भुवनप्र  
 नेकरोमप्रतिज्ञासू ॥ यहप्रभुताककुवडतनतासू ॥ सोमा  
 हिमासमुजतप्रभुतासू ॥ यहवर्णातहीनताचनेरे ॥ यहमहि  
 माएगेशनिन्दजानी ॥ पिरीयहचरिततिन्दइरतिमानी ॥



रामा.

३.

४

सोजानेकरफलयरलीला॥ कहहिंमहामुनिसुमति सु  
शीला॥ रामराज्यकरसुखसंपदा॥ वरणिनसकहिंफणी  
शशारदा॥ सबउदारसबपरउपकारी॥ दिजसेवकसबनर  
ग्रुनारी॥ एकनारिव्रतरतनरजारी॥ तेमनवचक्रमपतिहि  
तकारी॥ दोहा॥ दंडुयतिनकरभेदजहैनर्तकनृत्यसमाज॥  
जीतेइमनजगसुनियअसगमचन्द्रकेराज॥ ४५॥ चौपाई॥  
फूलहिंफलहिंसदातरुकानन॥ रहहि एकसंगगजपंचा  
नन॥ खगमृगवैरसहजविसराई॥ सबवनिपरस्परप्रीतिव  
जाई॥ ऊजहिंखगमृगनानावृन्दा॥ अभयचरहिंवरकरहिंअ  
नन्दा॥ शीतलसुरभिपवनवहमदा॥ गुञ्जतअलिलैच  
लमकरेदा॥ लताचिटपमागेमधुच्यवहीं॥ मनभावते  
येनुपयसबहीं॥ सम्यसंपन्नसदारहथरणी॥ त्रेताभासत  
पुगकीकरणी॥ प्रगदींगिरिन्दविविधमणीखिनी॥ जग  
दातमाभूपयहिचानी॥ सरितासकलवहेवरवारी॥ शीत  
लअमलस्वादुसुखकारी॥ सागरनिजमर्षादारहही॥ डा  
रहिरत्नतटन्हिनरलहहीं॥ सरसिजसंकुलसकलतजगा  
अतिप्रसन्नदशादिशाविभागा॥ दोहा॥ विधुमहिपुरपि  
पूषनितरवितपजितनहिकाज॥ मागेंवारिददेरिजल  
रामचन्द्रकेराज॥ ४६॥ चौपाई॥ कोटिन्हवाजिमेथप्रभुकी  
न्दा॥ अमितदानविप्रनिकहंदीन्दा॥ अतिपयपालक



धर्मधुरंधर॥ गुणातीतशूरभोगधुरंधर॥ पतिअनुकूलसदा  
 रहसीता॥ शोभाखानिसुशीलविनीता॥ जानतिकृपासिंधुप्र  
 भुताई॥ सेवतिचरणकमलमनलाई॥ यद्यपिगृहसेवकसेव  
 किनी॥ विपुलसकलसेवाविधिगुनी॥ निजकरगृहपरिच  
 र्यांकरहीं॥ रामचन्द्रआयसुअनुसरहीं॥ जेहिविधकृपासिं  
 धुसुखमानहिं॥ सोरसियसेवाविधिउरजानहीं॥ कौशल्यादि  
 सासुगृहमोही॥ सेवहिंसकलमानमटनाही॥ उमारमाब्रह्मा  
 णिवन्दिता॥ जगदेवासंततमनिन्दिता॥ दोहा॥ जासुकृपा  
 कटाक्षसरचाहतचितवनिसोई॥ रामपदारविन्दरतकरति  
 स्वभावदिखोई॥ ५०॥ चौपाई॥ सेवहिसाजुकूलसबभाई॥ राम  
 चरणरतप्रीतिसुहाई॥ प्रभुपदकमलविलोकतरहहीं॥ क  
 बहिकृपालुहमहिंककुकरहीं॥ रामकरहिंभ्रातन्हपरप्री  
 ती॥ नानाभांतिसिखावहिंनीती॥ हर्षितरहहिंनगरकेलोगा  
 करहिंसकलसरदुर्लभभोगा॥ अहनिशिविधिहिमनावत  
 रहहीं॥ श्रीरघुवीरचरणरतिचहहीं॥ दुइसुतसुन्दरसीताजा  
 ये॥ लवकुशवेदपुराणदिगाये॥ हौविजयीविनयीगुणा  
 मंदिर॥ हरिप्रतिविंबमनइंअतिसुन्दर॥ दुइदुइसुतसबभ्रा  
 तन्हकेरे॥ भयेरूपगुणशीलघनेरे॥ दोहा॥ ज्ञानगिरागोती  
 तअजमायागुणगोमार॥ सोरसद्विदानंदघनकरनरचरि  
 तउदार॥ ५६॥ चौपाई॥ प्रातःकालमरुकरिमजन॥ वैठहिं  
 सभासंगहिजसजन॥ वेदपुराणवसिष्ठवातानहिं॥ सुनहि



रामा

३.

१०

रामयद्यपि सब जानहिं ॥ अनुजन्म संयुत भोजन करेही ॥  
देखि सकल जननी सुख भरही ॥ भरत शत्रुहन दोनों भाई ॥  
सहित पवन सुत उपवन जाई ॥ बृजहिं बैठि राम गुण गाहा ॥  
करहुनु मान समति अवगाहा ॥ सुनत विमलगुण अति सु-  
ख पावहिं ॥ बद्ध रिबद्ध रि विनय कहावहिं ॥ सब के गृह  
गृह होइ पुगुणा ॥ राम चरित पावन विधाना ॥ नर अरु नारि  
राम गुण गावहिं ॥ करहिं दिवस निशि जात न जानहिं ॥ दोहा  
अवध पुरी वासिन्ह कर सुख संपदा समाज ॥ सहस शेषनहि  
कहि सकहिं जहै नृप राम विराज ॥ ४५ ॥ चौपाई ॥ नारदादिसन-  
कादि मुनीश ॥ दर्शन लागि कौशलापीश ॥ दिन प्रति सक-  
ल अयोध्या आवहिं ॥ देखि नगर विराग विसरावहिं ॥ रत्न जडि  
तमणि कनक असरी ॥ नाना रङ्ग रुचिर गचछरी ॥ पुर चङ्गे पा-  
श कोट अति सुन्दर ॥ रचे कंगु रारङ्ग रङ्गवर ॥ नव गृह सुन्दर नि-  
करव नारि ॥ जनुह सरि अमरावति आई ॥ महि बद्ध रङ्ग रचित ग-  
च कोचा ॥ जो विलोकि मुनि वर मन रांचा ॥ थवल थाम ऊपर न-  
भनु मृत ॥ कलश मन डंश शिर विद्युति निन्दत ॥ बद्ध मणिरा-  
चित ऊरो खाभाजहि ॥ गृह गृह प्रति मणि दीप विराजहिं ॥ कंठ  
मणि दीप राजहिं भवन भाजहिं देहरी विडु मरची ॥ सुन्दर म-  
नोहर मंदिरा यत अजिर अति फटिक नखची ॥ ४५ ॥ मणि  
खमभिनिन विरिचि विचकै नक मणि मरकत रचे ॥ प्र-  
ति द्वार द्वार कणार पुरट बनार वर वज्र नखचे ॥ ४६ ॥ ॥ ॥



दोहा॥ चारुचित्रपालाशमिश्रगृहगृहरचेवना३॥ रामधा  
 मजोनिरखतमुनिमनलेतचोरा३॥ ५०॥ चौपाई॥ सुमन  
 वाटिकासबहिंलगाई॥ विविधभांतिकरियतनबनाई  
 लताललितबद्धभांतिसोहाई॥ फलतसदावसन्नकीना  
 ई॥ गुञ्जतमधुकरमुखरमनोहर॥ मारुतविविधसदाव  
 हसुन्दर॥ नानाखगबालकन्दजिआण॥ बोलतमधुरउ  
 डातसुहाण॥ मोरहंससारसपागवत॥ भवनद्विपरशो  
 भाअतिपावत॥ जहंतहंटेखहिंनिजपरिछाही॥ बद्धवि  
 थकूजहिंनृत्यकराही॥ शुक्लशारिकापढाबहिंबालक  
 कहइरामरघुपतिजनपालक॥ राजद्वारसबहीविधा  
 चारु॥ बीपीचौहटरुचिरवजारु॥ छन्द॥ बाजारुचारु  
 नवनईवराणतवस्तुविनुगणपाइये॥ जहंभूपरमानिवा  
 सतहंकीसंपदाकिमिगाइये॥ ३॥ वैदेवजाजसराफव  
 णिकअनेकमनइऊवेरते॥ सबसखीसबसचरितसु  
 न्दरनारिनरशिशुजरठते॥ ३५॥ दोहा॥ उत्तरदिशिसरगु  
 वहैनिर्मलजलगम्भीर॥ बांधेवाटमनोहरखल्यपंकन  
 हिंतीर॥ ५१॥ चौपाई॥ दुरिफराकरुचिरसोवाटा॥ जहंज  
 लपिवहिंवाजिगजटाटा॥ पनिचटपरममनोहरनाना  
 तहोनपुरुषकरहिंअस्नाना॥ राजवाटसबहीविधसुन्द  
 र॥ मजहिंतहोवराणाचारिउतर॥ तीरतीरदेवदकरमन्दिर



गामा.

३.

११

चङ्गे दिशिते हि केउ पवन सुन्दर ॥ कङ्गे कङ्गे मरिना तीर ३  
दामी ॥ वसहिं ज्ञानरत मुनि सन्यासी ॥ जहंत है तल सीवृ।  
न्दसहाये ॥ बङ्ग प्रकार सब मुनि नलगाये ॥ पुरशोभा ककु  
वरणि न जाई ॥ बाहिर नगर परम रुचिराई ॥ देवत पुरी अ।  
विल अच भागा ॥ वनउ पवन वापिका तडागा ॥ **कुन्द** ॥ वा  
पीतडागा अनूप कूप मनोहर गयत शोहर ॥ सोपान सुन्दर नी  
र निर्मल देखि सर मुनि मोहर ॥ **३५** ॥ बङ्गरु कञ्ज अनेक  
खगज्जहि मधुप गुञ्जार हीं ॥ आराम रम्य पिका दिखि  
रव मन अथि कहै कार हीं ॥ **४०** ॥ **दोहा** ॥ रमानाथ जहरा  
जा सो पुर वरणि कि जाई ॥ अणि मादिक सब सम्पदा रा  
ही अवय पुरकार ॥ **५२** ॥ **चौपाई** ॥ जहंत है नर रघुपति गुण  
गावहिं ॥ वैदि परस्पर उहै शिखा वहि ॥ भज अणत प्रति  
पाल करामहि ॥ शोभा शील रूप गुण थामहि ॥ जलज  
विलोचन श्यामल गातहि ॥ पलक नयन रव सेवक जात  
हि ॥ भूत शर रुचिर चाप तणी रहि ॥ सनक कञ्ज वन रवि रा  
धी रहि ॥ काल कराल व्याल खगराजहि ॥ नमित राम अ।  
काम ममता जदि ॥ लोभ मोह मृग यूथ किरातहिं ॥ मनसि  
ज करि हरि जन सुख दातहिं ॥ संशय शोक निविउत मा।  
भातहि ॥ दनुज गहन वन दहन कृपातुहिं ॥ जनक सुता  
समेत रघुवीरहि ॥ कसन भज अ भजन भव भौरहि ॥ बङ्ग



वासनामशकहिमराशिदि॥ सदाएकरसअजअविना  
 शिदि॥ सुनिरञ्जनभञ्जनमदिभारहि॥ तलसिदासकेप्र  
 भुहिउदरहि॥ दोहा॥ एहि विधनगरनारिनरकरहिंरा  
 मगुणागान॥ सानुकूलसबपररहतसन्ततकृपानिधान॥  
 चौपाई॥ जबतेरामप्रतापखगेशा॥ उदितभएउअतिप्रबल  
 दिनेशा॥ पुरप्रकाशरहेउतिङ्गलोका॥ बडतन्दसखबड  
 तन्दमनशोका॥ जिनहिशोकतेदिकहोंवखानी॥ प्रथम  
 अविद्यानिशानशानी॥ अचउलुकजहंतहोंलुकाने॥ का  
 मक्रोधकैरवसंजुचाने॥ विविधकर्मगुणकालसुभाऊ॥  
 येचकोरसखलहहिंनकाऊ॥ मतसरमानमोहमदचोरा  
 इनहिंनिवाहनकवनिडओरा॥ धर्मतडागयोगविज्ञाना  
 येपङ्कजविकशोविधनाना॥ सखसन्तोषविगगविवका  
 विगतशोकयेकोकअनेका॥ दोहा॥ यहप्रतापरविजायके  
 उरजबकरेप्रकाश॥ पाहिलेवाढहिंप्रथमजेकहेतेपाव  
 दिनाश॥ ५५॥ चौपाई॥ भ्रातन्दिमादितरामएकवारा॥ सऊ  
 परमप्रियपवनऊमारा॥ सुन्दरउपवनदेखनगएऊ॥ स  
 बतरुऊसुमितपलवनएऊ॥ जानिसमयसनकादिकआप  
 तेजपुंजगुणशीलसहाप॥ ब्रह्मानन्दसदालयलीना॥ दे  
 खतबालकवडकारीना॥ थरेदेहजनुचारिउवेदा॥ समद  
 धीमुनिविगतविभेदा॥ आशातशनव्यसननदितिनही॥



शमा.

३.

१२

12

रघुपतिचरितहोइतहंसनही॥तहारहेसनकादिभवानी  
जहंघटसम्भवमुनिवरजानी॥रामकथामुनिबहुविधव  
रणी॥ज्ञानयोनिपावककहंअरणी॥**दोहा॥**देखिराममु  
निआवतहर्षिदंडवतकीन्ह॥स्वागतपूछीपीतपटप्रभुवै  
ठनकहंदीन्ह॥५५॥**चौपाई॥**कीन्हदंडततीनिउंभाई॥सहि  
तपवनसुतसुखअधिकारि॥मुनिरघुपतिकुविअतल  
विलोकी॥भयेमगनमनशकेनरोकी॥**पद्या**सुनगातस  
रोरुहलोचन॥सुन्दरतामन्दिरभवमोचन॥एकटकरहे  
निमेषनलावहिं॥प्रभुकरजोरेशीसनवावहिं॥तिन्हकी  
दशादेखिरघुवीरा॥सुवतनयनजलपुलकशरीरा॥कर  
गहिप्रभुमुनिवरबैठारे॥परममनोहरवचनउचारे॥आ  
जुधन्यमैसनइमुनीशा॥तुम्हरेदरशजांदिअचखीशा  
बडेभाग्यपाइयसतसंगा॥विनहिंप्रयासहोहिभवभंगा॥  
**दोहा॥**सुनपंथअपवर्गकेकामीभवकरपंथ॥कहहिंसुन  
कविकोविदश्रुतिपुराणसबपंथ॥५६॥**चौपाई॥**सुनिप्र  
भुवचनहर्षिमुनिचारी॥पुलकगातअस्तुतिअनुसारी॥  
जयभगवन्तअनन्तअनामय॥अनचअनेकएककरुणा  
मय॥जयनिर्गुणजयजयगुणसागर॥सुखमन्दिरतिऊ  
रकउजागर॥जयइन्दिरामाजयभूषर॥अनूपमअ  
जयप्रनादिगोभाकर॥ज्ञाननिधानअमानमानप्रद॥पाव



नस्य यशस्य पुराणवेदवद॥ तत्तत्कृतज्ञप्रज्ञताभञ्जन॥  
 नामअनेकअनामनिरञ्जन॥ सर्वसर्वगतसर्वउरालय॥  
 वसङ्गसदाहमकहं परिणालय॥ इंदुविपत्तिभवफल्दवि  
 भञ्जन॥ इदिवसुरामकाममदगञ्जन॥ दोहा॥ परमान  
 न्दकृपायतनमनपरिपूरणकाम॥ प्रेमभक्तिअनयायि  
 नीदेइहमहिषीराम॥ ५७॥ चौपाई॥ देइभक्तिरघुपतिअ  
 तिपावनि॥ त्रिविधतापभवदायनशावनि॥ प्रणतपा  
 लसुरयेवकल्पवरु॥ होइप्रसन्नप्रभुदीजैयहवरु॥ भव  
 वारिथिऊम्भजरघुनायक॥ सेवकसलभसकलसख  
 दायक॥ मनसम्भवदारुणादुखदारक॥ दीनबंधुसमता  
 विस्तारक॥ आशाजामईर्षादिनिवारक॥ विनयविवेक  
 विरतिविस्तारक॥ भूषमौलिमणिमंडनधारणी॥ देइभ  
 क्तिसंस्तिसरितरणी॥ मुनिमनमानसहंसनिरन्तर॥  
 चरणकमलबंदितअजशङ्कर॥ रघुऊलकेतसेतशु  
 तिरत्नक॥ कालकर्मस्वभावगुणभक्तक॥ तारकतरण  
 हरणसबदूषण॥ तलमिदासप्रभुत्रिभुवनभूषण॥  
 दोहा॥ बारबारअस्तुतिकरिप्रेमसहितसिरनाइ॥ ब्रह्म  
 भवनसनकादिगेअतिअभीष्टवरण॥ ५८॥ चौपाई॥ स  
 नकादिकविधिलोकसिधाये॥ भ्रातृहरामचरणसिर  
 नाये॥ पूछतप्रभुहिंसकलसऊचाही॥ चितवहिंसवम

कोकिली



रामा.

३.

१३

13

रुत सुत पाही॥ सुनाच हहिं प्रभु मुख की बाणी॥ जो सु  
नि होइ सकल भ्रम हानी॥ अन्तर जामी प्रभु सब जाना॥ वृ  
जत कहइ कहाहु माना॥ जो रिपाणि तब कहहु म  
ना॥ सुनइ दीन दया लुभावना॥ नाथ भरत ककु पूछ  
न चहंही॥ प्रश्न करत मन सकुचत अहंही॥ तम्ह जानइ  
कपिमोर सुभाऊ॥ भरत हि मोहि न कहूँ दूराऊ॥ सुनि  
प्रभु वचन भरत गहि चरण॥ सुनइ नाथ प्रणतारति ह  
रण॥ दोहा॥ नाथ न मोहि संदेह ककु सपनेइ शोक न  
मोह॥ केवल कृपा तम्हारी प्रभु चिदानन्द संदोह॥ ५५॥  
श्रीपाई॥ कसैं कृपा निधि एक छिटाई॥ मै सेवक तम्ह ज  
न सख दाई॥ सन्नन की महिमार बुझाई॥ बड विष वेद पु  
रण न्हा गाई॥ श्रीमुख तम्ह पुनि की बडाई॥ तिन्ह पर प्रभु  
हि प्रीति अधिकारी॥ सुनाच हों प्रभु तिन्ह कर लता॥  
कृपा सिंधु गुण ज्ञान विचलता॥ सन्न असन्न भेद विल  
गाई॥ प्रणत पाल मोहि कहिय बुझाई॥ सन्नन के लत  
ण सुनु भ्राता॥ अगणिता प्रतिपु रण विख्याता॥ सन्न  
असन्नन की अस करणी॥ जिमि ऊढार चन्दन आचरणी  
काटै पर शुभलय सुनु भाई॥ निज गुण देख सुगंध वसाई  
दोहा॥ तातैं सुरभी सन्दिछत जगवल श्रीखंड॥ अन  
लसहि पीटत चनहिं पुरुष वदन यह दंड॥ ५६॥ श्रीपाई॥



विषय अलं पटणी ल गुणा कर ॥ परदुख दुखी सुख सु  
 खी देखें पर ॥ सम अ भूत रिपु विमद विरागी ॥ लोभा मर्ष  
 हर्ष भय त्यागी ॥ कोमल चित दीन ह्रि परदाया ॥ मन व  
 च कर्म मम भक्ति अमाया ॥ सब हि मान प्रद आ पु अमा  
 नी ॥ भरत प्राण सम मम ते प्राणी ॥ विगत काम मम नाम  
 परायण ॥ शांत विर विनीत मुदिता यन ॥ शीतलता  
 सुसरलता मैत्री ॥ दिज पद प्रेम थर्म जन पिंजी ॥ यह सब  
 लक्षणा वस हिंजा सुउर ॥ जाने इता त संत संत त फुर ॥  
 शमदम नियम नीति नहि जो लहि ॥ परुष वचन कव  
 डं नहि बोलहि ॥ दोहा ॥ निन्दा अस्तु ति उभय सम ममता  
 मम पद कंज ॥ ते स जन मम प्राण प्रिय गुण मन्दिर सु  
 ख पुञ्ज ॥ ६१ ॥ चौपाई ॥ सुनइ अ सन्त न केर सुभाऊ ॥ भुले  
 डं संगति करिय न काऊ ॥ तिन्ह कर संग सदा दुख दाई ॥  
 जिमि कपिल हि बालै हर हाई ॥ खल न्ह हृदय अति ता  
 प विशेषी ॥ जर हिं सदा पर संपति देखी ॥ जहं क डं निन्दा  
 सुन हिं प राई ॥ हर्ष हिं मन इ परी निधि पाई ॥ काम क्रो  
 ध मद लोभ परायण ॥ निर्दय कपटी ऊटिल मला यन  
 बैर अ कारण सब काइ सो ॥ जों करु हित अन हित ता  
 ड सो ॥ ऊटै लेना ऊटै देना ॥ ऊटै भोजन ऊट चवेना ॥  
 बोल हिं वचन मधुर जिमि मोरा ॥ खा हिं मदा अदि हृद



रामा.  
३.  
१४

14

यकठोरा ॥ दोहा ॥ परद्रोही परदारत परथन परअप  
वाद ॥ तेनरपामरपापमयदेहधरेमनुजाद ॥ ६३ ॥ चौपा.  
लोभेश्रोढनलोभेशसन ॥ शिशोदरपरयमपुरासन ॥  
काहूकीजोसनहिंबडाई ॥ आसलेंहिजनुजुडीआई ॥ ज  
बकाहूकेदेखहिंविपती ॥ सुखीहोहिंमानझजगनृपती  
स्वारथरतपरिवारविरोधी ॥ लेपटकामलोभअतिक्रोधी  
मातपितागुरुविप्रनमानहिं ॥ आपुगएअरुचालदिमान  
हिं ॥ करहिंमोहवशद्रोहपरावा ॥ सतसङ्गतिहरिभक्ति  
नभावा ॥ अवगुणसिंधुमंद ॥ मतिकामी ॥ वेदविदुषा  
कपरथस्वामी ॥ विप्रद्रोहपरद्रोहविशेषा ॥ दंभकपट  
जियधरेसवेषा ॥ दोहा ॥ ऐसेअथममनुजखलकृतपु  
गत्रेतानांदि ॥ हापरककु कद्वन्दबद्धहोरुहैकलियुगा  
मांदि ॥ ६३ ॥ चौपाई ॥ परहितसरिसधर्मनहिमाई ॥ परपी  
डासमनहिअथमाई ॥ निर्णयसकलपुराणावेदकर ॥  
कहेउतातजानहिंकोविदनर ॥ नरशरीरथरिजेपरपी  
रा ॥ करहिंतेसहहिंमहाभवभीरा ॥ करहिंमोहवशान  
रअचनाना ॥ स्वारथरतपरलोकनशाना ॥ कालरूपमै  
तिन्हकहेताता ॥ शुभअरुअशुभकर्मफलदाता ॥ अस  
विचारिजोपरमसयाने ॥ भजहिंमोहिसंसृतिदुखजाने  
त्यागहिंकर्मशुभाशुभदायक ॥ भजहिंमोहिसरनरमुनि



नायक ॥ सत्त अत्तन के गुण भाषे ॥ तेन परदिं भव जिन्ह  
 लखिराखे ॥ दोहा ॥ सुनइ तात माया कृत गुण अरु दोष अ  
 नेक ॥ गुण रहउ भयन देवि अहि देवि य सो अ विवेक ॥ ६५  
 चौपाई ॥ श्रीमुख वचन सुनत सब भाई ॥ हर्ष प्रेम नहि हृद  
 य समाई ॥ कर दिवि नय अति वारहिं वारा ॥ हनु मान दि य  
 दर्ष अ पारा ॥ पुनिरहु पति निज मन्दिर गए ॥ इ दिवि थच  
 रित करत नित नय ॥ वार वार नारद मुनि अर्चहिं ॥ चरित  
 पुनित राम कर गावहिं ॥ नित नव चरित देवि मुनि जा  
 ही ॥ ब्रह्म लोक सब कथा कहा ही ॥ सुनि विरञ्चि अति श  
 द सुख मानहिं ॥ पुनि पुनि तात करइ गुण गानहिं ॥ सन  
 कादिक नारदहिं सिहाही ॥ यद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आ  
 ही ॥ सुनि गुण गान समाधि विसारी ॥ सादर सुनहिं प्रे  
 म अधिकारी ॥ दोहा ॥ जीवन मुक्त ब्रह्म पर चरित सुनहिं त  
 जि ध्यान ॥ जे हरिकथान करहिं रति तिन के हृदय पषान  
 चौपाई ॥ एकवार बुनाय बुलाय ॥ गुरु द्विज पुरवासी सब  
 आय ॥ वैदे गुरु द्विज वर मुनि सजन ॥ बोले वचन भक्त भा  
 य भजन ॥ सुनइ सकल पुरजन मम वाणी ॥ कहौ न क  
 कु मम ता अशानी ॥ नहि अनीति नहि ककु प्रभु ताई ॥ सुन  
 इ करइ जो त म हि स हाई ॥ सोइ सेवक प्रियतम मम सोई  
 मम अनुशासन मानै जोई ॥ जो अनीतिक कु भार्ये भाई ॥ तौ



शामा.

३.

१५

१५

मोहिवरजझभयविसराई॥ वडेभारपमानुषतनुपावा॥  
सुरदुर्लभसदगुंथनगावा॥ साधनधाममोतकरद्वारा॥ पा  
इनजोइपरलोकसम्बारा॥ दोहा॥ सोपरत्रदुखपावइसिरधु  
निधूपकृताई॥ कालहिकर्महिईश्वरहिमिष्टादौषलगाई॥  
चौपाई॥ एहितनुकरफलविषयनभाई॥ स्वर्गस्वल्पअनङ्ग  
दुखदाई॥ नरतनुपाइविषयमनदेही॥ यलदिसुधातेश  
ठविषलेही॥ ताहिकवडंभलकहेनकोई॥ गुञ्जागहैपार  
समणिखोई॥ आकरचारिलाखचौराशी॥ योनिनिभ्रमा  
तजीवअविनाशी॥ फिरतसदामायाकेप्रेरे॥ कालकर्मसु  
भावगुणघेरे॥ कवडंककरिकरुणानरदेही॥ देतईशवि  
नुहेतसनेही॥ नरतनुभववारिथिकहवेरा॥ सन्मुखम  
रुतअनुग्रहमेरा॥ कर्णधारसदगुरुदृढनावा॥ दुर्लभसा  
जसलभकरिपावा॥ दोहा॥ जोनतरैभवसागरहिनरसा  
भाजअसपाई॥ सोकृतनिन्दकमन्दमतिआतमहागतिजा  
ई॥ ६॥ चौपाई॥ जोपरलोकइहांसखचहह॥ सुनिममवच  
नहृदयदृढगहह॥ सुलभसुखदमारगयहभाई॥ भक्ति।  
मोरपुगाणप्रतिगाई॥ ज्ञानअगमप्रसुहअनेका॥ साधन  
करिननमनकहंटेका॥ करतकष्टबडपावइकोऊ॥ भक्ति  
हीनप्रियमोहिनसोऊ॥ भक्तिखतेंउसकलसुखखानी॥  
विनसतसंगनपावहिंप्राणी॥ पुण्यपुञ्जविनुमिलहिंस

६६



न्ना ॥ सतसङ्कृति संसृति कर अन्ता ॥ पुण्य एक जगमङ्ग  
 नहिदृजा ॥ मनक्रमवचनविप्रपद पूजा ॥ साउकूलतेहि  
 परमुनिदेवा ॥ जोतजिकपटक रैद्विज सेवा ॥ दोहा ॥ ओरो  
 एकगुप्तमतसबहिकहोंकरजोरि ॥ शङ्करभजनविनार  
 नरभक्तिनपावैमोर ॥ ६८ ॥ चौपाई ॥ कहइ भक्तिपथकवन  
 प्रयासा ॥ योगनमखजपतपउपवासा ॥ सरलसुभावनम  
 नऊटिलाई ॥ यथालाभसन्तोषसदाई ॥ मोरदासकहाइन  
 रआशा ॥ करै कहइ तो कहा विष्णुसा ॥ बडतकहोंकाक  
 थावछाई ॥ एहिआचरणवश्यमैभाई ॥ वैरनविग्रहआश  
 नत्रासा ॥ सखमयताहिसदासबआशा ॥ अनारम्भअनि  
 केतअमानी ॥ अनवअरोषदत्तविज्ञानी ॥ प्रीतिसदास  
 जनसंसर्गा ॥ तृणसमविषयस्वर्गअपवर्गा ॥ भक्तिपदह  
 टनहिशटताई ॥ दुष्टकर्मसबहरिविहाई ॥ दोहा ॥ ममगु  
 णग्रामनामरतगतममतामदमोह ॥ ताकरसखसोउजा  
 नैपरानन्दसन्दोह ॥ ६९ ॥ चौपाई ॥ सुनतसुधासमवचनराम  
 के ॥ सबहिगहेपटकृपाथामके ॥ जननिजनकगुरुबन्धु  
 हमारै ॥ कृपानिधानप्राणतेंप्यारे ॥ तनुयनुधामरामहित  
 कारी ॥ सबविधतमप्रणतारतिहारी ॥ असखितमहवि  
 नुदेउनकोऊ ॥ मातपितास्वारथरतओऊ ॥ हेतरहितपुग  
 युगउपकारी ॥ तमतम्हारसेवकअसरारी ॥ स्वारथमित्र



रामा.  
३.  
१६

सकलजगमाही॥ सपनेअप्रभुपरमारथिनाही॥ सबके  
वचनप्रेमरससाने॥ सुनिरचुनायहृदयहर्षाने॥ निजनि  
जगृहगएआयसुपाई॥ वराणातप्रभुवतकहिहाई॥ दोहा॥  
उमाअवधवासीनरनारिकृतारथरूप॥ ब्रह्मसच्चिदानन्द  
चनरचुनायकजहैभूष॥ १०॥ चौपाई॥ एकवारवशिष्टमुनि  
आए॥ जहोंरामसखधामसहाए॥ अतिआदररचुनायक  
कीन्हा॥ पदपावारिचरणोदकलीन्हा॥ रामसुनअमुनिक  
हकरजोरी॥ कृपासिंधुविनतीककुमोरी॥ देविदेविआ  
चरणतमहारा॥ होतमोहममहृदयअपारा॥ महिमाअमि  
तवेदनहिजाना॥ मैकेहिभांतिकहोंभगवाना॥ उपरोहिती  
कर्मअतिमेंदा॥ वेदपुराणसुस्मृतिकरुनिन्दा॥ जवनले  
उंमैतवहीविधिमोही॥ कहालाभआगेसुततोही॥ परमा  
त्माब्रह्मनररूपा॥ होउहिरचुऊलभूषणभूषा॥ दोहा॥ त  
बमैहृदयविचारकिययोगयज्ञजपदान॥ जेहिदितकरि  
यसोपाउयेधर्मनएहिसमआन॥ ११॥ चौपाई॥ जपतपनिय  
मयोगव्रतधर्मा॥ अतिसंभवनानाविधिकर्मा॥ ज्ञानदया  
दमतीरथमजन॥ जहैलगिधर्मकहैअतिसजन॥ आगा  
मनिगमपुराणअनेका॥ पढेसुनैकरफलप्रभुएका॥ त  
वपदपंकजप्रीतिनिरंतर॥ सबसाधनकरफलयरसद  
र॥ कटैमलकिमलदिकेपोष॥ धृतकिपावकोउवारिविलो



ए॥ प्रेमभक्तिजलवित्रुचुगई॥ अभ्यनारमलकबडंकि  
 जाई॥ सोइ सर्वज्ञतज्ञसोइपंडित॥ सोइ गुणज्ञविज्ञानअखं  
 डित॥ दत्तसकललक्षणपुतसोई॥ जाकें पदसरोजरतिहोई  
 दोहा॥ नाथ एकवरमांगों रामकृपाकरिदेइ॥ जन्मजन्मप्र  
 भुपदकमलकबडंघटजनिनेइ॥ ७२॥ चौपाई॥ असकहिमु  
 निवशिष्टगृहआए॥ कृपासिंधुकेमनअतिभाए॥ हनुमान  
 भरतादिकभाता॥ सरू लियेसेवकसखदाता॥ पुनिकृपालु  
 पुरवाहिरगये॥ गजरथतरंगमंगावतभये॥ देखिकृपाका  
 रिसकलसगहे॥ दिपउचितजिन्हजिन्हजोचाहे॥ हरणस  
 कलप्रमप्रभुप्रमयाई॥ गयजहोंशीतलअमराई॥ भरतदी  
 न्हनिजवसनउसाई॥ बैदेप्रभुसेवहिंसबभाई॥ मारुतस  
 ततबमारुतकरई॥ पुलकगातलोचनजलभरई॥ हनुमान  
 समानवउभागी॥ नहिकोउरामचरणअनुरागी॥ गिरिजा  
 जासुप्रीतिसेवकाई॥ बारवारप्रभुनिजमुखगाई॥ दोहा॥ ते  
 हिअवसरमुनिनारदआएकरतलवीन॥ गावनलागैरामक  
 लकीरतिसदानवीन॥ ७३॥ चौपाई॥ मामवलोकयपंकज  
 लोचन॥ कृपाविलोकनिसोचविशोचन॥ नीलतामरमण्या  
 मकामअरि॥ हृदयकंजमकरंदमधुपहरि॥ जातधानब  
 रुथबलमञ्जन॥ दुनिसज्जनरंजनअथगञ्जन॥ भूसरश  
 शिनवचृन्दवलाहक॥ अशरणाशरणादीनजनगाहक॥

भयानकी



राम.  
३.  
१३

भुजबलविपुलभारमहिखंडित॥खरदृषणविशयवथ  
पंडित॥रावणारिसखरूपभूषवर॥जयदशरथकुलकु  
मुदसुधाकर॥सुयशपुत्राणविदितनिगमागम॥गावत  
सुरमुनिसत्तसमागम॥कारुणीकबालीमदावणउन॥स  
वविथकुशलकोशलामंडन॥कलिमलमथनसममताह  
न॥तलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन॥दोहा॥प्रेमसहित।  
मुनिनारदवरणिरामगुणग्राम॥शोभासिंधुहृदयथरिग  
पजहांविधिधाम॥७५॥चौपाई॥गिरिजासुनइविशदया  
हकथा॥मैसबकहीमोरिमतियथा॥रामचरितशतकोटि  
अपारा॥श्रुतिशारदानवरणौपारा॥रामअनन्यअनन्यगु  
णानि॥जन्मकर्मअनन्यअमानि॥जलसीकरमहिरजग  
णिजारी॥रघुपतिचरितनवरणिसिगही॥विमलकथाय  
दहरिपददायिनि॥भक्तिहोइसुनिप्रभुअनपायिनि॥उमा  
कहेउसोकथासुहाई॥जोभुषुणिउखगपतिहिंसुनाई॥क  
कुकरामगुणकहेउंवावानी॥अवकाकहोंसोकहइभवानी  
सुनिभुभकथाउमाहर्षानी॥बोलीअतिविनीतमृदुवाणी  
यन्ययन्यमैयन्यपुरारी॥सुनेउंरामगुणभवभयकारी॥  
७६॥तहारीकृपाकृपायतनअवकृतकृत्यनमोद॥जानेउ  
रामप्रतापप्रभुचिदानन्दसन्दोद॥७७॥नायतवाननशशि  
सबतकथासुधारुवीर॥अवगापुटनिमनपानकरिनहि



अवातमतिथीर ॥ ७६ ॥ चौपाई ॥ रामचरितजे सुनत अवा  
 ही ॥ रसविशेष जानाति नही ॥ जीवनमुक्त महा मुनि  
 जेऊ ॥ हरिगुण सुनत निरन्तर तेऊ ॥ भवसागर चह पार  
 जा पावा ॥ राम कथा ताक डट छनावा ॥ विषयिन कहें पु  
 नि हरिगुण ग्रामा ॥ अवण सुख द्युमन विग्रामा ॥ अ  
 वण वन अस को जग माही ॥ जा दिन रघुपतिकथा सु  
 हाही ॥ तेज उजीवनि जात मवाती ॥ जिनहिं न रघुपति  
 कथा सोहाती ॥ हरिचरित्र मान सत मगावा ॥ सुनि मै ना  
 य परम सुख पावा ॥ तम जो कहाय कह कथा सुहाई ॥ काक  
 भुसुणि उगरु उ प्रतिगाई ॥ दोहा ॥ विरत ज्ञान विज्ञान टछ  
 रामचरण अति नेह ॥ वायसत नुरघुपति भगति मोहि प  
 रम सहै ॥ ७७ ॥ चौपाई ॥ नर सहस्र महसुन ड पुरारी ॥ को  
 उ एक होइ धर्म ब्रत धारी ॥ धर्मशील कोटि कमहं कोई ॥ वि  
 षय विमुख विरागरत होई ॥ कोटि विरक्त मध्य प्रतिकहं  
 सम्यक् ज्ञान सकत कोउ लहं ॥ ज्ञान वन कोटि कमहं को  
 ई ॥ जीवनमुक्त सकत जग सोई ॥ तिन सहस्र महं सब सुख  
 खानी ॥ दुर्लभ ब्रह्म निरत विज्ञानी ॥ धर्मशील विरक्त अरु  
 ज्ञानी ॥ जीवनमुक्त ब्रह्म परानी ॥ सबतें सो दुर्लभ सरणी  
 या ॥ राम भक्ति रत गत मदमाया ॥ सो हरि भक्तिका क कि  
 मि पाई ॥ दिखनाय सोहि कहहु बुझाई ॥ दोहा ॥ राम पराय



सामा.  
३.  
१८

१८

एतान्नरतगुणगारमतिपीर॥ नाथकहइकेदिका  
रणपायउकाकशरीर॥ ७८ ॥ चौपाई ॥ यहप्रभुचरितपा  
वित्रसदावा॥ सुनइकृपालुकाककहपावा॥ तमहके  
हिभांतिसुनामदनारी॥ कहइमोहिअतिकौतुकभारी  
गरुडमहाजानीगुणराशी॥ हरिसेवकअतिनिकटनि  
वासी॥ तिहिंकेदिहेतुकाकसनजाई॥ सुनीकथासु  
निनिकरविदाई॥ कहइकवनिविथभासम्बादा॥ दौद  
रिभक्तकाकउरगादा॥ गौरिगिरासुनिसरलसुदाई॥ वो  
लेशिवसादरसुखपाई॥ धन्यसतीपावनिमतितोरी॥ र  
घुपतिचरणप्रीतिनहिथोरी॥ सुनइपरमपुनीतइति  
दासा॥ जोसुनसकलशोकधमनाशा॥ उपजदिरामच  
रणविश्वासा॥ भवनिथितरुकरविनहिप्रयासा॥ दोहा  
पेसेउप्रश्नविहङ्गपतिकीन्दकाकसनजाइ॥ सोसबसा  
दरकहइमैंसुनइउमाचितलाइ॥ ७९ ॥ चौपाई ॥ मैंजिमि  
कथासुनीभवमोचनि॥ सोप्रसङ्गसुनुसुखिसुलोच  
नि॥ प्रथमदत्तगृहतवग्रवतारा॥ सतीनामतवरदात  
महारा॥ दत्तयज्ञममभाअपमाना॥ तमअतिकोपतक  
तहंप्राणा॥ ममअनुचरन्हकीन्दमखभक्ता॥ जानइसो  
तमसकलप्रसङ्गा॥ तवअतिशोचभएउमनमोरे॥ दुखि  
तभएउवियोगप्रियतोरे॥ सुन्दरवनगिरिसरिततडागा



कौतुक देखत फिरों विरागा ॥ गिरिस मेरु उत्तर दिशि  
 दूरी ॥ नील शैल एक सुन्दर भूरी ॥ तासु कनक मय शिख  
 र सुहाए ॥ चारि चारु मोरे मन भाए ॥ तेहि पर एक एक वि  
 टय विणाला ॥ बट पीपर पाकरी रसाला ॥ शैलो परिसर  
 सुन्दर सोहा ॥ मणि सोपान देवि मन मोहा ॥ दोहा ॥ श्री  
 तल अमल मधुर जल जल ज विपुल बझरू ॥ कूज तक  
 लख हंस गण गुञ्जत मञ्जु लभू ॥ ८० ॥ चौपाई ॥ तिहिं  
 गिरि रुचिर वसै खग सोई ॥ तासु नाश कल्याण न होई ॥  
 माया कृत गुण दोष अनेका ॥ मोह मनोज आदि अविवे  
 का ॥ रहे व्यापि समस्त जग माही ॥ तिहिं गिरि निकट कव  
 डं नहि जाही ॥ तहं वसि हरि हिं भजै जिमिका गा ॥ मोस  
 ण उमा सहित अत्र रागा ॥ पीपर तरु तरु ध्यान सोधरई ॥  
 जाय यज्ञ पाकरित रकरई ॥ आश्रु कोह करुमान सपूजा ॥  
 तजि हरि भजन काजन दिह जा ॥ बट तर करु हरि कथा  
 प्रसङ्ग ॥ आवहिं सुनै अनेक विहङ्ग ॥ राम चरित विचि  
 त्र विथनाना ॥ प्रेम सहित करु सादर गाना ॥ सुनहिं सक  
 ल मति विमल मराला ॥ वसहिं निरन्तर जेतै दिताला ॥ ज  
 ब मैं जाइ सो कौतुक देखा ॥ उर उष जा आनन्द विशेषा ॥  
 दोहा ॥ तब ककु काल मराल तनु धरित हं कीन्ह निवास  
 सादर सुनिरुपति चरित पुनि आयउं कैलास ॥ ८१ ॥ दो-



रामा.

३.

१५

१९

गिरिजा कहेउं सो सब इतिहास॥ मैं जेहिं समय गवउ  
खगपाणा॥ अब सो कथा सुनइ जेहिं हेत॥ गपउ का क  
पहिं खगकुल केत॥ जब रघुनाथ कीन्ह रात्री॥ स  
मुजत चरित होति मोहि ब्रीडा॥ इन्द्र जीत कर आ प्रवेधा  
वा॥ तब नारद मुनि गरुड पदावा॥ वन्यन काटि गपउ  
रगादा॥ उपजाइ दय प्रचाण विषादा॥ प्रभु वन्यन स  
मुजत बड भांती॥ करत विचार उर गआ गती॥ व्यापक  
ब्रह्म विरज वागीशा॥ माया मोह पार परमीशा॥ सो अ  
ब नार सुनेउ जग माहीं॥ देखेउ सो प्रभाव ककुनाहीं॥  
दोहा॥ भव वन्यन ते कूटहिं न रज पिजा कर नाम॥ खर्व  
निशाचर बांधेउ नाग पाशा सो राम॥ ८२॥ चौपाई॥ नाना  
भांति मनहिं स मुजावा॥ प्रगटन ज्ञान हृदय भ्रम छावा  
खेद खिन्न मन तर्क बजाई॥ भपउ मोह वश त म्हरी हि  
नाई॥ व्याकुल गपउ देव अविषाहीं॥ कहे सिजो संशय  
निज मन माहीं॥ सुनि नारदहिं ला गि अति दया॥ सुव  
खग प्रबल राम की माया॥ जो ज्ञानिन्ह कर चित अपह  
रई॥ वरिआई विमोह मन करई॥ जेहिं बड वारन चावा  
मोही सोइ व्यापेउ विह रूपति तोही॥ महामोह उपजा  
मन तोरे॥ मिरिहिं न वेगि कहे खग मोरे॥ चतुरानन प  
हिं जाइ खगेशा॥ सोइ करेउ जो देखिनि देशा॥ दोहा॥ अ



सकहिचलेदेवअधिकरत रामगुणगान॥हरिमा  
 याबलवरणातपुनिपुनिपरमसुजान॥८३॥चौपाई॥  
 तबखगपतिविरञ्चिपहंगपऊ॥निजसन्देहसुनावत  
 भपऊ॥सुनिविरञ्चिरामहिंसिरनावा॥समुजिप्रतापप्रे  
 मउरकावा॥मनमहेकरहिंविचारविधाता॥मायावश  
 कविकोविदज्ञाता॥हरिमायाकरअमितप्रभावा॥वि  
 पुलवारजेहिंमोहिनचावा॥अगजगमयसबममउप  
 जाया॥नहिआश्चर्यमोहिलगाराया॥तबबोलेविधिगि  
 रासुहाई॥जानुमहेशरामप्रभुताई॥वैनतेयशङ्करप  
 हिंजाहू॥तातअनतपूछऊजनिकाहू॥तहंहोउहिंतब  
 संशयहानी॥चलुविहङ्गपतिसुनिविधिवाणी॥दोह  
 परमातरविहङ्गपतितबआपउममपास॥जातरहेउ  
 ऊवेरगृहरहेऊमाकैलास॥८४॥चौपाई॥तेहिममप  
 दसादरसिरनावा॥पुनिआपनसन्देहसुनाव॥सुनिता  
 करविनीतमृदुवानी॥प्रेमसहितमैकहेउंभवानी॥मि  
 लेऊगरुउमारगमहंमोही॥कवनभांतिमुमुजावोंतो  
 ही॥जबबडकालकरियसतसङ्ग॥तबसबहिहोउंसे  
 शयभङ्ग॥सुनियतहोहरिकथासुहाई॥नानाभांतिमु  
 निन्दजोगाई॥जेहिंमहंआदिमध्यअवसाना॥प्रभुप्रति  
 पायसमभगवाना॥नितहरिकथाहोतिजहंभाई॥पठ



रामा.

३.

२०

20

वोंतोहि सुनइतहं जाई॥ जानहिं सुनत सकल सन्देहा  
होइ हिं राम चरण छनेहा॥ दोहा॥ विनु सत सङ्ग न हरि  
कथा तेहि विनु मोहन भाग॥ मोह गण विनु राम पद हो  
इन छत्र अनु रागा॥ ८५॥ चौपाई॥ मिलहि नरनुपति विनु  
अनु रागा॥ किये योग जप ज्ञान विरागा॥ उत्तर दिशि सु  
न्दर गिरि नीला॥ तहै रह का कभु सुणिउ सुशीला॥ रा  
म भक्ति पथ परम प्रवीणा॥ जानी गुण गृह बड्काली  
ना॥ राम कथा सोइ कहै निरन्तर॥ सादर सुनहिं विविध  
विहङ्गवर॥ जाइ सुनइतहं हरि गुण भूरी॥ होइ हिं मो  
ह जनित दुख दूरी॥ मैं सब जव तेंहिं कहा बुजाई॥ चले  
उर धिमम पद सिर नाई॥ ता तें उमान मैं समुजावा॥ रघु  
पति कृपा मर्म मैं पावा॥ होइ हिं कीन्ह कवडं अभिमाना  
सोखौ वैचह कृपानिधाना॥ कहु तेहि तें पुनि मैं न हिरा  
वा॥ समुजै खग खग हौं की भाषा॥ प्रभु माया बलवन्त  
भवानी॥ जाहि न मोह कवन अस जानी॥ दोहा॥ जानी भ  
क्त शिरो मणि त्रिभुवन पति करयान॥ ताहि मोह माया  
प्रवल पामर करहिं गुमान॥ ८६॥ शिव विरंचि कहें मोह  
को हैव पुरा आन॥ अस जिय जानि भजहिं मुनि माया प  
ति भगवान॥ ८७॥ चौपाई॥ गये उगारु जहै न मै भुसुणी  
मति गुं रहि भक्ति आवेडी॥ देखि शैल प्रसन्न मन भा



पऊ॥ माया मोह शोच भ्रम गपऊ॥ करित आगम जन  
 जल पाना॥ वट तरंग पउ हृदय दर्शना॥ बृद्ध बृद्ध विहङ्ग  
 तहं आप॥ सुने राम के चरित सुहाए॥ कथा आरम्भ करे  
 सोरचाहा॥ ताही समय गपउ खगनाहा॥ आवत देखि स  
 कल खग राजा॥ हर्ष उवाच समहित समाजा॥ अति आद  
 र खग पतिकर कीन्हा॥ स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा॥ क  
 रि पूजा समेत अवरागा॥ मधुर वचन तब बोले उतब कागा  
 दोहा॥ नाथ कृतारथ भयेउं मैतब दरशन खग राजा॥ आप  
 सुदेइ सो करों अब प्रभु आयेइ केहिकाज॥ ८५॥ सदा कृता  
 रथ रूप तम कर मृदु वचन खगेश॥ जाकी अस्तुति सादर  
 निज मुख कीन्ह महेश॥ ८६॥ चौपाई॥ सुनइ तात जेहिका  
 रज आयेउं॥ सो सब भयेउ दर्शत बपायेउं॥ देखि परम पाव  
 न तब आश्रम॥ गपउ मोह संशय नाना भ्रम॥ अब श्री राम  
 कथा अति पावनि॥ सदा सुख ददुख पुञ्जन पावनि॥ साद  
 र तात सुनावइ मोही॥ बार बार विनवों प्रभु तोही॥ सुनत ग  
 रुउ की गिरा विनीता॥ सरल सप्रेम सुख दपुनीता॥ भपउ ता  
 सुमन परम उक्ताहा॥ कहै लागु रघुपति गुणा गाहा॥ प्रथ  
 म हिं अति अनुराग भवानी॥ राम चरित सरकहे सिवाखानी  
 पुनि नारद कर जोइ अणगा॥ कहै सिव इरि रावण अवतार  
 प्रभु अवतार कथा पुनि गाई॥ पुनि शिशु चरित कहै सिमन ला

मलार पुत्र  
 नट खग



रामा-

३०

२१

३॥**दोहा**॥ बालचरित कहि विविध विध मनमहं परम  
उक्ताह ॥ अविद्यागमन कहै सि पुनि श्रीरघुवीर विवाह ॥  
**चौपाई** ॥ बद्धरि राम अभिषेक प्रसंगा ॥ पुनि नृपवचन राज  
रसभंगा ॥ पुरवासिन कर विरह विषादा ॥ कहै सि राम ल  
क्ष्मण सखादा ॥ विपिन गमन के बट अचरागा ॥ सरसरि  
उत्तरि निवास प्रयागा ॥ बालमीक प्रभु मिलन वखाना ॥ चि  
त्रकूट जिमि वस भगवाना ॥ सचिवागमन नगर नृप मर  
णा ॥ भरतागमन प्रेम पुनि वरणा ॥ करि नृप क्रिया संग  
पुरवासी ॥ भरत गणत है प्रभु सखराणी ॥ पुनि रघुपति ब  
द्ध विध समुजाय ॥ लेपादुका अथ वय फिरि आय ॥ भरत रह  
नि सरपति सत करणी ॥ प्रभु अरु अत्रि भेट पुनि वरणी ॥  
**दोहा** ॥ कहि विराय वय जाहि विध देहत जी शरभंगा ॥ वर  
णि सुती दाण प्रेम पुनि प्रभु अगमत्य सत संग ॥ २१ ॥ **चौ०**  
कहि दंडक वन पावन ताई ॥ गुप्रमश्री पुनि तेहि गाई ॥ पु  
नि प्रभु पञ्चवटी कृत वासा ॥ भंजि सकल मुनि न्ह कीनासा  
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा ॥ सूर्यनखा जिमि कीन्ह ऊरु  
पा ॥ खरदूषण वय बद्धरि वखाना ॥ जिमि सब मर्म दण्डान  
न जाना ॥ दशकंथर मारी चवत कही ॥ जेदि विध भई सक  
ल तेदि कही ॥ पुनि माया सीता करहरणी ॥ श्रीरघुवीर वि  
रह ककु वरणी ॥ पुनि प्रभु प्रक्रिया जिमि किन्ही ॥ वधि

२०



कबंधशवरिदिगतिदिन्ही॥ बद्धरिविरहवरणातरबुवीरा  
 जेदिविथगणउसरोवरतीरा॥ दोहा॥ प्रभुनारदसंवादकदि।  
 मारुतिमिलनप्रसंग॥ पुनिसुग्रीवमिताईबालिप्राणकरभे  
 ग॥ ५२॥ कपिहितिलककरिप्रभुकृतशैलप्रवर्षणवास॥  
 वर्णातवर्षासरदरुतगमरोषकपिनास॥ ५३॥ चौपाई॥ जे।  
 हिविथिकपिपतिकीशपटाए॥ सीताखोजसकलदिशिधा  
 ए॥ विवरप्रवेशकीन्हजेहिभांती॥ कपिन्हबहोरिमिलासं।  
 पाती॥ सुनिसवकथासमीरकुमारा॥ लोचनभणउपयोधि  
 अणारा॥ लंकाकपिप्रवेशजिमिकीन्हा॥ पुनिसीतहिधीर  
 जजिमिदीन्हा॥ वनउजारिरावणदिप्रबोधी॥ पुरदहिलो  
 वेउबद्धरिपयोधी॥ आएकपिसवजहंरघुराई॥ वैदेहीकै।  
 कुशलसुनाई॥ सेनसमेंतयचारबुवीरा॥ उतरेजाइवारिनि  
 थितीरा॥ मिलाविभीषणजेदिविथयाई॥ सागरनिग्रहका  
 णासुनाई॥ दोहा॥ सेतबंधिकपिसेनजिमिउतरेसागरपा  
 र॥ गयोवशीढीवीरवरजेदिविथबालिकुमार॥ ५४॥ निशि  
 चरकीशलराईवरणिसिविविथप्रकार॥ कुम्भकर्णचनना  
 दकरबलपौरुषसंहार॥ ५५॥ चौपाई॥ निशिचरनिकरमरा  
 णविथनाना॥ रघुपतिरावणसमरबखाना॥ रावणवधम  
 न्दोदरिशाका॥ रावणविभीषणदेवअणोका॥ सीतारघुपा  
 तिमिलनबहोरी॥ सरन्हकीन्हअस्तिकरजोरी॥ पुनिपु।



रामा.

३.

२२

22

व्यकचडिकपिन्हसमेता॥ प्रवयचलेप्रभुकृपानिकेता॥  
जेहिविथरामनगरनिजआये॥ वायसविशदचरितसबगा  
ये॥ कहेसिवहोरिरामअभिषेका॥ पुरवर्णननृपनीतिअ  
नेका॥ कथासमस्तभुसुणिउवावानी॥ जोमैतमसनकही  
भवानी॥ सुनिसबरामकथाखगनाहा॥ कहतवचनमन  
परमउक्ताहा॥ सोरठा॥ गणउमोरसन्देहसुनेउसकलरचु  
पतिचरित॥ भणउरामपदनेहतवप्रसादवायसतिलक॥  
मोहिभणउअतिमोहप्रभुबंधनररामहनिरवि॥ चिदान  
न्दसन्देहरामविकलकारणकवन॥ २५॥ चौपाई॥ देखिच  
रितअतिनरअनुसारी॥ भणउहृदयममसंशयभारी॥ सोभ्र  
मअबमैदितकरिजाना॥ कीन्हअनुग्रहकृपानियाना॥  
जोअतिआतपव्याकुलहोई॥ तरुकायासुखजानैसोई॥  
जानहिहोतमोहअतिमोही॥ मिलतेउंतातकवनिविथतो  
ही॥ सनतेउंकिमिहरिकथासुहाई॥ अतिविचित्रवद्ववि  
थतमृगाई॥ निगमागमपुराणमतपहा॥ कहहिंसिद्धसु  
निनहिसन्देहा॥ सनविशुद्धमिलहिंपरितेही॥ चितवदि  
रामकृपाकरिजेही॥ रामकृपातबदरशानभणउ॥ नचम  
सादममसंशयगणऊ॥ दोहा॥ सुनिविहूरूपतिवाणीस  
हितविनयअनुराग॥ पुलकगातलोचनमजलमनदधे  
उअतिकाग॥ २६॥ श्रोतासमति सुशीलप्रचिकथारसिक

२६



हरिदास ॥ पा३३ मा अति गोप्य मत सजन करहि प्रकाश  
 चौपाई ॥ बोले उकागभु संडि बहोरी ॥ न भगनाथ पर प्रीति  
 न थोरी ॥ सब विथनाथ पूज्य तह मेरे ॥ कृपा पात्र रघुनाथ  
 क केरे ॥ तम दिन संशय मोहन माया ॥ मो परनाथ कीन्ह  
 तम दाया ॥ पढे मोह मि सुख गपति तोही ॥ रघुपति दीन्ह  
 बडाई मोही ॥ तम निज मोह कहा खग सांई ॥ सो नहि का  
 कुआ अचर्य गो सांई ॥ नारद शिव विरचि सनका दी ॥ जे मुनि  
 नाथ क आतम बादी ॥ मोहन ग्रंथ कीन्ह केहि केही ॥ को ज  
 ग कामन चावन जेही ॥ तृष्णा के दिन कीन्ह बौराहा ॥ के  
 दि कर हृदय क्रोध नहि दाहा ॥ दोहा ॥ ज्ञानी ताप स मूरक  
 विको विद गुण आगार ॥ केहि की लोभ विउ म्बना कीन्ह  
 न एहि संसार ॥ १०० ॥ श्रीमदवक्रन कीन्ह केहि प्रभुताव  
 धिरन काहि ॥ मृगन यनी के नयन शर के असला गुन जा  
 हि ॥ १०१ ॥ चौपाई ॥ गुण कृत सन्निपात नहि केही ॥ को उन  
 मान मदत जे उन वेही ॥ यौवन ज्वर के दिन दिबल कावा  
 ममता के दि कर यश न नशावा ॥ मत सरका दि कलंक न  
 लावा ॥ का दिन शोक समीर डोलावा ॥ चिन्ता सां पिनिको  
 नहि लाया ॥ को जग जा दिन व्यापी माया ॥ कीट मनोरथ  
 दाह शरीरा ॥ जे दिन लायु गुण को अस भीरा ॥ सुत वितना  
 रिई धणा तीनी ॥ केहि की मति उन्ह कृत न मलीनी ॥ यह सब



रामा.

३.

२३

मायाकरपरिवारा॥ प्रबलश्रमितकोवरणौपारा॥ शिव  
चतुराननजाहिउराही॥ अपरजीवकेहिलेखेमाही॥ दो  
हा॥ व्यापिरहेउसंसारमहंमायाकटकप्रचंड॥ सेनापतिका  
मादिभटदम्भकपटपाषंड॥ १०२॥ सोदासीरघुवीरकीसमु  
जेंमिण्यासोपि॥ कुटैनरामकृपाविनुनाथकहोंपदरोपि॥  
१०३॥ चौपाई॥ जोमायासबजगहिनचावा॥ जासुचरितल  
खिकाऊनपावा॥ सोइप्रभुभूविलासखगराजा॥ नाचन  
दीश्वसहितसमाजा॥ व्यापकब्रह्मअखाउअनन्ता॥ अ  
खिलअमोघशक्तिभगवन्ता॥ सोइसच्चिदानन्दचनरामा  
अजविज्ञानरूपबलधामा॥ अगुणअदम्भगिरागोतीला  
समदर्शीअनवयअजीता॥ निर्मलनिराकारनिर्मोहा॥  
नित्यनिरंजनसखसन्दोहा॥ प्रकृतिपारप्रभुसबउरवा  
सी॥ ब्रह्मनिरीदविरजअविनाशी॥ इहांमोहकरकारणा  
नाही॥ रविसन्मुखतमकबडंकीजाही॥ दोहा॥ भक्तहेतु  
भवानप्रभुरामथरेउतनुभूप॥ कियेचरितपावनपरमप्रा  
कृतनरअनुरूप॥ १०४॥ यथाअनेकवेषधरितृत्पकरैन  
टकोइ॥ सोइसोइभावभावदेखावैव्यापुनहोइनसोइ॥  
चौपाई॥ अमरघुपतिलीलाउरगारी॥ दनुजविमोहनज  
नसखकारी॥ जेमतिमलिनविषयवशाकामी॥ प्रभुपर  
मोदधरहिंमिलामी॥ नयनदोषजाकहेजवहोइ॥ पीत

कानडा  
२



वरणशशिकहकडसोई ॥ जबजेहिदिशिभ्रमहोइखगे  
 णा ॥ सोकहपश्चिमउगोउदिनेशा ॥ नौकारूढचलतजग  
 देखा ॥ अचलमोहवसआप्रहिलेखा ॥ बालकभ्रमहिंन  
 भ्रमहिंशृहादि ॥ कहहिंपरस्परमिण्यावादी ॥ हरिविषक  
 असमोहविहारा ॥ स्वपनेऊनहिअज्ञानप्रसङ्ग ॥ मायाव  
 शमतिमन्दअभागी ॥ हृदयजमनिकाबडविथलागी ॥  
 नेशठहठवशासंशयकरही ॥ निजअज्ञानरुमपरथरही ॥  
 दोहा ॥ कामक्रोधमदलोभरतशृहासकडखरूप ॥ तेकि  
 मिजानहिंरचुपतिहिमूढपरेतमकूप ॥ १०६ ॥ निर्गुणरू  
 पसुलभअनिसुगुणनजानैकोइ ॥ सुगमअगमनानाच  
 रितसुनिसुनिमनभ्रमहोइ ॥ १०७ ॥ चौपाई ॥ शृणुखगप  
 तिरचुपतिप्रभुताई ॥ कहायणामतिकथासुहाई ॥ जेहि  
 विथमोहभयप्रभुमोही ॥ सोसबचरितसुनावोंतोही ॥ रा  
 मकृपाभाजनतम्हताता ॥ हरिगुणप्रीतिमोहिसुखदा  
 ता ॥ तातेंनहिककुतम्हदिदुगवों ॥ परमरहस्यमनोहरगा  
 वों ॥ सुनइरामकरसहजसुभाऊ ॥ जनअभिमाननराख  
 हिंकाऊ ॥ संसृतिमूलमूलप्रदनाना ॥ सकलशोकदाया  
 कअभिमान ॥ तातेंकरहिंकृपानिधिहरी ॥ सेवकपरम  
 मताअतिभूरी ॥ निमिशिष्यतनुब्रणहोइगोसोई ॥ मातु  
 निरावकदिनकीनाई ॥ दोहा ॥ यद्यपिप्रथमदुखपावैरोहै



रामा.  
३.  
२५.

बालप्रपीर॥ व्याधिनाशदितजननीगणेशनसोशिशुपी।  
१॥१०८॥ तिमिरवुपतिनिजदासकरहरहिमानहितलागि  
तलसिदासपैसैप्रभुहिंकसनभजसिधुमत्यागि॥१०९॥  
**चौपाई॥** रामकृपाआपनिजउतार्इ॥ कहौखगेशसुनइम  
नलार्इ॥ जबजबगाममनुजतनुपरही॥ भक्तदेवलीलाबड  
करही॥ तबतबअवधपुरीमैजाऊं॥ बालचरितविलोकिद  
र्षाऊं॥ जन्मगहोत्सवदेखौंजार्इ॥ वर्षपांचतहैरहौलोभाई  
इष्टदेवममबालकरामा॥ शोभावपुषिकोदिशतकामा॥  
निजप्रभुवदननिहारिनिहारी॥ लोचनसफलकरोउरगारी  
लचुवायसवपुथरिहरिसंगा॥ देखौंबालचरितबडरंगा॥  
**दोहा॥** लरिकाईजहंजहंफिरहिंतहंतहंसऊउडाउं॥ जुठन  
परैअजिरमहंसोउठारकरिखाउं॥११०॥ एकवारअतिशैश  
वचरितकिपरचुवीर॥ समिरतप्रभुलीलासोरपुलकित।  
भयउशरीर॥१११॥ **चौपाई॥** कहैभुसुगिउसुनइखगनायक  
रामचरितसेवकसखदायक॥ नृपमन्दिरसन्दरसबभांती  
खचितकनकमणिनानाजाती॥ वरणिनजाइरुचिरअरु  
नार्इ॥ जहंखेलहिंनितचारिउभाई॥ बालविनोदकरतरचु  
गार्इ॥ विचरतअजिरजननिसखदार्इ॥ मरकतमुदुलकले।  
वरणामा॥ अंगअंगप्रतिकविवदकामा॥ नवगजीवअरु  
गामदचरणा॥ पदजरुचिरनखशशिदुतिहरणा॥ ललित



अङ्कजलिषादिकचारी॥ नूपुरचारुमधुररवकारी॥  
 चारुपुरटमणिरचितवनार्ई॥ कटिकिङ्किणीकलमुख  
 रसहारई॥ दोहा॥ रेखात्रयसुन्दरउदरनाभिरुचिरगंभीर  
 उरआवतभ्राजतविविधबालविभूषणवीर॥ १३॥ चौपा  
 अरुणपाणिनखकरजमनोहर॥ बाहुविशालविभूष  
 णसुन्दर॥ स्कन्धबालकेहरिदरग्रीवा॥ चारुचिबुकआ  
 ननकुविसीवा॥ कलवलवचनअथरअरुनारे॥ दुइदुइद  
 शानविषादवरवारे॥ ललितकपोलमनोहरनासा॥ सक  
 लसखदशशिकरसमहासा॥ नीलकज्जलोचनभव  
 मोचन॥ भ्राजतभालतिलकगोरोचन॥ विकटभुजुटि  
 समप्रवणसुहाए॥ ऊञ्चितकचमेचककुविक्राए॥ पी  
 तजीनजगुलीतनुसोही॥ किलकनिचितवनिभावति  
 मोही॥ रूपराशिनृपअजिरविहारी॥ नाचहिंनिजप्रति  
 विम्बनिहारी॥ मोहिमनकरहिंविविधविधक्रीडा॥ वर  
 णातचरितहोतिमनक्रीडा॥ किलकतमोहियरनजवधा  
 बहिं॥ चलौभाजितवपूपदिखावहिं॥ दोहा॥ आवतनि  
 कटहमहिंप्रभुभाजतरुदनकराहिं॥ जाउंसमीपगहन  
 पदफिरिफिरिचितैपराहिं॥ १४॥ प्राकृतशिशुइवलीला  
 टेखिमपउमोहिमोह॥ कवनचरितकरतप्रभुचिदानन्द  
 सन्दोह॥ १५॥ चौपाई॥ इतनामनआनतखगशया॥ रघु॥



रामा.

३

२५

पतिप्रेरितव्यापीमाया॥ सोमायानदुखदमोहिकाही  
आनजीवश्वससृतिनाही॥ नाथइहो ककुकारणाआना  
सुनइसोसावधानहरिजाना॥ ज्ञानअखण्डएकसीता  
वर॥ मायावश्यजीवचराचर॥ जोसबकेरहज्ञानएकर  
स॥ ईश्वरजीवहिंभेदकहइकस॥ मायावश्यजीवअभि  
मानी॥ ईशवश्यमायागुणालानी॥ परवशजीवस्ववश  
भगवन्ता॥ जीवअनेकएकश्रीकन्ता॥ मुधाभेदयद्यपि।  
कृतमाया॥ विनुहरिजाइनकोटिउपाया॥ दोहा॥ राम  
चन्द्रकेभजनविनुजोचहपदनिर्वाण॥ ज्ञानबन्तअपि।  
सोनरपशुविनुपूछविषाण॥ ११५॥ राकापतिषोउपाउ  
गहिंतारागणसमुदाय॥ सकलगिरिन्दबलाइयैरवि  
विनुरातिनजाय॥ ११६॥ चौपाई॥ तैसहिंविनुहरिभजन।  
खोशा॥ मिटैनजीवनकेरकलेशा॥ हरिसेवकहिनव्य  
पअविया॥ प्रभुप्रेरिततेहिव्यापैविया॥ तातेंनाशनहोइ  
दासकर॥ भेदभक्तिवाछैविहइवर॥ भ्रमतेंचकितराम  
मोहिदेखा॥ विहंसेसोमृणचरितविशेषा॥ तेहिंकोत  
ककरमर्मनकाह॥ जानाअनुजनमातपिताह॥ जाउ  
पाणिपापमोहिधरणा॥ श्यामलगातअरुणकरचरणा  
तबमैंभागिचलेउरगारी॥ रामगहनकहंभुजापमारी॥  
जिमिजिमिहरिउराउंअकाशा॥ तहहरिभुजदेखोंनिजगा



शा॥**दोहा॥** ब्रह्मलोकलगिपउमैंचितपऊंपाछउडात  
 युगअंगुलकरवीचसबगमभुजहिंमोहितात॥११०॥  
 सुप्तावरणभेदकरिजहैलगिगतिरहिमोरि॥गपउत  
 होप्रभुभुजनिरखिब्याऊलभपउवहोरि॥१११॥**चौपा०**  
 मूंदेउनयनत्रसितजवभपउं॥पुनिचितवतकोशाल  
 पुरगपउं॥मोहिविलोकिराममुसकाही॥विहंसत  
 तरितगपउमुखमाही॥उदरमाऊशृणुअणउजराया॥  
 देखेउबझब्रह्माएनिकाया॥अतिविचित्रतहेंलोकअ  
 नेका॥रचनाअधिकएकतेंएका॥कोटिनचतरानन  
 गौरीशा॥अगणितउगुगणरविजनीशा॥अगणितलो  
 कपालयमकाला॥अगणितभूधरभूमिविशाला॥सा  
 गरसरिसरविपिनअपारा॥नानाभांतिसृष्टिविस्तारा॥  
 सुरमुनिसिद्धनागनरकिन्नर॥चारिप्रकारजीवचराचर  
**दोहा॥** जोनहिदेखानहिसुनाजोमनझंनसमा३॥सोस  
 वअदभूतदेखेउंवरणिकवनिविधिजा३॥११२॥एकएक  
 ब्रह्माएउमहेंरहेउंवर्षशतएक॥यहिविधदेखतफिरउं  
 मैअंउकटाहअनेक॥११३॥**चौपाई॥** लोकलोकप्रतिभि  
 न्नविधाता॥भिन्नविस्मृशिवमुनिदिशिजाता॥नरगंध  
 वधूतदनाल॥किन्नरनिशिचरपशुखगव्याला॥देव  
 दनुजगणानानाजाती॥सकलजीवतहेंआनहिंभांती

सारांग  
३



रामा.

३.

२६

महिसरसागरसरिगिरिनाना॥सवप्रपंचतहेंआनैआ  
ना॥आउकोषप्रतिप्रतिनिजरूपा॥देखेउंजिनिसअने  
कअनूपा॥अवधपुरीप्रतिभुवननिन्यारी॥शरज्जभिन्न  
भिन्ननरनारी॥दशरथकोशल्याशृणुताता॥विविध  
रूपभरतादिकथाता॥प्रतिब्रह्मांडरामअवतारा॥देखे  
उंवालविनोदउदारा॥**दोहा॥**भिन्नभिन्नसबदीखमेंअ  
तिविचित्रहरियान॥अगणितभुवनफिरेउंप्रभुरामन  
देखेउंआन॥२॥सोरशिशुपनसोरशोभासोरकृपल  
रचुवीर॥भुवनभुवनदेखतफिरेउंप्रेरितमोहसमीर॥  
**चौचाई॥**भ्रमतमोहिब्रह्मांडअनेका॥बीतेमनहुंकल्पश  
तएका॥फिरतफिरतनिजआश्रमआपउं॥तहेंपुनिर  
हिकहुकालगवापउं॥निजप्रभुजन्मअवधसुनिपा  
पउं॥निर्भरप्रेमहरिउदियापउं॥देखेउंजन्ममहोत्सव  
जाई॥जेहिविधप्रथमकहामैगाई॥रामउदरदेखेजग  
नाना॥देखतवनैनजाइवखाना॥तहेंपुनिदेखेउंराम  
सुजाना॥मायापतिकृपालुभगवाना॥करौंविचारव  
होरिवहोरी॥मोहकलिलवापितमतिमोरी॥उमयव  
रीमहेंमैसबदेखा॥भपउंअमितमनमादविशेषा॥**दो०**  
देखिकृपालुविकलमोहिविहेंमेतवरचुवीर॥विहेंस  
नहोमुखबाहरआयउंशृणुमतिथीर॥२॥सोरलरि।

१२२



काई मोसन लगे करण पुनिराम ॥ कोटि भाति समुजावों  
 मन नल है विग्राम ॥ २२५ ॥ चौपाई ॥ देखि चरित इह सो प्रभु  
 तारै ॥ समुक्त देह दशा विसराई ॥ थरणि परे उमुख आव  
 नवाता ॥ जहि जहि आरत जन ज्ञाता ॥ परमाऊल प्रभु मोहि  
 विलोकी ॥ निज माया प्रभुता तवरोकी ॥ करसरोज प्रभु मम  
 सिर थरेऊ ॥ दीन दयालु दुस रहड खहरेऊ ॥ कीन्ह राम मोहि  
 विगत विमोहा ॥ सेवक सुख दकृण संदोहा ॥ प्रभुता प्रथम  
 विचारि विचारी ॥ मन मह होइ हर्ष अति भारी ॥ भक्त वत्सल  
 ता प्रभु की देखी ॥ उपजी मम उर प्रीति विशेषी ॥ सजल न  
 यन पुलकित कर जोरी ॥ कीन्ही बड विध विनय बहोरी ॥ दो  
 हा ॥ सुनि सप्रेम मम बाणी देखि दीन निज दास ॥ वचन सु  
 खदग भीर मृदु बोले रमानिवास ॥ २२५ ॥ कागधु सुगदी मां  
 गुवर अति प्रसन्न मोहि जानि ॥ अणिमादिक सिधि अपर अ  
 धि मोक्ष सकल सुख खानि ॥ २२६ ॥ चौपाई ॥ ज्ञान विवेक वि  
 रति निज्ञाना ॥ सुनि दुर्लभ गति जे जग जाना ॥ आजु देउं सब  
 संशय नाही ॥ मांगु जो तोहि भाव मन माही ॥ सुनि प्रभु वच  
 न अधिक अनुगोउं ॥ मन अनुमान करन तब लागेउं ॥ प्रभु  
 कह देन सकल सुख मदी ॥ भक्ति आपनी देखन कही ॥ भक्ति  
 हीन गुण सुख सब परे ॥ लवण विना बड व्यञ्जन जै से ॥ भ  
 क्रि हीन सुख कवने काजा ॥ अस विचारि बोलेउं खगराजा ॥



रामा.

३०

२३

जो प्रभु दोर प्रसन्न वर देह ॥ मो पर कर द्रु कृपा अरु नेह ॥ म  
न भावत वर मांगौ स्वामी ॥ तम उदार उर अन्न रजामी ॥ दोहा  
अविरल भक्ति विष्णु दत्त वक्त्र तिष्ठ गण जो गाव ॥ जे दिखो  
जत योगीश मुनि प्रभु प्रसाद को उपाव ॥ १२९ ॥ भक्त कल्पतरु  
प्रणत हित कृपा सिंधु सुख धाम ॥ सो निज भक्ति मोहि प्रभु  
देहु दया करि राम ॥ १३० ॥ चौपाई ॥ एवमस्तु कहिर चुकुल  
नायक ॥ बोले वचन परम सुख दायक ॥ शृणु वायस तैं सह  
ज सयाना ॥ काहे न मांगसि अस्वर दाना ॥ सब सुख खानि  
भक्ति तैं मांगी ॥ नहि कोउ जग समान बड भागी ॥ जे मुनि कोटि  
यतन न हिल रह्यो ॥ जो जप जोग अनल तन दह्यो ॥ रीजे उं  
देखितो रिचत राई ॥ मांगेहु भक्ति मोहि अति भाई ॥ शृणु वि  
द्वक्त्र प्रसाद अव मोरे ॥ सब प्रभु गुण वसि है उर तोरे ॥ भक्ति  
ज्ञान विज्ञान विरागा ॥ जो सब चरित रहस्य विभागा ॥ जान  
वतैं सब ही वर भेदा ॥ मम प्रसाद नहि साधन खेदा ॥ दोहा ॥  
माया सम्भव भ्रम सबै अवनहि व्यापि हितोहि ॥ जाने सिद्ध  
ह्य अनादि अज अगुण गुणा कर मोहि ॥ १३१ ॥ मोहि भक्त प्रि  
य मल्लत अस विचारि शृणु काग ॥ काय वचन मन मम पद  
करे सुअचल अनुराग ॥ १३२ ॥ चौपाई ॥ अब शृणु परम विम  
ल मम वाणी ॥ मत्पसु गमनि गमा दिवा ला नी ॥ निज सिद्धां  
त सुनवौ तोही ॥ सुनि मन थरु सुवत जिम न मोही ॥ मम मा



यासम्भवसेसारा॥ जीवचराचरविविधप्रकारा॥ सबमम  
 प्रियसबममउपजाय॥ सबतेंअधिकमनुजमोहिभाय॥ ते  
 हिमहेंद्विजद्विजमहेंअतिथारी॥ तिन्हमहेंनिगमथर्मअनु  
 सारी॥ तिन्हमहेंप्रियविरक्तमुनिज्ञानी॥ ज्ञानिऊतेंअतिप्रि  
 यविज्ञानी॥ तिन्हतेंपुनिमोहिप्रयनिजदासा॥ जेहिगतिमो  
 रमदुसरिआशा॥ पुनिपुनिसत्यकहोंतोहिपांहीं॥ मोहिसे  
 वकसमप्रियकोउनाहीं॥ भक्तिहीनविरचिकिनहोई॥ सब  
 जीवनसमप्रियमोहिसोई॥ भक्तिवन्तअतिनीचौप्राणी॥ मो  
 हिप्राणप्रियअसममवाणी॥ दोहा॥ शुचिसुशीलसेवक।  
 सुमतिप्रियकइकाहिनलाग॥ अतिपराणकहनीतिअस  
 सावधानपूणकाग॥ ११॥ चौपाई॥ एकपिताकेविपुलऊ  
 मारा॥ होइएकगुणशीलअचारा॥ कोउपरितकोउता।  
 एसज्ञाता॥ कोउधनवन्तपूरकोउदाता॥ कोउसर्वजथर्मरत  
 कोई॥ सबपरपितहिंप्रीतिसमहोई॥ कोउपितभक्तवचन  
 मनकर्मा॥ सपनेइजाननदूसरथर्मा॥ सोप्रियसुतपित।  
 णाणसमाना॥ यद्यपिसोसबभांतिअयाना॥ एदिविधजी  
 वचराचरजेते॥ त्रिजगदेवनरअसरसमेते॥ अविलविश्व  
 यहमोउपजाया॥ सबपरमोहिवरावरिदाया॥ तिन्हमह  
 जोपरिरुचिमदमाया॥ भजहिंमोहिमनवचअरुकाया॥ दो०  
 पुरुषनपुंसवतारिदानोवचराचरकोई॥ सर्वभावभजुकप



रामा.  
३.  
२८

रतजिमोहिपरमप्रियसो३॥३२॥**सोरठा**॥ सत्यकहोंखग  
तोहिप्रुचिसेवकममप्राणप्रिय॥ असविचारिभजुमोहि  
परिहरिआशभरोससब॥३३॥**चापाई**॥ कबहुं कालनहि  
व्यापिदितोही॥ सुमिरेइभजेइतिरनरमोही॥ प्रभुवचना  
मृतसुनिनअवाहुं॥ तनुपुलकितमनअतिदर्षाहुं॥ सोसु  
खजानैमनअरुकाना॥ नहिरसनापदिजाइवाखाना॥ प्र  
भुशोभासुखजानहिनयना॥ किमिकहिसकैतिनैनहि  
वयना॥ वइविधमोहिप्रबोधसुखदेई॥ लगेकराणशिप्रु  
कोतकतेई॥ सजलनयनककुमुखकरिरुषा॥ चितैमात  
लागीअतिभूषा॥ देविमातयातरउठिथार्ई॥ कहिमृदुवच  
नलियउलार्ई॥ गोदराखिकरावपयपाना॥ रघुपतिचरि  
तललितकरिगाना॥**सोरठा**॥ जेहिसुखलागिपुरारिअशि  
ववेषकृतशिवसुखद॥ अवधपुरीनरनारितेहिसुखमहं  
सन्ततमगन॥३४॥**सो३**सुखकरलवलेशजिनवारेका  
सपनेइलहेउ॥ तेनहिगणहिलगेशब्रह्मसुखहिंसजन  
सुमति॥३५॥**चौपाई**॥ मैंपुनिअवधरहेउंककुकाला॥ देखे  
उंवालविनोदरसाला॥ रामप्रसादभक्तिवरणपउं॥ प्रभुप  
दवन्दिनिजाअमआपउं॥ तवतेंमोहिनव्यापीमाया॥ जब  
तेरघुनायकअपनाया॥ यहसवप्रचरितमैंगावा॥ हरिमा  
याजिमिमोहिनवावा॥ निजअनुभवअनकहोंखगेशा॥ वि



नुहरिभजननजाहिंकलेशा॥ रामकृपाविनुशृणुएव  
 गराई॥ जोनिनजाइरामप्रभुताई॥ जानेविनुनहोइपरती  
 ती॥ विनुपरतीतिहोइनहिप्रीती॥ प्रीतिविनानहिभक्ति  
 दृढाई॥ जिमिखगेशजलकीचिकनाई॥ सोरठा॥ विनुगु  
 रुहोइकिज्ञानज्ञानकिहोइविरागविनु॥ गावहिंवेदपुरा  
 णसखकिलहहिंहरिभक्तिविनु॥ १२६॥ कोउविश्रामकि  
 णवनातसहजसन्तोषविनु॥ चलैकिजलविनुनावकोटि  
 यतनकरिपचिमरिय॥ १२७॥ चौपाई॥ विनुसन्तोषनका  
 मनशाही॥ कामअकृतसखसपनेऊनाही॥ रामभजन  
 विनुमिटहिकिकामा॥ थलविहीनतरुकबडैकिजामा  
 विनुविज्ञानकिसमताआवे॥ कोउअबकाशकिनभविनु  
 पावै॥ अद्वाविनाथर्मनहिहोई॥ विनुमहिगंधकिपावैको  
 ई॥ विनुतपतेजकिकरुविस्तारा॥ जलविनुरसकिहोइ  
 संसारा॥ शीलकिमिलुविनुबुधसेवकाई॥ जिमिविनुते  
 जनरूपगोसाई॥ निजसखविनुमनहोइकिपीरा॥ पर  
 सकिहोइविहीनसमीरा॥ कवनिउसिद्धिकिविनुविश्वा  
 सा॥ विनुहरिभजननभवभयनाशा॥ दोहा॥ विनुविश्वा  
 सभक्तिनहिनेहिविनुद्रवहिंनराम॥ रामकृपाविनुसपने  
 डूजीवनकिलहविश्राम॥ १२८॥ सोरठा॥ असविचारिमति।  
 भीरनजिऊनरसंशयसकल॥ भजहिंरामरतुवीरकरुणा॥

केदार



गमा.

३.

२५

करसुन्दरसुखद॥३५॥चौपाई॥निजमतिसरिसनाथ  
मैगाई॥प्रभुप्रतापमहिमाखगगाई॥कहिउनककुकरि  
युक्तिविशेषी॥यहसबमैनिजनयनन्ददेखी॥महिमाना  
मरूपगुणगाथा॥सकलअमितअनेतरनुनाथा॥निज  
निजमतिमुनिहरिगुणगावहिं॥निगमशेषशिवपारन  
पावहिं॥तम्हदिआदिखगमशकपर्यन्ता॥नभउडो  
दिनदिपावहिअन्ता॥तिमिरचुपतिमहिमाअवगाहा॥  
तातकबडंकोउपावकिथाहा॥रामकामशतकोटिसुभ  
गतनु॥दुर्गकोटिअमितअरिमर्दन॥शक्रकोटिशतसरि  
सविस्वामा॥नभशतकोटिअमितअवकाशा॥दोहा॥म  
रुतकोटिशतविपुलबलरविशतकोटिप्रकाश॥शशि  
शतकोटिसुशीतलशमनसकलभवत्राम॥१५०॥काल  
कोटिशतसरिसअतिदुस्तरदुर्गतदुरन्त॥धूमकेतुशत  
कोटिसमदुराथर्षभगवन्त॥१५१॥चौपाई॥प्रभुअगाथश  
तकोटिपताला॥शमनकोटिशतसरिसकगला॥तीरथ  
अमितकोटिशतपावन॥नामअखिलअवपुञ्जनशावन  
हिमगिरिकोटिअचलरनुवीरा॥सिंधुकोटिशतसमगा  
मीरा॥कामयेनुशतकोटिसमाना॥सकलकामदयक  
भगवाना॥शारदकोटिअमितचतरार॥विधिशतकोटि  
सुधिनिपुणार॥विष्णुकोटिशतपालनकर्ता॥रुद्रकोटि



शतसमसंहर्ता॥ धनंदकोटिशतसमयनवाना॥ माया  
 कोटिप्रपंचनिधाना॥ भारथरणशतकोटिअहीशा॥ निर  
 वथिनिरुपमप्रभुजगदीशा॥ **छंद**॥ निरुपमनउपमाआ  
 नरामसमानरामनिगमकहै॥ जिमिकोटिशतखद्योत  
 रविसमकहतअतिलचुतालहै॥ **ध**॥ एदिभांतिनिजनिज  
 मतिविलासमुनीशहरिदिवखानही॥ प्रभुभावशादक  
 अतिकृपालसप्रेमतैसखमानही॥ **दोहा**॥ रामअमितगु  
 णासागरथाहकिपावैकोइ॥ सन्तहिसनयशककुसुने  
 उंतमदिसुनायेउसोइ॥ **१५२**॥ **सोरवा**॥ भाववश्यभगवान  
 सुखनिधानकरुणाभवन॥ तजिममतामदमानभजि  
 यमदासीतारमण॥ **१५३**॥ **चौपाई**॥ सुनिभुसंडिकेवचन  
 सुहाये॥ हर्षितखगपतिपंखफुलाये॥ नयननीरमनअ  
 तिदर्षाणा॥ श्रीरघुपतिप्रतापउरआना॥ पाछिलमोह  
 समुजिपकिताना॥ ब्रह्मअनादिसनुजकरिमाना॥ पुनि  
 पुनिकाकचरणसिरनावा॥ जानिरामसमप्रेमबछावा॥  
 गुरुविनुभवनिधितरैनकोई॥ जौविरंचिशंकरसमहोई॥  
 संप्रायसर्पशमेउमोदिताता॥ दुखदलहरिकृतर्कबडवा  
 ना॥ तबसहपगारुउरघुनायक॥ मोदिजियायेइजनसु  
 खदायक॥ तबप्रसादमममोहनशाना॥ रामरहस्यअनुप  
 मजाना॥ **दोहा**॥ तादिप्रसंशोउविविधविधशीसनाइकरजोति



रामा.

३.

१०

वचनसप्रेमविनीतमृदुबोलेऊगरुडवहोरि॥१४४॥प्रभु  
अपनेअविवेकतेंवृजोंस्वामीतोहि॥कृपासिंधुसादरकरु  
जानिदासनिजमोहि॥१४५॥चौपाई॥तमसर्वज्ञतज्ज्ञतमा  
पारा॥सुमतिस्वशीलसरलआचारा॥ज्ञानविरतिविज्ञा  
ननिवासा॥रघुनायककेप्रियतमदासा॥कारणकवन  
देहयहपाई॥तातसकलमोहिकरुडबुजाई॥रामचरित  
सरसुन्दरस्वामी॥पायेइकहाँकरुडनभगामी॥नाथसु  
नामैअसशिवपांही॥महाप्रलयइंनशतवनाही॥मृषा  
वचननदिशंकरकरुहंही॥सोमोरेमनसंशयअहंही॥अ  
गजगजीवनागनरदेवा॥नाथसकलजगकालकलेवा॥  
अंकटाहअमितलयकारी॥कालसदाहरतिक्रमभारी  
सौरदा॥तमहिनव्यापतकालअतिकरालकारणकवन  
सोमोहिकरुडकृपालज्ञानप्रभावकियोगबल॥१४६॥दो  
हा॥प्रभुतबआश्रमआपउंमोरमोहभ्रमभाग॥कारणक  
वनसोनाथसबकरुडसहितअनुराग॥१४७॥चौपाई॥गरु  
उगिरासुनिहर्षेउकागा॥बोलेउउमापरमअनुरागा॥धन्य  
धन्यतबमतिउरगारी॥प्रभुतमहारिमोहिअतिप्यारी॥सु  
नितवप्रभसप्रेमसुहाई॥बहुतजन्मकीअधिमोहिआई  
सबनिजकथाकहोंमैगाई॥तातसुनइसादरमनलाई॥  
जयतपमवशमदमव्रतदाना॥विरतिविवेकयोगविज्ञाना



सब कर फल रूपति पद प्रेमा ॥ तेहि बिनु कोउ न पावै  
 दोषा ॥ एहि तनु राम भक्ति मै पाई ॥ तातें मोहि ममता अथि  
 काई ॥ जेहि तें निज स्वारथ कहु होई ॥ तेहि परम मता करु  
 सब कोई ॥ सोरठा ॥ पन्न गारि अमनीति श्रुति समत सज  
 न कहहिं ॥ अति नीच दूसन प्रीतिकरिय जानि निज परम  
 दित ॥ ४८ ॥ पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटा म्वर रुचिर ॥ कृमि  
 पालै सब कोइ परम अपावन प्राण सम ॥ ४९ ॥ चौपाई ॥  
 स्वारथ सत्य जीव कहें पहा ॥ मन क्रमवचन राम पद नेहा  
 सोइ पावन सोइ शुभग शरीरा ॥ जो तनु पाइ भजियारु वी  
 रा ॥ राम विमुख लहिविधि सम देही ॥ कविको विद न प्र  
 संसहिं तेही ॥ राम भक्ति एहि तनु उर जामी ॥ तातें मोहि प  
 रम प्रिय स्वामी ॥ तजौ न तनु निज उच्छामरणा ॥ तनु वि  
 नु वेद भजन न हिवरणा ॥ प्रथम मोह मोहि बद्ध तवि गो  
 वा ॥ राम विमुख सुख कबहुं न सोवा ॥ नाना जन्म कर्म  
 पुनि नाना ॥ किण्ण योग जप तप मख दाना ॥ कवन योनि  
 जन्मे उंज है नाही ॥ मैख गोस भूमि भूमि जग मांही ॥ देखे  
 उं सब करि कर्म गोसांई ॥ सुखी न भये उं अबहिं की नोई ॥ शु  
 धि मोहि नाथ जन्म बद्ध केरी ॥ शिव प्रसाद मति मोहन चे  
 री ॥ दोहा ॥ अरु मजन्म के चरित अब कहौं सुनइ विहंगे  
 शा ॥ सुनि प्रभु पद रति ऊप जै जातें मिटै कलेश ॥ ५० ॥ पूर



१मा.  
३.  
३१

वकल्पकप्रभुकलियुगमलकरमूल॥नरग्रुनारि  
अथर्मरतसकलनिगमप्रतिकूल॥१५१॥चौपाई॥तेहि  
कलियुगकोशलपुरजाई॥जनमतभण्डेष्टुद्रतनुपाई  
शिवसेवकमनक्रमग्रुवाणी॥आनदेवनिन्दकअभिमा  
नी॥धनमदमतपरमवाचाला॥उग्रबुद्धिउरदम्भविशाला  
यदपिरहेउंरचुपतिरजधानी॥तदपिनककुमहिमातव  
जानी॥अवजानामैअवधप्रभावा॥निगमागमपुराण  
असगावा॥कवनेइजन्मअवधवसजोई॥रामपरायण  
सोपरिहोई॥अवधप्रभावजानजवशाणी॥जवउरवस  
हिंममथनुपाणी॥सोकलिकालकटिनउरगारी॥पाप  
परायणसवनरनारी॥दोहा॥कलमलग्रसेउथर्मसबलु  
प्रभणसदग्रंथ॥देभिननिजमतकल्पिकरिप्रगटकीन्ह  
वदग्रंथ॥१५२॥भण्डलोगसबमोदवशलोभग्रसेउग्रुभ  
कर्म॥शृणुहरियानजाननिधिकहोंककुंककलिधर्म  
चौपाई॥वर्णधर्मनहिआग्रमचारी॥श्रुतिविरोधरतस  
वनरनारी॥द्विजश्रुतिवंचकभूषप्रजाशान॥कोउनमात्र  
निगमअनुशासन॥मारगसोइजाकहेंजोभावा॥पंडित  
सोइजोगालवजावा॥मिथ्यारंभदंभरतजोई॥ताकहेंसंत  
कहेंसबकोई॥सोइसयानजोपरथनहारी॥जोकहेंदंभ  
सोवउआचारी॥जोकहेंदंभसखरीजाना॥कलियुग

गुणगानः

१५३



सोऽगुणवन्तबखाना॥ निराचारजोश्रुतिपथत्यागी॥  
 कलियुगसोऽज्ञानीवैरागी॥ जाकेनखग्रुजटाविशाला  
 सोऽतापसप्रसिद्धकलिकाला॥ दोहा॥ अशुभवेषभूषण  
 थरेंभत्ताभक्षजोखाहिं॥ तेयोगीतेसिद्धनरपूजितकलि॥  
 युगमाहिं॥ १५५॥ सोरठा॥ जेअपकारीचारतिन्हकरगौरव  
 मान्यता॥ मनक्रमवचनलवारतेवक्ताकलिकालमहें॥  
 चौपाई॥ नारिविवशनरसकलगोसाई॥ नाचहिंनटमर्क  
 टकीनारि॥ शूद्रद्विजन्दिउपदेशहिंज्ञाना॥ मेलिजनेऊ  
 लेंहिंऊदाना॥ सबनरकामलोभरतक्रोधी॥ देवविप्रश्रु  
 तिसन्तविरोधी॥ गुणामन्दिरसुन्दरपतित्यागी॥ भजहिं  
 नारिपरपुरुषअभागी॥ सोभागिनीविभूषणहीना॥ वि  
 पवन्हिकैशृङ्गारनवीना॥ गुरुशिष्यअथवथिरकरलोख  
 एकनसुनैएकनहिदेखा॥ हरैशिष्यपनशोकनहरई॥ सो  
 गुरुघोरनरकमहेंपरई॥ मातृपितावालकन्हिबोलाव  
 हिं॥ उदरभरैसोऽथमशिखावहि॥ दोहा॥ ब्रह्मज्ञानरत  
 नारिनरकहदिंनहूसरीवात॥ कौडीउलागिलोभवशक  
 रहिंविप्रगुरुवात॥ १५६॥ वारहिंशूद्रद्विजन्तमनहमत  
 मतेककृष्णादि॥ जानेंब्रह्मसोविप्रवरयांविदिखावहिं  
 डादि॥ १५७॥ चौपाई॥ परवियलंपटकपटसयाने॥ मोहद्रो  
 हममतालपटाने॥ तेअभेदवादीज्ञानीनर॥ देखामैचरि



रामा.  
३.  
३२

त्रकलियुगकर॥आपुगयेअरुआनहिंवालहिं॥जोको  
उफ्रतिमारगप्रतिपालहिं॥कल्पकल्पभरिपकएकनर्का  
परहिंजेदुषहिंफ्रतिकरितर्का॥जेवर्णाथमतेलिऊम्हा  
रा॥स्वपचकिरातकोलकलवारा॥नारिभुईगृहसंपतिना  
शी॥मुउमुउअभएसन्पासी॥तेविप्रनसनआपुपूजावहिं  
उभयलोकनिजहायनशावहिं॥विप्रनिरक्षरलोल्पा  
कामी॥निराचारशाठवृषलीस्वामी॥भूडकरहिंजपतप  
ब्रतनाना॥वेढिबरासनकहहिंपुराणा॥सबनरकल्पि  
तकरहिंअचारा॥जाअनवरणिअनीतिअपारा॥दोहा॥भ  
एवर्णाशङ्करकलिहिंभिन्नसेतसबलोग॥करहिंपा  
पपावहिंदुखदिभयरुजशोकवियोग॥१५८॥फ्रतिसं  
मतहरिभक्तपणसंयुतविरतिविवेक॥तेदिनचलहिंन  
रमोहवशाकल्पहिंपेणअनेक॥१५९॥छंद॥वडदासस  
स्वारहिंभामजती॥विषयाहरिलीन्हिनहीविरती॥तयसी  
यनवल्लदरिद्रग्रही॥कलिकौतकतातनजातकही॥व  
ऊलवन्तिनिकारहिंनारिसती॥गृहआनहिंचेरिनिवेरि  
गती॥सुतमानहिंमातपितातबलों॥अवलाननहीख  
नहीजबलों॥४॥ससुरारिपियारिलगीजबतें॥रिप्ररूप  
ऊदुम्बभयेतबतें॥नृपपापपरायणार्थमनही॥करुदाएउ  
विउम्बप्रजानितही॥५॥यनवल्लऊलीनमलीनअपी॥।



द्विजचिन्हजनेउं उच्चारतपी ॥ नहिमानपुराणाहिंवेदहि  
 जो ॥ हरिसेवकसंतसहीकलिसो ॥ ६ ॥ कविबृन्दउदारधनी  
 नसुनी ॥ गुणद्वयकब्रातनकोपिगुणी ॥ कलिवारहिंवारडु  
 कालपरें ॥ विनुअन्नदुखीसबलोगमरें ॥ ७ ॥ दोहा ॥ शृणुख  
 गेषकलिकपटहठटंभद्वेषपाषंड ॥ कामक्रोधलोभादिम  
 दव्यापिरहेउब्रह्मंड ॥ ८ ॥ तामसधर्मकरिहिंनरजयतय  
 मखब्रतदान ॥ देवनवरषेपरणिपरबुयेंनजामहिंथान ॥ ९  
 ॥ छन्द ॥ अबलाकचभूषणभूरितथा ॥ धनहीनदुखीममता  
 बद्धपा ॥ सुखचाहहिंमूढनयमंरता ॥ मतिथोरिकठोरन  
 कोमलता ॥ १० ॥ नरपीडितरोगनभोगकंदी ॥ अभिमानवि  
 रोधअकारणही ॥ लघुजीवनसम्बतपंचदशा ॥ कल्याण  
 ननाशगुमानअसा ॥ ११ ॥ कलिकालवेहालकियेमनुजा ॥ न  
 हिमानतकोउअनुजातनुजा ॥ नहितोषविचारनशीतलता  
 सबजातिऊजातिभयमरुता ॥ १२ ॥ ईर्ष्यापरुषाखरलोल  
 ता ॥ भरिपुरिरहीसमताविगता ॥ सबलोगवियोगविशे  
 कदप ॥ वर्णाश्रमधर्मअचारगण ॥ १३ ॥ दमदानदयानहिजा  
 नपनी ॥ जउतापरवंचकतावसुनी ॥ तनुपोषकनारिनश  
 मगरे ॥ परतिन्दकजोजगमेंवगरे ॥ १४ ॥ दोहा ॥ शृणुव्या  
 लारिकगलकलिमलअवगुणआगार ॥ गुणोबद्धतक  
 लिपुगक रविनुप्रणसविस्तार ॥ १५ ॥ कृतपुगत्रेतादापर



रामा.  
३.  
३३

ॐ पूजामखग्रहयोग॥ जागति होर सो कलिहरि नाम ते  
पावहि लोग॥ १६३॥ चौपाई॥ कृतयुग सब योगी विज्ञानी  
करि हरि ध्यान तरहिं भव प्राणी॥ वेता विविध यत्न नर कर  
हीं॥ प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं॥ हापर करि रघु पति पद  
पूजा॥ नर भव तरहिं उपाय न दूजा॥ कलि केवल हरि गुण गु  
गगाहा॥ गावत नर पावहिं भव याहा॥ कलियुग योग यत्न  
नहि ज्ञाना॥ एक अथार राम गुण गा ना॥ सब भरो सत जि जो  
भजु रामहिं॥ प्रेम समेत गाव गुण ग्रामहिं॥ सो भवत रुका  
कु संशय नाही॥ नाम प्रताप प्रगट कलि माही॥ कलि कर प  
क पुनीत प्रतापा॥ मान स गुण होर नहिं पापा॥ दोहा॥ क  
लियुग सम युग आन नहि जौ नर करि विष्णु स॥ गा राम गु  
ण गुण विमल भवत रुवि नहि प्रयास॥ १६४॥ प्रगट चारि प  
द धर्म के कलि महै एक प्रधान॥ येन केन विधि दीन्हे ऊं दान  
करै कल्याण॥ १६५॥ चौपाई॥ नित युग धर्म होंहिं सब केरे  
हृदय राम माया के प्रेरे॥ सुख सत्व समता विज्ञाना॥ कृत प्र  
भाव प्रसन्न मन जाना॥ सत्य ब्रह्म क कुरु जरति कर्म॥ सब  
विधि शुभ वेता कर धर्मा॥ बड रज स्वल्प सत्य क कुता मस  
हापर दुर्घणो क भय मानस॥ ताम सब ब्रह्मतर जो गुण पो  
रा॥ कलि प्रभाव विरोध चहुं ओरा॥ बुध युग धर्म जानि म  
न माही॥ तजि शुभ रत धर्म कर ही॥ काल धर्म नहि व्या



पहिंताही॥ रघुपतिचरणप्रीतिअतिजाही॥ नटकृतक  
 पटविटपखगारा॥ नटसेवकहिनव्यापैमाया॥ दोहा  
 हरिमायाकृतदोषगुणविनुहरिभजननजाहिं॥ भजिय  
 रामसबकामतजिअसविचारिमनमाहिं॥ १६६॥ तेहिक  
 लिकालवर्षवझवसेउंअवधविहंगेश॥ परेउंडुःकाल।  
 विपतिवशातबमैंगपउविदेश॥ १६७॥ चौपाई॥ गपउंउजै  
 निसुनऊउरगारी॥ दीनमलीनदरिद्रदुखारी॥ गपकाल  
 ककुसम्यतिपाई॥ तहैपुनिकरौंशम्भुसेवकाई॥ विप्रप  
 कवैदिकशिवपूजा॥ करैसदातेहिकाजनदूजा॥ परम  
 साधुपरमारथविन्दक॥ शम्भुउपासकनहिंहरिनिन्दक  
 सेवोंमैतेहिकपटसमेता॥ द्विजदयालुअतिनीतिनिहे  
 ता॥ बाहिरनमुदेखिमोहिसोई॥ विप्रपणवपुत्रकीनाई  
 शम्भुमंत्रमोहिद्विजवरदीन्हा॥ शुभउपदेशविविधवि  
 धिकीन्हा॥ जयोंमंत्रशिवमन्दिरजाई॥ हृदयदम्भअह  
 मितिअधिकारै॥ दोहा॥ मैखलमलसंजलमतिनीच।  
 जातिवशमोह॥ द्विजहरिजनदेखतज्वरोंकरौविष्णुक  
 रदोह॥ १६८॥ गुरुनितमोहिप्रबोधदुखितदेखिआचार।  
 गणम॥ मोहिउपजैअतिक्रोधदम्भिहिंनीतिकिभावई॥  
 चौपाई॥ एकवारगुरुलीन्हबुलाई॥ मोदिनीतिबझभांति  
 सिखाई॥ शिवसेवाकरफलसुतसोई॥ पविरलभक्तिराम



गमा.

३.

३५

पदहोई॥ रामहिं भजहिं तात शिवधाता॥ नरपामरक।  
रकेतिकवाता॥ जासुचरण शिव अज अनुगामी॥ तासु  
द्रोह सुखचर सि अभागी॥ हरकहं हरि सेवक गुरुकहे  
ऊं॥ सुनिखगनाय हृदय मम दहेऊ॥ अथ मजाति में वि  
द्यापाप॥ भयउं जया अहि दूध पिआप॥ मानी ऊटिल ऊ  
भाग्य ऊजाती॥ गुरुकर द्रोह करों दिन राती॥ अति दया  
लु गुरु स्वल्प न क्रोधा॥ पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा  
जेहिं ते नीच बडाई पावा॥ सो प्रथम हिं दित हि नशावा  
भूम अनल सम्भव मृगा भाई॥ तेहिं बुजावचन पदवी पा  
ई॥ रजमगुपरी निरादर रहई॥ सब कर पद प्रहार नित स  
हई॥ मरुत उडाव प्रथम तेहि भरई॥ पुनि नृप नयन कि  
रीट दिपरई॥ मृगा खगपति अस स मुजि प्रसङ्गा॥ बुध  
नहि करहिं अथ मकर सङ्गा॥ कविको विदगावहिं अस  
नीती॥ खलसन कलहन भलन हि प्रीती॥ उदासीन नि  
तर दिय गोसांई॥ खल परि हरिय स्यान की नाई॥ में खल  
हृदय कपट ऊटिलार्ई॥ गुरु हित कहेन मोहि सुहाई॥ दो  
हा॥ एकवार हर मन्दिर जपतरहेउं शिवनाम॥ गुरु आप  
उअभिमान तेउ दिन हि कीन्ह प्रणाम॥ १०॥ सो दयालु न  
हिकहेउ ककु उर न रोष लवलेषा॥ अति अच गुरु अथ म  
नता सहि नहि पाकेउ महेषा॥ ११॥ सो पाई॥ मन्दिर मों ग



भई न भवाणी ॥ रहत भाग्य अथ म अ भि मानी ॥ यद्यपि ।  
 तव गुरु कै नहि क्रोधा ॥ अतिकृपाल चित सम्य क बोधा  
 तदपि शाप दै हों शठ तो ही ॥ नीति विरोध सो हाउ न मोही  
 जों नहि करों दण्ड खल तो रा ॥ भृष्ट होउ श्रुति मार ग मोरा  
 जे शठ गुरु सन ईर्षा कर ही ॥ रौरवन रक कोटि युग पर ही  
 तिर्यक योनि पुनि धर हिं शरी रा ॥ अयुत जन्म भरि पाव  
 हिं पी रा ॥ वैरि रहे सि अज गरु व पा पी ॥ हो हिं सर्प खल  
 मल मति व्या पी ॥ महा विट प कोट र म ह जाई ॥ रड अथ  
 माथ म अथ गति पाई ॥ दोहा ॥ हा हा कार की न्ह गुरु सनि  
 दारुणा शिव शाप ॥ कं पित मोहि विलोकि अति उर उ प जा  
 परि ताप ॥ १२ ॥ करि दण्ड वत स प्रेम दिज शिव सनु खल  
 र जोरि ॥ विनय करत गङ्ग द गिरा स मुजि चोर गति मोरि ॥  
 कुट ॥ न मा मी श मी शान निर्वाण रूपे ॥ विभु व्याप केंद्र  
 स्रवेद स रूपे ॥ निज निर्गुण निर्विकल्प निरीहं ॥ चिदा ।  
 काश माकाश वास मभजे हं ॥ १३ ॥ निराकार मों कार मूलं  
 तरीयं ॥ गिरा ज्ञान मोती त मी शं गिरी शं ॥ करालं महा ।  
 काल कालः कृपालू ॥ गुणा गार संसार पारं न तो हं ॥ १४ ॥  
 मया शक्ति संकाश गौरंगं भीरं ॥ मनो भूत कोटि प्रभा श्री ।  
 शरीर ॥ सुर मोलिक लोलिनी चारु गङ्गा ॥ लस डाल बा  
 ले नु क ए दे भुज गङ्गा ॥ १५ ॥ चलत कुंडलं सुभुसन त्रविशालं



रामा.

३.

३५

प्रसन्नानननीलकण्ठदयालं ॥ मृगार्थीशचर्माम्बरं मुंड  
मालं ॥ प्रियंशङ्करं सर्वनाथं भजामी ॥ १६ ॥ प्रचाणं प्रकृष्टं प्र  
गल्भं परेशं ॥ अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥ विशूलानि  
निर्मूलनं मूलपाणिं ॥ भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥ १७ ॥  
कलातीतकल्याणकल्याणकारिन् ॥ सदासजनानंददा  
तापुरारिन् ॥ विदानन्दसंदोहमोहापहारिन् ॥ प्रसीदप्र  
सीदप्रभो मन्मथारिन् ॥ १८ ॥ नयावदुमानाथपदारविन्दं  
भजन्तीहलोके परैवानराणां ॥ नतावत्सुखं शान्तिसन  
तापनाशं ॥ प्रसीदप्रभो सर्वभूतार्थिवासिन् ॥ १९ ॥ नजाना  
मियोगं जपेनैव पूजा ॥ नतोहं सदा सर्वदाशं भुक्तभ्यं ॥ जरा  
जन्मदुःखौचतातप्यमानं ॥ प्रभोपादिश्रापन्नमामीश ॥  
शम्भो ॥ २० ॥ रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तुं विप्रेणादरतृष्टये ॥ ये पा  
ठन्ति नराभक्तातेषां शम्भुप्रसीदति ॥ २१ ॥ दोहा ॥ सुनि  
विनती सर्वज्ञशिवदेवि विप्रश्च नरागु ॥ पुनिमन्दिरनभ  
वाणीभद्रदिजवरवरमंगु ॥ २२ ॥ जो प्रसन्नप्रभु मोहिपर  
नाथदीनपरनेत्र ॥ निजपदभक्तिदेइ प्रभु पुनिदूसरवर  
देइ ॥ २३ ॥ तव मायावशा जीवज उमन्तत फिरै भुलान ॥  
तेहिपरक्रोधनकरिय प्रभु कृपासिन्धु भगवान् ॥ २४ ॥ श  
ङ्करदीनदयालु अवपदिपरहोइ कृपालु ॥ पापाउग्रह  
होहिजेहिनाथपोरही काल ॥ २५ ॥ दोहा ॥ परिकरहो



३ परम कल्याण ॥ सोइ करइ अवकृपा निधान ॥ विप्र  
 गिरा सुनि परहित सानी ॥ एवमस्तु इति भवन भवानी ॥  
 यदपि कीन्ह इह दारुण पाप ॥ मैपुनि दीन्ह क्रोध करि  
 शाप ॥ तदपि तम्हारि साधुता देखी ॥ करि हौं एहि परकृ  
 पा विशेषी ॥ दमाशील जे परउपकारी ॥ तेहि ज प्रिय मो  
 हिय पाखरारी ॥ मोर शाप दिज व्यर्थ न जाइहिं ॥ जन्म स  
 हस्य अवश्य यह पाइहिं ॥ जनमत मरत दुसह दुख होई  
 एहिक हस्य लय न व्यापिहिं सोई ॥ कवनेइ जन्म मिटिहिं  
 नहि ज्ञाना ॥ सुनहिं मूढ मम वचन प्रमाणा ॥ रघुपति पु  
 री जन्मतव भयऊ ॥ पुनितें मम सेवामन दण्ड ॥ पुरी प्र  
 भाव अनुग्रह मोरे ॥ राम भक्ति उपजिहिं उर तोरे ॥ मृग म  
 म वचन सत्य अवभाई ॥ हरितोषण ब्रत दिज सेवकाई ॥  
 अब जनिकरे सि विप्र अपमाना ॥ जानेसि सन्त अनन्त स  
 माना ॥ इन्द्र कुलिश मम मूल विशाला ॥ काल दण्ड हरि  
 चक्र कराला ॥ जोइन्ह करि मारानहि मरई ॥ विप्र द्रोह पा  
 वक सो जारई ॥ अस विवेक राखेइ मन माहीं ॥ तम्ह कहं  
 जग दुर्लभ ककुनाहीं ॥ औरो एक आशिष मोरी ॥ अब्या  
 द न गति होइ हितोरी ॥ दोहा ॥ सुनि शिव वचन सहर्ष गुरु  
 एवमस्तु इति भाषि ॥ मोहि प्रबोधि गणउ गृह मम चरण  
 उर राषि ॥ १८ ॥ प्रेरित काल विधि गिरि जाइ भयउ मै ब्याल ॥



रामा.  
३.  
३६

पुनिप्रयासविनुसोतनुतजेउगएककु काल॥१०५॥ जो  
तनुथरौंतजौंपुनिअनार्यसहरिजान॥ जिमिनुतनपटप  
हिरैनरपरिहरैपुराण॥१०६॥ शिवराखेउअतिनीतिअरु  
मैनहिणवाक्केश॥ ३॥ हिविथधरेउं विविथतनुज्ञाननगये  
उखगेश॥१०७॥ चौपाई॥ तिर्यकदेवनरजोईतनुथरेउं॥ त  
हेतहेरामभक्तिअनुसरेउं॥ एकपूलमोहिविसरुनका  
ऊ॥ गुरुकरकोमलशीलसुभाऊ॥ चरमदेहद्विजकरमै  
पाई॥ सुरदुर्लभपुराणअतिगई॥ खेलोंतहौं बालक  
दिमीला॥ करौंसकलरनुनायकलीला॥ प्रौढभयेंमोहि  
पितापछावा॥ समुजोंसुनोंगुणोंनहिभावा॥ मनतेंसक  
लवासनाभागी॥ केवलरामचरणलयलागी॥ कहुखगे  
राअसकवनअभागी॥ खरीसेवसरयेनुहिंन्यागी॥ प्रेम  
मगनमोहिककुनसोहाई॥ हारेउपितापछारपछाई॥ भ  
पउकालवशाजबपितमाता॥ मैवनगपउंभजनजनजाता  
जहंजहंविपिनमुनीश्वरपावों॥ आश्रमजाइजाइसिरना  
वों॥ वृजोंतिनहिरामगुणगाहा॥ कहोंसुनोंदधितखग  
नाहा॥ सुनतफिरौंहरिगुणानुवादा॥ प्रव्याहतमतिरं  
भुप्रसादा॥ कुटीविविधईषणागाछी॥ एकलालसाउरा  
अतिवाछी॥ रामचरणपंकजजबदेखों॥ तबनिजजन्म  
सफलकरिलेखों॥ जेहिपूकोंसोपुनिअसकई॥ ३॥



सर्वभूतमयश्चरई॥ निर्गुणमतनहि मोहिसोहाई॥ सगु  
 णब्रह्मरतिउरअधिकारई॥ दोहा॥ गुरुकेवचनसरतिक  
 रिरामचरणमनलाग॥ रघुपतियशगावतफिरौं दण  
 दणनवअनुराग॥ १८२॥ मेरुशिखरवटकाया मुनिलो  
 मशआसीन॥ देविचरणसिरनापउं वचनकहेउं अति  
 दीन॥ १८३॥ सुनिममवचनविनीत मृदु मुनि कृपालख  
 गरज॥ मोहिसादरपूकृतभपउं दिजआयेउं केहिकाज  
 तबमैकहेउं कृपानिधितमसर्वज्ञसुजान॥ सगुणब्रह्म  
 आराधनामोहिकहइभगवान॥ १८४॥ चौपाई॥ तबमुनी  
 शरघुपतिगुणगाथा॥ कहेउं ककु कसादरखगनाथा  
 ब्रह्मज्ञानरतमुनिविज्ञानी॥ मोहिपरमअधिकारीजानी  
 लागेकराणब्रह्मउपदेशा॥ अजअद्वैतअगुणरूदयेशा  
 अकलअनीहअनामनरूपा॥ अनुभवगम्यअखंडअनु  
 पा॥ मनगोतीतअमलअविनाशी॥ निर्विकारनिरवधि  
 सुखराणी॥ सोतैंतोहिताहिनहिभेदा॥ बारिवीचिउव  
 गावहिवेदा॥ विविधभांतिमोहिमुनिसमुजावा॥ निर्गु  
 णमतममहदयनआवा॥ मुनिमैकहेउं नाशपदशीशा  
 सगुणउपासनकरइमुनीशा॥ रामभक्तिजलमममन  
 मीना॥ किमिविलगाइमुनीशप्रवीना॥ सोउपदेशकर  
 इकरिदाया॥ निजनयनहिदेखौंरचराया॥ भरिलोचन

२८४ जालंध



रामा.

३.

३७

विलोकि अवधेशा ॥ तब सुनिहों निर्गुण उपदेशा ॥ पुनि  
पुनिकहि मुनिकथा अनूपा ॥ खंडिस गुणमत अगुणानि  
रूपा ॥ तब मै निर्गुणमत करिहरी ॥ सगुणानिरूपों करिह  
दभूरी ॥ उतर प्रसुतर मै कीन्हा ॥ मुनि उर भप उक्रोध करची  
न्हा ॥ शृणु प्रभु बद्ध त अवज्ञा कि ॥ उपजै क्रोध ज्ञानि के  
हिए ॥ अति संकर्षण करै जो कोई ॥ अनल प्रगट चदन ते हो  
ई ॥ दोहा ॥ बार बार सकोपि मुनिकरहि निरूपण ज्ञान ॥ मै  
अपने मन बैदित बकौं विविध अनुमान ॥ ६६ ॥ क्रोध कि  
द्वैत बुद्धि विनु द्वैत कि विनु अज्ञान ॥ माया वश प्रकृत जउ  
जीव कि ईश समान ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ कब डंकि दुख सब क  
रहित ताके ॥ तेहि कि दरिद्र पारसमणि जाके ॥ कामी पु  
निकि रहै अकलंका ॥ पर दोही कि मिहो शनिः शंका ॥ बं  
श करहि ज अनहित कीन्है ॥ कर्म कि होहि स्वरूपहि  
चीन्है ॥ काइ समति किहि खल सङ्ग जामी ॥ शुभ गति पा  
व कि पर त्रिय गामी ॥ राज कि रहै नीति विनु जाने ॥ अच कि  
रहै हरि चरित बखाने ॥ भव कि परहि परमात्मा विन्दक ॥  
सखी कि हों हिंक बडं पर निन्दक ॥ पावन यश कि प्रण  
विनु होई ॥ विनु अच अयश कि पावै कोई ॥ लाभ कि ककु  
हरि भक्ति समान ॥ जिहि गावहि कृति सल प्रणाम ॥ ह  
निकि जग पहिम कहु गई ॥ भनियन राम हिं नरतनुपा



३॥ अथ किं विना तामसक कुआना ॥ यर्म किं दया सरिस  
 हरिजाना ॥ ३॥ हिं विथ अमित पुक्ति मन गुणोक्तं ॥ मुनि उप  
 देशन सादर सनेऊं ॥ पुनि पुनि सगुण पद मैरोपा ॥ तव  
 मुनि बोले वचन सकोण ॥ मूछ परम शिख देउं न माने ॥  
 सि ॥ उत्तर प्रत्युत्तर वझ आने सि ॥ सत्य वचन विस्वासन क  
 रही ॥ वायस शव सब ही मन उरही ॥ शठ सपत तव हट  
 य विशाला ॥ सपदि होहि पती चंडाला ॥ लीन्ह शाप मै  
 शी सच छाई ॥ नहि ककु भयन दीनता आई ॥ दोहा ॥ तरि  
 त भयै उं मै कागत व पुनि मुनि पद सिरना ॥ समिरि राम  
 रघुवंश मणि हर्षित चले उं उडा ॥ ६८ ॥ उमा जे राम चर  
 ण रत विगत काम मद क्रोध ॥ निज प्रभु मय देखि जग  
 त कासन करहिं विरोध ॥ ६९ ॥ चौपाई ॥ शृणु खगेश न  
 दिक कुञ्ज विदूषण ॥ उर प्रेरकर घुवंश विभूषण ॥ कृपा  
 सिंधु मुनि मति करि भोरी ॥ लीन्ही प्रेम परीता मोरी ॥  
 मन वच कर्म मोहि निज जन जाना ॥ मुनि मति पुनि फे  
 री भगवाना ॥ मुनि मम सहन शीलता देखी ॥ राम चरण  
 विस्मास विशेषी ॥ अति विस्मय पुनि पुनि पछिताई ॥ सा  
 दार मनि मोहि लीन्ह बुलाई ॥ मम परितोष विविध वि  
 ध कीन्हा ॥ हर्षित राम मंत्र तव दीन्हा ॥ बालकरूप राम  
 कर भाना ॥ कहे उमोहि मुनि कृपानिधाना ॥ सन्दरस



रामा.

३.

३८

खदमोदिस्रतिभावा॥ सोप्रथमदिमेंतमदिंसनावा  
मुनिमोदिककुंकालतहंराखा॥ रामचरितमानसत  
वभाषा॥ सादरयहमोदिकयासुनाई॥ मुनिबोलेमुनि  
गिरासुहाई॥ रामचरितसरगुप्रसहावा॥ शम्भुप्रसाद  
तातमैपावा॥ तोदिनिजभक्तुरामकरजानी॥ तातेंमैंसब  
कहेउंवरानी॥ रामभक्तिजिनकेउरनाही॥ कबडैना  
तातकहियतिन्हपांही॥ मुनिमोदिविविधभांतिसमु  
जावा॥ मैसप्रेममुनिपदसिरनावा॥ निजकरकमल  
परसिममशीशा॥ हर्षितआशिषदीन्हमुनीशा॥ राम  
भक्तिस्रविरलउरतोरे॥ वसिदिंसदाप्रसादप्रबमोरे॥  
दोहा॥ सदागमप्रियहोवतह्मशुभगुणभवनअमान  
कामरूपउच्छामरणज्ञानविरागनिधान॥ १९०॥ जेदि  
आश्रमतह्मवसइमुनिसमिरतश्रीभगवन्त॥ व्यापि  
दितहंनअविद्यायोजनएकपर्यन्त॥ १९१॥ चौपाई॥ का  
लकर्मगुणदोषसभाऊ॥ कुकुदुखतह्मदिनव्यापिदि  
काऊ॥ रामरदस्यललितविधनाना॥ गुप्रप्रगटउतिहा  
सपुराणा॥ विनुअमत्तह्मजानवसवसोऊ॥ नितनव  
स्नेहगमपदहोऊ॥ जोउच्छाकरहइमनमांही॥ हरि  
प्रसादककुदुर्लभनाही॥ सुनिमुनिआशिषपुराणमति  
वीरा॥ ब्रह्मगिरभईगगनगभीरा॥ प्रवमस्तुतवदच



मुनिज्ञानी ॥ यह मम भक्त कर्म मनवाणी ॥ सुनिन भगि  
 राहर्ष मन भयेऊ ॥ प्रेम मगन सब संशय गपऊ ॥ करि वि  
 नती मुनि आय सुपाई ॥ पद सरोज पुनि पुनि सिर नार्ई ॥  
 हर्ष सहित एहि आश्रम आयऊ ॥ प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर  
 पापऊ ॥ इहां वसत मोहि शृणु खगई शा ॥ बीते कल्प सा  
 त अरु बीसा ॥ करौ सदा रघुपति गुण गाता ॥ सादर सुन  
 हिं विहंग सुजाना ॥ जब जब अवध पुरी रघुवीरा ॥ थरहिं  
 भक्ति दित मनुज शरीरा ॥ तब तब जा राम पुर रहऊ ॥ शि  
 शुलीला विलोकि खल हऊ ॥ पुनि उर राखि राम शि  
 शु रूप ॥ निज आश्रम आवौ खग भूषा ॥ कथा सकल मै  
 त म्हादि सुनार्ई ॥ काग देह जेहि कारणा पाई ॥ कहे उतात स  
 व प्रभु त म्हारी ॥ राम भक्ति महिमा अति भारी ॥ दोहा ॥ नाते  
 यह ननु मोहि प्रिय भये उराम पद नेह ॥ निज प्रभु दरपान  
 पाप उंग पउ सकल सन्देह ॥ १५२ ॥ भक्ति पल हट करि रहे  
 उंदी न्द महा अविशाय ॥ मुनि दुर्लभ वर पाप उंदेख भज  
 न प्रताप ॥ १५३ ॥ चौपाई ॥ जे अति भक्ति जान परिहर ही ॥ के  
 वल ज्ञान हेतु प्रम कर ही ॥ तेज उ काम येनु गृह पागी ॥ खे  
 ल न्या क करि हिं पग लागी ॥ शृणु खगेश हरि भक्ति वि  
 लाई ॥ जस खज हदि आन उपाई ॥ तेषा दम दामिं भुवि न  
 नराणी ॥ परि पाखा दत ज उ करणी ॥ सुनि भुसु निउ के वच



शमा.  
३०  
३५

नभवानी॥ बोले उगरु उरु धि मृदुवाणी॥ तब प्रसाद प्रभु  
मम उर माही॥ संशय शोक मोह भ्रम नाही॥ सुने उं पुनी  
तराम गुण ग्रामा॥ तमहरी कृपाल हे उ विप्रामा॥ एक बा  
त प्रभु पूछों तो ही॥ कहइ बुजा उ कृपानिधि मोही॥ कह  
हिं सन्त मुनि वेद पुराणा॥ नहि ककु दुर्लभ ज्ञान समाना  
सो मुनि तमह सन कहै उ गोसांई॥ नहि आदरे उ भक्तिकी  
नाई॥ ज्ञान हिं भक्ति हिं अन्तर केता॥ सकल कहइ प्रभु कृ  
पानि केता॥ सुनि उर गारि वचन सुख माना॥ सादर बोले  
उ काग सुजाना॥ ज्ञान हिं भक्ति हिं नहिं ककु भेदा॥ उभय  
हर हिं भव संभव खेदा॥ नाथ मुनी श कहहिं ककु अन्तर  
सावधान सो उ शृणु विहङ्गवर॥ ज्ञान विराग योग विज्ञा  
ना॥ ये सब पुरुष सनइ हरि जाना॥ पुरुष प्रताप प्रबल  
सब भोती॥ अवला अवल सहज ज उ जाती॥ दोहा॥ पुरु  
स त्यागि शक नारि हिं जो विरक्त मति धीर॥ नत कामी वि  
षये विवश विमुख जे पद रचु वीर॥ १५४॥ सोरठा॥ सो उ सु  
नि ज्ञान विधान मृग नयनी विधु मुख निरखि॥ विवश हो  
हिं हरि जान नारि विस्मया प्रगट॥ १५५॥ चौपाई॥ ३५॥  
न पक्ष पात ककु राखौं॥ वेद पुराणा सन्त मत भाषौं॥ मोह  
न नारि नारि के रूप॥ पन्न गारि यदनी ति अत्रुण॥ माया  
भक्तिसुनइ प्रभु दोऊ॥ नारि दर्शनै सब कोऊ॥ ३५॥



बुवीरहिंभक्तिपियारी॥ मायाखलुनर्तकीविचारी॥ भ  
 क्रिहिंसानुकूलरघुराया॥ तातेंतेहिंउरपतिअतिमाया॥  
 रामभक्तिनिरुपमनिरुपायी॥ वसैंजासुउरसदाअबाधी  
 तेंहि विलोकिमायासऊचाई॥ करिनसकैककुनिजप्रभु  
 ताई॥ असिविचारिजोमुनिविज्ञानी॥ जाचहिंभक्तिसकल  
 सुखखानी॥ दोहा॥ यहरहस्यरघुनाथकरवेगिनजानैको  
 ३॥ जानेतेंरघुपतिकृपासपनेऊंमोहनहोई॥ १५६॥ औरोज्ञा  
 नभक्तिकरभेदसुनइसपरवीण॥ जोसुनिहोइरामपदपी  
 तिसदाअवलीण॥ १५७॥ चौपाई॥ सुनइतातयहअकण  
 कहानी॥ समुजतबनैनजाइखानी॥ ईश्वरअंशजीवअवि  
 नाशी॥ चेतनअमलसहजसुखराशी॥ सोमायावशाभण  
 गोसांई॥ बंधोकीरमरकटकीनाई॥ जउचेतनहिंअस्यया  
 रिगई॥ यद्यपिमृषाकुटतकरिनई॥ तबतेंजीवभयेउसंसा  
 री॥ ग्रस्थिनकुटनहोइसखारी॥ अतिपुण्यवडकहेउउ  
 पाई॥ कुटनअधिकअधिकउरुजाई॥ जीवहृदयतममोह  
 विशेषी॥ ग्रस्थिकुटैकिमिपरैनदेखी॥ अससंयोगईशज  
 बकरई॥ तबइंकदाचितसोनिरअरई॥ सात्विकीअहाथे  
 अरुअरई॥ जोहरिकृपाहृदयवशाआई॥ जपतपव्रतसं  
 यमनियमअपारा॥ जेअतिकहप्रभुभयमअचारा॥ तेउर  
 लारितवैजवगा॥ भाववतसशिअपारमेहारा॥ नोउ



रामा.  
३.  
४०

निवृत्तिपात्रविश्वासा॥ निर्मलमनश्चीरनिजदासा॥ पर  
मधर्ममयपयदहिभाई॥ अवटैअनलअकामबना॥ तोष  
मरुततबतमाजुगवै॥ धृतिममजोवनदेउजमावै॥ सुदि  
तामथैविचारमथानी॥ दमअथारजुसत्यसुवाणी॥ तब  
मथिकाछिलेउनवनीता॥ विमलविरागसुभगसुपनीता  
**दोहा॥** योगअधिकरिप्रगटतबकर्मशुभाशुभला॥ बु  
द्धिसिरावैज्ञानचुतममतामलजरिजा॥ १५८॥ तबविज्ञा  
ननिरूपिणीबुद्धिविषादचुतपा॥ चित्तदियाभरिथरैट  
छसमतादिअटबना॥ १५९॥ तीनिअवस्थातीनिगुणाति  
हिंकुणसतैकाछि॥ तलतरीयसंवारीपुनिवातीकरैसु  
गाछि॥ २००॥ **सोरठा॥** एहिविथलेसैदीपतेजरशिजिज्ञा  
नमय॥ जातहिंजासुसमीपजरहिंमटादिकशलभसब॥  
२०१॥ **चौपाई॥** सोहमस्मिउतिवृत्तिअखण्डा॥ दीपशिखा  
सोउपरमप्रचण्डा॥ आत्मअनुभवसुखसप्रकाशा॥ तबभ  
वमलभेदभ्रमनाशा॥ प्रबलअविद्याकरिपरिवारा॥ मो  
हआदितममितैअणारा॥ तबसोउबुद्धिपाउजिआरा॥ उ  
रगुहवैठिअग्निनिरुआरा॥ कोरनअग्निपावजबसोई॥  
तबयहजीवकृतारण्यहोई॥ कोरतअग्निजानिखगाराया॥  
विवनअनेककरहिंतबमाया॥ इदिसिदप्रैरेवइभाई॥  
उदितोभदेवावहिंभाई॥ कलवलकुलकरिजाइसा॥



मीपा॥ अञ्जलवातबुजावहिंदीपा॥ होइबुद्धिजोपरम  
 यानी॥ तिन्हतनचितवनअनहितजानी॥ जोंतेहिविचन  
 बुद्धिनहिवाधी॥ तौवहोरिसुरकरहिउपाधी॥ इन्द्रियद्वार  
 ऊरोखानाना॥ तहंतहंसुरबैठकरिथाना॥ आवतदेवहि  
 विषयवयारी॥ तेहठिदेहिंकपाटउचारी॥ जबसोप्रभजन  
 उरगृहजाई॥ तवहिंदीपविज्ञानबुजाई॥ ग्रन्थिनकुटिमि  
 दासप्रकाशा॥ बुद्धिविकलभइविषयवतासा॥ इन्द्रियसु  
 रन्हनज्ञानसुहाई॥ विषयभोरपरप्रीतिसदाई॥ विषयसा  
 मीरबुद्धिकृतभोरी॥ तेहिविधदीपकोज्वालवहोरी॥ दोहा  
 तवभरिजीवविविधविधपावैसंसृतिकलेश॥ हरिमा  
 याअतिदुस्तरतरिनजाइविहंगेश॥ २०२॥ कहतकठिन  
 समुजतकठिनसाधनकठिनविवेक॥ होइबुणादरन्या  
 यजोपुण्यप्रत्युहअनेक॥ २०३॥ चौपाई॥ ज्ञानपेथकृपा  
 एकीथारा॥ परतखगेशनलागैवारा॥ जौनिर्विचनपथ  
 निर्वहई॥ सोकैवल्यपरमपदलहई॥ अतिदुर्लभकैवल्य  
 परमपद॥ सन्तपुराणनिगमआगमवद॥ रामभजनसो  
 उमुक्तिगोसांई॥ अनश्चितआवैवरिआई॥ जिमिथलवि  
 चनकरिअकारई॥ कोटिभांतिकोउकरैउपाई॥ तथासो  
 तसुखनष्टएखगाराई॥ रहिनशकैहरिभक्तिविदाई॥ अस  
 विचारिहरिभक्तमगाने॥ मुक्तिनिगदरिभक्तिलोभाने॥ भ



रामा.  
३.  
५१

क्रिकरतविनुयतनप्रयासा॥ संसृतिमूलअविद्यानाशा॥  
 भोजनकरियतमिहितलागी॥ जिमिसोअशानपचवेज  
 ठरागी॥ असिहरिभक्तिसुगमसुखदाई॥ कोअसमूछनजा  
 हिसुहाई॥ दोहा॥ सेवकसेव्यभावविनुभवनतरियउरगा  
 रि॥ भजउरामषटपंकजअसमिद्वान्तविचारि॥ २०४॥ जोचो  
 तनकहंजउंकरैचैतन्य॥ अससमर्थरघुनायकहिंभजहिं  
 जीवतेधन्य॥ २०५॥ चौपाई॥ कहेउंज्ञानसिद्धान्तबुजाई॥  
 सुनइभक्तिमणि कीप्रभुताई॥ रामभक्तिचिन्तामणिसु  
 न्दर॥ वसैगरुउजाकेउरअन्तर॥ परमप्रकाशरूपदिनरा  
 ती॥ नदिककुचहियदियावृत्तवाती॥ मोहदरिद्रनिकट  
 नदिआवा॥ लोभवातनदिताहिवुजावा॥ प्रबलअविद्या  
 तममिदिजाई॥ हारहिसकलशालभसमुदाई॥ खलका  
 मादिनिकटनदिजाही॥ वसैभक्तिमणिजाकेउरमाही॥  
 गरलसुधासमअरिदितहोई॥ तेहिमणिविनुसुखपाव  
 नकोई॥ व्यापहिंमानसरोगनभारी॥ जेहिकेवशमवजी  
 वदुखारी॥ रामभक्तिमणिउरबसुजाके॥ दुखलवलेश  
 नसपनेइंलाके॥ चतरशिरोमणितेउरजगमाही॥ जेमणि  
 लागिसुयतनकराही॥ सोमणियद्यपिप्रगटजगअहई॥  
 रामकृपाविनुनहिकोउलहई॥ सुगमउपायपाउनेकोरे॥  
 नारदतभाग्यदेतभटभेरे॥ पावनपर्वतवेदपुराणा॥ राम



कथारुचिराकरनाना ॥ ममीसजनसुमतिऊदारी ॥ ज्ञान  
 विरागनयनउरगारी ॥ भावसहितखोजैजेउप्राणी ॥ पावभ  
 क्रिमणिसवसुखखानी ॥ मोरेमनप्रभुअसविष्णुसा ॥ रा  
 मतेअधिकरामकैदासा ॥ रामसिन्धुवनसजनपीरा ॥ च  
 न्दनतरुहरिसन्तसमीरा ॥ सवकरफलहरिभक्तिसुहार्  
 सोविनुसन्तनकाइहिंफाई ॥ असविचारिजोउकरुसतसे  
 गा ॥ रामभक्तितेहिंसुलभविहंगा ॥ दोहा ॥ ब्रह्मपयोनिधि  
 मन्दरज्ञानसन्तसुरादि ॥ कथासुधामयिकाछदिभ  
 क्रिमधुरताजाहि ॥ २०६ ॥ विरतिचर्मअसिज्ञानमदलोभ  
 मोहरिपुमारि ॥ जयपार्यसोहरिभक्तिदेखुखगेशवि  
 चारि ॥ २०७ ॥ चौपाई ॥ पुनिसप्रेमबोलेउखगराऊ ॥ जौकृपा  
 लुमोहिऊपरभाऊ ॥ नाथमोहिनिजसेवकजानी ॥ सप्र  
 ममकहइवखानी ॥ प्रथमहिंकहइनाथमतिपीरा ॥  
 सबतेंदुर्लभकवनशरीरा ॥ बउदुखकवनसुखभारी ॥ मो  
 संलेपहिंकहइविचारी ॥ सन्तअसन्तमर्मतमजानइ ॥ ति  
 न्दिकरसहजसुभाववखानइ ॥ कवनपुण्यश्रुतिविदित  
 विशाला ॥ कहइकवनअबपरमकराला ॥ मानसगोक  
 रसमजारी ॥ तुमसर्वज्ञकृपाअधिकारि ॥ तातसुनइसा  
 दरअतिप्रीता ॥ मैंसंलेपकहोयहनीती ॥ नरतनुसमनहि  
 कवनिउदेही ॥ जीववराचराचतजेही ॥ नरकसर्गअपव



रामा.

३०

४२

रनिशोनी॥ ज्ञानविरागभक्तिसखदेनी॥ सोतनुधरिहा  
रिभजहिंनजेनर॥ होइविषयरतअन्यमन्दतर॥ कोच।  
किरचवदलेशढलेही॥ करतेंगारिपरिसमणिदेही॥ नहि  
दरिद्रसमडुखजगमाही॥ सन्तमलिनसमसखककुना  
ही॥ परउपकारवचनमनकाया॥ सन्तसहजसुभावखग  
राया॥ सन्तसहहिंदुखपरहितलागी॥ परडुखहेतुअसत्त  
अभागी॥ भूर्जतरुसमसन्तकृपाला॥ परहितसहनितवि  
पतिविशाला॥ शाण्डवखलपरबन्धनकरई॥ खालकजा  
रविपतिसहिमरई॥ खलविनुस्वारथपरअपकारी॥ अहि  
मुखकरवष्ट्राउरगारी॥ परसम्पदाविनाशिनशीही॥ जि  
मिशाशिहतहिमउपलविलाही॥ दुष्टउदयजगआरतिहे  
त॥ यथाप्रसिद्धअथमग्रहकेत॥ सन्तउदयसन्ततसखा  
कारी॥ विष्णुसखजिमिश्रुतमारी॥ परमधर्मश्रुतिविदि  
तअहिंसा॥ परनिंदासमअवनगरिंसा॥ हरिगुरुनिन्दक  
दादुरहोई॥ जन्मसहस्रपावतनुसोई॥ द्विजनिन्दकबडन  
रकभोगकरि॥ जगजन्मैवायसशरीरधरि॥ सरश्रुतिनि  
न्दकजेअभिमानी॥ रौरवनरकपरहिंतेप्राणी॥ जोहिंन्द  
कसन्तनिन्दारत॥ मोहनिशाप्रियज्ञानभावगत॥ सबकी  
निन्दाजेजउकरही॥ तेचमगादुरहोइअवतरही॥ सुनइ  
जातअवमानसयोगा॥ जिन्हतेंडुखपावहिंसबलोगा॥ मो



हसकलव्याधिनकरमूला॥ तेहितेंपुनिउपजहिंबड  
 मूला॥ कामवातकफलोभअपारा॥ क्रोधपित्तनितका  
 तीजारा॥ प्रीतिकरहिंजोतीनिउभाई॥ उपजैसन्निपात  
 दुखदाई॥ विषयमनोरथदुर्गमनाता॥ तेसबमूलनाम  
 कोजाना॥ ममतादादुकाउउर्षाई॥ हर्षविषादगरहव  
 रुताई॥ परसखदेखिजरनिमोकाई॥ ऊषुदुषुतामनऊ  
 टिलाई॥ अहकारअतिदुखदहुरुआ॥ दमकपटम  
 दमानहुरुआ॥ तस्माउदरवृद्धिअतिभारी॥ त्रिविधईष  
 णातरुणातिजारी॥ युगविधजरमत्सरअविवेका॥ क  
 हंलगिकहोंऊरोगअनेका॥ दोहा॥ एकव्याधिवशनर  
 मरहिंयेअसाथबडव्याधि॥ सन्ततपीउहिंजीवकहंसो  
 किमिलहहिंसमाधि॥ २०८॥ नेमधर्मआचारतपज्ञानय  
 ज्ञजपदान॥ भेषजपुनिकोटिन्हनहिंरुजनजाहिंदरिया  
 न॥ २०९॥ चौपाई॥ इहिविधिसकलजीवसवरोगी॥ शोक  
 हर्षभयप्रीतिवियोगी॥ मानसरोगककुकमैंगा॥ हैस  
 बकेलखिविरलन्हपाप॥ जानेतेंछीजहिंककुपापी॥ ना  
 शनपावहिंजनपरितापी॥ विषयऊपप्यपारअंकुरे॥ सु  
 निहृदयकानरकापुरे॥ रामकृपानाशहिंसवरोगा॥  
 जोयहिभांतिबनेसंयोगा॥ सदगुरुवैयवचनविश्वासा  
 संयमग्रहणाविषयकरआशा॥ रघुपतिभक्षिसजीवन



रामा.

३.

५३

भूरी॥ अनुपानप्रदाअतिभूरी॥ इहिविथभलेऊरोगन  
शाही॥ नाहितयतनकोटिनहिजाही॥ जातियतबमन  
विरुजगोसाई॥ जबउरबलविरागअधिकारै॥ समति।  
तथावाटैनितनई॥ विषयआशदुर्बलतागई॥ विमल  
ज्ञानजलजवसोअन्हाई॥ तबरहरामभक्तिउरछाई॥ शि  
वअजप्रकसनकादिकनारद॥ जेमुनिब्रह्मविचारिवि  
शारद॥ शिवकरमतखगनायकएहा॥ करियरामपद  
पङ्कजनेहा॥ अतिपुराणसबग्रन्थकहाही॥ रघुपति।  
भक्तिविनासुखनाही॥ कमठपीठजामहिंवखारा॥ बे  
आसतबरुकाइहिंमारा॥ फुलहिंनभवखुबइविथफुल  
जीवनलहसुखहरिप्रतिकूल॥ तषाजाइवरुमृगजल  
पाना॥ बरुजामहिंशशशीशविषाणा॥ अन्यकारवरु  
विहिनशावै॥ रामविमुखसुखजीवनपावै॥ हिमतेअन  
लप्रगटवरुहोई॥ रामविमुखसुखपावनकोई॥ दोहा॥ वा  
रिमयेवरुहोइवृत्तसिकतातेवरुतेल॥ विनुहरिभजनन  
भवतरिययहसिदान्तअपेल॥ २१०॥ मशकहिकरहिंवि  
रञ्चिप्रभुअजहिमशकतेहीन॥ असविचारितजिसेश  
यरामहिंभजहिंप्रवीन॥ २११॥ कुन्द॥ विनिश्चितेवदामि  
तेनअन्यथावचामिमे॥ हरिनरामजन्तियेयतिडसरंत  
रितिते॥ २२॥ ॥ कहेउनापहरिवरितअनूपा॥ व्यास



समासस्वमतिश्रुतारूपा ॥ अतिसिद्धान्तश्चेत्तरगारी ॥  
 रामभजियसबकामविसारी ॥ प्रभुरचुपतितजिसेइयका  
 ही ॥ मोहिसेषादपरममताजाही ॥ तन्मविज्ञानरूपनहि  
 मोहा ॥ कीन्दनाथमोपरअतिकोहा ॥ पूछेइरामकथा  
 अतिपावनि ॥ शुक्सनकादिशम्भुमनभावनि ॥ सतस  
 रूतिदुर्लभसंसार ॥ निमिषदाउभरिपकौवारा ॥ देखु  
 गरुडनिजहृदयविचारी ॥ मैरचुवीरभजनअधिकारी ॥  
 शक्रनाथमसबभांतिअपावन ॥ प्रभुमोहिकीन्दविदित  
 जगपावन ॥ दोहा ॥ आज्यन्यमैंथन्यअतिययपिसबवि  
 पिहीन ॥ निजजनजानिराममोहिसनसमागमदीन ॥ २  
 नाथयथाप्रतिभाषेंउंराखेंउंककुनहिगो ॥ चरितसिन्धु  
 रचुनाथकरणाहकिपावैको ॥ २१३ ॥ चौपाई ॥ सुमिरिश  
 मकेगुणगणाना ॥ पुनिपुनिहर्षेउभुसुणिउसजाना ॥  
 महिमानिगमनेतिकरिगार् ॥ अतलितबलप्रतापप्रभु  
 तार् ॥ शिवअजपूज्यचरणरचुगार् ॥ मोपरकृपापरममृदु  
 तार् ॥ असस्वभावकइसनौनदेखें ॥ केहिखगेशरचुप  
 तिसमलेखें ॥ साथकसिद्धविमुक्तउदासी ॥ कविकोविद  
 कतजमन्यामी ॥ योगीश्वरअरुतापसजानी ॥ धर्मनिरतप  
 णितविज्ञानी ॥ तरदिनविनुमेयेंममस्वामी ॥ रामनमामि  
 नमामिनमामी ॥ शरणगपमोमेअवराणी ॥ होहिंशुद्धन



रामा.  
३.  
४५

मार्मिअविनाशी ॥ दोहा ॥ जासुनामभवभेषजहरणाचो  
रउयपूल ॥ सोकपालमोहितोहिपरसदारहहिअनुकूल  
॥ २१५ ॥ सुनिभुसुंडिकेवचनशुभदेखिरामपदनेह ॥ बोले  
प्रेमसहितगिरागरुउविगतसन्देह ॥ २१५ ॥ चौपाई ॥ मैकु  
तकृत्यभपउंतवबाणी ॥ सुनिश्चुवीरभक्तिरससानी ॥ रा  
मचरणनूतनरतिभई ॥ मायाजनितविपतिसबगई ॥ मो  
हजलथिवोदिततमभपऊ ॥ मोकहंनयविविधसखद  
पऊ ॥ मोसनहोइनप्रसुपकारा ॥ बन्दोंतवपदवारहिंवार  
पूरणकामरामअनुरागी ॥ तम्हसमतातनकोउवउभागी  
सन्तविटपसरितागिरिधरणी ॥ परहितहेतुसबन्दकर  
करणी ॥ सन्तहृदयनवनीतसमाना ॥ कहाकविनपैकहै  
नजाना ॥ निजपरितापद्रवैनवनीता ॥ परदुखद्रवहिंसन्त  
सनीता ॥ जीवनजन्मसुफलममभपऊ ॥ तवप्रसादसबसं  
शयगपऊ ॥ जानेऊसदामोदिनिजकिङ्कर ॥ पुनिपुनिउ  
माकहैविहङ्गवर ॥ दोहा ॥ तासुचरणसिरनाइकरिप्रेम  
सहितमतिथीर ॥ गरुउगपउबैऊएतवहृदयराखिर  
चुवीर ॥ २१६ ॥ गिरजासन्तसमागमसमनलाभककुआन  
विनुहरिकृपासोहोइनहिगावहिंवेदपुराण ॥ २१७ ॥ चौपा  
ई ॥ कहेउंपरमपुनीतइतिहासा ॥ सुनतप्रवणकुटहिंभ  
वपाशा ॥ प्राणतकल्पतरुकदगापुजा ॥ उपजेप्रीतिराम



पदकज्ञा ॥ मनवचकर्मजनितश्रवजाई ॥ सुनैजोकथाश्र  
 वणामनलाई ॥ तीर्थाटनसाधनसमुदाई ॥ योगविरागज्ञान  
 निपुणाई ॥ नानाकर्मधर्मव्रतदाना ॥ संयमनियमयज्ञज  
 पनाना ॥ भूतदयादिजगुरुसेवकाई ॥ वियाविनयविवेक  
 वडाई ॥ जहंलगिसाधनवेदवखानी ॥ सबकरफलहरिभा  
 क्रिभवानी ॥ सोइरचुनायभक्तिप्रतिगाई ॥ रामकृपाकाउं  
 कपाई ॥ दोहा ॥ मुनिदुर्लभहरिभक्तनरपादहिंविनहिमया  
 स ॥ जोयहकथानिरन्तरसुनिहिंमानिविश्वास ॥ २५ ॥  
 पाई ॥ सोइसर्वज्ञगुणीसोइज्ञाता ॥ सोइमहिमएउनपंडित  
 दाता ॥ धर्मपरायणसोइऊलज्ञाता ॥ रामचरणजाकरमन  
 राता ॥ नीतिनिपुणसोइपरमसयाना ॥ प्रतिसिद्धान्तनीक  
 नेहिंजाना ॥ सोइकविकोविदसोइरणधीरा ॥ जोकलका  
 डिभजैरचुवीरा ॥ धन्यनारियतिव्रतअनुसरी ॥ धन्यसोदेश  
 जहांसुरसरी ॥ धन्यसोभूपनीतिजोकरई ॥ धन्यसोदिजनि  
 जधर्मनटई ॥ सोधनधन्यप्रथमगतिजाकी ॥ धन्यपुणपर  
 तमति सोइपाकी ॥ धन्यचरीसोइजवमतसझा ॥ धन्यजन्मा  
 दिजभक्तअभङ्गा ॥ दोहा ॥ सोऊलधन्यउमाशृणजगतपू  
 ज्यसुप्रनीत ॥ श्रीरचुवीरपरायणजेदिनउपजविनीत ॥ २६ ॥  
 पाई ॥ मतिअनुरूपकथामैंभाषी ॥ यद्यपिप्रथमगुप्तक  
 रिराषी ॥ तबमनजीतिदेगिविश्रुधिकाई ॥ तबमैंरचुपतिकथा

१५



रामा.  
३  
५५

सुनाई॥ यह नहिं कहिय शठहिं दूढ शीलहिं॥ जो मन ला  
इन सुनु हरि लीलहिं॥ कही यन लोभिहिं क्रोधिहिं कामि  
हिं॥ जो न भजै सचराचर स्वामिहिं॥ द्विज द्रोहिहिं न सुनाई  
यक बहं॥ सरपति सरिस होइ नृपज बहं॥ राम कथा के ते अ  
धिका री॥ जिन के सत सत्ति अति प्यारी॥ गुरु पद प्रीति नी  
ति रत जोई॥ द्विज सेवक अधिकारी सोई॥ ता कहें यह विशेष  
सुख दाई॥ जाहि प्राण प्रिय श्री रघु राई॥ दोहा॥ राम चरणार  
ति जो च है अथवा पद निर्वाण॥ भाव सहित सोय कथा करै  
अवण पुट पान॥ २२०॥ चौपाई॥ राम कथा गिरिजा मै वरणी  
कलि मल प्रामन मनो मल हरणी॥ संसृति रोग सजीवन मु  
री॥ राम कथा गावहिं प्रीति सुरी॥ यहि महं रुचिर सप्त सोपा  
ना॥ रघुपति भक्तिके रण थाना॥ अति हरि कृपा जाहि पर होई  
पावें देइ यह मारग सोई॥ मन कामना सिद्धि न रावै॥ जो य  
ह कथा कपट तजि गावै॥ कहहिं सुनहिं अनुमोदन कर ही  
ते गोपट उव भवनि थित रहै॥ सुनि सब कथा हृदय अति भाई  
गिरिजा बोली गिरा सुहाई॥ नाथ कृपा ममगत सन्देहा॥ रा  
म चरण उपजे उनवने हा॥ दोहा॥ मै कृत कृत्य भयिं अवता  
व प्रसाद विम्वेश॥ उपजी राम भक्ति टूबी ते सकल कलेश  
२२१॥ चौपाई॥ यह शुभ शम्भु उमा संवादा॥ सुख संपादन प्र  
मन विषादा॥ भव भङ्ग न गजन सन्देहा॥ जनरत्न न सज्जन



प्रिय पहा ॥ राम उपासक जे जग माहीं ॥ यह सम प्रियति  
 न करे ककु नाहीं ॥ रघुपतिकृपा यथा मति गावा ॥ मै यह पा  
 वन चरित सुहावा ॥ एहि कलिकाल न साथ न दूजा ॥ योग  
 यज्ञ जयत यवत पूजा ॥ राम हिंसु मिरिय गाइय राम हिंस ॥ स  
 नत सुनिय राम गुण ग्राम हिंस ॥ जा सुपतित पावन वडवाना  
 गाव हिंस विप्र कति सन्न पुराणा ॥ जाहि भजियत जिमन  
 ऊटिलाई ॥ राम भजें गतिके दिन हि पाई ॥ छन्द ॥ पार्शन के  
 हि गति पतित पावन राम भजु शृणु शठ मना ॥ गणिका  
 अजामिल गृध्र व्याध गजा दिखल तारे उवना ॥ २३ ॥ आभी  
 र जवन किरात खस म्भ पचा दिअति अच रूप जे ॥ कहि ना  
 म वारे कतें पि पावन होत राम न मा मिते ॥ २४ ॥ रघुवंश भूष  
 ण चरित यह नर कह हिंसु न हिंजे गाव ही ॥ कलि मल म  
 नौ मल थोर विनु अम राम धाम सिधाव ही ॥ २५ ॥ शुभ कुंद  
 चौ पाई मनोहर जानि जो न उर थरै ॥ दारुण अविद्या यनु म  
 नित विकार श्री रघुपति हरै ॥ २६ ॥ सुन्दर सुजान कृपा निधा  
 न अनाथ पर करु प्रीति जो ॥ सो एक राम अकाम हित नि  
 र्वाण पद सम आन को ॥ २७ ॥ जा की कृपाल बलेश ते मति  
 मन्त्र न लसी दा महे ॥ पायो परम विश्राम राम समान प्रभु  
 ना ही कहै ॥ २८ ॥ दाहा ॥ मो सम दीन न दीन हित तम समान  
 रघुवीर ॥ अस विचारि रघुवंश मणि हर रू विषम भव भीर ॥



रामा.  
उ.  
४६

कामिहिनारिपियारिजिमिलोभिहिप्रियजिमिदाम॥  
तिमिरबुनाथनिरन्तरप्रियलागदमोहिराम॥२२३॥श्लो  
को॥यत्पूर्वप्रभुणाकृतं सकविनाश्रीशम्भुनादुर्गमं॥श्री  
मद्रामपदाज्जभक्तिमनिशंप्राप्यन्तरामायणं॥मत्वातद्रा  
बुनाथनामनिरन्तस्वांतस्तमःशान्तये॥भाषावद्वमिदंच।  
कारतलसीदासस्तथामानसं॥१॥पुण्येपापहरंसदाशि  
वकरंविज्ञानभक्तिप्रदं॥मायामोहमलापहंसविमलंप्रे  
माम्भुप्रंशुभं॥श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदंभक्तावगा  
हनितये॥तेसंसारपतङ्गचोरकिरणौर्दशनोमानवा॥  
इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलूषविध्वंसनेवि॥  
मलवैराग्यसम्पादिनोनामसप्रमःसोपानःसमाप्तः॥७॥  
सुभमस्तसिद्धिरस्तु॥समाप्तोयंग्रन्थः॥लिपितमिदंदाऊ  
दासेनश्रीमहाराजःजङ्कारसिंहस्पष्टनार्यम्॥२॥

संवत्॥१९१३॥कार्तिक

शुदी॥३॥॥



124  
62  
27  
96  
90  
23  
90  
—  
2 22











